

श्रीवाक्पतिपादा विजयन्तान्तमाम् ॥

५५८.

अं २.

शुद्धाद्वैत

अने

वैशाख

१८८५.

श्रीचण्डाला ०८

४५५.

सहितमार्तः

प्रार्थना.

दवात्रिजान्संस्तुतिलीयमानांस्तु प्रभुः शुष्टितानगण्यन् ।
चम्पावने यः प्रकटो बभूव स बल्लभः पातु दयादृशा नः ॥१॥
विस्मापयन्स्वीयगुरुं पठन्त्यो द्राक् शब्दशास्त्रोदधिपारमैयः ।
कौमार एवाग्रियताथ वाचा स बागधीशो दययावताम्रः ॥ २॥
विद्यामु विशानगरे प्रवीणाः कर्तुं विवादं मिलिता विदग्धाः ।
यो ब्रह्मवादं प्रजगौ प्रमाणैः स बल्लभः पातु दयादृशा नः ॥६॥
चिन्तातुरो दैवजनोद्भूतौ यः श्रीब्रह्मसम्बन्धकृतौ प्रदिष्टः ।
तुर्यमिपारोभसि माधवेन स बल्लभः पातु दयादृशा नः ॥४॥
सूर्यापितं येन मुदा पृथिव्यां श्रीप्लुष्टिमार्गान्मुजसत्प्रकाशे ।
दामोदरायैर्भ्रमरायितं च स बल्लभः पातु दयादृशा नः ॥५॥
श्रीनाथवक्त्राम्बुजीनःसृता ये पञ्चाक्षराष्टाक्षरगन्धमन्त्राः ।
तैर्निर्भया येन कृताथ दैवाः स बल्लभः पातु दयादृशा नः ॥६॥
श्रीविठ्ठलादेशवर्शेन येन भक्तिप्रचाराय शुभोऽत्र वैशः
अतो गृहस्थाश्रम आहतोऽपि स बल्लभः पातु दयादृशा नः ॥७॥
दयानिधानावितपुष्टिमार्गे याथां विधातुं हरिरप्यशक्तः ।
स्मृत्या स्वभक्तातिविनाशको यः स बल्लभः पातु दयादृशा नः ॥८॥
रासेश्वरो यद्भजनीयदेवः सेवारसाला रसिकांश्च भक्ताः ।
ग्रन्था रसा यस्य रसाश्रयो यः स बल्लभः पातु दयादृशा नः ॥९॥

श्रीकृष्णलीलामृतसिंधुविन्दुः सिन्धूयते भक्तहृदन्तराले ।
 यस्य त्विहानुग्रहदृष्टिदृष्ट्या स बल्लभः पातु दयादृशा नः ॥१०॥
 ६६भीसहसैरिह सेव्यमानो लीलापयोधौ हि कलानिधानः ।
 यत्स्वान्तशेषोपरिगे विशाले स बल्लभः पातु दयादृशा नः ॥११॥
 वृन्दावनेन्दुः किल यस्य दानं भक्ता ग्रहीतार इहैष दाता ।
 दत्तेऽपि दाने निधिरक्षयो यः स बल्लभः पातु दयादृशा नः ॥१२॥
 मधुर्व्रजेशः खलु वैष्णवानां योऽरं दयालुर्व्रजनाथदाता ।
 महामधुस्तत्प्रथितः पृथिव्यां स बल्लभः पातु दयादृशा नः ॥१३॥
 चेतोगताज्ञानतमिस्रनाशाद् वैश्वानरः प्राज्ञगणैर्विभाषे ।
 यो वस्तुतः कृष्ण इषाय भूमिं स बल्लभः पातु दयादृशा नः ॥१४॥
 श्रीकृष्णरूपः परिपेव्यमाण आचार्यरूपः परिपेवमाणः ।
 योऽभूद् द्विधासेवनशिक्षणाय स बल्लभः पातु दयादृशा नः ॥१५॥
 स्वदर्शनोत्कोऽन्तिकमागतोऽपि मत्स्यद्वतः श्रीपतिना मुदा यः ।
 शान्तो यतोऽभूद् गिरिराजतापः स बल्लभः पातु दयादृशा नः ॥१६॥
 परिक्रमन्भूमितले त्रिवारं ग्रन्थान् रसालान् रचयन्ननेकान् ।
 य उद्धरन् देवजनान्व्यराजत् स बल्लभः पातु दयादृशा नः ॥१७॥
 स्नानापदेशेन धरागतानि कृतानि तीर्थानि हि नाथवन्ति ।
 भूमण्डलाचार्यवरेण येन स बल्लभः पातु दयादृशा नः ॥१८॥
 यः पायपन्पुष्टिमहारसं स्वान् विभिन्नदेशस्थितपुष्टिमक्तान् ।
 तीर्थाटनाचात्रमसतापहारी स बल्लभः पातु दयादृशा नः ॥१९॥
 गुणानगण्यान्विदुषामवर्णान्नासेश्वरानुग्रहपण्यलभ्यान् ।
 संख्यातुमीष्टे नहि कोऽपि यस्य स बल्लभः पातु दयादृशा नः ॥२०॥
 माहात्म्यपूर्णं चरितं यदीयं भक्तिं निजे वर्धयते, श्रुतोक्तम् ।
 आदर्शरूपं निजसेवकेषु स बल्लभः पातु दयादृशा नः ॥२१॥
 य आत्मकामः परिपूर्णरूपः कर्मणि चक्रे निजदंशदेतोः ।
 अङ्गीचकारेह निजान्प्रमेयात् स बल्लभः पातु दयादृशा नः ॥२२॥
 प्राप्तं बिलोक्य व्यसनाख्यभक्तिं स्याच्चेद् गृहत्यागरतस्त्वपक्वः ।
 वसेद् इरिस्थान इदं य ऊचे स बल्लभः पातु दयादृशा नः ॥२३॥
 विभाषं कार्यं निजसेवकानामाज्ञां व्रजेऽस्य च पालयित्वा ।
 विष्णोर्विषोऽगाय जहौ समं यः स बल्लभः पातु दयादृशा नः ॥२४॥

भ्लेच्छा नृपाला बहवोऽत्र वादा दैवा अभूवन्भुवि कांदिशोकाः ।
तदावतीर्येह ररक्ष यस्तान् स बल्लभः पातु दयादृशा नः ॥२५॥
यो मोहयामास निजैर्भ्रैर्यरागतानामुरजीववृन्दान् ।
विराजमानोऽपि निजेषु नित्यं स बल्लभः पातु दयादृशा नः ॥२६॥
धर्मद्विषां नैकाविधैः कुतर्कदैवे क्षितौ मज्जन्ति संशयाब्धौ ।
अलौकिकाग्निः पुरोत्तमो यः स बल्लभः पातु दयादृशा नः ॥२७॥
ज्ञानं न चास्मासु दृढा न भक्तिर्न वाश्रयः कर्मबलं न योगः ।
स्वीयत्वमालोक्य दयानिधिर्यः स बल्लभः पातु दयादृशा नः ॥२८॥
मानादिदोषान् दह बल्लभाग्ने स्वभक्तगान्तमति पदं विशृद्धाः ।
क्षिप्रं भवेयुश्च यथार्थदीना दासानुदासाश्चरितेऽपि ते नृपः ॥२९॥
दैन्यामृतं सिद्ध दयानिधे त्वं भक्ते निजे साम्प्रतिके कृपातः ।
यन्नामसेवां तत्र रूपसेवां कृत्वा मिथोऽनन्तमुखं लभेत ॥३०॥
श्रीवल्लभाचार्यकुलावतंसः श्रीकृष्णचन्द्राङ्घ्रिसरोजभृङ्गः ।
कृपामकार्पीदनिकुललालः श्रीदेवकृष्णात्मजदुर्लभेऽस्मिन् ॥३१॥
यद्वल्लभाचार्यगुणान्गृणाति तद्वाक्यमुधास्वादलवं तथैति ।
सर्वस्य बीजं गुरुदृष्टिपातो नक्षम्पतेऽयं हृदि तत्पद्माब्जम् ॥३२॥
श्रीवल्लभीयान्तरमध्यवर्तिश्रीवल्लभीयाङ्घ्रिसरोजयोधं ।
सुवाक्यपुष्पाञ्जलिमर्पयामि श्रीवल्लभानुग्रहचाञ्छयाऽहम् ॥३३॥

॥ इति श्रीमद्वल्लभविशुद्धपद्मपरागकण्डिषुः श्रीत्वाजिराजसंस्कृतशालाव्यापको भद्रश्रीदेवकृष्णा-
त्मजदुर्लभशाली श्रीवल्लभप्रभुप्रार्थनामकार्पात् ॥

प्राचीन कीर्तन.

राग सारंग ॥ गहवर वन सघन कुंच माघि. खसखानो रच्यो अंतर गुलाबकी सुगंध
सुखकारी ॥ माघकी मधरात जेसी व्येष्ट दुपहरी आली मान कर बेठी तोय लज नहीं प्यारी ॥१॥
अदभुत बदनचंद तेरो कह्यो किधौ न माने मेरो उत्तार की रावरी गुलाबजल सुखकारी ॥ छिरकी
प्रीतम अंतर चित्र सारी ब्रजाधीस प्रसुको बदनकमल निरखि बलिहारी ॥

राग नट ॥ कहा करुं बिच जमुना बादी ॥ परली-पार स्याम मुरली बजावत उली पार
। टाडी ॥१॥ कांध कमरियां हाथ लकुरिया रहतु सदाही आदो ॥ तानसेनके प्रभु बहुनायक
कस कराडे टाडा ॥२॥

[संग्रहकर्ता वैष्णव (फणवी) बहालजी ज्ञाना केसोदवात्राना भगवत्संमरण.]

श्रीपद्मनाभदासजीके पद.

श्रीवृंदावन रम्यक रसदानी

श्रीवल्लभपद कंज माधुरी तिनकुं जिन अलि यहाँ रुचि मानी ॥१॥

भूविलास अंतःपुर गह्वर रासस्थली दगन दरसानी ॥

नंद सनु मुख अवधि यहाँ लॉ मंडल जोर पासरठ पानी ॥२॥

वागधीश युवजन रसमूली मधुराई मुरली मयु जानी ॥

अटपटी बात लपेट बहुत सखि, सुरसावत सच प्रज अरुजानी ॥३॥

अंतरंग बहिरंग प्रसंगित, मयुर मधुर बंसी गुन गानी ॥

सत्प्रध व्हे प्रगट केलि जे, प्रचुर करी सखि बहुत संयानी ॥४॥

नखशिखाप संकुलित विविधि निधि, कृपाप्रधि सम्यक् मुखजानी ॥

सन्मुख भये नेह वरदेश्वर, पावै पुलिन ठोरे की ठानी ॥५॥

भूखनभाव बसन पट पेहेरे, ललितं घटा गहरानी ॥

दशनखचंद्र किरन रंजित व्हे, पद्मनाभ अखियों अरुजानी ॥६॥

या कीर्तनमें श्रीवृंदावन रम्यक केवल धर्मी भगवान तथा गोपीजनके सुखकी अवधिको (१) और या अवधिको स्थान जो श्रीमहाप्रभुजी हे तिनके स्वरूपको (२) तथा ये धर्मी स्वरूपको जाकुं आप दान करत हे, ऐसे जो अधिकारी भक्त हे तिनके स्वरूपको (३); ऐसे तीन प्रकारको यहाँ वर्णन हे । सो कहत हे ॥ वृंदावन इति । प्रथम वृंदावन जो हे सो अमुरसंबंधी भूमि हे । वामें भी धीसंधंधी-अत्यंत निकृष्ट—एसी होयके भी भगवानके चरणारविन्दके स्पर्शसें श्रीयुत होय पृथ्वीकी कीर्तिकुं चिख्यात करत हे । अर्थात् वैकुण्ठसों भी अधिक हे । ऐसे वृंदावनकुं श्रीयमुनाजी सहित भगवान पद्मगुणयुक्त करके अर्थात् अपने समान करके वापें आप रमण करत हैं । ऐसे जो धर्मी भगवानको दशरसयुक्त स्वरूप जो हे ताको आप दान करत हे ॥ यातें दानी पद कह्यो । दानी कहेवेसों जेसैं अपनी सत्ताकी जो वस्तु हे, वा वस्तुपें पर सत्ता—संपादन करावे, वाहीकुं दान कहत हे । ऐसे श्रीवल्लभ हे । वामें श्रौं जतायों जो वृंदावनकी स्मणीय जो भगवल्लीला हे सो सच श्रीमहा-प्रभुजीकी सत्ता की है । बाको आप दान करत हे यह सूचित कीनो । अब या लीलामय रसस्वरूपके दानके अधिकारी जो भक्त हे तिनको स्वरूप कहत हे—श्रीवल्लभपद इति ॥ श्री कहिये स्वामिन्यादिभाव करिके युक्त । वल्लभ कहिये युगल स्वरूपको अत्यंत प्रिय । ऐसे जो श्रीवल्लभ इनके चरणकमलकी माधुरी—मधुरमकरंद—ताकुं जिन भक्तनने अलि-भ्रमर—रूपसों रुचि मानी ताकुं ही रसदान करत हैं ॥ रुचि मानी कहियेसों जेसे भोजनमें रुचि होय तवही स्वाद आवे, ओर रुचि तो जठराग्नि प्रवळ बिना होय नहि, ओर जठराग्नि हे सो भीतरकी वस्तु हे,

तेसे अंतःकरणमें विरहकी प्रवृत्ति होय अर्थात् तीव्र व्यसन होयवेसों चरणकमलके मकरंदमें रुचि होय। तबही रसको स्वाद आवे, यातें रुचि कह्यै। मानी पद कबो तासों जो बुद्धिपुरःसर चरण-कमलकी ही माने वेई दानके अधिकारी हे। यहां पद कबो तासों अंगुलीनिर्देश करके प्रत्यक्ष निकट ही चरणकमल दिखाये, दूर नहीं। अलिपदसों अन्य पुष्पको अभाव सूचित कीनो। काष्ण कमलपुष्प विना अन्य पुष्पमें अलिकुं उत्तम प्रकारकी मधुरताको अभाव हे। अथवा अलिपद सों रस जहांसों नाशकुं नहि प्राप्त होय हे, अथवा जिनसों रस नाशकुं नहि पावत हे सो अलि कबो जाय। यातें अनन्यताको पूर्णभाव सूचित कीनो। पदकंज कबो तासों—कं—जो मुख, जहां सो जन्म्यो हे एसो जो पद अर्थात् मुखको मूल हे, जहां दुःखको अभाव हे, ऐसे पदकंज पर जाने अलिरूपसों रुचि मानी हे। ताहीहुं श्रीवृन्दाधनरम्यक—जो पूर्णपुरुषोत्तम केवलधर्मी स्वरूप रस-रूप हे, ताको ही आप दान करत हे, अन्य स्वरूपको नहि। अथवा अन्य जो अलिरूप पूर्ण अधिकारी व्यतिरिक्त जो हे ताकुं भी नहि यह सूचित कीनो वामें सप्रेमभक्तिरसता प्रगट दिखाई। अब उपर कहे ऐसे भक्तुं ऐसे स्वरूपको दान करत हे। ऐसे जो दानी हे, उनके स्वरूपको वर्णन करत हे भूविलास इति ॥ श्रीमहाप्रभुजीको प्रथम तीन अंगको—१ भू, २ अंतःकरण तथा ३ नेत्रकमल। इन तीनों ठिकाने जो भाव दरस रह्यो हे ताको कहत हे। भू भगवानके विलास करवेको स्थान हे। अंतःकरण एसो गहन हे, अर्थात् अत्यंत गहरो—विस्तारवारो हे कि जहां ब्रजभक्तनसहित भगवानको निवासस्थान हे। याहीतें पुर कहिके वर्णन कीनो। ओर नेत्र रासलीला करवेको स्थान हे। रासरसको जहां समूह हे यह स्थली पद कबो तासों स्थली जो अहमिम, भूमि बनी बनाई नहि, अर्थात् स्वतःसिद्ध भूमि जो हे बाहिकुं स्थली कहत हे। यामें यह जतायो जो श्रीमहाप्रभुजीके नेत्रकमल तथा अंतःकरणरूप स्थलीमें सदा सर्वकाल भगवान ब्रजभक्तनसहित विलास कर रहे हे यह सूचित कीनो। या प्रकार श्रीमहाप्रभुजीके तीन अंगको भाव पद्मनाभदासजीकुं दृश्यमान होय रह्यो हे, यातें दर्शनी एसो कबो। अब भगवानके सुखकी अवधिको कहत हे नंदमूनु इति ॥ जेसे अमरगीतमें लक्ष्मणजीने गोपीजनकी स्तुति कीनी हे, तामें प्रथम ब्रह्मकल्पतें भक्ति प्रवृत्त भई, तब सों लगाय भक्तिकी अवधि—सीमा—गोपीजन ताई दिखाई। तेसे पद्मनाभदासजीने भी भक्तजनसों भगवानकुं जो सुख प्राप्त होय हे, ताकी यहां अवधि दिखाई। अवधि कही तासों रासलीलैक-तात्पर्याय नमः यह श्रीप्रभुचरणने आज्ञा करी हे या अर्थ के भावमायित होय भगवानके सुखकी जामें अवधि हे एसो भी रासलीलाको तात्पर्य हे, अर्थात् भगवानने प्रत्येक अवतारमें प्रत्येक भक्तनके लिये जूदो जूदो रूप धरिके एक एक कार्य कीनो। अथवा एक रूपसों अनेक कार्य करके प्रांठे अंतर्धान भये। अर्थात् भक्तको दुःख मिटाय—उतनोहि सुख मान अंतर्धान भये, परन्तु कोई भक्तनसों कोई अवतारमें भगवानकुं पूर्ण सुख प्राप्त भयो नहि। ओर यहां तो आप

स्वतः सुख होय के भी अत्यंत सुख मिलवेकी इच्छाके अर्थ ब्रजभक्तनके साथ अनेक रूप धारण करके बारंबार रासलीला करके यह जतावत हे जो मोकुं यहां बिना अन्यत्र कहुं भी सुख नहीं हे, यह विरुद्ध धर्म करके अदभुतरसता दिखाइ । यातें सुखकी अवधि कही । नंदसूनु सुख ऐसे कछो तासों नंदरायजीकुं पुत्रभावसों आनंदकर्ता यह एकदेशी भाव जतायो । अथवा नंद कहीये आनंद. सूनु—पुत्र अर्थात् आनंदपुत्र ऐसे कहिवेसो जहां भक्तके हृदयमें भगवदानंद प्रगट होत हे तहां ही भगवानको प्राकट्य होत हे । यह सर्वदेशी भाव जतायो । आनंदरूप होय के भी भक्तनतांइ सुखकी अवधि मानत हे । यातें सुखकी अवधि यहां तांइ हे अन्यत्र नहि हे । याहीतें यहां छे पद हे । ताहीकुं पद्मनाभदासजी कहत हे को छे । यह अंगुलि—निर्देश करके यहां—निकट ही—भगवानके सुखकी अवधिको स्थान श्रीमहाप्रभुजी हे, तानकुं छे कहीये वा आनंदरूप स्थानको ग्रहण करो, या प्रकार जीव पर कृपा करत हे । यामें करुणारसना सूचित कीनी । या प्रकार आनंदको अवधिके अंतर्भाव दिखायके अब बहिर्भाव दिखावत हे—मंडल ओर पास रुहपानी—रुह—कमल पानी—हस्त—अर्थात् जैसे रासलीलापें हस्तकमलको मंडल होय ता प्रकार नेत्रकमलके प्रकाशको मंडल हे । ओर पास कछो तासुं भ्रुकुटिसो लगाय हृदयकमल तांइ परितः रासस्थलीको मंडल हे । अथवा श्रीमहाप्रभुजीको भ्रूसों लगाय हृदयकमल तांइको जो भाग हे सो आदि वृंदावनरूप हे । ओर वाके मध्यमें जो नेत्रकमल हे तामें आनंदकी निधि भगवान ब्रजभक्तन सहित सर्वकाल रासलीला करत हे । याहीतें भ्रूःकाल, अर्थात् सर्वकाल रास-लीला आनंद विलस रहे हे; यह सूचित कीनी । अथवा भगवानके सुखकी अवधि श्रीमहा-प्रभुजी तांइ हे । याहीतें भगवान यहां ही निवास करत हे; यह सूचित कीनी ॥ [अपूर्ण.]

वचनामृत.

[नित्यलीलास्थ गोस्वामी श्रीगोवर्धनलालजीं महाराजके यह वचनामृत विनके श्रीप्रेमिजीने लिखे हे ।]

तृतीय वचनामृत—एक समें श्रीकृष्णजी महाराजने ऐसें आज्ञा करी जो आपुने श्रीलाडिलेराजीके स्वरूपको भाव श्रीलाडिलेराजीके नामपेंसुंदी प्रगट दोखे हे । तब हमने पूर्वी जो आप आज्ञा करो, तब हमकुं खबर पडे । तब आपने आज्ञा करी जो लाडिली जो श्रीस्वामि-नीजी, तिनके ईश नाम पति भये. सो कोनसे समें? एक समय श्रीनंदरायजीकी गाय खोय गइ । ताकुं हेरेवेकुं श्रीनंदरायजी आप पधारे । तिनके संग हठ करिके बालक बालमावकी नांइ श्रीठाकुरजी पधारे । या समें गायकुं हेरेते हेरेते सांजे पड गइ । सूर्य अस्त होय गयो । ओर मेघकी श्याम घटा चहुंदिस छइ गई । ओर चौरों आडी वीजली चमकवे लग गई । ओर मेघ भी खूब वरसवे लग्यो । तब श्रीनंदरायजीने मनमें विचार्यो, जो यह बालक संग हे, सो छपेगो, सो कोनके संग

वाक्य धर भेजनों : यहाँ कीइ मनुष्ये दीसत नाही । ऐसे विचार करिके बहुत चिन्तामें मन लग गयो । ताही समें श्रीस्वामिनीजी रावलमें विराजते हते । सो विनकुं श्रीनंदरायजीनें बुलाये । तब आप पास आये । तब नंदरायजीनें कही, बेटी राधिका, इतना काम करो के या कहैयाकुं हमारे घर बाकी मांके पास पहुँचाय आओ । तब श्रीस्वामिनीजीने कही, हां हां लओ, बडे प्रेमसुं बहोत जतन करीकें घर पहुँचाय आयुंगी । आप निश्चित रहो । ऐसे कही के श्रीस्वामिनीजी प्रभुनकुं गोदमें पधरायकें चले । रस्तामें आपथी स्वामिनीजी मनमें विचार करवे लगे, जो घर बहुत सुंदर है; परंतु छोटी है, सो कैसे न्याहो जाय ? मैं बहुत बड़ी होय गइ । ऐसं मनमें विचार करवे लगे, तब प्रभु अंतर्गामी होय गये । सो श्रीस्वामिनीजीके हृदयकी जानी । आपथी स्वामिनीजीके बरोबर होय गये । फेर श्रीस्वामिनीजीको मनोरथ पूर्ण कीनो । फेर आप वाक्य होय गये । तब श्रीस्वामिनीजीने, नंदरायजीके घर प्रभुनको पहुंचाय दीप, और श्रीयशोदाजीसुं कही, के मैं बडे जतनसुं प्रभुनकुं पधराइ लाई हुं, सो आप जतन करकें राखो । एसे कहिकें श्रीस्वामिनीजी घर पधारे । सो स्वरूप श्रीलाडीलेशजी है । सो जो क्षत्रांगी वैष्णव महावनमें रहत हती, उनकुं चार स्वरूप प्राप्त भये हते । स्वरूपनके नाम एक श्रीलाडीलेशजी, दुसरे श्रीललितप्रियंगीरायजी, और तिसरे श्रीगोकुलचंद्रमाजी, और चौथे श्रीनवनीतप्रियाजी, सो तामें सुं श्रीलाडीलेशजी तो जीयादासके मांथे श्रीमहाप्रभुजीनें पधराय दीये । सो विनने चार पहर सेवाकर कर देह थकी ओर लीलामें प्राप्त भये । तब फेर श्रीमहाप्रभुजीके घर पधारे । सो स्वरूप श्रीलाडीलेशजी, सो श्रीवाल्क्यजीकुं श्रीदारिकानाथजी पधराय दीये । तब विनके संग श्रीगुसांनजीने, श्रीलाडीलेशजीहु पधराय दीये । सो स्वरूप रानपुरमें विराजत हते, श्रीगोकुलनाथजी बेरावल पधराय लाये । सो वार्ता पहले लीखाइ है ।

इति श्रीगोवर्धनलालजी महाराजको तृतीय वचनामृत संग्रह.

चतुर्थ वचनामृत—एकदिन श्रीकृष्णजी महाराजने ऐसं आज्ञा करी । जो अनुने उपर श्रीलाडीलेशजी विराजे है, जो बडो प्रतापी स्वरूप है । एकदिन हमारे श्रीदादाजी महाराजकुं आपने स्वप्नमें आज्ञा करी, जो हमकुं राजभोगमें स्वीक्रे संग मोनकी पुरी धर्यो करो । सो आपने न मानी और परदेशकुं पधारे । पाछलसुं मंदिरमें चोरी भई । आभरण सब चोरीमें गए, तिलक कंठी सब गये । आपकुं तार करके पधराये । फेर आपने पंचाशत स्नान करवायकें आपने छ गहेना तोड़के सब आभरण बनवाये । तब फेर श्रीलाडीलेशजीने आज्ञा करी, के तुमने मोनकी पुरी नहीं आरोगाई । तासुं हमने चोरी करवाई तब फेर श्रीदादाजी महाराजने मोनकी पुरी आरोगाई ऐसं तामसी प्रभु है । और एक समे एक भीतरीयाने मोनथारकी सामग्री चांदीके थारमें ढाली हती, सो वा भीतरीयाकी बुद्धि बीगडी, सो थार सामग्री सब चोरके घर ले गयो । और एक मलयनीकुं दे दीयो सो आपने वृंदावन मुखीयाजी तथा जीणा अधिकारीकुं स्वप्नमें जताइ ।

જો મેરે આરોગે વિના વો મોનથાર લે ગયો । સો મોનથાર વા મઝાયાનીકે ઘર હૈ, તો તુમ અમી જાઓ તો મિલે । ફેર વાઝ સમેં વે ગયે । સો વાકે કીનાઢ રુલ ગયે । ઓર વાકું ધમકાયો, તવ વાને થાર દે દીયો । આપો વિનને, વામેં તે સ્વાય લીંયો હતો, ઔર જો આપો હતો સો સમુદ્રમેં પટક દીયો ઔર સુતારકે પાસ થાર ડજરવાયો, ઔર પાદે થાર મંદિરમેં ધવોં ઔર એક સમેં મંદિરકે પરિચારકને માલામેંતે તોન મોતી ચના ચના જીતને સો-લેકેં રેલમેં વૈઠકે કેશોદ ડતયાં, સો વાત શ્રીલાહીરજીને જાંળા અપ્યારુ તથા મુસ્લીયાજીકું સ્વપ્નમેં જતાર્દ । જો વો પરિચારક મેરે તોન મોતી લેકેં ભાગ ગયો હે । સો કેશોદમેં હે । તુમ જાયકેં અવી પકડો । મોતી મિલ જાયમેં । વાઝ સમેં રેલમેં વૈઠકે કેશોદ ગયે । વઝ દુસરે ઠિકાને જાયવેકેં લીંયે રેલમેં વૈઠવેકું આયો, સો વાહી સમેં સ્ટેશનપે પકડ્યો, ઔર વાકે શોલામેં તે મોતી સોલકેં લે આયે । એક સમેં જાંળા અપ્યારુકે સ્વાયવેકેં ઘીંયે તમાકું મંગાર્દ હતી, સો ઉપર છતપે સુન્ઘાર્દ હતી, સો આપકું વાસ આઝ । સો સિદ્ધીપે તે દક આયો સો ગિર પડ્યો ઔર સ્વપ્નમેં આજ્ઞા કરી, જો તુમારી તમાકું કી વાસ વહુત આવત હૈ । સો તમાકુ મત સુકાયા કરો । તાદિનહું તમાકુ સ્નાનો છોડો દીયો । ઔર એક સમેં શ્રીગુણ્ડીજીકે ડસવકેં દિના જલેલી કી સામગ્રીકો થાર મીતરીયા ભોગ પધરાયકેં લયો । સો રાજભોગ આયે હતે । સો તાતી તાતી જલેલી હતી । સો મીતરીયાનેં એક લેકેં મોઢેમેં ડારી । તાહી વોરીયાં આપને વાકું ચમચા માયોં, સો વહારતાર્દ ચટકા મુચ્યો । વાકો મોઢો ટેડો હે ગયો । સો જીયો તહાં તાર્દ રહ્યો । ફેર રાજભોગ સચ છી ગયો, ઔર ફેર સામગ્રી કરી તવ રાજભોગ આયે । ઔર વા મીતરીયાકું રજા દીની । ઔર એક સમેં જાંળા અપ્યારુસું તથા મુસ્લીયાજીસું સ્વપ્નમેં આજ્ઞા કરી । જો યહાં મંદિરકે સામને એક શ્રાવકકો ઘર હતો, તહાં છતપે ટોકરામેં ઘાલ બોયે હૈ । (વાચ્યો છે.) સો વાકો સગમ માજી વહુત અચ્છી ડગી હૈ । સો જાયકે રાજભોગમેં તવ વા વીરીયાં દોઝ જન ગયે । વહાં જાયકેં વાકું જગાયો, ઔર વાસું કહી જો તુમ્હારે યહાં છતપે વાલકી માજી ડગી હે, સો હમકું દેવો । હમકું એસી આજ્ઞા મર્દ હૈ । વાત મુનકે વાકું આશ્ચર્ય મયો, ઔર માજી દીની ઔર વાને કહી, જો તુમ્હારે શ્રીઠાકુરજી એસે વાતે કરે હૈ, સો હમકુંમી દૈવ્યગ કરો । ફેર હમારે દાદાજી મહારાજ પધારે તવ બૈયગવ મયે એસે, એસે વહુત ચરિત્ર હૈ સો કહાં તાર્દ લીંલે !

इति श्री चतुर्थ वचनामृत संपूण ॥

(અવધક્તા:-પરિવલ અમૃતલાલ મહુવાવાલે.)

ગોપીકૃપાસ-શ્રીકૃષ્ણશ્રી શ્રીકૃષ્ણાધીશના અધિધારીત ધર્મકૃપાના અનવરીત અનમર્દ પારેખે તથા માસમાં ગોપીકૃપાસ કર્યો બાલુને વૈષ્ણવને અનમર્દ મેદ થયો. સદ્ગત અનમર્દાએ સરકારી નોકરી-નાંથી પેન્શન લીધા પછી પેતાના ગુરુશ્રી શ્રીકૃષ્ણાધીની કન્યા સેવા કરી હતી, પ્રામાણિકતા તથા વીતિથી તેમણે વહીવટ ચલાવ્યો હતો અને કરકસર કરીને ગુરુશ્રીનાં વાત્ર પાષ તેવી ધોળગા કરી હતી. તેમના અમર્દમાં કેટલાં કર્યો તેા વાદનાર થયાં છે. પ્રશ્ન તેમને અમર્દ આનંદનું જ્ઞાન કે.

भक्तके दर्शन.

(लेखक:—श्रीयुक्त बेलजोनाई नयुजी मिर्छा, राजकोट.)

भक्तका अवतार भूतकालमें भी विद्यमान रहता है। यह कथन सत्य ही है। जैसे भगवद्-आर्तुर्भाव करणामूलक है, वैसे ही भक्त इस आर्यभूमिपर भक्तिका प्रभाव अचल स्तनके लिए अलौकिक देहसे विचरते रहते हैं। कथन मात्र हैं कि, भक्त लीलाप्रामिके पीछे भूमिपर नहीं रहते हैं। कथन है कि सब मर जाते हैं और भक्त नहीं मरते हैं। भक्त अचल और अमर हैं। कोई कहेगा कि ऐसा भक्त किस तरह मिल सकता है? और उसका दर्शन हम पा सकते हैं? इस बातपर हमको जो अनुभव हुआ है वह सब श्रीवल्लभमणि समक्ष कहकर कृतार्थ बनेंगे। भग्न, स्मार्त, त्रिभूति विद्यमान नहीं होती तो जगत्की उत्पत्ति, पालन, संहार कैसे हो सकता था? इसी तरह भक्तिके निर्वाहके लिये महानुभावोंका प्राकट्य भूतलपर अवश्य होना ही चाहिये। परंतु उस भक्तका दर्शन करना सहज बात नहीं है। जिसको वे कृपाकर दर्शन देते हैं, वही दर्शन पा लेते हैं, अब कौन भक्त है इसकी पहिचान कैसे होती है? इस प्रश्नमें जानना चाहिये कि, प्राचीन भक्त चरित्र मनन कर, उसीका स्वरूप हृदयपर बना लेना चाहिए। फिर कभी मौका मिल जाता तो पहचान अवश्य पड़ती है। संवत् १९४४ की सालकी बात है। मैया पुरुषोत्तमदास पीताम्बर-दास बड़े भक्त थे। सात सात बार माय दुग्ध आहार कर श्रीनरनागवत्जी कि सगाह की थी। हम और इनका स्नेहसंबंध-अवर्ण्य था। हम दोनों हरताल श्रीगुरुचरनके जन्मदिन पर जुनागढ़ जाते थे। उपर लिखी भई सालमें हम जानेके लिये तैयार हुए। उस समय एक महापुरुष घरपर/ लाय गये। उम्र बरस भद्रह—सौटकी थी। पासमें एक कन्तानकी बालरी और छोटासा पुस्तक, एक पुरुषोत्तमसहस्रनामका था। सिवा कुछ चीज न थी। पहिनी हुई छोटीसी घोती और ऊढनेके लिये पुरानासा उपरना था। एक दिन रहे, और हमने जुनागढ़ चले समय उनसे कहा—आप हमारे संग चलोगे? तब आनेके लिये कञ्चल दी, उस समय रेल चलती नहीं थी। एक बैगगाड़ी किराया ले ली थी। हम लोग गाड़ीमें बैठ गये। भक्तकी बैठनेके लिये विनक्ति की। तब भक्तने जाही कर दी। वे तो गाड़ीकी साथ पैरसे चलने लगे। हम दो फोस गये तब भक्तने और गौदकी तरफ चल दिया। हमने कहा—कहां जाओगे? उनने कहा—अब हाल भाड़ेगा। हम दो फोस आगे बढे, इतनेमें न मालूम किसी औरसे आ गये। गाड़ीकी पास खडे देसे। इसी तरह तिन दिनमें सात-आठ दफा ऐसा कौतुक दिख पडा। हम लोग सोचने लगे कि वे कोई काश्मिक अवश्य होंगे। फिर न मालूम कौन थे?

जुनागढ़ पहुंचे। महामत्त राजनाराय वैष्णव विभुवनदासजीके यहां ठहरे। दूसरे दिन प्रातःकाल श्रीनारायणभुजीकी बैठकमें जानेके लिये पाँवसे चल्नेका शुरु किया। भक्त भी साथ थे,

बैठकजी पहुँचकर स्नानकर मंदिरमें आपके सान्निध्य पहुँचे। दर्शन किया, भक्त स्नान करते थे। दंडोत्तर हमने शरीजी भरनेको सोचा। मुखियाजीने कृपाकर शरीजी भरनेकी सेवा दी।

भक्त भीतर आकर श्रीमहाप्रभुजीके स्वरूपमें विर्लीन हो गये। कुछ विलक्षण दशामें थे। वे वहां स्थित हुए नेत्रोंसे आंसु टपका रहे थे। वृक्ष की तरह वे तो वहां ही जम गये। हम लोग सब सेवा पहुँच चुके थे। आधा घंटौ हो गया, फिर भक्तने अपने नेत्र प्रमुर्की औरसे नेक भी हटाया नहीं। हम बाहर आये। चलनेके समय कहा—वे तो तुरत दंडवत् करने लग गये। दंडवत् करते बेहोश हो गये। हम हाथ पकड़ बाहर लाये। थोड़ी देरमें कुछ सचेत हुए। राजभोग आरती हुई। मुखियाजीने प्रसाद लेनेके लिये कहा। पोतना कर गये। अवराधृत पधराये वही दिन मीठी कचोरी आरोगे थे। अद्भुत स्वाद था। भक्त पासमें बैठे थे। हम लोग प्रसाद पाने लगे। भक्त चार प्रास ले खड़े हो गये। हम दोनों भैया, भैयाकी महतारी और बहुत विचारने लगे कि, रास्तेमें भी विलकुल कुब्ध नहीं पाया। और इहां भी नहीं लिया। मालूम नहीं, कौन है? हम प्रसाद लेकर कपड़े पहननेकी तैयारी करते थे, इतनेमें भक्तने चढ़ दिया। हम बिना कपड़ा पहने पीछे गये। वे तो रेवतीकुंडकी पश्चिमकी खाईमें उतर पड़े। हम भी पीछे उतरे वहां गड़ेरा जंगल है। पथर और वृक्षसे पूर्ण है। रास्ता उपर जानेका भी नहीं था, और भक्त पर्वतके उपर बिना रास्त चलने लगे। हमने बहुत निषेध किया; बाबा उपर मत जाओ, बड़ा भारी जंगल है, हिंसक प्राणी भी बहुत रहते हैं। ऐसे बहुत विज्ञापन किया। भक्तने एक भी नहीं सुना। पथरोंपर पैर देते देते एक घंटामें उपर पहुँचे। हम तो सामने देखते ही रह गये। हम दोनों फेर घीघाईके रोने लगे। बहुत पुकारा। कुछ नहीं सुना, और वे पहाड़की उपर चले गये। हम बैठकजीमें आये। बहू और महतारी चित्तमें रहे थे। इतनी देर कहां ठहरे होंगे? हमको आते देख दोनोंमें जी आया। “अरे तुम दोनों घंटा देढ़ घंटा तक बिना कपड़ा पहने कहां गये थे? हमने सब वृत्तांत सुनाया, तब उनको भी बड़ा दुःख हुआ; सांजके पांच बजे मंदिर आये। महाराजश्रीकुं सब बात सुनाई। आपने आज्ञा की किनुन्हारे भाग्यबलसे दर्शन मिले। चौरासी भक्त सदैव भूतकालपर आविर्भूत हैं। किसी वस्त्र दर्शन प्राप्त हो जाता है। भक्त त्रिभुवनदासजीने कृष्णदास मेघनका कहा। राजकोटमें नारायणदासजीसे बात की, इन्हें श्रीशुक-देवजीका दरसन वतलया। इससे निश्चित है कि, भक्तका प्रादुर्भाव भूतकालपर सदैव रहता है। जहांपर धर्मीका प्राकट्य हो वहांपर धर्म क्यों न हो? वह भक्तके दर्शनका लाभ हमारे श्रीगुरुचरण समीप जानेका था। गुरुकी कृपाके आगे सर्व अलौकिक फल अवश्य सामने आकर रहते हैं।

દ્વિતીય પદનો અર્થ.

શ્રીવૃંદાવનમાં સુંદર રસનું દાન કરનાર આપ શ્રીવલ્લભપ્રિયાજ છે, તેથી તેની પ્રાપ્તિને અર્થે સર્વ સખીજનની રુચિ આપશ્રીના ચરણકમલમાંજ લાગી રહે છે. હવે સુંદર શ્રીવૃંદાવન, જે પ્રિયતમના રસરાસનુંજ સ્થલ છે, જેથી તેનું સૌંદર્ય સહજસિદ્ધજ હોય. જ્યાં સકલ સામગ્રી સૌંદર્યજ હોય. આપ વલ્લભા છે. જેથી જ્યાં સર્વત્ર વલ્લભ હોય તેજ વલ્લભ કહેવાય. તેમ આપને સર્વ સખીયો ખડુ પ્રિય છે. જેથી તેમની પણ સૌભાગ્યસિદ્ધિને અર્થે આપ રમ્યક રસનું દાન પ્રાપ્ત કરાવે છે. આપ રસાધિષ્ઠાત્રી હોવાથી અને આપજ સર્વ રસનાં કારણભૂત હોવાથી રમ્યક ગદ્યા પ્રકારે રસનું દાન નિજવત્ સ્વસખીઓને પ્રાપ્ત કરાવે છે. એ રમ્યક રસની પ્રાપ્તિમાં આપના ચરણકમળની રુચિજ કારણરૂપ છે, જેથી સ્વસખીયો આપનાં હૃદયગત સૌંદર્યનું ધ્યાન નખથી તે શિખાપર્યંત ફરી રહે છે, અથવા ભૂતળના પ્રાકટ્યે પણ એ રમ્યક રસપ્રાપ્તિ એ ચરણચરણ વિના કદી થઈ શકતી નથી. અથવા એમ ભાવ પણ પ્રાપ્ત થાય છે કે જ્યાં એ કમળ હોય ત્યાં અલ્પ જ્વર પણ હોય, કમળ પ્રત્યે જ્વરનું સહજપ્રિયત્વ હોય છે. તેમને મકરંદ પ્રત્યેજ રુચિ હોય છે. તેમ તે ભક્તરૂપ છે. જ્વર ચરણકમળના મકરંદ તરફ લોભાઈ રહ્યા છે. હવે એથી પણ આગળ વિશેષ કૃણ સૂચન કરે છે.

જ્યાં આપનો વિદ્યાસ સદાને માટે અન્તઃપુર જે રાસસ્થલી તેજ હૃદયગત અને હૃદયગત રહી આવે છે. અથવા પ્રભુનું અન્તઃપુર જે હૃદય તેની અને ભૂવિદ્યા-સની રસમાધુરીની પ્રાપ્તિ સ્વઅતરંગ સખીજનને રમ્યક રસની પ્રાપ્તિ આ પ્રમાણે કરાવે છે, કેમ કે ગહવર રાસસ્થિતિ ગત્યવી છે. ગહવર હોય ત્યાં કોઈની ગમ્ય નજ હોય, તેને ગમ્ય કરાવનાર શ્રીવલ્લભાજ છે, વળી અન્તઃપુર જનાનો કહેવાય. ત્યાં પ્રવેશની દુર્લભતાજ હોય છે, ત્યાં તે અન્તરંગ હાસદાસી સહભાવે એ સ્થલ સોહામણું હોય (રમ્યક-હોય). વળી રાસસ્થલી કહી છે. જ્યાં રસદાનની પ્રાપ્તિ થતી હોય, એ રાસસ્થલી કહેવાય, વળી જ્યાં રસની અવધિ હોય, જ્યાં ઉદીપન વિભાવાદિ હાસ્ય, કટાક્ષમોહ હોય.

જ્યાં ભક્ત પર સદા કૃપાકટાક્ષથી સ્નેહરસની ઝડી વરસી રહી હોય. જ્યાં મંડલ ભેર પાસ રુદ્રપાની, જ્યાં શ્રી પ્રિયા પ્રિયતમ મંડળ ભેડીને સંગમાં બિરાજ રહ્યાં હોય. આસપાસ નિત્યસિદ્ધા શ્રીચંદ્રાવલીજ શ્રીલલિતાજ શ્રીવિશાખાજ આદિક મંડલમધ્ય સુગત સ્વરૂપ ગલ ઘોંઘ દઈને બિરાજ રહ્યાં હોય. ત્યાંજ સકલ સુખ અવધિ કહી શકાય.

વાગધીશ—શ્રીવલ્લભ (વાન્પતિર્વિવૃષેશ્વરઃ)

જે રસ ઉપર બતાવેલ નિત્યસિદ્ધાજને પ્રાપ્ત કરાવામાં પણ આપજ અને એજ રસ ભૂતલપર નિજપદરુચિકર ભક્તને પ્રાપ્ત કરાવે છે. જ્યાં જ્યાં આપ

સ્વધન્યએ જે જે જીવની એ ચરણકમળના પરાગમાં રુચિ અદૃશ્ય બની રહેલ હોય તેને ઉપરની લીલાનો અનુભવ પ્રાકૃત વિગ્રહે પણ આપ કરાવી આપે છે. જે દેહનું સૂચન પોતાની વાકસુધામાં બતાવ્યું છે. ૧. સેવાપયોગી અલૌકિક દેહ, ૨. સાયુજ્ય ૩. અલૌકિક સામર્થ્ય, તેથી એ રસપ્રાપ્તિનું મૂળ આપજ છે. આપનું શ્રીવિગ્રહ શ્રીવેણુજ છે. તેની લક્ષ્મીને તો સદાકાળ સુધાપિપાસાનું બની રહે છે. અને તે પ્રાપ્તિ શ્રીમદ્ગોકુલનાથસંગમસુધા. એ પ્રમાણુ મુજબ થાય છે.

આ અલૌકિક લીલારસવિષય છે, તેથી સખી સુરઝાવત સર્વનિજ લક્ષ્મીને જે જે લીલા યજ્ઞ પ્રત્યે અખંડરાસમંડલમાં થાય છે, તેજ લીલા આપ નિજવાણીથી એ રસપાનનું નિજ લક્ષ્મીને દાન કરે છે, જેમાં સ્વપ્રભુસંગ્રાંધી રહસ્યલીલા તે શ્રીસુબોધિનીજ દ્વારા (ઉચ્ચાર આનંદ તે અધિક દીપ્તિ) એ પ્રમાણુ વચનામૃત-દ્વારા સાક્ષાત્ સુખપ્રાપ્તિનો અનુભવ સિદ્ધ કરાવી આપ્યો.

ત્યારે શ્રીવેણુજનો નાદ થયો, ત્યારે પણ અતરંગ ને ગહિરંગ સર્વેએ શ્રવણ કર્યો, તથાપિ શ્રીવેણુસુધાસ્વરૂપનું દાન તો જેને જે જે પ્રસંગે થયું હતું, તેનેજ તે તો સુધાદ્વારા રસાત્મક સ્વરૂપનો પ્રાહ્નલાવ હૃદયગત થયો. તેમજ બીજે ભાવ વિચારીએ તો જે જે જીવોએ વેણુજનું શ્રવણ “ તાન ધ્યાન મુનિ. મધૂર રૂપે સાંભળે ધરી ધ્યાન, નિત્ય લીલા ગાન શ્રવણે કરે તે મધુપાન ” એના અમૃતનો સ્પર્શ માત્ર નિજ અંતરંગનેજ કરાવી આપ્યો. તેવીજ રીતે અત્રે પણ અતરંગ શ્રીપદનાભદ્રાજી સરીખા વિરલાનેજ એ રસપ્રાપ્તિ થઈ. તે દ્વારા અનેક જીવ એ ચરણચરણમાં પ્રીતિવાળા હતા, તેને એ લીલારસની પ્રાપ્તિ થઈ, સમરંધ્ર પ્રગટ કરીને સમ રંધ્રથી રસનો આર્વિભાવ થયો. રસાગમમાં સમછિદ્ર રસાગમ ઉદ્દીપનભાવ યોગ્ય છે, તેમ સકલ જીવના ઉદ્દીપનાર્થ શ્રીગુસાંઈજી (વેણુજી) તેના સમ રંધ્ર સમ બાલક દ્વારા અનેક જીવને એ રસદાન સુદૃઢ કરાવી આપ્યું જેમાં આપની સર્વ પ્રકારની અતુરાઈથીજ વિના અધિકારી નજ ગ્રહી શકે, અથવા એ ભાવ સ્વરૂપનું હૃદયગત ધ્યાન કરવાવાળા લાઘ્યનાન લક્ષ્મી બહુ સચાના હોય (અતુર હોય તેજ અતુરના રસને જાણી શકે.)

જે શ્રીમહાપ્રભુજીની કૃપા સર્વ અલૌકિક સુખને લાવનાર છે. કેમકે આપ સર્વે સુખપ્રાપ્તિમાં કારણરૂપ છે. વિવિધ ભાવમયસ્વરૂપ હોવાથી આવાંશુભૂષિતા મૂર્તિ છે. અનેક ભાવથી શોભતું અને સર્વ અંગ અંગ પ્રતિ લીલારસપરિપૂર્ણતા જેમાં છાઈ રહી છે. વળી લક્ષ્મીના કલ્પવૃક્ષ હોવાથી લક્ષ્મીમનોરથપૂરક છે, જે કોઈ જીવ સમસ્ત પદાર્થની સાથે સ્વનિવેદિતઆત્મા કરી ચરણકમલ સન્નુખ રહે તોજ આપ તો કૃપારૂપી ગાંઠ તેની પાસે જોલી દે છે. જે ગાંઠમાં સર્વ પ્રકારનાં સુખ સમાયેલાં છે. આવા નિજ જનને શું વર આપે છે? યમુનાપુલ્લિનકોર જહાં રાસસ્થલ છે, તે લીલાપ્રાપ્તિ કરાવી આપે છે.

ભાવનાજ સુખલુનો અંગીકાર કરીને મુંદર રસઘટા શ્રીમુખકમળ પર સદા બરાજમાન છે, એ ઘટા જેના પર દશભયચંદ્રની પ્રસન્નતા પ્રાપ્ત થાય, ત્યાં એ રસઘટા વરસે છે, એહી આશાનું સ્મરણ શ્રીપદનાભદ્રાચળ કરી રહ્યા છે. એથીજ આપના શ્રીમુખકમળ પર નિષ્ઠિ લાગી રહી છે.

મારવામી શ્રી૧૦૮ શ્રીદારકેશલાલજી પેદર્શદરવાળા શ્રીની કૃપા નિરંતર સ્મરણ કરવાને થએલી હોયથી તેજ પ્રભુએ મારી જીવિમાં પ્રવેશીને લખાવ્યું તેજ નિવેદન કર્યું છે. મ'પણું' પદ કમ સદ માળા: શુદ્ધાદેવ પારણ કરે એવી અભિલાષાને પ્રભુ ભગવદીપકૃપાથી પૂર્ણ કરો. દા. ઘ. વે. ન. મીચો.

નિત્યસીલારંધ મારવામી. શ્રી ૬ શ્રીપદપીઠાધીશ્વર શ્રીગિરિધરલાલજી મહારાજનાં

વચનામૃત.

(લેખક:-ભગવદીય વેલજીભાઈ કેશવજીભાઈ.)

સંવત ૧૯૭૨ ની સાલમાં શ્રીજગન્નરિકમામાં શ્રીગોપાલલાલજી (મથુરાંજી વાલા) ની આજે આપ બિરાજતા હતા. શ્રીગિરિરાજજીની તલેટીમાં મુરલિકુંડ ઉપર પાલમાં આપ બિરાજતા હતા. તે વખતે એક વૈષ્ણવે વિનતિ કરી જે મહારાજ, પ્રહ્મસંબંધ ધણાજ વૈષ્ણવને એકજ પંક્તિમાં એકજ વખતે આપ કરાવો છો, છતાં તેમાંના કોઈ વૈષ્ણવને અધિકભાવ હોય, કોઈને એછો ભાવ અને કોઈને સ્થિર હોય છે, તો એકજ હારે એકજ સમયમાં નિવેદન થયા છતાં ભાવમાં ન્યૂનાધિકતા કેમ દેખાય છે ? તે કૃપા કરીને આપશ્રીનાં વચનામૃતદ્વારા અમને દાન કરો.

આપશ્રી આજ્ઞા કરે છે:-પુષ્ટિમાર્ગમાં જેટલી આર્તિ તેટલું દાન. દરિયામાં છીપમાં મોતી પાડે છે; તે સ્વાતી નક્ષત્રનું જલ છીપમાં પડે છે, તેનાં મોતી ચાય છે. પણ તે છીપ સ્વાતિનું જલ લેવાને અતિઆતુર થઈને અધર ઉચ્છેદી મેળવે છે. તેમાં ઘણીજ હિચી કીમતનાં મોતી ચાય છે અને દરિયા ઉપરજ મોઢું ખુલ્લું રાખી જે છીપોત્પત્તી રહે છે; તેમાં પણ મોતી તો જરૂર ચાય છે, પણ આતુરતાથી જોઈ ચડી ત્યારે કઈ કીડાજાણી કીડીએમાં મોતી જેવાં જોઈ કીમતનાં મોતી તેમાં ચતાં નથી. સાધારણ કીમતનાં મોતી ચાય છે. સ્વાતીનું ખુદ લેનાર (કીડનાર) છીપોમાં તમામમાં મોતી તો ચોક્કસ ચાય છે. તેમજ આંહી જે પ્રભુસંબંધી આર્તિ કરે છે તેને વિશેષ ભાવનું દાન પ્રભુ કરે છે. પુષ્ટિમાર્ગમાં જેટલી આર્તિ એટલું દાન.

વૈષ્ણવ વિનતિ કરે છે:-હે કૃપાનાથ, આર્તિ જેટલું દાન તે તો મર્યાદામાં પણ છે. તેમ લોકિકમાં પણ છે, જેટલી મજુરી કરે તેટલું દ્રવ્ય લોકિકમાં પણ મળે છે. તો પુષ્ટિમાર્ગ જેટલે કેવલ અનુગ્રહ માર્ગ છે. તે શી રીતે ? તે કૃપા કરીને સમજાવો.

આપશ્રી વચનામૃત કરે છે. તમારે અનુગ્રહમાર્ગ (પુષ્ટિ માર્ગ) જોવાજ હોય તો હાથ (નિદ્રા) નો ત્યાગ કરવો તે શી રીતે ? જે ઘણા દિવસની ગાઢ નિદ્રા

એટલે બહુજ નિદ્રા આવેલી છે. જે હું ક્યાંનો છું છું? ક્યાંથી આવ્યો છું? તેનું બાન બુદ્ધાઈ ગયું એટલે જતું રહ્યું છે. તે તો તમે વધુવો જ્યારે સત્સંગ કરો છો ત્યારે સ્મરણ કરો છો એટલે તેટલોજ વખત તો તે નિદ્રા ઊડી જાય છે ખરી, પણ સાથે આલસનો પણ ત્યાગ કરવો જોઈએ. શ્રીઅનિરુદ્ધલાલજીએ વૈદિક માર્ગનિરીક્ષા નામના પુસ્તકમાં લખ્યું છે જે રાજાને જોલખવાથી રાજા પ્રસન્ન થતો નથી, જે રાજા અમુક રાજાનો પુત્ર છે, અમુક તિથિએ રાજાનો જન્મદિવસ છે, અમુક અવયવ રાજાના અમુક રીતના છે, અમુક લક્ષણવાળા છે; અમુક કામ ઉપર, અમુક રમત ઉપર, અમુક ખોરાક ઉપર રાજાને વિશેષ શોખ છે, એવી એવી અનેક રીતભાત પ્રકૃતિ રાજાની જાણવાથી રાજા પ્રસન્ન થતો નથી, પણ રાજાને પ્રસન્ન કરવાને તો પ્રત્યક્ષ રાજાના ગુણ ગાય, રાજાના દરેક કામને ટેકો આપે, અને રાજાના શોખની વસ્તુ રાજાને નિવેદન કરે, તેથીજ રાજા પ્રસન્ન થાય છે. તેવીજ રીતે તમે વૈષ્ણવો ૫-૧૦ મલીને ઠંઠ નિકુંજની વાતો કરો, તેથી તમોને નિદ્રા તેટલીજ વાર ગઈ કહેવાય ખરી, પણ તે નિદ્રા ઊઠવાનીજ સાથે આળસનો પણ ત્યાગ કરીને લગવત્સેવાનો ઉદ્યમ કરવા લાગી જાઓ એટલે આચરણમાં હો, એટલે તરતજ પુષ્ટિમાર્ગ સાક્ષાત્ જોનો. પ્રકાશ થઈ રહ્યો છે, તે તમોને દેખાયો. શ્રીગુસાંઈજીએ પણ આપ સેવા કરી શીખવે શ્રીહરિ એટલે આપે સેવા કરીને શીખવાલી છે. બીજા માર્ગમાં માત્ર કહીનેજ બતાવે છે, પણ પુષ્ટિમાર્ગ સાક્ષાત્ છે એટલે કરીને બતાવે છે, માટે જેને પુષ્ટિમાર્ગ જોવો હોય તેણે ઉપર કહેવા પ્રમાણે ઉદ્યમ અને આલસનો બીલકુલ ત્યાગ કરવો. લગવદીયે ગાયું છે. “જે આ લીલા આગે નવ સુણી હવે પાછળ નહોસે, અખંડ લીલા કલિકાલમાં બડલાગીઆ જોશે.” દયારામભાઈએ પણ ગાયું છે. પ્રસન્ન કરવા હોય ને પ્રભુને તો અભિમાન અલગું રાખ. માટે અભિમાનનો ત્યાગ કરશો અને ઉદ્યમ આલસનો ત્યાગ કરી જાગૃત થઈ આચરણવાળા થશો તો પુષ્ટિમાર્ગ પ્રકટ જણાયો. આ પુષ્ટિમાર્ગ જે કંઈપણ છે તેનાં કેવળ આનંદરૂપ જે ફલ છે તે આજરો.

નિર્ણયાર્ણવ.

મધ્યમ વરદ્ધ

(અનુવાદક-શ્રીકૃત કેશવરામ કોરીશમ શાસ્ત્રી, માંગરોલ-કાશિવાડ.)

૧૦.

નવરત્ન ગ્રંથ વિશે અહીં કાંઈક લખવામાં આવે છે:—

પ્રીયતેઽમ્લયા મત્તયા હરિરન્યદ્વિદ્વન્ધવમ્ ॥ (મા. ૧૧-

“હરિ લગવાન નિર્મલ ભક્તિથી પ્રસન્ન થાય છે. ખાકી બીજાં સાધનો વિદ્યમાણામાત્ર છે.” “મત્તયાહમેકયા પ્રાણ: (મા. ૧૧-૧૪-૨૧) એક માત્ર ભક્તિથી હું (લગવાન) અહણું કરી શકાઉં તેવો છું.” “યસે કુર્વન્તિ માં મત્તયા સત્ત્વિય: સત્ત્વાર્તિ યથા

(મા. ૧-૪-૬૬) સંતી ઓયો જે પ્રમાણે સત્પતિને વશ કરે છે, તે પ્રમાણે મારા ભક્તો ભક્તિથી મને વશ કરે છે. ” “ ભગયૈવ તુષ્ટિમભ્યેતિ (મા.) પ્રભુ ભક્તિથી જ સન્તોષ પામે છે. ” એ વચનો ૨૫૯ કહે છે કે પ્રભુને પ્રેમવશ્યાભક્તિથી પ્રાપ્ત કરી શકાય છે. (શ્રીગુણોત્કચે નવરતન પ્રકાશમાં:—

દારાન્ સુતાન્ રુદાન્ માણાન્ ચત્પરસ્મૈ નિવેદનમ્ (મા. ૧૧-૩-૨૮)

एवं धर्ममनुष्याणामुद्धवात्मनिवेदिनाम् ।

માયે સંજાયતે ભક્તિઃ કૌઙ્વયોઽર્ચોઽસ્યાવશિષ્યતે (મા. ૧૧-૧૯-૨૪)

“ઓ, પુત્ર, ધર, પ્રાણ એ બધું પરમ પરમાત્મને નિવેદન કરી દેવું. ” “ દે ઉદ્ધવ ! આ ધર્મોથી આત્મનિવેદી ભક્તોને મારામાં ભક્તિ ઉત્પન્ન થાય છે. આમ જેને મારામાં ભક્તિ ઉત્પન્ન થઈ છે, તેને કયો અર્થ બાકી રહે છે ? ” (આ જે શ્લોક ઉદ્ધૃત કર્યા છે. તેને ઉદ્દેશને લાલુ-લંદીશ કહે છે કે-) આ વાચ્યથી ૨૫૯ નીકળે છે કે-આત્મનિવેદન કરવાથી પ્રેમવશ્યાભક્તિ પ્રાપ્ત થાય છે; અને નિવેદન ત્યારે થાય છે કે જ્યારે દેવ વચેરેમાં ‘ આ મારા છે ’ એવા પ્રકારના મિથ્યાગાનની નિવૃત્તિ થતાં ‘ આ બધુંય પ્રભુનાં જ છે, ’ તેવી સુદ્ધિ થાય.

“ ક્રોડાર્યમાત્મન દ્વં ત્રિજગત્કૃતં તે સ્યામ્યન્તુ તન્ન કુધિયોઽપર ર્શા ! કુર્યુઃ (મા. ૮-૨૨-૨૦) હે પ્રભુ ! આપે કેવળ લીલા કરવા ખાતર આપમાંથી આ પ્રભુવન પ્રગટ કર્યું છે. પરન્તુ ખીલ કુર્ણુદિ પુરુષો આ જગદાદિ ઉપર સ્વામીપણું કરે છે. ” આ વગેરે અનેક વાક્યોથી સિદ્ધ છે કે બધાજ પદાર્થો પ્રભુનાજ છે. આમ ‘ બધા પદાર્થો પ્રભુનાજ છે, ’ એવી સુદ્ધિ થવાથી દેવ વચેરે બધુંય પ્રભુસેવામાંજ ઉપયોગમાં આવ્યું તેનું નામ તે નિવેદન. આ નિવેદન પ્રાપ્ત થતાં પણ જો ‘ આ છટ અને અનિષ્ટ; આ મેળવું અને આ જતું કઈ ’ એવા વિચારો વગેરેના સ્વરૂપમાં રહેલી ચિન્તા જો કરવામાં આવે તો કરેલું આત્મનિવેદન બ્યર્થ જાય; અને તેમ થતાં કશુંયે ન સરે. આ ખાતરજ પરમરૂપાશુ શ્રીમદ્વત્સાધીશ્વર આચાર્ય-અરુણેયે ચિન્તાના રૂપમાં રહેલા આ પ્રતિબંધને નિવારવા માટે ચિન્તા યાગપિ ન કાર્યો એમ નવ શ્લોકથી ઉપદેશ આપ્યો.

અને એક ચક્રા ઉત્પન્ન થાય કે-આત્મનિવેદન એ શ્રવણાદિ આઠ ભક્તિ પદ્ધતિ છે; શ્રવણાદિ પ્રત્યેક ભક્તિ કુળેથી પ્રાપ્ત કરી શકાય તેવી છે, તેજ રીતે છેલ્લી આત્મનિવેદન ભક્તિ પણ કુળેથી પ્રાપ્ત કરી શકાય તેવી છે. આમ નિવેદનજ અત્યન્ત દુરાર્થ હોવાથી તેને લીધે ઉત્પન્ન થતી પ્રેમવશ્યાભક્તિજ હાય તાળી ઈર્ષ્ય હરથી જાય છે. એટલે તેનાથી થતી પ્રભુ-પ્રાપ્તિજ કરી રીતે થાય ?

તેના પુલાસામાં કહેવાનું કે-શ્રીમદાચાર્યવર્યોએ નવરતનના છેલા શ્લોકમાં:—

તસ્માત્સર્વાત્મના નિત્યં શ્રીકૃષ્ણઃ શરણં મમ ।

વદન્તિરેવ સતતં સ્વેયમ્—

“ તેથી હરમેશો સર્વાત્માયે કરી શ્રીકૃષ્ણઃ શરણં મમ એમ અટકાશરમંત્ર સતત બોધતાજ રહેવું. ” આનાથીજ દરેક અડચણ નાશ પામે છે અને સકલ સિદ્ધિ આવી મળે છે ” એમ ૨૫૯ ઉપદેશ છે.

વાર, આનાથીજ દરેક અડચણ કે અસિદ્ધિ નાશ પામે છે અને સકલ સિદ્ધિ આવી મળે છે તે કેવી રીતે જતી રહે ?

આ શુદ્ધિના પ્રવાસો. શ્રીગુણાંધજી તે શ્લોક ઉપરના પ્રકરણમાં ઉત્થાનિકામાં આપે છે. આ શ્લોકને સ્પષ્ટ કરતાં કહે છે કે—“સાધનફલે^૧ વ્યકીકૃત્ય સર્વસમાધાનમાહુઃ—” શ્રીકૃષ્ણ-શરણં મમ ” એ અષ્ટાક્ષરમન્ત્રમાં સાધન અને ફલને એક કરવાથી આ શુદ્ધિઓનું સમાધાન થઈ જાય છે.”

(શ્રીધાવજીજી આ મન્ત્રનો અર્થ આપતાં કહે છે કે—) ફલરૂપ શ્રીકૃષ્ણપ્રભુ નિઃસાધન-જનોના ઉદ્ધાર માટે પ્રગટ થયેલા છે. તેઓ બધાનો ઉદ્ધાર કરવાને સદા તત્પર છે. તે પ્રભુ નિઃસાધન એવા જે હું તેનો આસરો છે. અર્થાત્ પ્રભુજી રાક્ષ અને અરાક્ષ વસ્તુઓનાં સંભાલક છે.

જે કે પોતાની અયોગ્યતાનો વિચાર કરતાં તેમજ શ્રવણ વગેરે સાધનો અત્યંત દુર્લભ છે, તેવી સ્થિતિ હોતાં ‘પ્રભુ પ્રાપ્ત થશે’ તેવા પ્રકારની નિશ્ચિન્તતાનો સંભવજ નથી, આમ હતાં પ્રભુ-અનુગ્રહનો વિચાર કરતાં પ્રભુને શરણે જવાથી બધુંજ સુલભ થઈ પડે છે. પ્રભુ અભુતને એ સમ્યક્માં સ્પષ્ટ કહે છે કે—

તેપામહં સમુદ્ધર્તા મૃત્યુસંસારસાગરાત્ ।

ભવામિ નાચિરાત્પાર્થ ! મય્યાવેશિતચેતસામ્ ॥ (ભં. ગી. ૧૨-૭)

મારામાં જેણે ચિત્ત પરાયું છે, તેવા મારા ભક્તોને આ મૃત્યુસંસાર-સાગરમાંથી હે પાર્થ ! તરતજ ઉદ્ધાર કરનારો થાઉં છું.”

જે પ્રભુની ઇચ્છા સાધનો કરાવતાં કરાવતાં ઉદ્ધાર કરવાની હોય તો જીવને મુશ્કેલ તેવું પણ શ્રવણાદિ નવધા ભક્તિરૂપ સાધનો પ્રાપ્ત કરાવી ઉદ્ધાર કરે છે. જે પ્રભુની સાધનો કરાવવાની ઇચ્છા નહોતી તો સાધનો વિના પણ કૃતાર્થ કરી દિધે છે. આપીજ શરણુમન એ પુરુષાર્થમાં સાધનરૂપ છે. આથીજ શ્રીમદ્વાયાર્થશરણુયે કિં વા મોક્તેન વહુના ? શરણં ભાવયેદ્દરિઃ [વિ. ધ. આ. ૧૬)

મક્તદ્રોહે મત્તયમાવે મક્તૈવાતિક્રમે કૃતે ।

અશવયે વા સુશવયે વા સર્વયોં શરણં દરિઃ ॥ (વિ. ધ. આ. ૧૧)

ભક્તો દ્રોહ કરે, પોતામાં ભક્તિનો અભાવ હોય, ભક્તો અપમાન કરે, કોઈ કોઈ અસાધ્ય હોય કોઈ સારી રીતે રાક્ષ હોય આ બધામાં જ્યાં રીતે દરિદ્ર તરણુ રાખવું “એમ આગા કરી છે. એમાંથી તાત્પર્ય એ નીકળે છે કે-ભક્તિ નહોતી તોય પણ ભક્તિની સિદ્ધિ માટે પ્રભુના શરણુની ભાવના કરવી. અહીં નવરૂપમાં પણ તેજ માટે “નવપ્રકારની શ્રવણાદિ ભક્તિ દુર્લભ છે,” એમ જાણી તે નવે પ્રકારની ભક્તિસિદ્ધિ માટેજ શ્રીમદ્વાયાર્થશરણુયે અષ્ટાક્ષરમન્ત્રની સતત આશુતિ કરવાનું ઉપદેશ છે.

અહીં પ્રમાણુગણથી જે વિચાર કરિયે તો આનું સમાધાન નજ મળી શકે. આનું સમાધાન તો ત્યારેજ મળે છે કે જ્યારે પ્રમેયજનો વિચાર કરવામાં આવે છે. (નિઃસાધનને પણ સસાધન બનાવી ઉદ્ધાર કરે તેનું નામ પ્રમેયજન.) શ્રીગુણાંધજી જે કૃત્તિકા કિંવા લીલી આપે છે, તેનો એજ આશય છે કે પ્રભુ આત્મનિવેદનાત્મક ફલનેજ અહીં સાધનરૂપ બનાવી દિધે છે. આમ આ શ્રીકૃષ્ણઃ શરણં મમ એ મન્ત્રના અર્થનું વ્યાખ્યાન જાણવું.

૧. આ લીલી ઉપર વ્યાખ્યાન કરતાં ડ. વિ. શીયુજીતત્તજી મહારાજ આજ્ઞા કરે છે કે—“શ્રવણ વગેરે આઠ ભક્તિ એ સાધન અને અનિત્તમ આત્મનિવેદન ફળ છે. તે બન્નેને એક કરી અસાધ્ય પણ સાધ્ય બની લાય છે, તેવા પ્રકારનું સમાધાન શ્રીમદ્વાયાર્થશરણુ આપે છે.”

વિશેષમાં આ મન્ત ખીજા અનેક સામાન્ય મન્ત જેવો નથી. પરંતુ સમર્પણ તત્ત્વ મન્ત જેમ પુષ્ટિમાર્ગીય છે. આ મારેજ શ્રીકૃષ્ણાર્ચિયે આગા કરી છે કે-

“યદુજં તાતચરણૈઃ શ્રીકૃષ્ણઃ શરણં મમ । તત્ત્વ ઇવાસ્તિ નૈશ્ચિન્યમૈદિકે પારલૌકિકે ”

તાતચરણ શ્રીમદાપ્રભુજીએ શ્રીકૃષ્ણઃ શરણં મમ એમ જે કહ્યું છે, તેનાથી જ આ લોક તેમજ પરલોકવિષયક સર્વ આખતોમાં નિયંત્રતા છે.”

પુષ્ટિમાર્ગીયતા એટલે કે પ્રભુના સ્વરૂપથી ભિન્ન એવું જે કોઈ ફક્ત તેને જોઈને અભાવ છે તે (આ વાત ખ્યાનમાં આવવાથી સ્પષ્ટ થશે કે) પુષ્ટિમાર્ગીયિયે આ મન્તનું સતત આવાર્તન કર્યું. મનથી ઉપર કલ્પા મુગ્ધ અર્થાનુસન્ધાનપૂર્વક શરણુની ભાવના કરવી. આ મારેજ શ્રીઆચાર્યચરણો વિવેકધર્માશ્રવણં સ્પષ્ટ આગા કરે છે કે एवं चित्ते सदा भाव्यं वाचा च परिकर्तयेत् આ પ્રભાણે ચિત્તમાં સદા શરણુની ભાવના કરવી અને વાણીથી શરણુ મન્ત જોડ્યા કરવો. “આમ શરણુમતિમાં પ્રભુ અશકયને પણ સાધી દેશે એવો આમાથી નિષ્કર્ષ નીકળે છે. આથીજ શ્રીકૃષ્ણાર્ચિયે પણ તે જોડાની વિઠ્ઠલિમાં સર્વોત્તમા શરણાગતી પ્રમુરેચ સમ્પાદયિવ્યતીતિ દ્વયમ્ સર્વભાષે કરી શરણે જતાં પ્રભુજી સર્વ પ્રાપ્ત કરાવશે એવો આશય છે” એમ ખુલાસો કર્યો છે. આમ યતાં ચિન્તાનું નામનિશાન નહોતું રહે અને તેથી પ્રતિબન્ધજન રહેવાને લીધે નિવેદનની સિદ્ધિમાં મુખ્ય ભક્તિની પ્રાપ્તિ અને તેને લીધે પ્રભુપ્રાપ્તિ થશે. આથી ચિન્તા ન કરવાનો જે ઉપદેશ શ્રીઆચાર્યચરણોએ આપ્યો છે તે સાર્થક છે, એમ વિદ્વાનો જાણે.

૧૧.

નિબન્ધશાસ્ત્રાર્થપ્રકરણમાં નીચેનું વાક્ય છે.

आकाशवद् व्यापकं हि ब्रह्म मायांशवेष्टितम् ।

આકાશની માફક વ્યાપક એવું બ્રહ્મ માયાએ કરી બદલના અંશથી વોંટાયેલું છે :

આ કારંકામાં. માયાંશવેષ્ટિતમ્ એ ૫૮ છે. આ ૫૮માં અંશવેષ્ટિતમ્ એ અંશેન વેષ્ટિતમ્ અંશે વોંટાયેલું તે એમ તૃતીયાત્પુરુષ છે. અંશ બદલના છે, માયાના નથી. એટલે બ્રહ્મ એ પોતાના અંશથી વોંટાયેલું છે. માયયા માયાએ કરી અંશવેષ્ટિતમ્ અંશોએ વોંટાયેલું તેવું બ્રહ્મ છે. અહીં તૃતીયાવિભક્તિમાં રહેલો માયા શબ્દ અંશવેષ્ટિતમ્ સાથે સમાય પામ્યો છે. માયા શબ્દને કેવા અંશ સાથે સંબન્ધ નથી. આ રીતે બ્રહ્મ અંશથી વોંટાયેલું છે. માયાનું હેતુ પાછું છે અને તે ચોખ્ખું છે. માયા એ પ્રભુની સર્વભવનસમર્થરૂપ શક્તિ છે. તે માયાથી પ્રભુ પોતાની વ્યાપકતાને આવરી દિધે છે. સારે પ્રભુનો વ્યાપકતારૂપ ધર્મ નિરોધિત થવાથી અમુક આકારસ્વપરિવ્રેદવાળો બ્રહ્મધર્મ આવિર્ભાવ પામે છે. તેથી કરી પરિવ્રેદ રૂપ ધર્મનો આવિર્ભાવ યતાં અંશથી વોંટાયેલું બ્રહ્મ થાય છે. આથી કરીનેજ વ્યાપકતાને આવરી પરિવ્રેદ દિંવા અમુક સંકુચિત આકારરૂપ ધર્મ પ્રકટ કરી ‘બ્રહ્મ અંશવેષ્ટિત છે તેવું સ્વરૂપ કરાવતી’ માયા ‘બ્રહ્મ અંશથી વેષ્ટિત છે તેના હેતુરૂપે થાય છે. આ મારેજ શ્રીઆચાર્યચરણોએ ઉપરની કારિકાના પ્રકારમાં “માયયા તાદ્દશમાયઃ માયાએ તેવા પ્રકારનું થાય છે;” એમ માયા એ તૃતીયાવિભક્તિમાં છે, તેવું વિવરણ આપી માયાનું હેતુપણું આપ્યું છે.

૧. શાસ્ત્રદ્રષ્ટા એમ કહેવા મળે છે કે માયાયાઃ અંશાઃ માયાંશાઃ તૈઃ વેષ્ટિતમ્ એમ વિચદ કરવાનો નથી. એટલે કે અંશ એ માયાના નથી. માયા તે હેતુ માય છે.

બ્રહ્મ અંશથી વેદિત છે, તેમાં માયાનું જે હેતુપણું છે તે ઉપર બતાવેલી રીતે બધાનું પ્રકાશમાં માયયા તાદશ્યભાવે, તેન વેદિતમ્ । માયાથી તેવા પ્રકારનું થાય છે. તેવા પ્રકારનું એટલે કે અમુક પરિચ્છિન્ન સ્થિતિવાળું. બ્રહ્મ તે હેતુરૂપે રહેલા પરિચ્છિન્ન સ્થિતિવાળા બ્રહ્મધર્મને લીધે પોતાના અંશોએ વીંટાયેલું છે. એવા એમાંથી આરાધ નીકળે છે.

આ પરિચ્છેદાત્મક સ્થિતિ તે બ્રહ્મધર્મ છે, અને તે ત્યારે વ્યાપકતાનું તિરોધાન થાય છે, ત્યારેજ પ્રકટ થાય છે. ત્યારે પોતાના અંશોએ વીંટાયેલું સ્પુરણમાન થાય છે, તેમાં પરિચ્છેદાત્મક સ્થિતિ ‘બ્રહ્મ પોતાના અંશોથી વીંટાયેલું છે, તેમાં હેતુરૂપ છે. ત્યારે વ્યાપકતા સ્પુરણમાન હોય છે, ત્યારે બ્રહ્મને અંશોથી વીંટાવાપણું નથી. આમ ભગવાન માયાએ કરી વ્યાપકતાને આવરી પરિચ્છેદકતાને આવિર્ભાવ કરે છે; અને ત્યારેજ બ્રહ્મ ઈચ્છાથી પ્રભુમાંથી નીકળવાના પોતાના આચરૂપ છવસંતાને મેળવનારા અંશોથી વીંટાયેલું અને છે.

આ વસ્તુ સિદ્ધજ છે કે આ વિશ્વનું સર્જન કરવાની ઇચ્છાવાળા પ્રભુ પોતાના સામર્થ્યરૂપે રહેલા માયાએ કરી પોતાની વ્યાપકતાને આવરી પોતાની પરિચ્છેદકતાને પ્રકટાવી પોતેજ પોતાના અંશાત્મક છવોથી વીંટાયેલું થાય છે.

આમ દ્રાષ્ટ પશુ રચે પરમતત્ત્વવેશનો અર્થ સુદાં નથી. એમ બધૂંય નિર્દોષ છે.

શુદ્ધાદૈત-ભક્તિમાર્ગ.

(ભેખક: શ્રીયુત વિનાદરાય જયસુખરામ મજમુદાર B. A. LL. B; અમરેલી.)

“ ભજ, મન યરન ચિંતાકરન;

પતિતપાવન અધનસાવન, મહા અધર્મ ઉદ્ધરન. ભજ. ॥૧॥

સદ્ગુણ નામ ઉચ્ચાર જાહે, પરમ મંગળ કરન;

સુખલ હોત સંસાર સાગર, માંતો બચ્છકો યરન. ભજ. ॥૨॥

અતિ ઉદાર અપાર કરુનાનિધિ ભક્ત ઉર આભરન;

દામ સુનિ સુનિ ચારણ આપો, બિરદ અચરન ચરન. ભજ. ॥૩॥

“ શુદ્ધાદૈત ” શબ્દના સમાસ માટે આપણા શ્રીઆચાર્યવર્યે સમાસચ્છેદ કરેલા છે તે પહેલાં એ શબ્દનો ઉપયોગ ધણા ધણા પ્રાચીન કાળમાં પણ હતો એમ “ રંશાદ્યપ્રોત્તરદાતો-પનિપદ: ” નામના સંગ્રહમાં ચોપનમા ત્રિપાદિભૂતિમહાનારાયણોપનિષત્ ના આ.૧મા અધ્યાયની શરૂઆતે નાંચાથી જણાવે છે—

તત: પિપ્તામહ: પરિષ્ઠંજિત મગવતં મહાવિષ્ણુ મગવન્ ! શુદ્ધાદૈતપરમાન્દલક્ષ-
પરમહણસ્ત્વ, કથં વિરુદ્ધવૈકુંઠપ્રાસાદપ્રાકારવિમાનાધનન્તવસ્તુભેદ: ?

“ સત્યમેવંકોત ” મિતિ મગવાન્ મહાવિષ્ણુ: પરિહરતિ યથા શુદ્ધસુવર્ણસ્ય કટકમુકુરં-
ગદાદિભેદ: યથા સમુદ્રસાલિલસ્ય સ્પૂલસ્પૃશ્મતરણફેનવુદ્વુદ્વકરકલ્પલપાપાણાધનન્તવસ્તુભેદ: ॥
યથા ભૂમે: પર્વતશૃંગાતુણ્ગુન્મલતાધનન્તવસ્તુભેદ: ॥ તથૈવાદૈતપરમાન્દલક્ષણપરમહણો નમ
સર્વાદૈતમુપપન્નં મવ્યેવ મત્સ્વરૂપમેવ સર્વં, મદ્રયતિરિક્તમશુમાત્રં ન વિષતે. ”

“ આ વાક્યમાં ‘ ઉત્પન્ન’ ભવતિ’ એ શબ્દોથી કહેવેલા અર્થના “ સર્વધર્મોપપત્તે ”
સ્વની પાદગીરી આવે છે. અને ઉપર દર્શિત શ્રુતિના પાઠ્યનો અર્થ સહેલા છે તેથી અક્ષર”

વસ્તુઓ નવી કરતાં બાવાઈ માત્ર આપું છું. જ્યાંજ પ્રજા છે તે છે તે બાવળ, અને શુદ્ધ-
દેવ પરમાનન્દનશય પરબ્રહ્મા પેકુંદા વિમાનો વગેરે અનંત વસ્તુ એટલે કેમ છે? તેને વસ્તુ-
અવાચન આપે છે કે એકજ સુવર્ણ (ખાતું) શુદ્ધ છે તેના ક્યાં સુકટ બાળુપદે વિગેરે વસ્તુએ
છે. તેમ (આની સાથે છાંદોમ્ય હૃદય-રૂપના છાં પ્રપાદકમાં એક મૃત્તિકા જલધ્યાયી બધું
મુદમય જલધ્યામાં આવે તેજ રીતે એક લોહ મણિ જલધ્યાયી સર્વ લોહમય વસ્તુઓ અને એક
નખનિદ્રીતમથી સર્વ કાષ્ઠગોષ્ઠ જલધ્યામાં આવે છે એ પણ વાદ સમજું.) જ્યાં આના છે
છે કે એકજ પૃથ્વી છે છતાં તેમા પર્વત ઝાડ ઘસ પેલા વિગેરે અનંત વસ્તુ નમ્યકરે એટલે કે
તેમ બધું માઈ સ્વરૂપ છે મારાથી જુદું અથવા મારા વિના થીનું કંઈ નથી. આજ ખુદાસે
શીમદ્ભાગવતમાં વેદવ્યુતિ કહે છે કે “વૃહદ્વપન્નધર્મતદ્” જેનો સાર પણ એજ છે
જેમ યજા કુંડા ક્રોડીયાં વિગેરે શ્વેતકાન્ત છે તેમ આ સર્વ દસ્યમાન જગત્ બૃહદ્વજ છે તેથી
અવિશે પોતાનાં મન કર્મ અને યગનો આપ પ્રભુના પરોવે છે (મુકે છે) વિગેરે તેમજ આગળ
આશ્વતા “નાદિ ચિદ્રતિ ત્યજન્તિ પતનકસ્ય” ક્યાં સુવર્ણના ઘાતે (નિપદ માસ)
ખરીદનારા ખુદીયાં વેપારી જેમ પામે કરેસરી કે મને ને લંબાર સીજ સાગરજા મેનાની બધે
ન દોષ, અંદર લાખ, રહેલ વગેરે દોષ છતાં તેને કેમ રિક્ત કરી દેના નથી પણ સુવર્ણ-
તક કિંમત આપીને કમવિક્રમવવાર કરે છે તેમ આપણે શ્રીકૃષ્ણજીવ અને શ્રીકૃષ્ણજીવ
સર્વ સમજીને વર્તવાનું છે.

દવે “ભક્તિ” શબ્દની તો વ્યાખ્યાજ એકાદમાં (ગોપાલપૂર્વતાવિની નામના)
ઉપનિષદમાં આપી છે. પદેલા મંત્રને ઉપદત્તા બાએ કે ભક્તિરસ્ય ભજનમ્। તદ્વિદ્યુત્યોપાધિન-
રાયેન અમુષ્મિન્ મનઃકલ્પનમ્। એ શ્રુતિમા સર્વનામ “અરથ” અને અમુષ્મિન્” અર્થ
તે દોષ એ ઉપરના વાક્યમાંજ “કૃષ્ણાય ગોવિન્દાય ગોપીજનવક્ત્રાય” હિન તને શબ્દો
શ્રવણીકાદૃત શ્રીકૃષ્ણ પરમાત્માને સંજોગે વપરાયેલા છે. તેમજ મંપુટ તરીકે પુરતજ વ્યાખ્યા
પછી પણ શ્રુતિ કહે છે કે “વૃત્તદેષ્ય ચ નૈવકર્મ્યમ્। વૃત્તો તં (ખ્યાલ રાખા કે તે કૃષ્ણ
ક્યાં? જેને ઉપર “આ, “આમાં” રાખેા. ચાપરીને રાન્નિષ્વવાચક સર્વ નામ અસીં અર્થ
પુરોવર્તી સૂચવ્યા છે તે) ચિદ્રાઃ યદુષ્યા યજન્તિ એ પ્રમાણે પદેલા મંત્રમા કહ્યું છે કે ભક્તિ
એટલે ઉપર કહેલા કૃષ્ણ ગોવિન્દ ગોપીજનવક્ત્રમું ભજન કરતું ને ભજન (ની રીતે) આ
શોકમાં અને પરશોકમાં ઉપાધિની આરાધા (એટલે કે મને આમ સુખ વૈભવ સંપત્તિ વગેરે
દલાકાંકાની કામના) રાખ્યા વિના એ શ્રીકૃષ્ણ ગોવિન્દ ગોપીજનવક્ત્રમમાં મન લગાડ્યું
(અર્થતઃ કામનારહિત નિષ્કામ ભજન) શ્રુતિ આગળ આજા કરે છે કે એનું નામજ નૈવકર્મ્ય
(ભજનનાદિ કરતાં છતાં કલ્પભોગ ભોગવવાનું બંધ ન થાય તેનું કર્મ) તે કૃષ્ણને વેદ વેદવ્યુત્પ-
વાળા અનેક પ્રકારે યજન કરે છે. તે ગોવિન્દ દેવતાથી તેને અનેક પ્રકારે આરાધન કરે છે
ગોપીજનવક્ત્રમે “સ્વાદા” ને આશ્રયે સુવને પારણ કપા (સર્વ લીલા કરી) અને સદરા
વીર્ષ વડે આ જગત્ પારણ કર્યું (વિસર્જીલા) આ વ્યાખ્યા પ્રમાણે સમજીને (એટલે કે
રહસ્ય કરી સમજીને ભજન, યજન, આરાધન (એ શ્રુતિના શબ્દો) એટલે કે આપણા સંપ્રદાય
પ્રમાણે “સેવા” કરવામાં આવે તો શરૂઆતમાં ભોગવના ઉપનિષદનો આશો અખ્યાલ રાખો
છે તેમાંજ કહ્યું છે કે—

રણુછાહદાસ—ભાઈ, વૃથાલાપ એટલે શું ?

કરુણાશંકર—વૃથાલાપ એટલે શ્રીભગવાનનું નામ, અને પ્રભુની લીલાઓને છોડી બીજી દુનીયાની નકામી વાતો ક્યાં કરવી તે વૃથાલાપ.

રણુછાહદાસ—ભાઈ! ખરેખર આજ તો પ્રભુનામ અને પ્રભુની લીલાઓનું વર્ણન તો તો ક્યાંકજ સાંભળવામાં આવે છે, બાકી તો સર્વત્ર દુનીયાની કુથલીજ સાંભળવામાં આવે છે. તેમાં પણ પ્રભુમંદિરમાં દર્શન કરવા ગયા હોય ત્યાં પણ દર્શનને જતા વખત હોય તો કેવલ વૃથા કથમલાટજ સાંભળવામાં આવે છે; ત્યારે ઘરમાં તો પ્રભુનામ ક્યાંથીજ લઈ શકાય? સદ્-ભાગીજ પ્રભુનામ લઈ રહે કે.

કરુણાશંકર—ખરેખર ભાઈ! શ્રીમહાપ્રભુજીએ નવરત્ન ગ્રન્થમાં આના કરી છે કે તેસ્માસુ સર્વાત્મના નિવ્યં શ્રીહ્રિષ્ણઃ શરણં મમ શ્રવદ્ગિરૈવ સતતં સ્થેયમિત્યેવ મે મતિઃ ॥

અર્થ—તેથી સર્વાત્માન પડે તેમાં “શ્રીકૃષ્ણઃ શરણં મમ” સતત બોધતાં રહેવું એવી મતિ છે. આમ કાણ માત્ર પણ પ્રભુનામનો ત્યાગ કરીએ તો આસુરાવેશ આપ મટે કાણ માત્ર પણ અણકર મન્ત્ર “શ્રીકૃષ્ણઃ શરણં મમ” નો જપ છોડેનાર ન જોઈએ.

રણુછાહદાસ—સુગમં ભગવદ્ગામ જિહ્વાચ વચાર્વત્તિની. તથાપિ નરકં યાન્તિ પિગસ્તુ તામ્બરાધમાન્ ॥

ભાઈ કરુણાશંકર, કહ્યું છે કે “પ્રભુનું નામ સુગમ છે, છલ પોતાને વશ છે; તોપણ પ્રભુનામ ન સેતાં છવ નરકમાં પડે છે. આવા મનુષ્યોને આપણે ધિક્ક! વિના બિનું શું કહી શકીએ?

કરુણાશંકર—પણ ભાઈ! પ્રભુનું નામ છલ ઉપર આવવું ક્યાં સહેલું છે? પ્રભુનું નામ તો પ્રભુની કૃપા હોય તોજ ઉઠતાં, બેસતાં રસોધ કરતાં, સંજવારી કાઢતાં દરણું દળતાં, લાકડતાં, આકડતાં, એ પ્રમાણે આખો દિવસ અદ્વિતર પ્રભુનું નામ લઇ શકાય. બાકી હૃદયમાં પાપ ભર્યું હોય ત્યાં પ્રભુનું નામ લેવાયજ ક્યાંથી? કહ્યું છે કે “જેસે જ્વરકે જોરમે ભોજનકો રુચિ જાય. તેસે પાપસંમૂહમે નહિ હરિનામ સુદાય.

રણુછાહદાસ—સાચું તદિન સાચું, ભાઈ આપણે એ ગાઉ ચાલીને જવાનું હોય અને ત્યાં જતાં પહેલાં વિચાર કરી નક્કી કરીએ કે આખો રસ્તો પ્રભુનો નિર્મલ અણકર મન્ત્ર જપતાં જપતાં જશું, પણ રસ્તામાં ચાલતાં અનેકવાર શૂલી જવાય છે. અને મન બીજે રસ્તે ચડી જાય છે.

કરુણાશંકર—ભાઈ તેથીજ માનુષ પડે છે કે પાપની પ્રખલતાથી પ્રભુનું નામ લઇ શકાતું નથી. શ્રીમહાપ્રભુજીએ નિમ-ધમાં આગા કરી છે કે—શ્રૃંગાલાપક્રિયાધ્યાનં સર્વથેવ પરિત્યજેત “વૃથાલાપ, વૃથાક્રિયા, વૃથાધ્યાનનો સર્વથા ત્યાગ કરવો જોઈએ” છતાં પણ ત્યાગ કરી શકાતો નથી.

રણુછાહદાસ—ભાઈ! હવે તેનો કાંઈ ઉપાય ખરો?

કરુણાશંકર—ભાઈ ઉપાય તો માત્ર એજ છે કે ખીજ નકામી પુસ્તકો ને વાંચતી અને ગદી વાતો ન સાંભળતાં અને ભગવન્નામને શૂઝનારની સંગતિ છોડીને ભગવન્નામાનુતનું પાન કરાવનાર ભગવદીયનો સંગ કરવો, તેવાંજ પંખનાં પુસ્તકો વાંચવા. આથી મન પ્રભુમાં રહેતાં અણકર મન્ત્ર નહીં શૂઝાવનાર મન છે. પણ પ્રભુએ આગા કરી છે કે અભ્યાસેન તુ કૌન્તેય વૈરાગ્યેણ ચ શુદ્ધયે ॥ મન મંચળ છે પણ અભ્યાસ અને વૈરાગ્યથી તે વશ પાપ છે.

રણુછાહદાસ—ભાઈ અહીં સાઈ દવેશીનું પણ તેવો અભ્યાસ કરવા તપર ઘડરા બેથી પ્રભુ હૃદયમાં સાથ. હવે નીચેનું લાવ પછું પદ બોલી આપણે આપણું સ્થાન લઈએ.

શ્રીવલ્લભસંપ્રદાય.

(વસ્તા—શ્રીયુત મહીધરલાલ હિંમતલાલ, જેશીપુરા, ખો. એ., હેડમાસ્ટર;
સર વાલ્મીકી કૌન્સિલર, ટંકારા, (મોરબી રોડ).)

સન્મનો અને સન્નારીઓ,

આપણે આજે એક ધવાનો પ્રસંગ હરકોઈને વિદિત છે, એટલે તે વિશે વધારે ઉલ્લેખ કરવો ખાસ આવશ્યક નથી, છતાં પણ શ્રીવલ્લભાચાર્યજીની જયન્તિના ઉત્સવ પ્રસંગે આપણે એકલા યથા છીએ એટલે તેઓશ્રીના ઇવનજીયાંતનું તથા તેમણે રચાયેલા સંપ્રદાયનું ટુંક દિગ્દર્શન આજે અરથાને નહિજ ગણાય. એમ માની હું નીચે પ્રમાણે જણાવવા રત્ન લઉં છું.

મારો આ સંપ્રદાયના અંગે અને આચાર્યો સંબંધે અભ્યાસ બહુજ અગ્ર છે, એટલે આ વિષયની અંદર હું કંઈ નહું અજવાળું નાખી શકું તેમ નથી; પરંતુ જ્યારે આ વિષય ઉપર યત્નક્રિયાત બોલવા છૂટ જતો તરફથી અને કહેવામાં આવ્યું ત્યારે મારે યથાશક્તિ મારી ફરજ બજાવવી એ મારો ધર્મ છે, એમ હું માનું છું.

પુણિમાર્ગના આદિ આચાર્ય શ્રીવલ્લભાચાર્યજીનો પ્રાદુર્ભાવ સંવત ૧૫૩૫ ના ચૈત્ર વદી ૧૧ ના રોજ ચંપારણ્યમાં થયો હતો. તેઓશ્રી આ ભૂતજ-ઉપર લગભગ ૫૨ વર્ષ ચિરાન્ત્યા હતા, પરંતુ આટલા ટુંકા વખતમાં અને લંદકાટ અને અશાંતિના સમયમાં, હિંદુસ્થાન જેવા વિશાળ દેશમાં ઉત્તરથી દક્ષિણ અને પૂર્વથી પશ્ચિમ મુખી ત્રણ વખત પરિક્રમણ કરી શ્રીહરિની સેવામાં દંમેશાં ધણી વખત વ્યતીત કરવાની સાથે વેદ, ગીતા તથા શ્રીમદ્ભાગવતનાં અનેક સ્થાનોએ પારાપણ કરી છતાંમુએને બોધામૃત આપી આશરે ૮૪ અંગે તેઓશ્રીએ સંસ્કૃતમાં જ રચ્યા. તેઓશ્રીના પછી તેમના પુત્ર શ્રીવિદ્યનાથજીએ પણ શ્રીહરિસેવામાં પરાયણ રહી, પોતાના અવકાશનો સંપૂર્ણયોગ કરી, ધર્મની પ્રગતિ માટે ઘણા અંગે રચ્યા છે. આ પછી શ્રીપુરુષોત્તમજી મદારાજનું પ્રાકટય સત્તરના સૈકામાં થયું હતું. તેઓશ્રીએ પોતાની ૪૫ વર્ષની લઘુ વયમાં વેદ અને સ્મૃતિ વગેરે તમામ શાસ્ત્રનું ઘણી સારી રીતે દોહન કરી લગભગ નવ લાખ શ્લોકનું પૂર ચાપ એટલા અંગે લખેલા છે. આ પ્રમાણે દરેક આચાર્યોએ પોતાની શક્તિ અનુસાર સંપ્રદાયની સેવા બજાવી છે.

હવે પુણિમાર્ગ જલવાદનું-શુદ્ધાદેવનું-અવર્જન કરે છે. નિષ્પક્ષપાત પુણિથી પુણિમાર્ગના, શુદ્ધાદેવ સિદ્ધાંતોની તુલના કરવાથી એવો નિષ્કર્ષ થશે કે પરબ્રહ્મ, જીવ, જગત્ અને એ સંસારના સ્વરૂપ વિશેના આ સંપ્રદાયના બીજા સિદ્ધાંતો વેદ, ગીતા, જલસૂત્ર અને શ્રીમદ્ભાગવતપ્રતિપાદિત છે. પુણિશબ્દનો અર્થ અનુગ્રહ અથવા કૃપા એવો થાય છે. ભક્તિમાર્ગમાં પ્રભુની કૃપાનું અવર્જન કરવામાં આવે છે. અને પ્રભુનોજ આશ્રય રાખવો એવો આ માર્ગનો મૂળ ઉદ્દેશ છે. હવે આ આશય અતિ ઉચ્ચકોટિનો મહત્ત્વનો અને અનુકરણીય છે. દરેક ધર્મના મુખ્ય સિદ્ધાંતનું આપણે અવગોચન કર્યું તો સ્પષ્ટ રીતે જણાશે કે પોતાના છૂટ દેવની કૃપાનું અવર્જન કરવું એ ધર્મનું મુખ્ય લક્ષણ હોવું જોઈએ. પુણિમાર્ગમાં પરબ્રહ્મ પરમાત્મા પૂર્ણપુરુષોત્તમ ભગવાન શ્રીકૃષ્ણની અનન્ય, અચ્છાલિયારિણી ભક્તિ નિષ્કામ જીવિથી કરવાનો મુખ્ય આદેશ છે. પરબ્રહ્મ પરમાત્મા વેદથી પણ અતીત છે; જ્ઞાન તથા વૈદિક ક્રિયાઓના ફળદાતા પોતે જ છે. શુભોધી અતીત છે, વેદના નિયન્તા છે. વેદનો ઉલ્લેખ તેમનામાંથીજ છે અને એ સર્વશક્તિમાન છે, તેથી ઉત્તમાધિકારીએ કેવળ પરબ્રહ્મ શ્રીકૃષ્ણનુંજ અવર્જન કરવું. તેનોજ આશ્રય કરવો. તેમના ઉત્તમાધિકારીએ કેવળ પરબ્રહ્મ શ્રીકૃષ્ણનુંજ અવર્જન કરવું. તેનોજ આશ્રય કરવો. તેમના માદાત્મ્યનું જ્ઞાન પ્રાપ્ત કરવું, તેમનાજ શરણે જવું, તેમનીજ કૃપા-મેળવવાની-આશંકા રાખવી.

તેમને પ્રસન્ન કરવામાં કર્તવ્ય માનવું. કહ્યું છે કે મક્તિનિષ્ઠા તદા જ્ઞેયા યદા કૃપ્ણઃ પ્રસીદ્ધતિ એટલે કે શ્રીકૃષ્ણ પ્રસન્ન થાય તોજ લક્ષિતની પરાદક્ષા પ્રાપ્ત કરી શકાય છે અને ખરેખર જે લક્ષિતભાવ પડે શ્રીકૃષ્ણની સેવા એક નિઃશયી કરવામાં આવે તો કહ્યું છે કે કૃપ્ણઃ ચેત્ સેવ્યતે મસ્ત્યા કાલિઃ તસ્ય ફલાય દિ એટલે કે આ કલિકાલ પણ કૃપ્ણથી નીવડે છે.

પરશ્વલ્લભસ્વરૂપ શ્રીકૃષ્ણ પરમાત્માએ સ્વમુખે ગીતા કહેલી છે, તે એક આધારવર્તનો અનુપમ ગ્રંથ છે. ગીતા સર્વ શાસ્ત્રોનો સાર છે, ઉપનિષદોનું હૃદય છે, જ્ઞાનોનો સાગર છે અને મનુષ્યની લૌકિક અને પારલૌકિક મહેન્દ્રાઓનું પરિપૂરક કલ્પવૃક્ષ છે, એમ કહેવામાં જરા પણ અતિશયોક્તિ નથી. ગીતાનો વિષય એટલો અધો અગ્રાધ અને વિધવિધ પ્રકારનો છે કે તેની અંદર હરેક સિદ્ધાંતનું મયન કરવામાં આવ્યું છે. હરેક ધર્મ અને સાહિત્યનાં તમામ અંગોની સંપૂર્ણ ટાંચ પહેંચેલી ખીલવટ તેમાં દરમિયાન છે. કાવ્યમાધુર્ય, નીતિશાસ્ત્ર અને શાયરોની તેમાં પરાકાષ્ઠા જોવામાં આવે છે. ગીતાનું રહસ્ય અમુક સમાજ, અમુક પ્રજા કે અમુક દેશનેજ ફલાત્મક છે એમ નથી, પરંતુ તેની અંદર સમગ્ર માનવ જાતિને શ્રેયકર અને ઉન્નતિકારક સિદ્ધાંતોનું પ્રતિપાદન કરવામાં આવ્યું છે. આ જ્ઞાનવતી સામ્રાજી તેનો દુનિઆની લગભગ હરેક ભાગમાં યજ્ઞેન્દ્રો અનુવાદ સિદ્ધ કરી આપે છે. જુદા જુદા દેસના વિદ્વાનોએ ધણી ખરી નીતિશાસ્ત્ર જ્ઞાનોનાં સદાયારનો પ્રકાશ ગીતાના અનુવાદથી ફેલાવવાનો શત્રુ પ્રયત્ન કરેલો આપણને દૃષ્ટિગોચર થાય છે. દુકામાં ગીતાની સ્વશ્રેયતા મુક્ત કંઠે સારા જગતભરમાં સ્વીકારવામાં આવી છે એ વાત નિઃશંક છે. ચાર્લ્સ વિલિંગ્ટન નામના અંગ્રેજ વિદ્વાને ગીતાનો જે અનુવાદ કર્યો છે તેની ભૂમિકામાં યૌરન હેરલ્ડે લખે છે કે “કોઈ પણ જાતિને ઉન્નતિના શિખરે ચઢાવવામાં ગીતાનો ઉપદેશ અદ્વિતીય છે.” અંગ્રેજ જેની ફેબ્રુઆરીની અંદર અગ્રયાન ભોગવતી પ્રજાની એક મહાન બાકિત તરફથી આદરો ઉઘો અભિપ્રાય મળે, તે ગીતા સમગ્ર વિશ્વના સાહિત્યમાંનો સર્વોત્તમ દિવ્ય ગ્રંથ છે એમ પુરવાર કરવાને ખસે છે. હવે યુદ્ધિમાર્ગની અંદર જે દાસત્વભાવ સ્વીકારવામાં આવ્યો તે પણ ગીતાના આધારેજ રાખેલો જણાય છે, કારણ કે ગીતાજીમાં કહ્યું છે કે જ્યારે દાસત્વભાવથી નિઃપ્રામદકિત થાય છે ત્યારે અદઃતામમતાનો નાશ થાય છે; અને જ્યારે આ કનુવિત વૃત્તિઓનો વિપ્રસંય થાય છે ત્યારેજ મોક્ષ મેળવી શકાય છે.

હવે શ્રી ગીતાની અંદર શ્રીકૃષ્ણ પરમાત્માએ જે ચારિત્ર્યધન અને પ્રસન્ન પ્રકૃતિ ઉપર પ્રવચન કરેલું છે તેનું હું યથાશક્તિ વિવરણ કરું છું.

મનુષ્યને પ્રસન્ન પ્રકૃતિ યદિ સાદૃશ્ય છે, તથાપિ તે મુખ્યત્વે અન્ય દેવોની ભાદક કેળવણીથી પ્રાપ્ત થાય છે, જીવનને અર્થતમય યા વિપમય જનાવૃત્તે એ કેવળ આપણા હાથમાંજ છે. જ્ઞાની અને અજ્ઞાની ઉભયને સુખ, દુઃખ સર્વે પ્રાપ્ત થાય છે, પણ જ્ઞાની સમાધાનીથી પ્રસન્ન રહે છે જ્યારે અજ્ઞાની વૃથા શોક કરે છે. આ જન્મે દુઃખને અન્યથા કરવાને તો અસમર્થજ છે, છતાં પણ પ્રસન્નતાથી એક અમૃતમય જીવન કરે છે જ્યારે અપ્રસન્ન વૃત્તિથી ખીજે વિપમય જીવન કરે છે. સતોપથી મનુષ્ય દુઃખને દાખી નાખે છે. અજ્ઞાનને દૂર કરે છે અને શોકને વિદારે છે. યુદ્ધિવલ્લભ સતોપથી અધિક પ્રકાશ પામે છે અને શરીર સૌંદર્ય પણ વિકાસ પામે છે, આંત્રી વૃત્તિ વિના જીવિતનો શીતળ પ્રભાવ ભોગવી શકતો નથી, તેમાં વિકાસી રહેલાં પત્ર પુષ્પોનો અનુભવ લેવાતો નથી; અને આપણું વિશ્વ ઉજ્જ્વલ, નિર્જીવ, નિરર્થ અને અન્ય લાગે છે. પ્રસન્નતા સુખનું નિદાન છે, તેમ ચારિત્ર્યનું મોટું સંરક્ષણ છે એનાથી લક્ષ્યા અને મદ્યજીવનાં ખીજને ફાસમાં મારે ઉત્તમ ભૂમિકા બંધાય છે, એનાથી હૃદય વિશુદ્ધ થાય છે, અને વૃત્તિ પ્રસાદ

વાળી થાય છે. પ્રસન્નતા દાતૃભાવની સખી છે, ધૈર્યની ધાત્રી છે અને હ્રદાપણની માતા છે. મન અને આરિય ઉભયને સુધારનારૂં એ ઉત્તમ ઔષધ છે. ઘણા મહાપુરુષો બહુ લાંબુ ઇંડવન ગાળી ગયા છે તેનું નિદાન વિચારતાં તેમના દ્વભાવની પ્રસન્નતાજ સુખ્ય કારણભૂત જણાય છે. સંસ્કૃતમાં કહ્યું છે કે:—

સર્પા પિવંન્તિ પવનં ન ચ દુર્વલાસ્તે શુકૈસ્તૃણૈર્વનગજા બોહેનો ભવન્તિ ॥

કન્દૈર્ફલૈર્મુનિવરા ક્ષપયન્તિ કાઠં સંતોષ એવ પુરુષસ્ય પરં નિધાનમ્ ॥

આ સંસ્કારમાં પ્રતિક્ષણ વિપત્તિઓ વરસાદની માફક પડે છે પણ તેમાં ધીરજ રાખવી. શૌર્યવાળાં મનુષ્ય યાતાં નથી. તેઓ એકજ રહેણી કરણીથી રહે છે. કહ્યું છે કે:—

ઉદયે સવિતા રક્તો રત્નસ્થાસ્તમને તથા । સંપત્તૌ ચ વિપત્તૌ ચ મહતામેકરૂપતા ॥

જેમ સંપત્તિથી તેમને ગર્વ થતો નથી તેમ વિપત્તિથી તેમનું ધૈર્ય સ્પષ્ટિત થતું નથી તેઓ “સુખસમૃદ્ધમાં હમી નય જવું દુઃખમાં ન દિંમત દારવી.” એ સૂત્રનું અવગમન કરી હંમેશાં એકજ વૃત્તિથી રહે છે. હવે દરકોષ માણસમાં દુર્ગુણ છે કે નહિ તેના નિશ્ચય કરવો હોય તો તે સંપત્તિસમૃદ્ધેજ થઈ શકે છે, પણ તેનામાં કયો સદ્ગુણ છે તે જોવાનું તો વિપત્તિમાંજ અને છે. દાખલા તરીકે ચંદનના લાકડાને અમથું જોવાથી તે અન્ય લાકડા જેવુંજ દેખાય છે. પરંતુ તેને ઘસવાથીજ તેનો ખરો ગુણ જણાઈ આવે છે. આ પ્રમાણે વિપત્તિની અંદરજ માણસના ખરા ગુણ પ્રકાશમાં આવે છે. માણસે હંમેશાં સંપત્તિ અને વિપત્તિમાં એકજ રીતે રહી કામ, ક્રોધ, લોભ, મોહ, મત્સર આદિ દોષોને દૂર કરી ભગવત્પરાયણ રહી જગતની અંદર જળકમવત્ ઇંડવન ગાળી આ લોક અને પરલોકનું શ્રેય સાધવું એજ ખરો ધર્મ છે.

આટલું જોશી ટું જોસી જવાની રજા લઉં છું અને આપ સર્વેએ શાંતિપૂર્વક અવગુ કહ્યું નેને મારે તમારો અંતઃકરણપૂર્વક આભાર માનું છું.

શ્રીમહાપ્રમુજી અને મૂઢીવાદ.

(અનુસંધાન-ગત્તાંકના ૫૪ ૨૮ થી)

મનુદેહાસ—ભાણ મજદાસને મારોજ પક્ષ સામીત કરતો સાંભળાને મારી પુરાણો પાર નથી!
મજદાસ—સમજ મારા મિત્ર! ઉતાવળા ન ચાઓ. માફ પૂકું સાંભળી લો. પછીથી તમારે જે નિશ્ચય કરવો હોય તે કરી લેજો. (પોતાનું વક્તવ્ય વધારે પ્રકટ કરતાં) જગદ્ગુરુ શ્રીવલ્લભાધીશ્વરનો મહાન આદર્શ એ છે કે, આ સમગ્ર વિશ્વ એ મહાન વિશ્વનાથક વિભુનું ક્રીડાર્યાન છે. આ સંપૂર્ણ જગત અખિત્ર બ્રહ્માંડના સૂત્રધારે પોતાને મારેજ બનાવ્યું છે. આ સમગ્ર સૃષ્ટિના તે એકલોજ માલીક છે. આ દુનિયામાંની આણમાં આણ વસ્તુ ઉપર પણ એ સર્વસમર્થ પ્રભુ વિના બીજા કોઈની માલીક નથી. એણે ઉત્પન્ન કરેલી કોઈ પણ વસ્તુ ઉપર પોતાની સત્તા માનનારાઓ દુષ્ટબુદ્ધિનાજ સમજવા રહ્યા. ત્યારે બધું પ્રભુનુંજ છે ત્યારે આપણે કપી જડ અથવા ચેતન વસ્તુને આપણી માલીકીની સમજ સારીએ? એકમને નહિ; એજ સિદ્ધાંત છે. પ્રારબ્ધબદ્ધથી કે-પુરુષાર્થથી આપણે જે કોઈ વસ્તુ જેણીએ અથવા તો પ્રમુદ્ધપાથી આપણને જે કાંઈ સંપત્તિ મળે, એ સર્વ ઉપર આપણી લેશ પણ સત્તા નથી, એના ખરા માલીક તો પ્રભુજ છે. આપણે તો માત્ર એ પ્રભુની આજ્ઞા મુજબ એ સાંપડેલા દુન્યવી પદ્ધતિની વ્યવસ્થા કરી શકીએ. આપણે ત્યાં કોઈ યાપણ મૂઢી ભય, કોઈ વસ્તુ અમાનત રાખી ભય, તેના ઉપર

આપણે જો માલીકીનો દંડ ધરાવતા યજ્ઞને તો દુનિયા આપણને દગામાજ કહેશે; અને આપણે પણ વિશ્વાસઘાતના મહાપાપપંકમાં ફૂળી મંચીયું. અંદે જોતાં તો આપણા કહેવાતા આ ધરખાર સ્ત્રીપુત્રપરિવારનાએ આપણે ખરા માલીક તો નથીજ. એ બધું પ્રભુનું જ છે. આપણે તો તેમના આશાધારક દાસ કહો કે એક દૂરી કહો, તેજ છીએ. આ દિવ્ય ભાવનાનો જગતમાં પ્રચાર થાય તો અસારે એકમેકની ગરદન ઉપર છરી ચોંટાવીને પાપી પૈસા પેદા કરવાની જે ઘાતક પ્રવૃત્તિ આવી રહી છે તેના સંપૂર્ણનો નાશ થઈ જાય. હાલ આખું જગત આસુરી ધમાકોથી ઘેરાઈ ગયું છે. શાંતિનું નામોનિશાન રહ્યું નથી. જીવનમાંથી રસકસ ઉઠી ગયા છે. આ રાક્ષસી પ્રવૃત્તિનું પરિણામ તો સ્પષ્ટ જ છે. આખું વિશ્વ પોતાનાજ ખજાણે કુહાડે; મારવાની એવદૃશીને ન જોતાં નિજનો અર્થનાશને નોતરી રહ્યું છે. આ દુનિયા પણ જ્યારે આસુરી લાલસાઓથી અને તેના બધાનકે પરિણામોથી ફારી ચાકીને પાછી વળશે અને તેને જ્યારે દિવ્ય શાંતિ અને ચિરકાંતના સુખની ભૂખ લાગશે ત્યારે આખરે જગદ્ગુરુના ઉક્ત આદર્શોને જ સરણે જવું પડશે. એ આદર્શોનું સ્વરૂપ સમજીને તેને જીવનમાં ઉતારવા માટે મહામયન કરવાં પડશે. અને તે પછી આ વિશ્વ કોઈ અનેરી અઘોરિક સુખશાંતિ અનુભવી રહ્યું હશે. તે વખતે એક પણ દેવધારી અહંતામમતાની સાથે સંબંધ નહિ ધરાવતા હોય. પ્રભુસેવારૂપ મહાભયમાં પોતાનાં સર્વદેવને વિનયોગ કરવામાંજ જીવનનું છેલ્લું ખેય સ્વીકારાઈ ગયું હશે. નીતિ, પવિત્રતા, સદાચાર આદિ દેવી ગુણોનો સર્વ પ્રકાર ફેલાઈ રહેલો હશે. ધનવાને પોતાના દ્રવ્યને ઉપયોગ માત્ર પોતાની ઇદ્રિયતૃપ્તિ માટે નહિજ કરતા હોય. દુન્યવી ભોગવિલાસોના બડકાઓથી તેઓ દૂર ન્હાસશે. પોતાના એ દેવી દ્રવ્યનો ઉપયોગ તો માત્ર પ્રભુસેવામાંજ કરશે. પ્રભુસેવા એ એવો એક વ્યાપક મહાધર્મ છે કે, તે જગતના સર્વ અંગોને પોષે છે; હાલના સામ્યવાદનો તો તે વખતે નાશ જ થયો અને તે પુસ્તકોનાં પાનાંઓમાં બરાઈ બેઠેલો હશે તો તે તરફ પણ જનસમાજ દયાની દૃષ્ટિએ જોશે. ધનવાનોને છુટી લઈને, સમગ્ર દેશની દાણત એક સ્થળે રાખીને, તેના પર અમુક દુન્યવી સત્તા રજાપીને બંધાને એક હાલતમાં ધકેલી દેવાના હાલના સામ્યવાદના પિરામી ચાળા ગળકતા બાંધ ફરી નાંખ્યા હશે. જગદ્ગુરુ સ્પષ્ટ ઉપદેશ છે કે—

‘‘દયયા સર્વમૂતેષુ સંતુષ્ટયા યેન કેનચિત્ ! સર્વેન્દ્રિયોપરાન્તયા ચ તુલ્યવ્યાશુ જનાર્દનઃ ॥

‘‘વિદેશાનરાચાર્યચરણ આરા કરે છે કે—પ્રભુને શીઘ્રાવિશીધ પ્રસન્ન કરવા હોય તો આ ત્રણ ચાંત ગાંઠે બાંધી લો. ૧. ગ્રાણીમાત્ર ઉપર દયા રાખો, ૨. જે મળે તેમાં સંતોષ માનો, ૩. સર્વે ઇદ્રિયોને કાણુમાં રાખો. બસ, આ ત્રણ વાતોનો અમલ કરશો કે પ્રભુ તુરંતજ પ્રસન્ન થશે. આ એક દુકામાં દુકા ઉપદેશમાં સમગ્ર વિશ્વનો સુખશાંતિ સમાવશે છે. આ ત્રણ વાતથી વિહાલ અનેક વિશ્વ અભ્યારે અનેક દુઃખોથી ત્રાસી રહ્યું છે. જગદ્ગુરુના આ ત્રણ આદર્શ ઉપર જો સમાજચલતા થાય તો સ્વર્ગ નીચે ઉતરે. દેવાભાવ જગતમાં પ્રસરે તો દિસાપાપને બાર તો આ પવિત્ર ભૂમિ પરથી કાપીને ટલી જાય. નીતિ અને ધર્મના માત્રથી મળેલા યોગ અથવા વધારે દ્રવ્યથી સંતોષ પકડવો એ આદર્શ તો હાલના દ્રવ્ય ચૂસવાના વિશ્વવ્યાપક મદારોગનું અંકસીર-આવધ છે. જગતમાંથી સંતોષરૂપ ગુણ તિરોહિત થયો છે. આસુરી તાણાઓ અને લાલસાઓએ પોતાનું સાંક્રાંત્ય યોગેરે જમાવી દીધું છે. એજ કારણથી એકમેકનો સર્વનાશ કરવા માટે બધા તકપી રવા છે. કોઈ કોઈનું શુભ ઇચ્છતુંજ નથી. દવે આ દાયાનગમાંથી બચવાનો ઇલાજ માત્ર સંતોષરૂપ સદેવ (જગદ્ગુરુ) જ છે. જો સંતોષ હોય તો વિશ્વની દાસની આરાધારીનો અંત યોગજ સમયમાં આવી જાય. બાઈ મનુદાસજી! આપ દવે સમજી શક્યા

હશે કે આપના હાસના સામ્યવાદ અને તેમાં શેષઅશ્વીની જેમ સુખસ્વપ્નો એનારા નેતાઓના વિચારો અમારી દિવ્ય ભાવનાઓથી લાખો ગાઉ દૂર છે. હવે આપની ખાતરી થઈ હશે અમારા કથનમાં આપને આવેલી ‘સામ્યવાદ’ ની મંથ રહી નહિજ હોય. (તાળીઓ).

મગ્નરહાસ—હા, આપના આ અતિલાંબી વ્યાખ્યાનથી હું જગદ્ગુરુનો આદર્શ કાંઈ સમજી શકું છું. હાલનો સામ્યવાદ અને જગદ્ગુરુનો આદર્શ કેટલા વિરુદ્ધ છે અને એ બંનેના મૂલ સિદ્ધાંતો અને પ્રવૃત્તિઓ પણ કેટલી ભિન્ન ભિન્ન છે તેનો ખ્યાલ મને આવે છે, છતાંએ આપે જે ખોટીના ચેક પૂર્ણ, દિવ્ય ભાવનાની જે બી બી વાતો હાંકી તે જેટલી બોલવામાં સચિત્ર મીઠી મંથ જેવી લાગે છે, પણ તેનો અમલ કેટલો મુશ્કેલ છે એનો કોઈ વિચાર કરશે ? અન્યારે માનવોનાં હૃદયો ક્યા દિશામાં દોડી રહ્યાં છે ? નિર્મલ અધુર જન્મનો પ્રવાહ કહો કે અંજવાનાં નીર કહો; પણ એજ એવ લણી સમગ્ર વૃષાર્ત માનવ હૃદયો યાદોમ દોડી રહ્યાં છે, આના સમયમાં તેમને બીજાજ દિશામાં વાળવાં, તેમના પર આધિકાર ગેળવલો એ શું અશક્ય સ્થિતિ નથી ? વળી અહંતામમતાના ત્યાગનો તમે વાત કરી પણ કરોડની સંપત્તિ હોય અને એ જે ચૂડેલાંકંથુનો પડખો પણ ન પડે એ બનેજ કેમ ? જગદ્ગુરુ શ્રીમદ્ભલાચાર્યજીએ તો તેથીજ મઠ મંદિર કે વૈભવો જમાવ્યા નથી, આપ એવો ઇતિહાસ રજુ કરી શકશે કે અહંતામમતાનો હાગ અને સંતોષ જેવી સંપત્તિઓ પણ અઘળક દુન્યવી સંપત્તિ સાથે રહેલી હોય ?

મગ્નરહાસ—ઓહો ! એમાં તે શું ? આપે જગદ્ગુરુના કૃપાપાત્ર અંતરંગ સેવક શેઠ શ્રીપુરુષોત્તમદાસજી કાશીવાળાનું નામ સાંભળ્યું છે ?

મગ્નરહાસ—ના, મુઢલે નહિ. એમનો ઇતિહાસ શેમાં લખેલો છે ? તે જણાવશે ?

મગ્નરહાસ—આફસોસ ! હાલના પુષ્ટિમાર્ગીય પંડિતો શાસ્ત્રોની યોડી યોડી વાતો કરવામાં ચડા હોય છે, પણ જે મહાન પવિત્ર ગ્રંથોના અક્ષરેઅક્ષરે પુષ્ટિમાર્ગીય સિદ્ધાંતો અને દૈવી હથેનો પ્રકાશી રહ્યાં છે એ ગ્રંથો તરફ ઉપેક્ષા રાખે છે ! ખેર, હું એ ખાતર—સ્મૃતીય વંદનીય મહાનુભાવ શેઠ શ્રીપુરુષોત્તમદાસની વાર્તાનું વર્ણન કરીને મારી વાણીને પવિત્ર કરીશ.

સાઝ ચારસો વર્ષ પહેલાંની વાત છે. કાશીએ ભારતવર્ષમાં અદિતીય પ્રતિષ્ઠા પ્રાપ્ત કરી હતી. કાશી અને ત્રિવેણી એ જે રાષ્ટ્રો જ એકમેકના પર્વપ્રદપ ગણાતા, વિદ્યાર્ષ અલૌકિક ધનના ભંડાર ધરાવતા કેટલાએ આચાર્યો, સંન્યાસીઓ, સંતમહત્તો અને વિદ્વાનો; એ કાશીનગરીના અણમેત્ર જવાહિરો હતાં. કાશીનરિય પણ એક આર્થ ક્ષત્રિય વીર હતા. પ્રાણના પણ બોલે ધર્મરક્ષા અને ત્રિવેણીનરક્ષા એ જે કર્તવ્યનું પાલન કરવું એ એમનો મુદ્દાલેખ હતો. શ્રીમદાપ્રભુજી પણ કાશીમાં પધાર્યા. અનેક વિદ્વાન સંન્યાસીઓ, મહંત મહાધીરો અને પંડિતો સાથે આપશ્રીએ શરૂઆત કરી. આપશ્રીના અપૂર્વ પાંડિત્યથી, આર્થસંસ્કૃતિના પવિત્ર આદર્શસમા મદર્પિત્યનથી, મહાત્યાગથી, તેજસ્વિજ્વરૂપથી, કાશીનો માનવસમૂહ આશ્ચર્યમુગ્ધ અને અદ્વાપૂર્ણ બન્યો હતો. એ સર્વમાં કાશીના તે સમયના ધન-કુખેરસમા ગણાતા શેઠશ્રી પુરુષોત્તમદાસજીએ તો શ્રીમદાપ્રભુજીને પોતાનું સર્વસ્વ અર્પણ કરી દીધું હતું, અને અતિસન્માન તેમજ અતિઆગ્રદયી એએશ્રીને પોતાના ઘરમાંજ બિરાજવા વિનવિ કરી હતી. લકતેઆપુરક શ્રીવૃક્ષલાધીધર ત્યારબાદ શેઠના ઘરમાંજ બિરાજ્યા [મગ્નરહાસ આ સમયે મદ્મદ્ કંઈ ધ્વં ગયા અને જે મિનિટ મુધી આગળ બેઠી શક્યા નહિ, અને સજામાં તો સાંતિનું સામાન્ય પ્રસરી રહેલું હતું.] શેઠનાં બકમાગીપણાનું વર્ણન આ ક્ષણ તે શું કરી શકે ? કાશીમાં એક આશ્ચર્ય તો પ્રસરેલું હતું, તેમાં અખળધિપતિ શેઠજી એક મર્મચાર્ણને રાષ્ટ્રે ગય અને પોતાની અંતરંગ

સંપત્તિની ખુમારી, અપૂર્વ ગૌરવ વગેરેને તિલાંશરૂપે આપીને શ્રીવક્ત્રસચ્ચક્ષુકમતના દાસાનુદાસ બની જાય એ વાતે તો ભારે ચક્રવાર જગાદી હતી. શ્રીમદ્દાપ્રબુદ્ધ તો શેઠજીના ઘરમાં ગિરાજાવા. આપશ્રી ભક્તવેશિત રહ્યા. એટલે આપશ્રીની વચ્ચનસુધાથીજ જેમનો જીવનનિર્વહ છે એવા એવકો પણ સાધેજ રહ્યા. શેઠજીનું રાજસ ઘર, રાજસ કુટુંબ એ બધાનો નવોજ જન્મ થઈ ગયો. શેઠજીનો અદ્વિતુત જીવનપત્રો થયો. ત્રણ દિન ચાલે તેથી વધારે એક દાણો પણ નદિ સંધારનાર ત્યાગભૂતિ આચાર્યશ્રીએ શેઠજીને લાગી જનાર્યા નદિ અને એમનો કરોડોનો વ્યાપાર પણ ધનધોક્ષર ચાલવા દીધો. તેમની ધનકુળેર તરીકેની પ્રતિજ્ઞાને લેણ પણ દરકત પડેવાની નદિ. બાળ વસ્તુસ્થિતિ જે હતી તેમાં બહુ ફરક પાડવાની જરૂર જોઈ નહિ. પણ તેમનો જીવનપત્રો તો અજ્ઞાન જ થઈ ગયો. કોઈ જૂનો પરિચિત તો એમજ કહે કે દેવ તો શેઠજીનો લાગે છે, પણ આત્મા કોઈ નવોજ આવ્યો છે !

તે વખતે ભારતવર્ષની રાજકીય સ્થિતિ લાંબા આર્થસંઘાતોના હૃદયોને દગ્ધ કરી રહી હતી. દિનપ્રતિદિન વિધર્મોએ અને વિદેશીઓના અત્યાચારોના ત્રાસજનક કર્ણકંઠ કિરસાએ કાને પડતા હતા, ધર્મપરાયણ કાશીનરેણ સ્વધર્મનું પાલન કરવા માટે જોતાનું સર્વસ્વ અર્પણ કરી સુખ્યા હતા. એમને રાજ અને ધર્મની રક્ષા માટે ફક્ત છોપન કરોડ રૂપિયાની જરૂર પડી હતી ! તે વખતના છોપન કરોડની ખરોખરી અત્યાચારના છોપન અખજ રૂપિયા પણ કરી શકે નહિ. કાશીનરેણને શેઠજી પાદ આવ્યા. એકદમ એ મહારાજા શેઠજીને ત્યાં પધાયા. અનેક પહેરા ગોઠવીને અદ્વિતુત રીતે શય્યાગારેલા દિવાનખાનામાં અપૂર્વ દાહથી બેસતા શેઠજી પાસે જવાને સાધારણ માણસનો તો પગ પણ ઉપડે નહિ. કાશીનરેણને બધા ઓળખતા હતા. ખરોખરી ૪ વાગ્યાનો સમય હતો. ખજર આપ્યા વિના અચાનકજ મહારાજાને આવેલા જોઈને અનુચર વર્ગ ગભરાઈમાં પડી ગયો. મુનીમજી તથા બીજા અનેક અનુચરોએ દરબારનું સ્વાગત કર્યું. કાશીનરેણે આભર્ષથી પૂછ્યું કે શેઠજી ક્યાં છે ? ત્યારે મુનીમજીએ અર્જ કરી કે “ નામદાર નરેણ ! શેઠજી તો અત્યારે સેવામાં છે. ” રાજાએ પૂછ્યું—“ અત્યારે સેવા ? ” મુનીમજીએ કહ્યું “ હા, નામદાર. ” નરેણે પૂછ્યું કે “ તેઓ અત્યારે મળશે કે કેમ ? ” મુનીમજીએ કહ્યું કે “ મળવામાં કાંઈ પ્રતિબંધ નથી. ” મુનીમજીએ રસ્તો બતાવ્યો અને મહારાજા પ્રભુમંદિરમાં દાખલ થયા. ઉચ્ચકાલના દિવસે હતા. અસલ ગરમી ચોમેર વરસી રહી હતી. પસીનાથી ભોંજવયા કપડાંવાળા નરેણે જ્યાં મંદિરમાં પ્રવેશ કર્યો કે તુરતજ ત્યાંના પવિત્ર શીતજળ વાતાવરણે એમના ચરીરમાંજ નદિ પણ હૃદયમાં ઉંડાણમાં પણ એક સુખમય શીતપ્રતાનો સંચાર કરી દીધો. અજાનાધપતિ શેઠજી તે વખતે માત્ર એક સાધારણ વજ્ર પહેરીને સોદંતીની (ગુદારીની) સેવા કરી રહ્યા હતા, કંઈ કે વાસીફ હાલત હતા. અનેકવાર મજેલા શેઠજીને આજે કાશીનરેણ ઓળખી ચક્રવાદ નહિ. રાજાને તે વખતે એક પણ પણ કલ્પસમાન હતી. બેજાકળા થઈને રાજાએ સોદંતીની સેવા કરતા શેઠજીનેજ પૂછી નાંખ્યું કે : “ શેઠજી ક્યાં છે ? મારે મળવું છે ? ” શેઠજીએ તો દરબારને તુરતજ ઓળખી લીધા; અને કહ્યું કે—“ શેઠજી તો બીજા મંદિરમાં ગિરાજા છે, પણ હું એમનો દાસાનુદાસ હાલત છું. ”

રાજાએ અવાજ ઓળખ્યો. પૂર્વ રમરજી તાલું થયું. ધનમદ અને રાજસ વૈભવોમાં કુબેલા શેઠજીનાં જીવનમાંના આ પરિવર્તને રાજાને આશ્ચર્યમજ કરી દીધા. તે પછી રાજાએ વાનંશાય કરીને ૫૬ કરોડ રૂપિયા માગ્યા અને તે શેઠજીએ આપ્યા.

બાઈ મનુદાસજી અને વૈષ્ણવો ! આ જતરદગ્ધ ઇતિહાસનો અર્થ કરીને, તેમાંનાં રસ્યો ઉઠીને આપ સ્વનો વધારે સમય દું લેતો નથી. આ એક જ ઇતિહાસથી ધનારોનાં દેવી જીવનનો ચિતાર આપનાં હૃદયોમાં અચરસ ખરે થયો હશે.

યુવક હૃદય વોલે છે !

(લેખક:—શાહ ઘનશ્યામલાલ મણિલાલ પેટલાદ.)

પુષ્ટિમાર્ગ ! આજ તારી જાહેજલાલીનાં તેજ કયા ગિરિયુગે પાછળ છુપાઇ ગયાં છે. પૂર્વેની તારી અનેરી જાહેજલાલીના પાંખો આજ ઝમગમવા લાગ્યાં છે. સર્વત્ર તારા તિરોધાનના ભણકારા સંભળાય છે. એક વખત જે સંપ્રદાય જગતમાં સર્વોત્કૃષ્ટ હતો, તે આજ સર્વત્ર ધૂણાની દૃષ્ટિથી જોવાય છે. આજ તારા ઉચેરાં નિર્મળ શુદ્ધ સિદ્ધાંતો અમારી ખેદકારીની લીધે અદૃશ્ય થતા જાય છે. જે વૈષ્ણવ સમાજ એક વખત સર્વશિરોમણિ હતો, જે દુનિયાની અન્ય સર્વ જગતોને પ્રમાણરૂપ થતો તેજ સદંતર નિર્મોલ્યરૂપ ગણાઇ દુનિયાના સમાજના અવમાનપાત્ર બનશે ?

ઓ વહાલા વૈષ્ણવ સમાજ ! હવે તો ભૂંટી યા ! ક્યાં સુધી આમને આમ ધોર્યા કરવું છે ? હવે તો આમને આમ ઉધ્યાં ફરીશું તે નહિ ચાહે. આ અતાનરૂપ અધિકારને દૂર કરવાને માટે કર્તવ્યપથે દોડવાને માટે તેઆર યા ? રોજિના ઘેર અધિકારની ભીષણતામાં, અરણ્યમાં, વાધ વરનાં લયાનક ગર્જનમાં, પદાડની ઉડી અધારી ખીણોમાં બૂઝા પડેલ મનુષ્યની મોઢક દિગ્માન પિનાના મનુષ્યની માફક, નેત્રવિહીન પામર પ્રાણી માફક આમથી તેમ અને તેમથી આમ અચડતો, કુડતો, ભટકતો, ઠોકરો ખાતો એવો આજ અમારો સમાજ દેખાય છે ! ખરેખર તેની સહનશક્તિ તો ઓગળ છે, દિવસે દિવસે તે કમજોર બનતો જાય છે. જો બૂઝા પડેલ ધરમાણુની માફક ટુંક સમયમાં તેને ખરા માર્ગ નહિ સાંપડે તો તે અરણ્યમાં નિષ્કળ રહન કરતો નિર્વેતન બનશે. જ્યાં ત્યાં અત્યારે બ્રહ્માચારો અને ધર્મને નામે અનેક દુષ્ટ આચારો ચાલુ થતા જાય છે. અત્યારે અનેક ખીચારી ભોગ્સ બહેનો સ્વાર્થી પાંખડીઓના વાચાળપણથી આકર્ષાઈને જીવનની ધુળધાણી કરે છે ! આપણો સમાજ આ બધું ક્યાં સુધી સહન કરશે ? સંપ્રદાયના બદાનાં નીચે પોતાની છટાથી તેમજ બાલ આડંબરથી કેટલીએ ઉછરેલી વધની શુદ્ધ હૃદયની સુવર્તિઓ તથા સુવર્તને વિવશની ગંદી ચટ્ટર તરફ પસંદી જતાં, એ શું વૈષ્ણવતા છે ? શુદ્ધ હૃદયના ઉછરતા યુવક સુવર્તિઓને ઉચેટ કલંકિત થઇને આપણાં ક્યાં વિના ચાલતુંજ નથી. ઓ ભોગ્યા બહેનો તથા ઓ વહાલા સુવર્તો ! તમે પ્રજુને અર્પણ કરેલ રૂપ જીવનને નહવું ધંબી ફેંકી ન દેતાં શ્રીકૃષ્ણચરણોમાં અર્પણ કરો. તમારી જીવનનોકા શ્રીમદાપ્રબુદરતમાં સોંપી દો, કે જોધી તમે આ સંસારમાં કૃતકૃત્ય યાઓ.

ઓ વૈષ્ણવ વહીવ વર્ગ ? આજની ઉછરેલી પ્રજા આવા સુગ્રાઓ શી રીતે ચાલવા દેશે ? આજના સુવર્તો તથા સુવર્તિઓ આવા કલંકો હવે નહિ ચાલવા દે. તને પ્રજુએ બોલેલ આ તારાં ઓધા જીવનને આમ નકામું વેઢરી ના ખાતે. શ્રીમદ્વૃક્ષસાચાંજના ઉચ્ચ સિદ્ધાંતોને સમજીને વિવશાનંદના લ્હાવા લેવાના છોડી છર્ષ લજનાનંદનો અનુભવ કરવાને તૈયાર યા. પ્રજુએ લીધેલ તારી મુંદર કાપાને ભગવત્કેવાને માટે જ્યોત્સવ કરી દે. ફાણમંચર દાડમાંસ ચામના જાતિક સૈન્દર્ભ ઉપર મુગ્ધ થવાને બદલે એ સૈન્દર્ભને જનાવનાર અને એ સૈન્દર્ભનું છુટે હોતે દાન કરનાર અજર, અમર, કાટિકંદર્પ કરતાં અધિક અનેરી સૈન્દર્ભની છટા જેના ઉપર છાઈ રહી છે એવા શ્રીશ્યામકુંવરઉપર મુગ્ધ થઈ તાઈ સર્વસ્વ તેના ચરણોમાં અર્પણ કરી દે. એ સૈન્દર્ભની છટાથી તો તારા વિવશની ભગવતી લ્હાગાઓનો પ્રજુ સમૂહ નારા પામશે. તારા કેભળ હૃદયમંદિરને એ દિવ્ય પ્રેમ સરોવરમાં કુણાવી દે. શ્રીશ્યામકુંવર સાથે સન્ધાવન પ્રીતિનું રેણુ સાંધી દે. સાથ સાથ એ પ્રીતિ કરતાં પહેલાં એટલું યાદ રાખવું જોઈએ કે પ્રીતિ કરવી સરેશી છે પણ તેને નિભાવવી સુશ્રીમ છે. પ્રેમને નિભાવવામાં આત્મસમર્પણ કરવાને પણ તૈયાર રહેવું જોઈએ, આ યરીર રહે

તા જાય, મનનો કાષ્ટ દાસમાંથી છુટી જાય, હૃદય પવન જાળમાં યજ્ઞ જાય, સરીરે પવન એ પ્રેમ-
 નિર્મિતમાં લાગી જાય, અને આ માથું પણ દસમાં હસતો એ પ્રેમમગ્નતાના ચરણોમાં ચડાવી
 લેવું પડે તો પવન શીકર નહિ એવી તૈયારી બે આપણી દોષ તોજ તે પ્રેમના આપણે અધિકારી
 થઈ શકીએ. જે પ્રેમને નિભાવવાનું બલુલો નથી, તેને રમેદનદીમાં આગળ તરવું નહિ જોઈએ.
 પ્રેમરૂપી ઇવન ઇવનમાં કૌંસપણ આપણુ આવી જાય તો પપૈઆ અથવા આતકને આપણુ
 હૃદય બનાવવું જોઈએ. કાંઈક કે આદિથી કે અંત સુધી પ્રેમની રીત એક રસ નિભાવતી તેનું
 જાન તેઓને સારી રીતે દોષ છે.

આ વેપણુવ વરીત વર્ગે જે આ વિશુદ્ધ આત્મન પ્રોતિની રીતો તથા પૂજાપાદ શ્રીમદ્
 શુભાચાર્યના ઉચ્ચ સિદ્ધાંતોને આજના આમારે જેવા ઉછરતાં યુવકો તથા યુવતીઓને શીખ-
 ત્યા તથા સમજાવવા પ્રયત્ન કરશે તો જરૂર તેઓ સીખવાને તૈયાર થશે, અને તેની અસર
 રેઓનાં કુમળાં હૃદય ઉપર થાળીજ સારી થશે. પણ પ્રભુના મંદિરો તો સ્વચ્છ, નિર્મળ અને
 પવિત્ર વાતાવરણમાં, નહિ દોષ તો તેમના ઉપર કદાચ આજના યુવકને શ્રદ્ધા નહિ થાય. પણ
 ખરેખર જે, જેજ મંદિરોમાંથી પવિત્ર ખનિ થશે તો જ્યાંને આકર્ષિત. આપણા આચાર્યશ્રીઓ
 બાપ્પારે પણ સાદાઈ, ઉચ્ચ ચારિત્ર્ય આદિ ગુણોથી શ્રીમદ્ પ્રભુજી અને શ્રીપ્રભુચરણની માકલ
 ઉગતા તરંગો ઉપર નિજ ઇવનની છાપ પાડે તો જરૂર એજ યુવકો અને આચાર્યશ્રીઓના ચર-
 ણોમાં પેનાનું માથું એક ફેરો નહિ પણ દશ ફેરો યુકાવે છે અને યુકાવશે એ નિઃસંદેહ છે.

છેવટમાં એટલું કહેવાનું કે શ્રીમદ્ શુભાચાર્યજીએ રચેલ મજબૂત પાયા ઉપર શ્રીમદ્ પ્રભુચરણો
 હૈયોની સુંદર સમરત હાથે ન થઈ જાય તે માટે બાતક બાલિકાઓ, યુવકયુવતીઓ, શ્રીપુત્રો
 પ્રાણીઓ, આચાર્યો, માસિકના તંત્રીઓ મંત્રીઓએ પેનાનાથી અને તેટલી સંપૂર્ણ મદદ કરવાને
 માટે કટિબદ્ધ થવું જોઈએ. નહિ તો દિવસે દિવસે વેપણુવ સમાજ પડતીની રિયાત ઉપર આવવા
 માટે છે, શીજીવ વધતી જાય છે. અને શારીરિક અને માનસિક સામર્થ્ય ઘટતું જાય છે. માટે
 વેપણુવ સમાજને ઉત્થાનના માર્ગ ઉપર ધરતી અને જાળન થઈ કર્તવ્યપથ ઉપર આવવા સારી
 ખાસ અભ્યર્થના છે.

આ બદલાય વેપણુવ યુવકો કે હૃદયની કુદ-કુર્મજનને ત્યાગી એકદમ જાળન થાઈ. નહિ તો
 પુષ્ટિમાર્ગનો સ્વાર્થ આશયવાની તૈયારી ઉપર છે, અને જેતજેતામાં આથમી પણ જશે. તમે નિઃ-
 સાર પ્રમાદ અને સંકોચને પત્તિપાગી શ્રીદરિયાપછ આદિ આચાર્યવંશજોની આગ પ્રમાણે પ્રભુનું
 ધવજમનનાદિ કરતાં રહી, પ્રભુસેવામાં અંતઃકરણને પોતી રાખી, સમાજના સમાજોના અને
 તેના મજાને નાશ કરવા, પુષ્ટિમાર્ગને અદ્ધકલાપર સરિખડો નિર્મળ અને નિષ્કલંક કરવા ઉદ્દેશ
 કર્તવ્યપથે શીખ દોરો!

ગજવંતી, ચત્તારી	
ગોવિન્દ ગોપાલ ગોકુલેશ નામ લીજીએ, તથાલાપ-કિયા-જ્ઞાનકોરી ત્યાજ કીજીએ.	ગો. ૧
મુખમે ગોવિન્દ તામ, કરુએ ગોવિન્દ કામ, ચલિસે ગોવિન્દ નામની સુધાવી પીજીએ.	ગો. ૨
અટયામ વાદી તાનં આરએ સદા વિરામ, વાદીશ વિદ્વંકે પામ થોલી જાન લીજીએ.	ગો. ૩
રેન દિવસ પીત જાંત અત સર્વ એક જાન, એન ગિત પાવીને કીરુપ્યુ રૂપ્યુ કીજીએ.	ગો. ૪

સાંપ્રદાયિક પ્રવૃત્તિ.

મુંબાઈમાં શ્રીમદ્ભક્ષાચાર્યપ્રાદુર્ભાવમહામહોદયસર્વ—શ્રીમદ્ભક્ષાધીશ્વરનો ૪૫૫ મે પ્રાદુર્ભાવ-મહામહોદય ઉજવવા મુંબાઈના વેપ્પુવાનું એક મહાસંમેલન રચનાય મહોદી હવેલીમાં ૫. પા. ગો. શ્રી. ગોકુલનાથજી મહારાજશ્રીના સભાપતિપદે શુરવાર તા. ૨૦ તથા શુક્રવાર તા. ૨૧-૪-૩૩ ના (બન્ને દિવસે) રાતના આઠ કલાકે મળ્યું હતું. તે સમયે બા. ગો. શ્રી દીક્ષિતજીનું નિયુક્ત ભક્તિ અને, ગો. શ્રી. ત્રિવિધરાલ બાવા, ગો. ચિ. શ્રીમજનાયણજીનું ‘ શુદ્ધ પુષ્કિમંતો ’ તથા ગો. શ્રીગોપીનાથજી આદિના વચનામૃતો ઉપરાંત પં. હરિશંકર ઓઝારજી, સાશ્વતી હરિપુત્ર વીરજી, અને સાશ્વતી ત્રીકમજી ‘ શુદ્ધાદૈત વિશારદ ’ ના પ્રાસંગિક વ્યાખ્યાનો યથા હતાં. બન્ને દિવસે સભાપતિશ્રીના સાંપ્રદાયિક સિદ્ધાંત પૂર્ણ મનનીય વચનામૃતો યથાં હતાં. તદુપરાંત તેજ્યેશ્રી તરફથી આવડી શ્રીબાલકૃષ્ણ પાઠશાળામાં સાંપ્રદાયિક શિક્ષણ લઈ અન્તિમ પરીક્ષામાં ઉત્તમ કક્ષામાં ઉત્તીર્ણ થયેલ બાઈ ત્રીકમજી સમંને પ્રમુખશ્રીએ અદીત્તો દર્શીઆ તથા વક્તાહિનું પારિતોષિક અને ‘ શુદ્ધાદૈતવિશારદ ’ ની પદવી પ્રદાન કરી હતી. તથા પં. અદીનાથ વેણને તેની આયુર્વેદશિક્ષિત્વામાં નિયુક્તવાને લીધે સર્વેશ્વરે આપ્યું હતું. તે બન્નેએ રત્નીકારીને સભાપતિશ્રીના આશાર માન્યા હતાં. બન્ને દિવસે ૩ કલાક સુધી કામકાજ ચાલ્યું હતું અને વેપ્પુવધર્મ-દુરાગી બાઈ બ્હેનએ સારા પ્રમાણમાં લાભ લીધો હતો. છેલ્લે દિવસે શ્રીયુત જન્માવન વાલજીએ સભાપતિશ્રી, તથા અન્ય ગો. બાલકૌંડો આશાર માન્યા પછી સમાજમાં વધાઈ મવાયા બાદ શ્રીબાલકૃષ્ણ-લાલજીના ન્ય નાદ વચ્ચે સદ્ વિખરાયા હતા.

વિલાપારણામાં—સંસ્કૃત પાઠશાળા તરફથી શ્રીમદ્ભક્ષાચાર્યજીને પ્રાકટયોત્સવ ઉજવવા તા. ૨૦-૪-૩૩ ને શુરવાર રાતના નવ કલાકે એક સભા શ્રી ગોરવાલ બ્રહ્મનિવાસમાં શ્રીયુત મહુભાઈ કીશન-દાસ સોલીસીટરના પ્રમુખપણી નીચે મળી હતી. તે સમયે સંસ્થાના મંત્રીએ પ્રારંભિક ઉપક્રમ કરતાં સભા યોજાવવાનું પ્રયોજન લહેર કર્યા બાદ આજની સમાના મુખ્ય વક્તા શ્રીયુત ડોહાલાલ ભગીરદાસે પ્રાસંગિક વિવેચન કર્યા બાદ ‘ ભારતના મહાત્મજીના ’ નામક ગો. શ્રીમજનાયણજીએ લખેલ નિબંધ વાંચી સંભળાવ્યા બાદ શ્રીયુત જે.દારકે શ્રીમદ્ભક્ષાચાર્યશ્રીના ચરિત્ર ઉપર વિદ્વતાપૂર્ણ વિવેચન કર્યા બાદ, શ્રીયુત ત્રિવિધરાલ જી. રાઠે શ્રીમદ્ભક્ષાચાર્યજીના વિશ્વમાન્ય સિદ્ધાંતોનું દિગ્વિશંન કરાવ્યો પછી પ્રમુખશ્રીએ પણ આવશ્યક વ્યાખ્યાન કર્યા બાદ શ્રીયુત ફવેએ પ્રમુખશ્રી તથા અન્ય વક્તાઓને આશાર માન્યા બાદ મોટી રાતના સભા વિસર્જન થઈ હતી. ઉપર્યુક્ત મહોદયે નિમિત્તે રચનાય શ્રી ભક્તિ-માર્ગીય સા. મન્દિર, શ્રી પુ. યુ. પરિષદ વિગેરે સંસ્થાઓ તરફથી શ્રી વીલાપારણા સં. પાઠશાળાની પુસ્તકાલયને કેટલુંક સાગ્રપ્રત્યિક સાદિલ એટ આપવામાં આવ્યું હતું.

કચ્છ નહીયામાં—પ્રાકટયમહામહોદય ઉજવવા કચ્છ નહીયાના વેપ્પુવાની એક સભા ચેત્ર કૃષ્ણ ૧૧ ને શુરવાર તા. ૨૦-૪-૩૩ ના દિને જાનના પાંચ કલાકે કચ્છ મંડીવીવાલા ૫ પા. ગો. શ્રી ૧૦૮ શ્રીદ્વાકેશલાલ મહોદયના પ્રમુખપણી નીચે નવી ધર્મશાળામાં મળી હતી.

મહારાજશ્રીના સાશ્વતી પં. મંગાધરજી વ્યાકરણાચાર્યે વિદ્વતાપૂર્ણ (દિન્દીમાં) લ.પણ આપતાં નજીવું હતું કે શ્રીમદ્ભક્ષાચાર્યજી ભક્તિ-માર્ગના ઉદ્ધા આચાર્ય યથા છે. આપશ્રીને પૂર્વાચાર્યોએ પ્રતિ-પાદન કરેલ ભક્તિમાર્ગમાં અનેક ગુટિકો નજીવ. શ્રીમદ્ભક્ષાચાર્યજીથી પૂર્વના ભક્તિમાર્ગના આચાર્યોએ દેવેત યા વિશિષ્ટાદૈત રત્નીકારી ભક્તિમાર્ગ ઉપદેશો દત્તો. દેવેત ભાવમાં સર્વથા નિષ્કામ સેવન નજ થઈ શકે. કંઈક સ્વાર્થ દેવતાદર્મ ભક્તનો રહે છેજી. તેથીજી સર્વથા નિષ્કામ, નિયુક્ત, ભક્તિમાર્ગ રેવા માર્ગને પ્રવર્તાવવા શ્રીમદ્ભક્ષાચાર્યજીએ શુદ્ધાદૈત બ્રહ્મવાદને રત્નીકારી સર્વત્ર આત્મભાવ ‘ વાહુદેવઃ સર્વ-મિતિ સ મહાત્મા હુદુલ્લેમઃ । આ બજવદ્ વાક્યાનુસાર અખિલ બ્રહ્માંડમાં, અસંખ્ય વસ્તુમાં, અને ૧ બેટજીનું નદિ પણ સ્વયં પોતામાં નિયુક્ત-નિષ્કામ બજવદ્ ભક્ત પોતાના પ્રેમ-પ્રિયતમને અવલોકી તેમના પ્રેમમાં મસ્ત બની-અદૈત ભાવમાં તદ્વપ બની કરાની પણ ઇન્દ્રા રાખ્યા વિના ભજવતેસવન કરે છે, એજ વિશિષ્ટ ભક્તિમાર્ગ શ્રીમદ્ભક્ષાચાર્યજીનો છે.

સમાપતિશ્રીનો મનનીય સંકુપરેશ—ત્યાર પછી પ્રમુખશ્રીએ શ્રીમદ્દશાધ્યાયચરણના છવનની રૂપરેખા દોરી આપશ્રીએ આપણા હપરે કંટકી નિરૂપીત દૃષ્ટા કરી છે તે પરત્વે જણાવું છું કે શ્રીમદ્-દશાધ્યાયચરણે પ્રથમ નવ વર્ષ, દ્વિતીય પાંચ વર્ષ અને તૃતીય ચાર વર્ષ; કુલે અઠાર વર્ષમાં ત્રણ વખત ભારતવર્ષમાં પરિક્રમણ કરીને સંસારરોમાંથી પીડાતા નિઃસાધન છવોને બચવું જનનરસ પાછ સાલોદ્યાદિમુક્તિપ્રાપ્તિપ્રદ થઈ પણ અધિક ભગવાનનાં આસ્વાદ કરાવે છે. શ્રીમદ્દશાધ્યાયચરણે આ અલૌકિક દેવતાઓને પણ દુર્લભ બચવું મળિતું જાન કાઠ પણ ભતના બેઠાવા વગર સર્વ ભવિષ્યને કહું છું. ખેડેખરા પતિતોના—અરપૂર્યોના જ્ઞાતક શ્રીમદ્દશાધ્યાયચરણ દતા. પતિતો—અરપૂર્યોનો આ સંસાર સામંતમાંથી—જન્મમરણના યા લગુચોતશીના ફેરમાંથી ઉદ્ધાર કર્યાં દતો. શ્રીમદ્દશાધ્યાયચરણે અરપૂર્યોનો ઉદ્ધાર કવ્ય વર્ણના દિન્દુઓના બચવું અંદરિમાં અરપૂર્યોને યુક્તિ આ વગર, અન્યને સાથે રોડીબેડીવ્યવહાર કર્યા વગર, કવ્ય દિન્દુઓ પાસે ચમ્પાર, મોચી, બંગી, વગેરેનું કામ મુંઠાયા વગર; અરપૂર્યોનો રોડીયો યાજ્યા વગર ઉદ્ધાર કર્યાં દતો; કે ને અરપૂર્યો—મોદના બંગી જેવા વિધવંદ બચવું જનનના રકંધ હપર વેશ ને નેતિ નેતિ પોકારે છે તે રસરૂપ અમલિતાનંદ રૂપ પ્રમુ શ્રીગોવર્ધનધરણ બિરાજ ખેલતા દતા. સાચા અરપૂર્યોજ્ઞાતક—પતિતોજ્ઞાતક તે શ્રીમદ્દશાધ્યાયચરણ દતા. હવે પણ પતિતો—અરપૂર્યો અને તેઓની હવેતિ ઈચ્છનારાઓ શ્રીમદ્દશાધ્યાયચરણપદિય સરણિને અનુસરે તોજ અરપૂર્યોનો ઉદ્ધાર સમ્ય છે. અન્ય રીતે તો બિચારા ગરીબ અરપૂર્યોનું અધઃપતન અવરણભવી છે. તેમને પણ દિન્દુ ધર્મથી વિમુખ બતાવી ડો. અગિઉકર જેવા પ્રોસ્ટી યા નાટિક બતાવી, તેમના અન્ય જન્મોમાં અરપૂર્ય—ચોક્કસોનિથી પણ નીચ—દુષ્ટિગ્રીટ—યા અંધતમ નરકમાં ધોલવાનોજ આ સર્વ વંદોળીયો છે. આવા અનેક લોકોપકારી—જન્મકલ્યાણકારી કાર્યો કરી—જનમુદ્ધર, ભાગવત વિગેરે અનેક આકર સાધ્યા લખી શ્રીમદ્દશાધ્યાયચરણે સં. ૧૫૮૩ના અસાદ શુકલ ૩ ના દિને અધ્યાન્હે કાશીમાં હનુમાન ઘાટ પર પુનિત નવંદવીના ધર્મમાં તેજાપુત્ર યદુ રવધામ પધાર્યા દતા. જ્યારે શ્રીમદ્દશાધ્યાયચરણે સંન્યાસાશ્રમ પ્રદણ કર્યાં. આ. શુ. ૩ ને દિને નિજ પુત્રો શ્રીરામોનાથજી અને શ્રીવિઠ્ઠલનાથજી (શ્રીગુણાદિ) અને વૈષ્ણવો શ્રીમદ્દશાધ્યાયચરણ પાસે આવી પોતાને શ્રી આજ્ઞા છે, તે પૂછું ત્યારે અરમદાદિ જનોની જેમ થર, જમીન, ખેતર યા માલ મિલકતની સંભાળારાની ભજામણ ન કરતાં અલૌકિક એક આધ્યાયને રોડે તેડું વસીયતનારું વીલ કરું.

ત્યારે તમે કોઈ પણ રીતે ભગવાનની બલિમુખ—વિમુખ ધરો—લોકિકમાં આસક્ત થયો તો તમારા ચિત્ત દેહ વિગેરે સર્વ કાલપ્રવાહમાં ચલિત થઈ તમારે સર્વ પ્રગરે ભજવું કરશે—નાશ કરશે. એવી ખરી મતિ છે. આ શ્રીમદ્દશાધ્યાયચરણ વસીયતનારું—વીલ છે. પોતાનો તે અમૂલ્ય વારસો પોતાના વંશજોને આપ્યો છે. જે તેઓશ્રીના વંશજો, શિષ્યો, સેવકો, વૈષ્ણવો પણ શ્રીમદ્દશાધ્યાયચરણે કહેલ પોતાના વસીયત-નામાની શરતો પાલન કરે તોજ તેઓશ્રીના વારસા દહ—મિલકત—હાથરોપરિચિત સદસાવંશીજન્મ-સીમાર્તનીઓથી સૌંવિત લીલાદીપરાધ્યાયીયો શ્રીચક્રચુર પ્રણ પ્રાપ્ત કરી શકે અન્યથા નહિ.

ત્યાર બાદ આશ્રયની વધાર્થ દલી મદ્દાજાન અને સમજણ ક્રોટનીવાએ સમાજમાં અચા બાદ સમાપતિશ્રીનો આજ્ઞા મનાયા પછી શ્રીગોવર્ધનધરણના જનનાદ સાથે સમા વિસર્જન થઈ દતી.

શ્રીમદ્દશાધ્યાયચરણચંતી—શ્રી શંખોદેવ પાકાળા વરુથી (ચેલ્લાદામ) સાતવરુપની દવેલીએથી સર્વનાં હવો વરધોડા ચલેલો દતો. સરઆવર્ધા મુંદર મેન્દ લાખું તે પછી વૈષ્ણવ વર્ગ અને તે પાછળ વિશ્વશિયા ગાદીમાં શ્રીમદ્દાપ્રણુજના મુંદર ચિત્તને પધારાવી બને બાળુએ મુખ્યાલ્યો ચમર દેવો રક્ષા દતા. તે પાછળ શ્રી વર્મ મંજળમજ્જ જગ્યો ખારજૂ કરી કુલવિંત સ્વરે ચીતવનિ કરતાં ચાથી રક્ષાં દર્તા. વરધોડા જનરમાં ફરી દશા દિસાવાળની ધર્મશાળ્યે હવેલો દતો. ધર્મશાળ્યને વૈષ્ણવ ગિરિધરલાસે આસોપાલક તથા પાલ પતાકાથી યજુમદેલી હતી, જળ અંદરખાં સિંદાસન હપર શ્રીમદ્દાપ્રણુજને બજાજા બાદ નેહક સેહેટરી સાદ મહિલાલ ડાઘલાસે પ્રમુખની દરખાસત રજુ કરતાં તેને ચાક્રી મંથારાંકરે અનુમોદન આપતાં પ્રમુખ કાવાર રોક જુગાખીસ નારણલાસે પોતાનું રવાન સ્વીકારનાં પાકાળાની બાજાઓએ પ્રાર્થના કરી “શ્રીમદ્દશાધ્યાયચરણે કિલ્લ ૧૪૬૨થી રહો દે” એ બરબો

સુલલિત કંઠે માથે હતો, બાદ પાદશાળાના સેકેટરી પરીખ દિશાલાલ મોલીલાલે સં. ૧૯૮૮ નો દિસાળ રજુ કરી પાદશાળાના કામથી સતોષ બહેર કરી દેખાડાવે, સામ્રોજીની કંદર ન થઈ. યજ્ઞવાલ્કી દીલગીરી નજીવી શ્રીમદ્વાપ્તુજીના ચરિત્ર સંબંધી વિવેચન કર્યું હતું. તે પછી પરમ ભવવંદીય શ્રીમાન મનલાલ બાઈએ વેંશુવોને ધાર્મિક જીવન ગાળવાને સ્વચ્છંદ્યનો બોધ સમભવી સરળ માત્ર દર્શાવ્યો હતો. બાદ સામ્રોજી મણિશંકરભાઈએ ટૂંકમાં ભક્તિમાર્ગની સરળતા ધણીજ સુંદર રીતે દર્શાવી હતી. તેમજ સામ્રોજી રામકૃષ્ણે પ્રસંગોચિત વિવેચન કર્યું હતું. ત્યારબાદ પાદશાળાના સામ્રોજી ન્યેણારામ દરિયજીને બેશીએ ધર્મથીજ ભારતવર્ષની ઉન્નતિ દર્શાવી ધર્મની આવરણકરો વિષે વિવેચન કરતાં ધાર્મિક અને નૈતિક જ્ઞાન મેળવવા સ્વ બાળક બાળાઓને. પાદશાળામાં મોકલવા વેંશુવોને સલાહ્યા હતા. ત્યારબાદ પાસ્તોરિક, પ્રભાષુપત્રો અને રેકૉર્ડરશીપની વહેંચણી પ્રમુખના હસ્તે થઈ હતી. તે પછી શ્રીમદ્વાપ્તુજીનો ગરજો બાળાઓએ આપ્યો હતો. બાદ પ્રમુખશ્રીએ જોતાંનું ભાગ્ય આપતાં પાદશાળાના કામથી સતોષ બહેર રહ્યો હતો. તે પછી પ્રમુખનો તથા વેંશુવોનો આભાર માની નવનાઈ પૂર્વક સભા વિસત્રન થઈ હતી.

ધારીમાં પ્રાકટ્ય મહોત્સવ—આજે અખંડભૂમિલાલ્યાયવંશ ભક્તિમાર્ગપ્રવર્તક શ્રીમદ્ વલ્લભાચાર્યજીનો જન્મ ઉત્સવ ઠોપાથી બારિક વેંશુવોના હૃદયમાં આનંદનો ઉદયિ ઉજળો રહ્યો હતો. સંજના પછી ૭ વાગતાંના સમય સભાનો સમયો હતો. હવેલીના ચોકમાં ધન્ય પતાકાથી સજ્જારી શ્રીમદ્વાપ્તુજીના ચિત્રજ એક હંચા આસન ઉપર પધરાવ્યો હતા. સમય થતાં શેઠ ચત્રજી આજુકાને ધેરથી મંગળ કલશ પધરાવી બહેનો અને ભાઈઓ મંગલ વધાઈથી આવી હવેલીએ આવતા હતા; રસ્તામાં છોટનીયાના અભાવે—ધારી પુષ્ટિમાર્ગીય પાદશાળાના બાળ વિદ્યાર્થીઓએ આજે, રસ્તે મંગળ રતોત્રે મધુર ચાણીમાં આઈ. શ્રીનાથજી, શ્રીમદ્વાપ્તુજી અને શ્રીસુસંધિજીના નવજનિથી આજા શહેરમાં આજનો માર્મિક ઉત્સવ પ્રદર્શિત કર્યો હતો. તમામ મંડળ હવેલીએ પહોંચતાં સમાના રૂપમાં ગૌહાલ મયું. શેઠ ચત્રજી આજુકા તરફથી કળસની આરતી થઈ એકંદર ભેટની રકમ પણ સારી થઈ હતી. પાદશાળાના વિદ્યાર્થીઓએ ધાર્મિક સંવાદો કર્યા ઉપરાંત રતોત્રે મધુર સ્વરથી બાઈને સમાજનોનાં મન આકર્ષ્યાં હતાં. માસ્તર દરિયાસ જમનાદાસે શ્રીમદ્વાપ્તુજીનાં દિવ્ય ચરિત્રોનું યશોમાન વ્યાખ્યાનરૂપે કર્યું. તેમાં અપખીનું આ ભૂતળે ઉપર પ્રકટ્ય પવાનું મુખ્ય કારણ વિસ્તારપૂર્વક વર્ણવ્યું હતું. ઉપરે હર સાવે મુજબ શેઠ વિશ્વામ પુરોહિતમ તરફથી તમામ વેંશુવ ભાઈઓને અનસખા મહાપ્રસાદ વંટાળી શ્રીમદ્વાપ્તુજીના જય પત્રો વચ્ચે સભાનું કામ સમાપ્ત થયું હતું. એકંદરે આજનો આનંદ આ રવજના પ્રમાણમાં ખૂબ થયો એમ કહેવામાં જરા પણ અતિશયોક્તિ નથી. પુષ્ટિમાર્ગીય પરીક્ષામાં પાસ થયેલા વિદ્યાર્થીઓનાં ફનાઓ પણ આજની સભામાં વહેંચાયાં હતાં.

વડવાણુમાં આનંદ—શ્રીમદ્દનમોહનલાલજીની હવેલી તથા શ્રીકેસરીયામંડલી તથા શ્રીપુષ્ટિમાર્ગીય વેંશુવ મહાસભાની ઝોડીસ, ધન્ય, વાવરા, તોરણો, હવાદિથી સજ્જારામાં આવ્યા હતા. ર ચૈતર વદ પાંચમથી અગીયારસ તુધી રાત્રે મંડલીમાં નિત્ય નિવસ થયા બાદ સમાજનાં વધાર્થે બોલવામાં આવી હતી. ૩ ચૈતર વદ ૧૨ ના રૂબ દિવસે પ્રભાતે (મૂળજંદોસ તરફથી શ્રી કેસરીયા મંડળને અપેક્ષ કરવામાં આવેલ મહાનમાં) વિધિસર મંડલીની રચાપના કરવામાં આવી હતી અને ત્યાંથીજ કલસ સહિત વરધેડો મદવામાં આવ્યો હતો. તેમાં પ્રથમ જ્વલ સખતમાં આવેલ હતી. ત્યારબાદ બાલ મંડલીના બાળકોએ નાના વાવરા રાખ્યા હતા. અને શ્રીની જય મુન પણના જંચારો કરતા હતા. ત્યારબાદ પતાકા રાખવામાં આવ્યા હતા. તે પછી વેંશુવોનો સમુદાય આવતો હતો અને ત્યાર પછી શ્રીકેસરીયા મંડળના મેમ્બરો અને છોટનીયા સમાજના જય લલકારતા હતા. ત્યારબાદ એક નાની ગાઠીમાં શ્રીમદ્વાપ્તુજીના ચિત્રને પધરાવવામાં આવ્યા હતાં અને તેઓથી સન્મુખ શ્રીમાનિરૂપ આજે મહારાજશ્રીના ચિત્ર પધરાવવામાં આવ્યાં હતાં. ગાઠીની બંને બાજુએ મોરસલી સાંચે બાળકો આવતા હતા. ત્યારબાદ બાળાઓએ આરતી તથા કલશ પધરાવ્યા હતા. ત્યારપછી શ્રીજી સુંદર ધોળ બોલી આવતી હતી. આ વરધેડો ફરજારમદ પાસે થઈ મહાસભાની ઝોડીસ આજળે થઈ (મહાસભાના મંત્રીએ શ્રીચિત્રને સુમધી અગ્રીત શુદ્ધાદેવ કથાની અને મુખ્યમંત્રી ધરાવી હતી.) ત્યાંથી દિવાન

સાહેબના રહેણાંકો રસોડા લઈ વરગોડા હોટેલોએ પહોંચ્યા હતા ત્યાં તિલકના આચાર્ય દરેકનું યથા અને ત્યાં સમાજ, વધાઈ, ઘોળ, હીચ હમચા, ઈત્યાદિથી આનંદ કરવામાં આવ્યો હતો ત્યારબાદ વરગોડા ખાંડી પોળ થઈ માધાવાવ થઈ મોતી ચોકમાં અને ત્યાંથી કંસારા બજારમાં થઈ શ્રીકેસરીધામ મંડળીના મુકામે હતો હતો ત્યાં વેખ્ણુવાને મહાપ્રસાદ વંચાયા બાદ શ્રીની નયચોયણ સાથે વેખ્ણુવા પોતપોતાને પેર ગયાં હતા. ત્યારબાદ સંજે પાંચ વાગતાં શ્રીપુષ્ટિમાર્ગીય વેખ્ણુવ મહાસભાની ઓડીસમાં સભા રાખવામાં આવી હતી. તેમાં પ્રમુખરથાને ગોસ્વામી શ્રીદ શ્રીમદ્ અનિરુદ્ધચાર્યજી મહારાજશ્રીના ચિત્તને પદચાલવામાં આવ્યાં હતાં અને તે પછી ચતુરદાસે અનેક સિદ્ધાંતો, દર્શનો સાથે શ્રીમદ્ગ્રંથપુણ્ય દુક લખનચારિત્ર વિષે બાપજી કૃત્વ હર્ષઃ ત્યારબાદ પુષ્ટિમાર્ગીય વેખ્ણુવ મહાસભાના મંત્રી ગોપાલદાસે તેમના બાપજીને ટેકા આપીને આનંદના આ શુભ દિવસનું દુક વર્ણન સમભવ્યું હતું અને ત્યારબાદ ભગવદીય લલ્લુભાઈ ભગવદાવ તરફથી મળેલ ગોસ્વામી બાલકેના ફોટોએ વહેંચવામાં આવ્યા હતા. પ ત્યારબાદ રાત્રે નવ વાગે શ્રીકેસરીયા મંડળીના મુકામે નિત્ય નિયમ યંચાબાદ સમાજ ઈલાદિ કરવામાં આવ્યાં હતાં અને ત્યારબાદ શ્રીકેસરીયા મંડળીના કાર્યકર્તા ગોપાલદાસે આ મંડળીની રચાપના થયાને ૨૬ વર્ષોના અદેવાલ તથા આજ સુધીમાં જે જે ભગવદીયો તરફથી આ સંસ્થાને મદદ મળી હતી તેઓના આભાર માનવામાં આવ્યો હતો જે આ નીચે પ્રમાણે છે:—(૧) શ્રી કેસરીયામંડળી આજે પોતાની રચાપનાને ૨૬ વર્ષ પસાર કરી અને ત્રીસમા વર્ષમાં પ્રવેશ કરે છે. (૨) મુખ્યાલ્ય દામોદરદાસ (તે શ્રીમદ્ ગોડલના રહેવાસી) તેમણે આપણા ઉપર મદાન પરિશ્રમ હતાની અને આપણને અન્ય માર્ગથી બચાવી અને સ્વમાન (ભગવદ્ભક્તિ) માં જોડયા તેટલુંજ નહીં પણ સાથે સાથે અનેક પ્રકારની અમૂલ્ય પુસ્તકો (હરત્રિભિત) ની જોડ આપી અને આ મંડળીને આગળ ધયાવી પોતાનું નામ અમર બનાવી ગયા. (૩) આ મંડળીની રચાપના કરવાની આજ્ઞા ગોસ્વામિની શ્રીરાધામાજી (શ્રી ભમનગરવા) શ્રીમદ્ગોડલશ્રીએ આપી અને આ મંડળીને કૃતાઈ કરી. (૪) આ મંડળીની રચાપના દરજ વેખ્ણુવ અશ્રુતકાલ બાઈની હેમરેખ નીચે કરવામાં આવી હતી અને તેઓએ મોટા પરિશ્રમ લઈ મોટી રાતોના ઉભરા કરી પોતાની નિરવાઈ સેવા બલવી આ મંડળીને પંક્તિમાં આણી છે. (૫) આ સંસ્થાની શરૂઆતમાં પ. બ. લ. જવારામગાથ મંગલજીએ પોતાના ખર્ચે અનેક સાજા ભેવા કે નગારા, દોકડ પખાવજી ભજન ઈત્યાદિની મદદ આપી અને પોતાની શુદ્ધરથાઈ દીધાવી. (૬) આ મંડળીની રચાપના થઈ ત્યારથી આજ સુધી ૨૬ વર્ષ સુધી પ. બ. અમરસીમાઈએ પોતાનું મકાન વાપરવા આપી પોતાની ઉદારતા બતાવી એટલુંજ નહીં પણ પ્રસંગોપાત અનેક પ્રકારની નાની મોટી મદદો કરી રહ્યા છે. (૭) સ્વસ્થાન શ્રોતજાતર નદરા ભગવદ્ધર્મવચણજી મહારાજા શ્રી સાત શ્રીબલવીરસિંહજી બહાદુર તરફથી આ સંસ્થાને પેટ્રોલેક્સ બની એક તથા દારમોનીયમ હાથપેટી એક આપી અને આ મંડળીની સાલની ખામી દૂર કરી છે. (૮) ભગવદીય ગંગજીસાઈ નયુસાઈ (પ્રમિલાવાળા) આ સંસ્થાને પતાશા નં. ૨ કરાવી આપી આ મંડળીના સાજામાં ઉમેરો કર્યો છે. (૯) આ સંસ્થાને અનેક ભગવદીયો તરફથી અવારનવાર નાની મોટી મદદો મળી રહી છે. (૧૦) આ મંડળીમાં કેટલાક વેખ્ણુવા પોતાનું લવાજમ ભરી અને ગેમ્મર બની અને સેવા બલવી રહ્યા છે. (૧૧) કોઈ દિવસ કોઈથી નંદિ વીસરાય તેવું પરમ ભગવદીય મરભડી મૂળચંદ્રદાસ ભેગલાઈએ પોતાનું મકાન આ મંડળીને અર્પણ કરી અને પોતાનું નામ અમર બનાવ્યું છે તેટલુંજ નહીં પણ હજી તેઓને આ મંડળી વિષે કેટલી ઉમેદ છે. (૧૨) આ મંડળીમાં જે જે ભગવદીયો તરફથી જેટ મળી છે તેઓની અગોને યાદ છે તેટલોની નોંધ લીધી છે તે સીવાય કોઈ ભગવદીયદાસ કોઈ જેટ મળી હોય તેમનું અગોને ભણી નહીં દોવાથી કદી રાક્યા નથી તેો સમા કરી. ૬ ઉપરોક્ત નામવાળા ભગવદીયો તરફથી આ સંસ્થાને લખ્યા પ્રમાણે મદદ મળી છે તેઓના આ મંડળી આભાર માને છે. એજ.

મોટીમારડ (કાઠિયાવાડ) માં આનંદ—અત્રેની હોટેલોમાં શ્રીમદ્ આચાર્યચરણના નન્મ દિવસ નિમિત્તે શ્રીમદ્ગોડલ પ્રથમે પૂજાર્માં હુડાવવામાં આવ્યા હતા, અને રાત્રેજોખ વખતે નન્મ નયન્તિતો હરસવ માનવામાં આવ્યો હતો અને શ્રીમદ્ગ્રંથપુણ્યની વધાઈ ગાવામાં આવી હતી. અને વેખ્ણુવ નતતાના હૃદયમાં આનંદ છવાઈ રહ્યો હતો. આનંદના દુલમંડળી કરવામાં આવી હતી. અત્રેથી ત્રણ ગાક

છેતે બાદેર આગે આ જન્મભયંતિ પ્રસંગ માટે ટંકારાચલા શેઠ જાનાદાસ દયાલભાઈએ અનેની કીર્તનમંડળીને આમંત્રણ કરી હોય કીર્તન કરાવ્યા હતાં. અને ટાટી લીલા કરવામાં આવી હતી. અનેથી વીસ કીર્તનીઆ લાંબાવાયાં હતા અને અપૂર્વ આનંદ લીધો હતો. સતનાં ચાર વાગ્યા સુધી ટાટી લીલા ચાલી હતી. અને કીર્તનાયજીની ભેટમાં હીંક રકમ ભરાઈ હતી. ખીજે દિવસે સવારમાં ઠગી રનાન વગેરે પરવાયા બાદ એકાદ કલાક કીર્તનમાં ગાયથો હતો અને ભારેબાદ સોએ મહાપ્રસાદ લીધો હતો. આ વખતે શેઠ જાનાદાસભાઈએ હતમ પ્રકારની વ્યવસ્થા કરી વૈષ્ણવ મંડળની પળી રોચા કરી હતી. ભાર બાદ સંતનાં ચાર વાગે શ્રીમદ્વિસાનપરતપ્રી નય 'શ્રીમદ્દાપ્રભુજીની નય' બોધાવી વૈષ્ણવ મંડળે બાઝ રહેતે પરત મોટીઆર આપ્યું હતું. આ પ્રમાણે શ્રીમદ્દાપ્રભુજીના જન્મ મહોત્સવ દિવસ નિમિત્તે સોએ અપૂર્વ આનંદ લીધો હતો.

શ્રીવલ્લભ નયંતિ મહોત્સવ ટંકારા—તા. ૨૦-૪-૩૩ ના રોજ શ્રીવલ્લભ નયંતિ મહોત્સવ સમરોહથી ઉલ્લસવામાં આવી છે. આ મહોત્સવ નયંતિ ઉલ્લસવા માટે શ્રીવૈષ્ણવ ધર્મ મહાસભાના કાર્યકર્તાઓ અઠવાડીઆ પહેલાંથીજ અતિ ઉત્સાહવાળા હૃદયથી તૈયારીઓ કરી રહ્યા હતા. છેવટે એ અનેશ મહામુલો અવસર આવી પહોંચ્યો. ધમવાવિકાનાં મન આનંદથી હળી રહ્યાં હતાં. સાંપ્રદાયિક નર નારીઓને મન આનંદો દિવસ કંઈ નોખીજ તરેહનો આનંદોદાયક લાગતો હતો, કારણ કે આજના પવિત્ર દિવસે શ્રીમદ્દાપ્રભુજી આ વામંડલ ઉપર આધમ છવાને ઉદ્ધારના અને વિધર્મોઓને ફેરવી ધર્મદ્વાનિને વારમાંભૂત કરી ફરીથી દિવ્ય ધર્મની રચાપના કરવા પ્રગટ થયા હતા. આના મહાન ધર્મરચાયક, પરમ દયાનિધિ પરોપકારક સર્તા વિમુક્તયઃ એ સૂચનું અક્ષરસઃ પાલન કરવા તનતોડ પ્રયત્ન કરવા પ્રયાસ કરનાર દિવ્ય વિમુક્તિના જન્મમહોત્સવ ઉલ્લસવા કોણ તૈયાર ન હોવ ? નયંતિના વ્યવસ્થિત કાર્યક્રમ માટે આગળથીજ સોની હીરજાળુદના આગામમાં એક બંધ મંડપ ઉભો કરવામાં આવ્યો હતો. આ મંડપનું કાર્ય એટલી કુશલતાથી કરવામાં આવ્યું હતું કે આ મંડપને નીરખવા માટે ટંકારાની પ્રમંથાલી પ્રજા ઉત્સાહ પૂર્વક આવતી હતી. તોણે નિયમમાંજ તે રખો હોય તેમ તેની ચોલા અદ્વૈતિક હતી. અદ્વૈતશક્તિના તેજોમય પ્રકારમાં મંડપની દિવ્ય પતાકાઓ પવનની સાથે મહાપ્રભુજીના પ્રાગટ્યની વાતો કરતી આનંદથી ફૂલફાટ કરી હર્ષ પ્રેરણિત કરતી હતી. વાણુદેવ પણ તે દિવસે આનંદમાં ગમ ધણે જાણે આ નયંતિમાં ભાગ લેતા હોય તેમ પ્રજાજ વેગથી વાળને પોતાનો ઉત્સાહ પ્રગટ કરતા હતા. મનુષ્યો પણ પોતાનાં હૃદય પ્રેમથી, ધર્મભાવનાથી બરપુર લાગણીથી રોલતા રોલતા હર્ષથી પ્રદુષિત ઘણે આ સમારંભમાં ભાગ લેવા પુરતી સંખ્યામાં હાજર થયા હતા. પહેલું કાર્ય કળશનું હતું. આ કાર્ય કરવા માટે એક સરયસના આકારમાં સળા ગોઠવાયા હતા. સરસ્વાતીમાં પાકરાણાના વિધર્મોઓ વાવટા લેખને "શ્રીવલ્લભાધીશ મહોત્સવ"ના અક્ષરોથી અક્ષિત એક પોડ સાથે શ્રીમદ્દાપ્રભુજીનાં ચરોગાન ગાતા ગાતા ચાલતા હતા. તેમના આ રેતુલ કાર્યમાં મદદ કરવા તેમની પળી શહેરના સાંપ્રદાયિક નામરિકો વિદ્યાર્થીયોને જોડેજોડ કરતા કરતા ચાલતા હતા. કેસરીયા મંડલી પણ પોતાના સંપૂર્ણ સાજ સાથે શ્રીવલ્લભાધીશનાં ચરોગાન ગાવામાં તહીન જની ગઈ હતી. અને એ મંડળીના ચાલકોની આવી બાવપ્રસ્તિ અને ભક્તિયુક્ત રેતુતિ સંકળીને પ્રેક્ષકો મુગ્ધ થતા જતા હતા. અને છેવટમાં વ્રજભક્તોનું તાદેશ ચિત્રપટ રજૂ કરતી કુમારિકાઓ પોતાના સુમધુર કંઠ વડે "શ્રીવલ્લભ આજ પ્રગટ હુશા રે" એ ગીત ગાંધે મેદાનીને પ્રભુજીના પ્રાગટ્યનું ચચાચ માન કરાવતી હતી. એકંદર આ બધુંય સરયસ ધમ્માલતા પ્રબળ વાદિપ્રવાહ સમું, જનસમુદાયરૂપ મહાપ્રબળ પ્રવાહથી બક્ષિરસમાં મગ્નરવ જની, જનતાને આશ્ચર્યમાં નાખતું, ધર્મ ભાવના પ્રેરતું, અને આનંદ દેવાતું પરમ ભગવંદીય સોની પોષપટાલ કાલીદાસને ઘેરથી સંપૂર્ણ તૈયારી સાથે રવાના થયું. સરયસ શહેરના મુગ્ધ મુગ્ધ ભાગમાં ફરીને સાતરવરપના મંદિર આગળ ઘણે હવેલીએ પહોંચ્યું હતું. લાંબી શ્રીના તિલબા દસનની તૈયારી હતી. તેથી દર્શન યુક્તોની સાથે વૈષ્ણવ નેરનારીઓએ બહુલા બહુલા ચાકમાં શ્રીની સાંનિધ્ય નંદમહોત્સવ કરી પોતાનો ભક્તિભાવ પ્રદર્શિત કર્યો હતો અને ઉપર મુજબ સવારના કાર્યક્રમ પૂર્ણ થયો હતો. બપોરના સા થી ૬ સુધી સભા સભામાં આવી હતી. સભાના પ્રમુખરથાને ઉત્સવપ્રતિનાં ચિત્રજીને પદસંવવામાં આવ્યાં હતાં. આ સભામાં સાંપ્રદાયીક અગ્રગણ્ય ગૃહસ્થો ભગવંદીય શેઠ શ્રીમદ્દાપ્રભુજીની વીરચંદ, બ. દલસીદાસ ગોળદાસ, બ.

જગજન ગોવિંદજીમાં, જ. સોની પોપટલાલ કાળીદાસ તથા વેદાસીજી લદમારકર દરિયાકર માટે દાનરી આપી હતી. આ ચિવાય બીજા અનેક સામ્રાજિક વ્યક્તિઓએ સભામાં દાનરી આપી શેઠામાં આર વધારા કર્યાં હતાં. અમલદાર વર્ગમાં મે. ડોક્ટર સાહેબ કે. જી. દવે, સબ. આ. સરજન, મે. જેડ. મારતર સાહેબ એમ. એચ. નેશીપુરા બી. એ., કન્યાશ્રમચાલકમના મુખ્ય અધિકારી મદદરાય ગિરધરલાલ તથા શ્રીયુવ જે. એચ. બની તથા સાર્વજનિક સેવા સમાજના પ્રેસિડેન્ટ સાહેબ રા. આશ્વિંદ બાઈ તથા આચાર્યસમાજના મંત્રી વેદરાજ સ્વયંભૂ શિવજીમાં દાનરી આપી હતી. રા. પોપટલાલ રામાંએ વેપ્પુવ જન તે તેને કહીએ એ પદ લલકારી તેનો અર્થ સમજાવેા હતા અને કન્યા શ્રમચાલક-શ્રમની બાળાઓએ તેમના મુખપુર કંઈથી “પ્રજુ બીન કે નહિ અપના” એ માવન પ્રાધને સત્તાને દિકમુદ કરી દીધી હતી. કાર્યક્રમમાં અંતરે અંતરે પાઠશાળાના વિદ્યાર્થીઓના આકર્ષિત સંવાદો અનુભવે જતા હતા અને મેંદનીને અપૂર્વ આનંદ આપી બહિરસ અંતરની હડાલમાં રેડે છે જતા હતા. પાઠશાળાના આ સુવ્યવસ્થિત કાર્ય માટે પાઠશાળાના અધ્યાપક રા. નવસારકર વિધનાય આચાર્યની સભાએ મુદત કંઈ પ્રસાંસ કરી હતી અને અધ્યાપકને તેમના આ કાર્યમાં મદદ કરી રા. બાનુસારકર છત્રજીલાલ બની તથા રા. પુરોહિતમ આપડલાલ બનીને પ્રથમ પદ સભાએ વખાણેા હતા. ઉપર લખેલા જે જે સભાઓએ સભામાં દાનરી આપી હતી અને પોતાથી બનતી મદદ કરી હતી તેને માટે આ સંસ્થાના અધ્યાપક તરફથી આભાર અનુભામાં આપેા હતા. આ સભાના કાર્યક્રમ દરમિયાન આચાર્ય સમાજના મંત્રી વેદરાજ સ્વયંભૂ શિવજીમાં હતા થઈને સંપ્રદાય તરફ સંતુષ્ટિ બતાવેને વેપ્પુવ ધર્મ મદાસભાના મેમ્બર-યથા હતા તેમના આ સુલ્ય કાર્યમાં તેમના ધર્મપત્ની પણ જોડાર્યા હતા. રા. મોહનલાલ કાળીદાસે પણ મેમ્બર તરીકે પોતાનું નામ નોંધાવું હતું. ફરા નામ બીજા પણ નોંધાયા હતા. આથી અમારા પ્રચાર કાર્યનું પહેલું પગથિયું સાર થયું માનીએ બીએ.

ઉપરમાં રા. તુલસીદાસજીમાં હતા થઈને કચેરી ઉપસંદાર કરીને પાઠશાળાના વિદ્યાર્થીઓના કાંમને વખાળીને તેમને ઉત્તેજ આપવા માટે રમાયેા વહેંચ્યા હતા. ત્યારપછી સભામાં પધારેલા સંદેશકરથી તથા સત્કારીઓના ઉપકાર માનવામાં આવેા હતા અને શોભાશાસીસાની નયમનના સાથે સભા વિસર્જન થઈ હતી. લાલજી દયાલજી રાણપુરા, મંત્રી, શ્રીવેપ્પુવધર્મ મદાસભા-દંત્રા.

મે. ડોક્ટર સાહેબ કે. જી. દવે. સબ. આસી. સરજનના બાપજીને સારાંસ-તેઓએ સાર્વાતમાં જણાવું હતું કે શ્રીમદાપ્રજુજીના પ્રાકટ્ય વિષે રા. મંત્રીજી તથા રા. હેડમારતર સાહેબ લાલજી દોનાથી તેમનું પુત્રવધન કરવા હું ઇચ્છતા નથી તેથી હું મનુષ્ય ધર્મ એ વિષય ઉપર ચોડું બાંધીશ.

૧. જો એક સ્વેચ્છા મદાસભાને લાવ મારી ફક્ત પિતૃઆત્મા પાળવા રા માટે વનવાસ સ્વીકારેા ? સતી શિશુમતી સીતાજીએ રાજ્યના સુખ મેઝવને ત્યાગી રા માટે રામચંદ વનમગન પસંદ કર્યું ? તદ્દમજીએ પણ પોતાના સરી સુખથી દરમર કર્યાં વિના મદેડમાં રહેવાનું ઇચ્છી રા માટે રામ સામે જતાનું પસંદ કર્યું ? આનો જવાબ આપણને એ મજશે કે તેઓએ પોતાનો ધર્મ બચાવવા માટે તેમ કર્યું હતું. અત્યારના જવાનમાં ફરક મનુષ્યો પોતાને શું ધર્મ છે તે બૂલી જયા છે. અને તેથીજ ત્યાં ત્યાં કસંગે જવામાં આવે છે માટે આપણે ફરક પોતાનો ધર્મ શું છે તે ભૂલવાની ખાસ તરર છે અને જે માણસ પોતાના ધર્મને યમાર્ રીતે ભણે છે અને તે મુજબ વર્તન કરે છે તેજ હશે માણસ મનાવ છે.

મે. ડોક્ટર સાહેબ આ વિષય ઉપર સંપૂર્ણ વિચાર કરી અને શોભાઓમાં ધર્મ એ શું ? રસ્તું છે તે બાબત સમજાવું હતું અને પછી તેઓએ તેમનું સાબળ સમાપ્ત કર્યું હતું.

કન્યા શ્રમચાલકમના મુખ્યાધિકારી મદદરાય ગિરધરલાલજીમાં બાપજીને સારાંસ-ઓ મદાપ્રજુજીના જન્મ બેસા સંજોમાં યથા છે કે જે તે વખતે આ મદાપુરને જન્મ ન હોત તેા શું પરિણામ આવત તે કહી શકાય નથી. તે વખતે મુસ્લીમ સત્તાની પ્રચર વિભવવંત પવલાએ ઢિંદુલને જાવામાં લઈને હજુવાનું સાર કર્યું હતું. ડોક્ટર ધર્મદાનિજ દશિયાર વતી હતી અને ઢિંદુ ધર્મ નજ પ્રાથ વધ યથા હતા એટલે આ ઉપરથી સાબીલ લાવ છે કે મદાપ્રજુજીના જન્મ સમારજી હતા અને જો વખતે શીછના પ્રાકટ્યથી ઢિંદુજીને ખાસ જવાજ યથા છે. આ વિષય ઉપર તેઓએ જો વખતે વર્ણ કરીને પોતાનું સાબળ સંપૂર્ણ કર્યું હતું.

શ્રીયુત જલદાર કર ચુંદરજી લતનીના લાપલુડી કુંકે સારસંસ—શ્રીયુત જનનીજ્યો પ્રેમ એ વિષય ઉપર વ્યાખ્યાન કર્યું હતું. તેઓએ જણાવ્યું હતું કે બરખાલુમાં પ્રેમ જુલો પ્રમાણે હોય છે. યુવા-વરયામાં આવતાં તેમ પ્રેમનું સ્વરૂપ ફેરવાઈ જાય છે. રૂઢાવરયામાં, વળી આ બન્ને પ્રેમ એક જ યથા કંઈ જુલુલ રૂપ પકડે છે. આમ દરેક અવસ્થામાં આપણને પ્રેમ જુલો જુલો તરેહનો દેખાય છે. જેવી રીતે એક જ વસ્તુ જોનારા જુલો જુલો માણસો તે વસ્તુનું જુલો જુલો રીતે વર્ણન કરે છે તેમ પ્રેમનું પણ મૂળ સ્વરૂપ એક જ છે. પરંતુ તે રૂપને આપણે બસબર સમજતા ન હોવાથી તે આપણને જુલોજુલો રૂપમાં લાગે છે. ઉપર મુજબનું પ્રેમ વિષય ઉપર સચોટ વ્યાખ્યાન આપી તેઓએ ભાષણ પૂરું કર્યું હતું.

શ્રીકામવનમાં પાકસાહોદધાટન—શ્રીમદાપ્રજ્ઞજીનું ચત પ્રાકટ્યોત્સવના મહાત્મ મંગલમય દિને “શ્રીદેવકીનન્દનાચાર્યસંસ્કૃત પાઠશાળા” એ નામથી એક ચંચાની સ્થાપના પૂન્યપાદ ગોસ્વામી શ્રોતહોભાચાર્યજી મહારાજશ્રીએ કરી છે એ જાણીને વૈષ્ણવોને આનંદ થયો.

“ચલો મચ્છેન્દ્ર ગોરખ આયા !”—આ વાક્ય હોત મરાઠર બન્યું છે. એ વાક્ય લખીને કોઈ ‘ભા’ આ પત્રના તંત્રીને સંભાગણુ આપે છે. પણ એ ‘ભા’ ને જાન નથી કે, મચ્છેન્દ્રનાથ માયામાં હુધ્યા ન હતા. અલ્પમતિ ગોરખનાં મિથ્યાભિમાનને તોડવાનેજ મચ્છેન્દ્રનાથે માયાબળ રચી હતી. મચ્છેન્દ્રનાથને બચાવવા નીકળેલા ગોરખ પોતેજ આખરે ખરીવાણી પડયા અને શુક્રજીની માયામાં કંઈ સમજ્યો નહિ અને પોતાના તથાબળનો જર્વ આખરે દુનવાળી શુરના મરણમાં પડયો. નીસાગીસહીના વસંતઋતુના વિરમયત્નક દિવસોમાં, માદક પદ્યન્યા યૌનમાં પડેલા ગરીબ બીચાર ‘ભા’ મચ્છેન્દ્રનાથની ફીલમ અર્ધાં રોધનેજ હાંધી ગયા લાગે છે તેથી અલ્પમતિ અને અલ્પસંહિત ગોરખને મચ્છેન્દ્રજીને માયામાં હુધ્યતા બચાવનાર તરીકે માની લેવાની બેવડી સરેલી નહોર જૂલ કરીને પોતાને કંડાઈ દસામાં ખૂંચાની બચ્ચાસાહીને પણ ‘ભા’ જોઈ શકતા નથી ! ઉત્તરવાર અંજોસાં !

નવો કેસ માંડયો—આર્યસમાજના હોલમાં યથર્થ તોફાનને પરિણામે મુંબાઈની ચોલીરો કેટલાક આર્યસમાજીઓને અને કેટલાક વૈષ્ણવોને પકડયા હતા. તેમાં આર્ય સમાજીઓની સામે પુરાવા મળતા નથી એમ જણાવીને તેમને છોડી મુકયા હતા. પણ છ વૈષ્ણવો ઉપર કેસ માંડયો હતો. આથી વૈષ્ણવ પક્ષના ત્રણ આરોપીઓએ (૧. હરિશંકર સાસ્ત્રી, ૨. જ્યેષ્ઠવાલ ગોવર્ધનદાસ, ૩. શ. હનનદાસ હરખજી) પોતાના નકીલ મી. કાનુગા સાથે બીરજામ કોર્ટમાં એક કેસ માંડી લીધો છે અને પેલા છુટી મથેલા આર્યસમાજીઓ સામે સમન્સ પણ નીકળી ગયા છે. આ નવો કેસ હવે પછી ચાલશે.

પુલિમાર્ગીય વૈષ્ણવોને ચેતવણી—શ્રીકામવનના ગોસ્વામી શ્રી૧૦૮ શ્રીમજ્જાલજી મહારાજ તરફથી સર્વે પુલિમાર્ગીય વૈષ્ણવોને ચેતવણી આપવામાં આવે છે કે સાત સ્વરૂપની નીધીનાં શ્રીમદ્ભગોદત્તજી શ્રીકામવનમાં બીરાજે છે, તેમની કાઠી ભેટ વગેરે ને હોય તે શ્રીમદ્ભગોદત્તજીનું મંદિર શ્રી. કામવન, જહો ભરતપુર એ સરનામે મોકલાવવા બાકી કોઈ પણ બેઠીયાને આપવી નહીં, તેમ કોઈ પણ ગોલખમાં નાંખવી નહીં તેમ ચંદાવાદમાં શ્રીગોકુલચંદ્રમાજીની ભેટ સાથે અપાતી તે પણ આપવી નહીં કારણ કે અમારો કોઈ બેઠીયો નથી તેમ ગોલખ પણ નથી, મટિ ઉપરના સરનામે મોકલાવતી. જોથી શ્રીને અંગીકાર થયો બીજા ક્યાં પણ આપવાથી અમેને મળશે નહીં.

કરાંચીમાં યાદગાર સંમેલન—અનેની સનાતન ધર્મ પુવક સમાજો વાર્ષિક મહોત્સવ સુરતવાળા વિદ્વદ્ભાવ ગોસ્વામી શ્રીમત્સરતવાલજી મહારાજશ્રીના પ્રમુખપણ નીચે ઉત્તવાધો હતા. આ વખતે એક આકર્ષક લભ્ય મંદપ તૈયાર કર્યો હતો. શ્રીમદાપ્રજ્ઞજીને મહામહોત્સવ પણ ખૂબ ધામધૂમથી થયો. એ નિમિત્તે એક લભ્ય સમ્મારોહ થયો હતો અને શ્રીમદાપ્રજ્ઞજીનાં ચિત્રજી તથા પવિત્ર ભગવદ્રૂપ નેતાં પુસ્તકો એક શાળાદેવી બાગીમાં પધરાવીને સહોદર્માં વાળતે આનંદે એ યાદગાર લભ્ય સમ્મારોહ કર્યો હતો. આ ઉપરાંત મરાઠર સનાતની વડલા પં. અખિલાનંદજી, પં. રૂપનાથજી, સાસ્ત્રીજી શ્રીમતલાલજી, સાસ્ત્રી પદમાનંદજી, સાસ્ત્રી રવીન્દ્રનાથજી વગેરેએ યાદગાર ધાર્મિક બ્યાખ્યાનોની હાંડી વરસાવી હતી. મહારાજશ્રીના વિદ્વતાપજી બ્યાખ્યાને તે લાદે અસર કરી હતી. કરાંચીમાં આવેા લભ્ય સમ્મારોહ પહેલોજ હતો અને તે ચિરમરણીય બન્યા હતા.

સાહિત્ય—દશમરંકંધ ઉત્તરાર્ધ શ્રીસુબાષિનીજી તથા પ્રકાશ આદિ સાહિત્ય ને કંઈ બાકી હતું તે બધું પ્રકટ થઈ ગયું છે. તત્ત્વાર્થદીપ નિબંધનો શુદ્ધસતી અનુવાદ પણ પ્રકટ થઈ ગયાનું સાંભળ્યું છે. વળી મુંબાઈવાળા નિલક્ષીદાસજી ગો. શ્રીજીવંતજી મહારાજના નામથી પ્રસિદ્ધ થયેલી શ્રીવદ્ધમાખ્યાનની મજાવા દીકા શુદ્ધસતી અક્ષરેમાં શેઠ રવજી ભગતે છપાવી અને તે માત્ર ૬ આનામાં વેચાય છે.

દેવગઢ બારીઆનો શ્રી યૌવજીવે ત્યાંના દિવાનસાહેબને લખી આપ્યું છે કે, અમારામાં ધર્મ સંબંધી જે વકરાર છે તેને 'નિરેડા લાવવા' માટે ચતુર્થ પંચમીનાથી શરૂ થયેલા શ્રીયૌવજીવના મહારાજની જે કાંઈ ફરમાવશે તે પ્રમાણે અમે નર્તીશું, એવી કબજાત આપવાથી જરૂર શીત થવા માંડેલા છે. કારણ કે શ્રીયૌવજીવની જનન્ય સૃષ્ટિ દરરોજ ત્યાંના મહાજને પણ એવું લખી આપ્યું છે કે જે ભર્યોએ ગો. શ્રીયૌવજીવના મહારાજની આજ્ઞા મુજબ આવતા થઈ નય તો અમે તેમને મહાજનમાં લેવા મુરશી છીએ. આવા નિર્ણય ઉપર આવવા બદલ મહાજનને અનેક મન્યવાદ થઈ છે. આખરે મહાજનની સત્વની લક્ષ્મીને આ વિનયદંડો વાળ્યો છે.

ચોખ્ખી પ્રતારણા—શોરાણથી બમરદીય પ્રાગજ્ઞાઈ લખે છે કે:—“સુખાદેવ” માં કેટલાક માસથી નહેરે જળર છપાય છે. ગણી કુમરશી-જારખંદરાણા નેથી સારી પલેમદાસ રયામજી રયાનગીય એ નહેરે જળર છપાવે છે. તેઓ શ્રીયૌવજીવના લોકના ફેરાઓ થઈ એમાં પાંચ આનામાં મોકલી અપાવે છે. અમે પત્રવ્યવહાર કર્યો. એક દહન ઉપર ૧૨૫ ટકા કમીસન આપવાની પણ તેમણે તાત કરી. આખરે અમે એક દહન ફેરા મંગાવ્યા ત્યારે પૂંકા પર ચોડ્યા વિનાના અગીયાર ફેરાઓ તથા ૩૫૦ આના તો. પી. શી અમારા પર મોકલી આપ્યા. આવી કમીઈ માટે અમે પત્ર લખ્યો તેનો જવાબ મળ્યો કે, “તમારા લખવા મુજબ અમલ થયો.” પણ અમલ થયો નહિ, તેથી અમે પ્રાદેશ નોંદીસ મોકલી, તેનો જવાબ ન મળ્યો. આ ખરથી અમે નહેરે રીતે ચેતવણી આપીએ છીએ કે વૈષ્ણવોને આવી નહેરે ખબરથી ફસાઈ નહિ.”

શ્રીયૌવજીવ વિષે એક ચેતવણી—શ્રીયૌવજીવમાં છઠ્ઠીધરની એક બેઠક કામચલાણ શ્રીમદ્ ગોસ્વામી શ્રી ૧૦૮ શ્રીયૌવજીવના મહારાજની છે. અને તેમના તરફથી બેઠકમાં પડેલો જુગ પણ રહે છે તો પણ આ આ મૂલ માલિક બની સાથે મોકલેલી પત્રિકા મુજબ છપાવેલી નોંદીસો અમર પડેલો જુગ પણ પોતાની જ છપાવેલી છપાવી. આને ધણ વખતથી જ ચાલી રહેલું છે અને જેનું કાઈ પણ મુદ્દન નથી કેટલાક ૩૫૦ આ સેવાના નામથી આવે છે. જેનાં મહાને, જેવેત પોતાના નામના વીવરમાં કરે છે. આ પાત તે બેઠકના મુખ્ય માલિકો અધિકારીઓએ તેમજ વૈષ્ણવોએ ખાસ સમજવા જેવી છે. તે આ વૈષ્ણવો ફેરાવરે ફેરા કરવા નહું હોય તો કામચલાણ પડેલો જુગ ચંપારદયની બેઠકમાં રહે છે તો તે જુગ અને મુખ્ય માલિકના અધિકારીઓને આજ્ઞાપત સીકાવાલો કેમ મેળવે તદ્દી હોય અને આ સ્વર્ગ નોંદીસો અને પડેલો છપાવવાનું શું કારણ હશે તે વૈષ્ણવો બહુી સારો અને માલિક શ્રી ચંપારદયની જેમજેમના બહેરજા બહાજરત કરવા ફેરા કરીને, ફરકે છે.

નહેરે સભા—મળાં માસમાં અખિતમાસતરથી વર્ણુધમ સ્વરાજ્ય સંપત્તિ ખાસ મહાધિવેશન કીટલી ખાતે મળ્યું હતું તેમાં બાજ લેવાને અમદાવાદની જુદી જુદી સનાતની સંસ્થાઓના પ્રતિનીધીઓ ગયા હતા. એ પ્રતિનીધીઓએ પોતાનો સ્વાતંત્ર્ય અને સનાતની જનતા સમક્ષ ગયે રવીતરે અનેની બીડીચની વાડીમાં એક નહેરે સભામાં કહી સંજગ્યો હતો.

સરસ્વતી શ્રી. બાળાચંદ્ર મનલાલ સુરે આ સભાનું પ્રમુખરવાન પડેલ શ્રી. સંસ્કૃતપદ્ય બ્યાખ્યાન વાચરપદીને આપવાની દરખાસ્ત મુજી હતી અને તેને પોસલિક શ્રી. આનંદલાલએ રોકી આપતાં, સંવત્સર મસાર થતાં, પડેલજીએ પ્રારંભિક બ્યાખ્યાન આપતાં મળ્યાંયું કે:—

દીંદીના ઉજા વિરોધધિવેશનમાં મળ્યા પ્રતિનીધીઓ દરેક પ્રતિભાથી ગયા હતા. અપણા સંદેશના જે સંજોલાં ગયા હતા તેઓ આજે પોતાનો પ્રલક્ષ અનુસર કહી બતાવશે. હું દીંદી ગયા ન હતો, પણ અગિય દીંદી, તથા જુનસાદી અખલાદે વચિને લાં યવર્થ કાચેથી હું મંડક વાકેર થયો છું. જુનસાદાના પ્રતિનીધીઓએ લાં જાહેર મહાકર્મ કરું છે જેમાં તો માર્કસાં નથી. આધિવેશન ઉપરાંત લાં બીજી પણ ધારી સભાઓ થઈ હતી. આ બધા દેશવ લાપાઓએ પ્રકટ કર્યો નથી. ‘જુનસાદી’ માં એ ઉત્તોત્તમ રીતે પ્રકટ થયેલો છે.

‘કંપની બાજો’ કંપની—દીંદીમાં કંપનીબાજ નહેરે રવાન છે. એ રવાનમાં તો રાષ્ટ્રીય સમાજોન થતી. લાં કેટલાક નેતાઓ રાષ્ટ્રીય જાતને જનસમાજને નહેરેમાં જોડે ચડે સમજાવીને ધાર્મિક વિષયમાં કમતા હતા. પણ એ નહેરે રવાનને કંપની સતત પ્રચાર કાચે કરીને સનાતનીઓએ લીધા હતા. મુખારકોની વાકાત નહોતી કે એ રવાનમાં નહેરે સભા બરી રાકે. સનાત નીમીએ તો ધર્મ ખાતર કુશાવતીની તર્કાત બતાવી લીધી છે. સરસ્વતીમાં તો ત્યાં સમજાવે મંડે તારે કેવાદલ થયો અને જેસવેર

લલત ચલાવવી પડી. પંખી તો તે નહેર રંચમૂમીને પૂછી રીતે સનાતનીઓએ સ્વાધીન કરી હતી. એ ગમ્ય પ્રદેશ છે, ત્યાં મરદાઇ છે, હિન્દુમાં પણ બહુમતી આપણીજ છે. બનારસમાં તો ૧૫-૨૦ હજાર માનવ સમુદાય આ લલત માટે એકત્ર થાય છે. તે વખતે નૃતનોઆઓ તો સંતાપ નય છે.

બહુમતીઓનો ખાલુ !—આ સવાલમાં મદીર પ્રવેશ તરફ બહુમતી નથી એ મો. રંગાઆયરે પણ જોઇ લીધું છે! ધર્મના સીક્રિતો બહુમતીના દેરથી ડાકા બેસાડાય નહી. લોકોમાં અત્યારે અસંસલનો ખૂબ પ્રચાર છે. અસંસલ તરફ બહુમતી છે તેથી અસંસલ જીવવું એ સિદ્ધાંત ન કહેવાય. લોકોમાં રસીયામાં નાસ્તીકવાદ ફેલાયો છે. ત્યાં ‘ઇશ્વર નથી’ એ વાદ તરફ બહુમતી છે. તેથી શું એ આદર્શ રસીકરી શકાય? અમારી બહુમતી છે એવી સુધારકોની જૂમ તદ્દન ખોટી છે. ગુરુવાપુરમાં ગાંધીજી તરફ દયા બતાવીને સનાતનીઓએ તટસ્થતા દેખાડી હતી પણ તેનો હવે દુરુપયોગ થઇ રહ્યો છે. અત્યારે અંગ્રેજ બાલુઆઓની સંખ્યા પાંચ ટકા જેટલીજ છે અને તેમાંથી બે ટકાજ સુધારકો હશે તો ૯૮ ટકા જેટલી બહુમતી સનાતનીઓનીજ છે. માર્કીંગે તોડવાનું સિદ્ધાંત સુધારકોએ દેરાને આપ્યું છે. ગાંધે સનાતનીઓએ પોતાના દેરદાર સિદ્ધાંતોનું સદબળ બળ કેળવવાનું છે. એ આદર્શો અત્યારે નહી. તો હવે પંખી બધા માનરોજ, પ્રાચીન સુકેશી રથોષી, ખપપુરતંત્ર અંગ્રેજ શિક્ષણ આપવું, આદર્શ સંસ્કૃતિનો પ્રચાર થશે. હવે હું પ્રો. દૂરકાલેને દીલ્હીના અવગમ્યો કહેવા વિનંતું છું.

પ્રો. દૂરકાલે તે પછી જણાવ્યું કે, દીલ્હીનું કાર્ય સંતોષજનક છે. સનાતનીઓની યોગી પ્રતિષ્ઠા પણ મો. રંગા આયરનું બીજ ટાંચે ચડ્યું છે. આ જેવો તેવો વિનય નથી. યોગી ગોઠા નેતાઓના લગીરય પ્રચારો પણ નિષ્ફળ નીવડયા અને બીજ જોરે પડ્યું છે. સનાતનીઓ આથી પણ વધુ ક્રમ કરશે તો ધારેલું કામ ફોલ્ગમંદ થઈ જાય. સનાતની કાર્યક્ષેત્રોનું મંડળ ઉત્તમોત્તમ કાર્ય કરી રહ્યું છે. નહેર રથાનો પણ તેમજી કબજે કર્યા છે. આર્થ સમાજઓ સાથે નહેરમાં વાદવિવાદ કરીને શાસ્ત્ર અને યુક્તિમાં સમાજજીને સનાતનીઓએ મહાંત કર્યા છે. એ સમિતનમાં ધણી એરોપ્લીના સલાસદારોએ બામ લીધા છે. હું નામ. વાઇસરોય, તથા પ્રો. રોહિટરી મો. એન્ડીર તથા હોમિન્યર બરેને પણ મથ્યા છું. તેમની પાસે સનાતની મહાંત જનસમૂહના વિચારો રહ્યું ક્યાં છે.

સંધ્યાલીટની મળના—કદર સનાતની અને દેશ ભક્ત બારતબૂપણ શ્રી. રાધવીજીએ સનાતનીઓને કુંભકણની નિદ્રાથી ફર રહેવાનો પડકાર કરતાં કહ્યું હતું કે દીલ્હીનું તો તમે બધું શાંભાવ્યું પણ તેથી રાજ્યધને હવે બેસી રહેવાનું નથી. જો હવે પ્રમદ સેવરી તોખ્યાલ રાખજો કે મીસરની તથા બાબીલીયન પ્રભુને જેમ સર્વનારા થઈ ગયા તેમ તમારો પણ વરોચ્છેદ થઈ જશે. હવે તો સ્વચંદ્ર ફર છે, પણ જો પ્રભસત્તાક રાજ્ય થશે તો રંગાઆયર અને નંગાઆયર જેવા કેક લાએ ધર્મ પર મથા દુકરના બંધાર પડશે. આ મંદીરો અને મદંતો તેમજ મહાધીરો પણ હવે અજસગાં ને મોનનાંદમાં રહેશે તો જેમનો પણ સર્વનારા સર્વધર્મોજ સમજાવે. જૂત રામાયણ તમે સાંભળ્યું પણ જો હવે તેથી ખુશાલીમાં આવી જશે નહિ. ના. વાઇસરોયે કહ્યું કે, ધર્મની બાળતમાં અને તટસ્થ છીએ. હું ખુશી રીતે જંગીવીશ કે, શહેનશાહ ના. પંચમ જ્યાં પ્રભના ધર્મ અને ધનના રક્ષણ માટે બંધાયેલા છે, ધન અને ધર્મ માટે પ્રભને કલેશ સેવેલા પટે તેવી સ્થિતિ જો ઉભી થાય તો હું ખુદ છું કે આ બીટીરા સરકાર! હવે તારું શું થશે? મારી તો અવરણ થઈ છે. નગીનભાઈ તો વાડજને જીતારે જશે. પણ જો આપ બાલુઆ હવે ભયંત નહિ બનો, ધર્મ માટે પ્રાણ ત્યાગ કરવાનું સ્વમર્થ નહિ બંતાવો તો ખ્યાલ રાખજો કે બાબી સમજર છે. લાલમાં રાત્રપ્રભ, મીતમાલેક અને મનુષ્યો રોઝ અને નોકરો વચ્ચેના કથકા ઉભા કરવામાં આયા છે. આ વખતે આપ લોકો તૈયાર થાઓ, સ્વપદ બનો, હિન્દુલ અને સનાતન ધર્મનું અભિમાન રાખો.

વસંતરામ રાજશ્રીએ તે પછી દીલ્હીનાં કાર્યોના અભિદૂત મીતાર આપ્યો હતો. વળી ત્યાંના ગાંધીવેલાં છાપાઓ “હિન્દુસ્થાન ટાઈમ્સ” અને “અર્જુન” જેવાઓનાં અધ્યક્ષ અને અસત્યપૂર્ણ પ્રચારકાર્યોના પૂરાવા સાથે પરિચય આપ્યો હતો. વિરોધીઓના આવા ગલીચ તથા લાચર પ્રચારકાર્ય વચ્ચે સનાતનીઓએ નીરતાથી ને ફાંટક મેળવી તેનો ખ્યાલ આપતાં કહ્યું કે—લાખ બે લાખની જનસંખ્યાની અસહકારની નહેર સલાને સુધાઈના “ટાઈમ્સ ઓફ ઇન્ડિયા” પંચે ચોંકા માણસોની સમાજચારે આજખાવા ત્યાં અસહકારી છાપાઓ અંગ્રેજ છાપા સાથે ઉજડી પડ્યાં હતાં. અત્યારે એજ ગાંધીવેલાં છાપા

સત્યનું નિર્દયતાથી ખૂન કરીને, ૧૫-૨૦ દબારની જનસંખ્યાની સનાતની સમાજોને પંદર નીસ માણસોની સુશા તરીકે જાહેરમાં ઝાળખાવતાં યત્નમાં નથી ! દીક્ષીમાં શ્રીયુત સંવત્રીજીએ એક દબાર ૧૩૫૫માં ફરમાવે બરીને અમદાવાદનું નામ ચાલ્યાર બન્યું છે. તેમણે પહેલાં પણ પંદરસો ૧૩૫૫માં બધાં હતા.

અમદાવાદ ડેપુટેશન—અમદાવાદની સનાતની જનતાએ રથપેશી શ્રી સનાતન વર્ણાશ્રમ ધર્મ સંસ્કૃત સભાએ એક ગેમોથલ તૈયાર કર્યું હતું, તેમાં અમદાવાદના લગભગ તમામ આચાર્યશ્રીઓ, મહંતો, મહાધારી તથા વિદ્વાનોની સદીઓ લેવામાં આવી હતી. આ ગેમોથલ આપવા માટે તા. ૧૬-૩-૩૩ ના રોજ પ્રેક્ષક શ્રી. દુરગાજી આગેવાની નીચે શ્રીયુત બોલાનાય ત્રિવેદી, શ્રી. બાલારામકર મનવાલ શુકલ, શ્રી. વસંતરામ સાસ્ત્રી; જેમનું એક ડેપુટેશન ના વાઈસચેયના પ્રા. રો. મી. મેન્ડીબને મળ્યું હતું અને ડેપુટેશનનો ધાર્મિક વિચારો લખીને પ્રા. સેક્રેટરી સાહેબે ધર્મની લાગણીની કદર કરીને, બહુજ દહાર તાથી નવાળ આપીને ધર્મની બાબતમાં સનાતનીઓની માનની તરફ ધ્યાન આપવા જણાવ્યું હતું.

બીજી ડેપુટેશન—સમગ્ર બારતવર્ષનું એક મહાત્મ ડેપુટેશન રાજમહારાજે, સદૃશકરે અને વિદ્વાનોનું ના. વાઈસચેય પાસે મળ્યું હતું. બુલરાવના પ્રતિનિધિઓ તરીકે જે ડેપુટેશનમાં સ્થાપી શ્રી અનિરંજનીયજી મહાધારી [એમ. એ. એલ. એલ. બી.] સૌથી સીટર મનુભાઈ ધંડયા, શ્રી. વસંતરામ સાસ્ત્રી, મનવાલ કામદાર સુટાયા હતા. તે વખતે પણ ના. વાઈસચેયે ધ્યેય દીક્ષીજી બધાં નવાળ આપે.

દેશીનમાં સભા—સંવત્ર ૧૯૮૨ ના ચૈત્ર કૃષ્ણ ૧૧ ને શુક્રવારના રોજ શ્રીમાન્ રોડ લક્ષ્મીદાસ પંદાપતના આમંત્રણથી શ્રીમદાચાર્યજીને જન્મમહોત્સવ ઉજવવા, અને તદવસદે પાઠશાળાના પ્રમુખ સદૃશક રોડ હરિદાસ ચંદુજી તથા પદોપધારી પુરુષોત્તમ સદૃશક રોડ નાનજી મેધજી તથા ચિત્રોને શ્રીમાન્ રોડ જોશામ દુરગાજીને હસ્તે ખુર્ચી મૂકાવવા એક જાહેર સમા શ્રીવતનીતદૃશકમંદિરમાં આવેલ પાઠશાળામાં કરવામાં આવી હતી. કર્ણમૂલં અર્પણમં થી શરૂ કરી પુરુષોત્તમ પાંચને તાર મધુર સ્વરથી ન્યાદે લલકારી ત્યાદે પાઠશાળાના નવીન વિરાજ મકાનમાં એક તરફથી શ્રી વર્ગ પ્રવેશ કર્યો. “સમાનો કાર્યક્રમ” સર્વને મળી રહેતા, દરખાસ્તાનુસાર પ્રમુખસ્થાને સ્થાપી, જોશામધર્મ શ્રીમદ્વૃક્ષાચાર્યજીના ચિત્રજીને પુષ્પમાળા પહેરાવી. વિદ્યાર્થી નાનાલાલ હાથીરામે દુરગાજી વેદિક રતુતિ હ્રમ્ય સ્વદે માળ જતાવી અને બીજા નાનાં વિદ્યાર્થીઓએ ટેચુકડા બ્યાખ્યાનો અને સંવાદો શ્રોતાઓને સંભળાયા. વિદ્યાર્થી ખુશાલ દાસ છવાભાઈ માલનીયાએ ઉપક્રમના આરંભમાં સમયની કરકસરીની જરૂરિયાત જણાવી, સમાનો કાર્ય અને વિષયનો અંક નિર્દેશ કર્યો. ઉપક્રમના ઉપસંહારમાં શ્રીમદાચાર્યજીના પુષ્પિમાર્ગપવની અજરતબરતા અને સદૃશક પુરુષોત્તમજીના બ્રહ્મસ્વંકની અચલતા અનેદ્રવતા ધ્યાની, પાઠશાળાના અધ્યાપક વે. સા. સં. સાસ્ત્રીજી હાથીરામ, રવનજી સાર્થએ સદૃશક હરિદાસગાઈને નાનજીરાજના વિરલ જીવન ચરિત્રોને દૃઢાલુમાં આવેખી, દૃઢ સમયમાં તેઓના સર્વ વલણોને રખસ કરી, તેઓની સ્મૃતિને યુગ સહૃદય વૈષ્ણવોમાં રચાવેલ કરી સમાનો પ્રમુખ શ્રીમાન્ રોડ જોશામ છવરાજે સદૃશક પુરુષોત્તમજીના શુભોને અંશુલિનિર્દેશ કરી, ચિત્રોને ખુર્ચી મૂકવાનો લાભ દેવા બદલ કાર્યકર્તાઓને આભાર માની, હવે તાણીઓના નાદ વગ્ગે બને ચિત્રોને ખોલી, વિજળીકે જતોના પ્રકાશમાં વિપુલ સમાન કરી મૂક્યા. અભાર સુધી વેપારી લાજાના ૨૦ ટકામાંથી નિમજી પાઠશાળાને, વેપાર મંદલને લીધે, લાજાની આવક પુરી ન પડતાં નવી યોજનાનુસાર મેસર્સ મૂળજી જોશામ. એ રૂ. ૨૫૦, રોડ હરિદાસ ચંદુજીને રૂ. ૨૨૫, રોડ નાનજી મેધજીને રૂ. ૧૦૦, રોડ લક્ષ્મીદાસ ચંદાવને રૂ. ૭૫, રોડ હરિદાસ પુરુષોત્તમને રૂ. ૫૦, રોડ રામદાસ દરબારજી રૂ. ૨૫, મદિને મદિને આપવાનું જાહેર કર્યું. કેલિકાટથી મદોલસવ પ્રસંગે પધારેલા શ્રીમાન્ રોડ તલકચંદ પ્રેમજીએ મદિને મદિને પોતાના તરફથી રૂ. ૫૦ આપવાનું જાહેર કરી તેઓના ઉત્સાહમાં વધારો કર્યો. હવે રોડ જોશામ છવરાજ, રોડ હરિદાસ ચંદુજી અને રોડ નાનજી મેધજી તરફથી સારા દીનામે બાળકોને આપવામાં આવ્યા. રોડ પાનામંદ દેવજી તરફથી રૂ. ૧૫૦ ન અને રોડ તલકચંદ પ્રેમજી તરફથી બધે કોરી નેચા ને સુંદર પેન્સિલો વિદ્યાર્થીઓમાં વહેંચવા સમા મેદની શ્રીમદાચાર્યજીના નામાદારો ન્ય યોગ કરવી આનંદથી વિખરાઈ.

સોને માટે

તાકત-તાઝીવી લારપૂર

લગ્નતહાર

અંડુ દ્રાક્ષા સ વ

—વિના વિલગે—
વાપરવા માંડો

ખાસ સ્ત્રીઓને માટે

તનદુરસ્તી-તાકદથી લારપૂર

સ્ત્રીઓની નબજાઈમાં
આબાદ અસર કરનાર

અંડુ અશોકારિષ્ટ

પ્રદરાદિ રોગોના
અકસીર ધલાજ
દરેક ઘરમાં હોવો લેખ્યો

ખાણકોનાં પેટનાં દર્દોમાં

આબાદ કામ કરનાર

બિલકુલ
કેદ વગરનું

અંડુ બાલ શૂલાર્ક

—ખાણકોવાળા—
દરેક ઘરમાં રાખવું લેખ્યો
—શીશી એકના આના બાર—

અંડુ ફાર્માસ્યુટિકલ વર્ક્સ લી. મુંબઈ નં. ૧૪

અમદાવાદના એજન્ટ: બાગીલાલ અધસ, ૧૧૪, રીચીરોડ.

આયુર્વેદિક દવાઓનું સુચીપત્ર આજેજ મંગાવો.

वार्तिक प्रवृत्तये च इति-आ. (२११ अथ ए.)

લેખાનુક્રમ.

જાણે, મંચ ૧૬૮૯.

વિષયો.	પૃષ્ઠ.	વિષયો.	પૃષ્ઠ.
૧. સમસ્થાપિત ...	૮૧	૮. ભક્તિ કે ઉપાસના...	૮૨
૨. આત્મીય કીર્તન...	૮૨	૯. આપત્તવા રક્ષણ...	૧૦૨
૩. શ્રીધર્મન ભક્તસંજ્ઞા પદો .	૮૩	૧૦. નામમાહાત્મ્ય ...	૧૦૩
૪. વચનામૃત ...	૮૪	૧૧. ગોવિન્દ ...	૧૦૫
૫. વેચનસુધા ...	૮૭	૧૨. સત્સંગમા ...	૧૦૮
૬. પ્રભુભક્તિ અને અત્યંત ...	૯૩	૧૩. વરદક્ષિણા...	૧૦૯
૭. શુદ્ધિત-ભક્તિમાર્ગ ...	૯૭	૧૪. શ્રીમદ્દામૃત અને મહાશક્તિ ...	૧૧૫
		૧૫. સાપ્રદાયિક પ્રવૃત્તિ ...	૧૧૭

અદ્ભુત અમરકાર !

અદ્ભુત અમરકાર ! !

ધોળા દીવસે તાર.

શ્રી ગિરીગજ આશુ તથા ગીરનાગના મહાભાઈ પારોથી વણા દીવસના પ્રથામથી મહાન પ્રપત્તે દિવ્ય વિદ્યા મેળવી આનંદાર વૈદ્યરાજ ભાતીલાલ મહાશંકર ભટ્ટ L. W. T. રાજકાવાસ કે જેમની પાસેથી નીચે બતાવેના દુ બે થી ગમી મકાષ છે.

૧. જેઓ ગેતાન શનુઓના પાસેથી કટાગી ગયા હોય
૨. વેપારની ઉચ્ચ પાયાઓમા નુકસાનથી આવી ગયા હોય.
૩. વાગીઆ પછાના મેળા રાજાથી દૈવ્ય કક્ષી ઉઠ્યા હોય
૪. તથા દરેક પ્રકારની મુશ્કેલી, નબળા વીચારો ઉપર વિજય મેળવી ધન, પુત્ર, માન, આશીર્વાદ, વેપારમા લાભ, ઈર્ષ્ય સમા કલેષ, સારા પ્રકાર નોકરી, શનુ વિજય તથા સ્ત્રી પુરુષમા અણુ બનાવ રહેતો હોય તો અગ્નિ પ્રેમ મરાવી આપનાર તથા દગરો દના વાપરો છવ્વ લય કરે હમીના દહીં નકતરના કે દેવી કારણથી ન મટતા હોય તેમણે રૂમર મરી ખુલાસો મેળવી.

ફક્ત પાંચજ મીનીટમાં રૂમર મળવાથી તમારૂં આશુ ભવિષ્ય ફક્ત કહી દેવામાં આવશે. એક પ્રગતિ રૂ ૧-૪-૦ પાંચ પ્રગતિ રૂ ૫-૪-૦ આખા ભવિષ્ય ફક્ત રૂ. ૧૦-૩-૦ ઉપરાંત મુકે, મોટ, ડાકણ, સાકણ, બલગણસ નીચે નકતરના કારણો પોતાની દેવી પ્રયોગોના બગથી અજબ રીતે દૂર કરી કરી શકાય છે. મોઝા યા લખો,

વૈદ્યરાજ ભાતીલાલ મહાશંકર ભટ્ટ. L. W. T.
(મગદળાની ખામ વેલ)

કે ગ્રહકીર્તની પોષા મામે, પુણીનીવાસના મેડે, આગપુર-અમદાવાદ

સાપ્રદાયિક ગ્રંથો ક્યાંથી મેળવશો ?

સુદ્રિત થયેલા તથા નહિ મળતા સંસ્કૃત, મળ, હિન્દી, ગુજરાતી અને અંગ્રેજી ભાષાના સાપ્રદાયિક નવ ગ્રંથો નીચેને સ્થળે મળશે ચોગ્ય કમીશન પણ આપવામાં આવશે બહારનામની માગણી પર પૂરું ધ્યાન આપવામાં આવશે.

લખો યા મળો —

ભારત માર્તંડ પંડિત શ્રીગદ્ગદાલાલની સંસ્થા,
નં. ૫૧/૫૩ કેથેડ્રલ સ્ટ્રીટ, ભુલેશ્વર, મુંબાઈ નં. ૨.

श्रीवाक्पतिपादा विजयन्तान्तमाम् ॥

पृष्ठ ८.

अंक ३.

शुद्धाद्वैत

अने

अथ

१८८८.

श्रीवृद्धसाधक

४५५.

सहितमार्तः.

करुणा दृगेपा.

(के.—शास्त्री दुर्लभजी देवदृष्ण रवाजिराज संस्कृत पाठशाला मोरयी.)

उद्धर्तुमङ्गीकृतजीववृन्दान् खलान्प्रहन्तुं सुवि भारभूतान् ।
धर्मावनार्यं सहसाऽवतीर्णः कृष्णस्तदीया करुणा दृगेपा ॥१॥
विषेः समाधौ हरिणा यदुक्तं सत्यं विधातुं वचनं स्वकीयम् ।
कारागृहेऽपि स्वयमाविशसीत् पूर्णा तदीया करुणा दृगेपा ॥२॥
अजे जगत्यां निशि जायमाने गुणा ऋतूनां प्रकटीवमूवुः ।
कुष्ठानि पद्मानि सतां मनोऽज्जैर्भूर्मासुका करुणा दृगेपा ॥३॥
अलौकिकाकल्पविभूषिताङ्गो भाजत्करः उद्धखगदान्जचक्रैः ।
प्रभुः पितृप्रार्थनया बभूव यः प्राकृतोऽर्भः करुणा दृगेपा ॥४॥
मात्रा च पित्रा विदितोऽपि साक्षात् परः प्रकृत्याः पुरुषः खुतोऽपि ।
ताभ्यां तु विस्मारितवान्महत्त्वं लीलां विधातुं, करुणा दृगेपा ॥५॥
विरोर्मये वीर्यं समीक्ष्य पूर्वं दत्तं श्रुतिभ्यो न्यरमात्मनैव ।
लीलोदधिं स्थापयितुं पृथिव्यां जगाम घोषं, करुणा दृगेपा ॥६॥
प्राकट्यलीलाजनितं सुखं यच्छ्रीगोकुले स्वाननुभाज्य मूमा ।
भावानुरूपं विततार कृष्णो नित्यं निजेभ्यः करुणा दृगेपा ॥७॥
यन्मायया बद्धमिदं हि विश्वं प्रीत्याश्चित्तोजननीनिबद्धः ।
संदर्शितं भक्तवशान्वमेवं कृष्णेन पूर्णा करुणा दृगेपा ॥८॥
पद्मः स्वयं भक्तवचोऽनुसारी विषय मुक्तौ छ्युः वृक्षभावात् ।
ददौ स्वर्गिकं धनदात्मजान्यां श्रीगोकुलेभ्यः, करुणा दृगेपा ॥९॥

कृणावतारं सफलं विधातुं परं पवित्रं-भगवच्चरित्रम् ।

व्यासः पुराणेषु जगद्विदितार्थमूचे तदीया करुणा द्योषा ॥१०॥

व्यासोक्तिमप्यत्र मत्तान्धकारैर्बद्धनां सदग्रे प्रकटां चकार ।

तत्त्वार्थदीपेन हि बलभाभिः पूर्णां तदीया करुणा द्योषा ॥११॥

‘ नवं करोति ’

श्रीमद्गुरोः पादनखार्करश्मिः स्वान्ताम्बराज्ञानतमस्तृणेदि ।

ज्ञानप्रकाशात्सफलं स्व नेत्रं स ध्यायतो जन्म नवं करोति ॥१॥

वृक्षान्दलैर्भूषयते नवीनैः पुष्पैः फलैर्वा सरसैर्मनीशैः ।

पुंस्कोकिलान्कूजयते नगस्यान् वनं वसन्तो हि नवं करोति ॥२॥

अनेकशः शाखवचोऽनुभूतं संकीर्तने वा श्रवणे मनुष्यैः ।

सनततनं चापि तदेव वाक्यं प्रज्ञावतां वाक् तु नवं करोति ॥३॥

सङ्गः सतां बुद्धिमलं प्रमार्ष्टि हिनस्ति पापं मुकृतं प्रसूते ।

पुराकृतैः पुण्यचयस्तु लब्धौ जनुर्गुणां चापि नवं करोति ॥४॥

कर्णातिथिः कृष्णकथा यदि स्यात् सत्त्वं विशुद्धं श्रुतिप्रणाशः ।

मैत्री तथा स्याद् भगवज्जनेषु ततो नृणां जन्म नवं करोति ॥५॥

प्राचीन कीर्तन.

राग सारंग ॥ कुंजमहल प्याकि के संग बैठे लाळ करत रंग अघर सुरली घर स्याम सारंग
सुर बजायो ॥ अघर विकट तान छेत सप्त सुरसों गात्र उपजावत मान विविध भांत रस
॥१॥ मंद सुगंध बहत पवन सुंदर अति सुखद भवन रीझ राधे पियाके संग मधुर मधुर
॥ छतिस्वामी गिरिधर मगन भये आंको भरत सुखसवाद ता समेको कहत न वानि आयो ॥
॥ ठाडो कदमतर जमुनाके तट पीत टिपारो ब्रजजन मोहे ॥ कटि उट काळ पीत उपरेना ओर
बैजयंती कंठ विराजत करनफूल अति सोहे ॥१॥ सुरली बजावत गत उपजावत उपज छेत छंद भारी ॥
न्यारी नंददास प्रभुकी छवि निरखत कोटि रति पति बारी ॥२॥ पद ॥ जमुनातट ठाडे सुरली
बजावे मोहन मदनगोपाल ॥ सीस टिपारो लाळ कावनी पीत उपरेना, उर राजत वनमाळ
॥१॥ कमल किरावत गत उपजावत अतिरस गीत रसाळ ॥ कुमनदास प्रभु त्रिभुवनमोहन
गोवर्धनधरलाळ ॥२॥

राग कल्याण ॥ लाडिले गुमानी हो पिय निरखत दगन छुमानी ॥ कुसुमकली हो
वीनन निकसी सघनलता अरुमानी ॥१॥ सोंधे सार बदनकमळ जब मधुप करत नकवानी ॥
ब्रजाधीस प्रभु रंगीले रसिया छतियांसों अँखियाँ सीरानी ॥२॥

[संप्रद्वर्ताः—कण्वी चैष्णव चंद्रालर्जा लाखा केशोद्वारा.]..

श्रीपद्मनाभदासजीके पद.

या प्रकार श्रीमहाप्रभुजीके भूविलास तथा अंतःकरण तथा नेत्रकमल वर्णन करके अब इनके मध्य भागमें जो मुस्तारविन्द है ताको वर्णन करत है वागशीश इति ॥ वाक्-वाणी-सरस्वती ताके अधीश जो भगवान तद्रूप श्रीमहाप्रभुजी है । 'वस्तुतः कृष्ण एव' वा नामके भावभावित होय एव पदसो निश्चय करके यही है, अर्थात् वाणीको स्थान जो मुस्तारविन्द है तद्रूप आप है । और युवजन जो ब्रजभक्त है उनके रसमूली भी आपही है, अर्थात् रसके मूलहुं धारण करे सो रसमूली । याँते उनहुं रसकी प्राप्ति भी मुस्तारविन्दसों ही होय हैं यह सूचित कीनी । अब यह रस ब्रजभक्तनकुं कीनके द्वारा प्राप्त भयो है सो कहत है मुरली । या पदसो वेशुके द्वारा प्राप्त भयो है, यह वहाँपीडं या शोकमें स्पष्ट हैं । मधुराई कहिवेसों वा रसकी जो गीतास है वासों कोई कालमें तृप्ति नहि है । अर्थात् सर्व काल वाहीकी इच्छा घनी रहे, वाहीकुं मधुराई कहत है । एसो जो मधु-मधुररस-मधुराई लियो भयो वेशुके द्वारा ब्रजभक्तनकुं प्राप्त भयो । वेशुकुं सुखी कहिवेसों भगवानने वा वेशुकुं मुरके लीनी ताँतों मुरली एसे फयो । भगवानकुं ब्रजभक्तनके लिये रसदान करनो है ताको उत्सुकतासों वेशुकुं मुरके छेत मापही रस-दान करिवेके आनंदके आवेशमें देहानुसंधान नहि रहिवेसों वेसे ही ललित त्रिमंग होय स्थित है । यह मुरली पदसों सूचित कीनी, (यहां भावनाको प्रसंग है ।) प्रमेयप्रकरणके सातमें अप्यायमें श्रीद्वारकाधीशके स्वरूपसों वेशुनाद करके अपने दशरसयुक्त रसरूप स्वरूप गोपीजनके अंतर्में स्थित कीनी । और द्वारकाधीश स्वरूप और त्रिविक्रम स्वरूप एकही है अर्थात् चरण, फटि, तथा श्रीवा ए तीनों भाग क्रमसों नहीं, ताँतों त्रिविक्रम स्वरूप है-अर्थात् एककालवाचिन्म अनेक लीलादर्शयवेकेलिये यहां फलप्रकरणमें भी भगवान त्रिविक्रम स्वरूप कहिये छलित-त्रिमंग स्वरूपसों स्थित है । यहां मुख्य शृंगाररससों लीला करनी है । शृंगाररस कहा ! जो सबसे आगे गति करे सो शृंगाररस, और नीलरूप आपकों प्रिय है । कारण नीलरूप शृंगाररसात्मक है । याँते पनस्यामसुंदर रूप धारण कर ललितत्रिमंग होय वेशुनाद करत में दक्षिण श्रीहस्तको करतल भाग भजन-सेवाके विषे अभय करत है । याँते करतलहुं अंगुलिके अग्रभागको स्पर्श नहि होयके अंगुष्ठकुं तर्जनीको स्पर्श है । और मध्यमा, अनामिका तथा कनिष्ठिका यह तीनों अंगुलि ऊर्ध्व है । याँते यह नृत्यको भाव भी सूचित करके जतायो और वेशुकी स्थिति दोनों श्रीहस्तके अचयवके मध्यभागमें है, और वेशुको शब्द आपकुं प्रिय है, कारण या वेशुमें प्रथम सुधाधारकव है और वेशुद्वारा गोपीजनकुं सुधाको भोग करावनो है, कारण भगवत्सुधाको भोग भये बिना भगवद्भोग्या होय नहीं । अथवा वेशु-व=प्रसादनं अर्थात् मोक्षानंद; इ=विषयानंद; इनहुं अशु-बुद्ध करिके भजनानंदको दान करनो है । याँते वेशुद्वारा सुधाको दान है । और स्पर्श आपकुं गोपीजनको ही प्रिय है । कारण ! गोपीजनमें सुधाधारकव है और रासलीलमें इनको स्पर्श करनो है,

यातें वेशुकुं धारण करके सुधाको दान करत हे । अथवा श्रीहस्तके मध्यभाग कहिये करतल भाग माधव भगवानको निवासस्थान हे । वाकुं सन्मुख करिके यह जतावत हे जो लक्ष्मी महाचंचल हे, तो भी मेरी क्रियाशक्ति करिके स्थिर हे यातें व्रजभक्तनके मध्यमें निरोधकी स्थितिमें लीलाउद्बोधक-भाव अतिचंचल, ता भावकुं स्थिर करिवेकुं सूचित भाव जतावत हे । अंगुष्ठ जो गोविन्द भगवानको स्थान हे ओर तर्जनी महीधर भगवानको स्थान हे, तातें अंगुष्ठकुं तर्जनीको संबंध कराय यह जतावत हे जो में गोविन्द हुं अर्थात् व्रजको इन्द्र हुं ओर इन्द्रकुं भोग प्रिय हे, ओर मही जो पृथ्वीके धारण करिवेवारे जो आवेशी संकर्षण भगवान हे उनको संबंध हे, यातें तुमकुं में या पृथ्वीपर अपने आवेशको दान करिके सम्यक् प्रकारसों आकर्षण करिके तुम्हारे मेंही भोग सिद्ध करूंगे । याही कारणसों अभयसूचक श्रीहस्तको करतलभाग जो हे ताकुं व्रजभक्तनको आगमन जान सन्मुख करके दिखावत हे । यह सूचित भाव जतावत हे । ओर मध्यमा जो द्वीपके भगवानको स्थान कनिष्ठिका, जो विष्णु भगवानको स्थान—इन तीनों अंगुलिकुं ऊर्ध्व करके यह जतावत हे जो द्वीपके कहिये इन्द्रियनको ईश हुं, तातें इन्द्रियनकूँ मेरे विषे प्रेरित करके मेंही ऊर्ध्वगतिकुं प्राप्त करूंगे । यामें लौकिक विषयको अभाव सूचित कीनी । क्यों कि भगवत्प्रेरक विषय हे तासों अलौकिक हे ओर त्रिविक्रमरूप—वरण, कटि तथा म्रीवा ये तीनों जिनके विक्रम हे अर्थात् क्रमसों नहि हे या रूपसों यह जतावत हे जो तुमारे विचित्र विक्रम रूप हे अर्थात् निर्गुण होयके सात्विक, राजस, तामस—गुणवारे भये हो, तासों ये गुणमय लघुरूपता तुमारी या रूपसंबंधसों दूर करिके निर्गुणतारूप ऊर्ध्वगतिकुं प्राप्त करूंगे यह सूचित कीनी । ओर विष्णु-रूपसों यह जतावत हे जो में सर्वत्र व्यापक हुं ओर मोसों जिनको संबंध हे वेही ऊर्ध्वगतिके अधिकारी हे, एसो सत्त्वगुणी रूपसों शांतिको सूचित भाव जतायो । श्रीहस्तको पृष्ठभाग हे, सो जनार्दन भगवानको स्थान हे, ताको व्रजभक्तनके सन्मुख करके यह जतावत हे । जो मेरे सन्मुख जिनको आगमन हे वामें जो दुष्टजन प्रतिबंधक हे ताको मेंही अर्दन—नाश—करूंगे, अथवा मेरे जनके हृदयस्थित जो दुष्टभाव कहिये कामभावना, ताको नाश में ही करूंगे अथवा वाम अंग जो पुष्ट हे तासों वाम श्रीहस्तसों पुष्टिभक्तनको ही आवाहन करके बुलावत हे, अन्यकुं नहीं । यामें यह जतायो जो भगवानके सुखार्थ जेसे पूतनासंधंधी रक्षामें गोपीजनने अंगन्यास करके करन्यास करके भगवन्नामसोंही भगवानकी रक्षा कीनी, तेसे यहां भी गोपीजनके सुखार्थ अंगन्यास, करन्यास, करके रसकी प्राप्ति करायवेके लिये ललितत्रिभंग स्वरूपसों स्थित हे । याकी विशेष जिज्ञासा होय तो ललितत्रिभंग ग्रंथकी टीकामें वर्णन हैं, तहां देखनो । यह सर्व लीलारूप श्रीमहाप्रभुजीको स्वरूप हे याहीतें जानी यह पद कक्षो । आपकी कृपातें मेरे जानवेमें एसी आवत हे, यातें 'मेने जानी' यह पद्मनाभदासजी अपने स्वतःको अनुभव कर रहे हैं । या प्रकार ललितत्रिभंग स्वरूपसों श्रीमहाप्रभुजीको हि वर्णन करत हे, सो कहत हे "अटपटी बात

.....पाछे पुलिन ठोरकी ठानी ” यह अदाइ तुफ को संबंध हे। भगवानकी अटपटी बात, जामें समज न पड़े सो, किन्तु इतनोही नहि तो वा बातें छपेटा भी बहोतसे ल्यो, वा छपेटाकुं सुर-शायवेवारे जो ब्रजभक्त हे, उनसों नहि सुरसैं उलटे वामें वे सब अरुझ गये । सब कहैं तासों वा लीलास्थळमें जो आये वे सब या प्रकार अंतरंग प्रसंग सों मिले भये एसे ब्रजभक्तनको भगवानने मधुर मधुर कहिये बड़े आदरपूर्वक, एसो कि जो गोपीजनके समजमें नहि आवे, या रीतको अव्यक्त मधुर वेणुके ससरंध्र जे के गुणगान, स्नेहपूर्वक गान कीनो । वा मधुर गानने बहुत सयानी सखि जो ब्रजभक्त अपने समानशीलव्यसनवारी तिनकुं प्रचुर करी, उनकुं भगवान के सन्मुख करके वनमें फैलाय दीनी । अथवा उनकी लौकिक सयानता छोड़ाय अन्तःकरणको प्रकर्ष करके पूर्ण कीनो, क्योंकि फिर लौकिक रीतसों सयानी वनके भगवत्सन्मुखसों पाछी घर न जाय । या रीतके गुणगानने उनके अंतरंग देशकुं आकर्षण करके भगवत्सन्मुख कीने ॥४॥ अब बहिरंग देश, बाहिरकी कियाकुं कहत हे, नखशिखाग्र चरणके नखसुं ल्याय शिखाके भ्रम भागताइ संकुलित अर्थात् दृढ अर्थात् सम्यक् प्रकारसों मिली भइ, जेसे छता वृक्षपर संकुलित होय तेसे मिली भइ, विविध प्रकारकी निधि कहिये नाना प्रकारकी लीलारूप निधि तिनके समूहमें भगवाननें मुखसों मिलाय दीनी । इतनो ही नहि किन्तु वा लीलारूप ग्रंथिमें उनके अंग उत्तम प्रकार करके बांध दीने । अर्थात् कृपारूप ग्रंथिसों वे निधियां छूटे हि नहि या प्रकार अपने समान मुखरूप कर अपनेमें उनको स्नेह कराय अपने सन्मुख कर लीनी । एसे करवेमें हेतु कहत हे वरदेश्वर इति ॥ वर कहिये श्रेष्ठ इश्वर जो धर्मा स्वरूप, ता स्वरूपसों द कहिये दान कीनो, यातें द पद मध्यमें हे । अथवा वे कुमारिका स्नेह करके जब सन्मुख भइ तब, उनकुं वर देवेवारे इश्वरने रासलीलाको दान देवेकी आज्ञा दीनी । अब जा ठोर मुखदान देवेकी आज्ञा कीनी तां ठोरकुं कहत हे । “ पाछे पुलिन ठोरही ठानी ” । पाछे कहियेसों प्रथमही धर्मा स्वरूपसों वर देके पाछे याही स्वरूपसों रासलीला करनी हे अथवा इतनो कार्य करके अपने समान मुखरूप करके पाछे श्रीयमुनाजीके पुलिनमें ठोरको ठान क्रियो । [अपूर्ण.]

वचनामृत.

[नित्यलीलास्थ गोस्वामी श्रीगोवर्धनलालजी महाराजके यह वचनामृत विनके श्रीपदीजीने लिखे हे ।]

पंचमवचनामृत—फेर एक समें श्रीकाकाजी महाराजनें एसे आज्ञा करी, जो अपने माथे श्रीलालजी विराजे हैं, सो कोदामें छोटे मयुरेशजीवारे, श्रीमयुरानाथजी महाराजके भाइ श्रीरामकृष्णजीके श्रीठाकुरजी है । श्रीमहाप्रभुजीकी निधि है । चोराशी वैष्णवकी बातमें सिद्धानंद वारे अम्मा क्षत्राणीके ठाकुरजी है । इनके चरित्र इनकी बातोंमें प्रसिद्ध हे । और श्रीरामकृष्णजी

महाराजके, वहां भी इन ठाकुरजीके अदभुत चरित्र हैं, परन्तु जीतने याद है, सो लीलाये है । आप श्रीरामकृष्णजी महाराज श्रीमद्गोकुलमें विराजते, श्रीलालजीकुं छोड़ि के कभी परदेश नहि पधारेते । तासों चित्तको बहुत संकोच रहैतो नोकर चाकर नही रखते, आप तथा आपके बहुजी तथा बेटीजी तीनों जन मिलके सब सेवा करते । जल तथा चक्की तककी सेवा करते । और एक समें श्रीवृन्दावनको मेला देखेकुं सब आग्रह करीके पधराइ गये, तब आपभी पधारे, फेर आप पाछे पधारे तब श्रीलालजीने आज्ञा करी कि दोहिता दोकुं तो मेला देखाय लये धोर हमकु नहि छे गये सो हम ज्हा तुझारे बेटा नहि है ! तब आपने कही येतो सब देहसंघी है, मेरे तो सर्वस्व आपहो, आपकुं छे जाउंगो । तब प्रभु प्रसन्न भये । फेर दुसरो बरस श्रीलालजीकुं झांपी में पधरायेके श्रीवृन्दावन मेला दीखाय लये, पाछे प्रभु प्रसन्न भये ऐसे सोखीन श्रीलालजी है । और एक बिरियां श्रीलालजीने उनके बहुजीकुं आज्ञा करी के हमारे डुबकी भात सानो है, तब उनके बहुजीने कही, के कैसे होय ? तब आपने सिखायो । तब डुबकी भात आयेगे, और उनके बालकनके ताई उपर बादी करते तब श्रीलालजीने आज्ञा करी, जो तुझारे बालकनकुं तो नित्य बादी खवावो हो, और हमकुं बादी नहि खवावो हो । तबहुं श्रीठाकुरजी कुं बादी होयवे लगी । सो अभीताई होय है । और श्रीरामकृष्णजी महाराज के फक्त एक बेटीजी हते, लालजी नही हते, सो भूतलमें विराजे तहां ताई सेवा करि फेर बेटीजीकुं घर दीनी ।

॥ इति श्रीगोवर्धनलालजी महाराजको पांचमो वचनामृत संपूर्ण ॥

छठो वचनामृत—अब एक समय श्रीकाकाजी महाराजने ऐसे आज्ञा करीके राम-कृष्णजीके बेटीजीकुं घर दीनी हतो, सो उनके एक लाल, तथा एक लाली हते, सो बेटीजी भूतलमें विराजे तहांताई उनने सेवा करी पीछे बहीबट उनके लाछने कयों, और घर लाछीकुं दीयो । उनकी लाली हमारे दामोदरजी काकाजीकुं ब्यादे हते । सो ब्याहा भये वरस दिन भयो, तब हमारे श्रीकाकाजी महाराज लीलामें पधारे । सो हमारे काकाजी महाराज बालक हते, और उनके भाई बहीबट करते, सो उनके मोंटे गोकुलके लुन्चा लग गये । सो सब पैसा खाय गये । और मंदिरके उपर एक लाख रुपयाको करज करदीयो । और हमारे काकाजी बालक हते और परदेश बहुत फीरे पर करज न चुको तब हमारे दादाजी महाराजहुं कही, जो आप करज चुकावो, तब आपने कही, हमकुं लीख देउ, तब बिनने लीख दीयो, उनके भाहनें भी सही करी, फेर हमारे दादीजी महाराजने बड़ोत रुपया दीये, लाख रुपयायानहुंभी उपरांत दिए तो भी उनको करज नहि चुक्यो, तब आपु बहुत अमुंजे, और श्रीलालजीकुं मुंबई पधराइवेको विचार कयों, सो गोकुल मधारेके श्रीलालजीकुं चीड़ी नांसी । चीड़ीमें आपके मुंबई पधारेवेको ईच्छा है तब गोपीनाथलालजीहुं छाने पधरायेवेको विचार राख्यो । ओ श्रीलालजी जेसो दूसरो स्वरूप पनवावो सो बिनहुं पधराये, रातकुं शैव्यामें और ये श्रीलालजी,

ઓર શ્રીમહાપ્રમુજીકે હસ્તાકર જાંપામેં પધરાયે, ઓર સંવેરે કુચ ક્રિયો સો આગરેમેં મુકામ કીયો ।
 યહાં ગોપીનાથલાલજીકું સંવર પડી સો વાર્દે બલત પાંચ-દસ લગડેનકો લેકે આગરે આવે; પરંતુ
 શ્રીલાલજીકી ઈચ્છા નેહતી; સો ઓનકું સંવર ન પડી । ઓર હમારે ઘર આવકે ઉતરે; ઓર રાંલનાદ,
 ધંડાનાદ, સંચ સેવા નિત્યપ્રમાણ મહે તોહ ઓનકો સંવર ન પડી । ઓર હ્યાં સો શ્રીદાદાજી
 મહારાજ રેલમેં વેઠકે મુંવર્દે પવારે । એસે એસે ચમત્કાર પ્રમુનેં દીલાયે, ઓર દાદાજી મહારાજકું
 ફલુ હરફત આવે નહિ એસે શ્રીલાલજીકે ઓનેક ચરિત્ર હૈ સો વહાં તાંદે હીલે ?

॥ ઇતિ શ્રીગોવર્ધનલાલજી મહારાજકી છટ્ટો વચનામૃત સંપૂર્ણ ॥

વચનસુધા.

શ્રીગુરુવંદના.

પુષ્ટિમાર્ગનું સર્વંદવ શ્રીગુરુદેવજ છે. ખરી રીતે જોતાં સર્વ સંપ્રદાયો ગુરુનો
 મહિમા બધાથી વિશેષ રીતે ગાય છે ઉપનિષદો તો ગુરુમાં અને પ્રભુમાં બેદભાવ
 રાખનારને ધાર્મિક ભાવો સૂઝતા જ નથી એમ કહે છે. આપણા સંપ્રદાયમાં પ્રભુથી
 પણ ગુરુદેવ અધિક છે. ગુરુદેવની કૃપા યથા પછી આપણને પ્રભુની કૃપા માટે
 વળખાં મારવાનીએ કશી જરૂર નથી. ગુરુદેવની કૃપા માટે જ્યાં પ્રભુને આપણે
 વિનવીએ, ત્યાં ગુરુકૃપા યથા પછી પ્રભુકૃપાનું મ્હોં તાકવા કયાં બેસીએ ? આપણે
 દીનમાં દીન છીએ એ વાત તો સારી પેટે જાણી ચુક્યા. એક દીન કિંકર પોતાના
 પોતાના તાલેવાન શેઠને શું આપી શકે ? તેમાંએ આપણા સ્વામી તો શેઠ લોકના
 નાથ રહ્યા. વિષ્ણુનાં ચરણો તો એક લક્ષ્મીજ સેવે અને આપણા શ્રીકૃષ્ણપ્રભુની
 સેવા ટહેલે તો હજારો અસંખ્ય લક્ષ્મીઓ કયાં કરે. એવા પ્રભુને આપણે શું
 નજરાણું ધરવાના હતા ? આપણે તો દીનતાથી એને વંદનજ કરી છુટીએ. એ હાથ
 નેં ત્રીલુગ માથું એના ચરણમાં ધરીએ. જ્યારે પ્રભુ પાસે આપણે વંદન-પ્રણામ
 વિના બીલું કાંઈપણ કરવાની તાકાત ધરાવતા નથી, ત્યારે શ્રીમહાપ્રભુ પાસે આપણે
 શું ધરવાના હતા ? શ્રીમહાપ્રભુ તો શ્રીકૃષ્ણપ્રભુનાએ સર્વંદવ. ‘યથા દેવે તથા
 ગુરો’ ‘જેમ દેવ તેમ ગુરુ’ એ ઉપનિષદના મહાવાક્ય મુજબ, ગુરુદેવને પણ
 વંદનાજ કરવી રહી. આપણા શ્રીમહાપ્રભુ તે આપણા બ્રહ્મસંબંધકાતા ગુરુદેવ જ
 “પ્રત્યક્ષ પાવક પરહરી, પથ્થરમાં શિદ શિર ફેાડીએ ?” જે, શ્રીવલ્લભાગ્રિરૂપ
 ગુરુદેવતાં રોજ આપણને દર્શન યાચ, આપણે તેમનાં ચરણસ્પર્શનું મુખ જાનુભવીએ,
 તેમની સાથે વાતોલાપ કરવાનું સૌભાગ્ય આપણને મળે, આ બધું છોડીને હવામાં
 બાચકા શીદને ભરીએ ? આપણા એ પ્રત્યક્ષ ગુરુદેવનું સ્વરૂપ શું છે, એ શ્રીહરિ-
 રાયણ ‘શ્રીગુરુદેવાષ્ટક’માં સ્પષ્ટ કહે છે જેથી આપણે બહારથી મનુષ્યનાટ્ય
 કરી રહેતા શ્રીગુરુદેવનું આધિદેવિક સ્વરૂપ સંમળ શકીશું. શ્રીહરિરાયપ્રભુ
 આરાધ કરે છે કે:—

શ્રીગુરુદેવને અમે વંદન કરીએ છીએ. આપણા 'ગુરુદેવ પુષ્ટિમાર્ગનું સર્વસ્વ (તત્ત્વ) જાણે છે. પોતાના માર્ગની ખુબી પોતે ન જાણે તો ખીજું કોણ જાણે ? વળી આપણા પક્ષ એ સર્વસ છે. પ્રભુ સર્વસ ખરા, સર્વના હૃદયમાં બિરાજીને ખડું જાણી લે છે એ વાત પણ કબૂલ, પરંતુ પુષ્ટિમાર્ગમાં અંગીકાર જેમનો થયેલો છે, તેના સર્વસ પ્રભુ નહિ. ન્યારે જીવ પુષ્ટિમાર્ગીય થાય ત્યારે તેના હૃદયમાં પ્રભુને બંદલે શ્રીમહાપ્રભુ બિરાજે. એટલે આપણા પુષ્ટિમાર્ગીયોના સર્વસ 'તો શ્રીવલ્લભાધીશ્વર જ, શ્રીગુરુદેવ જ. વળી કરુણારસથી ભરેલા, જે કરુણારસ ન હોય તો આપણા હૃદયમાં બિરાજ જ ન શકે. આપણા જેવા દોષથી ભરેલા નિઃસાધનના હૃદયોમાં આવીને રહેવું એ જેવા તેવા દયાળુથી નજ અને ! શ્રીગુરુદેવ દયારસથી ભરેલા માટેજ તે આપણા હૃદયમાં સ્થિતિ કરે છે. 'કૃપારસ નયન કમલદલ કુલે.' પોતે શ્રેષ્ઠ છે. પુરુષોત્તમથી પણ જે ઉત્તમ હોય તે શ્રેષ્ઠ હોય જ એમાં આશ્ચર્ય શું ? શ્રેષ્ઠ છે, માટે શ્રેષ્ઠ-ઉત્તમ-શ્રદ્ધના ઢાંચા છે. જેને પોતાનો કરે છે અપનાવે છે તેને ગમે તે કાંઈ આપી દઈને ખુશ કરી દેતા નથી. ફળ આપવામાં વિલંબ અવશ્ય કરે છે. જીવને તાલી નાખે છે. પરંતુ ખીજા દેવોની પેઠે ઘોડામાં પતાવી દેતા નથી. પરંતુ ઘોડામાં પતાવે ચાલે એમ આ માર્ગમાં ન જ હોય. આ માર્ગના ટેકા ભરતો એમની ચાલાકીને તુરંતજ ઓળખી લે એવા હોય છે. એટલે એમને તો ઉત્તમ ફળ આપેજ છુટકો. માટે એવા ગુરુદેવને આપણે નમન કરીએ છીએ. ૧.

પ્રભુ જગતનો ઉદ્ધાર કરે, ન્યારે શ્રીગુરુદેવ દેવી જીવોનેજ ઉદ્ધાર કરે. અનેક પ્રકારના જીવોમાંથી નિજ અંગીકાર થયેલા જીવોને વીણી લે. એનો ઉદ્ધાર કરે. અનેક અધમ જીવોના સંગથી દેવી જીવો પણ પોતાનું સ્વરૂપ ભૂલીને અથડાયા કરતા. શ્રીવલ્લભાધીશ્વર એઓને ચેતાવ્યા. પુષ્ટિમાર્ગ જેવા એક મહાન રાજ-માર્ગને છોડીને ગલીગુચીઓમાં ભૂલા પડેલા એ જીવોને રાજમાર્ગના દર્શન કરાવ્યાં. ગણિતાનંદમાં સપડાયલાઓને અગણિતાનંદનું ભાન કરાવ્યું. કારણ કે પોતે આનંદમય દેહવાળા છે. શ્રીગુરુદેવનું મનુષ્યનાટ્ય જોઈને આપણે આપણા જેવા એક માણસ તરીકે તેમને સમજાવેસવાની મહાપ્રાંતિના ભોગ યદ્ય પડીએ છીએ. એઓ પોતે આનંદમય સ્વરૂપે રહે તો આપણી શક્તિ નથી કે આપણે એમને જોઈ શકીએ. આપણા પર કૃપા કરીને એઓ એક સુંદર મનુષ્યના આકારમાં આપણને દર્શન આપે છે. એથી પ્રાંત જીવો તો એમને મનુષ્યજ માને. જેઓ દેવી છે, તેઓજ એમને આનંદમયસ્વરૂપે અનુભવે છે. જેઓ પ્રત્યક્ષ ગુરુદેવને આનંદમય જાણે છે, એમના લૌકિક અનુકરણથી એમને લૌકિક નથી માનતા તેજ બઠસાગી છે, તેજ શ્રીમહાપ્રભુજીના સ્વરૂપને પ્રત્યક્ષ કરી ચૂક્યા છે. સાક્ષાત્ દર્શન આપી રહેલા ગુરુદેવને મનુષ્ય માનીને શ્રીમહાપ્રભુજીને ભજવાનો જે ઘાંટો પાડી રહ્યા છે, તે દંભી છે. તેઓથી શ્રીવલ્લભાધીશ્વર અતિદૂર છે. આપણા પ્રત્યક્ષ ગુરુદેવનું જે મનુષ્ય સ્વરૂપ દેખાય છે, તે આધિભૌતિક છે. એમનું આધિદેવિક સ્વરૂપ તો

આનંદમય છે, રસરૂપ છે. વળી ગુરુદેવ રસિક રહ્યા. એકલા રસિક નહિ, પણ રસિકના એકલા શિરોમણિ. રસિક તો પ્રભુ પણ ગણાય. મળબરતો કાંઈ ઓછાં રસિક નથી. એ સર્વના શિરોમણિ તો શ્રીગુરુદેવ જ. આ સ્વરૂપનું ધ્યાનજ યથા સહે. માટે હે સ્વામિન! હે નાથ! હે ગુરુદેવ! આ સ્વરૂપે તમે ધ્યાન કરવા યોગ્ય છે. એ સ્વરૂપનું ધ્યાન કરતાં નેત્રમાં પણ એ સ્વરૂપ ઝલકે. પછી હું આપના લૌકિક અનુકરણથી કદી નજા છેતરાઉં. આપના લૌકિક ભાગ્યતા દેહથી હું કદી જમમાં નજા પડું. ૨.

સેવામાર્ગ જેટલો સુગમ છે, તેટલો જ મુશ્કેલ છે. ગુરુકૃપા પાસે સુગમ છે, નહિતર મુશ્કેલીનો પાર નથી. સેવા કરતાં અનેક પ્રતિબંધો નહે. કેટલાક પ્રતિબંધો ઘરબારના રોજના લાગેલા હોય છે, તેજ વચ્ચે આવી ઉભા રહે છે. કેટલાક પ્રતિબંધો ભગવાન મોકલે છે. એ બધા પ્રતિબંધોને નસાડનાર શ્રીગુરુદેવ છે. એની કૃપા યતાંજ પ્રતિબંધોની બેડીઓ તડોતડ તૂટી જાય. પોતાના પ્રયત્નથી તૂટવાની આશા ફાગટ છે. પુષ્ટિ એટલે કૃપા. કૃપાનું જ્ઞાન કેમ થાય? જ્ઞાન તો જેને આપણે નજરે લેઈએ તેનું જ સારી પેઠે થાય. પુષ્ટિનું સ્વરૂપ એવું નથી કે એકદમ આપણને તેનાં દર્શન થાય. જો દર્શન ન થાય તો આપણે પુષ્ટિને માનીએ ખરા? શ્રીવલ્લભાધીશ્વર જાણે છે કે જો પુષ્ટિના સાક્ષાત્ દર્શન જો આ જીવોને નહિ થાય. તો તેઓ પુષ્ટિને માનશે કે ગણકારશે નહિ. જેમ પુષ્ટિના-અનુગ્રહના ભંડારરૂપ પ્રભુના સાક્ષાત્ દર્શન એમને કરાવ્યાં તેમ પુષ્ટિરૂપ જાનને પણ એમને ખતાવી દેવો લેઈએ. નહિતર એઓ ભારે હઠીલા હોવાથી દર્શનની હઠ લઈ બેસી જશે! માટે એમને પુષ્ટિનું જ્ઞાન થાય તેવો ઉપાય કરવો ઘટે. એમ વિચારીને આપશ્રીએ એક અલૌકિક દીવો પ્રકટાવ્યો. એ દીવાથી પુષ્ટિભક્તિમુંદરીની દિવ્ય ઝાંખી તુરતજ યથા. પુષ્ટિનું બધું સ્વરૂપ એ દીવાથી આપણે પ્રત્યક્ષ કરી શકીએ. એ દીવો તે તરવારદીપનિબંધરૂપ મહાઅંધની રચના કરીને આપશ્રીએ પુષ્ટિનું જ્ઞાન આપણને કરાવ્યું. એવા અલૌકિક દીવાની જળહળતી જ્યોતિથી જો આપણે પુષ્ટિમાર્ગનું સ્વરૂપ ન સમજીએ તો પછી આપણાં નશીબ કેટલાંજ સમજવાં. એ નિબંધરૂપ મહાન અંધમાં વળી આપશ્રીએ બધા સિદ્ધાંતો કહ્યા. એકલી પુષ્ટિની જ વાત નહિ, પરંતુ બીજા માર્ગની પણ વાત સમજાવી એટલે આપણને બીજા માર્ગ સાથે આપણા માર્ગને મુકાબલો કરવાનો અનાયાસે લાલ મળી ગયો. બીજા માર્ગ સાથે આપણા માર્ગની તુલના કરીને આપણે પોતાના માર્ગની ઉત્તમતાનો નિશ્ચય કરીએ અને આપણા માર્ગમાં અચલ થઈને રહીએ. આવી કૃપા જો શ્રીમહાપ્રભુએ ન કરી હોત તો આપણો કાંઈ આરો ન હતો. વળી આપણે ગરીબ રહ્યા, અને ગરીબાર્થમાં માણસ સારાં નરસાનો વિવેક ભૂલી જાય. રૂબરૂ માણસ તણખલાને પકડે એવી દશા આપણા જેવા દીનની. બને. આપણી એવી દુઃખ ભરી રિયતિ શું શ્રીમહાપ્રભુ સહી શકે? એઓશ્રી કરુણાની ખાણ એટલે દીનનું દુઃખ કદી ન સહે. બધું

સહન કરવાની શક્તિ ધરાવે; છતાં પોતાના જનનું દુઃખ ઘડીએ સહન ન કરી શકે. પોતે પ્રભુ છે, સર્વ શક્તિમાન છે, છતાં ભક્તનું દુઃખ સહી લેવાની શક્તિ એમનામાં નથી. ૩.

પ્રતિબંધો આવી પડવાનું કારણ દોષ છે. જીવના અનેક દોષ હોય. સ્વભાવંથીજ તે દોષે ભરેલો, એટલે પ્રતિબંધો તેને સત્તાવે. એ પ્રતિબંધોને દૂર કરીને જ પ્રભુ એકી ન રહે, પરંતુ એ પ્રતિબંધો પાછા કોઈવાર પોતાનું જોર ન જમાવે તે માટે જીવના બધા દોષોનો પોતે નાશ કરે. જીવ નિર્દોષ બની જાય એવી રીતે જીવને નિર્દોષ બનાવીને સુખનું દાન કરે. તે સુખ સર્વથી પેલેપાર રહેતું છે. સર્વથી પર સુખરૂપ તો પ્રભુ જ હોય, જીવને બ્રહ્મસંબંધે કરાવીને એ સુખરૂપ પ્રભુનું દાન કરે; જીવના બધા દોષો બ્રહ્મસંબંધથી જડમૂળથી ઉપડી જાય, ને નાશ પામે એટલે એના માથે પ્રભુને આપશ્રી પધરાવી દે. નહિ દઈ શકાય તેવું દાન કરવાનું સામર્થ્ય શ્રીગુરુદેવ વિના બીજા કોનામાં હોય? પછી એ જીવની બુદ્ધિના પ્રેરક આપ બને. કારણ કે જીવ તો જીવ કયો. કોઈ વાર તેની બુદ્ધિ ખગડે, દાનત શ્રદ્ધ યાય, એટલા માટે એનો અંગીકાર કરી લીધા પછી તેની બુદ્ધિના પ્રેરક પોતે જ બની જાય. આપણું શરીર એક રથ છે. એ રથના ઘોડા બધી ઇંદ્રિયો છે. એ ઘોડાની લગાગ રૂપ મન છે. મારણનો વેશ બુદ્ધિ ભજવી રહી છે. એ રથમાં સહેલાણી તરીકે જીવ મોજ માણી રહ્યો છે. એ જીવને જ્યારે શ્રીમહાપ્રભુજીએ પોતાનો કયો એટલે એ જીવની બધી સત્તા પોતે લઈ લીધી! એનો બુદ્ધિરૂપી સારથિ પરજ હુકમ ચલાવતો હતો, તે ખુશ્ખી લીધો અને તેના બુદ્ધિના પ્રેરક પોતે બન્યા. પોતે ભાવાત્મક સ્વરૂપે દૃઢ્યમાં બિરાજ્યા. એવા દયાળુ પ્રભુને હું નમન કરું છું. કોઈના રથ પર ચઢી બેસીને સારથિ પર પોતાની જબરદસ્તીથી બેહુકમી જે ચલાવે તેને આપણે પ્રણામ વિના બીજું શું કરીએ? ૪.

ચક્રોર અને હુશીયાર શિખ્યાના ગુરુ બનવાને ઘણાં નીકળી આવે, પરંતુ મારા જેવા એકઠેએક ન જાણનારનો કોણ હાથ પકડે? મને તો એટલું જ જાણ નથી કે હું કોણ છું? હું પુણ્યવાન છું કે પાપી? હું ગરીબ છું કે તાલેવાન? હું નિર્દોષ છું કે દોષથી ભરેલો? આમાંનું હું કંઈ જાણતો નથી. મારા સ્વરૂપનાં જ્ઞાનમાં મોટું ૦ મીડું છે. પરંતુ આપની દયાનો પાર નથી. એવાના પશુ બધા પાપો હરી લેા છે. જ્યાં સુધી પાપ હોય ત્યાં સુધી મારું સ્વરૂપ કેમ સમજું? સહુથી પહેલાં મારું પોત હું પારખી શકું તેને માટે પહેલીજ વાર દર્શન દઈને મારાં બધાં પાપો આપ હરી લેા છે. પાપ જતાંને વાર જ હું મારું સ્વરૂપ સમજી શકું છું. દરેક કાર્ય કરવામાં આપ સમર્થ છે. એટલે મારાં બધાં પાપો હરી લેવા એ તો આપને એક નજીવી વાત થઈ એથીજ મેં આપને મારા નામ બનાવ્યા છે! માટે હું આપને મારા નામ માનીને નમન કરી રહ્યો છું. ૫.

હું જાણું છું કે આપ રસમય છે. આપનો સુખ્ય રસ વિપ્રયોગ રસ છે. એ રસમાં જ આપ છક્યાં રહો છો. છતાં અમારાં હૃદયોને દૂર કરો છો. નિજ

જનનાં હુઃખ દૂર કરવાં એ પણ આપનો એક વિલાસ છે. રસમાં જે મગ હોય તે કંઈ વિલાસો કર્યા કરે. અમારી વ્યથાને દૂર કરીને જ આપ અટકતા નથી, ને એટલેથી અટકે પાલવે તેમ પણ ન જ હોય. અમે આપની પાસે નકરાં હુઃખ દૂર કરાવાજ નથી આવતા, પરંતુ આપની પાસેથી કંઈ ખીલું જ લેવા આવીએ છીએ. એટલે આપને તો આપેજ છુટકો. એવા ખીલો કોણ કયાણ હોય કે જે પોતાનું જાધું દાન કરી દે. માટે તો આપને શરણે પડ્યા છીએ, આપજ સર્વદાન કરી શકો. તેમાંએ વળી વિલક્ષણતા ખરી જ. જેવા અધિકારીઓ તેલું તેને દાન કરો, તેમજ આપ સર્વાંગે સુંદર છો. ‘સર્વ અંગોઅંગ રસભર્યા, રસભર્યા લોચન ચાર.’ આપનાં અંગોઅંગની સુંદરતા શે વર્ણવી જાય? એટલુંજ કહી શકાય કે આપ ‘સુંદરતાની સીમા છો,’ રતિનો નાથ કામદેવ પણ આપનાં સ્વરૂપને જોઈને ધરણીપર ઢળે, ‘તેમાં કામ જેવા ફૂટડા વહેવાય છે હો જીરે.’ આવી ખુબસુરતીથી અમારો આપનામાં નિરોધ થયો છે. નહિ તો ખુબસુરતીનાં તરશ્યા અમારાં નેત્રો કોણ જાણે કયાં જઈને ચોટે? ‘આનંદસ્વપ્ન અનુપમ સુંદર, પામે નહિ કોઈ પાર.’ ‘નખ શિખ સુંદર મજજન જીવન પ્રાણ.’ આવી મહાનુભાવ ભગવદીયોની વાણીજ આપનાં સ્વસ્વપ્નનાં માધુર્યનો પરિચય આપી શકે. ૬.

આપને લક્ષિત ઘણીજ વડાલી લાગે છે. દીન સેવક પાસેથી ખીજી કંઈ નહિ પણ લક્ષિતની તો આપ આશા રાખો જ. લક્ષિત એટલે સ્નેહ, સ્નેહ પણ એક પ્રકારનો રસ જ છે. રસરૂપ આપ સ્નેહરસને પ્રિય ગણો એમાં શું આશ્ચર્ય! આપના આવાં સ્વરૂપની ગમ માત્ર ભાવથી જ થાય. જે ભાવ હોય તો જ આપને અમે ખરા સ્વરૂપે જોઈ શકીએ, નહિતર આપના ગહારના દેખાવથી તો ભ્રમણામા પડી જઈએ. આપનું આતું સુંદર સ્વરૂપ પણ ભાવથી જ જોઈ શકાય. આપ રસરૂપ છો, રસના જ્ઞાતા છો, રસનું દાન પણ કરો છો. રસનું જ્ઞાન તો ઘણાને હોય, પણ તેનું દાન તો આપ વિના ખીલ કોઈથી થઈ શકે તેમ નથી. આપ જ્યારે રસનું દાન કરો ત્યારે આપનું સ્વરૂપ અમને જોર જ લાગે છે. આપ અતિમધુરતાના સમૂહ લાગો છો, ગંધી અલૌકિક મધુરતા જાણે આપના જ અંગો અંગમાં ન ભરી હોય. ‘અધરં મધુરં’ નું સ્વરૂપ અમે આપમાં જ અનુભવીએ છીએ. આપના અતિમાધુર્યથી અમને રવાને પણ તુરિત થતી નથી, પરંતુ આપનું આ સ્વરૂપ દુર્લભ છે, માત્ર ભાવથી જ તે જાણી શકાય છે. આપ પોતે દુર્લભ છો. પરંતુ આપ ભાવનું દાન કરીને, ભાવને જમાવી, આપનું જ સ્વરૂપ અમને પ્રકટ રીતે દેખાડો છો. ૭

અમારો આપે અંગીકાર કર્યો. અમારો હાથ આલ્યો. અમે આપને અમારા સ્વામી માન્યા. હવે જે અમે મન વાણી અને કર્મથી આપની લેશ પણ સેવા ચુકીએ તો અમારી અનન્યતાનો ભંગ થાય. એટલા માટે જ આપ અમારામાં અનન્યધર્મ સ્થાપો છો. અમને અનન્યધર્મનું દાન કરો છો. અમને વ્યભિચારથી અટકાવો છો. અમારામાં રહેલી ગંધે ભટકવાની વલણને આપ દૂર હટાવો છો. આપના જેવા સ્વામી મળ્યા, તોએ અમારી વૃત્તિ ખીજે ભટકે તો તેની લાજ આપને જ હોય.

જીવો કેવો ધણી કે જેની સ્ત્રી ખીલ તરફ સ્વપ્ને પણ જાંખે? આપનું ધણીપણું ઠાઘ વિનાનું રાખવા માટે આપને અમારામાં અનન્યધર્મ સ્થાપ્યા સિવાય છુટકો જ નથી. ખાકી અમે તો કેવા છીએ તે આપ જાણો છો જ. આપ અમને જાણો ને કાંઈક અમે આપને જોળખીએ છીએ. શરણે આવેલાનું પણ આપ રક્ષણ કરો છો. ન કરો તો આપનું ખીરદ બચ. શરણે આવેલા પણ કાલ વગેરેના ભયથી કેવે તો પછી આપ કેટલે પ્રહાંડના નાયક શાના? શરણે આવેલાના દરેક ભયનો આપને નાશ કરવો જ પડે. વળી ભય ટાળ્યાથી જ કાંઈ આપનો છુટકો થવાનો નથી. આપને તો તેથીએ વધારે દાન કરવાનું છે. શ્રીવિઠ્ઠલાધીશ્વરની પ્રાપ્તિ પણ આપે જ કરાવવી રહી. શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરપ્રભુની પ્રાપ્તિ આપ કરાવો. આપ શ્રીવિઠ્ઠલનાયકની ઝાંખી કરાવો. મને નિજદાસ જણીને મારા આધારરૂપ ધાવ્યો. નિજદાસનો, મોઢારાનો આધાર આપ વિના ખીજે કેણું હોય? શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વર પ્રભુ પાસે ત્યારે આપ પધારો ત્યારે મારે ખરે હાથ મૂકીને પધારો. ૮

એ રીતે પોતાના ગુરુદેવ શ્રીગોકુલનાથજીનાં નમનરૂપ ગ્રંથ શ્રીહરિરાયજીએ કયો છે. આ ઉપરથી સર્વેએ પોતાના ગુરુદેવને શ્રીમહાપ્રભુજીરૂપ માનવાના નિશાનાથી કદી ચાતરવું નહિ. આજકાલના ખીલ ગુચ્છ જીવની વાણીથી કદી ભરમાવું નહિ ! ભમરાળી વાણીમાં પડીએ તો આપણે પણ કુદૃષ્ટિ કયાંજ કરીએ. એ ‘કુધલી’ હોડીને આપણે તો આવી વચનસુધાનું જ પાન કરીએ.



प्रभात



(सचिन्त्र मासिकपत्र)

इसका—

मथमांक “मतापांक” के नाम से निकल कर

ਦਸਮੇ—

अष्टमि स्वतन्त्रता के पूजारी प्रातःस्मरणीय हिन्दू-सूर्य महाराणा प्रताप-सम्बन्धी लेख, कविताएँ प्रकाशित होंगी और महाराणा के अप्रकाशित इतिहास पर विशेष प्रकाश डाला जायेगा।

सुतः—

साहित्यज्ञो से निवेदन है कि वे अपने लेख, कविताएं आदि भेजकर इसमें हाथ बटाएँ।

सर्व सज्जनों से सूचना हेके-

आजही अपना नाम ग्राहक श्रेणी में लिखवाइये !!!

घार्पिक मूल्य ३), उमाही २), एक अङ्क के १०), इस अङ्क का ११).

प्राइको को यह मदद भी मुफ्त मिलेगा।

पत्र व्यवहार का पता—

भयर्क्षय—

मेनेजर "प्रभात" आफिस

ज्यवरथापक "मभात"

नाथद्वारा [मेवाड]

नाथद्वारा.

પ્રભુભક્તિ અને અન્ત્યજો.

પ્રભુભક્તિ અને અન્ત્યજો.

[સાહિત્યસુધાકર ગોસ્વામી શ્રી ૬ શ્રીમદ્ભગવાદગીતાના મહોદયે પાદરામાં આપણું યાદગાર હૃદયસ્પર્શિ વ્યાખ્યાન].

સરસ્વાતમાં મંત્રગાયરણ બાદ આપણીએ કહ્યું કે-ગઈ કાને જે બ્રાહ્મણકુળમાં જન્મ પામી શ્રીકૃષ્ણભક્તિ ન કરે તે કરતાં અપયકુળમાં જન્મ પામી શ્રીકૃષ્ણભક્તિ કરે છે તે ઘણે દરજ્જે ઔચ છે. એ ભક્તિહીન બ્રાહ્મણ કરતાં ભક્તિવાળો યાંડળ શ્રેષ્ઠ છે એમ કહેવું. તેથી યાંડળને ભક્તિ કરવાનો અધિકાર છે પણ તેને સ્પર્શ કરવાનો અધિકાર નથી. તે અસ્પૃશ્ય છે, તે શાસ્ત્ર-સંમત છે ને તેને સ્પર્શ કરવાની પ્રમા અમારા સંપ્રદાયમાં નથી. વેદની એક પણ પક્તિ અમારા સંપ્રદાયમાં અપ્રાપ્ય નથી. તેમજ શ્રીમદ્ભગવદ્ગીતાજી તથા વ્યાસજીનાં મુત્રા ને સમાધિઆપ પણ પ્રાપ્ય છે. શાસ્ત્રોક્ત જે ચાર વર્ણોના જુદા જુદા ધર્મો છે તે દરેક વર્ણોએ પોતપોતાના વર્ણના ધર્મોમાં પ્રવૃત્ત રહેવું ને શ્રીકૃષ્ણની ભક્તિ કરવી, જેથી ભવરૂપી સમુદ્ર તરી પાર ઉતરી શકાય. અગાઉના જે જે ભક્તો યથ ગયા છે તેમણે આપણા કલ્યાણને માટે ભક્તિનૌકા કમિયુગમાં જીવેને તરીપાર ઉતરવા માટે મૂકી ગયા છે. તેમાં ભેસીને ભક્તો તરી પાર ઉતરે છે. દયાગ્રામભાષ કહે છે કે:-

ભક્તિ નૌકા તારે સર્વને જે કોઈ સંરણે આવે શુચિ પાપી,

અન્ય સાધન દારુ તુંખિકા મહે સભય તરે કો કલાપિ.

તરે કદા ભવે કામાદિ પ્રાદયી સમર્થ નદિ અણુ તારવા શાપી ?

વિશુધ વિચારી જુઓ નિજ મન ભક્તિ ભલી કે સાધન અન્ય ?

શ્રીકૃષ્ણપ્રભુને સરણે જે કોઈ પુણ્યશાળી જીવ કે પાપી જીવ આવે છે તે ભક્તિનૌકાવડે સંસારસમુદ્ર તરી પાર ઉતરે છે. પણ અન્ય સાધન જેમ લોકું અને તુંખડાની મદદથી તરી શકાય છે, પણ તેમાં યુગવાનો ભય ખરોજ. પરંતુ ભક્તિમાં તે નથી. ભક્તિ કરવામાં કામ ક્રોધ વગેરે પ્રાદનો ભય નથી. લોકડાં કે તુંખડાથી તરતી વખતે મગર પકડી લે તેમ ખીજાં સાધન કરવામાં નરે, કામ ક્રોધ વગેરે ભક્તિમાં ન નરે.

આપારે અંદરોઅંદર ઘણા કુસંધો છે કે આજે આપણી સમક્ષ અંત્યજસ્પર્શસ્પર્શનો પ્રશ્ન ઉભો થયો છે. શાસ્ત્રોમાં તપાસતાં કોઈ રચણે આવેા ઉદ્દેશ્ય નથી કે અંત્યજનો સ્પર્શ કરવો, એ અંત્યજને અસ્પૃશ્ય છે ને તે અસ્પૃશ્ય જ રહેવાના.

ભગવાન શ્રીગીતાજીમાં કહે છે કે-મેં ચાર વર્ણોને ઉત્પન્ન કર્યા છે તે દરેક પોતપોતાના ધર્મ પ્રમાણે ચાલવું, ને તેથીજ તેમનું કલ્યાણ છે. એમ અનેક ગીતાવાચોથી સિદ્ધ થાય છે, જાતિની ઉત્પત્તિ કમથી છે કે જાતિથી ? તે તપાસતાં જન્મથી જાતિ છે એમ સાબીત થાય છે. મનુષ્યોએ પોતપોતાનાં કર્યો કરવાં જોઈએ. અસ્પૃશ્યહિનો માણસ શાસ્ત્રવાચ્યોનો નિરોધ કરે તો તે રોપિત થાય છે. ધર્મશાસ્ત્રો ને પુરાણો અંત્યજને અસ્પૃશ્યો ગણે છે.

આપારે જે અંત્યજોદારનું આંદોલન ચાલી રહ્યું છે તે અપ્રમાણ છે. વગી અંત્યજનેના મંદિરપ્રવેશનો પ્રશ્ન પણ ચાલી રહ્યો છે, પણ તેજ અંત્યજને મંદિરપ્રવેશ માટે આગ્રહ કરનાજ નથી; ને તેઓ ખુશી નથી. તેમને તો ફક્ત રોટલાનીજ જરૂર છે. માટે ધર્મને આગળ મૂકી સભજને કામ કરીશું તો સર્વ પ્રાપ્ત થશે. શાસ્ત્રો-શ્રુતિઓ કહે છે કે આત્મા જલજુરા જેવો ને અનુભવવા જેવો છે આપણું કર્તવ્ય ધર્મપરાયણ બનીને શ્રીકૃષ્ણની ભક્તિ કરવામાંજ સમાવડું

છે, તેથી આપણું અવશ્ય કલ્યાણ છે. દયારામભાઈના કથન પ્રમાણે જે શ્રીકૃષ્ણના પ્રેમરસનું પાન કરાવે તો તેથી જીવનું કલ્યાણજ ચાલે છે.

અત્યંતજેનો મંદિરપ્રવેશ અગર સ્પર્શ મારેનો પ્રશ્નજ અથોચ્છ છે, પણ તેને ભક્તિનો અધિકાર છે. દરેક વર્ણને ભક્તિનો અધિકાર છે. આ પુષ્ટિમાર્ગ પવિત્ર છે ને તેમાં દરેકને વર્ણ-વેશી ભક્તિ કરવાનો અધિકાર છે તથા જેને શાસ્ત્રોએ અસ્પૃશ્ય ગણ્યા છે તેને અત્યંતજેને પણ ભક્તિનો અધિકાર છે. અત્યંતજેને મંદિરપ્રવેશનો અધિકાર હોઈ ન શકે, જેમ રસમાન, અલીપાન પદાણુ, શ્રીમતીતાજ, મોહનાભંગી વગેરે અસ્પૃશ્ય ભક્તો શ્રીકૃષ્ણની એનન્દ્ય ભક્તિથી તરી ગયા છે. તેમને પ્રજુની ભક્તિથી, અનુગ્રહથી સાનુભાવ હતો. ભક્તિના પ્રભાવથી સેવા કરતા પણ તેમને બ્રહ્મસંબંધ આત્મનિવેદન મંત્ર અપાયો નથી. કૌટુંબિક જીવનો પૂર્ણ પુરોહિતમ સાથે સંબંધ થવો તે બ્રહ્મસંબંધ છે, ને તે ચાલ ત્યારે તેના અનેક પ્રકારનાં પાપો દૂર થઈ શ્રીકૃષ્ણના ચરણારવિંદમાં તે પોતાનું સર્વથ અર્પણ કરે છે તે વખતે દાઢમાં રહેલાં ગુણસીદ્ધો શ્રીકૃષ્ણના ચરણારવિંદમાં અર્પણ કરી કંઈકર ચાલ છે તેથી જે વર્ણો મંદિરપ્રવેશ કરી શકે છે તેનેજ આત્મનિવેદન મળી શકે છે, તે સિવાય કાંઈ પણ અસ્પૃશ્ય વર્ણને અધિકાર નથી. મોટા આદો-દનોથી કંઈ પણ વળવાનું નથી, પણ એટલુંજ કહીશ કે અસ્પૃશ્ય હિંદુઓ છે તે ગુણસી ગાયોને પૂજે છે, તેને મારે કુવા નિશાળો મંદિર. વગેરે સાધનોની વ્યવસ્થા ઉચ્ચ વર્ણના હિંદુ લોકોએ કરી આપવી જોઈએ, અને તેમના ઉપર હમેશાં બ્રાહ્મણથી વર્તવું જોઈએ, ને તેના ઉદ્ધારને અર્થે પ્રમાસ કરવો જોઈએ.

વળી અત્યંતજેને શરણુદીક્ષા શ્રીકૃષ્ણ: શરણું મમ આપવામાં આવે છે ને તે અષ્ટાક્ષરમંત્ર સર્વ મંત્રોનો રાજ છે કેષ છે, અન્ય મંત્રોના ઉચ્ચારમાં જે હોય ચાલ તો ફળ મળતું નથી, ને કદાચ ઉચ્ચાર શુદ્ધ હોય તો મળે છે તો તે સ્વર્ગને પામી તે ભોગવતાં પૃથ્વી ઉપર નીચે અવતરવું પડે છે, શ્રીકૃષ્ણ: શરણું મમના ઉચ્ચારથી કદ્ય તેમાં દાઢ ચાલ તો પણ ફળ જીવેને નિજપદનું મળે છે. છતાં શ્રીકૃષ્ણ: શરણું મમનો ઉચ્ચાર બિંદુપુકૃતિવ્રત, ને ગુણસીની માગ્ય કંઈમાં હોય ને અષ્ટાક્ષરનો ઉચ્ચાર ચાલ તો અનેક પ્રકારનાં દુષ્ટો હાજર હોય તો પણ તેનો તત્કાળ નાશ ચાલ છે ને પૂર્ણ ચાન્તિ ચાલ છે, ને મોક્ષ ચાલ છે. ભક્તોની જેવી ભાવના-તેવા સ્વરૂપે શ્રીકૃષ્ણનાં દર્શન ચાલ છે ને કલ્યાણ ચાલ છેજ. (તાળાઓ).

ભગવાન આગ્રા કરે છે કે મારાં નામે અનેક પ્રકારનાં છે તેમાં શ્રીકૃષ્ણનું નામ શ્રેષ્ઠ છે, ને તે નામ યકી સમગ્ર પાપોનો નાશ ચાલ છે. બ્રહ્મપુરાણમાં શ્રીકૃષ્ણનું વાચ્ય છે જે માફ જે અક્ષરનું શ્રીકૃષ્ણ નામ છે, તે તું ગ્રહણ કર ને તેના ઉચ્ચારથી સર્વથા મનુષ્યજન્મનું કલ્યાણ સંભાલ છે. જેનું હૃદય શ્રીકૃષ્ણ: શરણું મમના ઉચ્ચારથી પવિત્ર થયું નથી, જેનું હૃદય શ્રીકૃષ્ણની ભક્તિ કયાના રસારવાદમાં મગ્ન નથી અથવાં શ્રીભાવકૃષ્ણની ભક્તિનું રયાન નથી તેનું જીવન નિષ્ફળ છે. શ્રીકૃષ્ણના ચરણારવિંદમાં તમામ ઇન્દ્રિયોનો રોધ કરી ભક્તિમાં લગાડી ચિત્ત સર્વથા શ્રીકૃષ્ણમાં ચોટાડી રાખવુંજ જોઈએ તેથીજ જીવનું સર્વથા કલ્યાણ છે. એ સિવાય બીજો માર્ગ નથી. શ્રીમદ્વલ્લભાચાર્યજીએ ભક્તિમાર્ગ નવો પ્રકટાવ્યો નથી પણ શાસ્ત્રોમાં જે ગ્રંથ હતો તે દેવી જીવોના ઉદ્ધારને અર્થેજ પ્રકટ કર્યો છે. ત્યારે ત્યારે ભારતમાં અધર્મ ચાલ છે ને સાધુ પુરુષો ગાયો વગેરે દુષ્ટથી પીડાય છે, ત્યારે ત્યારે તે સાધુપુરુષોનું રક્ષણ કરવા ધર્મ રચાવવા દુ યુગે યુગે અવતાર ધારણ કરે છે. તેજ પ્રમાણે શ્રીમદ્વલ્લભાચાર્યજીનો પ્રાદુર્ભાવ અપારવર્ષમાં થયો હતો. જે તેઓશ્રીનું આ જૂતગ ઉપર પ્રાકટ્ય ન હોત તો આ ભારતવર્ષમાં ધર્મનું તથા હિંદુ-ઓનું નામનિશાન નહોત.

દેવે શ્રીકૃષ્ણના ચરણારવિન્દમાં જીવને અવસરજોયે યદ્યપિ આત્મસમર્પણ કયાં પડીને વખતને અવસરજોયેનો પ્રવર્તનો ઉચ્ચાર તથા ભાવર્થ જીવને સમજાવવામાં આવેલો તે હૃદયારૂઢ શાખી મનન કરવાથીજ સર્વથા કલ્યાણ છે, અને અવસરજોયે યદ્યપિ પાંચ પ્રકારના દેવ વળા રહે છે. ત્યાર બાદ અસમર્પિત વસ્તુનો ત્યાજ અનન્યભાવ અવસરજોયે ને આત્મસમર્પણ વગેરે આવેલો ને સતત સમજાવમાં શાખીયું તો અવસર આપણું કલ્યાણ છે, એથી વિરલ વર્તનારને નાટે તો સર્વથા અકલ્યાણ છે.

અત્યારે અંગ્રેજી શિક્ષણથી નાસ્તિકવાદ પ્રસરી ગયો છે તે માટે બાળકોને ધાર્મિક શિક્ષણ આપવાની ખાસ જરૂર છે, અને માળાપોએ ધાર્મિક શિક્ષણથી કેળવણી પ્રાપ્ત કરી ચૂકીને અંદર બાળકોને ધાર્મિક શિક્ષણ આપવું જોઈએ. જેથી ભવિષ્યમાં થનારી પ્રજાને તે મરેકાર કેળવણી પ્રાપ્ત થઈ ધર્મભાવના જાગૃત રહે અને તે જુસ્સાઈ ન જાય માટે ધાર્મિક પાઠશાળા દેવી જોઈએ. જેમ દાસમાં અમરાવાદ, સૂરત, દાદોદ વગેરે રચે છે. વળી ધાર્મિક પરીશાઓની પણ પ્રથા છે તે જાણ રહેવી જોઈએ, અને તેનો લાભ બહોળા પ્રેમાળુમાં લેવો જોઈએ, ને તે રચેલે ગયે થવાની ખાસ જરૂર છે. વાસ્તવિક સમાજો કાદરા પૂર્ણ જ્ઞાનની જરૂર છે. જ્ઞાનના પ્રકારમાં બહોળો સદાકાર ટકતો નથી. એથી કેટલાક સમાજો દૂર થશે ને સાંપ્રદાયિક ધાર્મિક જીવનથી બધા કૃતાર્થતાને પણ પગશે. અમે ગોરખમીઓ શાસ્ત્રીઓ શાસ્ત્રને ધાર્મિક શિક્ષણ આપાવીએ પણ તેનું કૃષ જોઈએ તેનું પ્રાપ્ત થયું નથી, પણ જે અમે ગોરખામીઓ તેનું કાર્ય કરી ઉપદેશ આપી કર્તવ્યપરાયણ રહ્યા હોઈએ તો અત્યારની જે આ સંપ્રદાયની સ્થિતિ છે તે ઉદ્દિગોચર ન થાત, પણ ગયેલી વાતનો શોક વ્યર્થ છે, તેથી અર્થ વસ્તુને શોક ન કરતાં દેવે ધર્મભાવનાથી જાગૃત રહી ભાગ્યભાવના એક સૂત્રમાં પગેવાઈ જઈ અજ્ઞાન દૂર કરવા સુદિવારો પેાવરા શ્રીકૃષ્ણમહિમનો પ્રચાર કરવા તૈયાર રહેવાની ખાસ જરૂર છે. દયારામ બાબા ભક્તિપોષણમાં કહે છે કે:-

પ્રેમ આસ્થિત વ્યસન એ ત્રય રોદનાં લાડીએ,
તે ઉપર મોથી તનખના તે યદી કોઈ ના કહીયે;
કહીએ પ્રેમનું લાશળ એક જ્યારે મને ત્યારે તેનો તે જોઈ,
વિયોગ થાય ત્યારે તપે તન ત્યાંહાનું ત્યાંહાં વજાનું રહે મન.

પ્રેમ આસ્થિત વ્યસન ને તનખના એ રોદનાં કહે છે. પ્રેમનું લાશળ એ છે કે પ્રેમ થતાં વળી જ્યારે ને વસ્તુ મને ત્યારે ત્યારે રોદ ચાલુ રહી જોઈ થાય છે ને ઉત્તરાય છે. ને જે વિયોગ થાય તો શરીર તપે છે, કુખી થાય છે, ને તેની પ્રાપ્તિ માટે તનખના થવા કરે છે. કંઈ કેમનું નથી શરીરના ધર્મો પણ સનાતી ચક્રતા નથી. તે વસ્તુ મજાનું અનંદ પ્રકરે છે ને અદર્શિત થિત તેમાં ને તેમાંજ જમણ કરે છે.

એકવાર આખા દિવસમાં મળ્યા વિના નવ રહેવાય,
તે ના મને તો વિષય થાય આસક્તિ એ તે કહેવાય,
કહેવાય વ્યસન આનું જ્યારે થાય સ્વાખા સ્વામી હરયો વિષય,
તનખવળા તે મત્યુસમાન આ ચારે આવે આપે દરિ રાન.

એકવાર આખા દિવસમાં મળ્યા વિના મેન પડતું નથી તે જો ન મળાય તે: જમરામણ થાય. પીઠા થમ એ આસ્થિનું સ્વરૂપ છે ને વસ્તુ વળતાં હૃદય વિષય ત્યારે વ્યસનવાદ પ્રકરે હાય છે ને તે ભાવના ચાલુ રહેતાં મત્યુસમાન જેવી સ્થિતિમાં રહેતા પછી તન વિષયી જાય

છે. ચિત્ત શ્રીકૃષ્ણના ચરણારવિદ્યમાં ઓટી નખ છે અન્ય દિશામાં તો નખજુ નહિ. એ પ્રમાણે તલ્લીનતા પ્રાપ્ત થતાં તેવી સ્થિતિ ચાલુ રહે છે ને તે શીદરિ દાન આપે તોજી જીવમાં ઉતરે છે.

નતિ તો લુઓ આદીરની તેમાં અગળા અધમ અવતાર,
એ વેદાદિ નહોતી ભણી ન્દોતો ઉત્તમ કર્મ અધિકાર,

અધિકાર વધુ એક પ્રતાપ કર્યા આધીન શ્રીકૃષ્ણજી આપ,
તે ગોપીની પદરજ વદે ધરા પ્રેમલક્ષણ તે સદ્ગુને શીય,

શ્રીગોપીજનોની નત આદીરની હતી અને વળી તેઓ અગળાઓ હતી. આદીરનો અધમ તરીકેનો અવતાર ગણે છે એ અગળાઓ વેદ વિગેરે કંઈ ભણી ન્દોતી. ઉત્તમ કર્મનો અધિકાર પણ નહોતો છતાં શ્રીકૃષ્ણજીને વરા કર્યા તે પ્રેમલક્ષણ, ભક્તિનો પ્રતાપ છે ને તે પ્રેમલક્ષણ સદ્ગુણી શ્રેષ્ઠ છે તે ગોપીજનોની ચરણની રમ્મને પણ શીદરિ વદે છે જેથી શ્રીકૃષ્ણ કૃપાળ છે તેને પ્રેમપૂર્વક સેવે.

કુવજીને ક્યાં વય હતું? સુદામાને હતું ક્યાં ધન?

કુમળને હતું રૂપ ક્યાંહાં? ઉગ્રસેન શું પુરુષાતન?

પુરુષાતન નહોતું ઉગ્રરાય જન્મે ક્યાંહાં હતી વિદ્યા,

પારધિમાં ક્યાંથી શુભ આચરણ કેવળ ભક્તિ પામ્યો ગિરિધરજી.

શ્રીકૃષ્ણની ભક્તિ કરવામાં વય-ધન-રૂપ-પુરુષાતન વિદ્યા શુભ આચરણ નેવાતું નથી. પ્રથમ કૃપાથી સર્વે ક્રમે ક્રમે પ્રાપ્ત થાય છે. ભક્તિ જીવમાં પ્રવેશી વૃદ્ધિ પામી વિતાળતાને પામી જીવન પ્રત્યુભય બની નખ છે. માટે હરેશાં આગ્રહપૂર્વક ભક્તિને સેવે. લુઓ કે કુવજીની વય નાનીજ હતી છતાં શીદરિની આરાધના કરી પ્રભુ પ્રસન્ન કર્યા. વળી સુદામાને ક્યાં ધન હતું? નિર્ધનજી હતા છતાં કૃષ્ણ ઉપર કેટલો બધો પ્રેમભાવ હતો કે તેમના સુદિ તાંડલ શ્રીકૃષ્ણએ આરાગી તેમને અટળક ધન આપી દીધું. છતાં જીવન પર્યંત સુદામાએ શ્રીકૃષ્ણની ભક્તિ કરી પણ એકલક્ષણ શ્રીકૃષ્ણને નિસાચો નથી. જો રૂપથીજ ભક્તિ થતી હોય તો કુમળને ક્યાંહાં રૂપ હતું? છતાં તેણે પ્રેમથી શ્રીકૃષ્ણ આરાધના કરી જેથી શ્રીકૃષ્ણ તેને આધીન થયા. જો પુરુષાતનથી પ્રભુ પ્રસન્ન થતા હોય તો ઉગ્રસેનને ગાદી ઉપરથી ઉઠાવી મૂકી કંસે રાગસત્તા હાથમાં લીધી. ઉગ્રસેનને કે ક્યાં બાદ કંસે ધણીજ અધર્મ કરવા માંડ્યો ઉગ્રસેન શ્રીકૃષ્ણભક્તિ વિસરતા નહોતો જેથી શ્રીકૃષ્ણજીએ ઉગ્રસેન ભક્તની આશુર ભક્તિથી વેગે આવીને કંસને મારીને રાગ્યાગિનેક ઉગ્રસેનને ક્યો એ શું ભક્તિનો પ્રભાવ ઓછો છે? વળી લુઓ વિદ્યા પ્રાપ્ત ક્યોથી શીદરિ દર્શન આપતા હોય તો લુઓ કે હાથીમાં વિદ્યા ક્યાં હતી? છતાં મગરથી મદેસા હાથીએ કુરૂખી યત્ન હરિમરણ ચાલુ રાખી અંતિમ સ્થિતિમાં કમળ શ્રીકૃષ્ણને અર્પણ કર્યું તે શુદ્ધ ભાવનું હોવાથી શ્રીકૃષ્ણ ગરુડ ઉપર સ્વારી કરી. ત્યાં પધારી તેનો ઉદ્ધાર કર્યો. વળી આચરણથી જો પ્રભુ પ્રાપ્તિ થતી હોય તો પારધી વાસ્ત્વિક વગેરેમાં કંઈ શુભ આચરણ ન હોતું, છતાં પ્રભુએ કૃપા કરીને ભક્તિથી પ્રસન્ન થઈ અભયપદ આપ્યું. પ્રભુ ભાવના શુભ્યા છે. શ્રીકૃષ્ણ ભક્તિથીજ પ્રસન્ન થાય છે પ્રાણી માત્રનો ઉદ્ધાર ભક્તિથીજ છે. આપણે જીવન સાત્ત્વિક રીતે ગાળીશું તો અચર્ય આપણે ઉદ્ધાર થઈજ. ભારતવર્ષનો ઉદ્ધાર કરવા અને તેની પરવંચતા નષ્ટ કરવાને જો આપણે આપણા આદર્શ આદેશો પાળીશું તો શ્રીકૃષ્ણ અચર્ય આપણને વિજય અપાવશે તેમાં સંદેહ નથી. પ્રભુની ભક્તિ તો પ્રાણી માત્રનો ઉદ્ધારી રહે છે. પ્રભુ સ્વયં આગા કરે છે કે મારામાં નિશાપૂર્વકની ભક્તિ એજ અત્યંતને ઉદ્ધારે છે.

મયજી

લિ. કુલચંદ ગોવર્ધનદાસ શાહ, (મંત્રી-શ્રીપુષ્ટિમાર્ગીય પુસ્તકાલય, પાદરા.)

શુદ્ધાદેવ-ભક્તિમાર્તંડ.

લેખક:—શ્રીયુત વિનાદરાય જેમુખરાય, બી. એ. એફ.એફ. બી. અમરેલી.)

(અનુસંધાન પૃષ્ઠ ૬૦ થી.)

રસિક બિન કો રસપાન કરે ?

નન્દનન્દન વૃષભાનનન્દિની લીલાઝરન ઝરે—રસિકબિન ૥૧૥

હાય રહ્યો જમીસો જગમદિયાં, પુષ્ટિ પ્રવાહ ધરે,

પ્રેમાજન પીવત નિસવાસર કમઠ કણુ ઝરે—રસિકબિન ૥૨૥

શ્રીવલ્લભ કરુણા સ્વસંગત, ઉભય ઉપાય ઝરે,

શ્રીકૃષ્ણસ અન્ય સાધનતે, કાજ કણુ ન સરે—રસિકબિન ૥૩૥

ગયા એકના પૃષ્ઠ પદ ના અંત ભાગમાં “ભક્તિયોગ એવ પ્રશસ્યતે” એટલું સંસ્કૃત જાપા પછી અર્ધ-તરીકે જે વાંચ્યો. પૃષ્ઠ ૬૦ ઉપર એકથી દસ લીટી સુધી જાપેલાં છે તે વાંચ્યો “મારા પોતાના વિચારો” હોય તેવો ભાસ થાય છે પણ તેમ મનજવાનું નથી. મૂળમાંજ “ભક્તિયોગો-નિરુપદ્રવ” થી શરૂ કરી “ભક્તવત્સલઃ સ્વયમેવ સર્વેભ્યો” વગેરે અવાન્તર શાખો ખતાવીને અતે ભગવતી શ્રુતિ આગ્રા કરે છે કે “તત્માત્મમપિ સર્વોપાયાન્ પરિત્યજ્ય ભક્તિમાશ્રય ભક્તિનિષ્ઠો ભવ ભક્ત્યા સર્વસિદ્ધયઃ સિધ્ધન્તિ ભક્ત્યાડસાધ્ય” ન કિંચિદસ્તિ” એ પ્રેમાણે શ્રુતિ અનુસારે શ્રીમદ્ભગવદ્ગીતાજીમાં પણ શ્રીમુખની આગ્રા છે કે:—

૧ સર્વધર્માન્પરિત્યજ્ય મામેકં શરણં મ્મજ ૨ ન મે ભક્તઃ પ્રણયતિ ૩ મત્તવા ત્ય-
નન્યયા શક્તયા ૪ નાદં વેદેર્ન તપસા ન દાનેન ન ચેજ્યયા ૫ મન્મના મવ મદ્ગુકો”
છત્પાદિ અને આપણા સંપ્રદાયમાં તો શ્રીમદ્ભગવદ્ગીતાજીમાંનાં શ્રીમુખનાં વાક્યો એટલે કે “ધીર્મગવાક્યાનિ” સાક્ષાત્ વેદવાણીજ છે. કારણ કે શ્રુતિજ બુદ્ધદારણ્યકમાં આગ્રા કરે છે કે “અરય મહંતો બૃહસ્પ નિઃશસિત” મગ્ધેદો યલુર્વેદઃ સામવેદોઽયજુર્ગીરસઃ ઇત્યાદિઃ તો પછી શ્રીમદ્ભગવદ્ગીતામાંનાં શ્રીકૃષ્ણવાક્યો બોલનાર “અરિમ વેદે લોકે ચ પ્રથિતઃ પુરુષોત્તમઃ” “વેદાન્તકૃત્ વેદવિદેવ ચાદ” છે. જેથી તેમનાં શ્રીમુખનાં વાક્યો જે વેદવાણી જાણવામાંજ અને ગણવામાંજ આવે છે અને આવવાજ જોઈએ એમાં શી નવાઈ? તે શ્રીમુખની વાણીમાં:—

૧ શ્રવણભક્તિ માટે “અપરેક્ષન્તિ તે જ્ઞાનં તદ્વિદિ પ્રણિયાતેન પરિપ્રજ્ઞેન ચ. ૪ શ્લોક ૩૪માં આગ્રા કરે છે.

૨ કીર્તન ભક્તિ માટે અધ્યાય ૯ શ્લોક ૧૪ સતત કીર્તયન્તો માં પરન્તત્ર દદમતાઃ થી.

૩ રમરણુભક્તિમાં અનન્યચેતાઃ સતત યો માં રમરતિ નિત્યયઃ ચ. ૯ શ્લોક ૧૪ માં તથા યથાનાં જવયજ્ઞોઽસ્મિ અ. ૧ શ્લોક ૫ માં આગ્રા કરેલી છે.

૪ પાદસેવન માટે ઉપર લખેલા અ. ૪ શ્લોક ૩૪ માં ઉપરેક્ષ કરનારની સેવા કરવાની આગ્રા છે ત્યારે પ્રભુની તો મન્મના મવ મદ્ગુકો બનવાની આગ્રામાં સમાવેશ હોવાજ એમાં શી નવાઈ?

૫ અર્ચનભક્તિ એજ મન્મનામવચાણા અ. ૧ ના શ્લોક ૩૪ માં મદાઝી બનવા આગ્રા છે અને ઉપર કહેલા અ. ૧ શ્લોક ૧૪ માં દદ મત અપ્રતે યત્ન કરવામાં સમાવેશ છે.

૬ છટ્ટી વન્દનભક્તિ તો અ. ૯ શ્લોક ૧૪ માં નમસ્વન્તો ચ માં ભક્ત્યા અ. ૯ શ્લોક ૩૪ માં નમરકુરુ અ. ૪ શ્લોક ૩૪ માં પ્રણિયાતેન એમ આગ્રા કરી તે મુજબ અ. ૧૧ ના શ્લોક ૫, ૩૬ અને ૪૦. અણુને પ્રણામો ક્યાં પણ છે.

૭ દાસ્યલક્ષિ તે “ શાધિ માં ત્વાં પ્રપન્ન ” એમ અભ્યુત્થિ પહેલી દીનતા ખતાવીને છે. અ. ૧૮ ના શ્લોક ૭૩ માં “ કરિસ્યે વચનં તવ ” એમ આગાહારી જનવાનું વચન પણ આપે છે અને પછી તે વચન પાળ્યું પણ છે.

૮ સખ્યલક્ષિ તે અભ્યુત્થિની પહેલેથીજ હતી માટે અ. ૧૧ શ્લોક ૪૧ માં સખેતિ મત્વ “ તથા સખેવ સખ્યુઃ પ્રિયઃ પ્રિયાઘાલ્સિ દેવ સોદુ ” એવી વિનતિ કરેલી અને નવમી આત્મ નિવેદન લક્ષિની આગા તે અ. ૩ શ્લોક ૩૦ માં મયિસર્વાશ્ચિકર્માશ્ચિરં ન્યસ્યામ્યાત્મચેતસા અ. ૪ શ્લોક ૨૪ માં જે પ્રહારપર્ણાશ્વજાલવિઃ કલ્પું તેની સ્પષ્ટતા અ. ૯ શ્લોક ૨૭ માં યતકરોપિ યદ્દેનાસિ વિગેરે કુરુષ્વ મદર્પણું ” એમ આગ્રામાં કરી છેવટે અ. ૧૮ શ્લોક ૬૬ માં તો મહાવાક્ય “ સર્વધર્માન્યપરિત્યજ્ય મામેકં શરણું મજ ” દ્વરમાવીને અવધિ કરી છે પછી તેથી વધારે અભ્યુત્થિ પોતે પ્રુષ્ઠિમિત્ર ભક્ત હોવાથી અને શુદ્ધ પ્રુષ્ઠિનો અધિકાર ધરાવતો નહોતો હોવાથી તે રથજો આગા કરવા જરૂર નહોતી. ત્યાં જરૂર હતી ત્યાં “ ન પારથેકદનિરવલસંયુજા ” ઇત્યાદિથી કહેલી છે તે આગળ આવશે. કારણકે તે પહેલાં તે કાટિ આપણે સમજવાની પ્રથમ જરૂર છે અને યોગ્યતા પણ પ્રાપ્ત કરવી જોઈએ. “ તાનાવિદંભયુપગમ્યદધિયઃ સ્વમાત્માનમંદસ્તથેદ ” એકોદિ તથા “ મામોયુરંજસા ” એ દ્વેષ્ટિએ પહોંચવું મુશ્કેલ છે તે સમજવાનું હવે પછીને માટે રાખીને હાથ તો આગલાવના પદથી સમાપ્તિ કરે છું.

જસોમતિ અપને લાલકા સુંગાર ખનાવે,
ખદન પોંછી દે ગિંદુકા નયની પહેનાવે. ૧૧૧॥
કરનકમ કટિકિકિની ઉરહાર ધરાવે,
કાજર તેનન આંછકે મિસ મદુકા લાવે. ૧૧૨॥
આંગદ કંકના મુદ્રિકા નૃપુર ઊગિ ઊવે,
કુલહી ઝગુલી જરકરી દૈસિ મોદ જતાવે. ૧૧૩॥
કંઠહાંસુરી ખાંસુરી કરલકુડી ગદાવે,
દર્પન દાપ દિગ્માયકે કહુ દસોદસાવે. ૧૧૪॥
કમલક કંઠ લગાવકે પવપાન કરાવે,
કમલક નવનવનીત લે રચિ રચિ ખવાવે. ૧૧૫॥
જે સુખ વિવસત જસોમતિ અહાદિ ન પાવે,
જન ત્રીકમ, અપુને કદા જડઆગ્ય સિરાવે;
જસોમતિ અપુને લાલકા સુંગાર ખનાવે. ૧૧૬॥

આ પદોના રચનાર ત્રિકમદાસ જ્યારા પ્રુષ્ઠિમિત્ર હતા અને પ્રુષ્ઠિકવિ દયારામજી જે શુરુના પ્રતાપથી નામાંકિત વૈષ્ણવ યથા તે પ્રદીપકાર ઇચ્છારામ ભટ્ટજીના મિત્ર હતા તેનાં પદની વાનગી પ્રસંગોપાત લેખમાં સામેલ ચંદ્રને આવે તો જેમ પ્રાચીન કીર્તન જાણે છે તેમ જાણવામાં અચકાશે નહીં. તેમની પ્રુષ્ઠિલક્ષ્મીની વાનગીઓ કું ગોકળાઓ કરીશ. તેમની દૃઢ પ્રુષ્ઠિકવિથી તો તેમના પાત્રના પાત્ર જેમને આપ તથા ઘણાખરા કાઠીઆવાડના પ્રુષ્ઠિવૈષ્ણવો આજખે છે તે ગારા પિતાથી આજે તાદશી જેના દર્શાત છે ત્યાં સુધી અવિચ્છિન્ન પરંપરા ચાલી આવેલી છે,

ભક્તિ કે ઉપાસના ?

(લેખક:-૨૧. ૨૧. જેઠાલાલ મોહનલાલ દવે, B. A.)

સમલકમલદલ લોચન ભવમોચન ૬ । ત્રિમુવનભવનનિધાન જયજય દેવ હરે ।

ભમિનવજલપરસુન્દર શ્રુતમન્દર ૬ । શ્રીમુક્તચન્દ્રચકોર જયજય દેવ હરે ॥

અનાદિ કાળથી સારા જીવતની ભાષાઓમાં સનાતન તત્ત્વની ઉપાસનાનું માન્યતા દેવી યજ્ઞોએ યુક્ત કરે માથું છે. અંગ્રેજ રાજકવિ ટેનિસન કહે છે "More things are wrought by prayer than this world dreams of." ઉપાસનાથી આપણે ધારીએ હીએ તેથી વધારે મેળવી શકીએ હીએ. ખરેખર પ્રાર્થનાનું બળ અદ્ભુત છે.

આર્યોનાં ધર્મસ્તંભોરૂપી વેદ ઉપનિષદ અને પુરાણોમાં ઉપાસનાનાં તત્ત્વો દષ્ટિગોચર થાય છે. અતિપ્રાચીન ઋગ્વેદનાં વરુણદેવની ઋચાઓમાં નિષ્કપટી આર્યોનું ભક્તિમીનું હૃદય પ્રતિબિંબિત છે.

"All religions originate in Fear and culminate in Love." તત્ત્વચિંતક કાર્લસ્ટ્રાસ તેના પીઠ પુસ્તક "Sartor Resartus" માં લખે છે કે:-"Wonder is the basis of worship." "અમરકાર સિવાય નમરકાર ન હોય."

દેવળ કુદરતના દર્શનોમાં વિચરતા, પ્રગતિ કરતા આર્યોએ તારકિત નમોમંડળ, વિગ્નળાના અમકારા ને ગેધગજના સાંભળી વિસ્મય પામી પોતાનું ભાવિક હૃદય ઋચાઓમાં પ્રદર્શિત કર્યું. દૈત્યીક ઋચાઓ, પવિત્ર ભાગલીઓનો અદ્ભુત ઉભરો દર્શાવતી હોવાથી સાહિત્યમાં રૂપ જેવી અમૂલ્ય છે. તેમાં કવિતા અને ધર્મનો મુંદર સમન્વય છે.

યો મે રાજન્યુગ્યો વા સસા વા સ્વન્ને મયં મીલે મહામાહ ।

સ્તેનો વા યો દિપ્સતિ નો વૃકો વા ત્વં તસ્માદ્વરુણ પાહ્યસ્માન્ ॥

ઋ. મં. ૨. મુ. ૨૮/૧૦.

અર્થ:-ઓ વરુણ દેવ ! કોઈ મારો ભાંડુ અથવા મિત્ર જે મારી સમક્ષ સ્વપ્નમાં જોયેલ દર્શનો વળીએ અગર હેતરવા પ્રયત્ન કરનાર ચોર તથા વરુણોથી મને બચાવ. અમારે રક્ષણ કર.

ન સ સ્વો દક્ષો વરુણ ધ્રુતિઃ સા મુરમન્યુર્દિર્ભદિકો અચિત્તિઃ ।

અસ્તિ જ્યાયાન્કનીયસ ઉપારે સ્વપ્નચ્ચનેદ્વૃત્તસ્ય પ્રયોતા ॥

ઋ. મં. ૭. મુ. ૮૬/૬.

અર્થ:-ઓ વરુણ દેવ, મારો કંઈ પોતાનો એવો આશય ન હતો. એ, સો દાર, કોધ, પાસાની રમત તથા અવિવેકનું પરિણામ હતું. ઓ દેવ, મોટા પુરુષોના વાકમાં નાનાં માણસો સદાય હોય છે. મારાં પ્રોટાં કૃત્યો અનેક રાત્રિઓ વીતી ગઈ તો પણ બૂધાતાં નથી.

આવી રીતે મંત્રોમાં ક્ષમા માગતું હૃદય માત્રમ પડે છે. બધા વેદોનો સાર શુદ્ધ અદૃતમાં પરિણમે છે. મુખ્ય ઉપનિષદોનો સાર ભગવાન બ્રહ્માણ્યે વેદાન્તમુદ્રોમાં પ્રચિત કર્યો છે. તેના પર ઉપનિષદ, શ્રીયંકર, શ્રીરામાનુજ, શ્રીવલ્લભ ઇલાદિ આચાર્યોએ લાખ્ય લખ્યાં છે.

ઉપનિષદો, વેદાન્તમુદ્રો તથા ભગવદ્ગીતા મળી પ્રચ્યાનતરી કહેવાય છે. આ સર્વાભ્યાસ પ્રમાણુજૂત પ્રચ્યાનતરી ઉપરથી પશું ઉપાસના એ ઈશ્વરાનુભવનું એક સરળ અંગ છે એમ સાબીત થશે.

તા વાં વાસ્તૂન્યુપ્મસિ ગમધ્યૈ યત્ર ગાવો મૂરિર્ગૃધ્ના અયાસઃ । ઋગ્વેદ.

પૃથ્વીવતાર શ્રીબાલકૃષ્ણચંદ્રની દેવી શ્રીકાનું મૂચન આ ઋચામાં ગમિત રીતે થયલું છે.

પ્રેમવદ્ધાભક્તિનો દ્વાનુભવ તદ્વિષ્ણોઃ પરમં પદં સદાં પર્યાન્તિ સૂત્રમ્ । (તે સ. ૧-૩-૧૧)
માં ખતાવ્યો છે.

“સોમુતે સર્વોન્કમાન્વદ્યદ્ધા વિષયિતા ।” શ્રુતિ ઉપરથી જ્યાં ઇશ્વરનુપદથી તેનાં સાન્નિધ્યમાં રહી સર્વ પ્રકારનો આનંદ ભોગવે છે એમ જણાયો.

પરંતોત્રમાં પણ સંકેશચાર્યે ગાયું છે:—

સત્યપિ મેવાપગમે નાથ તવાશ્નં ન ગામકીનેત્તવમ્ ।

સામુદ્રો હિ તરંગઃ સ્વચ્ચન સમુદ્રો ન તારંગઃ ॥

જ્યાં એ પરમાત્મા પરશ્વજનો અંશ છે. “મર્મવાંશો જીવલોકે જીવમૂલઃ સનાતનઃ ।” એ ભગવદ્વાક્ય છે. “અધિકં તુ મેદન્નિર્દેશાત્ । ઇત્યાદિ વેદાન્ત સૂત્રો પરથી તથા વાલ્મીકીયમાનસ સતપા કવિતત્ત્વ ત્વાં શાગો જીવઃ સ વિદેયઃ ॥ ૨૯ ૩-૫-૮ ના મંત્ર ઉપરથી જ્યનું અણુત્વ અને પરશ્વજની મહત્તા સ્પષ્ટ છે. “સર્વોપેતા ચ તદ્દર્શનાત્” સૂત્ર પરથી પરશ્વજ સર્વશક્તિપુત્ર છે એ પણ નિર્વિવાદ છે.

માતા યશોદાજી શ્રીબાલકૃષ્ણને અનેક દોરીધારી બાંધી શક્યાં નહતાં જે મિદાનદે કુઃખાતે દ્રોપદીનાં ચીર ખેંચતાં ખેંચતાં હુદ્દ કુઃસાસનની બીજાણી લુભાઓ ચાકી ગઇ એટલાં ચીર સતત પૂર્ણજ કપી. અનેક વિશુદ્ધ ભક્તોની બીડ લાંગી, જણાયું ભક્ત અણુને જેને—“ભનતવીર્વામિત્વ વિગમસ્ત્વ” કહી ઉપાસના કરે છે એવા કર્તુમકર્તુમન્યથાકર્તુ શક્ય ભગવાનને તો નેકે નેકે કહીનેજ વારી જ્વાપ તેમ છે.

પરશ્વજ પરમાત્મા અખિધાધાર છે. સર્વકર્તા અને શુદ્ધસુદ્ધમુક્ત સ્વભાવવાળા હોષ વિરહ ધર્માત્રપ છે. “કાલીનો દર્દે મનસિ જ્ઞાતો ચાતિ સર્વતઃ ।” એવી અને અન્ય શ્રુતિઓ પરે પરશ્વજનું વિરહધર્માત્રપત્વ કહિત થાય છે. પરમાત્માનાં જન્મ અને કર્મ દિવ્ય અને અદ્વિત છે.

બાલ્યું એટલે બળવું. પ્રેમથી વળગવું. જે તમે ભાળે નહિ, પ્રેમથી વળગો નહિ તો તમારામાં જ્ઞાન ઉત્પન્ન થયું નથી એમ સમજવું. પરમાત્મા એ પ્રેમી ભક્તો માટે પ્રેમનું આશ્રયન છે. ભગવાન પ્રેમ વડેજ વશ થાય છે. તે પ્રેમાનુભવ તો મીરાં, દયારામ કે નરસિંહ જેવાં વિશુદ્ધ અને નિઃસીમ ભક્તિભાવવાળાં હૃદયોજ બાણી રાકે.

અદ્વાવિત ભક્તે સારી મેંદે સમજતું નેમ્ને કે અલગતિરિક્ત કંઈ જેજ નહિ. જ્યાં અને જ્યાં જ્યાં આત્મરોગેય સંજોગ છે. જ્યાં આત્મા, આત્મિત છે. પ્રાણ એ એય, આધાર અને અંતર્યામી છે.

દયાધન પરમાત્મા ભક્તની વિશુદ્ધ ઉપાસનાથી પ્રસન્ન થાય છે. પ્રભુકૃપા થઇ એટલે કંઈ પ્રાપ્તિય રહેતુંજ નથી. ભક્તનાં પાપ બળી જાય છે. તેનું હૃદય વિશુદ્ધ બને છે. “ધર્મેય પાપમન્નુદતિ” એવી મહાનાશયજ્ઞોપનિષદમાં શ્રુતિ છે. કાલાન્તરે તેવધારાવત્ સતત પરાતુરકિંતથી મનોવૃત્તિ સ્થિર થાય છે; અન્તઃકરણ અતિવિશુદ્ધ બને છે અને સર્વત્ર અહદષ્ટિ થાય છે. આવા ભક્તો તો સર્વપ્રાણી માત્રમાં દરિદર્યન અનુભવે છે. તેને તો “જ્યાં જ્યાં નજર મારી કરે ત્યાં ત્યાં નિશાની આપતી.” એમ તદાકાર વૃત્તિ થઇ ઉપમ-પુરોત્તમમાં કહ્યા પ્રમાણે વિરહીવ વિમો પ્રિયમનઃ પરિવર્યામિ મવન્મયે જગત્ ।” અનુભવે છે. આવી ચરમાવસ્થાનો ધન્ય પળોમાં જ્ઞાન અને ભક્તિનો બેદ રહેતોજ નથી. જ્ઞાની કવિ અઓ કહે છે તેમ “આત્મા ધૂપ સમરસ રહે” છે. આ દેવી રિયતિમાં અર્શોકે અને અવાન્ય આનંદ પ્રાપ્ત થાય છે.

યં લક્ષ્યં ચાપરં લભં મન્યતે નાધિકં તતઃ । યદિમન્થિતો ન દુઃસ્તેન ગુરુણાપિ વિચિન્ત્યતે ॥

આ રીતે ભક્તિ વડે દુઃખની આત્મલિક નિવૃત્તિ યદિ નિશ્ચિતશય મુખની પ્રાપ્તિ થાય છે. માટે ભગવાનની ભક્તિ એજ સાચો પુરુષાર્થ છે. ॥ પુરુષાર્થો દિ મગજનિવ ॥ અણુમાણ.

ધણુંને શંકા થાય છે કે ક્યા દેવની ઉપાસના કરવી ? આનો જવાબ એ કે શ્રદ્ધા એ ઉપાસનાનું પ્રથમ પગથીઉ છે. સાધકે ઉપનિષદમાં તથા ગીતામાં કલા પ્રમાણે શ્રદ્ધાવિત્તઃ યતુઃ શ્રદ્ધાવિદીન કરેલાં કાર્યો નિષ્ફળ જાય છે. મહાભારતમાં કહ્યું છે કે “ અપ્રદ્ધા પરમં પાપં શ્રદ્ધા પાપમોચનો ॥ ”

ખીજી આખત મિમ્મલવિદિં શ્લોકઃ । જ્ઞેમ એકજ જાતના ખોરાક પર બધાને એક સરખી રમિ ઉત્પન્ન થવી અસંભવિત છે તેમ એકજ દેવની ઉપાસના ઉપર બધાને આરથા થવી શંકાસ્પદ છે. દરેકને તેના પૂર્વકર્મોનુસાર, તેની પ્રકૃતિ અનુસાર અમુકજ દેવ પ્રત્યે સ્વાભાવિક વિશેષ પ્રીતિ ઉદ્ભવે છે. તેને તેમાં શ્રદ્ધા જટ ચોટે છે. તે સાધકે સ્વરચિકર દેવમાં અજાદદિ કરી સર્વાત્મમાત્રે ઉપાસના કરવી. એવશ્યકે તે પ્રતીકમાંથી સ્થૂતદિ દૂર કરી મૂળ બળદદિએ જ્ઞેવાનું છે. રસાત્મક બ્રહ્મના સાધકને તે સર્વદેવનમસ્કારકેરુર્વઃ પ્રતિગચ્છતિ ॥ એવી દૃઢ ભાવના ધોવી જોઈએ. ઉપાસના એ મનોઆપાર છે.

દેશ અને કાળાદિ ધ્યાનમાં લેતાં ઉપાસનાનું રહસ્ય, આત્મસમર્પણ અને નિષ્કામ કર્મવીર યત્નામાંજ સમાયેલું છે. શીભગવદાક્ય પશુ છે:—

મયિ સર્વાણિ કર્માણિ સંન્યસ્યાધ્યાત્મચેતસા ॥

નિરાશીર્નિર્મમો ભૂત્વા પુવ્યસ્ય વિગતઃશ્વરઃ ॥૨૧૩૦

ભગવદ્ગીતાના પુરુષોત્તમયોગમાં ગીતાસાર સમાયેજ છે. ઉપાસ્ય તત્ત્વનું તથા આત્મસમર્પણનું સૂચન નીચેના શ્લોકમાં આકેખ્યું છે.

તતઃ પદં તત્પરિમાર્ગિતવ્યં યસ્મિન્ગતા ન નિર્વર્તન્તિ મયઃ ।

તમેવ ચાપં પુરુષં પ્રપથે યતઃ પ્રવૃત્તિઃ પ્રસૂતા પુરાણી ॥૨૧૪૧॥

[શેષક સાંપ્રદાયિક નથી, છતાં તેમનો ધાર્મિક ઉત્સાહ વધાવવો રહ્યા. તંત્રી.]

અમ્મ પાચન માટે અજળ ગુરુજો, સ્વાદિષ્ઠ શુદ્ધ મુંદર

હજમાહજમે ચૂર્ણ.

આ ચૂર્ણ વૃદ્ધ યુવાન બાલક વગેરે દરેક સેવન કરી શકે છે. આથી કબજાયાત, અપચો, પેટનો દુખાવો, આંદરો, દાહ, મંદાગ્નિ, ઉલટી, ખાડા, મોળ, અજીર્ણ, અશક્તિ વગેરે તેમજ હાથ પગની તૃટ, વીર્યસ્રાવ, સ્વપ્નદોષ, શરદી, અજેષ્મ વગેરે શરીરની વ્યાધિઓમાં અકસીર છે. કિં. બા. ૧ નો ૩. એક, ટપાલ ખર્ચ જુદું. નમુના માટે એ આનાની ટીકીટ મોકલો.

દે. ખરડા કાર્મસી, પોરબંદર.

આર્યત્વના રક્ષણહાર.

(વક્તા—લાલજી દયાળજી રાણપુરા, મંત્રી—શ્રીવૈષ્ણુવંધર્મ મહાસાગર ટંકારા.)

શ્રીવલ્લભાધીશ્વરના પ્રાકટ્યનું સ્વરૂપ યત્નિચિત્ આપ સમજાવો. સમક્ષ બોલવા રંગ લઈ છું. આ મેલાવકામાં કેટલાએક મેલ્યુએટોની હાજરી હોઈ તે તે મહાન્ વક્તાઓ સમક્ષ મારા જેવા બેચાર ચોપડીના જ્ઞાનવાળા બોલી આવી આદર્શ સલામમાં શું અન્યાયનું નાંખવાના ? તો પણ મારી બોલવાની કંઈક અંશે ફરજ લેખાય એ દૃષ્ટિએ આજના ઉત્સવપતિના પ્રાકટ્ય ઉપર મારી અલ્પ બુદ્ધિઅનુસાર કહી ફરજ અદા કરીશ.

આપણે ઇતિહાસના પાનાઓ ઉઘડાવીને જોઈએ છીએ કે જે ધર્મને રાજ્યાશ્રય હોય તે ધર્મ અધિક પ્રખળ હોય છે. પરંતુ જે ધર્મને રાજ્યાશ્રય નથી તે ધર્મની પ્રગળતા તે ધર્મના સસ સ્વરૂપને સ્વયં શક્તિપર રહેલી છે. રાજ્યની શક્તિ કરતા ધર્મની શક્તિ અધિક છે. કારણ કે રાજ્યશક્તિ એ લૌકિક શક્તિ અને ધર્મની શક્તિ એ અલૌકિક શક્તિ છે. જેથી લૌકિક શક્તિ મને તેટલી પ્રગળ હોય પણ ધાર્મિક અલૌકિક શક્તિ આગળ તે તૂટી પડે છે. હિન્દુસ્થાનમાં બ્યારે ઇસ્લામીઓનું શાસન પ્રવૃત્ત હતું, ત્યારે આર્ય ધર્મ ઉપર ઇસ્લામીઓ અમાનુષી ભુલ્મ શુભરવા જરાયે ચૂકતા નહતા. છતાં પણ પ્રાચીન અને રાજ્ય સ્વરૂપને ધારણ કરનારા આર્ય ધર્મ મક્કમણે પોતાની સત્તા તેવી ને તેવી જ જાળવી રહ્યો છે.

હિન્દુસ્થાનમાં ઇસ્લામીઓની સત્તા લગભગ છસ વર્ષ સુધી રહી હતી ને તે દરમિયાન હિન્દુ ધર્મ ઉપર ને હિન્દુ કોમ ઉપર પ્રસંગોપાત્ત બુલ્મો થયાજ કહી, છતાં હિન્દુ ધર્મને પ્રકાશમાં લાવનારા આચાર્યો ઉદ્ભવ પામી મુસ્લીમોના બુલ્મને જેર કરી હિન્દુ ધર્મનો પાયો મજબુત કરતા જ ગયા છે.

હિન્દુ ધર્મના મહાન્ આચાર્યો પૈકી શંકર, રામાનુજ, મધ્વ, નિમ્બાર્ક; ચિતંબ અને શ્રીવલ્લભાચાર્ય આદિ મહાન્ આચાર્યોએ પોતાના બહુવિધ મહામૂલ્ય જીવનને ધાર્મિક પરિસ્થિતિને અંગે સર્વસ્વ હોમી આર્યત્વ અને આર્ય ધર્મનું રક્ષણ કરી વેદ ધર્મનો લોપ થતો અટકાવી યુગ સ્વધર્મના મોરચા માંડ્યાજ છે. એ મહાન્ આચાર્યો પૈકી એક શ્રીવલ્લભાચાર્યજી શ્રીમહા પ્રભુજી છે કે જેમની જયંતિ ઉજવવાને આપણે આજે આ સ્થળે મન વચન અને કર્મથી એકત્ર થયા છીએ. આજે એ મહાપુરુષવરના જીવનકાવ્યની રૂપરેખા ચિતરવા આપ સમક્ષ આ સેવકે હીમત તો કરી છે પરંતુ એ રૂપરેખા સંપૂર્ણ રીતે દોરી શકીશ કે કેમ એનો મને વિશ્વાસ નથી, તો પણ એ શ્રીવલ્લભપ્રભુની કૃપાથી યત્નિચિત રીતે પણ વર્ણનાગાન ગાઇ મને કૃતકૃત્ય માનીશ.

શ્રીવલ્લભાચાર્યજીના પ્રાકટ્ય વખતે અને તે પહેલાં અસ્થાન્તિનોજ સુમ હતો, એટલે કે હિન્દુ ધર્મની રિયતિ ધણીજ વિષમ હતી. જે કે તે વખતે વિજયનગરનું હિન્દુ રાજ્ય કંઈક અંશે હિન્દુ ધર્મની સત્તા ને ગારવ જાળવવાને પ્રયત્ન કરતું હતું પણ તે હિન્દુ ધર્મના વિશાળ પ્રદેશને હિન્દુ કોમની વિશાળતા આગળ વનરાજ આગળ સૂઝતી માફક કશા હીસાબમાં નહતું. વળી તેનાથી જોઈએ તેટલી છુટકા તે કામ થઈ શકતું નહતું. કારણ કે દક્ષિણના બ્રાહ્મણી રાજ્યનો દેવ તેના ઉપર ગાજતો હતો, અને તેજ રાજ્યોએ તેને આખરે જમીનદોરત કર્યું હતું. બીજી બાજુ વિધર્મીઓના આક્રમણથી આપણા પૂર્વજો અસ્થિત તારી રહ્યા હતા અને રાજ્ય મંજૂરમાં કેવળ અવ્યવસ્થાનું સામ્રાજ્ય પ્રવર્તી રહેતું હતું. મનુષ્યજન્મ જેવું મહાસાધન મધ્યા પછી પણ ઔદિક અને પારલૌકિકની ઉન્નતિ સાધવાનું અસાધ્ય જેવું થઈ પડ્યું હતું. આગાની

રાત્ર્યપાનીએ ગહેલા ધર્માન્ધ સિકંદર હોદી હિન્દુઓ અને હિન્દુઓના ધર્મને જમીનદોસ્ત કરવા જગાએ પાછી પાની કરતો નહિ. તેની સત્તા અને રાત્ર્ય મજબુત હતાં. તેણે પોતાના આખા્ય રાત્ર્યમાં હિન્દુઓને દેવદર્શન કરવાની પવિત્ર નદીઓમાં ન્દાવાની તથા તીર્થાટન કરવાની પણ મના કરી હતી. હુંકમાં એટલું તો કહીશું કે સર્વત્ર અધર્મજ પ્રવર્તી રહેશે હતો, આવા અશાન્તિના યુગમાં પ્રભુ વિચારે છે અને શાન્તિ અને ધર્મનું સ્થાપન માટે જ અપતાર લે છે. શ્રીગીતામાં કહ્યું છે કે:—“હું અજન્મા છતાં આવનાશી છતાં અને સર્વ પ્રાણીઓનો તથા પદાર્થોનો ધ્રુવર છતાં મારી માયારી જન્મ ધરું છું. અને જન્મ ધરું છું તે પણ મારી પર-અહ્યાત્મક રિયતિને નહીં સુકતાજ ધરું છું.”

જ્યારે ત્યારે ધર્મની ગ્તાનિ અને અધર્મનો ઉદ્ભવ થાય છે ત્યારે ત્યારે હું પોતાને પ્રકટ કરું છું. શાસ્ત્રીય દષ્ટિએ સિદ્ધ થયું કે આ સમય ધર્મગ્તાનિનો હતો. આવા સમયમાં ભારતભાતા પણ ત્રાહી ત્રાહી પોકારી રહ્યાં હતાં. આવા કટોકટીના સમયમાં આર્વાધર્મના યુગ્મતા દીપકને પ્રજ્વલિત કરનાર ભારતભાતાના અરે આર્વાત્વના રક્ષણદાર મલી ગયા. તે શુદ્ધ સનાતન લક્ષ્મિ-માર્ગના સ્થાપક જગદુદ્ધારક જગદ્ધંનીય જગદ્ગુરુ શ્રીમદ્વલ્લભાચાર્યજી શ્રીમદ્દામણુજી (તાલીઓ).

આપશ્રીનું પ્રાકટ્ય મધ્ય પ્રાંત રાયપુર જિલ્લાના રાજગ્રામ સગીપ ચંપારણ્યમાં વિક્રમ સંવત ૧૫૩૫ ના ચૈત્ર કૃષ્ણ ૧૧ ના મંગલમય દિવસે થયું હતું. આપશ્રીના પિતાશ્રીનું નામ શ્રીવદ્મણુ લાદ્ય, જાતિ તૈક્ષ્ણ બ્રાહ્મણ કૃષ્ણ યજુર્વેદ શાખા તૈત્તિરીય ગોત્ર ભારદ્વાજ કુલ. વેંગનાડુ જોળણાતું હતું. આપશ્રીને સંવત ૧૫૪૦ માં ચૈત્ર કૃષ્ણ અષ્ટમીના દિવસે અનેક પિદાનો અને રાગતીયની હાજરીમાં વૈદિક વિધિનુસાર ઉપનયન સંસ્કાર અપૂર્વ સમારોહથી કરાવ્યો, તદનુસાર આપશ્રીનું વિદ્યાધ્યયન કાર્ય શરૂ કર્યું. આપશ્રી એવા તો વિદ્યાવ્યસની કે ગુરુની પાસે તો વિદ્યા-ધ્યન તો કરતા પણ આપશ્રીના વિદ્યાન પિતાથી તેમજ અન્ય વિદ્યાનોની પાસે પણ જે જે શાસ્ત્રોની સાતા હોય તે તે શાસ્ત્રોનું પણ લક્ષ્યપૂર્વક ગ્રહણ કરતા આપશ્રી હુંક સમયમાંજ વિદ્યા-ધ્યનનું કાર્ય પૂર્ણ કરી લીધું અને આપશ્રી વિદ્યાનો પરિચય કરાવતા અનેક પિદાનોને પરાજીત કરી લેતા [આપશ્રી આપશ્રીની અઘૌકિકતાનો પરિચય દેવા લાગ્યા. આપશ્રીએ હુંક ‘સમયમાંજ આખા્ય હિન્દમાં ફક્ત એક ધવલ (સરોદ) ધોતી અને ઉપરજેજી ચરણે ચાત્રી ધારી કરીને શુદ્ધ વૈદિક પુષ્ટિ-લક્ષિતમાર્ગની સત્તા ચારે છેડે સ્થાપી. પશ્ચિમમાં નગરદેશ, દક્ષિણમાંવેતપિંદુ રાજેશ્વર, પૂર્વમાં કલકત્તાની પણ પેત્રીપાર ગંગાસાગરને ઉત્તરે છેક હિમાલયની તમેટીમાં બદ્રીનાથ કેદારનાથ તથા વ્યાસાશ્રમ સુધી પોતાનો વિજયપન્થ ફરકારીને અનેક જીવોને સરણે લીધા. આ કાર્યમાં તે વખતે પરધર્મના રાત્ર્યો છતાં પણ પરજ્ઞાતવના તેજોમય દિવ્યશક્તિએ સર્વેના સિરે તેઓશીના અરણ્યાર્ચિદમાં સુકી જતા, સમયાલાવથી આટલું જ બોલીને હાલ તો પિરમીસ.

નામમાહાત્મ્ય.

[લેખિકા:—બહેન સરસ્વતી દાણી.]

આપણે સૌ જગતમાં મોટામાં મોટા એવા પ્રભુને માનીએ છીએ કારણ કે તેજ આપણા જન્મદાતા રક્ષક અને કલ્યાણકર્તા છે અને તેથી ભગવાનના નામનું સ્મરણ અને રટણ બધાં કરતાં ઉત્તમોત્તમ છે. ભગવાન સર્વવ્યાપક અને અત્યંતબી હોવા છતાં તે આપણી દષ્ટિએ અદશ્ય છે અને તેથી આપતકાળમાં તેમની સદાલવા મેળવવા આપણે અસમર્થ છીએ. ને કે ભગવાન સદાસર્વદા સર્વવ્યાપક એટલે નહક દોષાં છતાં પણ આપણે માટે તે દૂર જેવા છે.

દરેક મનુષ્ય ત્યારે ત્યારે પોતાના ઉપર કાંઈ પણ આપત્તિ આવી પડે છે અને ત્યારે કંઈ પણ ઉપાય જણતો નથી ત્યારે ભગવાનને સંભારે છે અને ભગવન્નામોચ્ચારણથી ઉપાધિથી ઘેર-ધણા મનુષ્યને એક પ્રકારની શાંતિ મળે છે અને ધૈર્ય પ્રાપ્ત થાય છે અને તે પેતાને નિર્ભય મને છે. આપત્તિના સમયમાં ભગવન્નામ લેવાથી આપણને શાંતિ થાય છે અને અણધારી મદદ મળી જઈ આપણા દુઃખની નિવૃત્તિ થાય છે.

દ્રૌપદીની ઉપર ત્યારે કૌરવોએ જીજ્ઞાસ કરવા માંડ્યો ત્યારે એક પછી રસ્તો ન સૂઝતો દ્રૌપદીએ ભગવાનનેજ સંભાર્યો અને શીઠરિએ તેની રક્ષા કરી તે આપણે સા જાણીએ છીએ. એવી રીતે અનેક ભક્તોના દુઃખોનું નિવારણ ફક્ત અંતઃકરણપૂર્વક અને ભાવપૂર્વક ભગવત સ્મરણથીજ થયું છે તેની સાક્ષી આપણો ઇતિહાસ પૂરે છે. બીજા મનુષ્યને પણ તેવા પ્રકાર પ્રાપ્ત થતાં ભગવતનામઉચ્ચારથી તેને નિઃકરતા આવી જાય છે અને ધૈર્ય પ્રાપ્ત થાય છે એવા પ્રતાપ ભગવતનામનો છે. ભગવાનની પ્રાર્થના માટે અનેક પ્રકારના સાધનો હોય છતાં સાધારણ મનુષ્યોને માટે ભગવત નામ સિવાય અન્ય કોઈ સરલ સાધન નથી. કહ્યું છે કે જે લોકો જન્મ મરણથી દૂરવા માંગતા હોય તેણે આદિઅનાદિ પરમાત્માનું અહર્નિશ સ્મરણ કરવું.

કલિયુગમાં બીજા સાધનો કરતાં ભગવન્નામોચ્ચારણ માત્રથીજ ભગવતપ્રાપ્તિ થઈ શકે છે એમ અનેક દેકાણે શાસ્ત્રોમાં છે. અને કહ્યું છે કે સત્યયુગમાં ધ્યાનથી, ત્રેતાયુગમાં યજ્ઞથી, દ્વાપરયુગમાં અર્ચનથી જે દુઃખ મળતું તે દુઃખ કલિયુગમાં ફક્ત ભગવાનના નામસ્મરણ અને કીર્તનથી મળે છે. શ્રીમદ્ભગવતમાં શ્રીમદ્વેદવ્યાસજી કહે છે કે—

કલેર્દોષનિષે રાજન્ અસ્તિ લોકો મહાનુભઃ ॥

કૌર્ત્તેનાદેવ કૃપ્યસ્ય મુક્તવન્ધઃ પરં વ્રજેત્ ॥

એટલે કે કલિયુગમાં ભગવતનામ અને કીર્તનથીજ સંસારના બધા બંધનોથી મુક્ત થઈ મનુષ્ય પરમાત્માને પ્રાપ્ત કરી શકે છે.

એવી રીતે ભગવન્નામનું માહાત્મ્ય મહાન છે. તેનું વર્ણન કરવું અશક્ય છે. કલિયુગમાં બીજા સાધનો ન બની શકે તો ભગવતનામથીજ ઉદ્ધાર થાય છે. માટે જેસતાં ઉત્તો, હાવતાં, ચાલતાં, સૂતાં જાગતાં અને કામકાન્ન કરતાં ભગવાનના નામનુંજ સ્મરણ કરવાની જો આપણે દરેક દેવ પાદીએ તો આપણું કથ્થાણુજ થાય એ નિર્વિવાદ છે. x

x સુચિત

[મગ્ધુર લેખની અનુવાદિકા બહેનનો સામાન્ય પરિચય આ છે. કુ. બહેન સરસ્વતી અમારા સન્નિવર પરભગવદીય ભાષ્ય દારકાદાસ જેઠાભાઈ દાણીનાં સુપુત્રી છે. ચિ. સરસ્વતી માત્ર મોડકાવર્ષીય હોવા છતાં સારાં ઉત્સાહી અને સુસરકારી બાલિકા છે. ધાર્મિક સંસ્કાર સારા છે તદનુસાર સામાજિક કાર્ય પણ આગળ પડતો ભાગ લઈને કરે છે. ધોમા સમયમાં તેમણે ચાલિતી બહેનો પ્રગતિ કરે તેને માટે એક અધીશ બહાર પાડી હતી તેથી તાત્કાલિકમાં ચાલિતું 'શ્રીગાદિલવાદ દસા શ્રીમાળી સ્ત્રી મંડળ' સ્થાપી તે દ્વારા શિક્ષણ અને શિષ્યુના વર્ગો ચલાવવા અને પુરવઠાકાલની વ્યવસ્થા પણ ચિ. સરસ્વતી રાખે છે. (મગ્ધુર. સંસ્થાના મંચિત્રી છે.) ગત વર્ષે તે 'વનકિયુવર' શાસ્ત્રના પરીક્ષામાં ઉચ્ચકક્ષામાં ઉત્તીર્ણ થયાં છે અને હાલમાં તે સ્થાનીય યુનિવર્સિટીમાંની ટ્રેનીંગ સ્કૂલમાં પ્રથમવર્ષે પણ સોરે નંબરે પસાંદ કર્યું છે. તે અત્યંત નવાર લેખ કાવ્યાદિ મોકલાવે છે. તેમજ સામગ્રીવિક તથા અન્ય 'પણ સરસાદિતીનું વાંચન સારા પ્રમાણમાં કરે છે.]

ગોવિન્દ.

[અનુવાદક—ડૉ. મોનાંશુ વિશ્વામ ઠક્કર, જી. પી. એ. સી., ખેડોઇ-૬૨૭.]

ગોવર્ધન નામનું એક સુંદર નાનું ગાય હતું. ગાયમાં આઠાણ, કાશિય અને વેર્યોની વસ્તી વધારે પ્રમાણમાં હતી. આ ગાંમની વચમાં એક મંદિર હતું જેમાં શ્રીનાથજીનું એક સુંદર સ્વરૂપ મિશ્રજેઠું હતું. સ્વરૂપ એટલું સુંદર હતું કે તે જોતાં માણસનું મન ધરાવજ નહિ. તેના ચરણોમાં ઝાંઝર, ગજામાં માળા, મસ્તકપર મુકુટ-વગેરે શોભી રહ્યાં હતાં. નેત્રો પણ મનોહર હતાં અને પીતામ્બર પહેરેલું હતું.

આ મંદિરની ખાલુમાંજ એક ગરીબ આઠાણનું ઘર હતું કે જેનું હૃદય પ્રભુભક્તિમાં રંગાયેલું હતું. તેની સ્ત્રી પણ બહુ સરળ સ્વભાવની હતી અને પોતાના પતિની માફક તે પણ પ્રભુભક્તિમાં મસ્ત રહી તે પતિની સાથે રહેતી. એના મુળેથી ક્યારે પણ કાઠને તે કડવા વચન કહેતી નહિ.

માતા પિતાની જેવી પ્રકૃતિ હોય છે તેવીજ બાળકની પણ થાય છે. એ નિયમ પ્રમાણે આ ઘંપતીને ગોવિન્દ નામે દસ વરસની ઉમરનો બહુ સરળ સ્વભાવનો એક પુત્ર દેવો જે એટલો સુંદર હતો કે લોકો તેને કામદેવનો અપનાવ કહેતાં પણ અચકાતા નહિ.

ગોવિન્દ ગામની બહાર પોતાના મિત્ર સત્તાનંદ અને રામદાસની સાથે રમતો. એક દિવસ રમતાં રમતાં સાંજ થઇ અને તે પોતાના ઘર તરફ આવતો હતો એવામાં મંદિરમાં આરતી થતી હતી ત્યાં ઘંટા, ઝાંઝ વગેરેનો અવાજ સાંભળીને તેને પણ ભાં જળીને તે જોવાની ઇચ્છા થઈ અને તરતજ દોડીને શ્રીનાથજીની આસપાસ ફરતી ફરતી ત્યાં તે ગયો.

શ્રીનાથજીનાં દર્શન કરીને બાલકનું મન તેમાંજ રમી રહ્યું. ગોવિન્દ મૂર્તિને એક મૂર્તિ ન સમજતાં તેણે પ્રત્યક્ષ જોયું કે એક સુંદર ચંતનમય બાળક ઉભું ઉભું હસે છે.

ગોવિન્દ શ્રીનાથજીની મધુર મુખપ્રકૃતિ પર મોહિત થયો. તેના મનને થયું કે જો આ બાળક મારો મિત્ર બની જાય અને મારી સાથે રમે તો બહુ મજા પડે. એટલામાં આગ્રહ સમાપ્ત થઈ અને બંધા લોકો પોતાને ઘેર ગયા. સેરક પણ મંદિર બંધ કરી પોતાને ઘેર ગયો પણ ગોવિન્દ મંદિરની બહાર અધારામાં શ્રીનાથજીની વાટ જોતો ઉભો રહ્યો. જ્યારે તેણે ચાતરક જોઇ લીધું કે હવે અહિં કોઇ પણ નથી ત્યારે મંદિરના દરવાજાના છેદોમાંથી અંદરના શ્રીનાથજીને જોઈ તે હૃદયની બહુગંભીર અવાજથી ગદગદ કરે પ્રેમપૂર્વક કહેવા લાગ્યો—“શ્રીનાથજી, તમે શું મારી સાથે નહિ રમો ? માફ મન તમારી સાથે રમવાને બંદુ આવુર થઇ રહ્યું છે. લાઈ આવો. ભુઓ તો ખરા ? કેવી મજાની સાંઘતી રાત છે ? આજે આપણે બંને મેદાનમાં ગેડીદો રમીએ છું. સાચું કહું છું કે લાઈ, તમારી સાથે હું લડીશ નહિ અને મારપીટ નહિ કરું.

સરળ હૃદયના બાળકના મત ઉપર આરતીના સમયે જે પ્રજ્વાલ પડ્યો તેનાથી તે ગાંડા જેવો થઈ ગયો. પરમાત્માના મંદુર અને અનંત પ્રેમના અપ્રત લાઈ પવિત્ર વાતાવરણથી પ્રેમ-મગ્ન થઈને મંદિરની અંદર ઉભેલા એ ભક્તના પ્રાણુનને ગોવિન્દ શાંત શાંતિ એજ વિનંતિ કરવા લાગ્યો. બાળકના એ આંસુભર્યા ચહેરાએ ક્યારે કામ કર્યું. “જે મને જેની રીતે લાગે છે તેવી રીતે હું તેને મળું છું. એ પ્રતિજ્ઞા પ્રમાણે ભક્તનાં પ્રેમે શ્રીનાથજીને ખેંચી લીધા. ગોવિન્દે સાંભળ્યું. અંદરથી અવાજ આવ્યો કે લાઈ, આવ, આવું છું. આપણે બંને સાથે રમશું.

નિષ્પાલક હૃદયના બાળકનો પ્રેમ પ્રભુને બહુ ઈચ્છીથી ખેંચે છે. બાળકે ક્યારે મારે ચારે ભુમમાળા બનીને વનમાં જઈ પડ્યું. ભંડા પ્રજ્વાલને મારે નરસિંહવેશ-ધારનો પડ્યો, અને

મગ્ગના બાળકોની સાથે પોતે ગાયો ચરાવતા ચરાવતા ધ્વનિન ધુમ્મ્યા અને આજ ગોવિન્દની પ્રેમભરી વિનંતીથી તેની સાથે રમવાને મંદિરની બહાર આવ્યા.

ધન્ય પ્રજા, તમે તમારી શક્તિ સાથે કંઈક વ્યવસ્થા કરી શકો છો. તમારી કળાને કોણ કળી શકે? નહીં માયાની શક્તિના પ્રમળથી પણ શ્રુત્યલોકના મનુષ્યો ભ્રમમાં પડી જાય છે. તો તમે તો માયાના પણ અધિષ્ઠાતા છો. જિયારી માયા તો તમારી દાસી છે અને હરદમેશ તમારા ચરણકમલની સેવા કરી રહી છે તો તમારી માયાને કોણ છૂટી શકે? એટલું તો અવશ્ય જણાય છે કે તમે તમારા લક્ષ્મીની સાથે ગમત કરવામાં જુદું આનંદ માને છો. તેથીજ તમે ભક્ત ધનાઞ્ઞ સાથે ગાયો દોહતા કરતા હતા. અને એવીજ રીતે આજ પણ ભક્ત બાલક ગોવિન્દનો આર્તનાદ સાંભળીને તેની સાથે રમવાને તૈયાર થયા છો.

શ્રીનાથજી હસતા હસતા ગોવિન્દની પાસે આવ્યા અને બહુજ પ્રેમપૂર્વક તેનો હાથ ધકેળ્યો. આજે ગોવિન્દના આનંદનો પાર નથી. એ શ્રીનાથજીનું મુખ જોઈને ગાંડો બની જાય છે. તો વળી ક્યારેક તેમના કોમળ હાથનો સ્પર્શ કરીને પોતાને ધન્ય માને છે. વળી તેમના મનોહર નેત્રો જોઈને મોહિત થાય છે. તો વળી તેમનો મધુર અવાજ સાંભળીને ફરીથી તે સાંભળવાની ઇચ્છા કરે છે. એમ ગોવિન્દના હૃદયમાં આજે આનંદ સમાતો નથી. અને ખરેખર એવુંજ હતું કારણ કે જગતનું સમસ્ત સૌંદર્ય જેના સૌંદર્ય પાસે એક તુલ્ય વસ્તુ જણાય છે એવા સૌંદર્યને મેળવીને એવો કોણ હોય જે મુગ્ધ ન થાય?

આ નવા મિત્રને પોતાની સાથે રાખી ગોવિન્દ ગામની બહાર ગયો. ચંદ્રમા પૂર્ણ પ્રકારનો હતો. ચાંદની ખીસી રહી હતી. પુષ્પની અર્ધો ખીસેલી કળાઓ જંગલના પવનને પોતાની મધુર શુભધ્વની જંગલની ખુશીમાં વધારો કરી રહી હતી. જલ્દી કે કુદરત પોતાના નાથને પોતાની સેવાથી ખુશી કરવાને તત્પર હતી. આરી મનોહર ચાંદનીમાં શ્રીનાથજી મળવાથી ગોવિન્દ પોતાનું ધંર માતા પિતા ઉપર ભૂખે સર્વે ભૂડી ગયો અને બંને મિત્રો જુદી જુદી રમતો ખેલુજ આનંદથી રમવા લાગ્યા.

ગોવિન્દે કહ્યું હતું કે હું તમારાથી લરીશ નહિ અને મારીશ નહિ કહ્યું વરતું શ્રીનાથજીની વિનોદપ્રિય માયાથી મોહિત થઈને એ વાતને તે ભૂલી ગયો. રમતાં રમતાં કોઈ વાત ઉપરથી બંને મિત્રો લડી પડ્યા. ગોવિન્દ શરૂએ થઈ ગયો અને શ્રીનાથજીના ગાલ પર એક થપક ચડાવી દીધી. અને કહ્યું બોલ ફરીથી બે કદી અને ખીજનવીશ તો યાદ રાખજે કે મારી મારીને વાંસો લાલ કરી દઈશ. સૂર્ય ચંદ્ર વિગેરે જેના ભયથી પોતાના કામમાં લાગી રહ્યા છે, દેવરાજ છંદ પણ જેના ભયથી વખત પર વરસાદ વરસાવવાને બંધાયેલા છે, યમરાજ પણ જેના ભયથી પાપીઓને ભય દેખાડવામાં લાગી રહ્યા છે, એવા ત્રિભુવનનાથ આજ એક નાના બાલક ભક્તની સાથે રમતાં તેની થપાટ સહન કરીને કંઈ બોલતા નથી. ધન્ય છે.

શ્રીનાથજી રાવા લાગ્યા. અને કહ્યું ભાઈ ગોવિન્દ, તે કહ્યું હતું કે હું મારીશ નહિ તો પછી તે મને કેમ માર્યો? શ્રીનાથજીને રહતા જોઈને અને આમ કહેતાં સાંભળીને ગોવિન્દનું હૃદય ભરાઈ આવ્યું અને ટોડીને શ્રીનાથજીના આંખે જુદીને પોતાને ગળે લગાડીને કહ્યું ભાઈ તું રહ નહિ; તું મને બહુજ વ્હાલો લાગે છે, તારી આંખમાં આંસુ જોઈને મારું હૃદય ફાટી જાય છે. બંને મિત્રો ફરીથી રમવા લાગ્યા. રાત્રિ બધે વીતી ગઈ તેથી પ્રખુએ જોશું કે તેના માતા પિતા તેની ચિંતા કરશે એટલે ગોવિન્દના હૃદયમાં તેને ઘેર જવાની પ્રેરણા કરી. ગોવિન્દે કહ્યું.

શ્રીનાથજી, જાડુ મોડું થયું. હવે હું મેર જાઉં છું. આપતી કાલે વળી આપણે રમીશું. શ્રીનાથજીએ અનુમતિ આપી ગોવિન્દ ઘેર ગયો અને અનાથોના એકજ આધાર શ્રીનાથજી પોતાના મંદિરમાં પધાર્યો.

દરરોજ આવી રીતે જાને જાણા રમવા લાગ્યા. આ મનોહર મિત્ર મળવાથી ગોવિન્દ તેના જુના જાને મિત્રોને જુડી ગયો એક દિવસ રમતાં રમતાં ગોવિન્દને દાવ ન આપતાં શ્રીનાથજી લાગ્યા. ગોવિન્દ પણ તેમની પાછળ દોડ્યો. શ્રીનાથજી મંદિરમાં ધુસી ગયા અને મંદિરના દાર જાંધ દતા. મંદિરના દાર જાંધ થવાથી ગોવિન્દ અંદર જઈ શક્યો નહિ અને શ્રીનાથજીએ અન્યાય ક્યોં સમજીને ખહાર ઉભો રહીને ખુબ શુસ્સાથી તેમને સાચી ખોટી સંભળાવવા લાગ્યો.

જેવું મંદિર ઉઘડ્યું કે તુરતજ ગોવિન્દ અંદર ધુસી ગયો અને લાકડીથી શ્રીનાથજીને મારતો કહેવા લાગ્યો કે હવે પછી ક્યારે લાગશે કે? પુત્રીઓએ હાં હાં કરીને ગોવિન્દને પકડી લીધા અને મારી પીટીને ખહાર કાઢી મુક્યો. આથી તો વળી તેને વધારે શુસ્સે ચડ્યો અને જોશ્યો કે શ્રીનાથજી, તમે જાડુ અન્યાય ક્યોં. એક દાવ ન આપના લાગી આવ્યા અને હવે પોતાના માણસોથી મરણીને ખહાર કાઢી મુક્યો કીક છે. હવે કામે નેધ લઈશ. ત્યાં સુધી હું તને આનો ખદસો ન આપું ત્યાં સુધી હું પાણી પણ પીશ નહિ. આમ કહીને તે શુસ્સામાં ત્યાંથી આજ્યો ગયો અને ગોવિંદકુંડ ઉપર બેઠો.

અહિં મંદિરમાં ભોગ તૈયાર થયો. ત્યારે સેવકોને પ્રગટ હુકમ થયો કે તમે જે મારા ભક્તોને માર મારીને કાઢી મુક્યો છે, તે ત્યાં સુધી અહિં ન આવે ત્યાં સુધી મને ભોગ ધરાવી શકાય નહિ. તેના શરીર જે માર પડ્યો તે જથ્થો મારા શરીર પરજ લાગ્યો છે. સેવકોને શુ જાપર કે ભક્ત તથા ભક્તવત્સલ ભગવાન જુદા નથી?

સેવકો જાડુ હેરાન થયા. શોષતા શોષતા ત્યાં ગોવિંદ ગોવિંદકુંડ ઉપર બેઠો હતો ત્યાં આવ્યા અને કહ્યું કે ભાઈ, આજ શ્રીનાથજી તને જોલાવે છે. એ તારી પાસે પોતાની દાર કચુક કરે છે અને વળી તારી સાથે રમવાની હાં કરે છે. ગોવિન્દે કે હું નહિ આવું. એજ અદિ આવે અને જ્યારે હું એને ખુબ મારી મારીને સીધો કફ ત્યારેજ એ સરખો ચાલે પણ હવે જ્યારે એ દાર કચુક કરે છે ત્યારે તો ચાલો હું આવું છું. એમ કહીને ગોવિન્દ વિજયના ગર્વથી દમનને મંદિરમાં ગયો અને જોશ્યો, કેમ શ્રીનાથજી, હવે પછી ક્યારે એવી આજ્ઞા કરશે કે? એ તો કીક થયું કે તમે મને જોલાવ્યો નહિતર એવું કરત કે જાંઘરી સુધી યાદ કરત. ગોવિન્દે આમ કહ્યું તો ખંડ પણ જ્યારે તેણે શ્રીનાથજીનું મોડું ઉઘાસ જોયું ત્યારે એના સરસ હૃદયના દુઃખ સાથે કહેવો લાગ્યો, ભાઈ, તમે હજી સુધી ભોગ કેમ નથી લીધો? તમારું મુખ ઉઘાસ જોધને મને રખું આવી જાય છે. હવે હું તમને ક્યારે પણ મારીશ નહિ. તમારી ઉઘાસીનતા મારાથી સહન થતી નથી. હું હવે શુસ્સે નહિ થાઉં. તમે રાજી થાજો અને ભોગ લ્યો.

મંદિરના દાર જાંધ થઈ ગયા. શ્રીનાથજી પ્રત્યક્ષ થયા અને જોશ્યો ભાઈ, તું પોતે પણ જુખ્યો છે. આવ આપણે જાને સાથે જમીએ. શ્રીનાથજીને ખુશીમાં નેઈ ગોવિન્દ ખુબ રાજી થયો. જાને હસવા લાગ્યા. અને આનંદના અવાજથી મંદિર ગાજી ઉઠ્યું. ગોવિન્દ ગોવિન્દને હાથે વેચાણ. અચાનક દરવાજા ખુલી ગયા. ગોવિન્દને દિવ્ય દ્રષ્ટિ પ્રાપ્ત થઈ. તે સર્વજ્ઞ શ્રીનાથજીને જ જોવા લાગ્યો.

સત્સંગમાં.

વિકુલદાસ—ભાઈ વિદુલદાસ, તમેજે જે કહીઆરો દીવાનની વાતો કહી તેવા અધી-કારીઓ હાલમાં આપણા સંપ્રદાયના મંદિરમાં છે ખરા ? અમે.....મથા હતા ત્યારે મોટા મહારાજે લીધા કયા પછી મંદિરમાં તો ઘણા અધિકારી થઈ ગયા છે. તેઓ મોત્ર વાતો જવાર કરે છે જે અમે તો સેવામિત્રે કામ કરીએ છીએ, તેવા માત્ર ડાંગે દેખાડે છે અને મંદિરમાં ઘણીજ ગેરવ્યવસ્થા દેખાય છે. શાકધરનાં દર્શન કરવા અમે મથા પણ તે તો જાણે કેમ લગાઈ ધર દોષ તેનુંજ અર્થે તો જોયું અને જે નામમાત્રના કહેવાતા અધિકારીઓ પેતાની પ્રતિષ્ઠા પુરતું કામ કરી કેટલાંક સેવા કરનારાંઓને રાક લાવીને સેવા દોડવા ફરજ પાડી છે. ઉપરાંત તે વૈષ્ણવો ગિઆરાં સેવા છોડી બેસી રહ્યાં છે તે વાત આપણી નહી જાણતા હોય કે કેમ ? અસારવા શ્રીઆચાર્યજીમાં કારતક ચુદ લ રમિયારનો અજકટ હતો ત્યારે અમે દર્શન કરવા મથા હતા પણ ત્યાં તો દર્શનમાં ભીડ ન થાય અને વૈષ્ણવોને કોઈ દુઃખ ન પડે તે કારણથી શીરણોડાલાલજીએ બહુજ વોલીન્ટીયરો રાખીને બદોબસ્ત કરાવ્યો હતો. કોઈ ભીડ બીલકુલ નહી હતી કે આપણો ખાપ પણ નહી હતો છતાં ત્યાં બેઠકજીમાં એક નંદાજી કરીને મારવાડી જેના કારભારી છે તેણે દર્શન કરતાં વૈષ્ણવોમાં એક વૈષ્ણવ દર્શન કરતો હતો ત્યાં એક કુમરો વળ દબને મોટા કરીને એક વૈષ્ણવને ફોફડ મારવા માંડ્યું. વૈષ્ણવ તો દર્શનજી કયાં કરતો હતો છતાં વધારે મોટા લાગવાથી પાછું જોયું તો મોટાના ધા ધઈ રહ્યા હતા. ફોફડ એક પછી બીજો ને બીજા પછી ત્રીજો એમ ચાપડતા હતા તે વૈષ્ણવે દર્શન છોડીને નંદાજીને કહ્યું કે પથરો ને કાંતો લાકડી મારી લે કે જેથી તારી દાઝ બીતરે. ત્યારે નંદાજી કહ્યું હું તો તારાં પાપ કાપું છું ત્યારે તે વૈષ્ણવે કહ્યું કે તારે દાઝ બીતારવી છે તો હું કારણને સમજું છઉં પણ મારે લગવદનામ છોડી દબને તારી સાથે કોરટ કરવી નથી. ત્યારે નંદાજી કહ્યું જે પાપી હું તો તારાં પાપ ઘોતો હતો. હવે વિદ્યુત દારુભાઈ તેણે શું તેનાં પાપ ઘોવાનું કહીને તે વૈષ્ણવને માર મારીને દુઃખી કરવા ધાર્યું હોય તેવું મને તો દેખાણું તે વૈષ્ણવ તો ત્યાંથી જતો રહ્યો. કહેવાનો મતલબ કે શું શીરણોડાલાલજી મહારાજની તરફથી તે નંદાજી વગેરેને બીલકુલ કર નહિ દોષ તેવું દેખાય છે કે શું મહારાજથી ત્રીજી નજરથી તે બધું જોવા કરતા દરે કારણ કે આપ બહુજ ચતુર છે.

રમણદાસ કહે છે, જે તમારો પહેલોજ પ્રશ્ન છે જે કહીઆરો દીવાન જેવા અધિકારી હશે ખરા તો ? જવાબમાં.

વિકુલદાસ—ભાઈ ગોરધનદાસ, તેજાજી અધિકારી (કારભારી) તો નહિ પણ મેં તો વડોદરામાં રણોડાદાસ કરીને એક મોંઘસમાં એટલું બધું દૈન્ય દેખાવું હતું તેથી અમે તો વિચારમાંજ પડી ગયા કે આ શું ? વડોદરા મંદિરની કેવી સુદર સ્થિતિ છે તેવું કારણ શું હશે ? પરિણામે ત્રીજી દૃષ્ટિથી જોવા લાગ્યા તો તેવું મૂલ કારણ ધીગોસ્વામી બાલક્રોનાં કથા-વચનામૃત નહી સાંભળતાં અગર દૈન્યથી સત્સંગ નહીં કરનારની આવી સ્થિતિ થાય, તે લોકોનેજ આધિકારમદ રહે છે, અને તેનાથી સેવાને બદલે વિપરીત કાર્ષ થાય છે. તેવીજ રીતે કારખાનામાં, પેટીઓમાં પણ અધિકારી લોકો અધિકારમદમાં પોતાનો ધર્મ ખોઈ બેસે છે.

ગોરધનદાસ—ભાઈ વિદુલદાસ, તે લોકોની તો તેવીજ ગતિ થતી હશે કે—

વિકુલદાસ—ભાઈ, વૈષ્ણવોને જેવાને ચેતવેલો આવી તો બીજાના આવા જાનમજનની તો વિપરીત ગતિ થાય તેમાં શું નવાઈ ?

ગોરધનદાસ—ભાઈ ત્યારે એવા લોકોની મુદર ગતિ થી રીતે થાય ?

વિકુલદાસ—કૃષ્ણદાસ “ મુરતે અમુર ભયે અમુરતે મુર ભયે ચરણુ છાય ” તેવીજ રીતે થીવલુભ પ્રત્યે દૈન્ય કરે અને વલુભીનો દૈન્યપૂર્વક સત્સંગ કરે તો પાછો ધર્મ આવી જાય. દારખાનાં, પેદીઓ દાસાં અધિકારી લોકો પશુ નીતિચાલનો આદરપૂર્વક સંગ કરે એટલે તેઓનાં વલુભી તરફ દષ્ટિ કરી ચુલુનું પ્રદાન કરે તો તે લોકોની પણ સારી ગતિ થાય.

ગોરધનદાસ—ભાઈ વિકુલદાસ, લૌકિક કાર્ય પણ દીનતાથી થતાં હશે ખરાં ?

વિકુલદાસ—ભાઈ ગોરધનદાસ, દીનતા તો ચક્રલોકમાં માર્ગ કરી આપે છે.

ગોરધનદાસ—ત્યારે આ અલવસ દાસ જે આટલા બધા હેરાન થાય છે અને દુનીઆને હેરાન કરે છે તેનું કારણ તે લોકો આધકાર પદ ગોચરતા હશે, અને તેઓને દૈન્ય બીજકુષ્ઠ હશેજ નહીં તેથી તેનો પોતાનાં ધર્મો તો નાશ થયા પણ બીજાના ધર્મો પણ જગાડવા તૈયાર થઈ બેસા છે.

શીં વેલછ કેશવછ.

ઘટસ્ફોટ.

હરીને મહાત્મા ગાંધીજીને ૨૧ ઉપવાસો કરવા પડ્યા છે. એઓ પોતાના દંભી અનુયાયીઓને હલુએ ઝાળખી ચક્રયા નથી તેને મારે અનંદદ બેઠ થાય છે. મહાત્માજીને અનેકવાર કહેવામાં આવ્યું, તે પણ મજબૂત પુરાવા સીધે, છતાં તેઓએ પોતાના કહેવાતા અનુયાયીઓ ઉપર અંધ વિશ્વાસ રાખ્યો. આ પરથી એમ કેમ ન માનવું કે તેઓ પોતાની છાયા નીચે બંધાઈ કહો કે શયતાન્યતને પણ આશ્રય આપી રહ્યા છે અને તેને છાવરવાનું મહાપાપ વહોરી રહ્યા છે ? વળી પહેલાંની વાત છે. અસહકારના જન્મસમયે સરકારી શાળાઓનો બહિષ્કાર પૂર જોશમાં ચાલુ હતો. મહાત્માજીના પદે સિંચ રા. મહાદેવ દેસાઈ ‘ નવજીવન ’ માં લખતા હતા કે પૂતનાની મેડે સરકારી શાળાઓ હિન્દુઓને જરૂર પાય છે, માટે તેનો બહિષ્કાર કરો. જાહેરના રા. મહાદેવભાઈ ખાનગીમાં પોતાના એક સગા માટે સરકારી કેળવણીમાં આગળ વધવાને ક્ષોભરણીય મેળવવા વળખાં મારતા હતા. ન્યાં રા. મહાદેવભાઈ જેવાની આ અધમ પાખંડી મનોદંસા હોય ત્યાં બીજાઓની તો વાત જ શી કરવી ? તે જ વખતે મેં નીચે મુજબ એક રજીસ્ટર પત્ર લખ્યો :

કાર્તિક કૃષ્ણ ૦))

શુક સં. ૧૯૭૭.

રા. રા. મહાદેવ જે. દેસાઈ,

આપ પૂર્ણ અસહકારવાદી છો, એમ ‘ નવજીવન ’ માં આવતા આપના લેખોથી સમજાય છે. આપના એક પાસેના સગા યુવક અત્રે ‘ નિર્મલ કાસેજ ’ માં અભ્યાસ કરે છે. એમને દ્રવ્યની સહાયતા કરવાની લાલામણ આપે અનેના ચોક્કસ ચૂદરથને કરેશી, તે વાત શું ખરી છે ? તે કાર્ય એક સુરત અસહકારીને જાજતું છે ? આનો સત્વર જવાબ લખવા કૃપા કરશો, અને તે જાહેરમાં પ્રકટ કરવાની પરવાનગી આપશોજ એજ.

વસંતરામ હરિદ્રુષ્ટ રાસરી,

ઉપરના પ્રશ્નો રા. દેસાઈ જવાબ આપે જ શાના ? આજ ને આજ અનેક દેભાષાડોથી ખાંચોખાંચ લેરેલા અસહકારી ખોળીયાંઓનું સહ કહો કે નગન સ્વરૂપ થોડાં વર્ષ પહેલાં મહા યુજારાતના કેવિસમદ્ સત્ય વક્તા શ્રીયુત નાનાલાલભાઈએ

“ બંધાઈનો સંઘ ”

એ નામથી પ્રકટ કર્યું હતું. આ સમયે લલભવા દંભીઓએ કવિશી સામે ધૂળતી મૂકીએ કેવાની અભ્યાસાદી ચેષ્ટાઓ કરી હતી. પણ થોડા જ સમયમાં ગાંધીજીનો આશ્રમ જ બંધાઈથી

ધેરાયલો પૂરવાર થયો. ગાંધીજીના લચીત જમનભાઈ, કે જેઓ પંચોથી સત્યાગ્રહાશ્રમનાં નાણાં તથા બીજી વસ્તુઓ ઉગ્રાપત કરતા હતા, જેમની સામે પાંચ વર્ષથી ચોકસો ચતા પણ મદાત્માજી સંભળવા ના પાડતા, તેમનાં પાપો કૂટ્યાં, અને જાલસામુખે

દર્શ હજાર રૂપીઆ ઉગ્રાપત

કર્પાનું જાહેર થયું. વળી આશ્રમમાં વ્યભિચારની બદખૂદલાયથી જાહેર થઈ. આ બધાને દાંડવા માટે ઉપવાસો થયા તથા 'નવજીવન' માં અગ્રલેખો લખાયા. 'બદમાશોનો સંઘ' સિદ્ધ થયો.

છતાં ગાંધીજી પોતાના અનુયાયીઓ પર અધે વિશ્વાસ રાખે જ જતા હતા. હાલની અરપૃથક્તાનિવારણની હડત ચાલુ કરવામાં આવી અને તેને શુદ્ધ "ધાર્મિક આત્મશુદ્ધિની હડત" તરીકે ઓળખાવવામાં આવી, ત્યારે પણ બદમાશોનો સંઘ જ અગ્રેસર બન્યો હતો અને તેનાથી ચેતવા માટે મેં ત્રીએ મુજબ એક પત્ર આજયી ૭ માર્ચ પર મદાત્માજી ઉપર લખ્યો હતો:-

કાર્તિક સુદ ૧૪

સં. ૧૯૮૯

મદાત્માજી,

"શુજરાતી પંચ" ની કાપડીઓ મળી દસી. આ સાથે 'અરપૃથોદ્ધાર' નામક લેખમંત્રક ગોઠવું હું. થું અને ૧૯૨૧ ની સાલના ગાંધીજી સને ૧૯૩૨ ની સાલમાં આત્મા સાથે પલટાઇ તો નથી ગયા ને ? આજી આપ જેમને આપના લાખોની સંખ્યાના અનુયાયીઓ કહો છો તેમાં લાખોમાંથી રાજજી જેવાને બાદ કરતાં બધાઓ દેવ અને પાખંડમાં હળી રહ્યા છે. આપને કહ્યા છે, કહે છે અને કંગશે. એમના અત્યાચારોની તપાસ કરવા માટે એક કમીટી નીચે તો કાળી ગણાતી પ્રજા જારી પ્રગતને પણ કેવી ટપી જાય છે તેની ખબર પડે. એજ

વસંતરામના યથાચોગ્ય,

ચરવડા જેલ,

તા. ૧૫-૧૧-૩૨.

૧. બાઈ વસંતરામ શાઓ,

"શુજરાતી પંચ" ની કાપડીઓ તો હજી મળી નથી, તેમજ લેખસંગ્રહ નથી મળ્યો. મારી પોતાની હાલ પ્રમાણે તો હું ૧૯૨૧ ની સાલમાં દત્તો તેજ હું. પણ એવી આશા રાખું છું કે એજ દિશામાં કાંઇક પ્રગતિ મેં કરી દસી. આ જગતમાં કાંઇ દિયર તો નથી જ, કાં આગળ વધે અથવા તો પાછળ પડે જે લાખોને ચિરે તમે પાખંડ કહ્યો છો એ લાખોને વિરે મેં નથી લખ્યું. પાખંડ મણી શકાય એવી સંખ્યામાં હોય છે. મેં તો અગણ્ય લાખોને વિરે લખ્યું છે. તેઓમાં અજાન હોય, મૂર્ખતા હોય પણ પાખંડ ન હોય. જરા ઉડા ઉતરીને વિચારશો તો આ વાતની પ્રતીતિ થવા વિના તમને નહિ જ રહે. અત્યાચાર વિરે જરા વધારે ફાડ પાડે એમ હું ઇચ્છું છું.

બોદનતસના બં. મા. (વદેમાતરમ)

ઉપરનું પોસ્ટકાર્ડ મળ્યા પછી જીતે જ દિવસે નીચેનું પોસ્ટકાર્ડ મળ્યું. મારા હમણાં જ પ્રકટ થયલા 'અરપૃથોદ્ધાર' નામક પુસ્તકમાંની "એક જ બૂલ" વિરે તેમાં ઉલ્લેખ છે.

ચરવડા જેલ,

તા. ૧૭-૧૧-૩૨.

બાઈ વસંતરામ,

બાઈ મદાદેવની ચકરી આંખ તમારા "અરપૃથોદ્ધાર" માં એક ગંભીર બૂલ જોઇ મઠ છે. હુએ પાનું ૨૧૪ લીટી ૪-૫. મારી કલમે તમે જે એક નાનકડો ચમ્દ મદાવ્યો છે એજે

અર્થનો અનર્થ કરી મૂક્યો છે. તમારા ચોપાનિઆમાં “વૈષ્ણવો ધરાવે છે” એમ જણાયું છે ત્યારે મારી નવજીવની નોંધમાં “છે” શબ્દ છે જ નહિ. એરવે જ્યાં મેં રસત રૂપે જે વાક્ય મૂક્યું છે એને તમે કે જાપનારે નિશિત વિચાર જનારી દીધું છે; ત્યારે તમે અને હું જાને જાણીએ છીએ કે બધા વૈષ્ણવો તમારા લેખમાં તમે જે વિચારો દર્શાવ્યા છે એ વિચારો નથી પરાવતા. નામધારી વૈષ્ણવ નામને દીપાવનારા કર્મચારી વૈષ્ણવ ચર્ચ તપ તે સ્વર્ગને આપણે આપે પૃથ્વી ઉપર લાવી મૂકીએ. મગધૂર બ્રુવ સુધારવને. આટલું પણ કહી દઉં. તમારું ચોપાનીડ આપું બાહ્ય મદારેવ જોઈ ગયા નથી. અને હું તો ખેલો અકાસે છે જ એવા પાખો છું.

મોદનદાસના બં. મા. (વન્દેમાતરમ.)

ઉપરના જાને પોરટકાડનો તીર્થ મુજબ જવાબ મેં લખ્યો છે:-

કા. ૫. ૧૦-નાં. ૧૯૮૬.

મદારમાછ! જાને પોરટકાડ મધ્યાં.

આ સાથે ‘શુદ્ધતાતી પંચ’ ની કાપલી કરીને મોકલું છું. એ આપનો જ ભૂતકાલનો સને ૧૯૨૦-૨૧ નો આદર્શ છે. આપ એ દર્શનમાં ખાર વર્ષ પહેલાના ગ્રામીણને સારી પેઠે નિરંખી ચક્રશે. અત્યારે એ આદર્શથી કેટલા બધા સાતથો હો, એની પણ આપને ખબર પડશે. આદર્શથી દૂર થયું એને શું આપ ‘પ્રમતિ’ માનો છો? જનદરમાં ‘દેવપૂર્ણ વ્યવહાર’ અર્થજો તરફ ન રહે તેને માટે જ આપની લગ્ન હતી. પણ હવે તો રોડી જેરી વ્યવહાર અને મંદિરપ્રવેશની પણ આપ લીમાવત કરી રહ્યા છો. અને શું આપ ‘પ્રમતિ’ કહો છો? અરણ્યપત્તનિવાસીમાં રોડી જેરી વ્યવહાર અને મંદિરપ્રવેશ પણ આપી જતો દનો તો સને ૧૯૨૦ માં જ એ વાતને સ્પષ્ટ કહી નાખતી હતી કે અંતિમ ખેવ આજ છે. આ તો આપે ખચિત જ દિંદુસભાજ સાથે ઉતરપોટી કરી છે. એમ કરીને આપ દયાનંદી સમાજની રિથતિમાં મૂકાયા છે. આપે મદાન પ્રચલતથી જે દિંદુ-મુસ્લીમ એકબી સમારત ઉભી કરી હતી, તે દયાનંદી બાહ્યોએ ‘શુદ્ધિસંજ્ઞા’ ને નામે કરી જમીનદોરત કરી નાખી? આપના ઐતિહાસિક ચરિત્રકાર્યને કેવી ઉડી ખીળખું નાંખ્યું? આપ તે બૂલી ગયા નહિ જ હો. આપના તેથી કકળેલા અંતરાત્માના અવાજને દલુ પણ કાનમાં જાગુકારા મારે છે, આવી જ રાષ્ટ્રની એકતા તોડનારી આપની આજુ પ્રતિષ્ઠી લાખે સનાતનીઓ કકળા ઉડાયા છે. આમાં તો હું દેશનું દુર્ભાગ્ય જ સમજું છું. આપને દેશ રાષ્ટ્રીય એકતાના રથાપક તરીકે જોવા છડે છે, પણ આપને દાયે તો જાણે અજાણે એકતા પર કુદરવાત ચર્ચ રહ્યો છે. આપને દેશ રાષ્ટ્રીય તરીકે સન્માને છે. જો આપ સંસાર સુધારના વિષમ ક્ષેત્રમાં જ સર્વ સક્તિઓ વેકરવા માંડશે તો આપનું સન્માન રહેશે નહિ. દેશુએ એ ક્ષેત્રમાંથી પાછા ફરો!

મદારમાછ! આપ આપના મળી ચક્રાય તેવા દંભપાખંડપૂર્ણ અનુવાદોઓની આંખે ન જુઓ, આપે તો અગ્રણ્ય લાખો તરફ ખીટ માંડવી રહી ગળ્યા માંડ્યા દંભીઓ એ ‘અજ્ઞાન’ અથવા ‘મૂર્ખતા’ નો કોશ મેરલાભ લઇ રહ્યા છે તે આપનાથી છાનું દોષ એમ હું ન જ માનું. અરણ્યપત્તનિવાસી કરવા નીકળેલા એ કાઠ ફિરકાઓએ એકાદ અંત્યજને પણ પેતાના ઘરમાં કે કાર્યોલખમાં અપનાવ્યો નથી. વર્ણના વડાખાં વાધો! દલુ ત્યાંના ત્યાંજ છે. ત્યાર દંભી અનુવાદોઓનાં અજ્ઞાન અને મૂર્ખ રાજાં પણ તેમાં જ અને છે.

અત્યાચાર વિશે શું કહ્યું? માફ કરો. રાજા ગામેરીતને શુદ્ધવર્મમંદિરના દરરી તરીકે આપજ શું કરવાને થેરી રહ્યા છો? દરરીનો ધર્મ તો સંસ્થાના ઉદ્દેશ જગરવાનો દોષ. આપ

તો ઉદ્દેશનું ખૂન કરવા, વિશ્વાસઘાત સથા બેવફાઈના શુનાદ કરવાની તાલીમ શું આપતા નથી ? શું સંત્યાગદાશ્રમના કોઈ દ્રુષ્ટીને આશ્રમના ઉદ્દેશનું ખૂન કરતો આપ સાંખી શકશો ? રામ જામોરીનને સંસ્થામાંથી રાંછનામું આપવાનું આપ કહી શકો પણ ગમે તેવા પણ સંસ્થાના ઉદ્દેશને ઠોકર મારવાના વિશ્વાસઘાત કે બેવફાઈના પાક તો આપ નજ શિખવી શકો.

અમદાવાદના જૈન મંદિરમાં ખેસાડવા માટે બાર બાર આના રોજંથી અંત્યજ્નેને રોકવામાં આવ્યા અને મંદિર ખુલ્લું મૂકવાનું નાટક ભગવાયું. પણ ધર્મધીર બદાદુર જૈન લાઇઓએ વેળાસર એ કસકને ઉગતાં જ કામી દીધું.

દો. મહાદેવલાઇની સંકેરી આંખે જણાવલી બૂચ એ પ્રશ્નમાં મુધારી હતી, પણ ખીખી જોડાવનારાઓ ફોર્મ છાપવાની રજા મળ્યા પછી જુલો મુધારવામાં દેરલા ખેદરકાર હોય છે તે આપનાથી અગત્યનું ન જ હોય. પુરસદે 'અરપૂર્યોદ્ધાર' તરફ દષ્ટિપાત કરશે જ.

વસંતરામ હરિકૃષ્ણ શાસ્ત્રીનાં ચણાયોગ.

મારા ઉપરના પત્રનો જવાબ મને નીચે મુજબ મળ્યો:-

ચરવડા જેલ,

તા. ૩૦-૧૧-૩૨.

બાઈ વસંતરામ,

તમારો કાગળ મળ્યો. આગસ્ટા વિચારો અને આજના વિચારોમાં કોઈ ફેરફાર હોય એવું મને લાસતું નથી. અરપૂર્યતાનિવારણની જે હદ મેં પૂર્વે બાંધી હતી તેજ આજે છે. મંદિર પ્રવેશ ત્યારે પણ હતો. મંદિરો ખોલવાના પ્રયત્ન ત્યારથીજ ચાલતા આવ્યા છે. કાશીવિશ્વનાથમાં અરપૂર્યોનો પ્રવેશ થયો હતો અને તે ઉપર ચર્ચા પણ થઈ હતી. તેને આજે સાત વર્ષ થયાં. એમાં હું સાથે હતો. તમે છાપેલા 'અરપૂર્યોદ્ધાર' માંજ મારો લેખ તમે લીધો છે. તેમાંય મંદિરપ્રવેશ છે. પણ હું નેહ' છું કે તમે તો મંદિરપ્રવેશને તમારી દીકામાં ઉગાવી દીધો છે. 'તો એમ કહ્યું છે કે બધા દેવાલયોમાં અંત્યજ્નેને જવાનો હક ન હોઈ શકે. આજે પણ હું એમ કહું છું, પણ જે દેવાલયો જાહેરનાં છે, અને જેમાં અંત્યજેતર બધા દિક્ક જઈ શકે છે તેમાં અંત્યજ જવા નોંધએ એમ મેં પૂર્વે કહેલું અને એજ હું આજે કહું છું. રાદીબેડીઅવધાર અરપૂર્યતાનિવારણમાં સમાય છે એમ પૂર્વે નહોતું કહ્યું તેમ આજે પણ નથી કહેતો. એ વસ્તુ તોખી છે એમ પૂર્વે કહેલું અને આજે પણ કહું છું.

જામોરીનને દ્રુષ્ટના ઉદ્દેશોને લાંચ કરવાનું મેં મુચ્ચુંજ નથી. જામોરીનની પાસે દ્રુષ્ટ જેવું કોઈ છેજ નહીં. જે હોય તે ચાલતો આવેલો રિવાજ અને આજની અદાલતોના ફેંસલા છે.

તમને નથી લાગતું કે ખીખી જોડાવનારાઓએ 'છે' રહેલા દીધો તો દરેક નકલમાંથી તમારે કદાવલો નોંધતો હતો ?

પાખંડ અને અત્યાચારનું તો તમે કોઈ દષ્ટાંતો આપો તો હું જરૂર ઝાંપધ કરું. હાલ જે હીલચાલ ચાલી રહેલી છે તેનો ધારજપૂર્વક અભ્યાસ કરવાનો તમારો ધર્મ છે એમ મને લાગે છે. તમારા કાગળમાં મને અધીરાઈ અને અનશ્વાસની વાસ આવી છે.

મોહનદાસના બ. મા.

ઉપરનો પત્ર મળ્યા પછી મેંજ પત્રવ્યવહાર કરવો માંડી વાળ્યો. કારણ કે અનુગ્રામીઓનાં રમકડાં બનેલા ગાંધીજી કેવળ વિતંડાવાદજ કરી રહ્યા હતા. ઉપરના પત્રમાં જેમ કોઈ વચીત પોતાના ખરા શુદ્ધાચાર અસીલનો બચાવ ફેરે તેવીજ 'વાસ' આવી રહી છે. અંત્યજનેના

પરિપ્રવેશ માટે માંધીય અને તેમનાં અનુયાયીઓએ નામ વાઈસરોય અને ધારાસભાના સભા-સભોની ડાહીમાં હાથ ધાલીને જે પગથી કરી છે તે છુપી રહી નથી. પોતાની કમલે દેહધુની લક્ષ્મીને બ્રાહ્મણ સાથે પરલુગ્તવાનું 'ચોકકુ' માંધીયએજ ગોઠવ્યું છે. વળી રા. શંભોપાધ્યાયેની બ્રાહ્મણના લક્ષ્મીની સાથે પોતાના વાણીયા પુત્ર દેવદાસ સાથે લગ્ન કરાવવામાં આગળ પડતો જાન મદાતમાયએજ લીધો છે. આ રીતે ઉપરથી કંઈ અને અંદરથી કંઈ રમતો રમાય છે. આ વાગળજ હવે કોણે રસાવનાર નથીજ. પ્રાચીન વર્ણશ્રમવ્યવસ્થાને છિન્ન મિન્ન કરીને બધાને ક્રિશ્ચિયન બનાવવાનો માંધીયનો ઇશિદો હવે છુપો રહ્યો નથી. ક્રિશ્ચિયન પાદરીઓ તો ખુશી રીતે સમા આવે છે ત્યારે માંધીય તો અંદર પેસીને ઉપરથી મોઢક વાગળજ ખીજીને લપકર વિચારવાતની વાચ રમી રહ્યા છે.

માંધીયના સાહીના સાક સુવર્ણચરિત્ર એક પત્રિકાએ જે પ્રકટ કર્યા તે વિષે માંધીયએ એક પત્ર મારા ઉપર લખ્યો તથા એક પત્ર મારા રહેલી વેદ ભાષ્યકરભાઈ ઉપર લખ્યો, તેની નકલ આ રહી:—

ભાઈ વસંતરામ,

તમારી પહેલી પત્રિકા મને કોઈ ભાઈએ મોકલી છે. તે ઘોડી વાંચી. આટલું અમન્ય તમે લખી શકો એવી મેં શ્રદ્ધામાંએ આશા નહોતી રાખી. મને તો તેથી નુકસાન નહિ ધાવ. પણ વૈષ્ણવ ધર્મનું શું ?

૩૦-૧૧-૩૨.

મોહનદાસના બં, મા.

ચ. મં.

ભાઈ ભાઈશંકર વેદ,

તમે વસંતરામ શાસ્ત્રીની પત્રિકા મોકલી તે ઉપર ઉપરથી વાંચી ગયો. કુખલ છે, પણ મારાથી એનો જવાબ ન અપાય.

૨-૧૧-૩૨.

મોહનદાસ માંધીના બં, મા.

ચ. મં.

ઉપરના પત્રનો જવાબ તીમે મુજબ મેં આપ્યો—

મિતિ મા. સુ. ૭ સં. ૧૯૮૯.

શીલ્પ મદાતમાય,

મારી પહેલી પત્રિકા મારા એક વૈદ્યરાજ મિત્રેજ આપને ખીરી હતી. એ પત્રિકાથી આપને કુળ થયાથી મને પણ કુળની લાગણી ધાવજ. પણ ત્યારે આપ કોઈ સનાતનીઓની આંતરડી કટગાવી રહ્યા હો, ત્યારે આપના વ્યક્તિગત કુળને વધુ મદત આપવું નહીં ધરે.

પત્રિકામાં લખેલાં મુદ્દા મેં આજે નવાં જાણ્યાં નથી. સને ૧૯૨૬ માં 'શ્રી રાજેન્દ્ર સનાતન ધર્મસભા' તરફથી તે પ્રકટ થયાં હતાં. મારી પત્રિકામાં તો માત્ર તેનો ઉલ્લેખ છે. સને ૧૯૨૯ માં તેની એક નકલ આપને મોકલી હતી. ત્યારે આપે તે વિષે કોઈ ખુલાસો ન જ કર્યો ત્યારે તેની નવી આરતિ સમવાનુકૂલ પ્રકટ કરી છે. એ પત્રિકાની અસલ આરતિ આ સાથે છે; તેથી મારે વિષે થયેલા આપનો સંદેહ દૂર થશેજ.

આપ જેને 'અસલ' કહેા હો તેને દૂ સત્ય માનું છું. પત્રિકામાંનાં વાક્યો આપનાંજ છે અને તે 'નવચરન' તથા અન્ય વર્તમાનપત્રોમાંથી ચૂરી કરેલાં છે. આપના સંદિગ્ધતા ખૂબ બારીકાઈથી અભ્યાસ કરનાર દૂ તે પત્રિકામાંનાં વાક્યોને આપના હાથ વિચારના પ્રતિજ્ઞા તરીકે માનનાં અવશ્યક નહિજ.

છતાં તેમાંનાં વાક્યો તથા વિચારો આપના નથી તેવું જાહેર કરશો તો જે આનંદ મને થશે તે બીજાને નહિજ થાય.

સત્ય અને અસત્યની યથાર્થ ખજાર તો ઇશ્વરનેજ છે. મનુષ્યની બુદ્ધિ તેમાં કંઈ કામ કરતી નથી. તેમાં 'શકરી આંખ' પણ નિરર્થકજ છે. આપ વર્ષોથી અરપૂર્યોની સાત કરોડની સંખ્યા જાણાવી, છેક તદ્દન ખોટું લખીને જનસમાજને ભડકાવી રહ્યા છો. એ વિષેનો આપનો જમ દૂર કરવા માટે ઘણાંએ પ્રયાસો કર્યા પણ આપે તો ખોટી વાતજ પકડી રાખી ! તે ભૂલ (હિમાલય જેવી !) રા. કૃષ્ણે સુધારી. હવે પણ ચાર કરોડની સંખ્યા ખોટી છે.

આશ્રમમાંના જાનભાઈ માટે વર્ષોની ફરીયાદ હતી. પણ આપે સત્ય શોધવાની દરકારજ ક્યાં કરી હતી ? દશ હજાર રૂપિયા ઉચાપત થયા ત્યારેજ આપે હોહા કરી મૂકી !

ભારે આપના જેવા 'મહાન્ સત્યાગ્રહી'ની આ શિયતિ છે તો હું કોણ ? સત્ય અને અસત્યનો નિર્ણય શક્તિ અનુસારજ કરવો રહ્યો.

આમાં નુકશાનનો પ્રશ્નજ નથી. આપ હયાત છો, હવેજે જમ દૂર કરી શકો છો.

આપના પત્રિકામાંના સાઠ મૂંઝાથી વૈષ્ણવ ધર્મને તો કંઈ નુકશાન નહિજ પહોંચે.

વળી આપના જેવા મહાન્ સત્યાગ્રહી વર્ષો સુધી સાત કરોડ અરપૂર્યોની તદ્દન ખોટી વાતથી જનસમૂહને ભડકાવતા રહ્યા, તેથી વૈષ્ણવ ધર્મને 'નુકશાન' ન પહોંચ્યું તો મારી પત્રિકાથી તેમ ઘશે એમ હું તો માનુંજ કેમ ?

આ સાથે પત્રિકાનો બીજો અંક મોકલું છું.

વસંતરામના યથાયોગ્ય.

ઉપરના પત્રનો કરોડજ જવાબ મલ્યો નહિ, તેથી બીજો પોસ્ટકાર્ડ નીચે પ્રમાણે મેં લખ્યો—

મા. વ. ૩-૧૯૮૯.

શ્રીયુત મહાત્માજી !

મારી આર્થ સંસ્કૃતિ સંરક્ષક પત્રિકા વિષેનો તા. ૩૦-૧૧-૩૨ નો આપનો પોસ્ટકાર્ડ મજેલો હતો તેના જવાબમાં માર્ગશીર્ષ સુદ ૭ મના રોજ એક પત્ર તથા છપેલી પત્રિકા વગેરે મેં મોકલ્યાં હતાં. આપે તેનો જવાબ આપવાનો શ્રમ લીધો નથી. આપના જવાબની રાહ જોઈ છું, કારણ કે એ બધો પત્રવ્યવહાર જાહેરમાં મૂકવાનો મારો ઇરાદો છે. વસંતરામના યથાયોગ્ય

ઉપરના પત્રનો સુદશે જવાબ મલ્યો નહિ. છેવટે આ અંકમાં બધો પત્રવ્યવહાર પ્રકટ કર્યો છે.

મુખ્ય ચોકાઈ—મારા બધા પત્રોમાં એક વસ્તુ તો ઓતપ્રોત છે. ગાંધીજીને મેં આગ્રહપૂર્વક લખેલું કે, તમારા અનુયાયીઓના દબો-પાપડો અને અત્યાચારોની તપાસ કરો. પણ તેમણે એ વાત પર કદી લક્ષ્ય આપ્યું નથી. જતીલાનવાલા ખાગના અત્યાચારો કરનાર અમલદારોનો પક્ષ કરવા માટે બધા માણ વાંધસરોય લોડ એમ્પ્લોઈને વગોવે છે. હું કહું છું કે ગાંધીજી લોડ એમ્પ્લોઈ કરતાં લગારે ઉદાર નથી. તેમણે હિંદુસ્થાનમાં આવીને પોતાના ખદમાશ અનુયાયીઓનો ઢાંકપીછોડાજ કર્યો છે. પણ આખરે પાપ ફૂટ્યું અને ઘટસ્ફોટ થયો.

પોત પ્રકાશ્યું—એક ગોરી ચામડીની બાઈ સુરોપથી અહીં આવી. આ બાઈ પહેલા નંબરની પુંચવી હતી. અહીં પણ તેણે ઘણા યીકાર કર્યા હશે. તેની દુનવળી ખૂબસૂરતીની આગમાં ઘણા પતંગીયા બન્યા હશે. તેણે જોયું કે જાહેરમાં ૩૫ કરોડ સંખ્યાની જનતાના ઉદારક ગણાવ્યાં અને ખાનગીમાં વિષયોની લાલસાઓ તથા તનમનની ચેળ પૂરી પણ કરી શકીએ

સાંપ્રદાયિક પ્રવૃત્તિ.

શ્રીમદ્દક્ષિણમળ્યન્તીમદામદોત્સવ—પ્રથમ દિવસ ૩૧મી ટા. ૨૦-૨૧-૨૨-૨૩-૨૪ એપ્રિલ ૧૯૩૩
આ પાંચ દિન સનાતન યુગ સમાપ્તિ આશુ અધિવેશન એ. શ્રી ૧૦૮ શ્રીમળ્યલક્ષણ મદાશનશ્રીના
પ્રમુખપદે થયું હતું. આને ટા. ૨૦ ના રોજ સંભળ્યા છ વાગે તે દિવસનાની સ્વામી સાથે શ્રીમદ્દક્ષિણમળ્ય
સરપ્રથમ ચાર ધોડાની યાત્રીમાં નિહળ્યું હતું, દબરો માણસોની મેદનીથી બંદે આ સરપ્રથમ નવરત
અનેક સહુદરથી અને પંડિતાની યાત્રીઓ તથા ગાયકની યાત્રીઓ દલી. નવરત્ન, ચિત્રાચુર, દેશભાઈ
ચિત્રેશી, ધણા મેષુરો આલ્યા દલા, ચણિંધ એન્ડ, મદાચીરતના તથા સનાતન ધર્મ યુગ સમાપ્ત
તેવંસેવકો સાથે શ્રીમદ્દક્ષિણમળ્ય મંડળના તેવંસેવકો દલા, સરપ્રથમ ત્રણ ચાર માણસો રત્નાર્થ
પસાર થઈ અધિવેશન માટે રત્નવં જનાવેલા વિશાળ મંડપમાં પહોંચ્યું હતું. સરપ્રથમ નિયાતીસમઠ
બલનિકે હોડોનાં મન બદલ આશ્ચર્ય દલી.

મંડપમાં શ્રીમદ્દક્ષિણમળ્ય રિવિનિયનું ગીત ગાયા બાદ એ. શ્રી ૧૦૮ શ્રીમળ્યલક્ષણ મદા-
શનશ્રીએ શ્રીમદ્દક્ષિણમળ્ય ચારિત્ર્ય ઉપર મુંદર વિવેચન કર્યું હતું, અન્ય વિદ્વાનોનાં તે પ્રશંસાનુસાર
વિવેચનો થયા બાદ શ્રીમદ્દક્ષિણમળ્ય નવયોગપૂર્વક કાચું પૂજું થયું હતું.

બીજો દિવસ—ટા. ૨૧ ના રોજ છ વાગેથી અધિવેશનનો પ્રારંભ થયે વર્તી મંજરામઠ કરવાઈના
બલનથી જનાવામાં આપૂર્ણ થાતિ આવી ત્રણ ચારથી પાંચ દબરની મેદની દોવા છતાં એક પણ જીન
ચળને અવાજ આવતો ન દેતો, (સર્પમાં નિમગ્ન થઈ) પ્રમુખપદ માટે વિનંતિ થઈ પ્રમુખપદે મદાશનશ્રીએ
પસારીને આ સનાતન યુગ સમાપ્તિ અધિવેશનનું પ્રમુખપદ સ્વીકારવા ખાસ પ્રશંસન જણાવતાં
હયુ ૧:—શ્રીમદ્દક્ષિણમળ્ય નવયોગને મુંદર અરસર સાથે દોવાથી તે મદાન અધ્યાત્મશ્રીના સાર્વજનિક
ઉત્સવ ઉત્સવ, અને તે દ્વારા અખિલ સનાતન જનાવા ઉપર શ્રીમદ્દક્ષિણમળ્યે થોડા ઉપકાર કર્યા છે તે
સનાતની પ્રભ બંધે તે માટે આ કદ મેં લીધું છે. પછી સનાતન ધર્મનું મુખ્ય અંગ અધ્યાત્મશ્રી આપે
જણાવ્યું હતું. ત્યાર પછી આશ્ચર્યધર્મની મુંદર વ્યવસ્થા મદાશનશ્રીએ જણાવી દલી.

સારભાઈ કવિરાજ પં. અખિલાનંદનું એ કલાક મુખી વિદ્વાપૂર્વક ગ્યાખ્યાન થયું હતું. એમાં
આજમલના નાસ્તિકોનાં મુખમંદન સાક્ષેષ પ્રમાણેથી કર્યા હતાં, આ વખતે ઘણા નાસ્તિકોએ થોડાની
ઝેરસમજીને પશ્ચાત્તાપ કર્યા હતા બાદ એ. શ્રીમળ્યલક્ષણ મદાશનશ્રીને, ૩૧મીના મેષુર અને તેવં
સનાતની પ્રભ ઉઠેથી અસિનંદન પત્ર આપવામાં આવ્યું હતું. જે અસિનંદન પત્ર જોઈને રહીશ વંદ-
સેન ચદશમ જેટલી બી. એ. મુનીસીપલ કાર-સીલર માલ (બલ પૂર્વ) એ. મેટરેટ્ટે આપ્યું હતું.

અસિનંદન પત્રનું ઉત્તર આપતાં મદાશનશ્રીએ જણાવ્યું કે અમને જે બંને અસિનંદન પત્ર આપી
કુળજાન કરવામાં આવ્યું છે તેથી અમને આશ્ચર્ય થાય છે, જેમ એક સીપાલીની ફરજ છે કે, થોડાની
ફરજ બલવથા તેણે ઘણે પદે ઉપર બલવથા અને દોશીઆર રહેવું જોઈએ, તેવી રીતે હું ધર્મને
સીપાલી છું. માટે મારી ફરજ છે કે આજ બલંકર સમયે મારે સાવધાનતા પૂર્વક બલવથા રહી ધર્મરક્ષા
માટે સર્વથા પેદા કરવો જોઈએ એમાં હું મારી ફરજ સમજું છું, આ ફરજ હું આજ કરું અને તેમાં
ન્યૂનતા દોષ તે પૂર્ણ કરવા શીલાવધુ પ્રકારે પ્રાર્થના કરું કે મારી ફરજ બલવથામાં મને પૂર્ણ પ્રજ્ઞ
બનાવે. આ પત્રદ્વારા અમને આજાણના ચાલારાજામાં થઈ ધર્મની દાનિનું સૂચન કર્યું છે, તે બોલાર
છે એને માટે અખિલ જાતમાં રચનામાં કાચું કરવાની ભર છે. આજાણ સારવર્તમાં જે વર્તમાન સંસાર
સંધ વિશે જે જે શું સનાતની-સંરચાએ છે તે સંરચાઓની સાથે મળીને અથવા તેના આદર્શવાદી
સ્વતંત્ર સંરચાઓ પ્રકટ કરી અભારે સંપ્રદાયિકી મામ કરવાની ભર છે. ત્યારબાદ રાવડા સાહ્ય અમી-
વાર થાને જ્યેષ્ઠ અને સાંતિથી સમા વિદ્યર્જન થઈ દલી.

ત્રીજો દિવસ ટા. ૨૨ ના રોજ છ વાગેથી બલનિકાનાં રસિક શ્રીવેન ચાલુ થતાં આ બલનિકા
શ્રીવેન અનુસાર કુળજીવન ગાતા દલા. નિયાતીસમઠ શીખાવે છે, શ્રીમ કવિદાઓ દુલ
અનાચીને ગાતા દલા.

ત્યારબાદ સાક્ષીજી શ્રીમનભાઈ સાદિલજીનું શુદ્ધાદેવતાલ તથા પં. વાઘાઈ શ્રીમતીજી અને વિચાર ઉપર બ્યાખ્યાન થતાં હતાં ત્યારબાદ ચીલાના પ્રમાણથી અરપૂરવતા નિર્વચન એ વિષય ઉપર પં. અખિલાનંદનું બ્યાખ્યાન કરે થતાં તેમણે સામઘટકો વેળેના યોગ્ય અર્થ શી રીતે કરે છે તે વખતેવખત સત્યાર્થપ્રકાશના ટુકો રાંધીને જતાવ્યા હતા. સત્યાર્થપ્રકાશમાંથીજ સિદ્ધ કરી જતાવું છે તેવું દવાનંદ અરપૂરવતા માનતા હતા. આનંદાદના તેમના સિધ્ધી દવાનંદને બદલે અન્યાર કરી રહ્યા છે. પછી ચીલાજીમાં “વિદ્યાવિનયસમ્પન્ને” શ્લોકનો અર્થ સમજાવ્યો હતો. તેમાં સમદર્શી થયાનું લખ્યું છે, સમવર્તી થયાનું લખ્યું નથી. તોયે વેદાનુભાવ અનેક વચનના પ્રમાણ આપ્યાં હતાં અને ચીલાદ્વાય અરપૂરવતા સિદ્ધ કરી જતાવ્યા હતા.

આજે પણ પ્રવચન ચલુ કર્યાં હતા. પહેલો કાવ્ય તેા ત્રીસ દલાક બીજા એકાદે કાવ્ય છેકાના બીજો ચાર વિરોધ બહેર કરી, તેનો વાર વાઈસરોય ઉપર કરવાનો કાવ્ય કર્યો હતો. બીજો કાવ્ય મંદિરમાં અહોતોનો પ્રવેશ કરવાના રચનાર્થના બીજા સાથે ચાર વિરોધ બહેર કરી તેનો વાર વાઈસરોય ઉપર મોકલવાનો કાવ્ય કર્યો હતો, ત્રીજો કાવ્ય અને સંસ્કૃત મહાવિષ્ણુવચ પ્રકટ કરવા મંદેનો હતો, તે વિદ્યાદયમાં દિની, ઈમેજ, અને સંસ્કૃત, શિખરવાનું રાખવામાં આવે. તે મંદે કુંડ કરવાની પણ એકવલુ કરવામાં આવી હતી, અને સાંતિથી રાવના બાર વાગે સમા નવશેષ સાથે વિદ્યાર્જન રક હતી.

ચતુર્થદિન તા. ૨૩ ફેબ્રુ. પં. અખિલાનંદનું શ્રીવ પ્રમાણેથી મૂર્તિપૂજા અને સવાવન ધર્મની વિશાલતા દર્શાવનારું બ્યાખ્યાન એક કલાક ચલુ હતું. ત્યારબાદ શ્રી. શ્રીમતજીના મહારાજાશ્રીનું વિદ્યાપૂર્વક રસિક બ્યાખ્યાન ચલુ. બીજા રાવના એક વાગે પૂર્ણ ચલુ હતું.

વિદ્યાનનાં સન્માન.

મજબના વેણુવોની વિનંતિને માન આપીને પુષ્કિલપ્રકાશના સુપ્રસિદ્ધ વિદ્વાન શ્રી. શ્રી ૧ શ્રીમતજીના મહારાજા મહારાજા મુંબઈથી તા. ૩-૧-૩૩ ની રાવના રવાના થઈ બીજે દિવસે સવારના નવ કલાકે ભાડ્ય પધાર્યા હતા તે વખતે શ્રી. મજરાલ સાક્ષી એમ એ, શ્રી કૃષ્ણભાઈ મુનીશાઈ મળપુર, શ્રી હીરાલાલ કોટીયા, શ્રી દામોદરભાઈ મહેતા, શ્રી નરોત્તમભાઈ શેષરા, શ્રી પુષ્કરભાઈ

વિવેકે વેણુવોએ મોટી સંખ્યામાં હાજર રહી પુષ્પમળા વિવેકેથી સત્કાર કર્યો હતો અને તેજા તે સાંજના શ્રીમદ્વપ્રકાશની વેળાના શોકમાં શ્રી. મજરાલ સાક્ષીજીને માનપત્ર અર્પણ કરવાનો નવાવરો સાંજના રાર વાગે પૂજ્ય મહારાજાશ્રીના પ્રમુખપણાનીયે કરવામાં આવ્યો હતો. તેમાં રવાનીય સુપ્રસિદ્ધ શ્રીપુષ્પેએ મોટી સંખ્યામાં હાજરી આપી હતી. વડુપરત મુંબાઈથી શીવુત દરિયુજી સાક્ષી, અમદાવાદથી શ્રી. ભેદલાલ શાહ, વડોદરાથી શ્રી. શેવિન્દલાલ ભટ્ટ, નાગવાદથી શીવુત શ્રીમતજીના શાહ, નંદુરથી રાવળદાદુર કુમખાવાના આ મેજાવડામાં ભાગ લેવા ખાસ આવ્યા હતા.

પ્રારંભમાં વધાઈ અને શ્રીકૃષ્ણજીવન થવા બાદ વખત મળીલભાઈએ પ્રમુખથી માટે દરખાસ્ત મળતા તથા તેને રોકી મજબા બાદ પૂ. શ્રી. શ્રીમતજીના મહારાજા મંદેલક સત્કારવિત્તે વિશાળતા બાદ શીવુત મળીલાલભાઈએ ઉપક્રમ કરતાં જણાવ્યું હતું કે આજ રાવના કાવ્યને: કિસ છે. વિદ્યોને પોતાના રાવનો: વિચાર કરવાનો છે. પૂ. સાક્ષીજીએ સંસ્કૃત ભાષાએ સાથે અભ્યાસ કરી પૂર્વભૂતી વિદ્યા મેળવી એમ એ ની કીશી મેળવી શેફેસર તરીકે સંસ્કૃત સાદિલ વિદ્યાશંખિને શીખવ્યું. વિદ્યોને યજુ: થયા છે અને યજો પણ વિદ્યામૂલ્યે લેખનદારા, બ્યાખ્યાનોદારા પોતાની વિદ્યાનું જાન કરી, પુષ્કિલમાંજ સાદિલ પોતાની નિ:સ્વાર્થપણે સેવા કરી આરથ સાદિલને પ્રસિદ્ધ કરવામાં કોશીસ કરી, થર્ણા પુસ્તકો બધાનાં છે. વિદ્યામૂલ્યે વહેવરવા તેમને દબારે રૂપીયા અપાય છે તે એમનું સંપ્રદાયમાં રવાન છે અને છ થી ૧૦૫ અને ૨ થી ૬ શીમુનેચિનીજ સમજાવે છે. ટાંકર, સમદુજ મવ વાપરવું પણ જણાવે છે. સમપ્રદાય પાછવ ધણેજ પ્રવાસ કરે છે અને તે સેવાના બદલામાં માનપત્ર અપાય તેા તેમાં અપણી યોગ્ય છે. પૂજ્ય મુંબઈ, કુરાલ, હવાદિ રવાનેથી ને કાઠું કું છે તેજ આપણે કરીએ છીએ. આજની સત્રાના પ્રમુખથી સામગ્રાવિક સિદ્ધાંત પ્રજારાઈ અખટોલ્યાદ સેવતા તથા એવ પ્રવાસદાર પ્રવત્ત કરવા અને સામગ્રાવિક તેમજ કુર્મર સાદિલ પ્રતિ અભિક્ષિક થવાતાં શીવરમુદના બાકા કરી પહેલવહેલ

છે. પુણિમાર્ગની પરિસ્થિતિ બહુ ટેમજ સુરજ વજને ધર્મ પ્રતિ અભિરુચિ વધારણ આપ સતત પ્રયત્ન કરે છે. વગેરે કદા બાદ શ્રીયુત મુમખાવાસી દાર અને પચાદિ વર્ષો સંબંધવા દતા જેમાં ભમનરથી ગો. શ્રીઅનિકદ્ધવાલ મદારાજ, મંત્રોલથી કાચીસમ સાસી, ચાલોરથી પટવારી, અમલવાદી શમનલાલ મિરિધર પરીખ, શ્રીયુત નયન્દીલાલ, વડોદરાથી મદુમાઈ કાંડાવાજ, સુભાષી શ્રીપુણિમાર્ગે સુરજ પરિષદ, ન્યુસરથી શ્રી પુણિમાર્ગે મલકલ વિવેકેના મુખ્ય દતા. ત્યારપછી શ્રીયુત દરિયુ સાસી 'શુદ્ધદેવ વિશ્વારે' બોલતાં જણાવ્યું હતું કે પુણિ સંપ્રદાયના મુખસિદ્ધ પંડિતને માનપત્ર આપવાનો સમારંભ છે. એ વ્યક્તિને ચોખ્ખ માન આપાય છે તેથી કહ્યું વૈષ્ણવ હંફાય જુશી નદિ યાવ ? કોરોની વૈષ્ણવી સુદિમાં એમના નામથી રાઈ આજવા નથી. ચેરનાથી બાલો તેમના માટે એ આમદ ધરાવે છે તે ચોખ્ખ છે. શ્રીસુખામિનીભત્રું સતત વાચન, સમપ્રદાયના સિદ્ધાંત પ્રચારવે પરિશ્રમ પટકસંનાચાર્ય પં. ધરનાથ સાથે અલુમારના વૈદિકાવ માટે કરેલી શેલેન્ન વિ શાસીભત્રી ધર્મ પ્રતિ લાગતી અને સિદ્ધિતાનો પ્રવૃત્તિ અભ્યાસ જણારે છે. ત્યારબાદ શ્રીયુત જોડાલાલ શાહ એમ. એ. પશુ ફેરુક પ્રાસંગિક કહેતા શાસીભત્રે અત્યાર સુધી. તી સમપ્રદાયની સેવા, વિરોધીઓને આપેલાં જ્ઞાનો વિગેરે ફેરુક મુદાની બાબત વિવેચી. પછી શ્રીયુત સાકરલાલ વજીવે બુનુપૂરના વૈષ્ણવોની ફરજ પાતે ફેરુક નિષ્પણ કરી શાસીભત્રે બરચના વૈષ્ણવો પર કરેલાં ઉપકારનું કિંમ્મત કાળવા બાદ શાસીભત્રે આપવાનું માનપત્ર વર્ષો સંબંધ ૦ પૂન્ય પ્રમુખશ્રીને શાસીભત્રે પ્રદાન કરવા વિધિ કરી હતી. તે માનપત્ર નીચે મુજબ હતું:—

માનપત્ર.

વે. શા. સં. પદવાસ્યપ્રમાણુ પોદેસર અમલાલ મળુપતિરામ સાસી એમ. એ. બરચ.

પરમાખ્ય શાસીભ, આપની જન્મ ભમિતરૂચ દોષા છતાં સરકારી નોકરીને અંગે અત્યાર સુધી અહીં બધારે રખત રહેવાનો અવકાશ મેળવેલો ન હતો. પણ અચારથી નોકરીમાંથી નિવૃત્ત થયા ત્યારથી પોતાની જન્મભૂમિમાં આવી ઊભા એ જર્ણી પ્રતિદિન શોભદશમાચાર્યના આદર જન્યોનું રક્ષક રક્ષક રીતે અમને સમજતી આવી. ઉપ એ મદાન ઉપકાર કર્યો છે તેને માટે અમે બધા છતાં પશ્ચંદ આપકા જાણી છીએ. અને તે જાણતી બાબત અને આપના પ્રતિ અમારે નેત્રિય આદર આ માનપત્ર દ્વારા અમે આને વ્યક્ત કરીએ છીએ.

આપના કુટુંબનો અને આજના કુટુંબનો સંબંધ લગભગ દોઢસો વર્ષનો જુદો છે. આપના પૂર્વજે પદોદ્દેશી જ આમાર પૂર્વજોને કીમ. ૧૫ તારી જેવા ભગવત્કથન દારપથ સંવિસ્તર સમજવતા આજવા છે. આપે આપના કુલની આ અનુપમ પરંપરા સર્વોત્કૃષ્ટ રીતે નક્કી છે અને જેમ શોભદશમાચાર્ય નિમમલકપત્રનું પરિપક્વ ફલ છે તે આપ પણ આપના કુટુંબનું પરિપક્વ ફલ છે. આપનો એક જન્મ આજના કુટુંબમાં જન્મ, ભાસ્વાવરણી જ આપનું ધાર્મિક શિક્ષણ, એક વખતે વિરલ મદાની અંગેલે જગત્કીય આપે હોપેલો વાત, પશ્ચિમની સંસ્કૃતિથી અલિખ રહીને પ્રાચીન ભારતીય સંસ્કૃતિનો અદ્યાર અને વિશ્વરક્ષા અરે કરેલો સારાદ, સરકારી નોકરીમાં આપે મેળવેલું સન્માન અને નિરુત્તરમાં જન્મભૂમિમાં આપે પોતાની કુલપરંપરા તરફ આપે આપેલું લક્ષ્ય આ પ્રમાણેની આપના છાત્રની રૂપરેખાનો વિગર કરતાં અમને સામર્થ્ય આનન્દ થાય છે અને આપના પ્રતિ અમારો આદર વધતો જાય છે.

આપે શેલેન્ન સંસ્કૃતનું અધ્યયન કરીને ફેરલ ભગવત્કથાના બહેન બીહ બધી વિદ્યાએ દબ્બત કરી છે. વિદ્યારૂપની અપરા શોભામિત્રીની રાઈ પશુ અક્ષિના આશય વિના આપે મેળવેલું પદ શાસ્ત્રનું અને તેમાં પણ વિરોધાત્મક ભગવત્કથાનું જ્ઞાન અનુપમ છે. આપની આ સ્વદર્શિય વિદ્યા મેળને આધુનિક વિદ્યાનો પશુ મુખ થાય છે.

આપે પુણિમાર્ગની કરેલી સેવા અચળુંદીવન છે. સમપ્રદાયના સંસ્કૃત જન્યોને શુદ્ધ રૂપમાં પ્રદ કરીને અને અસંખ્યવાર શેનો લખીને અને બાધેના પશુ આપોને પુણિમાર્ગે આ સુરમાં અપારમાંથી પ્રમાણમાં લાવવાનું જ્ઞાન એ રાઈ પશુ અક્ષિને ચારદિક રીતે ધર્મ દેવ તે તે આપને જ ધરે છે. એમ કહેવામાં જે મત સંબંધવા ન નથી. સમપ્રદાયનો હિંદુલક દેવે છે કે સમપ્રદાય ઉપર અમારે અમારે

વિપતિ આવી પડતી ત્યારે ત્યારે મદદપુરોષોને પ્રાદુર્બાહ અવસ્થ થતો હતો. આ પ્રકારે જ શીવહિંસક પ્રજા, શ્રીગણેશનાથ, શ્રીપુરુષોત્તમ અને પંડિત ગુરુભાણુ પોત પોતાના સમયમાં વાદીઓના પ્રદાનોને દૂર કરીને સમગ્રદાયની સેવા કરી ગયા છે. તે જ પ્રમાણે આજ પણ વર્તમાન કાલમાં અને વાદીઓના આહ્વાને દૂર કરી સમગ્રદાયની સેવા કરી રહ્યા છો. આજ સત્યવજ્રા અને નિરૂપદ છે અને તેને પરિણામે કદાચિત આપની વાણીમાં કહોરાવાનો આવાસ નહીં, પણ આપના સદસ્યસથી અમને નહીં પણ છે કે આપના હૃદયની મુદ્રા જરૂર લોકોત્તર ન છે. વિદ્યા અને સરકારી અધિભરનો સુચેત હતો જ્યાં પણ આપની સરલતા સર્વને આકર્ષી રહી છે. શ્રીમદ્દશાસ્ત્રીયનું શરણુ, શ્રીસુબોધિન્યાદિ જ્ઞાન્યોનું દર્શન અને શ્રીરાધિકાનાથનું આરાધન કરીને આપે વૈષ્ણવી સંપ્રદાયને બતાવી આપ્યું છે કે મનુષ્ય એવન કેવી રીતે સર્વથા સૌ છે ? શ્રેસ્તામિદુલ્લા મદાચનશ્રીઓને કદ પણ સત્ય અને દિવકારક વચનો કહેવાના એ પ્રશ્ન આપને પ્રાપ્ત થાય છે તે શ્રીમદ્દશાસ્ત્રીયરણ્યમાં રહેલા આપનો દૃઢ ભાવ ન સિદ્ધ કરે છે. આ પ્રમાણે આજ સમગ્રદાયની જ્ઞાનમંદીર છે, સમગ્રદાયના ધ્યાન દર્શિ છે.

આજ સાન્ન અને સુખિ રીધંપુ જોગનો અને સમગ્રદાયની પૂર્વવંત સેવા કરો એનું અમરી ભગવાન પ્રતિ પ્રાર્થના છે.

મિત્રી સં. ૧૯૮૬ ના
ન્યેષ શુકલ ૧૧ સરય

આપના કાશી અને શુભાનુરાશી
ભગવાન રમેશી વૈષ્ણવો.

સત્યાપતિશીલુ ન્યાખ્યાન—સત્યાપતિ યો. શ્રીમદ્દશાસ્ત્રીય મહોદયે મનુર માનવન નિર્મલ દરવારવિન્દે શીવત શાસ્ત્રીઓને આખા જાદ ન્યાખ્યાન કરતાં નહીં, પણ તેમને આલેખ કરવાનું આજે એક જ કારણ વૈષ્ણવોએ પ્રા. મહાદાશ શાસ્ત્રીઓને માનવત આપવાના મેળાવમાં પ્રમુખ તરીકે મળે જુદી કારણ છે તે માટે હૃદયમાં આનન્દ થયો છે. સમગ્રદાયના વિદ્યમણિઓની કદર કરતી પદે અભાર સુધીમાં જેટલું કાચ કરવું તેજ્યે તેટલું કરી સમયા નથી તેવું કારણ માત્ર તેમની કદર થઈ નથી. વિદ્યોને કાચદિશા સુચવતી પ્રાસાદન આપવું તે આપણું કર્તવ્ય છે. અદાના વૈષ્ણવો વડાંથી શાસ્ત્રીઓને માનવત આપતાં મળે આદર્શ થાય છે. તેમની વિદ્યાના વખાણ વડારી પદેવાના વખાણ એકે ક્યાં છે તેથી વધુ નર નથી. મુંબઈ અને પૂનામાં મેં તેમનાં ન્યાખ્યાનો સાંભળ્યા છે. તેમની ન્યાખ્યાનયોગી સુન્દર દોષ કાચ કરનારા હૃદયમાં સોસિરી વેસી નથ છે. તેનો વાલ ભંડારના વૈષ્ણવો વડાં રહ્યા છે તેથી મને અલભ્ય આનંદ થાય છે. આપણે પુષ્ટિમાર્ગના સિદ્ધાન્તો સમજવા તેજ્યે નહિ તે આપણે તેનું અધીયન કરી શક્યું નહિ.

શ્રીમદ્દશાસ્ત્રીયરણ્યે નેદ, ગીતા, સૂત્ર, ભાગવત, એ ચાર પ્રમાણોથી આપણા સમગ્રદાયના સિદ્ધાન્તો ને આદર્શો સેવા છે અને તે અભારે પણ તેવા ને તેવાનું છે. શ્રીમદ્દશાસ્ત્રીયરે યદાયવાદિ ધર્મત્વ એ ગીતાકા પ્રતિજ્ઞાનુસાર ફેલીઓના ઉદ્ધારક અને સક્રિયમાર્ગનો ક્રાંતિજનક દર્શાવવા આ ભૂમિત પર પ્રાકૃત્ય મૂકી તે સમય અભારે જેમ ક્યાં અને જ્ઞાનાદિ માગે હુમ થઈ મયા છે એના અનુદાનો દુષ્કર છે. નારિતકવાદ અને સંવત્સરીન સમયમાં તે કદાચાથ થઈ પડ છે. એટલે તે કરી સકાતાન નથી તેથી શ્રીકૃષ્ણનું નામરમણ કરીને જ એ પોતાનો ઉદ્ધાર કરી શકે છે. એટલે મદાન દુષ્કર હતો તેથી આપશ્રીએ પુષ્ટિત્વ સર્વ યોગોના વિવશાનુસાર ઉદ્ધાર આજ્ઞાસરનથી કર્યો હતો અને શ્રીકૃષ્ણદિશા સમયમાં પણ સર્વ પ્રાણીના ઉદ્ધાર દુષ્કર છે. પ્રા. શાસ્ત્રીઓએ શ્રીમદ્દશાસ્ત્રીયરણ્ય અને શ્રીપુરુષોત્તમ સામગ્રાવિક સિદ્ધાન્તપ્રતિષ્ઠાદિ સર્વ તત્ત્વને પોતાના હૃદયમાં યોગપ્રાપ્ત કર્યું છે. એટલું જ નહિ પણ પુષ્ટિમાર્ગના આકર જ્ઞાન્યોને ઉપદેશ કરે છે. એ સમય અમકાર-યુગનો હતો કે ન્યાદે સમય સમાજમાં અજ્ઞાનતા હતી (અજ્ઞાતમાં અને વૈષ્ણવ વર્તમાં) કુપ્રસાદો અને સદાઓ પણ પેદા થતાં, સમગ્રદાયનું સાદિલ અન્ય અસ્તિ વૈષ્ણવ સિવાય વાંચી ન શકે. હંતલિખિત સાદિલ કપાલી ન થાય, હલાદિ માનવતાએ લાષિ પુષ્ટિમાર્ગને કેટલું સહેલું પડ્યું છે અને કેટલું જન્ય સાદિલ નથ થઈ ગયું છે. અભારે જ્ઞાન્યો પ્રમથયુગનો છે. સમાજમાંથી અજ્ઞાનતા નાટ થતી નથ છે. શાસ્ત્રીક જેવા વિદાનો સામગ્રાવિક સિદ્ધાન્તપ્રચારનું કાચ નિરૂપેતાથી ચારી રીતે કરી રહ્યા છે. ભગવાન શ્રીમદ્દશાસ્ત્રીયરે તેને વિશામુખ્ય કરે અને સમગ્રદાયની સેવા કરવાના અને વૈષ્ણવો તેમનાં દાસ સિદ્ધાન્ત અવજ્ઞોને વિશેષ હાથ લે એ અને આમદર્શક સુચવતી બીજી.

ગ્રા. ગણદાસ શાસ્ત્રીજીનું બાપજી—બો. સામ્રીજીએ માનપત્રનો સ્વીકાર કરી નવાબમાં બાપજી કરતાં નજીબું હતું. આજે મારા પ્રતિભાવ દર્શાવ્યા છે તેને માટે મારા મારી સામામાં જુલું અર્પણ કરના એ એકના શબ્દ છે. અન્ય મારે વિષે મને તે કહે પરંતુ અચ્ચતી કેવળ વેળુવા સુદિન નહીં પરંતુ મહારા જાતિબંધુઓએ પણ આ સમામાં ઉપરિવદ્ધ થઇને આજે સર્વે મળીને મને એકના લાવથી આજ આપ્યા છે આથી મને આનંદ થાય છે. કે આજા અચ્ચતી મહારા ઉપર અભિરુચિ છે. પંદર માસથી મારી સ્થિતિ અહીં છે. અનજીની અભિલાષવાળાઓને મેં કહ્યુંઓને બહુભા, પત્રાવલંબન જેવા કઠિન અને શિક્ષાશોધી જેવા સંદેશ પ્રત્યે ઉપર ખ્યાન આપાં છે. શ્રીયમુનાજીક, સિદ્ધાન્ત-મુક્તાવલી, બાલમોહ અને પુષ્ટિવાદમર્માદોષ અને આવતી કાલે સિદ્ધાન્તરહસ્ય, શરૂ કરવાનો છે. એક સંચોગ છે. સિદ્ધાન્તરહસ્ય નવિવાનો પ્રારંભ અને તેના દિવસે શ્રીમદ્દામણલાલના રાજકુમાર શ્રીત્રિભુવનદાસ બાવાનું અત્ર પધારવું. સિદ્ધાન્તરહસ્ય એકલે અક્ષરસંબંધનું રહસ્ય. આખરે કોણ ? કયાંથી આજા ? કયાં જવું છે ઉત્સાદિ અથ શ્લોકમાર્મ શ્રીમદ્દામણલાલ તેનું નિવેદન કરી ગયા છે. વિ. કહી બક્ષસંબંધનું રહસ્ય સમલભ્યું હતું. ત્યાર બાદ કેટલાક સામ્પ્રદાયિક સ્વરૂપનું વિવરણ શ્રીગીતા લાગવત; નિબંધારિના સુત્રોદ્ધાર કરાવી જ્ઞાન અને લક્ષિતની સમીક્ષા કરી હતી. વળી આખળ બોલતાં કહ્યું હતું કે મ.દાસજ્ઞાન એ ભગવતપ્રસિદ્ધ પહેલું પત્રથી છે. મહાદાસજ્ઞાન પણ રનેદ તે પછી અસ્તિ અને તેનું પરમ ફળ ભગવતપ્રસિદ્ધ છે. શ્રીમદ્દ્વિસાયાજી જેવા અધ્યાપી આ ભૂમંડળમાં ગયા નથી. તેમના સમા ગુણવાન, આદર, અને લક્ષિતપ્રેલુચ આદર આચાર્ય શુકે મને ભલામત મળેા વિ. કહી પોતાનું વસ્ત્ર સમાસ કહ્યું હતું. ત્યાર બાદ પ્રમુખશ્રી તથા અન્ય વક્તાઓ અને અમનુષ્ય શુદ્ધિઓ આભાર મનાયા પછી મિલાપરે શ્રીગોવર્ધનનાથજીના નવશેષ વચ્ચે વિખરાયેા હતા.

ધારીમાં શ્રીયમુનાજીનું સ્તવન—કચરીયા મંદીવાળા બાહ ત્રિભુવનદાસ રજીસારદાસના અંતઃકરણમાં ઘણા દિવસથી એવી લાગના હતી કે સારા સાધ ભગવદીયોને સમુદ્ધ એકત્ર કરી તે સમુદ્ધમાં ભેટી શ્રીમદ્દાસજીની ભાવના વિચારવી. અથવા મનોરથ ઉદ્ભવતાં તે અનુસાર તેમણે શ્રીગોસ્વામી બાલક આખળ વિનંતિ કરતાં તેઓશ્રીની આજ્ઞા અનુસાર કોઈ સાધ રચ્યે શ્રી યમુનાજીના ૪૧ પદનો એક પાઠ એવા ૪૧ પાઠો દરરોજ કરવા અને તે ૪૧ ભગવદીયો સાથે મળીને ૪૧ દિવસ સુધી સંચય પૂર્વક કરવા આ પ્રમાણે આજ્ઞા હાઇને તેને માટે ત્રિભુવનદાસભાઈ પોતાના વડન તરફ કાઢીલાવડમાં સાઈ ફેયળ ચોધવા નીકળતાં અમે ધારીના વેળુજીના સહુભાણે તે કાર્ય ધારીમાં આજ્ઞાવાનું નકો થયું. પોરબંદરના વેળુજીનો પ્રુર્ણ આમદ પણ અમારા ઉપર શ્રીયમુનાજીની કૃપાએ અમારા મામના ભાગીએ વહેલી બને નહીંઓએ ધારીને માટે અનુરોધન આપ્યું તે પ્રમાણે આમંત્રણ થતાં સારા દાસ ભગવદીયો અમારે આજે આવવા લાગ્યા. ગત વેસાખ સુદી ૧૦ શુક્રવારના મંભગમય પ્રભાતે મામને પાદર વહેલી ત્રિવેળીમાં સ્નાન કરી અરપદમાં રહી અવેની હવેલીના બગીચામાં ઘણા ભગવદીયો ૪૧ દિવસના નિયમપૂર્વક શ્રીયમુનાજીનું સ્તવન કરવા ભેટી ગયા.

પ્રભાતના ચાર વાગતાં કોઈ સાંચાદિક કચર્યા પરવારી અરપદમાં એક આસન ઉપર બેસી પ્રથમ શ્રીયમુનાજીનાં ચિત્રજી સમીપમાં પધરાવી તેમનું આન કરી શ્રીયમુનાજીના પાઠ નવ વખત કરી પછી “ પ્રિયસંજ રમ. ભર કહોલ ” એ પદથી શરૂઆત કરી “ શરણુ પ્રતિભાવ ગોપાલરતિવધની ” ત્યાં સુધીનાં ૪૧ પદોએ એક વખતનો એક પાઠ ગણી એવા ૪૧ પાઠો અધ્યાન્ન કાલ સુધીમાં પુરા કરતા ત્યારબાદ એક વખત મહાપ્રસાદ લઈ બક્ષચર્ચાદિનું સેવન કરી બાકીનો સમય ભગવદ્ ઉદ્દેશ અને ભગવદ્ ચત્સંભમાં બ્યતીત કર્યા. શેઠાં બહેનો પણ તેમાં જોડાયાં. તેમનાં આસન અવગ્રં હતાં.

રાત્રિના ૧૧ વાગતાં સુધી ભગવદ્વાર્તામાં શ્રીયમુનાજીના પદના લાવા વિચારાયા. અધુનાઈ આદિ મહાન ભગવદીયોના અનુભવનો લાભ આ સમયે મળેા. ઘણા ભગવદીયો પોતપોતાના શ્રીને સાથે પધરાવીને આંભ્યા, જેથી નિજ મંદિરમાં ભર્ષા સ્વરૂપે સાથે બીજાનાં ટોવાથી અમે ધારીના વેળુજીને કોઈ દહાડો ન મળેલાં તેનાં અને તે પણ આ ઉપર કાળના સમયનો સુમાર કરેલા એવા દર્શનનાં સુખો અસ્થાં. એ અમારાં તેા મદદલાભ છે. આ અલૌકિક પાત્રની સમ્પ્રાપ્તિ એક સુદી ૭ લગભગ થઈ તે

વખતે પ્રભુ ઇચ્છાએ જે આનંદની ઝંખી થઈ, તે વળી જુદું. આ પ્રસંગે અમારા આંતરે પધારેલા પ્રભુ અને ભગવદીયોનું સ્વાગત કરવામાં વજીર એકવચ્ચ દુહિતજ અને રોક ચતુષ્ક આજુ'દજ ભંજુડાવાળા એઓ સતત પરિશ્રમ થઈ ટનુનની સાથે વિતાવ સેવા પણ ભાવપૂર્વક કરી રહ્યા હતા.

ભંજુસરમાં પ્રવૃત્તિ—તા. ૨૭-૪-૩૩ ને રોજ ભરૂચ નિવાસી શ્રીયુત સાક્ષીજી મનલાલ અણપતરામ પ્રોફેસર એમ. એ. અને દરિ સાક્ષી પ્રોફેસર એમ. એ. (અમરાવતી કોલેજના સંસ્કૃત પ્રોફેસર) ભંજુસર પધારીને ભંજુસરની વૈષ્ણવ જનપ્રાને પોતાનાં તા. ૨૮-૨૬-૩૦ ને રોજ પુષ્ટિમાર્ગ અને તેનાં સિદ્ધિ ઉપર વિવેચન કરી અમૂલ્ય લાભ આપ્યા હતા. ઉપરના વ્યાખ્યાનોથી અનેની વૈષ્ણવ જનતામાં પુષ્ટિમાર્ગ વિષે પુષ્કળ ચેતન પ્રગટ થયું હતું. શ્રીયુત મનલાલ સાક્ષીજીની સલાહથી તા. ૨૦-૪-૩૩ ને રોજ અવરેના રોક ચીમનલાલ કાળીદાસ મહેસાવાલાના મકાનમાં રાવસાહેબ પ્રાણજીવનદાસ નરોત્તમદાસ જુમખાવાળાના અધ્યક્ષપણાં નીચે એક પુષ્ટિમાર્ગીય મંડળની રચાપના થઈ. સરકુ મંડળના હરેશ નીચે પ્રમાણે છે. ૧. અનેની ભાવિક વૈષ્ણવ જનતામાં શ્રીમદ્વેદસાચાર્યના સિદ્ધિયોગે પ્રચાર કરવા. ૨. દેશ પરદેશના સાક્ષીજીઓને આમંત્રણ આપી ભાણેજીદાસ વૈષ્ણવમાં ભવૃતિ લાવવી ૩. પુષ્ટિમાર્ગનાં પુસ્તકો જેવાં કે સંસ્કૃત, ગુજરાતી, વગેરે ભાષાનાં પુસ્તકો મંજાવી એક લાઇબ્રેરી અનેની સાતસ્વરૂપની હવેલીના મકાનમાં રચાવવી. ૪. પુસ્તકો ખરીદવાને જે તાણાં જોઈએ તેને ખર્ચ ફંડ એકઠું કરવું. ૫. દરેક વૈષ્ણવોને પુષ્ટિમાર્ગીય સભાસદો બનાવવા. પુષ્ટિમાર્ગીય મંડળનાં લાભના ૩૮ સભાસદો થયા છે. સભાસદ ફી વરસ ફિસે રૂ. ૧) રાખવામાં આવી છે. વધુ સભાસદો થતાં જાય છે. મંડળ રચાવવી વખતે નીચેના વૈષ્ણવોએ આ મંડળને નીચે પ્રમાણેની જોડ આપીને આ મંડળ ઉપર મોટા ઉપકાર કર્યો છે. ૨૫) રોક ચીમનલાલ કાળીદાસ, ૨૫) રોક ભાર્ગવાલ માલેકલાલ, ૨૫) રોક રજુછોડદાસ જુનીલાલ, ૨૫) રોક મનુલાલ જુગલદાસ, ૨૫) રોક મનલાલ ભાજોવનદાસ, ૨૫) રોક જુનીલાલ નરોત્તમદાસ, ૨૧) વજીર મણીલાલ દામોદરદાસ, ૧૧) જનલાલ જોગીલાલ, ૧૫) રોક નાનાભાઈ જોરધનદાસ, ૧૧) જમલીલાલ જોગીલાલ, ૧૧) રોક નગીનલાલ જોગીલાલ, ૧૧) રાવસાહેબ પ્રાણજીવનદાસ નરોત્તમદાસ, ૧૧) રોક લાલભાઈ કૃષ્ણવ્રજદાસ જુમખાવાળા મંડળના પ્રમુખ. કુલે રૂ. ૨૨૧) બસો એકતાળીસ ઉપરના સદ્યદરથેએ આપ્યા છે. બીજા ભાવિક જે. પોતાની યત્નિત અનુસાર આ મંડળને જોડ આપે છે. શ્રીયુત મનલાલ સાક્ષીજીએ દર મહીનામાં એક વાર ભરૂચથી અને આવી વ્યાખ્યાન દ્વારા વૈષ્ણવમાં ભવૃતિ લાવવા નહીં થયું છે. આ મંડળના ઉપપ્રમુખ તરીકે વજીર મણીલાલ દામોદરદાસ અને સેક્રેટરી તરીકે રોક રજુછોડદાસ જુનીલાલ ચૂંટયા છે. ત્યારબાદ મુંબઈમાં બિરાજવા શ્રીમતનાથલાલ મદારાજ ચાંપાસેનીવાળા અવરે પધાર્યા હતા તેઓએ પણ લાલચરાટ ચાર દિવસ પરિશ્રમ હાવીને વિજ્ઞાપાડની વાદીમાં ભરે વ્યાખ્યાન આપી ભંજુસરની વૈષ્ણવ જનતામાં ચેતન આણ્યું હતું. વળી ખંસાવ નિવાસી સાક્ષીજી સદ્ગૃહજી ભવૃતિ કરે પણ જે દિવસ તા. ૨૧-૨૨ મીને રોજ વૈષ્ણવનું કર્તવ્ય અને બ્રાહ્મ આચાર વિચાર પર સાદું વ્યાખ્યાન આપ્યું હતું. રજુછોડદાસ જુનીલાલ સાદ. સેક્રેટરી, પુષ્ટિમાર્ગીય મંડળ ભંજુસર.

શ્રી વૈષ્ણવધર્મ મહાસભા ટંકારા—શ્રીકૃષ્ણ પ્રજ્ઞાની અસીમ કૃપાથી શ્રીકૃષ્ણ પ્રજ્ઞાના અપરાધવાર શ્રીવલ્લભ પ્રજ્ઞાની આ આનંદમય ન્યતિ પર શ્રીવૈષ્ણવધર્મ મહાસભાનો પાંચ વર્ષનો રિપોર્ટ આપ સભાનો સમક્ષ રજૂ કરતા મદદ આનંદ થાય છે. સંવત ૧૯૮૫ માં ન્યારે શ્રીમધુરા નગરરથ શ્રીમાન મદોદય શ્રીપુષ્પોત્તમલાલ ટંકારા પધાર્યા ત્યારે અદ્વૈતી ધાર્મિક પરિસ્થિતિ તથા યુવકોની ધર્મ પ્રવૃત્તિ પ્રત્યેની તાણાવેલીટું પુરેપુર નિરીક્ષણ કરીને આપ શ્રીમાને પોતાનાં પ્રયત્નપણુએ શ્રી ટંકારા ખાતે એક ધર્મપ્રચાર સંસ્થા રચાવી તેનું નામ 'શ્રી ટંકારા વૈષ્ણવધર્મ મહાસભા' રાખ્યું. એ સંસ્થાને અગ્રે જે કાર્યોની શરૂઆત કરી. એક સંસ્કૃત પાઠશાળા, બીજું વાચનાલય, આ બંને કાર્યો રચાયા અને શ્રીકૃષ્ણ પ્રજ્ઞાની પૂર્વ કૃપાથી અદ્યપિ પર્વત આસ્યા કરે છે. તેમાં અગ્રે પ્રજ્ઞાકૃપાન પ્રાધાન્ય માનીએ છીએ. આ સંસ્થાનું કાર્ય વ્યવસ્થિત રીતે ચાલે તે માટે પ્રમુખ, ઉપપ્રમુખ, મંત્રી અને ટ્રેઝરર એમ નીમવામાં આવ્યા છે. તે દરેક કાર્ય તે તે વ્યક્તિએ પોતાના કિંમતી વખતોને ભાગ આપીને પોતાની સેવા આપ કરે છે.

સંસ્થાની આર્થિક સ્થિતિ—ત્યારે સંસ્થા સર યદ ત્યારે યોદાક મેમ્બરોના મેમ્બરશીપ. ઉપરાંત સંસ્થા બહુવિધ જીવનનો વિકાસ કરવા નિયમે પાછી પાની નોતી કરતી. કાળે કરીને જે મેમ્બરો હતા તે મેમ્બરોએ વિદાય લીધી. તે પછી યોદાક મેમ્બરોએ હુંક ખર્ચમાં પણ ચાલુ રાખવા પોતાની મમતા લેવી ને તેવીજ ચાલુ રાખી. પણ પ્રજા દુષ્પાથી જે રહેલા મેમ્બરોએ આર્થિક સ્થિતિ સુધારવા ચાચના સરખીએ કરી પોતાના વિવેકનો ભજન્યારેય ક્યો નહોતો. પાઠશાળા સર યદ ત્યારે પ્રથમ ૧ વિદ્યાર્થીઓ હતા. ક્રમે ક્રમે સોની, ભાટીયા, વાણીયા, હાદાણ, ખત્રી, ખેડૂત, અને જ્યોત્સના આદિ મઠી ૩૭ વિદ્યાર્થીઓની સંખ્યા યદ છે. હજુ પણ રચનાત્મક કાર્યથી અમારી સંસ્થાનું કાર્ય વધવા સંભવ છે. અમારી આ સંસ્થાની આર્થિક સ્થિતિ સુધારવાં મોટી જોડેનો અને માતાઓને યોદાક મળુ વાંચનનું જ્ઞાન યાય અને ધર્મ—નીતિના પુસ્તકો વાંચી શકે તેવી વ્યવસ્થા કરવા માટે કોઈ સુચિક્ષિત બંદેનને રોકવા અમારો વિચાર છે. વર્ષા ઋતુ અને હેમંત ઋતુના વિદાય થયા પછી અશકત ઠોરોને પીડિત શ્રીમ્મ ઋતુના આવિર્ભાવ થયા પછી તે બિચારા નીમણીઆંતા લેવા બની ન્યાં ત્યાં ભટકતા ફરતા ફરે છે તેો આ સંસ્થા એવો મનોરથ કરે છે કે હવે પછી એક ગીરાળા કરવી અને વિસ્થાળ જમા બાહે સખતી અને ગાયોની ખૂબ સંભાળપુર્વક સેવા કરવી. મયા ત્રણ વર્ષ થયા પાઠશાળાનું કાર્ય અપૂર્ણ જેવું હવે પરંતુ હાલના નવા અધ્યાપક સ. રા. નવલરાંકર વિશ્વનાથને શિક્ષણનું કાર્ય તેમને અર્પિત કરતા તેમની સતત મહેનતને અંગે એક વર્ષ થયા તે કાર્ય મળુંજ નાવરિયત બન્યું છે. આ વર્ષ જેટલી વિદ્યાર્થીઓની હાજરીમાં સંસ્થાસ ૩૦ ની કાયમ હાજરી રહી છે. ૩ વર્ષ પાઠશાળા ચાલી તે મેમ્બરોના બળે તથા તેમના સતત પ્રયત્નેજ સાર બાદ રૂ. ૬૦) એડી સાથે મદદ પરમ ભવવંદીય સોની મોહનલાલ નારણદાસ વરફી. મળેલી છે તથા બીજી જે જે વ્યક્તિ વરફી મળી છે તે શ્રી. મુળજીભાઈ કઢી સંભળાવરી પણ ન્યારે સમૂળથી સંસ્થાને આવક બંધ થઈ ત્યારે ટંકાસ હાલ નોતીયે (મહાનાસર) વાળા સોની નંદુલાલ એન્ડ બેચરાલાલમાં પ્રજા વસ્થા અને તે કા. ના વહીવટ કરતા પરમ રેનેદી ભાઈ ચોપટલાલ કાયમ પોતાને ખર્ચે પાઠશાળા ચલાવવા ઉદારતા બતાવી છે તે બદલ આ રથે તેમનો ઉપહાર માનવાનું અમેા શુકતા નથી. પ્રજા તેમને તેવીજ શ્રદ્ધા કાયમ રખાવે એવી પ્રાર્થના છે. આ સંસ્થાને નરિયાદ વેપ્લુષ પુવક મંડળ વરફી પુસ્તકોની મદદ મળી છે તે બદલ તે કાર્યકર્તાઓ અંતઃકરણપૂર્વક આભાર માનીએ છીએ બીજી પણ શુદ્ધરથેની મદદ મળી છે તે સવિસ્તર રા. મુળજીભાઈ કઢી સંભળાવરી. રાજ્યબંદિત શુરબંધિત, પિતૃમંદિત વગેરેના ક્ષેત્રે મનુષ્યની ઉત્પત્તિની સારવાતથીજ નજીયવડા છે એટલે આ કાથુને આશ્રયે દર પ્રસંગે સંભવન ધર્મ પુરંધર ના. મહારાજ સાહેબશ્રી લખધીરજ બહાદુર કે. સી. એસ. આઈ. ને અભિનંદન આદિ સમર્પાને અમેા દર વખત ધન્ય બન્યા છીએ. છેવટમાં આપ સર્વ સન્માનો અને સન્મારીઓના આભાર માની આપે શીઘ્ર વરફી માટે કામા ચાચી યેસી જવાની રત લઉ છું. મંત્રી.

વિજ્ઞાન પત્રિકા.

નંદાનલાલ બાળકની બંદારે ધાઓ : : :

દેવી સંસ્કૃતિના કહો કે જગતભરની સંસ્કૃતિના મહાન રક્ષણદાર જનજીવન પરમદુષ્કારત જનજીવન શ્રીવહીભાચાર્યજી શ્રીમદ્વિપ્રજીવના પ્રાકૃત્યના સુમંજસમય દિવસેજ આ અને આશાવંત બાળકોના જન્મ થવા પામ્યો છે. આને આ બાળકે પણ પોતાની યાંચ યાંચ જન્મતિથિએ પુરી કરી છઠ્ઠા વર્ષમાં પદાર્પણ કર્યું અને ઇયાજ પ્રજા શ્રીનંદન પાસે અભયની કિશ્કા માગી “શ્રીકૃષ્ણાનંદિનવર અવતાર” શ્રીકૃષ્ણ પ્રજાનાં અપરાધવાર શ્રીવહી પ્રજાએ એ કિશ્કાને યથાર્થ વધાવી લેવાને લલ્લે આશાસન આપ્યું હોયના ? તેમ તે બાલકના જન્મ મેલાવવામાં ટંકાસ મળે ખુણામાંથી પાકે ભરે વેપ્લુષ કે રોવ એતન માર્ગો કે જેન આદિએ ખુબ પ્રમાણમાં આ બાળકની મહામંજળ વધાઈ કીલવાને મહામંડપમાં એકચિત્ત થઈ ગયા અને એએએ આ બાળકના “પારણમાંથીજ બાળકના લક્ષણે નિર્ણયા.” એવા દરેકના મુખમાંથી શુકન ભર્યા શબ્દો નીકળી પડ્યા અને કહેવા હાથ્યા કે આ બાળક ભવિષ્યમાં ટંકાસ નદિ પણ સારાએ કાઢીઆવાડમાં પોતાની કુલિરા હાલવાના સોણલા સેવતા હાલ તેો આ બાળક સામેજ દળ કટક પોતાના પુષ્કળ સેન્ય અને બાહોસ સેનાપતિવા ચોખરે લરેર છાવણી નાખીને પડ્યું છે અને.

એ બાળકને ઘેરો માલવા સતત પ્રયાસ કરાવે છે. પરંતુ “જેને રહે રયામ, તેના સામે ન પડે મોઢાં દોમ” એ સૂત્રના આધારે આ બાળક સંકોચાઈ પોતાના કાચનો મહામુદો અવસર પ્રજ્ઞ આપશે. એ આચાર્યે જેવી તેવી રિયલિટીમાં પડ્યું છે. પ્રશ્ન—“આ ન્દાના બાળકની ન્દારે માલો ! ! !”

છળકટકે તે આચંસમાળની પુષ્કળ પ્રવૃત્તિ અને બળને વિદ્યાવશે તે સમાજ તરફથી ચાલે છે. દયાનંદ કન્યા શિક્ષણાચરમ તેના રચનાત્મક કાર્યોથી સમ્યક્તન ધર્મના અને સ્વભાવના બાળકો દ્વારા થતા ભય છે ત્યારે એક દબર ધરની વેષ્ણવી શ્રીવલ્લભીય મુદિસાળા આ મામને શ્રીવલ્લભપ્રભુના એકાદ શુદ્ધરથ અનુયાયીની કૃપાનીજ આ મામલો અને એ મામલો એજ આ બાળક સર્વ યક્તિ ધરાવીને પોતાના પ્રચાર કાર્યની નજાએ હણપ ન આવવા દે તે બાળકને. હવે શુદ્ધરથે ટકાવે ના બસ લખતાં હૃદયે ભરાઈ આવે છે કે બસ આટલી જ મુશ્કેલી પુરી થરાના અસાવે ટકારા જેવા સહેરમાંથી આવેા વિશાળ અને હૃદયમત કોટિના પુદિમાર્ગે હાંધી થઈ જશે ! પ્રજ્ઞ શ્રીવલ્લભ ! હવે સમર્થ છે હવે સારણ છે હવે રક્ષા કર ! રક્ષા કર ! ! નિવેદક ડા. ડા. સેવક લાલજી દયાલજી રાણપુરા મંત્રી શ્રી વેષ્ણુ ધર્મમહાસલા ટકારા

ગોંડલમાં આનંદ—સંવત્ ૧૯૮૯ ના ભવેષ્ઠ ગ્રંથ ૫-૬ નો ગોંડલમાં હવાણા વેષ્ણુવ પરમ કમવડીય રણીવાત બેન તરફથી શ્રીમદ્વાસણીજીની લેણી જોલવાનો મનોરથ માનવામાં આવેા હોતો, બાળકો વિશદ્ધ ભાવ ને પ્રશુરમરણના પ્રભાવે ત્રીસ વરસમાં નહિ થયેા આનંદ આ મનોરથમાં થેાઈ, આદાર મામથી ૨૫૦ ને આચારે વેષ્ણુવેા આવેલા હતા. સામેયાં વેરી દરવાજેથી અરેડી દરવાજા સુધી થકોચતાં પાંચ કલાકનો ઘડીમ ગયો હતો. રસ્તામાં પાંચ મંડલીયાના કીર્તનની નજાવટ તેની વચમાં નૃત્ય કરનારો આવેા અદ્ભુત હતો, એકે એકે સમાજ કરી હીય દમથી લેવાતી ભય, વેષ્ણુવ દુકાનો આમગ નંદમકોસવ મનાતા ભય. સાકરના તો ચેદ વરસવા ભય, રસ્તામાં મીશીના પશુ તથા ટંકાનલ પંખાથી વેષ્ણુવની અનિર્વચનીય સેવા થતી ભય, અખીલ શુદ્ધાલની તો લંબ ન હતી. “કોહોને ભણે નહિ.” એ પ્રમાણે સર્વ વેષ્ણુવ અને ગામવા લોકો આવેશી બની ગયા હતા.

બહારવામ (રીનારી) થી મૂળચંકર નામના બ્રાહ્મણ વેષ્ણુવ કીર્તન વખતે મેયારીનો રવામ મારણ કરી માયે હપરા હપર દૂધનાં લે મેયારાં ચકાવીને કાનલીલા બોલીને જે કોઈ આવેશથી નૃત્ય કર્યું છે, તેની તો પરિસીમાજ ન હતી. નૃત્ય કરતાં એકું હલેજ નહિ. એ ખુબી વખાણવા જેવી હતી. સાથે રાજકોટના ડા. નામજીભાઈ દલાલ તેમણે તો રાસના મરખાં તાનટપામાં લઈ લાવ ભાવ ભેદ તાંદડ અભિનયથી રાસમંડળનાં દર્શન કરાવતા હોય નહિ એવા મામથી સાક પાંચક વરસની ઉમરે તન તોડ નૃત્ય આવેશથી કર્યું હતું. રણીવાત બેનના ઘેર ડા. કુરજીભાઈ સોમા અને સરલ સ્વભાવનાં ત્યા તેમના ભાઈ બુરાભાઈ પોપટભાઈ તથા મંગળજીભાઈ ન્યા મોડા બુરાભાઈ બધા તો આઠ આઠ દસ દસ રૂપીયા એક ફેરાના બોલતાં અચિકો ખાતા ન હતા જેટ ૨૫. ૧૦૦) શીજી બાવાની એક રાતમાં થઈ તેમ સમાજનો આનંદ લેવરાવનાર રાજકોટના બ. વીરજીભાઈ રામજી તથા મોવેયાના મુખ્યાજી તથા સોની વેષ્ણુવ પોપટભાઈ સંબીતનું અદ્ભુત કામ કર્યું હતું. હપર મણાંયા પાંચ નામ પછી તથા સોની નિરુલ્લસ ભાઈ તથા હંદમજીભાઈ પ્રાણજીભાઈ આજે વેષ્ણુવની રહેલ કારે પ્રમાણમાં કરી હતી, ખલ્લ છે શ્રીવલ્લભ અને શ્રીવલ્લભીને, કે આવા આનંદ લેવામાં દબની કરી કોમલ જ મણવા નથી, બચવાન બચવડીયને અથેજ એના હપયોગ કરતાં નજાએ મન અચકાઈ નથી હને પણ આશા બંધાય છે ગોંડલમાં, નજીત આવી છે અને દિન પ્રતિ દિન અધા મનોરથો થવાનો સંભવ પણ રહે છે.

શુદ્ધદેવતા આલોકોને ખાસ લાભ—નિ. લી. ગે. શીજીવતલાલજી મહાસાજ (મુંબાઈવામાં) જેવ શ્રીવલ્લભાખ્યાન સહીક (જેના હપર ભારતમાર્ગે ૪ મં. મટલાલજીએ ટિપ્પણ કર્યું છે ને) અને મીળપડ મહારસાધિ ભાજ ૧ લો ૪૫ ૭૦૦ લગભગનું કળદર થાકા બાહ્યનું પુસ્તક “શુદ્ધદેવ” શબ્દોને માત્ર સાત આનામાં ત્રિરિધરલાલ જ. સાદ. લુકસેલર. ડે. શીલાલગાવા મનિર, બુલેધર, મુંબાઈ નં. ૨ નો દુકાનેથી આપવામાં આવ્યો. બહારગમથી મંગાવનારે અગામીઆનાના પોસ્ટ રટાં મોકલવા.

શ્રીવેષ્ણુવ ધર્મ મહાસમાદ-ટકારા—અમને નજાવતા ૬૫ થાય છે કે અમારી સરવાના પાંચ નવ શ્રીવલ્લભ ન્યાંતિના મંગળમય દિવસે પુરા થઈ છે. છતાં વર્ષમાં પાપપણ કર્યું છે. શ્રીકંકારા પાલતાના મહિ મોરબીયાળા લાલ મુંબાજ વસતા શ્રીપુદિમાગંગેશ્રી શ્રીયુત સોની એકલાલ વિદાલજીભાઈએ રમધમ

કલ્યાણની સ્તુતિ વિચારોથી પ્રેરણા રહીને જાન્યુઆરી ૧૩૨ ની કિંમતના એક વરકે આખા છે તેથી અહીંની શ્રીવલ્લભસુધિ તેમના ઉપકાર માને છે અને તેમના એક ધાર્મિક કાર્યો દિનપ્રતિદિન વૃદ્ધિ પામે તેમ હોય છે. આ બેન્ડ પોસ્ટાલથી શ્રીમંદિરે જઈ પ્રથમજા સ્ત્રીની સંનિધાન દર્શાવના મુખ્ય અગ્રેસરોની ધાન્યોમાં બળથી ભુક્ત પ્રાપ્તિ થઈ તે દિવસે કુચડવાચના શ્રીયુત દયાસમર્થ આચારથી શ્રીદાસીદાસ દેવી દેવી અને વેપ્પુલોએ ખુબ આનંદ લીધો હતો.

વેપ્પુલો પ્રતિ વિનંતિ—કુચડવા (રાજકોટ) એ રાજકોટનું ફેરફારનું મદદા છે તેમાં પ્રવિરથ વેપ્પુલો, બ્રાહ્મણ, વાણીયા, હુદાલા, ખેડૂત અદિ મતી ૩૦ થી ૩૫ થયે છે તેઓ શ્રીવલ્લભસુધા શુદ્ધ હૃદયથી કુચડવાઈ માનના છે. આ નવનકા યુગ સમુદમાં હજુ પ્રમુદ્ધાથી વીસમી સદીનો હેરીદવાનો સંચાર થવા પામ્યો નથી. હાલમાં ધર્મસ્ત્રીઓનું પ્રચાર કાર્ય કઠિયાવાડમાં આમટે ને જોડે થવા પામ્યું છે પરંતુ આવા વિષય વાણવરુનો દોષ આ માનમાં રોડ પહેલાં સર્વ વેપ્પુલોને હું દીનમાત્ર વિનંતિ કરું છું કે અમેને ધર્મ રક્ષકનો અનુપમ દાવા લેવાને પ્રભુશ્રી નંદનને તમારા નેટવોર્ક અધિકાર આપે છે, સંપ્રદાયપ્રતિષ્ઠાન ધણવતાર મુદરથ બન્યો અને બ્લેનોને વિનંતિ કરવાની કે અમારે માથે હાથ 'શ્રી' ના ચિત્રણ બિરાજે છે. તે બાંધીતરી પશુક્રીમાંથી. હાલમાં વર્ષાઋતુના સમય પછી તે પશુક્રી તેથી જ રિવિતિમાં રહેશે કે તે જોડી થિંબા છે. તે તે પશુક્રીને મંદિરની સમગ્રે તૈયાર કરવામાં હાલ અમેને રૂ. ૭૦૦ ની મદદની નવર છે તે રૂપા કરીને શ્રીવલ્લભપ્રભુના કૃપાપાત્ર વેપ્પુલ બન્યો અને બ્લેનોને અમારી વિનંતિ છે. તે સર્વ વેપ્પુલો આ માનભૂતિ હૃદયથી રાખી ચોત ચોતાથી બનતુ કરશે. લી. લી. હાલજી-દયાદજી દર્શાવવાના શ્રીમંદિર સરનામુ-મદદ દયાસમ દાલાભાઈ રહેલન માસવર. મુ. કુચડવા, રાજકોટ સોની વીરજી રામજીભાઈ મયદાયા, મુ. રાજકોટ, ટે. માંડવીચોક.

જગ્યા—ચોરાણના મુલાર પ્રાજી દેવજીએ ચોરાણથી યાત્રીઓ પાસેથી ગો. બાળકોના ચિત્રણ મંગાળ્યાં, તેમાં જ્યાંજ્યાં ધર્મ ૫ હજારમાં રજા રજા જગત આપના નકો કરાવીને, રૂ. ૧ હજાર થિંબા મંગાળ્યાં અને તેમાં વધી રજા કરીને અમેને કમિશન કેમ ન આપ્યું? તેમાં પહેલાં જનમાં જે 'જ્યાંજ્યાં' કે તમે પાંચ હજાર મંગાળ્યા તે નવર કમિશન કાપી આપીય. ત્યાર બાદ એક કમળ હાંપીને ધર્મથી આપી અને વિંદાનું રાજ દાય થયું અને રજનાઈની જ્યાંજ્યાંના પત્રો લખના નકો કર્યું તે સ્વાર્થીનોવિનું રીજઈન શુદ્ધાદેવમાં કરાયું છે. તે સર્વ વધીને ખજાન છે. ધન્ય છે એ બાઈની. વેપ્પુલોને, અલાર મુધી સંપ્રદાયમાં રૂ. ૧ પાંચ આનાની નણી કિંમતે અને તેના ઉપર-અત્યારે હજલ જગત પછી ચૂકી છે એ ફોટોગ્રાફીક આપકની પાંચપાત્રી ચોળના કરનાર ચાસીને ધન્યવાને બાંધે આનારથક આપે છે કરના એ આ કઠિયાવાડની માયાની દુર્લભતા તે છે મું? ધન્ય છે.

નવસારીમાં નવું મંદિર—નવસારીમાં શ્રીચંદ્રમાળી સ્થિત છે. ગિત્યલોચારવ આચાર્યવર્ગ ગો. શ્રીદેવજીનંદનાચાર્યજી મદારાજ ત્યાં વર્ષમાં એક વાર તે પધારવાન. પણ વિવિધાન શ્રીચંદ્રમાળીધાર ભાષ્યોન સ્થિતિને સંભાળવાને પરિશ્રમ છે છે? નવસારીમાં પધારે ૧૦ વર્ષના વહાણાં વાર્યાં. ઉપરનામ તથા ચોળલી વણ નણ વાર પધાર્યાં, જાપાળીના કૃપાપાત્ર શ્રીયુત વાચાભાઈ સરકાર, રોડ બીજાજીગુડાસ પંદિત, રોડ બાલુભાઈ ગોંદે પછી વાર વિનંતે પણ નવસારીનાં જામજન મુખે નીંદ. નવસારીનું મંદિર અતિશુદ્ધ પછી ગયું હતું તેનો ઝલ્લાદાર કરવાની ચિંતા મદાજનને માથે વધીથી આવી પછી દલી. મદાજનનાં નામ પ્રમાણે કામ પણ ચોડા, અને તેને મટે સમય પણ પછી લાગે? આખરે પ્રભુએ કઈ જાજીન રંગ જમાવ્યો. નવસારીનાં જતની અને સંધારણ રિવિતિમાંથી રંજુનમાંનાં બધાપરના પરિણામે ધનાઢય રિવિતિમાં આવેલા બજવડીય લક્ષ્મીમાઈ કમોદરણસ શાહ-તથા તેમના બાઈઓના હૃદયોમાં પ્રભુએ પ્રેરણા કરી. રોડ લક્ષ્મીમાઈએ કમર કસી અને ચોડાન સમયમાં આવીસાન બંધ મંદિર સિદ્ધ કરાવી દીધું. ચાત્રાના રજનામાં ચોતાનાં જામો મદરા મટે લક્ષ્મીપતિએ ધર્મચાળાઓ વધેરે બધાવે છે. ત્યારે ચોતાના જામમાં જે ઉચ્ચ દોષ તેની સામું બેઠા પણ નથી બજવડીય લક્ષ્મીમાઈએ તે ચોતાના જામમાં દેવી કૃપાને ઉત્તમોત્તમ ઉપલેખ કર્યો. વિનંતી સેવા સાથે મંદિર સિદ્ધ થાય ત્યાં મુધી ખડે પડે જમાં રહીને લગ્નજોડાં પણ તેમણે કરી. આ નિમિત્તે મુકોર ગો. શ્રીવલ્લભાચાર્યજી મદારાજ નવસારી પધારે અને દેવી જીને જક સંખ્યા કરાવે એવી અંતરની અભિલાષા રોડ લક્ષ્મીમાઈને હૃદયની એમણે આપકને કામવતરી પધારવા મટે અગ્રણ પ્રવાસો કર્યા.

આપાશ્રીના કૃપાપાત્ર શેઠ વામનસાહેબ સરખાર તથા યદેશ શેઠે પણ ખૂબ પ્રયાસો કર્યા. ચેત્ર સુ. ૩ ૬ અને ચેત્ર વદ ૧૧ અને તે પછીના મુદ્દતો ઘણાં બહાર પડ્યાં. આખરે આપશ્રી વૈરાગ્ય મુદ ૬ ના શોકામવનથી મોટર દ્વારા વિદા થઇને, શ્રીપુષ્કરના પધાર્યા. ત્યારબાદ રેલ્વેમાં અમદાવાદ પધાર્યા. અમદાવાદથી આપશ્રી તા. ૨૭-૫-૩૩ ના રોજ પ્રાતઃકાલે નવસારી પધાર્યા. રેલેયન પર આપશ્રીનું સાવ-ણીનું સ્વાગત થયું. આખું બજાર તોરણ વાવડાઓથી સજ્જારાઈ હતું. ૧૦ વર્ષના લાંબા સમય પછી આતકત્વત્ રાહ ભેટી વૈષ્ણવ સુદિના આનંદનો પાર ન રહ્યો. આપશ્રીને પધરાવવાની અને ન્યાંમુદી આપશ્રી સંપરિવાર બિરાજે ત્યાં સુધીની બધી વિતત્ત્વ સેવા ભગવદીય લક્ષ્મીબાઈની હતી. તેમના બાઈઓ બ. નેશીસનદાસભાઈ તથા બ. નમ્રોદનદાસભાઈ પણ ખેડે પગે તેયારજા હતા. યુવક વર્ગ પણ સેવમાં હાજરજા હતા. દરરોજ રાત્રે સલામો થતી. પેટલાઈથી સાચીજી ન્યેકારામભાઈ પણ આવી પહોંચ્યા હતા. તેમના તથા સાચી વસંતરામના દરરોજ બ્યાખ્યાનો થયાં. જો મુદ ૫ ના રોજ શ્રીને નવા મંદિરમાં પધરાવવાનું મુદ્દત્ હતું. શ્રીમદ્વીની વૈષ્ણવ મંડળીને આગ્રહ પૂર્વક આમંત્રી હતી. શેઠ ભગવાનદાસભાઈ, શેઠ હરગોવિંદસાહેબ, મેઘા વયોદર્જ શેઠ તથા બ. હમરાદાસ, બ. મુરદાદ આદિ શ્રીમદ્વીની આવી પહોંચ્યા હતા. ચિ. લાલાબાવાશ્રી પ્રભુને પધરાવવા પધાર્યા હતા. બરોબર શુભ મુદ્દત્ અનુસાર વાળતે બાળતે નવા મંદિરમાં પ્રભુ પધાર્યા. પ્રભુની સુખપાદને પધરાવવાની સેવા બ. લક્ષ્મીબાઈ તથા તેમના બાઈઓએ કરી હતી. આ સમયનું દૃશ્ય તો નવસારી કદી વિસ્મર્યોજ નહિ. તેજ રાત્રે મદાનનને મદાન પ્રસાદ સેવરાવવામાં આવ્યો હતો અને આ ઉદારતા પૂર્ણ સેવા બદલ બ. લક્ષ્મીબાઈને મદાનન તરફથી શાલ બોરાડવામાં આવી હતી. અહીંના નાયબ મુખ્યા પણ સભામાં ભાગ લેતા હતા એ નોંધવા જોઈ જોના પ્રજા. નવસારીથી મદારાજશ્રી મુંબઈ પધાર્યા અને ત્યાં ૪ દિન બિરાજીને શ્રીમદ્વી પધાર્યા. શ્રીમદ્વીના શુદ્ધ પ્રેમ અને ભાવના સપ્રદાયમાં અભેદ છે. ત્યાં ૩ દિન આપશ્રી બિરાજ્યા. શ્રીમદ્વીથી આપશ્રી ઉમરગામ પધાર્યા. ઉમરગામથી સુરત થઇને આપશ્રી દાહમાં ઉમરે બિરાજે છે. અસાદ મુદ ૩ નો જન્મદિન તથા અસાદ મુદ ૬ નો શ્રીગોકુળનાયકની જાતી પર બિરાજ્યા તે મંગલમય દિન ત્યાંથી.

શ્રીપુષ્કરમાર્ગીય વૈષ્ણવોપયોગી.

શ્રીભક્તિમાર્ગીય દર્શનીય ચિત્રસમૂહ ચિત્ર સંખ્યા ૩૧

અઘાપિ પર્યંત પ્રકટ થયેલ કાંડે સામગ્રિ વિવિધરંગી. (શ્રીનાથજી આદિ આંકે સ્વરૂપ, શ્રીમદ્દાપ્રભુજી, શ્રીગુરુદેવજી, શ્રીગોકુલેશ અને ગો. ધીગોકુલનાથજી મદારાજ શ્રીપ્રભાતના) ચિત્રઓ આપૂર્વ સંપ્રદ પીસામાં રહી શકે એવા પોલિટ સાઈઝ મુન્દર ટકાઈ અને સોન્ટેરી પાકુ પડે. છતાં જ્યોત્સવર એક રૂપિયા. 'શુદ્ધદૈવ' ના ગ્રાહકોને ચૌદ આનામાં આપવામાં આવશે. બહારગામથી મંગાવનારે માર્ગવ્યયના બે આના વધારે ચોક્કસવા.

મળવાનું ઠેકાણું—ગિરિધરલાલ જ. શાહ. ગુકસેધર.

૬. શ્રીલાલબાવાજી મન્દિર, ભુલેશ્વર. મુંબાઈ નં. ૨.

તા. ૬.—અમદારે ત્યાં વૈષ્ણવ સમ્પ્રદાયના સર્વમાં પુત્તકો અને ચિત્રો મળે છે.

મહારાક્ષિ વીર્યગુટિકા.

શક્તિની સર્વોત્તમ જડીબુટ્ટી આજકાલની શક્તિની દવાઓમાં પહેલે નંબરે પૂરવાર થઈ ચુકેલી વીર્યવર્ધક આ દવા છે. શરીરની નબળાઈ પર વિજળીક અસર કરનાર અને આનંદ આપનાર આ દવા બરકાતના પહોડોની અમરકારિક વનસ્પતિઓમાંથી બનાવેલી છે. ગોળી ૫૦ ના પાંચ રૂપીઆ. ટપાલ ખર્ચ છુદ્ડ નમૂનાની ગોળીઓ માટે આઠ આનાની ટીકીટો બીટો. શ્રીભક્તિ આયુર્વેદિક ફાર્મસી, ૩. પોરબંદર (કાઠીયાવાડ).

સૌને માટે

તાકત-તાઝગીધી ભરપૂર

લગ્નતદાર

ઝંડુ દ્રાક્ષા સવ

—વિના વિલંબે—
વાપરવા માંડો

ખાસ સ્ત્રીઓને માટે

તનહરસ્તી-તાકદથી ભરપૂર

સ્ત્રીઓની નખખાઈમાં
આબાદ અસર કરનાર

ઝંડુ અશોકારિષ્ટ

પ્રદરદિ રોગોના
અકસીર ધ્વાન
દરેક ઘરમાં હોવો જોઈએ

ખાજકોનાં પેટનાં દર્દોમાં

આબાદ કામ કરનાર

બિલકુલ
દેક વગરનું

ઝંડુ બાલશૂલાક

—ખાજકોવાળા—
દરેક ઘરમાં રાખવું જોઈએ
—શીશી એકના આના બાર—

ઝંડુ ફાર્માસ્યુટિકલ વર્ક્સ લી૦ મુંબઈ નં ૦ ૧૪

અમદાવાદના એજન્ટ: ભોગીલાલ બ્રધર્સ, ૧૧૪, મીચીશિડ,

આયુર્વેદિક દવાઓનું સુચીપત્ર આજેજ મ'બાવો.

લેખાનુક્રમ.

આપાઠ સં. ૧૮૮૯.

વિષયો.

પૃષ્ઠ.

વિષયો.

પૃષ્ઠ

૧. મદાભાગ્યોદયે ભવેત ...	૧૨૯	૭. ઓ વૈષ્ણવ યુવક...	...	૧૧
૨. શ્રીવલ્લભાચાર્યશરણાદકમ્ ...	૧૨૯	૮. શ્રોકૃષ્ણમકિત	૧૧
૩. વ્યાખ્યાન ...	૧૩૧	૯. ચંદા	૧૧
૪. શુદ્ધદૈત-ભક્તિમાર્ગ ...	૧૩૯	૧૦. અભ્યર્ચના	૧૧
૫. શ્રીમદ્ગણા ...	૧૪૨	૧૧. ચર્ચાપત્ર	૧૧
૬. પ્રતિમલ્લની પીછેદઠ ...	૧૪૫	૧૨. સામ્પ્રદાયિક પ્રવૃત્તિ	૧૧

અન્ય પાત્રન માટે અજળ તુરજો, સ્વાદિષ્ઠ શુદ્ધ ગુદર .

હજમાહજમ ચૂલ્હ.

આ ચૂલ્હ વૃદ્ધ યુવાન બાલક વગેરે દરેક સેવન કરી ગઈ છે. આથી કળજીવાત અપચો, પેટનો દુખાવો, આક્રોશ, દાહ, મંદાગ્નિ, ઉલટી, ગાડા, મોળ, અજીર્ણ અશક્તિ વગેરે તેમજ હાથ પગની વૃદ્ધ, વીર્યભાવ, સ્વપ્નદોષ, શરદી, રાજેખર વગેરે શરીરની વ્યાધિઓમાં અકસીર છે. કિ. જા. ૧ નો રૂ. એક, ટપાલ ખર્ચ જુદાં. નમુના માટે જો આનાની ટીકીટ મોકલો.

ઠે. ખરડા ફાર્મસી, પોરબંદર

શ્રીપુષ્પગાર્ગીય વૈષ્ણવોપયોગા.

શ્રીમક્તિમાર્ગીય દર્શનીય ચિત્રસમૂહ

ચિત્ર સંખ્યા ૩૧

અઘાપિ પર્યન્ત પ્રકટ થયેલ કાર્ડ સામગ્રિ વિવિધરંગી (શીનાયજી આદિ આઠે સ્તર શ્રીમદ્ગણપત્યજી, શ્રીગુણપત્યજી, શ્રીગોકુલેશ અને ઓ. ધીગોકુલેશ યજ્ઞ મહાસજ્જ શ્રીમદ્ભક્તિના) ચિત્રોને આપૂર્વ સંગ્રહ ખીંગામા રહી શકે એવા મોટા સામગ્રિ ચુન્દર ટપાલ અને સોન્હેરી પાકે હા છતાં જોઈવાર એક રૂપિયા. 'શુદ્ધદૈત' ના માલકને આદ આનામા આપવામા આપશે. બહારગામથી મંગાવનારે માર્ગવ્યયના ને આના વધારે મોકલવા.

મળવાનું ટેકાણું—ગિરિધરટાલ જ. શાહ. યુકસેવર.

ઠે. શ્રીલાલબાવાજી મંદિર, ભુલેશ્વર. મુંબાઈ નં. ૨.

તા. ૬.—અમદાર ત્યા વૈષ્ણવ સમ્પ્રદાયના સર્વજ્ઞ પુરતો અને ચિત્રો મળે છે.

મહાશક્તિ વીર્યગુટિકા.

શક્તિની સર્વોત્તમ જડીણુદી આજકાલની શક્તિની દવાઓમાં પહેલે નંબ પૂરવાર થઈ ચુકેલી વીર્યવર્ધક આ દવા છે. શરીરની નગણાઈ પર વિજયી અસર કરનાર અને આનંદ આપનાર આ દવા ખરડાના પહાડોની ચગતકા વનરપતિઓમાંથી બનાવેલી છે. ગોળી ૫૦ ના પાંચ રૂપિયા. ટપાલ ખર્ચ નામૂનાની ગોળીઓ આદે આઠ આનાની ટીકીટો ખીરો. શ્રીખડાં આયુર્વેદિક ફાર્મસી મ પોરબંદર (કાઠીયાવાડ).

श्रीवाक्पतिपादा विजयन्तान्तमाम् ॥

व५८.

अ० ४.

शुद्धदेव

आ५१६

अने

१८८८.

सहितमार्तः

श्रीवृद्धलाज

४५५.

महाभाग्योदये भवेत्.

धर्मे भागवते श्रद्धा रुचिर्भागवतश्रुतौ । संगो भागवतैः साक महाभाग्योदये भवेत् ॥१॥
 आश्रयो बलभार्यस्य सुबोधिन्वाद्य दर्शनम् । राधागुह्यभसेवा च महाभाग्योदये भवेत् ॥२॥
 यमुनायाः पयःपान प्रभृच्छिष्टेन पोषणम् । सदा श्रीगोतुले वासो महाभाग्योदये भवेत् ॥३॥
 अन्नं कृष्णलीलायाः कीर्तनं कुण्डलपरे । तस्या स्मरणमेकान्ते महाभाग्योदये भवेत् ॥४॥
 गिरिराजोपयन्ताया वासो बलभारीक्षणम् । भावनं कृष्णलीलाया महाभाग्योदये भवेत् ॥५॥
 प्रपञ्चविस्तृतिर्निष्मासकिर्हृदिचिन्तने श्रीकृष्णप्रवणं चेतो महाभाग्योदये भवेत् ॥६॥
 दर्शनं व्रजनाथस्य श्रवणं रसवद्विरामं । चिरं चर्यापदाजस्य महाभाग्योदये भवेत् ॥७॥
 गोचरानुभूयमानस्य व्रजेश्वरिहोदधे । तरंगशारङ्गरावापिर्महाभाग्योदये भवेत् ॥८॥
 कृष्णानन्या समस्तोमे समालिङ्गनतत्परं । विरुद्धं तथाऽस्वस्थो महाभाग्योदये भवेत् ॥९॥
 निधितुल्यमुपचाना भावो वै हृदि सुस्थिरः । श्रीरङ्गमरूपादृष्ट्या महाभाग्योदये भवेत् ॥१०॥
 श्रीस्वाजीराजपाठराज्याव्यापकग्राहिदुर्लभशर्मणा विरचित महाभाग्योदयदशकम् ॥

श्रीवल्लभाचार्यशरणाष्टकम् ।

(प्रणेता तथा अनुवादक — श्रीयुक्त नरोत्तम मोतीराम शास्त्री.)

श्रीगोतुलेशपदपकजदानदक्षं श्रीगोतुलेन्दुचरणे विनिवद्वलस्यम् ।

श्रीदेवहीसुततनो प्रकटस्वरूपं श्रीवल्लभार्यचरणं शरणं प्रपद्ये ॥१॥

श्रीकृष्णसेवनपथप्रकटात्मभानं प्रेम्ण प्रतिवृत्तिमहो रजगोपिकानाम् ।

सिद्धान्तमर्गविदमप्यनिलश्रुतीना श्रीवल्लभार्यचरणं शरणं प्रपद्ये ॥२॥

વૈશ્વાનરાવતરણં તદપિ પ્રશાન્તમુપપ્રતાપમપિ ચન્દનતુલ્યચિત્તમ્ ।
 કૃષ્ણાવતારમપિ શુભયશઃપ્રકાશં શ્રીવલ્લભાર્યચરણં શરણં પ્રપદ્યે ॥૩॥
 શ્રીલક્ષ્મણાર્યકુલકૌસ્તુભરૂપદેહં શ્રીવિઠ્ઠલેશપરિશોભિતસુન્દરાક્ષમ્ ।
 ચન્દ્રાવલિપ્રકટિતાસ્યસરોજકાન્તિ શ્રીવલ્લભાર્યચરણં શરણં પ્રપદ્યે ॥૪॥
 ऐश्वर्यपूर्णमथ वीर्यगुणैरनन्यं ओजस्विनं कुमतिखण्डनबुद्धिधन्यम् ।
 श्रीसेविताङ्घ्रिमपि कामवने निवासं श्रीवल्लभार्यचरणं शरणं प्रपद्ये ॥५॥
 आनन्दमूर्तिमपि कृष्णवियोगतप्तं शुद्धप्रकाशंचरितं प्रभुभावगुप्तम् ।
 पूर्णप्रकाममपि कामविनाशकारि श्रीवल्लभार्यचरणं शरणं प्रपद्ये ॥६॥
 व्याप्तं कठोरनियमैः करुणैकसिन्धुम् पारखण्डशत्रुमपि दैवजनैः शरण्यम् ।
 त्यक्तान्यदेवभजनं विबुधाश्रयश्च श्रीवल्लभार्यचरणं शरणं प्रपद्ये ॥७॥
 अन्यं यदंग्रिकमलाश्रयतः कलौ न निःसाधनस्य हरिसेवनसाधनं हि ।
 तन्मङ्गलं नरमणिर्मनसा सदैव श्रीवल्लभार्यचरणं शरणं प्रपद्ये ॥८॥

સમશ્લોકી—ભાષાન્તર.

શ્રીગોઠુલેશ ચરણે ધરવા સમર્થ છે શુદ્ધ લક્ષ્ય વિભુ ગોઠુલચન્દ્રમાર્થ,
 લીધું પ્રકાશતનુ દેવકિનન્દનાર્થ શ્રીવલ્લભાર્યપદને શરણે સંદાયે.
 શ્રીકૃષ્ણલક્ષ્મિ પથને કરતા પ્રકાશ છે પ્રેમમૂર્તિ મજગોપિજનોની ખાસ,
 સિદ્ધાન્ત મર્મ સમજે સહુ વેદના જે શ્રીવલ્લભાર્યચરણે શરણે સંદાયે:
 છે' અગ્નિરૂપ અવતાર તથાપિ શાંત ઉચ્ચ પ્રતાપ મન અન્દન તુલ્ય અન્ત,
 કૃષ્ણાવતાર અતિશુકલ યશઃ પ્રકાશ શ્રીવલ્લભાર્ય ચરણે શરણે નિવાસ.
 શ્રીલક્ષ્મણપ્રભુકુલે મણિરૂપ દેહ શ્રીવિઠ્ઠલેશ, અતિ શોભિત ગોઠ બોહ,
 ચન્દ્રાવલિ પ્રકટ કાન્તિમુખે વિંકાસ શ્રીવલ્લભાર્યચરણે શરણે સમાસ.
 ઐશ્વર્ય પૂર્ણ પણ વીર્ય શુભે અનન્ય તેજસ્વિ ને કુપથ ખંડન બુદ્ધિ ધ-
 લક્ષ્મી રહી ચરણ કામવને નિવાસ શ્રીવલ્લભાર્ય ચરણે શરણે સમાસ.
 આનન્દમૂર્તિ પણ કૃષ્ણ વિયોગ તપ્ત શુદ્ધ પ્રકાશ ચરિતે પ્રભુભાવ ગુપ્ત,
 છે પૂર્ણકામ વનકામ કરે નિવાસ શ્રીવલ્લભાર્યચરણે શરણે સમાસ.
 પોતે કઠોર નિયમે કરુણા સમુદ્ર પાખંડશત્રુ પણ દેવ મનુષ્ય ભદ્ર,
 ત્યાગી બીજું ભજન પંડિત પૂર્ણઆશ શ્રીવલ્લભાર્યચરણે મમ હો સમાસ.
 ના અન્ય પાદ કમલાશ્રયથી કલીમાં નિઃસાધનોનિ હરિસેવન સિદ્ધિભૂમાં,
 દે મંગલે નરમણિ પ્રભુમાં સ્વઆશ શ્રીવલ્લભાર્યચરણે મમ હો નિવાસ.

વિદ્વદ્ગણકેસરી શ્રી ૧૦૮ ગો. શ્રીવજ્રરત્નલાલજી મહારાજશ્રીનું વ્યાખ્યાન.

શ્રીમદ્ભગવન્નિઃશ્વસિતવેદાદિપરમાપુરુષકૃપાપાત્રમ્બગ્ધુ!

શ્રીમદાપ્રભુજી થીવડસાચાર્યચરણનાં ઉત્તરના દિવસથી આરંભી આજે ચાર દિવસ થયા. સુવકસલાના અદ્ય વાર્ષિક મહામહેતસવ નિમિત્ત અનેક વિદ્વદ્ગણનાં વ્યાખ્યાનો થયાં. તથા અગત્યના પ્રતાનો પણ ગત રોજ આપણે ચાર પાંચ હજાર સંખ્યાની જનતાની મેદિની વચ્ચે સંતાનુમતે પસાર કર્યાં. હવે આજે અમારે સર્વ કાર્યની સમાપ્તિનાપૂર્વક આવરણક કર્તવ્યનું મૂલ્ય કરવું છે.

ધર્મ-અધર્મ.

આપ જાણો છે કે આ બહુજ ગદન સમય આવી પહોંચ્યો છે, 'ધર્મ' અને 'અધર્મ' આ બંને શ્રીકૃષ્ણાવતારમાં પણ વારંવાર દિવાન પામતા હતા. અધર્મનું અભ્યુત્થાન થાય ત્યારે ધર્મની જ્ઞાન દૂર કરી પુનઃ પૂર્વ સ્થિતિમાં સરથાપન કરવા હજારવંશાર અંધ કંઠા આવેલથી થાય છે, અને સર્વોદ્ધાર કરવા પૂર્ણ રૂપે પણ કદામિત્ પધારે છે.

ધર્મની વ્યાખ્યા શાસ્ત્રમાં લુદા લુદા સ્વરૂપે દર્શાવી છે, તેની વ્યાપક વ્યાખ્યાઓ આ છે.

યતો નિઃશ્વેયસસિદ્ધિઃ સ ધર્મઃ, વેદપ્રણિહિતો ધર્મઃ, અધર્મઃ તદ્વિપર્યયઃ ૬-૪ મા.

"જેનાથી પરમ કલ્યાણ જીવને પ્રાપ્ત થાય તે ધર્મ. અથવા વેદ જે કહે તે ધર્મ. તેનાથી વિપરીત તે અધર્મ. પરમ કલ્યાણના માર્ગે દર્શાવીને વેદ, સ્મૃતિ અને પુરાણ વગેરે શાસ્ત્રોએ બહુજ ઉપકાર કર્યો છે પરંતુ અત્યારે શાસ્ત્ર જેને ધર્મ કહે છે તેને અધર્મ દેખે, અને જેને શાસ્ત્ર અધર્મ કહે તેને ધર્મ દેખે એવી તમસાવૃત્ત ભુદ્ધિનું પરિણામ ચાકી રહ્યું છે, આનું દેખાય ત્યારે ધીતાશાસ્ત્ર કહે છે.

અધર્મે ધર્મોમેતિ યા મન્યતે તમસાવૃતા ॥ સર્વાર્થાન્ વિપરીતોંધ બુદ્ધિઃ સા પાર્થ તામસો ।

ધર્મનું યથાર્થિત પાલન કરવા માટે ભારતના ઉત્તમોત્તમ તત્ત્વજ્ઞ પણ અને આશ્રમના વ્યવસ્થિત વિભાગ છે. વેદ હજવાન પણ વર્જ્યવ્યવરથા દર્શાવતાં કહે છે કે—

ચાતુર્વર્ણ્ય.

સાક્ષ્ણોડય મુલ્કમાસદિ વાહુ રાજન્યઃ કલઃ । કલ્લ સદ્વ્ય ચૈરૈરયઃ પદ્મયાં શુનોડજાયત । યજુઃ ।

ચાતુર્વર્ણ્ય મયા સૃષ્ટે ગુણકર્મવિમામરાઃ । ગીતા ।

બ્રાહ્મણ મુખથી, બાહ્યથી ક્ષત્રિય, જીરથી વંશ, પત્રથી યદ થયા, ચાતુર્વર્ણ્ય એ શુદ્ધ અને કમો સાથે ઉત્પન્ન કર્યું, અર્થાત્ બ્રાહ્મણદિ તેના કર્મ અને તેના શુદ્ધ સાથેજ પ્રકટ કર્યો. નાહ કે પ્રકટ કર્યો પછી કર્મનું દાન કર્યું, તેના સદ્ગત્ત કર્મ આગળ ગીતાજીમાં જણાવ્યાં છે.

શુદ્ધિ તેના શુદ્ધોનું વર્ણન કરે છે. ચાર વર્ણના રંગ અને સ્વભાવ વિશે શાસ્ત્રો કહે છે કે આ પ્રભુએ ચાતુર્વર્ણ્ય સર્વ રંગ તમના ભેદથી સરળ્યું. અર્થાત્ શુદ્ધનુસાર સરળશુદ્ધી બ્રાહ્મણ, સર્વ ન્યૂન અને રાજસ વધુ એવા ક્ષત્રિય, અને તામસન્યૂન અને રાજસપ્રધાન વૈશ્ય અને તમપ્રધાન એવા યદને પ્રકટ કર્યો, આ ચાર વર્ણનાં કર્મ પણ લુદાં લુદાં શાસ્ત્રમાં છે. કારણ કરવાથી તેવા વર્ણ પ્રાપ્ત થયા એમ ન માનવું. પરંતુ ચાર વર્ણ જન્મથીજ છે, કર્મથી નથી. આપસમાં પણ એજ આશા કરે છે કે—ચાર વર્ણ બ્રાહ્મણ, ક્ષત્રિય, વૈશ્ય યદ આ ચાર વર્ણમાં

પૂર્વ પૂર્ણ એટલે શરૂ કરતા વૈશ્ય, વૈશ્ય કરતા ક્ષત્રિય, ક્ષત્રિય કરતા બ્રાહ્મણ ઉત્તમ છે. તે જન્મથી જાનિત છે.

(ગીતાઇ) બ્રાહ્મણનાં કર્મ—બ્રાહ્મણના અભાવમિદ્ધ કર્મ, શમ, દમ, તપ, શાન્તિ, શાન્તિ, નમ્રતા, ગાન, નિરાન, શ્રદ્ધા આ મુખ્ય કર્મ કહ્યા જ ૧૮-૪૨. ક્ષત્રિયનાં કર્મ—તેજ, ધીરજ, ચપલતા, શુદ્ધમાયી પાત્ર ન કરવું, દાન અને ઐશ્વર્ય આ ક્ષત્રિયના સ્વાભાવિક કામ છે. વૈશ્ય કર્મ—ખેતિ, ગોરક્ષા, વેપાર એ વૈશ્યના સ્વાભાવિક કાર્ય છે. આપણા દેશમાં ગોરક્ષા સાથે ખેતી, અને ખેતી માથે ગોરક્ષા મુખ્ય છે અને વેપાર ત્રીજો નંબર છે તે વેપાર કરતા ગોરક્ષાની આનંદપ્રકા વધારે જણાવે છે. શૂદ્રકર્મ—પરિચર્યા શૂદ્રનું એકજ કામ છે આ પ્રમાણે વાક્યની અંદર શ્રીગીતાઇ કહે છે કે—પોતાનું ખાસ કર્મ—સદગ કર્મ તે બંને સદા (દોષવાળું) હોય પણ તે તેણે છોડવું નહિ

પોતપોતાના કર્મમાં લાગ્યો નહોતો માણસ સિદ્ધિને મેળવે છે. સ્વકર્મ વિશાળ હોય તે પણ પાળવો, પણ પાળકા ધર્મનું પાનન કરવું તે દોષમય છે અથાત્ બ્રાહ્મણે ક્ષત્રિયના, ક્ષત્રિયે બ્રાહ્મણના કે શરૂ બ્રાહ્મણના કર્મ કરવા મરી ન જવું, એ તેનું વાત્કર્થ છે.

ભાગવતમાં વર્ણવર્મ,

વિષક્ષત્રિયવિશ્વશ્રદ્ધા મુલવાહરૂપાદજા । વૈરાજાત્ પુરુષાત્ જાતા ય આમાચારલક્ષણા ।

બ્રાહ્મણ ક્ષત્રિય વૈશ્ય શૂદ્ર આ ચારે વર્ણુ રિસ્ટપુરુષના મુખ આ બે અને પગથી ચલા છે. બ્રાહ્મણ વિગેરના કર્મ દર્શાવે છે, તેના કર્મ શમ, દમ, તપ, સતોષ, શાન્તિ, નમ્રતા, ભક્તિ, દયા, મક્ષ આ બ્રાહ્મણની પ્રતિજ્ઞા છે તેજ, બળ, ધીરજ, શીર્ષ તિતિક્ષા, ઉગ્રતા, ઉદમ, ત્રિશરતા, 'ઐશ્વર્ય' આ ક્ષત્રિય પ્રતિજ્ઞા છે ૩ શ્રદ્ધા, દાનનિષ્ઠા, દભાહિતતા, બ્રાહ્મણસેવન (દ્રવ્ય પેના કરનામાં) અમતોષ આ વૈશ્ય પ્રતિજ્ઞા છે ૩ બ્રાહ્મણ ક્ષત્રિય વૈશ્ય અને ગાયની સેવામાં જે કંઈ મળે તેનાથીજ સતોષ માનવો, આ શૂદ્રકર્મ છે, હવે અન્તેવમયીના કર્મ પણ ભાગવતે બતાવ્યા છે અપવિત્રતા અમલ્ય ચોરી નાસ્તિકતા ગુપ્તશરીર કામ કોવ લોભ આ અભાવ અન્તેવમયીના છે આ ધર્મોની શ્રીશુદ્ધેવજ સનાતન ધર્મથી પીઠાન આપે છે

અક્ષાત્ ભગવાને મનુ રોનું પગમ કન્યાણુ કન્યા માગે આ ઉપગના સનાતન ધર્મો કહેના છે, આ સનાતન ધર્મની માથે મરી સમપ્રદાયની એકવામના છે, આ સનાતન ધર્મ જોડે જોડેના પણ વિરુદ્ધ મન નથી.

જાતિવદ્ય.

આ પ્રમાણે વે. ગી. ૭ ભાગવતમાં ચાર વર્ણુ દર્શાવ્યા, મનુ પણ ચાર વર્ણુ કહે છે

બ્રાહ્મણ ક્ષત્રિય, વૈશ્ય, શૂદ્ર વર્ણુ જિજ્ઞાસિ છે. કમળુ > તેમને ઉપનયન વિહિત છે તદ્દ પુન ચતુર્થ વર્ણુ એવ જાનિ છે કાણુ ? ઉપનયન નથી પાચમો મર્ધ પણ વર્ણુ નથી, એ ઉપગથી નિર્ણય થયો > પાચમો શુદ્ધ વર્ણુ નથી, પણ ખચ્ચ જેની સકોર્ણ જાનિએ છે તેમને વર્ણુ નથી કહેવાતી. વર્ણુ તો તેને ૮ કહેવાય દે જે બ્રાહ્મણીમાં બ્રાહ્મણી, ક્ષત્રિયજીમાં ક્ષત્રિયી, વૈશ્યજીમાં વૈશ્યી અને શૂદ્રજીમાં શૂદ્રીય ૧૫

જાનિનું લક્ષણ આજ જાણવું જો વગેરેના અનુષ્ઠાનનિવેશ એવે સારનાનિશ્ચયથી જેમ જેવ સિદ્ધ થાય છે તેમ બ્રાહ્મણને ક્ષત્રિયને મમળવવા વૈશ્ય અને શૂદ્રને સમળવવા તેના દરીગના અવધવાના લક્ષણ દર્શાવવામાં આવ્યા નથી પણ સાચકાર કહે છે > અમાન જાનિની જીમાં મમાન જાનિ પુરુષથી પે. યનાર મણુસને તે જાનિના જાણવો, જે વર્ણુની નિશાની

ને પોતાનાં કર્મ ન કરે તો

આહ્વાણુ જેવાં કર્મ ન કરે તો જાતિએ આહ્વાણુ રહે છે, પણ આહ્વાણુ દેહથી જે ઉત્પન્ન થયે તેવું જોઈએ તે મળતું નથી. મહાભાષ્યકાર કહે છે કે—તપઃ ક્ષુત્તે ચ યોગેષ્વ તપઃ શાસ્ત્ર અને જન્મ આ ત્રણુ આહ્વાણુનાં કારણ છે. આ ત્રણુથી આહ્વાણુત્પન્ન રક્ષણ કરી શકશે. જે તપ કે શાસ્ત્ર ન હોય તો જન્મ માત્રથી જાતિ આહ્વાણુ તો રહે છે. અર્થાત્ આહ્વાણુકર્મરહિત હોવા છતાં નામે આહ્વાણુ રહે છે. આ મનુવિચારને અમે સિદ્ધાંતીઓ પણ કહીએ છીએ કે અનાચાર કરવાથી “આહ્વાણુપણું” જતું રહે છે. જે આહ્વાણુચિત આચાર શાસ્ત્રાદિવાધ્યાય રાખે તો “આહ્વાણુપણું” રહે. જેમ પૂજનમાર્ગમાં કેઈ મૂર્તિમાં મંત્રથી દેવતા આવહન થાય તે વખતે તે મંત્રમગ્ધથી દેવતા પધારે અને જે અનાચાર થાય તો દેવતાનું તિરોધાન થઈ જાય. તેમ આહ્વાણુપણું જતું રહે, એ વાત મનુ કહે છે. લોકકાને હાથી હાથીના કામમાં ઉપયોગ ન આવે. પણ નામે હાથીજ કહેવાય. અર્થાત્ મૂળે મૂળે કરવામાં કામ ન આપે પણ નામે મૂળે કહેવાય છે. તેથી રીતે, સ્વાધ્યાયરહિત આહ્વાણુ આહ્વાણુના ઉત્તમેષ્ઠમ ફળમાં અયોગ્ય રહે છે. કારણ કે નામના જ માત્ર આહ્વાણુ છે. આ શ્લોકથી જાતિને ફેરવી નાખનારાઓની ઘાટગણે એમ નથી. જાતિ પરિવર્તન તો બીજા જન્મમાં જ થશે.

અમારા શ્રીમદ્ભગવદ્ ગોપાલદેવ દશમના, આઠમા અધ્યાયના છઠ્ઠા શ્લોકમાં જન્મના પ્રાણી ગુરુઃ આનો અર્થ ઉપસ્થિતિમાત્રે સર્વોપે પ્રાણી ગુરુર્મવતીતિ સર્વ આહ્વાણુ ઉત્પત્તિ માત્રથીજ શુભ થાય છે એમ કહે છે. આ વાક્યમાં હું “ઉત્પત્તિમાત્ર” શબ્દ ઉપર આપતું ધ્યાન ખેંચું છું.

જાતિપરિવર્તન અન્ય જન્મમાં.

આ પ્રસંગમાં જે લોકે જાતિપરિવર્તન કરવાને પ્રમાણ આપે છે તે જ પ્રમાણેનાં દેવાર કરીએ.

પ્રાણાં પ્રાણણાન્ જાતઃ શ્રેયસા ચેત્ પ્રજાયતે । અશ્રેયાન્ શ્રેયસીં જાતિં ગચ્છન્ત્યાસતમાયુગાત્ ॥

આ શ્લોક પછી ગુરુતજ

ત્વો પ્રાણણતામેતિ પ્રાણગત્થેતિ શ્દવાન્ । આ શ્લોક છે, સ્વાર્થાં લોકે આદરેજ શ્લોક બોલીને બોળાઓને ઉત્તર છે. ધર્મચર્ચથી જન્મ વળું ઉત્તમ ઉત્તમ વળું પ્રાપ્ત કરે છે. પણ તે ક્યારે ? તેનો ભ્રમ ન થાય તે મારે કહે છે કે જાતિ (જન્મ) પરિવર્તન ચતાં, બીજા જન્મમાં ઉત્તમ વળું પ્રાપ્ત કરે. આ ચાલુ જન્મમાં નહિ. કારણ કે પૂર્વ સૂત્રમાં અધર્મ સેવે તો અન્ય જન્મમાં જન્મતઃ શ્રેયાન્ આહ્વાણુદિ ઉત્તમ વળું પદ પોતાનાથી ઉત્તરથી યોનિમાં જન્મે છે. આ વાક્યથી આપણે નહીં કંઈ કે, બીજા જન્મમાં જ વળું બદલાય છે કારણ “ય દ્વ રમણીયચરણા” શ્રુતિ પ્રમાણ છે.

જન્મથી શ્રેષ્ઠ માન્યા છે. કર્મથી શ્રેષ્ઠ માન્યા નથી. એક જ જન્મમાં જે કર્મથી જાલંતર થઈ શકતું હોય તો “જન્મતઃ શ્રેયાન્” પદ અર્થ પડી જાય.

ય દ્વ કપૂયચરણા અન્વાશો હ યત્તે કપૂયાં યોનિં આપયેન્ । ચયોનિં વા શૂકરયોનિં વા ચાણ્ડાલયોનિં વા.

સોપિ તૈસ્તકુલે જાતઃ કર્મણા જાયતે યતઃ । શ્રીમદ્વલ્લભાચાર્યજી.

આ શ્રુતિ આપણને શું દર્શાવે છે ? જેવાં આચરણુ તેવા જન્મ પામે. કપૂય આચરણુવાળાને ફૂતરાની કે બુંડી કે ચાંડાલની યોનિ મળે છે. સારાં આચરણુ કરનારને આહ્વાણુ, ક્ષત્રિય, વૈશ્ય

હવે ધર્મ અધર્મની વ્યાખ્યા ગીતાછના વાક્ય સાથે જોડી શકાશે —

ચાર વર્ણુ શાસ્ત્રમા તેમજ વેદમા પણ છે, પરંતુ ચાર વર્ણુ અતિરિક્ત પાત્રમેા કાઈ વર્ણુ નથી એમ મનુ કહે છે — “ નાસ્તિ વર્ણસ્તુ પચમ ”

તો ખીછ જાતિ કયાથી આવી ? જગતમા અનેક જાતિ જણાય છે તેનું શુ ?

અર્થાત આદ્યક્ષીર્ણથી શદ નામનો પુરુષ જે પ્રભ કરે તે ચાકાળ, ચાકાનાદિ જેની હીન પ્રજાનું વર્ણુન શાસ્ત્રમા છે, દસ્ટુ કરીને એક જાત તે ઝગ્ગેદમા પણ લખી છે તેના વિચારનો મંત્ર છે. આગળ ચાતલા પાત્રમા વર્ણુમા પાત્રમા વર્ણુસક જાતિ લખી છે. એવી ધણી જાતિ વેદે કહી છે આ સિવાય મનુના અ. ૧૦ માના ૨૦ થી ૫૦ શ્લોક સુધી અનેક હીન જાતિઓનું વર્ણુન કર્યું છે, અને તે યજુર્વેદના ત્રીશમા અધ્યાયમા ૨૫૪ નામ છે, છતાં વેદમા અન્ય ગ્રંથ જાતિનું નામ નથી એવી જુમ પાડનારાએ વેદ જોયો નથી. મનુ કે પાત્રનક્ય તેને દેખાતા નથી ક્રતા કલ્પનાના યોગ ઉગ્રાવવા છે શાસ્ત્રમા ચાકાવ શ્વપચે શુ કરવું ? તે પણ લખ્યું છે

ચાણ્ડાલશ્વપચાનાં હુ બહિર્ધર્માત્ પ્રતિશ્રયઃ । અપપાત્રાશ્ચ કર્તવ્યા ધનમેષા શ્વગર્ધનમ્ ।

વાસાસિ મૃતચેલાનિ મિત્રમાખ્ડેષુ ભોજનમ્ । કાર્ણાયત્તમલદ્વાર પરિયા ચ નિવ્યશઃ ॥ મનુ ॥

ચાકાત શ્વપચોનો વાસ ગામથી બહાર છે. પાનથી તેમનો બહિષ્કાર છે એટલે કે તેમણે આધેક્ષ પાન ગ્રંથ પણ સરકારથી શુદ્ધ થતું નથી, કુતરા-ખર તેમનું ધન છે. શમના વચ્ચે તે છે. આ માણસો સાથે મનુ લગનાન આરા કરે છે કે ધર્મીનુશાન સમયે ચાકાનાદિ સાથે બોલવાનો કે તેને જોવાનો વ્યવહાર ન કરવો હવે તમને સમજશે કે ન્યા શાસ્ત્રમા ધર્મક્રિયા મૂર્તિપૂજા કે સેવા કરતી વખતે તેમની સાથે બોલવાનો કે ગ્રંથપણ વ્યવહાર કરવાની શાસ્ત્ર મના કરે છે, તો તેને મદિરમા પેસાડીને આપણાથી ધર્મની ક્રિયા ચાલુ કેમ ? અન્યજ અને અત્યેવસાથી છુદા છે.

ધોખી, ચમાર, નર, વારા કોડા દેવર્ત, મેદ, (વાધની ગ્રંથ જાત) અને બીન માત્રના અન્યજમા અમાવેશ છે ચાકાવ-શ્વપચ-ક્ષત્રા-સૂત-વેદેહક-આગર્થ અથોગર આ માત્ર અન્યાવર્થોથીઓ છે. એવા બેદ પાકવાનું કાગળ એ છે કે ૧૦૫૫૨ તે મમમા પણ તત્તમ રાખનાથી અતિ નીચ કર્મચાકાવ શ્વપચ જેવા-જકચર્મકાર સાથે ભળી જાય નહિ એ તેમા પણ મૂદ તત્તન છે

દેવેક જાતિ સમાજનું અંગ છે.

તમાગ ઉપર કોઈ પ્રહાર કરના આપણે ત્યારે મન્તકરૂપી આદ્યજનું રક્ષણ કરવા હાય રૂપી ક્ષત્રિય ઉચા થઈ રક્ષણ કરશે ત્યારે ધીરુ તથા ચરણ ઉપર પ્રહાર આવશે તો પણ રક્ષણ કરના માટે હાય રૂપી ક્ષત્રિય નીચા આવીને રક્ષણ કરશે જ બે આદ્યજનું રૂપી મન્તક બગડશે તો આખું શરીર મેડ-(ગાડા) જેવું બનશે માટે આખા શરીરમા આદ્યજ રૂપી મન્તકનું ખાસ રક્ષણ કરનાની જરૂર છે. આદ્યજને સર્વ વજનોનું શુરુ કહેવાનું કારણ સમજ્યા હશે. તેના દાશજ મર્વ કાઈ વ્યવહાર થાય છે સમાજમા સુવારો વવારો કરનાનો વિચાર પ્રથમ મન્તકમા થાય છે આપને આમારે જણાવવું જોઈએ કે જે અન્યજ છે તે પણ અગ છે, પણ તે અગ તેને યથાને પોતાની ફરજ બજાવતું ગે તોજ શોભે, તે અગ ખીમ અગો જેટલુંજ વડાક્ષ અને ઉપરોગી છે, શુદ્ધ અગ આપણું છે, ઉપરોગી છે, શુદ્ધિ વિના જરા પણ છતી શકાય નહિ. અગનો જેમ પરમ્પર ઉપકારક ભાવ છે તેમ વજનો પણ બજાવે. પોતપોતાના કર્મમા જે અભિગત રહે તેજ કત્યાજને મેળવે છે. “ સ્વે સ્વે કર્મણિ ” શ્લોક એજ કહે છે પૂર્વ જન્મના કારણથી તો આ દેહ તમને મળ્યો છે. શ્રુતિ પણ કપૂયચરણ રમણીય ચળુ કહે છે કુષ્ટવથી કપૂયથોનિ-ધ્યાન સંકર

આંધ્ર-બોનિ મુમુક્ષુ રમણીયપેરિ મને છે. આનંદ-સુત્રિય-સંસ્કૃતી એનિ પૂર્વ સમન્તા હમંધીજ મને છે. એ સમારે જુલું નહિ.

એક પૃથાત્ય વિદ્વાન મું કહે છે,

જેમો વર્તુલ્યવરથા પ્રતિષ્ઠાં આપક છે, એક પળ રીને ઉપકારક નથી વર્તુલ્યવરમની, જરૂર નથી એવા વિચારકોને પાશાત્વ વિદ્વાનોના જ અભિપ્રાય બતાવીએ છીએ.

"The system of Cast," says Sir Henry Cotton, "far from being the source of all troubles which can be traced in Hindu Society, has rendered most important service in the past, and still continue to sustain order and solidarity."

"Caste in India cannot be either abolished or extinguished. The system will last for untold centuries, because in suits India on the whole. Hindu Society without caste is inconceivable. Reformers must be content to make the best of a system which cannot be destroyed.....The deep waters of Hinduism are not easily stirred. Ripples on the surface have the depths unmoved."

સર હેનરી કોટન કહે છે કે "સાતિપ્રથા" હિન્દુ સોસાયટીમાં જન્મનું ફળ નથી, પરંતુ તે પ્રથાએ તેા જૂનઝાળની અંદર પડી ઉત્તમ એવા બન્યા છે. અને દરમુ પડુ તેને અવરથા અને ગિરતા દઢાવી રાખી છે.

સાતિપ્રથા હિન્દુસ્તાનની અંદર દૂર ચમકે છે નાચ ચમકે એમ નથી. એ પ્રથા ન કદી યથાચ એટલા સૌક્યો સુધી ચાલશે. કારણ કે તે હિન્દુસ્તાનને સંપૂર્ણ અંધારેલી છે. સાતિ પ્રથા વિનાની હિન્દુ સોસાયટી (સમાજ) કદી ન યથાચ એવી છે. સુધારકોએ, જે પ્રથાને નાશ ન થઈ શકે તેનો ઉત્તમ ઉપયોગ કરી સત્તાપ માનવો જોઈએ. હિન્દુસ્તાન એટલા ઉંડાં જગ છે કે તે સંદેશાઈથી દલાવી યથાચ એમ નથી. ઉપરના કારણે તે જગની ન દલાવી યથાચ એવી

શ્રદ્ધ, સ્ત્રીઓ વૈશ્ય અને પાપયોનિ આંધ્રલ જેવાની ભક્તિથી પરગતિ માની છે. નહિ કે વર્ણશ્રમ બદલી નાંખવાની પરવાનગી આપી છે.

આ આપતકાલ નથી. જાણીશુછને ધર્મ ન તલો.

આપતકાલનો ખોટો અર્થ ન કરવો. આપણને એ પડી છે કે ત્યારે ત્યારે આપણી નબળાઈને આપતકાલ માની લઈએ છીએ. ત્યારે દુષ્ટાના આક્રમણ હોય, ત્યારે જંગલમાં પ્રાણુ જવાની તૈયારી થતી હોય, દુર્ભિક્ષ હોય તેવા ભયંકર સમયોના દાખલો લઈ ધરતી પથારીમાં પ્રમાદથી પડેલાં આપત્તિકાલના ધર્મશાસ્ત્રની છૂટ ન લેવી, ઉપનિષદની એક વાતી યાદ આવે છે (જોહોનના પ્રથમ પ્રવાહકના દશમા ખંડમાં છે) ચક્રનો પુત્ર ઉપસ્થિત નામનો એક ઋષિ અસ્મદ્વાદૃષ્ટ દુષ્ટકાળથી દ્વિપિન કુરુ દેશમાં પોતાની સ્વતિ સાથે જતો હતો. રસ્તામાં તેને માવતનું ગામ આવ્યું. ત્યાં ભૂખથી પ્રાણુ નીકળતો હતો તેણે એક માવત પામે અહીંની યાચના કરી. મને અહીં ખાવા આપ, હું મરણાત ભૂખ્યો છું. આનો ઉત્તર માવત કરેો મુંદર આવે છે? માવત “ભયંકર” કરવા માગતો નથી, “આજે હું અહીં ખાઈ રહ્યો છું તેનાથી હવે ખીજ મારી પાસે નથી, જે છે તે ઉચ્છિષ્ટ રહેલા છે તે છે માટે હવે હું શું કરું? ઉપસ્થિતિએ વિચાર્યું કે મારે પ્રાણુની રક્ષા કરવી છે તેથી તે પણ ખાધા. પછી કહ્યું કે ઉચ્છિષ્ટ માપમાંથી મને આપો. પછી તે માવતે પ્રાણુનું દુષ્પિત ઉપસ્થિતિની પ્રાર્થનાથી માપ આપ્યા અને તે તેણે ખાધા. પ્રાણુ રક્ષા થઈ, હવે આપતકાલ દૂર થયો, તે પછીની યજ્ઞ માવત કહે છે કે આ અનુપાન લો (જલપાન, કરો) આ વખતનો ઉપસ્થિતિ જવાળા ધ્યાનમાં રાખજો.

નહિ ખાધા હોત તો મારી પ્રાણુરક્ષા ન ચાલ. તેથી તે મેં આપદર્મથી માપ સ્વીકાર્યું. હવે માપ ખાવાથી મારી પ્રાણુરક્ષા થઈ ગઈ. હવે કામનાથી ઉચ્છિષ્ટ જળ પીવું એ અધર્મ છે, આ બારીક જ્ઞાન તમેને શું સમજાવે છે? મોટાઈની કામનાથી હવે આજ કાલના દેશસેવાના બહાનાથી અથવા દોષપિણ કામનાથી અત્યારે મને તેનું પાણી પીવા લાગ્યા, તેના ધરમાં ખાઈ લીધું, આ કામનાના ધર્મપાતોથી ધર્મ ગયો. તેથી દેશનો ઉદ્ધાર તો સો ગાઉ દૂર ગયો, અનાચારના કારણથી શુદ્ધિ બગડી, અને પુનઃપુનઃ અનાચારપરંપરામાં ભારતના સંતાનો, અમર્યા મોડ્યા. કારણ કે અન્ન તેનું મન ચાય તે શ્રુતિ કહે છે. ખાધેનું અન્ન ત્રણ પ્રકારે વહેંચાય છે, જડભાગનો પરિણામ મદ્ય...સદ્ધર્મનું મન અને છે. આ હાંદોઅમાં અન્ન, જલ, તેજ આ ત્રણ મન, પ્રાણ વાણી રૂપે પરિણમે છે તે સ્પષ્ટ જણાવે છે, આજ હેતુથી હમારા પૂર્વજ દસદિગ્ગંતવિગ્નથી શ્રીપુરુષોત્તમજી વર્ણશ્રમધર્મની ઉપયોગિતા સેવાપ્રકારમાં જણાવતાં કહે છે કે—વર્ણશ્રમધર્મનુસાર જે દ્રવ્ય સંપાદન કર્યું હોય તે દ્રવ્યથી સામગ્રી સંપાદન કરી તે પ્રભુને ભોગ ધરાવવો અને પવિત્ર અન્નથી વ્યવહાર કરવો. આ આપણી પ્રાચીન ભારતની સભ્યતા છે. આ ભગવાનના ઉચ્છિષ્ટને બદલે મને તેનું ઉચ્છિષ્ટ ખાનારા આસુરી પ્રવાહોના તણાવેલને શાસ્ત્રમાં કહેલી ભગવન્મંદિરની બુદ્ધારી કરતાં સરમ લાગે, અને ઝાડુ લેઈ પાપખાના સાફ કરવાની અનાધિકાર દાંભિક ચેષ્ટાઓમાં પડતાં જરોપણુ સરમ ન આવે. એનું કારણ પ્રભુજી જાણી શકે છે, જ્ઞાની ચર્ચ ગયા હો તો પણ આચારવિરદ વર્તવાનું દરમ્યાન નથી. તો સાધારણ કેશાના માથુઓ સ્વચ્છંદતાથી કેમ વર્તી શકે? ભગવાન ઉત્તરમીમાંસાસૂત્રકાર પણ કહે છે કે—આ સૂત્રમાં પણ આજા કરે છે કે અંતઃકરણશુદ્ધિ જ્ઞાનમાં સાધન તરીકે ઉપયોગમાં આવે અને જ્ઞાન થયા પછી સાધનની જરૂર નથી પણ આપત્તિ સિવાય બાકીના વખતમાં જ્ઞાની અને સાધારણ બન્નેને માટે હુટ આપવામાં આવતી નથી આપતકાલને માટે તો “હવિતાત્મ્ય” વચનથી

આપણામાં ખાયા માટે આના કરે છે, આજ માટે ગમે તેવા અનાચાર કરનારાથી ભારતની સંસ્કૃતિ સો માટે દુર છે.

ભક્તિમાર્ગ સર્વનો ઉપકારક છે માટે પાપી યોગી માટે તેજ ઉપાય છે.

હવે તેમણે શું કર્યું ! તેમને માટે પૈદ્ધિક કર્મ નથી, તેમને માટે ઉપાય સ્થાપનામાં સારો ગીતાજી બતાવે છે તે સ્વીકારે. ભગવદ્દર્શનની ધ્યેય દોષ તો સુષ્ટિ દર્શનથી પૂર્ણ કરી રાહે.

પ્રત્યુ શ્રીકૃષ્ણનો આશ્રય સ્વીકારી પેત્રપેત્રની કક્ષામાં રહેનાર પાપીયો દોષ અર્થાત્ અંસજન અન્યેયસાથી જેવો પાપીયો અને ત્રિષો વૈશ્ય કે શૂદ્ર પુણ્ય પરાગતિને પામે છે. માટે ભક્તિમાર્ગ જેવો વિશ્વવ્યાપક કર્મ તેમને માટે નવાર છે, તે પોતાને ઘેર ભગવાનમાં પૂર્ણ શ્રેય રાખી દહાર ભક્તિ દ્વારા રાહીદાસની માફક પેત્રને ઘેર ભગવાનને ઢાળી કરી દે તેમાં પરમ શ્રેય છે. મંદિરમાં પેસવાથી તો વિકર્મનું પાપ લાગશે. બીજા કર્મમાં દાખલ થવાથી તેમનું કલ્યાણ થાયજ નહિ. પોને વધારે પાપી થાય છે. માટે પ્રત્યુના ચરણમાં ભક્તિદ્વારા ધણી તરીકે ગયા. તે પરમસક્ત જગતમાં પ્રસિદ્ધ છે. પણ ભક્ત જન્યા વિના ભક્તનાં દંભમાં ઉચ્ચ ભક્તોના ઓળી આપી તેમને સમાને ઉત્તમ કલા નો અમને કેમ નહિ કે એનું બોલનારા સામને કપર છે. માટે સર્વને બ્રાહ્મણ, કાશ્યપ, વૈશ્ય, શૂદ્ર, અન્યજન, અન્યેયસાથી ગમે તે હો તે પોને પેત્રની કક્ષામાં કર્મ પાળીને તેમાંજ રહીને ભક્તિથી ઉત્તમ કક્ષા ભગવત્પ્રાપ્તિ કરી શકે. એજ

શુદ્ધાદેવ-ભક્તિમાર્ગ.

(શિખર:—શ્રીગુરુ વિનોદરાય વચગુખરાય મળમુંદાર બી. એ. એમ્.એ. બી., અમરેલી.)

ગયા મંદે માતા વસોદાનાં અદોભાવ વર્ણવ્યાં છે તે ભાગ્યે લાભ ને ભક્તિમાય બીનું હૃદય દશે તો આપણા સંપ્રદાયમાં દરેક સ્વચ્છ લાભ શકે છે તેમ છે. કારણ કે શ્રી. કાંધ સ્ત્રી જાતિ લુદો અને પુરુષાત્મનિ લુદો નથી. તે તો એક સરખો બન્ને જાતિઓમાં એક સરખોજ છે માટે ગરમંત્રના શબ્દોમાં સ્ત્રી માટે કાંધ પણ ફેરફાર રાખવામાં આવ્યો નથી.

વળી સ્વરૂપસેવાથી જે વિશેષ લાભ છે તે ચિત્રજીવી વગેરેની સેવામાં નથી તેનું કારણ એ છે કે શ્રીઆચાર્યચરણની આજી " ચેતઃ તત્પ્રવચ્ચ " કરવાની છે તે શ્રીકૃષ્ણ પરમાત્માએ શ્રીમુખથી જે તારનમ્ય બતાવ્યું છે તેને અનુસરીને છે તે એ રીતે કે " તપસ્વિઓપધિક્ષા યોગી જ્ઞાનિઓપધિક્ષા મનઃ કર્મિઓપધિક્ષા યોગી તસ્માદ્યોગી ભવાર્જુના પરાત્મા અર્જુનને યોગી થવાની આજી એટલા માટે કરે છે કે યોગી તપસ્વીઓથી, જ્ઞાનીઓથી અને કર્મનિક્ષી અધિક (મહે) છે. એમ કહેવાનું કારણ સમજવાની જરૂર છે. તપ કરવામાં મનને જે વસ્તુ મેગરવાની તથા ભોગવવાની શક્તિ હોય છે (જતાં) તે વસ્તુઓ નહિ મેગરવાનો દર નિશ્ચ કરીને મન વસા કર્યું અને શરીરને કટ પડે તો ભક્ષે પડે તેમાં પાછા દર્યું નહો એમાં તાત્પર્ય નક્કરમાં અથવા વિસ્તરમાં વિગેરે પરિણામોમાં રહેવું છે. અને જાર શું છે ? કેમ ન રહેવાય ? વિગેરે પરમાત્મા સિવાયની વાત ઉપર ભાર આવ્યો અને પ્રમુ પ્રસન્ન કરવા નિમિત્તે તપ દોષ તોપણ પરમાત્મા સાથે હં બાંધીને વાસવ ભાવ ખીલવ્યા વિના અસિમાન (દહ) અદભાવ ખીલવીને અમુક કામનાને આગળ કરીને તણેજદથી પ્રમુને પ્રકટ થવાની ફરજ પાડવામાં અને તેની પાસેથી વરદાન માંગવામાં તાત્પર્ય છે. અને જ્ઞાનીને તેથી ઉચ્ચ " અમાનિત્વ " ક્ષપાદિ દં નથી મારે કંઈ જોઈતું નથી એ સારા ગુણો ખજા પજુ તે સચે વૈશ્ય ઉપર જાર દોવાથી.

અને વૈરાગ્યપોષક નકારાન્ત રહેલી પસંદ હોઈ ભગવાન પ્રત્યે પ્રેમવાત્સલ્યાદિને પણ “રાગ” ગણીને વિરાગ એટલે પ્રભુમાં રાગ પણ ઉપલબ્ધ ન થવા દેવાનું વર્તન પ્રદણ કરવામાં આવે છે કેમકે રાગથી બંધન થાય છે એવો (without exception) ભવ અસ્યાને ખીલવ્યાથી ભગવત્સંબંધી બાળનામાંથી પણ વિરાગ એટલે બહિર્મુખતા ધારી વપખતે પેસી જાય છે અને પ્રભુને માત્ર જાણ્યા એટલું શુદ્ધગોન પૂરતું જનાય છે. ત્રીજા કર્મનિષ્ઠ વર્તનને વિધિ, નિષેધને આધીન વર્તવુંજ જોઈએ છીએ. હવે વિધિ એટલે વેદમાં જે આજ્ઞાઈ વાક્યો વાપર્યા છે પણ વેદ તો સંપૂર્ણ ઉપલબ્ધ થતા નથી-દાખલા તરીકે મન્વેદની શાખા કૃત્ત્વાક ૨૪ કહે છે કૃત્ત્વાક ૨૧ કહે છે તેને ખદલે આગે જે ચાર ઉપલબ્ધ છે. યજુર્વેદની ૧૦૧ શાખાને બદલે આગે ૧૧ લાખે ઉપલબ્ધ હશે! મામવેદની તો એક હજાર શાખા કહેવાય છે તેને બદલે દસ ધીસ ઉપલબ્ધ હશે!! અને અર્થવે વેદની કોષ્ટ ૧૨ કહે છે અને કોષ્ટ ૯ કહે તેમાં જે ત્રણ ઉપલબ્ધ હશે છતાં તકગર ખાતર જેટલું ઉપલબ્ધ છે તેમાંનાં વિધિવાક્યો ઉપર બાર દસ કર્મના દાયદા પ્રમાણે પ્રભુએ ક્ષણ દેવુંજ જોઈએ એવું તપના જેવું તાત્પર્ય ગુણીને દેશકાળ દ્રવ્ય મંત્રકર્તા અને કર્મને કાળ (મમય) જેવાં શુદ્ધતમ રહતા નથી એ યોગી વાત ભુલાઈ જવાય છે માટે શ્રીમુખે “યોગી” ખનવાની અભુજને આજ્ઞા કરી યોગને અધિક કહી તેનું કારણ એજ છે કે “યોગઃ કર્મસુ કોશલ” એમ શ્રીમુખે વ્યાખ્યા આપી કે “કુશલતા” ચતુરાઈ સીધો સમગ્ર હરી મમજનું (રહસ્ય) તું પ્રદણ કર એમ કહીને તુરત તેજ અધ્યાય છતાંના સહતાળીસમા શ્લોકમાં ઉચ્ચતો નિર્ણય આપી દીધો છે કે “યોગિનામપિ સર્વેષા મહાતેનાન્તરાત્મના, શ્રદ્ધાવાન ભજતે યો માં સમે સુક્રતત્તોભવતઃ” અર્થાત્ ૧ મહાતાન્તરાત્મના યદને શ્રદ્ધાયુક્ત ખનીને ૩ માફ ભજન કરે તે પાછલા શ્લોકના અનુસંધાનમાં અર્થ કરીએ તો તપસ્વીધી, યાત્રીધી, અને કર્મોધી જેઓ (યેમાન) છે તેવાઓમાં પણ શ્રેષ્ઠ એ છે કે જે માફ (શ્રીમુખ પરમાત્માનું) શ્રદ્ધાયુક્ત ભજન મહાતાન્તરાત્મના યદને કરે તે શ્રેષ્ઠ યોગી છે.

વળી જ્ઞાન વિજ્ઞાન શ્રદ્ધા, અધિશૂન આધિરૂપ અધ્યાત્મ, અધિયત્, રાજવિદ્યા વિગેરે કહી ખતાવીને ઉવટે અધ્યાય નવમાના યોગીઓમાં શ્લોકમાં એજ આજ્ઞા કરી કે મમ્મન્ના મવ મદ્જ્ઞો મવાર્જા ધત્વાદિ એ હું સર્વવ્યાપક છું છતાં અનેક વિમૂતિ (નિશ્ચિતોજ સત્તા વિગેરેવાળે રચને અને વ્યક્તિઓ) મા હે વધારે પ્રકટ છું અને એ વ્યષ્ટિ ઉપરાંત સમષ્ટિરૂપ વિરાટ પણ હું છું. એમ ખતાવ્યું એ બહારખને ભજનારા સ્તવનારા પણ તેની સાથેજ અભુજને ખતાવ્યા અને મત્કર્મકૃત મત્પરમો મહાભક્તઃ થવા આજ્ઞા કરી તેથી અભુજને અધ્યાય ખારમાના પહેલા શ્લોકમાજ પ્રશ્ન પૂછ્યો કે “આય એટલે કે મ. ૧૨ ના શ્લોક ૪૬ અને ૪૭ માં કહેલું “ચતુર્ભુજ” “ત્રીમુખ” ધત્વાદિવાળા શ્રીમુખે યોનાને ભજનારા “યોગવિત્તમ” ? કે આ જગદન્ત હમણા મેં જોયું તેનું અવ્યક્ત અક્ષર સ્વરૂપ ભજનનારા “યોગવિત્તમ” છે ? તેનો સ્પષ્ટ જવાબ તુરતાતુરત શ્રીમુખે આપ્યો છે કે “મથ્યાવેશ્ય મનો યે માં નિચયુક્તા ઉપાસને શ્રદ્ધાપરયોપેતાસને નેયુક્તતમા મતા એ જવાબને ઉપર જણાવેલા છતાં અધ્યાયના સહતાળીસમા શ્લોક સાથે સરખાવવામાં આવશે તો તેની તેજ વાતે વધારે ભાર દઈને આજ્ઞા કરી છે કે “મહાતેનાન્તરાત્મના ખરા” પણ “નિય” તેવી રીતે યુક્ત રહેવું જોઈએ અને શ્રદ્ધાવાન યદને ભજન કરવાનું કહ્યું છે તે શ્રદ્ધા પરાશ્રદ્ધા હોવી જોઈએ એટલે તે યુક્તતમ ગણાય. અર્થાત્ અક્ષરને ભજનવાળા માટે એકમ પહેલી પસંદગી શ્રીમુખમાંથી નીકળી નથી પણ તેને ભજે છે તે આટલી આટલી યોગ્યતાવાળા (હોય તો) અધિક કહેણ પડે ત્યારે મનેજ પામે છે એમ ક્રીક ક્રીક સમાધાન

નહીં તેમ ખીજ કોઈપણ વસ્તુ તરફના રોષ કરતાં ન્યૂનતા અથવા ખીજા રોષ સાથે સમાનતા પણ રહેશે નહીં. અર્થાત્ ખરેખરે માહાત્મ્યવાન હંદયારે નહીં ચંદુ હોય ત્યાં સુધી સુદૃઢપણામાં તથા સર્વશ્રેષ્ઠતામાં ન્યૂનતા રહેશે. ત્યાં સુધી “ત્રેમલક્ષણા ભક્તિ” ઉત્પન્ન થશે નહીં. માટેજ કવિવર દયારામભાષ્યએ ગાયું છે કે “નિશ્ચયના મહેલમાં વસે મળવાડિયો” અને નિશ્ચયનો એ દ્વાર મનથી પર છે. મન છે તે સંકલ્પ વિકલ્પાત્મક છે અને ધીમુખેથી. કંઈ ઉપનિષદ વાક્ય અર્જુનને કહ્યું છે તેમ મનસ્સરુ પરા હૃદિ છે તે હૃદિનું લક્ષણ “નિશ્ચયાત્મિકા હૃદિ” એવું છે. મન તો આત્માને નાસ્તિકીનાં પણ ખાલેલા છે તેથી અનેક વિકલ્પો અને ઉંધા સંકલ્પો કરે છે તેથી તેની હૃદિ ભગવદ્દિમુખ ભેદનામાં આવે છે.

શ્રીવ્રજયાત્રા.

વલ્લભદાસને ઘેર ન્યાં ભગવદ્વાર્તા હમેશાં યાય છે ત્યાં સર્વે ભગવદીયો આવે છે. સર્વે નેશ્વીરુષ્ણ કરીને ખેસે છે. દૃષ્ટવાસ બતી નેડે છે, વૈષ્ણવો મંગલાચરણ કરીને પુરતકજ ખેસે છે. ત્યાં રતનનાં કહે છે—રામદાસજી વલ્લભદાસભાઈને પુછે જે કાને રાત્રે “મજા વહાલું રે વૈકુંઠ નહિ આવું.” તે ધોળ ખોલાવ્યું તેના અર્થ અને સહેજ ભાવાર્થ સમજાવે તો ધણું સાફ.

વલ્લભદાસ—માજી, તમે બહુ સાફ પુછ્યું છે. આપણા મહારાજશ્રી આ વરસમાં મળ્યાજી કરાવવાની આજ્ઞા કરી રહ્યા છે. તે અવધુ કરી શુભરાત, કાઠીઆવાડ, કચ્છ, વરાહ, મારવાડ પ્રભૃતિની શ્રીવલ્લભમુદ્રિ મળ્યાત્રાનાં સુખ લેવા તમસી રહી છે આ વર્ષની મળ્યાત્રાનાં સુખ તો ભાગ્યશાળીઓને પૂર્ણ મળવાનાં છે.

રામદાસ—વહાલા વલ્લભદાસભાઈ, માજીએ પુછ્યું છે તે કરુણા કરી કાંઈ અવધુપાન કરાવો તો સાફ.

વલ્લભદાસ—રામદાસભાઈ, આપણને સર્વેને વિકલ્પદાસભાઈ તે રસનું પાન કરાવશે.

વિકલ્પદાસ—મારા વહાલાના વહાલાં ભગવદીયો, શ્રીવલ્લભ અને વલ્લભીદ્વારા મેં જે પાન કર્યું છે તેનું કરીને અવગાહન કરાવવા તમોએ મારા ઉપર કૃપા વિચારી છે તો જે મેં સાંભળ્યું છે તે નિવેદન કરું છું. પરણુ ભગવદીય રણજોડદાસ માસ્તરની મંડલીમાં એક વખત મેડા ઉપર વૈષ્ણવો રાત્રે “મજા વહાલું રે વૈકુંઠ નહિ આવું ના ના નહીં આવું રે ના નહીં આવું મજા વહાલુરે વૈકુંઠ નહિ આવું.” તે ધોળ ગાઈ રહ્યા હતા. નીચે રસ્તા ઉપરથી એક ઝોંકાર-શકર નામના અન્યમાર્મી પંડિત નીકળ્યા તેના કાન ઉપર આ શબ્દ પડતાં મનમાં વિચારવા લાગ્યા, જે આ ઝોંકારો મરજી આવે તેમ ગાયા કરે છે, ઠીક છે, પણ કાલે સવારે હરિદાસ મારા પડોશમાં રહે છે તે વખતો વખત બગાડાં (ગપ્પા) માર્યા કરે છે, જે અમારા પુષ્ટિમાર્ગમાં જેટલું જેના અનુભવમાં આવ્યું હોય તેટલું તે ગાય છે, તો આ માસ્તરની મંડલીવાળા જાન વિનાનાં વૈષ્ણવો કહે છે જે વૈકુંઠ નહિ આવું, જે વૈકુંઠ દેવતાને દુર્લભ છે તેના કરતાં મળ્યાં શું અનુભવ્યું હશે? તે પ્રશ્ન હરિદાસને પુછીને તેને હસવખત ગપ્પાં મારતો બંધ કરી દઈશ. તેનીજ કલ્પનામાં રાત આખી કાંઈ ઉંધ કલ્પના કરી વીતાવી દીધી. સભ્યરમાં ઉલ્લાસ હરિદાસને ખોલાવીને કહે છે હરિદાસ, આજે તમારી પોથ પકડી લાવ્યો છું. જવાબ પૂરો કરો.

હરિદાસ—પંડિતજી, આજે તો કાંઈ બહુ ભેરશોરમાં વાત છે? એવડી બધી ભારે પોથ-શું પકડી લાવ્યા છો?

પંડિતજી—રાત્રે દસ વાગતાને મુમારે દોઢીવાડાની પેળખાની નીકડતાં ઘોરીજ વારે કાણુપુરના રસ્તા અને રીચીરિડ સડક વચ્ચે ને ગલી આવે છે તેમાં મેઝા ઉપર માસ્તરની મંડળીમાં વૈષ્ણવો બોલી રહ્યા હતા ને “મગ વડાહુરે વૈકુંઠ નહિ આવું, ના ના નહિ આવું, ના નહી આવું. મગ વડાહુરે વૈકુંઠ નહિ આવું.” તો લાઇ હરિદાસ, તમે વખતોવખત ગમ્પાં મારો છો ને અમારા પુણિમાર્ગમાં જેણે જેટલું અનુભવ્યું છે તેટલુંજ તે ગાય છે તો આ વૈષ્ણવો કહેતા હતા ને વૈકુંઠ નહિ આવું. તો લાઈ હરિદાસ, વૈકુંઠના દર્શનને તો જેને મોક્ષની પ્રાપ્તિ ગઈ હોય તેનેજ થાય છે અને મોક્ષ પણ ચાર આશ્રમ સિદ્ધ થાય તેનેજ મળે છે. આવડું મધું કદિન કામ છતાં તે લોકો રાત્રે ગાતા હતા ને વૈકુંઠ નહી આવું, ના નહી આવું. તો મોક્ષ કરતાં અધિક શું હોય ને મોક્ષને તરછોડીને કહે છે ને નહી આવું? અને તેથી પણ મગમાં વધારે શું અનુભવ્યું ને મગ વડાહું તેમ કહે છે તો તે ગમ્પાં નહિ તો શું કહેવાય?

હરિદાસ—પંડિતજી તમારો મગ હું સમજ્યો છું. હવે મારે તમેને પુછવાનું છે ને તમે કહો છો ને ચાર આશ્રમ સિદ્ધ થાય તેનેજ મોક્ષ મળે છે તો તે ચાર આશ્રમ કયા કયા અને તે આશ્રમમાં શી રીતે વર્તવાનું તે જરા ઠીક કરીને કહો.

પંડિતજી—પહેલો બ્રહ્મચર્યાશ્રમ અને તેમાં એક વખત જન્મવાનું છે. ભોંય પર મુખું, નશાવાસા કોઈ પદાર્થ ખાવા પીવા નહી, એકાંતમાં કોઇ સાથે ઉઠ્યું બેસ્યું નહી વગેરે વગેરે. બીજો ઔરધાશ્રમ તેમાં ધર ખાંધીને રહેવું અને ધર આમળ આવેલા અતિથિનો ખનતો વાણી પાણી ને સાથરી સંપત સાથે અન્ન, ખંધી રીતે સત્કાર કરવો. ત્રીજો વાનપ્રસ્થાશ્રમ તેમાં જંગલમાં (વનમાં) રહેવું ત્થી સાથે હોય પણ સંસાર મુખને ખાટે નહિ. ભગવદ્ધર્મની અનુકૂલતા સારજ. ચોથો સંન્યસતાશ્રમ છે છતાં સર્વજન ત્યાગ કરવો તેનું નામ.

હરિદાસ—“નારી મુઠ ધર સંપતિ નાસી મુંઝ મુંઝાઇ ભયે સંન્યાસી” તેવા તો શ્રીમદ્ વલ્લભાચાર્યજીના પ્રાકટ્ય વખતે કાશીમાં દસ હજાર સંન્યાસીનું સૈન્ય ચવનની સેના સામે લડવા તૈયાર થયેલું હતું. સંન્યાસીના વેશના પડદા પાછળ મનમાને તેમ કરે તેવું તો નહીને?

પંડિતજી—તેવું સંન્યસત તો નરકમાં બોળવાનું છે. તેનો આશ્રય કરનાર પણ સંસારમાં હોય. ઉપર કહેવા પ્રમાણે ચારે આશ્રમ જેને સિદ્ધ થાય એટલે યથાચિત વર્તનમાં આવે તેનેજ મોક્ષ મળી શકે છે છતાં એથી કદિનતાએ ને મોક્ષ મળી શકે છે તેને તે લોકો તરછોડે છે તે તેમની કટલી ખંધી અવાનતા ગણાય છતાં તમે તો હર વખત તેવા લોકોની સરાહના કર્યો કરો છો. હવે તેણે શું અનુભવ્યું તે જવાબ હું સમજી શકું તેથી રીતે આપો.

હરિદાસ—પંડિતજી તમે કોઇ વખત વૈષ્ણવોને મગધાત્રા કરાવવા શ્રીવલ્લભકુલ આવડે (ગોસ્વામી માહારાજને) વધારે છે તે જોયેલું કે સાંભળેલું છે?

પંડિતજી—દસ બાર વરસ પહેલાં એક વખત અમે એક શેડની સાથે મંચાઇએ ગયા હતા. ત્યાંથી પછી ગોકુલ મયુરાંની જાત્રા કરી વંદરાવન જોયું. પછી તે શેડ વૈષ્ણવ હતા અને તેણે અમને જાત્રા કરવા રેલનું ખરચ આપ્યું હતું તથા ખાવા પીવાનું ખરચ પણ તે શેડજ આપતા હતા. તે શેડ શ્રીગુરુસંપ્રદાય મહારાજની સાથે મગધાત્રા કરવા રોકાયા અને અમે પણ તે વખતે મગની પરિક્રમામાં સાથે હતા તે વખતે જોયેલું તો છે પણ હવે બરાબર યાદ રહ્યું નથી.

હરિદાસ—પંડિતજી, સાંભળો બધા વૈષ્ણવોએ તે વખતે વિશ્રાંતયાદ ઉપર જાત્રાના નિયમ લીધા. તેમાં બ્રહ્મચર્ય સર્વે પાળ્યાં. તે ચાલીસ દિવસની જાત્રા થઇ ત્યાં મુઠી તમારા જોવામાં આવ્યું કે?

પંડિતજી—હા તે વખતે બધાં ભોય મૂતા, પંચકેશ રાખતા, તેણ લગાડતા નહી, એક વખત જન્મતા, તેનું બધું અહમચર્ચ આશ્રમ જેવો મેં જરાબર જોયેલો છે તે અને હજી ચાદ પણ આવે છે પણ ભાઈ શુદ્ધચાત્રમનું શું ?

હરિદાસ—શુદ્ધચાત્રમ તેઓએ પાલ નાખેલા તે તેનાં ઘર સમજો. પોતાને પાસે આવે તેને ટાક તાકે વરસાદથી ખચાવવા જગ્યા પણ આવે છે. લોટ દાલ અમર ખપતાને દાળ ખાટી તૈયાર હોમ તેથી પણ ખનતો સત્કાર કરે તે શુદ્ધચાત્રમના ધર્મ ખરા કે નહિ ?

પંડિતજી—હા, તેમ પણ બન્યું હતું તે પણ હવે મને ચાદ આવે છે પણ વાનપ્રચારમનું શું ?

હરિદાસ—ત્યા ડેરા વનમાંજ પડે છે. કોઈ દિવસ ગામમાં વાસ નથી કરતા. ચાલીને ડેરા વનમાંજ પડે છે અને સ્ત્રીજન સાથે હોય તે ભગવદ્ધર્મના અનુકૂળના માટેજ હોય છે. ત્યો સંસારસુખને માટે સ્ત્રીઓ સાથે રાખતા નથી.

પંડિતજી—હા, તે પણ બન્યું હતું તે પણ મને ચાદ આવે છે પણ સંન્યસાશ્રમનું શું ?

હરિદાસ—ધરમા લાખો રૂપિયાનો વહીવટ સગા મહોદર સર્વે છે છતાં તે સુધામાયી ચિત્તનો નિરોધ કરીને એટલે અમારું કોઈ નથી અમારા એક શ્રીગોવર્ધનધર છે એનું મન સાથે નિશ્ચય કરી આનંદથી ભગવદ્દેહ્ય કરવી તે સંન્યસ.

પંડિતજી—હા, તેમજ હતું, અમારા શેઠને બહુજ જન્મના ઘર આગળ હતી. રાતદિવસ વેપાર રોજગાર વહેવામાંથી બીવકુલ નવરા થાય નહિ છતાં પણ ત્યા સર્વને કહી દીધું હતું જે ધરના સાગ ચા માદાં કાંઈ ખમર તમારે મને આપવા નહિ.

હરિદાસ—એમ પંડિતજી, તે ચારે આશ્રમના ધર્મો તે લોકો મનમાં જાણે ચાલીસ દિવસના સિક્ક કરી લે છે એટલે વર્તનમા લાવે છે તે તમે નજરે જોયેલું છે અને તેનું ફલ મોક્ષ તરછોડે છે. ગાથી જે તેને મનમાં જે ચાલીસ દિવસના જે સુખ થોડા પ્રમાણમાં વિના અને શ્રીગુમાધજી મહારાજની કૃપાથી મળેલું છે એટલે અનુભવમા લીધેલું છે તેથીજ તે ગાય છે જે મંચ વહાણું રે વૈકુંઠ નહી આવે.

પંડિતજી—હરિદાસજી, હુ તો મનમાં ગયો છતાં તમે જે સુખનું પર્ણન કર્યું તે બધું નજરે જોયેલું છતાં તેમાનો કાંઈ અનુભવ કરી શક્યા નહી તેનું કાગળ ?

હરિદાસ—પંડિતજી, તમે વાત કહી જે અનુભવમા આવી નહી તે ખરાબર છે. મનના સુખની ખજા તે અનુભવવાવા ભગવદ્દેહ્યોના સત્સંગથીજ મળી શકે અને તેવા ભગવદ્દેહ્યોના સગ દાસધર્મવાલાઓનેજ ફલસ્થ થાય છે. તમેને તમારી પંડિતાઈએ એ સુખથી વેગવા રાખ્યા છે. શ્રીગુમાધજી મહારાજ પણ પોતાની દેવી સાથે હિર ન્યારે અતિરાય કરણદક્ષિ વિચારે ત્યારે સત્સંગેતારાજ તે સુખ લેવરાવે છે અને તેવા સત્સંગનું સુખ મનમાં તેવા મનના અનુભવવાવા ભગવદ્દેહ્યો હોય ખગ અને મનમાત્રાભિને આવે પણ ખરા તેટલાજ પુરતું મન્યાવા કરાવવાનું શ્રીગુમાધજી મહારાજ વિચારે છે જેથી દેવીજીવોના આનંદમા વૃદ્ધિ થાયો. આ પ્રમાણે મે સધારણ રીતે સાબળું છે તે મેં નિવેદન કર્યું છે. ભાવ સંબંધ પ્રમંથ એટલે શ્રીગોપીજનોનો ભાવ કુંજન કુંજને ભટકી હુ તો આવી જંદાવન ભટકી તે કોઈ દિવસ કોઈ ભગવદીને પુઝ્ય.

જમનાદાસ—ભાઈ વલ્લભદાસ આજનો બહુજ આનંદ થયો. આપણી આખી મહેતી આ વરસે મન્યાવા કરવા જઈએ. આ વર્ષે શ્રીગુમાધજીએ કાઈ અગણિત દાન કરવા વિચાર્યું છે. આખી આખી મહેતી વચ્ચે એક એકર એ પાંચ મોટા મોટા લઈએ, અને સર્વે મનીને સેવા

ગૂરસ અંથોના ઉપોદ્ધાત જે છપાવ્યો, છે તે મેં (વસંતરામે) જ લખીને 'આસેતુદિમાચ્ચ પંડિત' ના નામે પ્રકટ કરી ત્રાંખ્યો છે. આવી ભયંકર-અપ્રામાણિકતા કે બેધમાની મેં જાહેરમાં કરેલી હોય તેની મને યાદ નથી. હું પણ ગૂદરાચારી છું, પણ મારી ધર્મપાત્રીને કે પુત્રીને ના એક પણ લેખ છપાવીને દુનિયાને દેગવાનું હીચકારાપણું બતાવ્યું નથી. એમ કરનારને 'પ્રતિમહ' પણ ન જ ગણું, પણ એક કાયર-ક્ષીણ જ ગણું.

ખેર, હવે ખરી વસ્તુરિથિતિ તો મારે જાહેરમાં ચૂકવી જ નેહ્યો. 'રસાલય ગૂરસ' અંથોના ઉપોદ્ધાતના અસલ લેખક કોણ? આ વિષે આસેતુદિમાચ્ચ પંડિતના હાથના લખેલા બોલતા કાગળો મારી પાસે છે. તે ક્રમશઃ પ્રકટ કરું છું. આ મગજૂત અને સંગીન પુરાવા પરથી વાચકો સમજી શકશે કે, દુશ્મનને દુશ્મન તરીકે જાહેરમાં જાળખાવવામાં જેટલી ખીનદાની બતાવાઈ છે તેટલી દુશ્મન ઉપર પ્રહાર કરવામાં બતાવાઈ નથી. રસાલય અને ગૂરસ અંથ હું લુગ પ્રકટ કરવાની તૈયારીમાં હતો. મારે એક નાનીથી પ્રસ્તાવના અમુકજ હીતીમાં લખવી હતી. અંથમાં જે વિરદ્ધ અંશ હોય તો તે પ્રસ્તાવનામાં લખવાથી અંથપ્રકાશકની પત્રકારનીતિને ઝાંખપ લાગે. છે તે તો 'આસેતુદિમાચ્ચપંડિત' જ કહી શકે. અંથ અને અંથકારના ગુણદોષનું વિવેચન ન થાય તો તે ઉપોદ્ધાત જ શા કામનો? અંથના માત્ર વખાણ જ કરવાં અને વિરદ્ધાંશનો પણ ખેડો બચાવ કરવો એવું નવું 'મીમાંસાશાસ્ત્ર' જૈમિનિ મહર્ષિએ રચ્યું હોય તો તે 'આસેતુદિમાચ્ચપંડિત' જ જાણે. હું તો એક નાનીથી પ્રસ્તાવના લખી નાંખવાના વિચારમાં હતો તેવામાં જામનગરથી તા. ૧-૮-૨૦ નો નીચે મુજબ પત્ર મળ્યો:—

“પૂજ્ય ભાઈશ્રી, રસાલય અંથ દ્રાષ્ટા લંડચીનો છે એમ મારા જાણવામાં છે. રસાલયમાં શ્રીવલ્લભાચાર્યચરણપ્રતિપાદિત પુષ્ટિમાર્ગ સાથે અનેક વિરોધો વિદ્યમાન છે. અરે એટલુંજ નહિ પણ શ્રીગોકુલેશના પુષ્ટિમાર્ગ સાથે પણ. જે ભરચીના પદપાત્રીઓ સામે તે વિરોધો મુકાય. અને સમાધાનની ચેતેજ અપાય તો જેઓ આપને ભાષ્યપ્રકાશ લખવાની ભલામણ કરતા હતા, તેમને પડકારી શકાય. જે તમે રચાન આપો તો હું ચર્ચાપત્ર લખું. પરંતુ પાછળથી મને ચર્ચાપત્રોના જવાબો છપાવવા માટે ફાંફાં મરાવો તે હીક નહિ. જવાબ લખશે.

હરિશંકરના પ્રણામ.

ઉપરના પત્રમાં શ્રીયુત પ્રેદેસર મગજાલ શાસ્ત્રીજી એમ. એ. ને ખુદશો પકકાર છે. જાહેરમાં તો શ્રીયુત મગજાલ શાસ્ત્રીજી માટે લખાય કે, સંપ્રદાયમાં તેઓ સુધ્ધ જેવા છે, અને પાનગીમાં તેમને શીંગડાં મારવાની આ ચાલ્યાજી આસેતુદિમાચ્ચપંડિત તથા ૪૦ રીમ સરેદ કાગળોને કાળા લેખોથી રાણુગારનાર કોઈ વિરલાજ બતાવી શકે. ઉપરનો પત્ર મળ્યા પછી મેં તેમને લખ્યું કે સિદ્ધાંતોની ચર્ચા કરવામાં કાંઈપણ વાંધો નજ દોષ શકે. તમે એ ભરચી અંથોનું ખંડન લખશો તો હું પ્રસ્તાવનામાં જાણીશ. મારા આ જવાબ પછી આસેતુદિમાચ્ચ પંડિતજીનો ખીન્ને પત્ર આ પ્રમાણે મળ્યો:—

શ્રીમત્સુ—નિતિતતય:—

કૃપાપત્ર નથી તે લખશે. મહાવદાસસંબંધી (રસાલયઅંથના કર્તા) લેખ લેવાર છે. પૂર્ણ વિચાર કરીને નિર્ણય થયો છે. જે આ લેખ છપાશે તો સાંપ્રદાયિકોનો રોધાગ્નિ લાકડી ઉઠશે. ભરચીની વિરદ્ધ લખવાથી પ્રેદેસર સાહેબનો (શ્રીયુત મગજાલ શાસ્ત્રીજીનો) પારો ઉછળશે અને તે સમાજ ઉપરાંત આપણા પણ વૈષ્ણવો ગો. બાલકો અને પંડિતો નારાજ થશે, જેઓ અત્યારે મારાથી વિરદ્ધ છે, તેઓ આ કાર્યમાં મદદ કરશે. વિના કારણ

આપને કહ્યું હતું ત્યાં અને દરેકનો કોઈ વહેરી લેવો, એ શા માટે ? પુષ્ટિમાર્ગની વિરુદ્ધ ને કહેવાનું પુષ્ટિમાર્ગીય સાદિત્ય છે તે સર્વનો વિરોધ મારા ઉપોદ્ધાતથી ઉપવક્તવ્યવિષયા થાય છે. મારો પક્ષ લેનાર કોણ છે ? પૃથ્વોપકના અભાવે વ્યર્થ કમલ કહેવો અયોગ્ય લાગે છે. આપ ક્રિયાકુશલ છો. તેથી ભરૂંની કથાને પહેંચી વચ્ચા. મારાથી તેમ થવું શક્ય નથી. ત્યારે માફ પોતાનું પણ મધે અથવા પૃથ્વોપક મળશે ત્યારે છપાવીશ. અથવા ને મારો ઉપોદ્ધાત તમારા પોતાના નામથી છાપવા ઈચ્છા હોય તો તેમ કરજા હું ખુશી છું. પ્રાપ્તિર લખશે.

દરિદ્રીકરના પ્રણામ.

ઉપરનો પત્ર કેટલો બધો ભયંકર છે ? 'આસેતુદિમાયકપંડિત' જન હૃદયને જાણવા માટે આથી વધુ પુરાવો બીજો શો હોય ? મેં ફરી પત્ર લખીને ઉપોદ્ધાતની માંગણી કરી. પણ તે મારે, નામે છાપવાની કૃપાસાત તો મેં નજ આપી. 'આસેતુદિમાયકપંડિત' જનાં ધર્મપત્ની અ. સૌ. જગત્ત ખદેન તો તેમનાં એક ધર્મપત્ની કહેવાય, એટલે 'પત્રકાર' પતિતેન ધર્મપત્નીને નામે ગમે તેવા લેખો લખીને છાપે તો તેને માટે તેઓ મિત્રારાં મુંઝા રહીનેજ બેસી રહે, પણ હું એ મદાપંડિતના પ્રશસનન્ય લેખને મારે નામે છાપીને તેનો 'પત્ર' પાટવાની બેવકાફ શા માટે ખતાવું ? તેથી એ ઉપોદ્ધાત મૂલ લેખકના જ નામે ખદાર પાટવાની રજા માગી. આખરે એ ઉપોદ્ધાત આખો એ મદાપંડિતના હાથનો લખેલો અને મળ્યો. તેની સાથે એક પત્ર મળ્યો; તે આ રહ્યો:—

ભાઈશી, આપનો રોષ લયેો પત્ર વાંચ્યો. અનિચ્છાથીજ આ લેખની તૃતીયાવૃત્તિ (વધુ કાપકુપ કરીને) સેવામાં રવાના કરી છે...આ લેખ મારે નામે પ્રકટ થાય એમ મારી સર્વથા ઇચ્છા નથી. ને તમારા નામે છાપશે તો કાંઈ થશે. તેમ છતાં ને છાપશે તો હવે હું તેનો નિષેધ પણ કરીશ નહિ.

દરિદ્રીકરના પ્રણામ.

ત્યાં સુધી તેઓ પોતાને નામે ઉપોદ્ધાત છાપવાની અને રજા ન આપે ત્યાં સુધી તે તેમને નામે છાપવાનો મારો પત્રકરૂઢમ ન ગણાય. ઉપરના પત્રમાં તેમની રજા મળી તે સ્પષ્ટ છે. તે પછી એમના ઉપોદ્ધાત સાથે મેં એ કંઈ બદલ પાટ્યા. આ ઉપરાંત બીજા પણ પત્રો મારી પાસે છે. રચનાકોમથી મુકાના પત્રો જાહેરમાં મૂક્યા છે. ઉપરના પત્રો તેમજ બીજા પત્રો તથા આખો ઉપોદ્ધાત એ આસેતુદિમાયકપંડિતના હાથનાજ લખેલા મારી પાસે મેળવ્યું છે. કોઈ પણ તરફથી તે ખતાવવા તૈયાર જ છું.

ઉપરના પત્રો પર વિવેચન કરવાની જરૂર નથી. એ બોલતા કાગળોજ ખરી વસ્તુચિતિ કહી દેશે. આટલો પત્રચપહાર છતાં 'પ્રતિભક્ત' પંડિતજીએ જે નોંધ લખી તે કેમ લખી કે કેવલ આસેતુદિમાયકમાં, નહી, તત્કાલ કે સ્વનુમદિના જલપ્રસાદમાં છુદ્ધિ વહી ગઈ હશે અથવા તો પદારો સાથે અથડાઈને હાથ પગ ચિનાની 'સ્તત્' ચર્ચાગઈ હશે. 'સ્મૃતિચંચાલ' એ પદપરાથી એ મદાપંડિતને પ્રભુ ખચાવો એ અભ્યર્થના.

જે શબ્દો કપડવંજપંથી ભાઈ ઓચવલાસને લખવા રહ્યા. તેમણે એ ચર્ચાપત્ર છાપવા અને મોકલવું નેહવું હતું. પણ સિદ્ધાંતની ચર્ચામાં અંગત ચર્ચાને રવાન નજ હોય. પણ ભાઈ ઓચવલાસ પોતેજ સ્વાર્થમાં એવા રૂચાદૂન હશે છે કે તેમને બધા સ્વાર્થો દેખાય છે.

હું સ્વાર્થથી (પૈસાની ઈચ્છાથી) કામ કદે છું કે કૃત્રી રીતે તે એક કાણમાં પૂરવાર કરી રાડું છું. પણ ભાઈ ઓચવલાસ તમારા, નિલસીવાસ ગો. શ્રી ૬ શ્રીકંઠ્યાવાલજી મહારાજના સેવક થયા, તે પછી ગો. શ્રીમંતુવાલજીના સેવક થયા, એઓશીના વૃદ્ધ આર્થા, તે પછી

મંદિરના પ્રસાદ લીધા હશે પાવરીઆ પંથના મહંત બન્યા. આમાં તેઓને પૈસાનો સ્વાર્થ નો નજ હોય. પણ ભાર્ગવ્યોચ્ચત્તાન-લક્ષી રસિક ભગવદીય હોય અને ભમરાની પેઠે જુદા જુદા રસ આપવાની ટેવથી (એમના શબ્દોમાં કહું તો મુંઝવીની પેઠે) એક ભવમાં અનેક ભવ કરવા પ્રેરાયા હોય અને બીજાને પણ તેમજ બેઠા હોય તો તેમાં એ ભાષનો દોષ હું નજ ગણું.

તટસ્થ વાંચકોની એટલી તો ચોક્કસ ખાતરી-થઈ ગઈ હશે કે, રસાલય—હરમ પ્રાંથનો ઉપોદ્ધાત મેં ઉપગ્રવની રા. હરિશંકરજીને નામે પ્રકટ કર્યો નથી; પણ તે તેમણે વિના પ્રેરણાએ લખ્યો છે અને તેમની છેલ્લી રજ પછીજ તેમને નામે તે જાણ્યો છે. છતાં બાણે કાંઈ તે વિશે પોતે બાણનાજ ન હોય તેવી નોંધ તેઓ લખે છે, એ શું એમના ચિત્તની દયાગતક દશાનો પુરાવો નથી ? આ ચાલખાઈને કુટિલતા કેવી કે અદમારી ? લોકોની આંખોમાં ધૂળ નાખવાની ચેષ્ટા કહેવી કે પોતાની પ્રતિષ્ઠાપર પાણી ફેરવવાની બાંધિશા ? ચિત્તગ્રમ કર્તે કે વિપરીત મતિ ગણવી ? હું શું કહું ? વાચકોજ નિર્ણય કરી લેશે. આજ આસેગુહિમાયજ પંડિતોથી સંપ્રદાયને પ્રભુ બચાવે એવો ધ્વનિ સદગજ નિષ્ણે છે.

તંત્રી.

ઓ ! વૈષ્ણવ યુવક !

(ભાઈ ગઢલાલ દેરાવલાલ સોહા બીલખાવાળા.)

૧. કહી સવારમાં ' ન્હા ' ને બદલે પ્રભુનું નામ લીધું છે ?
૨. કહી ગપાટા કે કુચરીને બદલે સત્સંગ કર્યો છે ?
૩. નેવેશેા જેમાં કૃષિમ પુત્તકો વાંચવાને બદલે સ્વમાર્ગીય રસિક ગ્રંથો કહી ઉપાડ્યા છે ?
૪. અમરદાસોની ખુશામત કરવાને બદલે કહી પ્રભુસેવા કે દેરાસેવા કરી છે ?
૫. સ્વધર્મની નિંદા કરવાને બદલે માર્ગમાં " શું કહેશું છે અને ધર્મની પ્રશ્નાંકિત શું છે " તે કહી બેઠ્યું છે ?

૬. આપણા દરેક કાર્યનું કેન્દ્ર પ્રભુ થય ગિરી કહી પ્રજ્ઞતિ કરી છે ?
૭. નાટક, સિનેમા જોવાને બદલે પ્રભુના દર્શન કરવા કહિ મંદિરે ગયા છે ?
૮. નાટ્યી ગાયનો ગાયને ગાયને બદલે પ્રભુનાં કીર્તનો કહી ગાયાં છે ?
૯. આપણે જગનની પરીક્ષામ. પાસ થવા વિચાર કરીએ છીએ પણ પ્રભુને આપવાની પરીક્ષામાં પસાદ થવા વિચાર વરીકે કર્યો છે ?

૧૦. રજાવામાં છંદગી માગવાને બદલે ધર્મના સમગ્રો અન કુરિવાને દૂર કરવા પ્રયત્ન કર્યો છે ? અને કહી સ્વમુખે " તોટી પાંડા અધર્મના કુરિવાળો-રે " ગાયું છે ?

૧૧. વધારે અને વધારે પૈસા મેળવવાને બદલે ને પૈસાનો ઉપયોગ ધર્મની ઉન્નતિમાં કર્યો છે ?
૧૨. આપણે પશ્ચિમના રંગમાં રંગાઈને નેટરાઈ અગ્રાની પણ ' ટાઇ ' ને બદલે કહી લિખક કર્યું છે ?

૧૩. દેહને શુશોભિત વસ્ત્રોથી રાજમાનવાને બદલે પ્રભુને કહી રાજમાયા છે ? અને વધા વેદે તથા દેવે નું સૂત્ર કહી ચાલ કર્યું છે ?

૧૪. પાખંડી વૈષ્ણવ થવાને બદલે ખરા વૈષ્ણવ થવા છે ?
૧૫. ઉપરના પ્રશ્નો, હે ! વૈષ્ણવ યુવક ! તારા મનને કહિ તેં પૂછ્યા છે ?

વળી કલિયુગમાં પ્રભુપ્રાપ્તિનું સમગ્ર સાધન કયું ? આ કાળમાં એટલે સાન્ન્યતઃ કલિયુગમાં પ્રભુનું નામ, ધ્યાન, શરણાગતિ અને દૃઢ આશ્રય તથા વિશ્વાસ (પ્રભુ ઉપર) એ વિદ્યે વગરનાં સમગ્ર સાધનો છે. પરંતુ આ ભવસાગરમાંથી પાર ઉતારવામાં નોકા રૂપ શ્રીકૃષ્ણનું સ્મરણ તે કેવી રીતે કે—

કૃષ્ણો રતાઃ કૃષ્ણામનુસ્મરન્તિ રાગૌ ચ કૃષ્ણં પુનરુચિતા યે ।

તે ભિન્નદેહાઃ પ્રવિશન્તિ કૃષ્ણં હવિર્યથા મંત્રહુતં હુતારૌ ॥

સ્તોત્રકાર્યઃ—શ્રીકૃષ્ણમાં આસક્ત શ્રીકૃષ્ણનું પળે પળે સ્મરણ કરનાર સુતાં પણ શ્રીકૃષ્ણનું જોને સ્મરણ થાય છે તેવો જવાબા ભિન્ન દેહવાળો છતાં જેમ મંત્ર ભણી હોમેણું હવિ (હોમવાનું સાધન) અગ્નિમાં મળી જાય છે તેમ (આસક્ત) પણ શ્રીકૃષ્ણનું જની જઈ-પરા ભક્તિ ગુણી પહેંચે છે. વળી પણ સમગ્ર સાધનનો પ્રયત્ન કર્યો હોય તો જેમ એ હાથ વતી તાળી પડે તેમ ભક્તિમાં અન્ય સત્ પુરોનો સંગ કર્યો પડે છે તો પછી સંત જનોની નિરપેક્ષ દૈન્ય ભાવે (સંયુક્ત) સેવા આદર્શો મદત્ સાધનો છે કે જેથી સહજમાં પાર ઉતરી શકાય છે.

ચિન્તાનો સર્વોશો નાશ થઈ પ્રભુમાં આસક્તિ ક્યારે બંધાય કે—પ્રભુ સર્વસમર્થ છે, સર્વોત્તમો છે એમ ભ્યારે જીવને દૃઢ નિશ્ચય થાય અને પ્રભુ પેતાનીજ ઇચ્છાથી સર્વ કાર્ય કરે છે તથા પ્રભુજ માટે સ્મરણ છે—સ્મરણ છે એમ ભ્યારે જ્ઞાન થાય છે ત્યારે ચિન્તાનો સર્વોશો નાશ થઈ પ્રભુમાં દૃઢ વિશ્વાસ બંધાય છે અને તેથી જીવ નિઃસંશય કૃતાર્થ છે.

ભક્તની અનન્યતાનું સ્વરૂપ શું ?—કે સ્ત્રી ગમે તેવી ડાહી, શુણ્ણવંતી અને ચતુર હોય તદ્દપિ પોતાના ધણીનું શરણ લાગી અન્યનો આશ્રય કરવાથી જ પ્રતિત થઈને વળી પતિને જેમ અગ્રિય ચર્ચ પડે તેજ પ્રમાણે પોતાના હૃદયે દેવનો આશ્રય તરૂને અન્ય દેવ, દેવી, મનુષ્ય જીવ માત્ર જડ ચેતન્ય તથા અચેતન પદાર્થ પર્વત દ્રાહનો પણ આશ્રય તે પ્રભુને અગ્રિય લાગે છે એમ જિલણી સર્વોશો અન્યાશ્રયનો ત્યાગજ થઈ છે. શ્રીકૃષ્ણાશુ કૃષ્ણચંદ્રનું ગીતાગાનમાં કથન છે કે—

શ્રેયાન્ સ્વધર્મો વિગુણઃ પરધર્મસ્ત્વનુષ્ટિતાત્ ॥

સ્વધર્મનિષર્તં કર્મ કુર્વન્નામોતિ કિન્ચિપ્ ॥ (૧૮-૪૭)

સ્તોત્રકાર્યઃ—પોતાનું કર્મ (ભક્તિ) શુણ્ણવી રહિત છે તો પણ ખીનના સારી રીતે આચરેલાં કર્મ કરતાં સારું છે. પોતાના સ્વભાવથી જ કર્મ કરવાનું હોય તે કર્મ કરવાથી દોષ પ્રકારે હાનિ છેજ નહિ.

ટીકા—ખીનએ પોતાના શ્રેષ્ઠ શુણ્ણસ્વભાવને લીધે વિશેષ શુણ્ણવાળો ધર્મ પાળ્યો હોય છતાં પોતાને માટે તો તે પરધર્મરૂપજ હોય છે; માટે તેજા ખીનએએ આચરેલા પરધર્મ કરતાં સ્વધર્મ એવાજ શુણ્ણવાળો હોય તો પણ તેજ પોતાને માટે શ્રેયસ્કર સમજવો કેમકે સ્વભાવનિયત કર્મ કરનારને પાપો લેખી રાક્ષતાં નથી; અને ઉપરુક્ત જ્ઞાન જેને છે તે શુણ્ણાતીત કહેવાય છે એવા (શુણ્ણાતીત) તથા એકનિષ્ઠ ભક્તિયોગ વડે પ્રભુપ્રાપ્તિ યચાને યોગ્ય છે.

વળી વૈરાગ્ય અને જ્ઞાનને ભક્તિના પુત્ર તરીકે નારદજીએ કહ્યાં છે તેજ પ્રમાણે જેમ દોષ પુરુષને લક્ષ્મી પ્રાપ્ત થઈ કે તેની સાથે તેના અનુધાપી તરીકે આદેશર, લોભ, કામ, મોહ, માયા, (પ્રકૃતિ) એ સર્વનો પ્રાદુર્ભાવ થાય છે. તેવીજ રીતે ભક્તિ કરવાથી તેની શેષજ જ્ઞાન-વૈરાગ્યનો પ્રાદુર્ભાવ થાય તે વાત શક્ય છે જ. જેમકે અમુક જામ જલું હોય તેના રસતામાં અમુક જામ આવતું હોય તો તે જામ જતા માટે ખીન રસતાની જરૂર પડતી નથી. તેથી ભક્તિ એ એક માર્ગ કહ્યો છે. અનુ-

કદાચ મહાપુરુષોનો સંગ થયા હતાં જીવ કૃતાર્થ કેમ થતો નથી ?—જવના વત્ કિચિત્ સદ્ભાવ્યે કરી મહાન પુરુષોનો સંગ થયો તો પણ પૂર્વના દોષના પ્રભાવે તેમાં અનન્ય નિષ્ઠા બંધાતી નથી અને મનોવૃત્તિઓમાં ફેર પડી જાય છે તેથીજ અકૃતાર્થ રહે છે. બે તેમાં ફેરફાર કરવો પુરુષના પોતાનાજ કર્મો (કાચમાં) છે. ઉપરુક્ત પ્રકારની પ્રાપ્તિ સમજ્યે કે વગર સમજ્યે પણ બે મનસા, વાચા, કર્મણ્યે કરી મહાપુરુષોની શરણાગતિ થાય તો કાર્યની સિદ્ધિ નિઃસંશય થાય છે. ક્યું છે કે મહાવિદ્વાનોનો સંગ કરો; અતિદિવસ તેની પાઠુકાનું સેવન કરો. તોજ પ્રભુને મળવાનો સપાટ અને ધોરી રસ્તો દેખાય અને પ્રભુપ્રાપ્તિ થાય. આ (ભક્તિ) પ્રકારે સમગ્ર અરે નિર્ભય સાધનો કલાં.

હવે આત્મિક કર્તવ્યોની સિદ્ધિઓ દૈદિક સંબંધીઓને વિદ્યરૂપ દેખાય છે તેથી તેનો ત્યાગજ ઘટે છે કેવી રીતે કે—તેમનાથી ઉદાસીન રહેવું છતાં પણ વિવ્રકતી પિતા, પુત્ર, માતા, માતા, બંધુ કે મોટા જન હોય તોપણ સર્વથા તેનો ત્યાગજ ઘટે છે. વળી શંકા યશે કે—ભગવાનને વિષે પ્રેમ-ભાવની દૃઢતા-રિચરતા યર્ષ નથી છતાં સાધનોનો અભાવ તથા કર્મ છોડી શકાય કે કેમ ? તો જણાવવાનું કે—શ્રીકૃષ્ણ પરમાત્મામાં અતિશય માદ રનેદ રિચરતા યર્ષ નથી છતાં સાધનોનો અભાવ એ તો કેવળ દોષરૂપજ બળાય. ભાવની પરિપૂર્ણતાએ કરી સ્વતઃ સાધન છુટી જાય તો ભાવે પણ જાણીશુદ્ધને સાધન છોડવાં નહિ. શ્રીકૃષ્ણ પરમાત્માએ અર્જુનને સ્વપ્નમે કહ્યું છે તે—ગીતાપનિષદની ઉકિત માટે કર્મનો ન્યાં સુધી એની મેળેજ લોપ નથી થતો ત્યાં સુધી તો છોડવાંજ નહિ. બલકે સ્વતઃ છુટે તો કોઈ પ્રકારે હાનિકારક છેજ નહિ. એ ગીતાક્રિયા પુરવાર થાય છે માટે સદાસર્વદા પ્રભુમા અનુગ્રામી રહી તેનું સ્મરણ કરના રહી આત્મચિંતનમાં મુગ્ધમન રહેવું એજ સર્વોત્કૃષ્ટ છે.

કોઇપણ પ્રાણીની હિંસા ન કરવી, કોઈને દુઃખ ન થાય એવું વચન બોલવું, મન અને ધ્વનિયોને નિમગ્ન કરવો. દાન, દમ, દયા, દુઃખીનું રક્ષણ આ સર્વે સામાન્ય ધર્મો આદ્યણથી અત્યંત વધુ સુધીના સર્વના છે.

ઉપરુક્ત ધર્મોનું પાલન કરતાં આપણી પ્રત્ન શિખે અને અન્યને શિખવે એવું પ્રભુ પાસે થાયતો અત્રેજ વિરમીશ.

ચહા !

(લેખક:—ભગવતીદાસ ગોવિન્દદાસ દેસાઇ.)

(નીચેનો સંવાદ અ. સૌ. મુન્દરખાઇ તે શેઠ ગોકુલદાસ મોરારજીનાં ધર્મપત્ની શ્રીમાંગરાલ વૈષ્ણવ મુખોદધતી કન્યાશાળાની બાલાઓએ મેલાવણમાં 'ભગવતી બાલાઓ હતા.)

સરસ્વતી—કાં દેવા શું કરે છે ?

દેવાકુંવર—બે ને બેન ! આ પીને પાઠ કરું છું.

સરસ્વતી—બેન હલુ તેં ચાને નથી મૂકી ?

દેવા—બેન ! મેં તો ચાને મૂકી છે પણ મને ચાહે નથી મૂકી.

સરસ્વતી—દેવા ! એવું અવશું શું કામ બોલે છે ? તું તો ચા પીએ છે; અને વળી એમ કહે છે કે “ મેં તો ચાને મૂકી છે. ”

દેવા—બેન સરસ્વતી ! મારો કહેવાનો આશય જરા પણ ખોટો નથી, હું કહું છું તે ત્વન સાચુંજ કહું છું. સાંભળ !

સરસ્વતી—કહે જોઈએ શું કહે છે ? પણ થોડેથી પતાવજે હો, કારણ કે મને રોકાવાનો વખત નથી; મારાં માતૃશ્રી રાહ જોતા હશે.

રેવા—ભણે. સાંભળ; ત્યારથી આપણી બાઈએ આ પીવાથી પ્રભુસેવામાં આપણું પાક વગેરેમાં ખસેલ થાય છે; વિગેરે તુકાનો સમગ્રવ્યા પછી હું જરા પણ ચાદ પીવાનું મન કરતીજ નથી. પણ સવારે દાતણ કુંઈ એટલે ગજેજ વળગે, માંડ માંડ નાહીએ. સેવા વિગેરે તો પછીજ. ! હું તો મારા મનને મનાવું છું અને સામું પણ જોવા નથી ઈચ્છતી પણ તે દોડતી દોડતી વળગે એમાં હું શું કરું ? હવે તું કહે કે મેં એને નથી મૂકી કે એણે મને નથી મૂકી ?

સરસ્વતી—(પ્રસન્ન થઈ) ખેન ! ખરેખર તેં તો એને તિશાંતિ આપી છે, પણ એ ચીજ એવી છે કે માણસને બહુજ હેરાન કરે છે; આપણી જાતને પણ ખામ, અને રોટલા ન ખાઈએ તેટલા પૈસાની તો મહિને દાડે આ જોઈએ. આ ઝાઝી વાત છે ? હવે તું એમ કર; ખેન !

રેવા—ખેન ! કહો, તમે કહો તેમ કરું.

સરસ્વતી—તું હમેશાં બે ટાણા આ પીએ છે તેને બદલે એકઠાણુંજ પીવાની ટેવ રાખ, એ ટાણા પીધા પિના ન ચાલે તો પંદર (૧૫) દિવસ પોણા પોણા ખાતો પીવો પછી અર્ધો અર્ધો પછી એકજ ટાણું પછી પાંચ પીવો એમ કરીશ તોજ તેનું વ્યસન છૂટશે.

રેવા—જેવી મોટાં ખેનની આગા. હવે તેમજ કરીશ. જય શ્રીકૃષ્ણ.

સરસ્વતી—ખેન ! જય શ્રીકૃષ્ણ.

“ અભ્યર્થના. ”

(લેખક:—શા. ઘનરયામલાલ મણિલાલ, પેટલાદ.)

જન્મદાવનની શોભિત વનકુંજોમાં—
કીર્તિ તારાં મીઠાં બંસીધવનિઓ—
વિલીન થયા છે આજ અહિંયાથી—પ્રભો !

હુરે છે હૃદય આજ વિરહથી તો—
વર્ષાવજે એ નાદશબ્દ હૃદયાકાશમાં,
એ અભ્યર્થના છે.

× × × × × × × ×
શાવનના હુરે હુરંતી મજસુવતિઓને—
આકર્ષિં મમુનાજીના મુંદર તટ ઉપર—
પાન કરાવ્યું મીઠાં વેણુનાદનું— પ્રભો !

× × × × × × × ×
આકર્ષજે આજ ભારત યુવતિઓને—
ભણાવી “ પ્રેમલક્ષિતના ” મુંદર પાસે—
એ અભ્યર્થના છે.

× × × × × × × ×
સરદાર સદસ ધારે ચંદ્રિકા વર્ષાવે—
કોકિલા ગગનભેદી ટહકારાથી વનકુંજને ગજવે
તેમ ગજવજે—વર્ષાવજે. પ્રભો !

× × × × × × × ×
આ ભારતને તારાં મીઠાં મુરસી નાદાથી.
એ અભ્યર્થના છે.

× × × × × × × ×
ચંદ્ર મુધાકિરણથી વનકુંજને નવગાવે—
તેમ પ્રેમામૃતથી નવરાવજે—
આ યુવકને. પ્રભો

× × × × × × × ×
એ પ્રેમામૃતથી નદાએક ઉગતી પ્રેમની આરાઓને—
પૂર્ણ વિકસાવજે આ યુવકની.
એ અભ્યર્થના છે.

ચર્ચાપત્ર.

તંત્રી-શુદ્ધાદેવ—સચિવ દખાનું ને એક અસિકર્મા પ્રાસંગિક નેમમાં કનઠાભિષેકની વચ્ચે બાબત મ્હારી પાસે તંત્રીએ ખુલાસો માગેલો, મેં તે ખુલાસાના પ્રત્યુત્તરમાં એક ચર્ચાપત્ર મોકલ્યું છે. તે “નેન કેન પ્રકરેન મ્હારી ઉપર દોષોત્તેષણ કરીને દેવપણું ચર્ચામાં ઊપવાની બંધ કરી છે, અતઃ તે ચર્ચાપત્રને રચાન નથી. એ મેં હજી ચર્ચાપત્ર લીધું નહિ. “મદરસ-રસાદય” નું ચર્ચાપત્ર ને તંત્રીનો વિરોધ દર્શાવનાર છે, તે મટે ખાસ રા. પેળા કાઢ્યો. પેલ કરીને ઊપવા બદલ તંત્રીને ધન્યવાદ થઈ છે. કારણ કે “નિઃશંકોત્તરે જગત્ત આપવાની કે તે મટે કાઢ્યો કાળા કાવાની જરૂર નથી” એમ લખનાર તંત્રી તે ચર્ચાપત્ર ઊપી, અને કાથી ઊઠાવીને ગુજરાતમાં તેજાવનાર મિત્રના “શુદ્ધાદેવ” પ્રત્યેના રામદેવને હજી મ્હારા ચર્ચાપત્રને રચાન આપે નહીં તે તો હીવા નેથી જાત છે. મ્હારો ખુલાસો (ચર્ચાપત્ર) તંત્રીએ ઊપેષ નહિ દેવાથી મુપ્રસિદ્ધ “શુદ્ધાદેવ” માં ઊપવા સામઢ વિરોધિ કરે છું.

મ્હારો ખુલાસો—આપના પુષ્ટિપીય અસિક વર્ ૨ નના અંક ૧-૨ માં પાને ૧૮ માં પ્રાસંગિક નેમ વરૂં મ્હારે ધ્યાન ખેંચાયું. તંત્રીજી પેલાની વિદ્વાતાની સ્વભાવમાં ખુશી રીતે મ્હારી ઉપર પુષ્ટિપીયને ઉવારી પાડવાનો આક્રમ કરે છે, તે ખોટો છે. ખેડ સાથે લખું છું કે અમદાવાદમાં આવી સભા મળી નથી છતાં અમદાવાદની સભા દોષી ખેસાદની એ પ્રજા પંડિતની લુહિની બંધીદારી છે. તે સભા ક્યાં મળી છે, તે “શુદ્ધાદેવ” માં ઉલ્લેખીત બનીતો તેમજી ચરમા ચલાવીને લેવું રહ્યું. અને તે કાવો પણ સાથેસાથ જોઈ વાંચી વિચારીને સમજવા દેને તો ઉપરનો આક્રમ મ્હારી ઉપર દોષી ખેસાડવા પ્રયત્ન કરત નહિ. હજી પણ તંત્રી મદરસ મગજ ઉપર સમતોલપણ જાણીને જોયે તો જરૂર સ્વયં વરદાન લાન ચરી. કાચ બીજે તો છુટાનું કારણ એ હતું કે સંપ્રદાય બદલના વરંધી સંપ્રદાય ઉપર આક્રમણ થાય એમ કે હમણાં કનઠાભિષેક ઉપરના આક્રમણ વખતે શુદ્ધાદેવના વંત્રીજી થતા હુમલાઓ સામે લઈને સંપ્રદાયની ને સેવા બળવે છે તે બાદ અભિનંદન અર્પેલ મુકે અને પુ. પી. નું ધ્યાન ખેંચવા મટે કાચ ઉપર મેં વિચેષન કરું પણ પુ. પી. ને ઉવારી પાડવા મટે તો નહીંજ, તે ધ્યાનમાં રાખ્યો. અને પુ. પી. માં કનઠાભિષેકનો ઉલ્લેખ કર્યો નહિ એટલે તે ચર્ચામાં પુ. પી. નું ધ્યાન ખેંચી “શુદ્ધાદેવ”ને અભિનંદન આપું પણ કીપુત તંત્રીજીને “શુદ્ધાદેવ” પ્રત્યેના રામદેવને હજી મ્હારી ઉપર પુ. પી. ને ઉવારી પાડવાનો આક્રમ છુટા નેકાર થવા છે. તેમાં પુ. પી. ને ઉવારી પાડવાનો પ્રયાસજ નથી. રા. રા. હાલુતમાં પાસે વધાસ કરી તો તે ઊપાધેશ લેખની નકલો ફરેક વર્તમાનપત્રોને મોકલાવેલ છે, તેમાં તંત્રી ઉપર પણ મોકલાવેલ છે, અને તે રા. રા. હાલુતમાં સાથે અંતર દેવમાવવાને હજી તે લેખ અપર તો રીંગુ લીધો નથી. “જગત્ત મદાન દહારા કીમદ્દશમાચાલના સિદ્ધાન્તોને નિરૂપણે ચર્ચાવાને બેકાર કરું પણ આ બૈત્તિદાસિક ચર્ચામાં બાન લે નહિ અને મીતાવલંબન રોવે એટલે મુંડી કીમદાપ્રજ્જલના પ્રિશાન્તો ઉપર કઈ બોધા ઈતિદાસજ લેખો આક્રમણ કરે અને ઉપયુક્ત એકશર કરત અસિકના તંત્રીજી ચરમા ચલાવીને લેવા કરે! મુંડી આ સિદ્ધાન્તની ચર્ચા નથી? ફરેક વર્તમાનપત્રે તેમજ પ્રસિદ્ધ ઈતિદાસજ સાક્ષરોએ સાથે ઉપર અભિપ્રાયો આપ્યા કે “કનઠાભિષેક બૈત્તિદાસિક છે. સંપ્રદાયના વિરોધો અને સામ્રો અભ્યારે બૈત્તિદાસિક સમ્રો કરે છે. કીમદાસીની વિદ્યાવિગ્રામ વરંધી રા. રા. સાક્ષીજી જરાઈકરનામ્હે મદાસમાં કનઠાભિષેકની બૈત્તિદાસિક ચોધખોળ કરીને મળ્લુત પુણ્ય મેળવ્યા તે અસિકમાં પ્રસિદ્ધ કરવાના છે. અને વિદ્યાવિગ્રામ વરંધી સંપ્રદાય ઉપર આક્રમણ પ્રકાશ પાડવા એ “સંપ્રદાયપ્રસીધ” નામના મદન મેંચમાં એ બૈત્તિદાસિક સ્વયં ધરના આવેખાયો. ત્યારે આ વિદ્વાન તંત્રીજી સંપ્રદાયિક સાદિત્ય પ્રકાશ કરવામાં પેલાનો સામેા ધનવ્યય કરનારા પ્રજા પંડિત મીતાવલંબન રોવે એ મુંડી સંપ્રદાયની સાદિત્યસેવા કહેવાય? મુંડી-પિનીલના મુદ્દામાં સારી રામની માદ થયેલી. જ્યારે કીમત મટે દીધાપેલ થયો અને સંપ્રદાયના નિરૂ અને નિરૂપિત સાક્ષીજી વસંતરામમ્હે દીક્ષાજી ઘડધી ત્યારે પુષ્ટિપીયના વિદ્વાન તંત્રીજી તેમજ જગત્ત નહિ આપતાં કંડાનાર થયા. એ બધી બીતાબે માત્રી નજર સમજાવરવર્તી અને નિરૂપાવી “શુદ્ધાદેવ”

ઉપરુક્ત ચર્ચા ચલાવી ઐતિહાસિક ક્ષેત્રમાં હુકમનું તે બદલ કરાવ બીજા અભિનંદન અર્થે ન મુકેલો. સિદ્ધાન્તની ચર્ચાનો ઉદ્દેશો પણ ન કરવામાં આવે તો અવશ્ય પ્રેટરેટ ઉઠાવી રાખવું પણ સાંપ્રદાયિક (સાહિત્ય) માસિકને ઉતારી પાડવાનો પ્રયાસ હું ન કરી શકું. મારે સમજે નથી કે જેથી હું પુ. પી. ને ઉતારી પાડવા પ્રયાસ કરું. હું આપને સવિનય જણાવીશ કે સિદ્ધાન્તની ચર્ચા સાંપ્રદાયિક માસિક નહિ કરે ત્યારે કોણ કરશે ? અને તેની ઐતિહાસિક ચર્ચા વગરનું અલગ સાહિત્ય (માસિક) આજના યુવક સમાજને નીન્દસ છે. અર્થાત્ અચિત્ર નથી. આ ઉપરિચિત થયેલી ચર્ચાએ સંપ્રદાયના મુખમાં કુદારાધાત્ કર્યા છે. તેથી યુવક હૃદયો ખગમળા ઉઠ્યાં છે. હૃદયો વિદીછું બન્યા છે, તેમાં સાંપ્રદાયિક માસિકના તંત્રીના મીનાવણબનથી સખત આધાત થયો, અને તે આધાતનો પડયો તે કરાવ ઉપરની માત્ર ચર્ચા છે. બેતાલીશ રીમ જેટલા કાગળોનું સાહિત્ય લખવાનો ફક્ત રાખનારા શા માટે કનકાસિપેકની ઐતિહાસિક ચર્ચા માટે છ છ માસના વહાણી વાયા છતાં એક શબ્દ પણ લખતા નથી તેનું કારણ જણાવશો. સમજે છે. હોશને વાંચશો તો વરતરિપતિ સમજશે. લી. આપનો અમૃતલાલ હરજીવનદાસ પારેખ.

સાંપ્રદાયિક પ્રવૃત્તિ.

વિપયાક્રાન્તેદેહાનાં નાવેશઃ સર્વથા હરેઃ ।

તસ્માત્સર્વાત્મના નિત્યં શ્રીકૃષ્ણઃ શરણં મમ । વદન્નિરેવં સતતં સ્થેયમિત્યેવ મે મતિઃ ॥

શ્રીઅષ્ટાક્ષરજપયજ્ઞસમારંભ,

હે નાથ ! હું નથી કર્યા કંઈ પુણ્ય કર્મો, કીધાં અનેક અતિપાપ બર્ણાત્ કાયો, હું કુટ, પાપી, અપરાધી, પતિત પ્રાણી, ત્હોરોજ હું તકપિ કેશવ । હે સુરારી !

શ્રીપુષ્ટિમાર્ગીય યુવક પરિવંદે આ આત્માસંભા શ્રીગોવર્ધનધરણુ શ્રીનાથજીની કૃપાથી શ્રીઅષ્ટાક્ષર જપયજ્ઞનો સમારંભ કરવાનો નિશ્ચય કર્યો છે. કલિયુગમાં આધિભૌતિક, આધ્યાત્મિક અને આધિરેલિક કલેશોથી મુક્તિ મેળવવાનું એકનું એક સાધન જપયજ્ઞ છે. પુષ્ટિમાર્ગનું તો એ ખાસ સાધન છે. મહાનુભાવ આચાર્યવર્ય શ્રીમદ્ હરિરાયચરણ આજ્ઞા કરે છે કે 'જપયજ્ઞનામોચ્ચાર વિનાના એક નિમિષ નાથ તો આમુશવેશ થાય' પુષ્ટિમાર્ગનો આવિર્ભાવ નિઃસાધન છોકરાને તારવા માટેન છે. જપયજ્ઞ સરવર્માં સરક અને કશાય સાધનની હેરા પણ અપેક્ષા વિના જીવમાનથી સાધી રાખાય એવો છે છતાં એનું ફળ ઉત્તમોત્તમ છે. આજના કાણ કાળમાં ત્રિતાપને હરનાર નિઃસાધનોને માટે એક સાધન પ્રભુ-રમણ છે એમ વિચારી 'સર્વધર્મોન્વરતિયજ્ય મોમકં શરણં મમ । એ જગદગ્રાન્થુસાર શ્રીમદ્વાચાંજ મહાપ્રભુએ પુષ્ટિજીવોપર અનુમદ કરી "શ્રીકૃષ્ણઃ શરણં મમ" (શ્રીકૃષ્ણઃ શરણં મમ) જેવા ઉત્તમોત્તમ આશ્વાસ મહામંત્રનો ભૂતલપર પ્રાદુર્ભાવ કર્યો. એ સરવ છતાં અતીક્રિક મંત્રના પ્રેમપૂર્વક કીધેલા સતત જપથી જીવ ત્રિવિધતાપથી નિમેષપ્રમાણાં મુક્ત થાય છે એ નિશ્ચિત વાત છે. આ કારણથી આ આત્માસંભા મુંબઈની શ્રીપુષ્ટિમાર્ગીય યુવક પરિવંદે આરંભેલા આ જપયજ્ઞમાં આજીવજીવ સર્વ પ્રેમપૂર્વક પોતાનો કળેલો આપે એ વાંચનીય હોવાથી એ માટેના નિયમો નીચે મુજબ સાદર રજૂ કરવાની રત્ન લઈએ છીએ.

૧. યાત્રાસંભા (આપાદી પુષ્ટિમા ને ચક્રવાર તા. ૭-૭-૩૩ થી કાર્તિકા પુષ્ટિમા ને ચક્રવાર તા. ૨-૧૧-૩૩) દરમિયાન પ્રતિદિન શુદ્ધ ઉચ્ચારપૂર્વક અત્યંત પ્રેમથી યથાશક્તિ યથાભાવ 'શ્રીકૃષ્ણઃ શરણં મમ' નો જપ માળા ફેરવતાં યા આનંદસિંહ રીતે કરવો. જપની સંખ્યા ઓછી થાય તેની ચિંતા નહિ પણ એ મન, વાણી અને ક્રિયાએ સંયમ અને શુદ્ધ ચિત્તાથી પ્રેમપૂર્વક યાવ એની ખાસ કાળજી રાખવી.
૨. આપના આસજનને પણ એ સદેશો પર્દેદીથી તેમને પણ જપયજ્ઞનો આરંભ કરવા પ્રેરો, આપનાથી એક પણ મનુષ્યને આ શ્રમકાર્યમાં પ્રેમપૂર્વક થોડા યજ્ઞક થોડા જાણતે કે આપના જપ સફળ છે. ૩. જપની સંખ્યા અમને લખી મોકલવાની જરૂર નથી પણ નિયમ એકમાં જણાવ્યા મુજબ જપ કરવાનો અને જીમ્બોને એમાં પ્રેરવાનો આપે નિશ્ચય કર્યો છે એટલું પત્રદ્વારા અમને નીચેને સરનામે જણાવવા કૃપા કરશો તો બસ થશે. આ કામ મુશીબતનું નથી એ સદેને સમજી રાખાય છે. પશ્ચિમી 'કુરુચંદ્ર

નથી' એમ બ્રહ્મનું કહે છે પણ નયપદ્ધતિમાં એ બ્રહ્મનું ચાલે તેમ નથી. અમે ત્યાં ચાલતાં, પ્રેસતાં, હાતાં, સુતાં અમે તેવી રિયલિટીમાં પણ પ્રેમપૂર્વક એક મિત્રદયી માંદગર ચોનોસ કલાક પર્યન્ત આ યજ્ઞ વાદ્ય-રાખી રાખી છેજ એમાં કોઈ દલીલની જરૂર નથી. પુષ્ટિમંત્ર અનમિત્ર જેવો પાપી 'નારાયણ' ના ભક્ત્યારથી તરી ગયો તો સમજપૂર્વક પ્રેમથી નયેલા નયનો મહિમા કયાંય વધી નય. અગ્રહારી આ પ્રેમપૂર્વક કીર્તિની વિગ્રહિને આપ સાથે આપણો કે ?

નિવેદન—ગિરિધરલાલ જગજીવનદાસ શાહ અને દ્વારકાદાસ જેઠાભાઈ દાણી.

માનદ મંત્રીએ—શ્રીપુષ્ટિમાર્ગીય યુવક પરિવહ.

તા. ૬.—(૧) સૂચના કે પત્રવ્યવહાર નીચેને સરનામે કરવો 'શ્રીપુષ્ટિમાર્ગીય યુવક પરિવહ' કાયદિય ઠે. શ્રીલાલબાવાનું મંદિર બુલેધર મુંબઈ નં. ૨.

ગોવધ સામે વિરોધ—મુંબાઈની શ્રીપુષ્ટિમાર્ગીય યુવક પરિવહ તરફથી એક ખાસ સમા સોમવાર તા. ૧૦-૭-૩૩ ના દિને પૂ. પા. ગો. શ્રી ૬ શ્રીદ્વારકેરાલાલજી વિ. મહારાજ (કચ્છ માંડવીવાલા) ની, અધ્યક્ષતા નીચે નં. ૪૨ ૪૩ ફેબ્રુઆરી ૨૪૨૮માં મળેલેલા દરબાર રીજ સાહેબે પોતાના રાજ્યમાં ગોવધની છૂટ કરી તેનો વિરોધ તથા આવરણક ઠરાવ કરવા મળી હતી. તે સમયે સંરચના સુખાસહો ઉપરાંત ચોરક્ષાપ્રેમી સમજનોની હાલનીથી સમારચના ચીકાર બરાઈ ગયું હતું. નિયત સમયે સંરચના મંત્રી ગિરિધરલાલ જ. શાહે પ્રારંભિક ઉપક્રમ કરી સમા પતિશી તથા અન્ય ગો. ભાવકોને પુષ્પમાળા ધરાવ્યા બાદ ગો. શ્રીજીનાથલાલ શ્રી. વિ. જ. શાહ મી. એમ. બી. મહેતા અને પૂજ્ય સમાપતિ મહોદય પ્રમુતિના ચોરક્ષા ગોપાલનની આવરણકતા પરત્વે પ્રારંભિક વ્યાખ્યાનને ઉપરાંત નીચેની દરખાસ્તે શ્રીપુષ્ટિ ગિરિધરલાલ જગજીવનદાસ શાહે વચ્ચે કરી હતી. "રચનાય 'શ્રીપુષ્ટિમાર્ગીય યુવક પરિવહ' ની આજની આ સમા ઠરાવ કરે છે કે મંત્રિશોભના દરબાર નામદાર રીજ સાહેબે પોતાના રાજ્યમાં ગોવધ કરવાની છૂટ આપી છે તે હિન્દુ-વૈષ્ણવોની લાગણીને સખ્ત આધાર પહોંચાડનાર હોવાથી તેને માટે સખ્ત વિરોધ નહોતર કરે છે અને તે કાયદો સહને માટે રદ કરવા ખાસ આમ્રક કરે છે અને આ ઠરાવ પાઠે રચણે પ્રોહવા આ સમા સમાપતિશીને વિનંતિ કરે છે. ઉપર્યુક્ત દરખાસ્તને શ્રીપુષ્ટ મયુરાદાસ ગોવિંદજી કોલીને ટેકો મળતાં મળકુર ઠરાવ સર્વાનુમતે પસાર થયા બાદ શ્રીપુષ્ટ દ્વારકાદાસ જેઠાભાઈ દાણીએ સમાપતિશી ગો. શ્રીજીનાથલાલજી તથા ચોરક્ષા પ્રેમી સમાસહોએ સંરચ તરફથી આભાર મંજૂર થઈ સમાનું, કામચાલ પુર્ણ થતાં (રજા. ઠા.) દસ કલાકે શ્રીગોવર્ધનનાથજીના નયપોષ વચ્ચે શ્રી વિજાયા દેવતા.

વેશરાશ્ટ્રીને જવાબ—મુંબઈ વૈષ્ણવ બંધુઓ અગોએ વેશાળ અંકમાં જે ગોકળી પ્રદારણા લખી છે તેને અસલ ઠરાવી પોતાની પ્રામાણિકતા સાબીત કરવા નીકળેલા બર્ડ ફ્રમ્સીવાળા વજ્રમદાસજીની કેટલીક ધૂલતા છે તે અત્ર રચણકાંચને લીધે અફરવઃ આપી રાખેતા નથી પરંતુ રા. શાસ્ત્રીજી વસંતરામભાઈને ઈશ્વરને વચ્ચે રાખી સર્વે સલ હકીકત જણાવી દીધી છે. એમના પુરાવા ૩૫ બધા પત્રો અમારી પાસે મોલુદ છે તેમજ પ્રથમના પત્રમાં ચાર ડહન લેનારને કમીયન લખેલ પરંતુ અગોએ એક ડહનમાં મામલો કરી તે તેમજ કણુલ કરી લખે છે કે તમારા લખવા મુજબ ફોટા મોહકું છું. આ પ્રમાણે તેમજ બે કણુલ કયું-હેય તો અગોએ માલુદ તથા વધારે લીધેલાં નાલુની મામલો કરી લારે "તમારા લખવા મુજબ અમલ થયે. મારી ગેરદાલનીમાં ઠમોને અન્યાય થયો છે" વગેરે ચા માટે લખે ? વળી તા. ૧૩-૬-૩૩ ના પત્રથી "તમારા ગેવોસ આના લાંબા ગોવર્ધનદાસ લખાનમાં પાસેથી લઈ લેયો તેમની પાસે અમારા પુસ્તકોના લેણા છે" આમ અમલો લેણા નથી તો ચા માટે લખે છે ? ખરે. એ પણ હીક આપણે કમીયનની વાત બાલુ પર મુખી એમની નહેરાલ મુજબ હીયાળ વપાસીએ. તેમજ કવાટર સાઈક પુર્કા પર ચોટરેલા ફોટા પાંચ અને વૈષ્ણવોને ઘેર બેઠાં આપવાનું નહેર કરેલું તે તો પ્રિય વાંકોને યાદીમાં હતી. એ હીસાબે ૧૧ ફોટાના પંચાવન આના થાય ન્યારે અગોને પુર્કા વિનાનાં માત્ર અગીયાર વેષરોનું રા. ૪) નું વી. પી. કયું તે અન્યાય ખરો કે નહીં ? આટલું છતાં ચોર કોટવાલને રૂંડે એ ન્યાયે અમારું પર જે વિરોધજો લગાડ્યાં છે તે પ્રમુ કહી સંખરો નહિ. પ્રમુ સલને બેઠી છે આ કાવ' માટે અંમત નથી તેમજ બે ઘઠો પહોંચાડ્યા છે તે આ ધાર્મિક સંરચાને જ પહોંચેલ છે. આવા તેમના અન્યાયમર્થો વલણને માટે પ્રમુ તેમને સદસુખિ આપો.

લી. શ્રીશ્રી પ્રાનજી તાગજીના શ્રીરમરજુ-વ્યવસ્થાપક ભગવદ્ભંડળી-ધોરાજી-

ઉમેરવાં આનંદ.

પૂન્યપાદ ચતુર્થપંચમપીઠાધીશ્વર ગોસ્વામી ૧૦૮ શ્રી વલ્લભાચાર્યજી મદારાજ નવેમ્બર ૧૩ ના રોજ નવસારીથી નડિયાદ યથા મોટર દ્વારા ઉમરેઠ પધાર્યા. વૈષ્ણવ સૃષ્ટિમાં આનંદ ઉભયે ઉભયો. હંમેશાં રાત્રિના સભા થતી. રાષ્ટ્રીય વસંતરામભાઈ સંપ્રદાયિક વિષયો ઉપર વ્યાખ્યાન આપતા હતા. પેટલાદથી જન્મ દિન ઉત્સવનો લાભ લેવા રાષ્ટ્રીય ન્યેણારામભાઈ તેમજ રમણ રા.શ્રી આવી પહોંચ્યા. રાષ્ટ્રાત્મક બ્રહ્મ સંબંધ, પુષ્ટિમાર્ગ, સેવા વિગેરે જુદા જુદા વિષયો ઉપર વ્યાખ્યાનો થયાં. રાષ્ટ્રીય ન્યેણારામભાઈ તેમજ રમણ રા.શ્રી પણ પ્રસંગોપાત્ત વ્યાખ્યાન આપતા. પૂન્યપાદ ગોસ્વામી ૧૦૮ શ્રીવલ્લભાચાર્યજી મદારાજશ્રી પણ પ્રસંગોપાત્ત વચનસુધાનું પાન કરાવતા. આર પંચ વ્યાખ્યાન પૂછીથી જનતા વધવાથી મોટા મંદિરના નીચેના ભોજનમાં સભા થતી.આપાદ શુકલ ૩ ના રોજ આપશ્રીને જન્મદિન હોવાથી સુંદર વૈધારીએ યવા લાગી. આજનું પ્રભાત વૈષ્ણવ સૃષ્ટિને 'આનંદસાગર ઉલટ્યો રે લોહ' આ કડીને સાહોત્કાર કરાવેલું હતું. રહેરનજ જુદા જુદા લોકોએ વન પતાકા અને તોરણો દ્વારા રાણુમારાયા. આર વાગતાં શ્રીમાકંડેય પૂજન તથા કેસરનાન થઇ ગયાં. અંબુપતિની વાણમાં પેટલાદ, કપડવણજ, વાકાસીનેર, જોડ, હાણવાડા વિગેરે ગામોના ૫૦૦ વૈષ્ણવોએ મહાપ્રસાદ લીધો. બપોરના બે વાગતાં ઉમરેઠની બજારમંડળીના સભ્યો આવી પહોંચ્યા. આર વાગ્યા સુધી બજાર ખૂન મચી રહી બીજા બાલુ વરણોડાની તૈયારી થઈ ગઈ હતી. રાષ્ટ્રાત્મક ડાકોરથી મંગલેશ ડંકા નિશાન રાખ્યાં બાદ બેન્ડ તેમજ દેશી વાજંત ગોઠાયાં ઉમરેઠની બજાર બજારમંડળીએ બજાર ખૂન સાથે હથિયાર બંધ ચાલવા લાગી. મોટા પ્રમાણમાં પુરક વર્ગ ગોઠવાયો. પોલીસ અને કસ્ટોડી આગેવાનોના કોર્ટન વચ્ચે મદારાજશ્રી નવનાદપૂર્ક મોટરમાં બિરાજતા હુલહાર આપાદ બાદ સરવસની રાષ્ટ્રાત્મક થઈ. પાછળ ૫૦૦ ની સંખ્યામાં સ્ત્રીવર્ગ કલ્પ અને યાગ થઈ ધોળ પદ ગાતાં ગાતાં ચાલતા હતા. મોટા મંદિરથી ગાંધી રોડીમાં થઈ સરવસ તડાં બજારમાં આવી પહોંચતાં ડેક ટેમણે આપશ્રીને હુલહાર થવા લાગ્યા. નવનાદથી સડક ચાલવા લાગી. બુંડોના આવાજ સાથે પંચવટી રથને આવી પહોંચ્યા. રાત્રીનાતર જનતાની વધુ કંડ નમેલી હોવાથી થોડો વખત રોકાયા બાદ લાટપીપથી તરફ પ્રમથલુ કહ્યું. બાહ્યોની સંખ્યા રાત્રીનાં અડી જમી હતી. ત્યાંથી બેસ બજારના શણુમદિયા નવીન દરવાજામાં પ્રવેશ કર્યો પુષ્પવટીથી મોટર રાણુમારાઈ ન્યેણવન પૂર્વક જણુ ધોળા રરતે આવી પહોંચતાં વ્યવસ્થાબંધ લાઈટ ગોઠાવઝ થઈ. પુનઃ પંચવટી આવતાં બજાર મંડળી તરફથી બે સુન્દર પરીઓ રાણુમારાઈથી મોટર આગળ ગોઠવવામાં આવી. કોર્ટના રરતે કંસારાવાડમાં થઈ સરવસ રા કલાકે પાણું આવી પહોંચ્યા બાદ બજારમંડળીના ઉત્સાહી છડીદોરો અને કીમતી છત્ર ધારણ કરેલા માણસો સાથે નવનાદપૂર્ક સરવસ વિખરાયું. જનસંખ્યા ૧૨૦૦ લગભગ હતી. શ્રીગોવિન્દ મદાપ્રભુજીને ઉત્સવ પણ ઉત્સાહપૂર્ક ઉત્ત્થાયા. કીર્તન સમાજે રવા. રાત્રિના બજારમંડળ તરફથી બીજા વખત મંદિરમાં ખૂન થઈ થઈ વચ્ચે સવા કલાક સુધી રાષ્ટ્રીય વસંતરામભાઈએ ન્યેણવી નાવકનો ઇતિહાસ 'નવજન સામ' નામક પુસ્તક દ્વારા ભેરદાર ભાષામાં વર્ણિત સંજગાઓ. પુનઃ બજાર ખૂન ૧૨૩૦ સુધી રહી. અડધે કલાક પૂન્યપાદ આચાર્યશ્રીએ બજારમંડળને સુંદર બોધપ્રદ વ્યાખ્યાન આપી પોતાનો સતીષ જહોર કર્યો. રાત્રિના ૧ વાગ્યા બાદ ન્યેણવન પૂર્વક સભા વિસર્જન થઈ. આપાદ સુદ ૬ ને પાટોત્સવ પણ અદી જ થયો. આપાદ શુકલ ૧૧ ના રોજ ઉમરેઠથી આપશ્રી મોટર દ્વારા રાણુમારાયામાં પધાર્યા ત્યાં આનંદ જડ કલમ શું આલેખી રાકે ! આમના મુખી તેમજ અમૃતગાથરતઃ વિગેરે આગેવાનોએ ૫૦ માણસો દેશી રરતોએ દુરસ્ત કરાવ્યા હતા. શુદ્ધ હવા પાણી, નિષ્કામ પ્રેમ, અહિં સરળ ગ્રામ્ય ભાષા, નાના પણ રવચ્ચ અને રાણુમારાયલ મજાનમાં નિવાસ વિગેરેએ સારી અસર કરી. સંજ્ઞાના ૫ વાગે પધારામણીમાં આપશ્રી પધાર્યા ત્યાંથી પાછા ફરતાં જનતા સરવસના ૩૫માં ગોઠવાઈ દેશી વાજંત, બજારમંડળ, પુરકવર્ગ, કમરા: ગોઠાયા. આપશ્રી પગે ચાલતાજ પધાર્યા. પાછળ બહેનો કલ્પ યાગ સાથે બજાર ગાતાં ગાતાં ચાલતાં હતાં. મુજમ પર પધારતાં સરવસ વિખરાયું. સંજ્ઞાના મહી નદીએ પધાર્યા. ત્યાં અનેરો આનંદ આંચો. રાત્રિના સભા થઈ. રમણગજ ન્યેણારામ રાષ્ટ્રીએ 'ભક્તિ' કૃષ્ણ વિષય ક્ષણ સંપ્રદાયિક વિષયોને સમાવતું સુંદર વ્યાખ્યાન કર્યું. બાદ આપશ્રીએ અડધા કલાક સુધી સુજરાતીમાં સુંદર 'ભક્તિ અને આપાર

વિદ્યાર' વિગેરે વિષયોને સમાવર્ત્ત પ્રવચન કરી ઉપદેશ આપે. જ્યનનાં પૂર્વક ૧૧ વાગે સમા વિજ્ઞાન યથ. નેદવારના આપશ્રી નદીએ પધાર્યા અને સાંજ થીની સેવા, સંન્યાસદનાદિ કરી બ્રહ્મસંબંધ પણ નદીએ આપ્યાં. લોકોના આમદથી ચાર વાગ્યા સુધી બિરાજી આનંદ આપે. મોટરમાં બિરાજી વખતે પણ બહેનોને દયાશમભાઈનાં પદ ગાવા તથા પુરુષવર્ત્તને મંદિર બતાવે તે સમયે નાનું પુરતકાલય બોલવા શુભરાત્રી વાપામાં ઉપદેશસુધાનું પાન કરાવ્યું. સહીયાથી સુન્દરપુર પધારતાં રસ્તામાં કોઠ અને દુધાપુરા ગામમાં પધાર્યાં. કોઠમાં મનસુખલાલભાઈની આગેવાની સાથે એક માઇલ દૂર લોકો આવ્યા હતા. અંદુકનાં આવજા અને સજન ધૂન સાથે કોઠમાં અડધો કલાક બિરાજી. ત્યાંના દેશી વાજન સુંદર હતી. દુધાપુરા ત્રિશુવનભાઈને ત્યાં પધારી ત્યાંથી સુંદરપુર પધાર્યાં. ગામ લોકો એક માઇલ દૂર રેલામાં આવ્યા હતા. દેશી વાજન, સજન મંડળ, કીર્તન સમાજ કમથા: ગોઠવાયાં. છઠ્ઠાદાર મોટર આગળ ગઈયા. પુરુષવર્ત્ત પણ ઠીક પ્રમાણમાં આવતો હતો. પાછળ બહેનો કલશ સાથે ચીત ભાર્તા ભાર્તા આવતાં હતાં. સાત વાગે લેકડાએ આવી પહોંચ્યા. રાત્રિના સમા થઈ. રમણલાલ જ્યેષ્ઠાસંભ સાશ્રીએ સેવા અને શ્રીસર્વોત્તમ 'સ્તોત્ર' ઉપર વિરુદ્ધ વ્યાખ્યાન કર્યું. પૂન્યપાદ મદ્દારાજશ્રીએ પણ અડધો કલાક સુધી સુધી વચનસુધાનું પાન કરાવી ૧૧ વાગે સમા વિજ્ઞાન યથ. આપાદ કુખલ ૧૩ ના રોજ ચોડ તરફ કૃષ્ણ કરી. રસ્તામાં બસેડા ગામમાંથી જનતા બાગોળે દર્શનપૂર્વે આવી હતી. તેમને દર્શન દઈ આનંદ આપ્યો. ચોડ ગામ કલાક બિરાજી ચેટલાદ પધાર્યાં. માર્ગમાંના વેમણોને એક કલાક લામ આપે. ફાતાર ચોડ રમણલાલ કેશવલાલના બંન્ને ત્રણ દિવસ બિરાજ્યા. લાલગાવા શ્રીગોવિન્દરાયણ પણ શ્રીઅંબ ઠીક નહિ હોવાથી અહીં બિરતે છે. ચાંચા, મહેલાવ, બાંધણી વિગેરે ગામોને પણ કેમ વિચારાય? આપાદ કુખલ ૧ રાત્રિવારના રોજ સાંજના પાંચ વાગે ચેટલાદથી કૃષ્ણ કરી. ચાંચ, મહેલાવ, બાંધણી ત્રણ ગામોના આનંદ પણ અવળુંનીવળ છે. મહેલાવના આગેવાન જોડાલાલભાઈ સચેજ દત્તા. સજન મંડળ અને વાજન ત્રણ ગામમાં રેલામાં આવ્યા હતા. મંદિરે લેકડ તૈયાર કરી હતી. ત્રણ ગામને આનંદનું દાન કરી આપશ્રી નવ વાગે નડિયાદ શ્રીયુત નાનાસાહેબ દેશાઈને ત્યાં પધાર્યાં. અડધો કલાક બિરાજી ત્યાંથી ચોડ તરફ પધાર્યાં. રસ્તામાં હાંબડા ગામને બીજી વખતે દર્શન આપી રાત્રિના ૧૦ વાગે ચોડ પધાર્યાં. આપાદ કુખલ ૨ રવિવારે રાત્રિના સમા થઈ. રશ્મિઆવમાં રમણલાલ જ્યેષ્ઠાસંભ સાશ્રીએ 'નવવિધ ભક્તિ' પ્રમાણ અને દર્શનથી સમજાવી બાદ સાશ્રીજ વસંતરામભાઈએ એક કલાક સુધી વિરુદ્ધ વિવેચન કર્યું. ૧૧ વાગે સમા જ્યનનાં પૂર્વક વિજ્ઞાન યથ. બીજે દિવસે પણ સમા થઈ. ગામની સજન મંડળને પણ રાત્રિના સજન ધૂન પુરુષ ભવાથી મુગી. સજન પુરુષોત્તમનો શબ્દ પ્રેમ દરી આવતો. યંકાસમાધાનો થયા. પટેલ દીમાસાઈ, શાહ મનલાલ, પટેલ હોટાલાલ, શેઠ બદાલાલભાઈ વિગેરે આગેવાનોને પ્રવલ પ્રસંસનીય છે. ખ. જ. બાંધલાલભાઈની પ્રેરિત નરમ દોનાથી આપશ્રી તેમને ત્યાં દરરોજ પધારી દર્શનનો લામ આપતા હતા. આપાદ કુખલ ૬ સુરવારે ચોડથી ૪ વાગે આપશ્રી મોટરદ્વારા ઉમરેક પધાર્યાં. સાડા પાંચ વાગે નજીકમાં ચામણા ગામે પધાર્યાં. ત્યાંની નેપાળી પ્રસંસનીય હતી. બેન્ડથી રવાનત થયું. કુલદાર થયા. જનતાની ઈચ્છાથી સાશ્રીજ વસંતરામભાઈએ હુંડ વ્યાખ્યાન આપ્યું. એક કલાકમાં પાછા ઉમરેક પધાર્યાં. આપાદ કુખલ ૭ શુક્રવારના સાંજના ૬ વાગે આપશ્રી વેદાંતના અને વ્યાકરણ શાળાના વ્યવસ્થાપક, જ્યેષ્ઠ બાલકાકરભાઈની વિનંતિથી પધાર્યાં. બેન્ડથી રવાનત થયું. કુલદાર થયા. બાલકોએ શ્લોકોની અને પુરુષસૂત્રની મંજર થરણ કર્યું. વ્યવસ્થાપકના આમદથી રમણલાલ સાશ્રીએ પાકસાળાનો લેવાવ અને કાપકમ વાંતો સંભળ્યો બાદ સાશ્રીજ વસંતરામભાઈએ વિદ્યા સંબંધી વ્યાખ્યાન આપી પાકસાળા આરવરકલા સમજાવી મદ્દારાજશ્રી તરફથી રૂ. ૫૧) ની મદદ બહેર કરી હતી. શાળા તરફથી રમણ સાશ્રીએ અચાર્યશ્રીને અભાર માની મદદ રજીસ્ટરી હતી. આચાર્યશ્રીએ ઉપસંદર્ભમાં હુંડ પણ અચરકારક પ્રવચન કર્યું હતું. આ.પ.દ કુખલ ૭ ના રોજ સાંજના સાત વાગે શ્રી ગણપતિની વાટીમાં બહેર સમા રાખવામાં આવી. રશ્મિઆવમાં પુરાણીજ જ્યેષ્ઠાસંભ ધાર્મિક ઉપક્રમ કર્યો. બાદ રમણલાલ સાશ્રીએ સમાનાં જોર અને 'ધર્મ' એ વિષય ઉપર પ્રાચીન કાલની ધાર્મિક પરિસ્થિતિ રાખવાલુ મદ્દારાજશ્રી દર્શાવેલી વ્યાખ્યાન આપ્યું. તેમજ અંધી બોળીયાદ બીખાસાઈએ પોતાનું જીવન રતાવ તેમાં સાદિલ વાંચનથી થયેલ પડેરા તેમજ 'શુદ્ધિ'.

‘અલ્પવાદ’ એ વિષય ઉપર વ્યાખ્યાન આપ્યું. બાદ શાસ્ત્રીજી વસંતરામભાઈએ ‘ધર્મ’ એ વિષય ઉપર કાલીદાસના શ્લોકથી વર્ણાધ્યમની વ્યવસ્થા સુંદર સમજાવી હતી. બ્રહ્મચર્ય અને ગોપીચત્રની મહત્તાનો ચિત્તાર આપ્યો હતો. બાદ પૂજ્ય આચાર્યશ્રીએ અઢધા કલાક સુધી દિન્દી ભાષામાં સચોટ રીતે ‘ધર્મ’ એ વિષયનું સ્પષ્ટીકરણ કર્યું હતું. આદાર વિદ્યારની હિતમતા સમજાવી હતી. રાત્રિના નવ વાગે સત્તા જય થાપપૂર્વક વિખરાઈ. જન સંખ્યા લગભગ ૧૬૦૦ હતી. ૭ શકવારે રાત્રિના શ્રીરજીકુશાયણના પચલામાં ભજન મંડળના આગેવાનોની વિનંતિથી પધાર્યા. રાત્રિના છા થી ૧૨ સુધી બિરાગ્યા. શાસ્ત્રીજી વસંતરામભાઈએ ત્રણ પદ ભક્ત કવિશ્રી દયારામભાઈના ગદ્યગોષ્ઠી, ભજન મંડળને આનંદ આપી બાર વાગે ઘેર પધાર્યા. આપાદ કૃષ્ણ ૮ રાત્રિવારે રાત્રિના શાસ્ત્રીજી વસંતરામભાઈએ દયારામભાઈનાં પાંચ પદ ગાયાં અને રદરથ સમજાવ્યું. પૂજ્ય આચાર્યશ્રીએ તેમનાં કાવ્યોની મહત્તા અને તે ગાવાની બહેનોને ખાસ બલામણુ કરી હતી. દિન્દુ તરીકેનાં ચિન્દ માદી, રોદી, બેદી એ વિષયનું રદરથ સમજાવ્યું હતું. ઉમરેકમાં પટેલ સોમાભાઈ, તલાદી મંચુભાઈ ઉદે’ ગોપાળદાસ, ગોરધનદાસ, શાદ ભાઈજીભાઈ, શાદ ગોરધનદાસ, કોટવાળા પુલભાઈ, શાદ મૂળજીભાઈ, રા. મણિલાલ સદિલીયાળા વગેરેનો પ્રચલ પ્રસંગનીય છે. આપાદ વડે ૬ ના રોજ મદારાજશ્રી મોરારી ભારદ્વાજ ડાકોર યહને કપડવજુજ પધાર્યા. આ વખતે ઉમરેકના વેણુવોનાં હરિશોનો પ્રેમ અનુભવેકગોચર હતો. બધાની આંખો અશુભીની ઘડ હતી.

કપડવજુજમાં—ઉમરેકથી ડાકોરમાં શ્રીરજીકુશાયણના દરિયાળાનાં દર્શન કરીને મદારાજશ્રી ગોપૂર્ણ શુદ્ધવર્માં કપડવજુજ પધાર્યા. મદારાજના અગ્રેસરો ઉમરેક સુધી પધારાવવા આજ્ઞા હતા. વળી રેતરમાં પાંચ ૭ માઇલ સાથે મોરારી વારીમાં કેટલાક વેણુવો આજ્ઞા હતા. બાળક વિદ્યાર્થીઓ તેા ત્રણ માઇલ દૂર સુધી સામા આવેશ હતા. કપડવજુજની સીમને દેખાવ તેા અવજુનીયજ હતો. વેણુવોએ મોદી સંખ્યામાં સામેયું કર્યું હતું. નાના બાલકથી લઈને જઢાવરયાનાં વેણુજ શ્રીપુરુષોથી ઇવાઈ રહેલા રાજા આગળું દરથ કાઢી અનેરી અસર ઉપજાવતું હતું. મેથરાલ પણ વેણુજમનોરથમાં અંતરાય નહિ નાખી ચંબી ગયા હતા. પ્રચંડ નયનરતિ વચ્ચે અને વાળતે ગાળતે અસંખ્ય માનવ સમુદાય સાથે સમારંભ શ્રીગોકુશાયણના મંદિરમાં રાત્રે આજ્ઞા. વેણુવોનો ભારસમુદ આજે ભરપૂર ઉછળી રહ્યો હતો. શ્રીગોકુશાયણ મંચુની સુષિતા આ ભાવરરથને કાઢી વાર વડેન છે.

એ કીંચુલ કોણ છે ?—‘શુદ્ધદેવ’ માં કીંચુલપુરાણના બે સ્મૃત અધ્યાયો છપાઈ ગયા. તે વિષે કેટલાકો પ્રશ્નો પૂછે છે કે, એ કીંચુલ કોણ છે ? તેનો જવાબ એ પુરાણના લેખક નીચે મુજબ લખે છે:—“કીંચુલ એ કાંઈ શાકસ છત્રી ભગવી !વ્યક્તિ નથી અને તેને ઉદેશીને પુરાણ પણ રાજ થયું નથી. તે વિષે વધુ અજ્ઞાતાની અભિલાષા સેતુરાર R. (રેવારાંકર ૧) માં (મેથલ ૧) P. (પુરોહિત ૧) ને નમ સૂચના છે કે કીંચુલ કોણ છે તે પટેલ ‘ભાટિયાપુરક’માં બદાર આવેલા જુનરાતના વેષ્ણુજ નિદાનનાં નીચે અપવિત્ર વર્તન વિષે સવાશે પૂછો અને તેનું અધમ વર્તન કરનારને બદાર લાગેને. કીંચુલ પુરાણનો તીર્થે અધ્યાય તેા ઉરવ બદાર પકરો અને એક જામના રમજાનમાં એ કીંચુલએ પેસા તથા યદ્ય મારે કેવી લયાનક મલિન મંત્રસાધના કરેલી છે તેનું વર્ણન આવશે.”

અનુપમ માન—વડોદરાના મુસ્તસિદ્ધ સહેરી અને સદૃશદરથ રાજરત રોક ચીમનલાલ ત્રિખરલાલ (કવેરચંદ લક્ષ્મીચંદલા) ને નામદાર શ્રીમાયકવાડ નરેસે પોતાના મિત્રમંડળમાં ગળીને ને અદિતીય સન્માન મળું છે તે ચોખ વ્યક્તિની ચોખ કદર જ થઈ છે એમ કહી સકાય રોક શ્રી ચીમનલાલભાઈ ભાઈ એક ધર્મનિષ્ઠ અને ભવવૃદ્ધમંપરચણ સદૃશદરથ છે. એમના પિતાશ્રી અમરાવાદમાં ધર્મપરચણ અગ્રેસર સદૃશદરથ તરીકે જાણીતા છે. રોક ચીમનલાલભાઈએ પોતાના કુળનું ગૌરવ મુસ્તસિદ્ધ રાખ્યું છે. વડોદરામાં શ્રીકલ્યાણશાયણના મંદિરનાં છલેધાર કરવામાં તેમણે વિત્તભ સેવા ઉપરાંત વડુભ સેવા ધણા પ્રમાણમાં કરી છે. સંપ્રદાયની સેવા બધી રીતે તેઓ જાણે છે. વડોદરામાં શ્રીમંદિર પાસે એક પુરતકાલવ આજે વર્ષોથી તેઓ ચણવી રહ્યા છે, અને મંચુદરજીમાં પણ ઉતારલાપૂર્ણ સદાયતા આપે છે. એમને ને અસાધારણ સન્માન મળ્યું તે પુલિમાર્મને અને સનાતન ધર્મને મળ્યું છે એમ અગ્રે સમજાવે જીએ.

રાજરત—રોક સામગ્ર બદોચરનું વેણુજ કુટુંબ જુનરાતમાં મુસ્તસિદ્ધ છે. તેમના કુટુંબના વેણુજના અધ્યક્ષ હતી અને અસારે પણ સદૃશ રોક ચીમનલાલભાઈના સત્પુત્રો પોતાના કુળનું ધાર્મિક ગૌરવ

નળવી રહેલા છે. રોક ટાડરમલ એક વૈષ્ણવ દોષને સાદિલયેમી ધાર્મિક ભાવનાવાળા લેખક છે. સાંપ્રદાયિક સાદિલયા તેઓ હતેજા છે. હમણાં તેમણે પચીસ વર્ષનાં રૂપીઆ જેટલી નાદી બાદશાહી રકમ મળેલોની ચાલી બાંધવા આપી છે. તેમના આ સદ્ગુણોની કદર ના. મદારાન ગાયકવાડ સરકારે રાજરતનું સુવર્ણપદક આપીને કરી. છે ખચિતજ, આથી આવા ચોખ્ખા ધર્મપરાયણ નામરિકની કદર થઈ છે.

એક સુધારો—અણખાન આદિ અરપૂરોને બ્રહ્મસમજ સર્વથા ન્દોડું થયું તેમ કહેવું હચિત નથી. પણ તેમને આધુનિક પ્રકારે બ્રહ્મસમજ ન્દોડું અપાયું. એ વાત નિર્વિવાદ છે કે બ્રહ્મસમજ વિના ચોવાધિકાર નથી મળતો. અરપૂર વૈષ્ણવો સેવા કરતા દત્તા અને તેમના સેવ્ય સ્વરૂપો (શ્રીકા-કુચ) અત્યારે સાંપ્રદાયિક મંદિરોમાં વિરાજે છે એટલે તેમને બ્રહ્મસમજ ન્દોડું થયું એમ કહેવું અરથાને છે. લી. ગો. ક્રીમનનાથલાલજી. મુંબાઈ, વી. ૧૪-૭-૩૩.

નોકરી છોડી પણ તિલક ન છોડ્યું—બરેલીના પંડિત રામ આધાર એઓ ચોગવિદ્યા નહોતે છે અને દેશીક વર્ણોથી યોગીના જેવી છ'છો ગાળતા છતાં સમર્પિત્વેદર તરીકે નોકરી કરતા દત્તા, તેમને ત્યાંના હાલના પોલીસ સુપ્રીન્ટેન્ડેન્ટે ચોતાના કપાન ઉપર તિલક નહીં કરવા ન્હાળ્યું. પંડિતજીએ તિલક કરવાનો ચોતાનો દક્ક દોવાનું તથા તિલક સાથે તેઓ ધણી વાઈસરોયો, અવનંદો અને પોલીસના ઈન્સ્પેક્ટર નરસોને મળેલા દોવાનું તથા કોઈએ પણ તિલક શ્રામે વધી નહીં લીધાનું ન્હાળ્યું હતું. પોલીસ સુપ્રીન્ટેન્ડેન્ટે આથી ઈન્સ્પેક્ટર નરસને રીપોર્ટ કર્યો હતો જેના નવાબમાં ઈન્સ્પે. નરસે તિલક ન કરવા ન્હાળ્યું હતું. પંડિતે આથી નોકરીનું રાજીનામું આપી ચોડાન દિવસે ઉપર અવધુત સાધુનો વેશ થઈ સુપ્રીન્ટેન્ડેન્ટની બીડીસના ક'પાનમાં ચોતાનો અડો ન્હાળ્યો. આ બનાવે ત્યાંની સનાતની જનતામાં ચક્રમાર ફેલાવી હતી અને ચોતાનાં ટાળાં આ સાધુનાં ઈરાંનાથે ત્યાં ન્હા થવા લાગ્યાં હતાં.

વઢવાણ સહેર—માં શ્રીભાનયાત્રાના દિવસે સમામાં ભાવણ શ્રીયુત સુખીયાજી જીવનવાદ કૃષ્ણજ્ઞ ત્રીવેદી એજાવાળાએ કહ્યું હતું તે તો હુંક સાર નીચે પ્રમાણે શ્રી. પુ. વે. મહાસમાના મે'બંદે તથા સમાસરો અને મહાસમામાં આનંદનો હાલ લેવા આવેલા સદ્મદરેય વૈષ્ણવ જનોનો જાતમ લાગણીવાનો ભાવ જોઈ માફ થિત ધણીજ પ્રસન્ન થાય છે આવા ધાર્મિક પ્રવચનો વારંવાર ને થતાં દોષ તો નિર્વંતર ભાવની જરૂરિયું વેપણ થયા કરે. વર્તમાન સમયમાં અનેક પ્રકારની મિનમિન વાતાવરણે એવાં આધુનીક સુવર્ણનાં મન ધર્મ પ્રાચીનો વ્યવ થઈ ગયાં છે પણ વલવાણ સહેરમાં કેવળ કંસારા ક્ષાત્રિ સુવક સંધના ભાવે શ્રીમદાપ્રજુલની દયાથી વિરોધ અભિલેખણ થોડું છે તે ઘણી દર્શની વાત છે. કાસણ કે એમના ધંધાથી કાચું નિમિત્તે હવેલીથી પર એમ ને ઉપર વાતાવરણ પ્રત્યે લક્ષ આપવાનો વખત બહુજ યોગી મળે છે ને એમનું દ્રવ્ય ધણીજ મદેનતનું ને શુદ્ધ છે મારે શુદ્ધ દ્રવ્યતા પ્રદાપે અન્ય દોષિત નથી બનતું મારેજ એમના લાવે જાતમ અનુમાન છે. ધણે કેહાણે સમયને જાતમ સંમતા અસાને કન્યાવિકેય લેવામાં આવે છે એ દ્રવ્યતા તો પછી વાતજ ચી કરવાની કે એ દ્રવ્યની અધમત્રાની વાત ફરેક ધાર્મિક પુરોહિતે સમાનજ છે. પણ ને સારી રીતે નહોતે છે તેમાં એ લેરા દખાતો નથી. આપણા ઉપર શ્રીમદાપ્રજુલએ કેટલો અનુમદ કર્યો છે આ 'પુષ્કામ'ના છવો પર કેટલી દયા કરી છે આપણોએ કેટલો પરિશ્રમ લીધો છે ભક્તિમાર્ગે અંધને જાતમ બ્રહ્મવરીય સત્સંગ દરેયો આપણને ભાવ થાય તે સિવાય અદ્યથ્ય છે પ્રજુનું માદાભ્યધાન સુદૃઢ સર્વથી અધિક રનેદ નવારે થાય ત્યારે નિર્વંતર ફરેક વરતુમાં ભગવાનમાં રહિ થવી નેહએ જેમ જેમ ભગવાનથી હરપન કરેલી આશ્વર્યાક વરતુ લેઈને ભગવાન પ્રત્યે ઉપકાર દશા દશાઈ થઈ પણ આ દશા ક્યારે બને કે કેવળ શ્રીમદાપ્રજુલના આશ્રિત થઈએ ત્યારે શ્રીમદાપ્રજુલના આશ્રય સિવાય ભગવાનનો અનુમદ આદર થવો દુર્લભ છે. વિરોધમાં મહાસમા લેવા કેવો દરેયો નેહએ તથા વૈષ્ણવોને સમાસરોને તેમના મેન્જલે ઈલાહિને ધણીજ કોષ પાઠ્યો હતો અને ઉપરમાં કહ્યું ને આવા આનંદિત કાર્યો દર સાહમાં મોટા પ્રમાણમાં થવા નેહએ નેથી હજીની પ્રબને હાસાદ થઈ અને આનંદ આવે તેવા મુંદર રાજરાજાનીધી નાના બાળોમાં માર્ગીય અંધ સંજીત સાથે શીખવવાની અરજ કરી હતી આ મુંદર વ્યાખ્યાનથી સમામાં આવેલ વૈષ્ણવોને ધણી આનંદ થયો હતો. અને ચોતે ચોતાનું ભાવણ શ્રીની નય વેપણ સાથે સમાસ કહ્યું. ત્યારબદ્ધ ચતુરદાસે જાતમ રીતે વિવેચનપૂર્વક શ્રીશીષીસંગીતને અર્થ સરજ રીતે સમજાવ્યો હતો. અન્યપૂર્વ ને અન્યપૂર્વ એજ અત્રિક્રમારે તેમજ

ગોપીભાગીનિમાં ૧૬ પ્રકારના વસ્ત્રસાથે પ્રજ્ઞા અંતરધ્યાન યત્ન કરણ અને અગ્નિમાર્ગનું પૂર્વ જ્ઞાતિની અંતરમુદ્રણા વેળુનાદ કોને માટે દત્તો. આ સર્વે જ્ઞાતિ વિવેચન સાથે ધર્મી અસરકારક રીતે સમજવી અને પોતાનું વિવેચન પુર કર્યું હતું. ત્યાર બાદ શ્રી. પુષ્પાચાર્યે વેષ્ણુ મહાસમાના મંત્રી બાહ્ય ગોપાલસે પોતાના બાપજીમાં કહ્યું કે પ્રિય વેષ્ણુએ આજે ધર્મી ન હવેની વાત છે કે રતના યાત્રાને કીવસે આવો ઉત્તમ આનંદનો કીવસ હોઈ તેમજ આપ સર્વે વેષ્ણુ, સમુદાય અને પધારેણુ ઉંઝો તેથી ધર્મી ન હવેની વાત છે આ મહાસમા રથાપવાનું કારણ આજ એ જ છે કે વિવેચ વેષ્ણુ વડે આપે કે ઉત્તમ શિક્ષણ મળે અને અનેક વિદ્વાનદ્વારા સત્સંમનો લાભ મળે તેથી ભક્તિની વૃદ્ધિ થાય આ વર્તમાન સમયમાં દુઃસંગ વિશેષ પ્રબળ છે માટે દુઃસંઘથી ભચાવ કરવાના હેતુથી આવી સંરથાઓની જરૂર છે આ સમાના ઉદ્દેશને અનુસરીને દરેક શ્રી. પુ. વેષ્ણુ સમાસદ થઈ રહે છે આ સંરથામાં એક નાનું સરખું પુસ્તકાલય પણ રાખવામાં આવેલ તેથી દરેક પુ. વેષ્ણુને અમારી ખાસ વિનંતિ છે કે પુસ્તકાલયના નીચમને અનુસરીને આપ પુસ્તકો લઈયા લઈ જવા દેવા કરો દરેક પુ. વેષ્ણુને વચિત લાભ મળે તેવા હેતુથી કઈ પણ ફી અમર તેવા કઈ ફાવે રાખવામાં આવેલ નથી. તેથી સર્વેને ઉત્તમ લાભ મળે તેમ છે આ ઉપરાંત મગવતીય બાણથી લલ્લુભાષ ઇત્યદિવાલ દેસાઈ (અમદાવાદ) વાળા તરફથી આ સંરથાને મળેલ કોટ શ્રીગોપીભાગીનિના પુસ્તકો દરેક પુ. વેષ્ણુને ધર કીક ૧ પ્રત કોટ તરીકે આપવામાં આવે છે તે દરેક વેષ્ણુએ લઈ જવા દેવા કરી અને તે વાંશી અને મુદ્રણ કરવાની ભગામણ કરી અને પોતાનું બાપજી પૂરે કહ્યું હતું અને આ સમામાં આવેલ વેષ્ણુ તથા મુખીયાલ ઇત્યદિવાલમાં ઉપકાર માનવામાં આવેલો હતો. ત્યારબાદ બ. બાણથી ત્રીભોવનદામે મુંદર રાજ રાજગીથી એક ઘોઘ પેડીના સુર સાથે ખોડી અને આવેલ વેષ્ણુને લાભમાં ઉમેરો કર્યો હતો. ત્યારબાદ શ્રીની જયધોણા સાથે સમા વિસર્જન કરવામાં આવી હતી.

મોદા મંદિર-મુંબાઈમાં—પૂન્યપાદ ગોરવામીશ્રી ૧૦૮ ગોડુજનાયલ મહારાજશ્રીની પ્રમુખપદ નીચે મોઝા મંદિરની વિશાળ પાઠશાળા શુદ્ધમાં થયું હતું. તે વખતે પાઠશાળાના મુખ્યાધ્યાપક પં. શ્રી. બહુનંદન જી., પં. શ્રીકૃષ્ણ માધવ જી. ન્યાયનીય, ન્યાયજ્ઞાચાર્ય, પં. ગોરગોપાલ રામ, ચંદ્રશેખર જી. બી. એ. પં. મધોદત્ત જી. ન્યાયિવાચાર્ય ઇત્યાદિ ધર્મ પ્રતિષ્ઠિત વિદ્વાનો તથા વેષ્ણુ અધ્યક્ષોની તથા બહેનોની સંખ્યા કીક પ્રમાણમાં ઉપસ્થિતિ હતી. વ્યાખ્યાન પહેલાં મહારાજશ્રીને મુખપ્રમાણ અર્ચન થઈ હતી. તદનંતર વિધાર્થી ગિરધરલાલ વજ્રમળ નેશીએ ભારતવર્ષમાં ધર્મની હાનિનું કારણ આ વિષય ઉપર એક સાફ બાણજી આપ્યું હતું. આ બાણજીથી જનતા ઉપર સારો પ્રભાવ પડ્યો હતો. તદનંતર કાશીના રમુનાય શાસ્ત્રીએ વર્ણાશ્રમ ધર્મ ઉપર એક ક્ષત્રક મુખી સાથે વ્યાખ્યાન આપેલું અને બોધી આજની વગેરે નેતા લોકોની સારી રીતે યોગ્ય બોલી હતી અને અંતમાં કહેલું કે પ્રતિદેશ નામધારી ગાંધી માદવી વિશેર નેતા હોયે ભારતને પ્રત્યેક રીતથી નુકસાન પહોંચાવ્યું છે અને અંતે ભારતમાં રહેલા વર્ણાશ્રમ ધર્મને પણ ભારતથી છોડાડી દેવા છડે છે. પરંતુ આપ સમજાવો તે નેતા લોકોની આચારમાં ન ફેરી જઈને પોતાના ધર્મમાં દૃઢ રહેવું. અને ધર્મમાં દૃઢ રહેલા મનુષ્ય પોતાના કાયદા સિદ્ધિને પ્રાપ્ત કરે છે. વર્તિ આપ લોક ધર્મથી નર થઈ મથા તે પછી દેશના મત્તરે તે દર રહુ. પરંતુ આ લોક તથા પરલોક બંનેને બચાડેલા. એટલા માટે વર્ણાશ્રમ ધર્મને ન છોડવો. આવા પ્રકારનું સાક્ષીએ મુંદર તથા માર્મિક બાણજી આપેલું હતું. શ્રોતા લોક ઉપર સારી રીતે અસર થઈ હતી. તદનંતર રત્ને લા વાગે શ્રી. બાણજી પ્રજ્ઞાની તથા મહારાજશ્રીની જયધર્મિ સાથે સમા વિસર્જન થઈ હતી. વિધાર્થી ગિરધરલાલ ઇત્યાદિ આરંભમાં શ્રીભાગજી પ્રજ્ઞાની તથા શ્રીમદ્ આચાર્ય ચરણી ચરણમતિ મોડી હતી. તદનંતર સમાનું ધર્મ વાક્ય થયું હતું. પૂન્યપાદ સત્યાપતિ મહોદયે ધર્મ ઉપરિવરત વિદ્વાન તથા વેષ્ણુ બાઈઓ તથા બહેનો આનંદાદ એવો સમય આવી ગયો છે કે ધર્મ ઉપરથી લોકોની શ્રદ્ધા ઇતી જાય છે. બીજી ઈશ્વીય ભણવાની તથા જણાવવાની પારિપાટી એવા પ્રકારની છે કે સત્યદન ધર્મની શ્રદ્ધા તે લોકોના હૃદયમાંથી પોતાની એવે નિકળી જાય છે. શ્રદ્ધા હજી જાય તેમાં કહેવાની કઈપણ જરૂર નથી. કારણ કે સંસ્કૃત મંથ ભણાવતા પહેલાં ભગવદ્ગીતા ગોરમ્ ભગવદ પ્રાચીન તે ગ્રંથમાં પહેલી દેવ છે. સંજ્ઞ કે ઈશ્વર પ્રતીકમાં પહેલાથી જ દેવ હતાં અરુઘ નામોની પહેલા પ્રાચીન સાથે છે. તદનંતર ઈશ્વીય જણાવતા આરંભમાંના બાલકોને નાની વયમાં નમસ્કાર પ્રજ્ઞા શિક્ષકવાને બંધે શુભોર્નિન સર હતાં શિખાવવામાં આવે છે. દવે આપ સમજાવો વિચરે

કરો કે જે બાલકોને દબા કરવા પડેલા પુત્ર આવડતાં નથી. તથા સૌથી જલ્દી દાષ-પત્ર ધોડા નથી આવડતા. આવા નાના બાલકોના કામગીરી હવેમાં યુરોપ અમેરિકા વિગેરે બ્રહ્મ પ્રતિભા બાલકોની જેવી થાય છે. બીજું કહેવાનું તે એ છે કે વર્તમાની જગાએ તે સુરતમાં જાય છે. ત્યારે દેખાડેપણી પેન પેન્સિલ મોઢામાં નાખવાનું પડેલા બહે છે, અને દિન્દુનો બાલક મુસલમાનની પેન-પેન્સિલ મોઢામાં નાખે માલુમનો બાલક ધોળીની પેન-પેન્સિલ મોઢામાં નાખે આવી રીતથી નાનપણથી ખરાબ સંસ્કૃતિ વગર તે બાલક મોઢા દબા કરવા પડેલો. પણ ધોળાનો ધર્મ શું છે. તે કદિયમ સમજવા નથી.

દરે આપ સમજાવો વિચાર કરો કે આ ઉચ્ચી શક્તિના બેનકોનોએ પડેલા તે સરસુદ બાપા શક્તિ નહિ. અને સરસુદ બાપા પડેલા ન બહુવાથી ધર્મ શું વસ્તુ છે. તે લોકો ક્યાંથી જાણે અને જાણે તે જાણે કે જોશીયા નિવ સી જોશીયા નામની ભવિષ્ય મનુષ્યો ચારે વરસે થશેલા છે. અને એ લોકો ભારત વર્ષમાં આવ્યા તેના વંશમાં અમે જલ્પન થયા છીએ. તથા તેની અંદરથી નીકળેલી બાપા સરસુદ બાપા તથા તેની અંદરથી નીકળેલા ખત સત્યાગત ધર્મ કહેવાય છે. આવી રીતની વાત તે લોકોની ભુજિમાં જલ્દીથી સમાઈ ગઈ. પરંતુ આપ વિચાર કરો કે નથી તે ભારત વર્ષમાં કે નથી અમરા પૂર્વે પર્વતે જે ભવિષ્ય લોકોને ભારત વર્ષમાં લોકો ગ્રેવ્ય કહીને પૂરું જલ્પન કરતા અને થઈ તેનો અભ્યુત્પાદ રપથે થઈ જતો તે પ્રત્યેક વસ્તિ સદિત સ્થાન કરતા તે લોકો થઈ અપારા કુટ પ્રવૃત્તિ થઈ ગયા. આવા વિચારવાળા બાલકોના હવેમાંથી દેવ દર્શન આજ વર્ષે લીધેલા પાઠા પિતાની રોચા જોરે વપરાયી થયા નહ થઈ જાય તેમાં વિશેષ કહેવાની આવશ્યકતા નથી. સત્ય રીતથી જોઈએ તો તેમાં તે બાલકોનો રોષ નથી. પરંતુ તેઓના માતા પિતાનો રોષ છે. કારણ કે નાનપણમાં તેઓને સ્વધર્મના પુરવઠાનો અભ્યાસ કરાવવા જોઈએ તે વાત તો બાળ પંચ રહી, પરંતુ ક્યા સમાજ સમા સત્ય જ વિશેષમાં અપણે તેઓને લઈ જતા નથી.

માઈ પુછે તો કદિયે કે, ક્યા-સત્ય જ વિશેષમાં તો અપારા સરખા રૂઝોના કામ છે. બાલકોનું શું કામ છે? અને તારક સિનેમા ઉત્સાહમાં પોતાના બાલકોને લઈ જઈને અને બેઠાકાંચે તથા આવા કાર્યોમાં તેઓને આપણે અનિત કરવા રહિયે છીએ. દરે આપ સમજાવો વિચાર કરો કે. બાલકો મોઢા થવા દેવ દર્શન આજ વર્ષે ખાતા પિતાની રોચા વિગેરે ન હો તેમાં તે બાલકોનો રોષ છે કે તેઓના ખતા પિતાનો? આ વપરાયી આપ લોકોએ એવા પ્રકારનું અનુમાન ન કરી લેવાનું કે જલ્દીથી બહેલા લોકોની ધર્મ વપરાયી આરતા લી જાય છે. પરંતુ પણ ખરા બહુમુ નિર્દોશની પાત્ર ધર્મ વપરાયી આરતા અસ્ત થઈ જાય છે. કારણ કે જાલજા ગઈલા બલવા પુરી કચેરી વિગેરે પદોમાં તો જાણે તે બહુમુ નિર્દોશના પુરવઠા તો પવિત્ર કુમવા છે તથા દોહલના રોડા ચોરર આ વિગેરે પદોમાં તે લોકો પાપ પવિત્ર જલ સમજે છે. આટલેથી તે લોકોના હવેમાં સતિય ન થાયથી યુરોપિયન લોકોનું અનુકરણ કરતા સિંચા મોઢા જાણે માદીથી દાષ ન મોઢા સાબુથી દાષ ધોવા બીજાને પણ પાદીથી દાષ ન ધોવા સાબુથી એવા પ્રકારને વપરેસ આપવો. પરંતુ સમજાવો નથી આવડે કે તે લોકો શા માટે યુરોપિયન લોકોનું સંપૂર્ણ અનુકરણ નથી કરતા કારણ કે સૌથી વખતે જલ પણ ન લઈ જઈને જોઈએ કારણકો તે પડ્યા અને છે. પરંતુ (ધોળીનો કુરે નહિ થારેના નહિ) જારેના વડન આ લોકો નહિ દિન્દુ નહિ યુરોપિયન તો આ લોકોને કેવા પ્રમાણ સમજવા તે સમજાવું નથી. અને જાણું છું કે તમારે ભુજિને પવિત્ર કરી દોષ તો પવિત્રતા પાલો તમારાથી પવિત્રતા ન થાય સારા તો બીજાને જલ ન કરે આરતુ. આ વપરાયી આપ લોકોને સમજાવો આવી વસ્તુ દરે કે ઉચ્ચી શક્તિના લોકોની ધર્મ વપરા આરતા નથી રતીને તે નથી કહેવાનું પરંતુ પશ્ચિમની સજ્જતા એવા પ્રકારની છે કે સરસુદ બહેલા લોકોની પણ ભુજિમાં ફેરફાર કરી લીધે છે. પરંતુ જેના વપરા અનુકરણ તથા મુશ્કેલી દરે તે જ લોકોની ધર્મમાં ભુજિ નિષ્કારેલો. નહિ તો પછી એકિન્દ્ર નેનનખઃ અસ્તુ. તેજલ અને પ્રિય સમજાવો આપણા બાલકોને ધર્મ વપરા દર આરતા રખાવવી દોષ તે તેને જાલપણથી જ ધાર્મિક વપરેસ આપવો પોતાના ધર્મના પ્રયોગો અભ્યાસ કરવો સમા ક્યા સત્ય જ વિશેષમાં લઈ જાય તો તેમની ધર્મ વપરા આરતા રહેલો જલારવામાં તમારી રોચા સંકુપ કરો. અને નાનપણમાં ધર્મનું જ્ઞાન ન મળ્યું તો પછી થઈ રાખવાનું કે આ ક્યાં પુત્રની રતન-તમામાં તમારા જ પુત્રો તમાને જ દુઃખ દોષ તમારે થઈ જાય. ઉત્તિરામ.

પાંચ રૂપીયા પસંદગી—એક વેળાએ કોનિસિસાનુ મુજબજા સપાન, મુ. જલ્દીપુષ મહિ પાંચ

જાહેર ખબર.

સર્વે આંખા સુખ સર્વે અમત્કાર—શ્રી. શ્રી. ૧૦૮ શ્રીમદ્ધારાજશ્રી આચાર્ય શ્રીવલ્લભવાનજી શ્રીમદગોકુલગાદી શ્રીમદકામવન ગાદી જગત્પુર મહારાજશ્રી અપાડ વડી. ૭ ને શુક્રવાર કે દે દીવસ મહારાજશ્રી શ્રીમુખસે આતા લઇ આજ રાત્રી વરસાદ પાણી ખડોત આવેગો સાન્ત અમત્કાર નિરપેક્ષ નિરવાય અમત્કાર સકલ જીવનકો સુખ કો દહેકે વારસે શ્રીમુખસે આતા ભઈ. એજે બીજે મારગ માયાવાદીનને અલ્પવેણા અમત્કાર કરે હે કેમકે પાણી કો કુષ ખૂના દે હે, પત્થરકી સાકર બનાવે હે. સો લોભ સ્વાર્થ કે લીધે બનાવે હે. શ્રી મહારાજશ્રી સકલ પ્રાણી માત્ર કે સુખકે વારસે અનુભવિ અમત્કાર તાતકાલીક સકલ જગતકે વારસે પ્રાણી માત્ર તત્તર રહી હતી જીવે દયા કરકે શ્રીમુખસે આતા ભઈ આજરાતે જન્મ-વરસાદ આવેગો. સાન્તી બચનસે આનંદ વચનસે સકલ પ્રાણી માત્ર કે વારસે બચન ઉચ્ચારણ કીયો અસાડ વડી ૭ કે રોજ કીયો સકલ વૈશ્વ ઉમરેક, ઝોડ, પેટલાદ તથા ગોઝાસા, નડિયાદ, કપકપચુજ તથા આકારીનોર તથા દીગ્યા સખનકે બીચમે વચન ઉચ્ચારણ કીયો એઈ અમત્કાર અઘોડીક આપકી ઇચ્છાનુસાર બચન કીયો સખ પ્રાણી માત્રકુ સુખ પહોંચ્યો. આપશ્રીને એસો વચન કીયો મીતિ ૧૬૮૯ ના અપાડ વડી ૮ ને શનીવાર.

હી. વૈષ્ણવ કૃષ્ણદાસ પરમાનંદદાસ ગોવરધનવાસી.

ગિરિધરલાલ જગજીવનદાસ શાહ.

બુકસેલર અને રોશનર્સ.

૬. શ્રીલાલબાવાનું મન્દિર, બુલેશ્વર-મુંબઈ નં. ૨.

આમદારે ત્યાંથી વૈષ્ણવ ધર્મનાં સંસ્કૃત, હિન્દી, મજ, ગુજરાતી, મરાઠી, ઇંગ્રીશ ઇત્યાદિ દરેક ભાષામાં છપાયેલાં (મુદ્રિત યથેર્થ) પુસ્તકો તેમજ અન્ય ધાર્મિક સંસ્થાઓનું ભક્તિવર્ધક એવાં સંસ્કૃતિમય સર્વ પ્રકારનું સત્યાદિલ તથા વીનાયકારા, ગોકુલ, મથુરા, કલકત્તા, મુંબઈ, અમદાવાદ વિ. ના સુપ્રસિદ્ધ ચિત્રકારોએ તૈયાર કરેલાં શ્રીનાથજી આદિ સાતે સ્વરૂપ અને શ્રીરામ-કૃષ્ણની વિવિધ પ્રકારની દિવ્ય કોશઓનું દિગ્દર્શન કરાવતાં સુન્દર ખનોરંગક વિવિધરંગી ચિત્રો, તથા શ્રીમહાપ્રભુજી, શ્રીગુરુમહાજી અને પુ. પા. ગો. બાલકોના દોટા-ચિત્રો તથા નવાં વર્ષનાં ફેન્સી કાર્ડ, કપર, અનિનંદનપત્રો, કેવેન્ડર, ન્હાનામ્હોટા રોજમેગ, ડાપરી, સામગ્રદાયિક પ્રતોઃસ્વની ટિપ્પણીઓ, શુદ્ધકર્તિકી અને ચૈત્રી ન્હાનામ્હોટાં પંચાંગો, ફૂલ ભરવાની સોય, તદુપરાંત દરેક પ્રકારનો રોશનરી સામાન યોગ્ય મૂલ્યથી મળી શકશે.

તે સિવાય દોટા-ચિત્રોને સોનેરી, નકશીદાર, સાદી ફેન્સી ફેગો, તથા પુસ્તકો, માસિકો વિગેરેને સાદુ, કપડાનું રેશમી, કંતાનનું યા સોનેરી ટકાઉ બાઇ-ડીંગ તથા દરેક પ્રકારનું છપાવવાનું કામ અને દોટાઓના બ્લોકો વિગેરે યોગ્ય કિંમતે કરી આપવામાં આવે છે.

વિશેષ રૂબરૂમાં મળેા યા પત્રવ્યવહાર કરો. પત્રોત્તર ખાટે જવાબી કાર્ડ યા પોસ્ટ સ્ટાંપ ચોકસવા.

દા. ગિ. જ. શાહ.

સોને મારે

તાકત-તાઝગીધી બરખૂર

સાગરતાર

અંડુ ફાલા સ વ

—વિના વિલંબે—

વાપરના માંડો

ખાસ સ્રીઓને મારે

તનફરસ્તી-તાકતથી બરખૂર

સ્રીઓની નખખાઈમાં

આખા અરાર કરનાર

અંડુ અશોકારિષ્ટ

પ્રદર્શિ રેશોનો

અકસીર ઇલાન

દુરેક ઘરમાં હોવો લેખ્યો

બાળકોનાં પેટનાં દર્દોમાં

આખા કામ કરનાર

ખિલકુલ

દેક વગરનું

અંડુ બાલશૂલાઈ

—બાળકોવાળા—

દરેક ઘરમાં રાખવું લેખ્યો

—શીશી એકના આના બાર—

અંડુ ફાર્માસ્યુટિકલ વર્ક્સ લી. મુંબઈ નં. ૧૪

અમદાવાદના એન.સી. બોગીલાલ અવધાર્, ૧૨૪, રીચીરોડ.

આધુનિક દવાઓનું સુવિધા આપેલ મંથાને.

ગુણાનુવાદ કેમ ગાશે ? શુદ્ધ સંગીતનાં દિવ્ય કીર્તનો.

સારંગી, ખીન, દીલરૂખા, હાર્મોનીયમ વગેરે વાજાંત્રોમાં સાંપ્રદાયિક કીર્તનો ઉતારવાનું આપું સાધનું સંપ્રદાયમાં એકેય નથી. મંગળાચી શયન પર્યંતના મુખ્ય કીર્તનો, વધાર્ધ અને ધમાર એ બધાંનાં ૮૦ રાગોના ખાસ નોટશનો આજ અંચમાં છે. પખાવજ સિંચનાર માટે તાલના બેલ પણ છાપ્યા છે, ગુજરાતી ભાષામાં સવિસ્તર સમજણ પાડી છે. નોંધાવર બે રૂપીઆ, પોસ્ટેજ પાંચ આના.

૬. ભગવાનદાસ નારાયણદાસ કોટડાવાળા.

સુ. ધંધુકા, (જી. અમદાવાદ.)

હિસ્ટરિયાદિ વાતરોગ દર્શન.

ખ્વોક ૩૦ હિસ્ટરિયા, મૂળી, ચકરી, ફેફર, ગાંડપણ અને બકવાદ રોગની અમેરીકન હેક્ષી શોધ મુજબ પાશ્ચાત્ય, યુનાની અને આયુર્વેદિક સિદ્ધાંતો, સમજુતી અને સાદા ઉપ-ચારોનું પુસ્તક વાંચેથી ઘણી રાહત મળશે. કીમત ૧-૪-૦ પૈ. 'લુઈ', 'દેશીનામું'. નવા અવધાર પ્રમાણે રચના ૦૧. રાખા માટે નવું મંજુર કો. ૦૧ પૈ. ૦)૦.

હિસ્ટરિયા રોગનીજ રામબાણુ,

પેટ દવા વાયુમુક્તાજ છે. ઉપરના દરદોમાં ૨૪ કલાકમાં ફાવેલ ગમે છે. ચિનોન, આફ્રિકા, ધરાન અને રંચન સુધીના દરદીઓ વાપરી સુખી થયા છે. મેડીકલ સરજનો કુટથી મંગાવે છે. દવા મહિનાની, કીમત રૂ. ૫) પૈ. 'લુઈ'.

છગનલાલ લલ્લુભાઈ નામાવાળા. પેલેસ રોડના નાકે—વડોદરા.

વીસમી સદીની નવીન શોધ

સંપ્રદણી (ગળણી) માટે અમૃતમય ઉપાય.

પ્રતિષ્ઠિત અને વિદ્વાન વૈદ્ય કોટડેરાની દવા ખાદ્ય કંઠાળેસા સંપ્રદણી (ગળણી), મુંજાખના ઝાઝા, અતિસાર અને આંતરંગના દાષથી પીગાત્ર નિરાશાજનક દર્દને આશીર્વાદરૂપ થઈ પડેલી ત્રીસ વરસના અનુભવની રામબાણુ દવા માટે રૂબરૂ મળેલા સવાલપત્ર મંગાવો. પત્રઅવધાર નીચેના સરનામે કહેવો:—

માસ્તર કે. જી. પટેલ એન્ડ સન્સ, રૂપે સ્પેસીઆલીસ્ટ—માણસાવાળા.

જી. મેળાપ—૨૨ રવિવારે, અમદાવાદ—ગ્રાહુપુર કાંઠીરાની પોળમાં તંબુગરાની ખડકી ધર નં. ૨૫૧.

અમારૂં ખાલાનંદ બચ્ચાંઓને હૃદય પુષ્ટ આનંદી અને મુંદરે બનાવે છે. કો. ૦-૧૨-૦ પૈ. 'લુઈ'.

C. P. Ayurvedic Chemical Works

સી. પી. આયુર્વેદિક કેમીકલ વર્ક્સ રાયપુર.

(મધ્યપ્રાંતીય દ્વિતીય વૈદ્ય સંમેલન નાગપુર.)

તા. ૫, ૬, ૭ નવેમ્બર ૧૯૩૨ ના આયુર્વેદ પ્રેમી જનતા માંટે આહવાન પ્રદર્શનોમાં સુવર્ણ તથા રૂપાતું મેડલ સર્ટિફિકેટ મેળવેલ

આયુર્વેદિક દવાઓ

અવન પ્રાશ અવલેહ.

ખાલક, યુવક, સ્ત્રી, પુરુષ બધાને માટે અતિહિતકારી છે. વૃદ્ધને નવું જીવન આપીને સુવાનની સમાન બનાવે છે. લય, દમ, રક્ત, પિત્ત, ધાતુ ક્ષીણતા, અશક્તિ, અભ્રૂપિત્ત, શીર્ષશોથ, હાલ, ખાંસી, સ્વરભંગ, અરુચિ અને વીર્યવિકાર, પ્રમેહ, પ્રદર ઇત્યાદિ માટે અતિ ઉપયોગી છે. તોલા. ૨૦ કી. રૂ. ૨૧. આ દવા અડધાથી એક તોલા દુધની સાથે પીવી.

કાન્તામૃત (સ્ત્રીઓ માંટે)

પોષિક, શક્તિવર્ધક તથા આરોગ્યને આપનાર છે. આના સેવનથી જનુ-શ્લ, વધારે રક્તનું પડવું, પ્રદર, ગર્ભસ્રાવ, કમરનો દુખાવો, હાથપગનું બળવું, વિકાર, પ્રસૂતિ, પાંડુ, સંશ્લેષી, ગર્ભજ્વર, જીર્ણજ્વર, પેશાબનું બળવું, માથાનો બ્યાધિ, દમ, ખાંસી, ઉલટી, અરુચિ, સોજો, હિસ્ટીરીઆ વગેરે રોગને જલદી કાયદો પહોંચાડે છે. કી. શીશી ૧ નો રૂ. ૧૧. સવાર સાંજ અરથે તોલા ૫ થી ૧૦ સાથે પીવું.

સ્વદેશી ગુલાબી ચાહ.

આ ચાહ પ્રાચીન આયુર્વેદિક ગ્રામ્યના આધારથી અને ગુજ વનસ્પતિના સરવથી બનાવી છે. રક્તશોધક, બુદ્ધિવર્ધક, ધાતુપોષિક અને પાચક છે. રંગ, સ્વાદ અને ગુણમાં ઉત્તમ છે. રોગી અને નિરોગી અવસ્થામાં પણ લઈ શકાય છે. તોલા ૫ ના ૦૮.

વીસ તોલા દુધ પાણીમાં એક આનીસાર નાખવાથી ચાહ લેવાર યાય છે.

દરેક પ્રકારની રાત્રિકા દવાઓ અમારે ત્યાં મળે છે. તેમજ દરેક રોગની ચિકિત્સા પણ અહીં યાય છે.

સી. પી. આયુર્વેદિક કેમીકલ વર્ક્સ, રાયપુર. (સી. પી.)

શ્રીગિરિરાજજીમાં વૃક્ષ રોપો !

વૈષ્ણવો ! શ્રીગિરિરાજજીની તરહટીમાં પ્રાચીન વૃક્ષો તિરોધાન થઈ જવાથી સમગ્ર તટકાના પ્રતાપે ચળા પળ શેકાઈ જાય એવી ગરમ રજમાં ગ્યારે શ્રીવલ્લભકુલ, વૈષ્ણવો, વ્રજવાસીઓ, સાધુ, મહાત્મા તથા ઋષિ-મહર્ષિઓને દંડવતી તેમજ સાદી પરિક્રમા સાત કોસની ફરતા જોઈએ છીએ ત્યારેજ આપણને વૃક્ષોની કેટલી આવશ્યકતા છે તેનો કંઈક અનુભવ થાય છે,

એવા સંજોગોમાં આવેલા વૈષ્ણવો તરફથી પ્રેરણા અને સહાયતાના પરિણામરૂપે અત્રે ચાર વરસ થયાં વાવૂં જનુનાથજી દ્વારા અહીં વૃક્ષ લગાડવાનું કામ ચાલુ થઈ રહ્યું છે અને આશરે ૧૦૦-૧૦૦૦ આજ સુધી વૃક્ષો લાગી ચુક્યાં છે ।

સ્થલ:—તરહટી પૂલરીથી જતીપુરા ગાડ ૧ વૃક્ષ ૩૦૦ માર્ચ ૧॥ (વહારની પરિક્રમા) પૂલરીથી, મુરમીકુળડ માર્ચ ॥૧ વૃક્ષ ૨૦૦ । હરજી કુળડથી ગુલાલકુળડ માર્ચ ૧॥, ૩૧૦ શ્રીગોવર્દન, દાનઘાટી વૃક્ષ ૮૦; શ્રીગોવર્દનથી ચન્દ્રસરોવર સ્તા ૧૦૦.

૫ પ્રમાણે અન્યાર સુધીમાં વૃક્ષો લાગ્યાં છે, હજુ ઘણાં વાકી છે, જો દરેક વૈષ્ણવો પોતાનું, પોતાના પિતા, માતા વિગેરેના નામથી એક એક વૃક્ષ લગાડાવે તો સહજમાં ૬૦૦ વૃક્ષ તૈયાર થઈ જાય અને તરહટીની સેવા થાય, વૃક્ષો લગાડવાનું અને તેમાં વ્રજભૂમિ અને શ્રીગિરિરાજજીની પવિત્ર તરહટીમાં પોતાના તરફથી વૃક્ષ લાગે તેની શીતલ છાયા અને ફલ-ફૂલ હરિ, ગુરુ, વૈષ્ણવો, વ્રજવાસીઓ, પશુ, પંક્તી વિગેરે ઓંગકાર કરે એના જેવી વીંજી સેવા ફરિ હોઈ શકે ? અહીંના વૃક્ષો શાશ્વત્માં ભગવત્સ્વરૂપ કહેલાં છે । શ્લોક:—વૃક્ષે વૃક્ષે વૈષ્ણુધારી પત્રે પત્રે ચતુર્ભુજ । દોહા:—વૃન્દાવનકે વૃક્ષકો મરમ ન જાને કોય । હાર પાન ફલ ફૂલમેં શ્રીગદે રાપે હોય ॥

વૃક્ષોનું સર્વ દરેકને સરલ થાય તે માટે આ પ્રમાણે લેવાય છે:—

શરુઆતમાં રૂપૈયો ૧) વૃક્ષ, સામણું, કાંટા વિગેરેનો ત્યાર વાદ મહીનાનો રૂ. ૧) પ્રમાણે પાળી સિંચાઈ તે પાંચ વર્ષ સુધી લેવાય છે । પોતાનાં સવડ પ્રમાણે એક વર્ષે છ મહીને તે સર્વ સાલ સાલનું મોકલાવવું । નામ લગાવવા રૂ. ૧) [સાર્વેન્બોર્ડના] .

ટિકાના:—શ્રીગિરિરાજ વૃક્ષલાપ્યા સુલ્લ સમાજ, જતીપુરા (પોસ્ટ ગોવર્દન જિલ્લા મથુરા.)

સહાયતા કરવાવાલાનાં નામ:—શ્રીસ્તિત્કાયત શ્રીનાથદ્વારા, શ્રીવ્રજમૂળપ્રમુ તથા વાવાસોદ્વ શ્રીવિહ્વલનાથજી કાંકોલી, શ્રીકૃષ્ણગદ્ગેશ, રામવાસાદ્વ પોરવન્દર, ૨૧, પેટ્ટાદના દાતાર સેઠ રમણભાઈ, આ કાર્યને વારીક રીતે તથાસ કરી પાળીની ભડચળા ડનાલમાં ન પડે ૫ માટે રૂપયા ૪૦૦) માં લોહાની ટાંકી તથા વલ્ડ જોડી તથા ૩૦૦ નાગદ આપ્યા છે ।

श्रीवाचस्पतिपादा निजयन्तान्तमाम् ॥

वर्ष ८.

अंक ८.

शुद्धादित

आधिन

अने

१८८८.

श्रीपुस्तकालय

४५५.

सहितमार्तु.

श्रीअष्टाक्षरमहामंत्रधारणप्रकार ।

अष्टाक्षरमहामंत्र जो है तारे अंग और उपअंगरूप धारण करने मंत्रके स्वरूपकी भावनामें अहर्निश निमग्न रहना आवश्यक है । कारण कि जीवतुं लौकिक वैदिक कदापि बाधा न करे और उनके जालमें न फसे, और निश्चय पुष्टिरसरी प्राप्ति होय, और पुष्टिचिन्तनो यथार्थ ज्ञान तथा अनुमंत्र तबही जीवके हृदयारूढ होय.

अत्र मंत्रके अंग और उपअंगरूप जानने सेनसे प्रकार व्यवहार करे सो लिखे हैं—

प्रथम अंग श्रद्धा है ॥ और याको उप अंग पूर्वसंयोग रसरी जो भासि ताके अभावको दुःख ॥

अत्र याको व्यवहार ॥ जो जीव शरण गयो है सो क्यों गयो है ? (कारण) जब कहे जीवकृ एसो महादुःखको संताप होय और वा नन्तापकी निवृत्ति अपने पुण्यार्थसु नहीं होय नके, तब वा दुःखको तापसु तपायमान होय वाकी निवृत्तिके लिये कह महापुण्यकी शरण जाय है । तो विचाराय करे के मोह कोनसो हृदयरूप ताप तपायमान करे हैं ' जानी निवृत्तिके लिये अपन शरण आयि हे ' जो कदाचित अपन दुःख सोहे नहीं तो शरण जानो वृथा है । और वाकी सिद्धि तथा फलकी ओर कैसे आशा करे ' याही कारणसु अपन कष्ट फटकी प्राप्ति करी होय है । सो हे विद्वद्भ्य अपनी शरणागतिके सिद्ध करनेके लिये महामंत्रके प्रथम अंग रूपसे स्वरूपको चिन्तन करना । वो केमे के-हाय में पुष्टिचिन्तनो जाय हू. भगवान् के श्रीअंगसु मेरी उत्पत्ति है । (वचसा वेदमार्ग हि पुष्टि कायेन निश्चय. ॥ ९ ॥) (पुष्टिप्रवाहमर्यादा) और प्रत्येकी ही उपयोगी मेरी शरीर है । (तस्मिन्नीमा पुष्टिमांशं भिन्ना एव न संशय ॥ भगवत्पुस्तकस्यार्थ तत्पुष्टिर्नान्यथा भवेत् ॥ १२) (पुष्टिप्रवाहमर्यादा) और अहर्निश खीलाहीमें मेरी उद्विग्न और मनकी वृत्ति खीली रहनी चाहिए । सो याको तो अभाव है और अपने स्वरूपको भी ज्ञान नहीं है ॥ तातुं या संसाररूप महासमुद्रमें प्राप्त होय प्रभुसु दूर

होय रहोहूं । सो हे नाथ मैं आपकी शरण हूं ॥ आपहीके संकल्पसु मेरे सर्व मनोरथ सिद्ध होयेंगे ॥ या प्रकार पूर्व संयोगके अभावके पूर्ण दुःखसु तपायमान जो मैं हूं, वह भावना कर प्रभुको चिंतन करने हे प्रभु ! मैं श्रद्धा करके आपकी शरण आयो हूं ॥ सो भगो दुःख और तापनयकी नियुक्ति करवेमें केवल आप ही निश्चय करके सर्वसमर्थ हे । या प्रकारसु या बातकी सतत चिंतन कर प्रभुकी सारन लेनी ये प्रथम अंग श्रद्धा और उपसंग याको भग्न हे ॥

॥ या प्रकार प्रथम अंग और उपसंगकी भावना संपूर्ण भई ॥

भगवात श्रीकृष्ण.

ધર્મપદાર્થ—આ જગત્ કોના આધારે રચિત છે છે? એ બાબતનો વિચાર કરતાં જગત્નો કે (૧) એક પ્રકૃતિ અને (૨) બીજો ધર્મ. પ્રકૃતિ એ જગત્ની રચનાનો પટકાવવા છે. ત્યારે ધર્મ એ જગત્પ્રવાદને શાન્તિપૂર્વકે ચલાવનારી શક્તિ છે. સત્ય, દયા, પરાયણતા, અસ્તેષ, શીઘ્ર, મૈત્રી, આત્મનિમ્ન, બુદ્ધિ તથા ઇન્દ્રિયનિમ્ન આ બધા ધર્મનાં પ્રવેશ છે. આ બધાને પ્રકૃતિ અને ધર્મ-પદાર્થોની જગત્ને કેટલી ખૂબી જરૂર છે, એ બાબત એ બંનેના સ્વરૂપ-વિવેચનથી જ સ્પષ્ટ છે. આ બંનેમાંથી એકને જમ્ જગત્થી નુકસાન કરી નાંખવામાં આવે તો સંસારની સ્વરૂપરક્ષા થીજ અસંભવ છે. અર્થાત્ પ્રકૃતિ અને ધર્મ ઉપર સારાપે જગત્નો ખરાબ છે. ધર્મના વિવેચનમાં મદારાજ મનુ પોતાના ધર્મશાસ્ત્રમાં લખે છે કે—

ન ધૈરાગ્યં નં રાજાસીત્ ન દણ્ડો ન ચ દાષ્ટિકઃ ।

ધર્મેણૈવ પ્રજાઃ સર્વા રક્ષન્તિ સ્મ પરપરમ્ ॥

“સંસારના પ્રારંભમાં ન ક્રોધ રાગ દનુ, ન રાગ દનો, ન ક્રોધ પ્રકારનો, દણ્ડ દનો, ન ક્રોધ દણ્ડ દેનાર દનો. કારણ કે રોક પ્રત ધર્મપૂર્વક ચાલતી હતી.” આ વાક્યાનુસાર વિચિત્ર થાય છે કે પૂર્વકાવમાં ક્રોધ રાગ નહોતો, પણ કેવલ ધર્મના આધારપર જ પ્રજા સારું જીવનવાળા બનીત હતાં હતી હતી. ધર્મના આધારપર જ જીવનવાળા-નિર્વાદની રીતિ સંસાર-રચના પછી પ્રજા સમય સુધી અજાણિત રૂપથી માત્ર રહી હતી. અને ક્રોધ ગર્વમોહની આકરૂપકતા તે વખતે પડી નહતી. પરંતુ જેમ જેમ આધિક સમય વ્યતીત થયો ગયો તેમ તેમ પ્રજાના ચિત્તમાં ક્રોધ ક્રોધ રવાઈ પ્રવેશવા લાગ્યો અને તે રવાઈ જ ધાર્મિક બન્યો, ને શિથિલ કરવા માંડ્યા. જેના પરિણામે એક મનુષ્ય બીજાના અપરાધનું દરખા કરવા લાગ્યો અને બન્યો ગુલામ બતાવતો એક મનુષ્યકલ્પ સમયના લાગ્યો.

રાજ્યસ્થાપના—વિચાર કરવા સમજ થાય છે કે આ પ્રકારની અન્યર રૂપામાં પ્રજા કયે પ્રકારે મુખી રહી શકે? અતઃ તે સમયની પ્રજાએ પરામર્શ કરી એક નિયમ કયો કે એક રાજ્યની સ્થાપના થવી જોઈએ અને તે રાજ્યનો નિર્વાહ જરોર જાય નિદરતા માટે પ્રજાનુમોદિત એક ધાર્મિક રાજા હોવો જોઈએ અને તે રાજાને અધિકાર હોવો જોઈએ કે તે ધર્મવિદ આગવાર આગમાં લોકોને દ્રષ્ટ કરી ધર્મમાર્ગ પર ચલાવે કે જેથી ક્રોધ રાગ મનુષ્ય ક્રોધ નિર્ણયને અવપૂર્વક ગુલામ બનાવી ન શકે. આ નિયમાનુસાર પ્રજાનુમોદિત તથા ધાર્મિક પુરુષને રાજા બનાવવામાં આવ્યો અને હુડોને શાસન કરવા આરમ્ભ કર્યા અધિકાર પણ તેને આપવામાં આવ્યા. અર્થાત્ ધર્મને સુરક્ષિત રાખવા માટે જ રાજાનીનો જન્મ થયો. પ્રાચીન સમયમાં રાજાનીનું આનું સ્વરૂપ તથા ભેદ સમજનારા અને તે પ્રમાણે રાજ કરનારા અનેક રાજાઓ રહ્યા ગયા છે. તેમાં મદારાજ સમગ્રનું નામ પણ ઉલ્લેખનીય છે. મદારાજ મગરો રજામાં પણ ‘પ્રજા મારા માટે છે’ એવી કુલુદિ થઈ નહતી. એનો પ્રજા પુરવો આપતો થયો છે કે મદારાજ સમગ્રનો પુત્ર અસમર્થતા દુષ્ટમંગલે લીધે અસમર્થ બની ગયો હતો અને પ્રજાના જાજોને પાછામાં હુણાદો દત્ત. થોડો સમય તે પ્રજાને રાજકુમાર સમજાવે તેના આભાસરોને મુદન કરી પણ ત્યારે અતિ ધન થઈ ત્યારે સમગ્ર પ્રજાએ મદારાજની પાસે જઈ પ્રાર્થના કરી. પ્રવેશાર પોતાના પૂત્રના પુનિત રૂપને સાંભળીને મદારાજએ પુત્રમોહને દૂર કરી ‘હું પ્રજા કરતાં મારા પુત્ર અધિકારી રહી જશેને શ્રિવ માનતો નથી.’ એમ પ્રજા આજણ જાહેર કરી પોતાના શ્રિવ પુત્રને દેવનિશાની કરી સત્ત્વ રૂપથી રીધી. અને પ્રજાને બનવાની આપતું

અધ્યક્ષશ્રીએ પોતે સોમવંશમાં જન્મ ગ્રસ્ત કન્યાને હોવાથી મંદનું નહીં કિન્તુ દુરતાવેલ જેન-
ખાનામાં વસુદેવજીને ત્યાં પ્રકટ થઈ ગયા. એને પ્રકટ થું ચલાવું હતું કે પોતે ત્રિ: સર્વન પ્રકટજ
છે પણ પોતાની માયાને કમને આપણે નેનાં કાર્ત્તવ્ય કરી રહ્યા: ન દત્તા, એટલે વસુદેવજીએ
સમગ્ર માયાનો પડો દૂર ફેંકી દીધો અને તે જાનને પોતે રેખાવ્યા. અને જેમજ જન્મ ગ્રસ્ત
જાતની અન્દર એ પણ સિદ્ધાન્ત પ્રકટ થયો કે મર્મની ખાતર જેમાં પણ જનું પડે તે ન
વખતે તે રથાનને જેમ ન સમજતાં માફ જન્મસ્થાન સમજ્યું. ત્યારનાં આપ નન્દજીએ પો
ગોકુલ પંથાઈ અને ગોવંશની રક્ષા કરી કે જેના કારણે બારડનું અસ્તિત્વ રિધર છે અને
ત્યારનાં જુસ્મગાર રાગજોનો નાશ કરી તેને રથાને પ્રવર્તિત થી ધર્મભા: રાગજોને નિવૃત્ત
કરી રાજનીતિને ધર્મોદ્ધારિકા બનાવી. રાગજોનો વધ જગજાને એ માટે તદિ: થયો ર્થના કે
ને તેના દુરમન દત્તા પરન્તુ રાજનીતિ અને ધર્મ'જે પ્રગતી રિધતિના મુખ્ય ક્ષાંત છે તેના
તે રાગજોએ દુરપંથાય થયો દત્તા તેથી દેસ અને ધર્મના તેના મુખવાનું કુળે તેના વધ થયો દત્તા.

આ જાગતમાં ભાગવતની ન્હા પૂરવો આપે છે કે અવતારનું કાર્ય સમાપ્ત થતાં જતાં જીવ પ્રાણીનાથી ત્યારે ભગવાને વેદક્રમાં પધારવાની નિયતી કરી ત્યારે આપે કિયાવું કે જે પાંચવર્ષસદાસા જે રાજાઓનો વધ કર્યો છે તે યાદવ વંશ અને તેના મોટા મોટા મુખ્યત્વે ને દેહ પૃથ્વીપર વિદ્યમાન છે અને તેઓ એમ પણ માને છે કે જલ્દાસન્ધાદિ મોટા મોટા યોધાઓનો વધ નો અમેજ કર્યો છે તેથી ભગવાન કૃષ્ણ જાતજ ત્યાજ કર્યો ન્હાના રાજાઓને ને કરી આપણેજ ભારતના સાસક રાજા હાં ન બનીયે? આવો વિચાર ધરાવતા ઉન્નત યાદુઓને નતજવર છોડી આપ્યા જ્યું એ તો અવતારના ઉદ્દેશથી સર્વથા વિપરીત દેવેય. અતઃ આપે -સમસાસા હારા સ્વપંચનો પણ નાથ કરાવી પ્રગતને નિષ્કંટક બનાવી દોષી. આ પ્રસંગથી બહુ થ.પ છે કે ભગવાન કૃષ્ણનો અવતાર કાચુડા કિંવા મૈત્રી મુક્તક થતા નથી પણ મળતીતિ તથા વર્તન ઉદાર મારિત થાય છે. તે અવતાર કોઈ વખતે અંગે કોઈ વખતે દસા, વિનતિ, આવેશ તથા બદ્ધરૂપે થાય છે. અને તેમાં કૃષ્ણાવતાર એ પાંચેયથી વિસતરણ મ્થાં મળેલ પ્રકટ થયા છે. તેથી શીભાગવતમાં કહ્યું કે જ્ઞે ચાતકલ્લઃ પુનઃ છુગ્મલ્લુ મગવાનુ સ્વયમઃ અર્થાત્ કૃષ્ણ એ અવતારી સ્વરૂપ છે કે જેના અન્ય અવતારો થાય છે અને તે જ્યું છે.

श्रीहरिरायजी.

(व्याખ્યાના—માદિત્યમુદાકર ગોસ્વામી શ્રીમદ્નાથભાગવત વી. મહાનાથ મુંબાઇ.)

શ્રીમદ્દરિશાધ્યયનશુનું પ્રાકટ્ય સં. ૧૬૪૭ માં થયું હતું. આપણી ભૂવન ઉપર ૧૨૦૦ વર્ષ વિરામવા તે દરમિયાન તેઓશ્રીએ આશ્વપાદિક સાહિત્ય ધણું જ સંચયું હતું. તેઓશ્રીએ એકદમ નવાએ ગ્રંથ સંખ્યા હોય એમ લખાઈ નથી, પરંતુ પ્રયાસમ. વળુ સંખ્યાના આધારે. તેઓશ્રીએ શુદ્ધીકૃત સિદ્ધાન્ત અને પુષ્ટિભાગેનું સમૂહનું જ્ઞાન વિદ્યાપરોનાં કર્યું છે. આનો રીતે પંચોદાશ સાશ્વપાદિક જ્ઞાનનો ઉદ્દેશ્ય કરનાર પોતેજ હતા. અને સમસ્યોના ભરવનાનથી કરેલાં દત્તાં વગેરે પ્રાસંગિક વિવેચન કરી તેઓશ્રીએ શ્રીદરિશાધ્યયનશુનું 'સન્સૃત્ય નિરખણુષ્ઠક' ના આધારે સમગ્રનું હર્ષ કે જેણે શીવજ્ઞાપીઓના આશ્રય કર્યો નથી, શ્રીમુખે- વિનીહ્વા દર્શન મા શરણુ કરેલ નથી, અને શ્રીસાધિકાનાય શ્રીકૃત્તી જેવા કરી નથી તેના જન્મ આ ભૂતકાળે થયો છે. વગેરે સમગ્રની શ્રીમદ્દરિશાધ્યયનશુનું 'ચિન્તિ' માંથી

તેમની દીનતાનું મારી ગીતે નિરૂપણ કર્યું હતું અને તેનો ભાવ જોતાં તેઓને શ્રીગોવર્ધનધરણીને આશ્વાસન થયેલો જણાય છે. આગળ શ્રીહરિગણપથવિરચિત 'શ્રીમદુગાદકતાત્પર્ય' ઉપર વિવેચન કરતા સમજવ્યું હતું કે શ્રીમદ્ભક્તભાવ્યાર્થને જે જે લીલામધ્યપાત્રી અનુભવે તથા તેનું મનોરથ વર્ણન શ્રીમદુગાદકની અન્દર તેમણે વર્ણવેલું છે. મંદુરાદક એટલે પ્રભુના સાક્ષાત્કારનું વર્ણન જેને તેમ માધુર્યની ગીતમાં હોય ? કારણ કે પ્રભુવરૂપ મસાત્મક છે તે ઉપોદ્ધવાત કેવળ પત્રી 'શ્રીમદુગાદકતાત્પર્ય' નામના અન્ધને જગજ્ઞ ઘણીજ મારી ગીતે સમજાવ્યો હતો.

ત્યાગ્યાદ તેઓશ્રીના જ્યેષ્ઠ ભાગ્યે શ્રીહરિચરણાવલિ મનોદયે પ્રાતંગિક કેટલુક વિવેચન કરી નિત્યાનંદ નામ વેપલેએ નિર્ગેન કેટલા ઝાણી છીએ તે સમજાવ્યું હતું કારણ એવું એક પણ વચન નહિ હોય કે જે શ્રીહરિગણપથના ગિહાપત્રથી અગમ્ય હોય ? શ્રીમદ્ભક્તભાવ્યાર્થએ અપ્રાપ્ય મમુદશી જે માહિત્ય એવું તેમથી જેમ સગ તારાઓ મમુદને તળાવે જઈ સમુદ્રમાંથી મોતીને બહાર એવી લાગે છે તેમ તે અપ્રાપ્ય સમુદ્રમાં કુખડી મારી મોતીરૂપી તાત્પર્ય સાર શ્રીહરિગણપથએ તેમના ન્દાના ન્દાના મન્દોમા પ્રદર્શિત કરેલો છે તેમના અન્ધોમાથી 'અમાર્ગવમુક્તિ દ્વિવિધ નિરૂપણ' નામક અન્ધમાથી 'મુક્તિ' સન્દને માટે જુદા જુદા મતવાળાઓ જુદા જુદા અર્થ કરે છે જેમ જેવાં નુકિત એટલે એવું સમારના જન્મ મગગુમાથી છટવું એજ મુક્તિ એવો કરે છે પણ પુષ્ટિસન્દર્શયારાગા આરી મુક્તિને ઈચ્છતા નથી કારણ કે તેમ થયા બાદ ઉપનિષદમાં દર્શાવ્યા પ્રમાણે જૂનિ ભગવતી દર્શાવે છે તે પ્રમાણે પરબ્રહ્મ, પરમાત્મા ભગવાનના ગ્લાનન્દનો અનુભવ કરનારો જાગી જાય છે અને તે કર્મનો અનુભવ તેજ પરમુક્તિ છે. જન્મ મનુષ્યો દેવ તો ભગવાન માથેનો સજ્જન થતાજ છટી જાય છે અને તેથી આવી મુક્તિને જોઈ માનના લોકને વિચિત્રપણ લાગે છે. વગેરે તે અન્તર્ગદગતા અને મસમ્ય જોષીઓનો દર્શાવતો આવી એવું ભગવતપ્રાપ્તિથી મુક્તિના લક્ષણો જાણ સારી ગીતે સમજાવ્યા હતા નહોતે નહીં થાય કે પાપપુણ્યના લય વિના મુક્ત કેમ થાય તો તે પાપપુણ્યોનો ક્ષય પણ ભગવાન પોતેજ કરે છે. જેમ અન્તર્ગદગતાનો કામ તેમના પ્રભુ પ્રલે જેનાપને માટે પ્રતિજ્ઞાવક થયો તેથી તેમને જે દુઃખ થયું તેવું દુઃખ જીન દોષ પણ પાપોથી થાય નહિ તેવું હતું જેથી તે દુઃખથી તે પાપો ક્ષય થયા અરે પ્રભુના મંગેગતા આનન્દની જે પુણ્ય હતું તેનો પણ ક્ષય થયા વગેરે વિતાગથી સમજાવી પેનાનું વક્તવ્ય પૂર્ણ કર્યું હતું.

શ્રીપુરુષોત્તમજી.

(ગા. શ્રીમદ્ગોપાલકાવ્યનું વ્યાખ્યાન.)

આજના ચરિત્રતાપક શ્રીમદ્પુરુષોત્તમજીના પ્રાકટ્ય વિ. મં. ૧૭૨૪ (ઇ. સ. ૧૬૬૮) માં શ્રીમદ્ગોપાલકાવ્ય થયું હતું આપશ્રીના પિતાજીના નામ શ્રીપીતામ્બરજી હતું અને આપશ્રીના દિક્ષાગુરુનું નામ શ્રીનૃસિંહચંદ્રજી હતું અને વિદ્યાગુરુ પણ તેજ હતા પોતે વ્યાખ્યાનઆમાજ સુરત પંચાયો હતા. અને ત્યાજ વિદ્યાધ્યયન તથા અન્ધવેષનાદિ આપ્યું કર્યું હતું.

તેઓશ્રીએ નવ લાખ શ્લોકો લખી પુષ્ટિમાર્ગના સાહિત્યમાં અત્યધિક વૃદ્ધિ કરી હતી. એમને વિદ્યાવ્યાસજી એટલે બધા હતા - તેઓશ્રી પ્રવાસમાં ૩૨ ગાડાઓ ભરી અન્ધો રાખતા. આનામાં વિરાજતી વખતે પણ સુમેધિન્યાદિ અન્ધોનું મનન ચાલુ રાખતા. તેઓશ્રી નવ લેખગને

સાથ રાખના અને ત્યારે જે સુસ્તુ તે તેમને લખાવના જતા તેઓશ્રી એક જ સાથે ૪૫ શાસ્ત્રીય લેખ લખાવના એવી કુળાચ શુદ્ધિ અને એવું ગભીર પાંડિત્ય હતું.

શ્રીમત્પુરુષોત્તમજીના મમકાલીન શ્રીહરિરામચરણ સાધામેનીચ શ્રીવિદ્યેશ્વરજી થઈ ગયા. શ્રીપુરુષોત્તમજી તદ્વાગજનુ તારણ અને શ્રીદક્ષિણમચરણનું વાર્ધક્ય ઇતિહાસ કરે છે. શ્રીવિદ્યેશ્વર સાથે કદાચ શ્રીપુરુષોત્તમજીની વયના હોય, પરંતુ શ્રીપુરુષોત્તમજીએ નિત્યજીવાપ્રવેશ પ્દાર અને ઇતી વયે ત્યાં? એનો ઇતિહાસ હતું અપૂર્ણ છે. ગોલોકવાસી ભગવાય લતુભાષ પ્રાણપ્રલમ્ભ પાદેષ આલિનુ કથન છે - શ્રીપુરુષોત્તમજી ૪૫ વર્ષ જૂનપર વિરામ્યા અને ગોલોકવાસી નગવદીઃ શ્રીયુત્ત તેનીવાળાનુ કથન છે કે દર્શદિગ્મન્નિર્મલ્યા શ્રીમત્પુરુષોત્તમજીની કાર્યદિન્યા નેઈ તેઓશ્રીની અવન્યા અપ કપરી હીઠ નથી પણ ૧૦૦ વર્ષની દોષી નેઈએ તેઓ પોતાના મનની પુષ્ટિમા પુષ્ટિસુવાના એક બાક 'શ્રીપુરુષોત્તમજી' એ સીઈટના લેખમા જણાવે છે કે -

દિગ્મન્નરી આન્યા પછી શ્રીપુરુષોત્તમજીએ નિયતિવાસ સુગમ કર્થો સુ તમા શ્રીમાય પૂજણના મન્નિરમા વગલગ રાનર્ષી વિગળને શ્રીમાયદૃષ્ટ્યુપ્રભુની નામમંવા અને સ્વરૂપમેવા કરી વિપ્રયોગ મ્મ અનુભવી નિત્યમયોગમ્મ અનુભવવાને માટે સં. ૧૮૧૦ પછી અથવા જનનાય અમરજી શાસ્ત્રીના દેવા પ્રમાણે સ. ૧૮૨૦ પછી જે નિત્ય ગોકુલધામમાથી જૂન ઉપર પધાર્યા હતા તદાજ અને પવતી ગયા. શ્રીપુરુષોત્તમજીને કટનાક સંગન લ. પ્રા પારેષ પ્રસૂતિ ૮૧ વર્ષની વયે પનારી ગયાનું જણાવે છે, પરંતુ તે ઐતિહ પ્રમાણ્યુત વાગતુ નથી ઉક્ત ઐતિહના ચિત્રહમા એ સાર્ત્ત ખ્યાનમા રાખવાની જે પ્રા મન્નનાય શાસ્ત્રીજી માથે પ' મુદ્દ વાટખો માન્નપ્રાપ્તિક પુત્તક સમ્રદ જેવાનો વાસ મન્યો હતો, ત્યારે એક પુત્તક-નિમનવના ભાગવનાથ-મન્નજીની દ્વારશાસ્ત્રની ગણિકા મ્દારી દષ્ટિએ પરી ઉક્ત પુસ્તકથી ત્રણ વાર્તો માગ મજુવામા આરી (૧) એ કાન્ડિ સ. ૧૮૧૦ મા લખાયવી હતી. (૨) એ કાન્ડિકાનુ પુત્તક શ્રીપુરુષોત્તમજીનું હતું કાન્ડુઃ અન્ય ઉપર પુસ્તોત્તવાનામ્ એમ તે અન્યના ન્યામીનુ નામ લખેલુ હતુ. અને (૩) એ કાન્ડિકાએ સામાન્ય રીતે શ્રીમદ્વાપ્રભુજીની કહેવાય છે તેમ નહિ કહ્યા ઉક્ત અન્યના નીકાકાગ શ્રીમત્પુરુષોત્તમજી તેને શ્રીમત્પ્રભુચન્દ્ર શ્રીયુસાઈજીની કહે છે. પશ્ચિને યેન્ય એવી રીતે અન્યમા નદમ અદારેમા ટિપ્પણ કરેલુ હતુ. તે ઉપથી એટલુ મિદ થયુ હતુ કે શ્રીપુરુષોત્તમજીનું સ્વદેશાશ્રનુ ટિપ્પણુ તે ન દોષ તો પણ એ પુત્તક ૧૮૧૦ ન સવનનું દોષથી અને એ પુત્તકના ન્યામી શ્રીપુરુષોત્તમજી દોષાથી સ. ૧૮૧૦ મા શ્રીપુરુષોત્તમજી જૂન ઉપર વિરાજતા હતા એ મિદ્દ થાય છે જનનાય શાસ્ત્રીના અન્ન સમયે તેમને મન્યો હતો મન્નપ્રદાય સમ્મન્ધી વાત કરતા અને ખાસ કરી શ્રીપુરુષોત્તમજી મન્નન્ધી વાર્તો કરતા એમણે કહ્યું કે શ્રીપુરુષોત્તમજીને સં. ૧૮૨૦ મા કાશીના વેણીમ્મ નેડે નાસ્તાર્થ થયો હતો જે વેણીમ્મના વરયો હાલ કાલીમા છે. આ એ વાનો ઉપગન શ્રીપુરુષોત્તમજીની અગ્રાધ આદિત્ય-પ્રવૃત્તિપ્રતિ દષ્ટિ કરના દીર્ઘવનના અનુમાનને પુષ્ટિ મને છે (પુ સુ. પુ ૫ અ ૩, ૫ ૪૬-૫૦)

આવી રીતે એ નત છે ત્યારે એક ત્રીજો કંઠ વાની વય હતી એમ કહે છે. મ્દને તેજીવાગનુ કથન અન્યોના કરતા નીક લાગે છે શ્રીપુરુષોત્તમજીનું જ્ઞવનચરિત્ર અકાટ્ય ઐતિહ પ્રમાણેથી ભરપૂર પ્રકટ થયુ નેઈએ. તેના અભાવમા કદા પણ વિચય નથી થઈ શકતો

આવા હિસેવો સમાજોથી માત્ર ઉત્પાયા એમ ન માની લેવુ પરંતુ શ્રીપુરુષોત્તમજીનું જિવન 'શ્રીપુરુષોત્તમઅન્યાવા' પ્રકટ થવી નેઈએ અને તદ્વાગ શ્રીપુરુષોત્તમજીના અન્યોન

અવરિચન મુદ્રણ અને અનુવાદોત્તુએ પ્રકાશન થતું રહેતું નોંધ્યો. ‘શ્રીપુરુષોત્તમચાંદ્રાણી’ દ્વારા તેમના ગ્રન્થોત્તુ પહેલ-પાલન પણ થતું નોંધ્યો. જે આવા રચનાત્મક કાર્યોને દિવાનું સ્વરૂપ અપાવે તોજ ખરો ઉત્સવ ઉજવ્યો કહેવાય. દશદિગ્ગજિગ્મી શ્રીપુરુષોત્તમજીના દેવગાક ગ્રન્થરત્નોત્તુ રચ્ય નામ આ પ્રમાણે છે:—

(૧) ભાવપ્રકાશ, (૨) સુવર્ણસ્તન, (૩) આપરણમંગ, (૪) મુખોદિતી પ્રકાશ, (૫) પ્રસ્થાન રત્નાકર, (૬) પોદગ્રન્થવિવૃત્તિ, (૭) અવતારવાચવતી. (૧) પ્રહસન, (૨) પંડિતકરભિન્દિપાત્ર, (૩) સંપ્રિયેદવાદ, (૪) આયિર્ભાવ વિરોધાવવાદ, (૫) ખ્યાતિવાદ, (૬) પ્રતિબિંબવાદ, (૭) અન્વે-કારવાદ, (૮) શાદાલુત્વાદિભતિ અપહનવાદ, (૯) છવ્વ્યાપકત્વઅપહનવાદ, (૧૦) છવ્વપ્રતિબિંબત્વ અપહનવાદ, (૧૧) શિર્ષપુરુષનિર્ણયવાદ, (૧૨) તુલસીમાળાધારણવાદ, (૧૩) શંખચક્રધારણવાદ, (૧૪) સૂતિપૂરવવાદ, (૧૫) ખડાવપત્તિવિષ્ણુવાદ, (૧૬) ભાગવતશંકાનિરાસવાદ, (૧૭) ઉપદેશ-શંકાનિરાસવાદ, (૧૮) ભક્તિસુહર્તવાદ, (૧૯) વસ્ત્રસેવાવાદ, (૨૦) બેદાબેદવાદ, (૨૧) અભાવવાદ, (૨૨) આત્મવાદ, (૨૩) સ્વદક્ષિણવાદ, (૨૪) ન્યયશ્રીકૃષ્ણોચ્ચારણવાદ આ સિવાય અન્ય પણ રચનાવાદગ્રન્થો દશે જેનો સમાવેશ વાતાવતીમાં નથી.

(૮) ઉત્સવપ્રતાપ, (૯) દ્રવ્યશુદ્ધિ, (૧૦) ભક્તિદર્શનવિવૃત્તિ, (૧૧) ભક્તિદેવુવિવૃત્તિ, (૧૨) પૂર્વગીર્તાસાહાયવિવૃત્તિ, (૧૩) ન્યાસાદેશવિવૃત્તિ, (૧૪) ગાયત્રીકારિકાવિવૃત્તિ, (૧૫) વક્ષભાષ્ય-વિવરણ, (૧૬) ઉપનિષદસંગ્રહ, (૧૭) માંડવ્યદીપિકા, (૧૮) હાન્દોગ્યદીપિકા, (૧૯) મ્વેતાશ્વત્ત-દીપિકા, (૨૦) અધિકરણમાસા, (૨૧) ભાવપ્રકાશિકા ઈલાદિ.

આવા સમર્થ સાર્વત્રિક વિદ્વાન ગ્રન્થકાર શ્રીપુરુષોત્તમજી મહારાજ પવિત્રમણ્ડલેશ્વર હતા. એમાં સંદેહ નથી. તેમના દિવ્ય જ્ઞાનમાંથી માત્ર સેવારસનો પ્રવાહ અને વિદ્યાદધિ ઉછળી નો છે. આને આપણે હૈમનો ગુણાનુવાદ ગાર્હ ઉત્સવ ઉજવી દૃતાર્થ યજ્ઞને છીએ.

શ્રીપુરુષોત્તમજીના દિવ્ય જ્ઞાન ઉપરથી અમ્હારા ભોક્ષ માટે પ્રભુસેવા સાથે પ્રખરવિદ્યા-વિનોદ અને વિદ્યાધ્યયન સમ્પ્રદાય, પાલન વેષનાદિ કર્તવ્યજ રપટ થાય છે.

(રા. રા. તુનીલાલ પરીખનું વ્યાખ્યાન.)

આને પરમપૂજ્ય દશદિગ્ગજિગ્મી ગોરવાગી શ્રીપુરુષોત્તમજી સતરમા સૈકામાં પધારી તેઓએ જે અનંત આમાર આપણુ પર કર્યો છે અને તેઓ આને પણ સ્વદેશતાશરદારા, નામસંપ્રદાસ, ગ્રન્થોદ્ધાર આપની સમક્ષ ખિરાજ રહેલા છે. તેવા ગોરવાગીશ્રીનો પ્રાદુર્ભાવ આજના રણીઆમણા દિને આ ભૂતકાલ પર થયેલો છે. તેમનાં ચારિત્ર્યથી આને અડી સદી થયાં જાણે હાલ ખિરાગત્તા ગોપ નહિ તેમ રપટ સમગ્રાય છે. તેમનો પ્રાદુર્ભાવ સંવત ૧૭૨૪ ભાદરુકલ એકાદશીએ થયો તેનો આપણે પણ આજનો દિન તે તિથિ હોવાથી ઉત્સવ ઉજવવા એકાં થયા છીએ.

ઉત્સવ દિને સજાઓ ધણી વખત લરી છે છતાં કોઈકેજ સજા પિસગર્ન પડી સજામાં ઉચ્ચાશયેજ મહાપુરુષોના ચારિત્ર્યનું મનન કરતું દર્શો ? ઉત્સવ ઉજવવાનું પ્રયોગન શું ? શામાટે એકાં થવું ? તે વિચારીયે તો દીવા જેવું રપટ છે જે તેમના ચારિત્ર્યમાંથી નેટકું વધુમાં વધુ અને તેટલું ચારિત્ર્ય આપણા જ્ઞાનમાં ઉતારી જે મહાન પુરુષોએ આપણે માટે અસાધ મહેનત લઈ શ્રમ વેડી જે સાહિત્ય આપેલ છે, તેનો ઉપયોગ કરી તેમના ધાણમાંથી મુક્ત થવુંજ નોંધ્યો.

આ ચારિત્ર્યોનું અવણ કરી આપણી છત્રાસા પ્રદીપ સાથે તે માટે આપણે એકાં થયા છીએ. જે તે છત્રાસાથી ન્યોત પ્રકરે નહિ તો આ સર્વ વ્યર્થજ જાય. હું આજા રાખું છું જે આને આપની સમક્ષ ગોરવાગી શ્રીગુરુનાથરાજ આપણે અને આશીષ દરિયકરજીએ તેમની વિદ્વા,

હવે તેમણે અગાધ શ્રમ લઇ જે સાહિત્ય આપણને આપ્યું તે શું, વૃથા? શું આપણે ફરજ તે લાલુવા લાલુવાની નથી. આજથી ૫૦-૬૦ વર્ષ પહેલાંના આપણા સંપ્રદાય માટેના વિચારો ત્યારે વાંચવામાં આવે છે ત્યારે રૂબે રૂબે ફરકે છે કે ક્યાં સાહિત્યસમુદાય અને ક્યાં નેચોની તે માટેની અજ્ઞાનતા. હવે પ્રભુકૃપાથી આ સમયે પછી ઘણા ખરા ગ્રંથો છાપાઈ ગયાં પડ્યા છે તો શું આપણે તે લાલ ન લઈ શકીએ? કદાચ કોઈ કહેશે જે તે માટે પ્રત્યેક ક્યાં છે? ક્યાં લાલુવા બંધ છે? અરુ. જાહેર રીતે દાસ પુરેપુરો પ્રત્યેક ન હોય તેથી શું ખાનગી રીતે તો તે લાલુવા, પૂરેપૂરો પ્રત્યેક છે. જેમ અર્જુન સિંધ્વસ્તેઈ સાથે એમ કહીને બે હાથ બેડી શ્રીકૃષ્ણને સરણે ગયા તો તેમને ગીતામૃત અવશ્ય મળ્યું તો આપણે પણ ગાદ નિદાને ત્યાગ કરી અવશ્ય તે લગ્નનાનંદ-રસાનંદ રૂપી અમૃત મેળવવા પ્રયત્ન કરવો જોઈએ. મારી પોતાની ખાતરી છે કે જે જીવંતના આમ અને પ્રેમ હોય તો શ્રીમદ્દાપ્રભુજી જરૂરે તેવી સર્વ સમગ્ર કરી આપે છે તેમાં જરા પણ શંક નથી અને મને આજે પણ શ્રીસુખે વિનીજી તેમના વંશજદ્વારા તેમના વચનામૃતથી સાંભળવાનું ભાગ્ય પ્રાપ્ત થયું છે-ને જે સર્વે પણ નદિ પાનેસ તે કાર્ય પ્રત્યક્ષ અનુભવું છું, હવે એવા જમાનો નથી જે આપણું ભાગ્ય આંધળાની માફક દમણે અવશોક્ત કરે. હવે વિચારશક્તિના જમાનો છે તેથી આપણી પ્રથમ ફરજ સિદ્ધાન્તો લાલુવાની છે જે બાળકોને તે નાનપણથી નહિ જણાવાશે, અને તેમની શંકાએ દૂર નહિ કરીએ તો તેઓ નારિતક યશે તે હોય આપણો પોતાનો જ છે. બાળકોનો નથી. આલકને ઉચ્ચે પાસ બેસવા ન દેવો હોય, સદ્યુજી બનાવવા હોય તો અવશ્ય આપણે જ સિદ્ધાન્તો લાલુવા જોઈએ. રાજ પ્રભુ તેમ કરવાને આપણ સર્વે શુદ્ધ હૃદયપૂર્વક સુદ્ધિ અર્પે અને શ્રીમદ્દાપ્રભુજી કૃપા કરી અનુગ્રહ કરી સર્વ સમગ્રે પૂર્ણ કરે એવું ઇચ્છી આજનું વ્યાખ્યાન સમાપ્ત કરું છું.

વડવાણમાં ભગવદીય ગોપાલદાસજીનું ભાષણ.

પ્રત્યેક નેપથ્યો, આજે આપણી આ સભા આજના ઉત્સવનાયક દશદિગંતવિજયી પંડિત પુરંદર શ્રીમદ્ગોસ્વામી શ્રીપુરુષોત્તમજી મહારાજશ્રીના જન્મમહોત્સવ નિમિત્તે મળી છે, અને સાથે સાથે કવિચર ભક્તશિરોમણિ શ્રીદયારામભાઈના પણ જન્મદિન નિમિત્તે છે. શ્રીપુરુષોત્તમજી મહારાજ શ્રીમદ્વલ્લભાચાર્યજીના વંશમાં સાતમા પુરુષ છે. શ્રીમદ્વિદ્યનાથજી (શ્રીજીસાધજી) ના તૃતીય કુમાર શ્રીભાગ્યકૃષ્ણજીના વંશમાં શ્રીપીતામ્બજી મહારાજના આ શ્રીપુરુષોત્તમજી છે. આ મહાન આચાર્યશ્રીનું પ્રાકટ્ય ગોકુલમાં સંવત ૧૭૨૪માં થયું હતું. આ આચાર્યશ્રીએ (શ્રીપુરુષોત્તમજી) એ નાની ઉંમરમાં વેદ વેદાન્ત સ્મૃતિઓ સારાં સારાં અભ્યાસ કર્યો હતો અને પોતાની હાલક ઉંમર થતાં તેઓશ્રીની મજબૂતી સમર્થ પંડિતોમાં થતી હતી. આ આચાર્યશ્રીને પોતાના આલયુર શ્રીમદ્વલ્લભાચાર્યજી અને તેમના રમેલા ગ્રંથો ઉપર ઘણો જ ક્રોધ હતો. આ આચાર્યશ્રી વિંઝે એવું પણ સાંભળ્યું છે જે તેઓશ્રી બાદવાવરધમાં હતા. તેઓશ્રીને પ્રથમ રાજોનું જ્ઞાન ન હતું. ત્યારે તેમના પિતાશ્રી પરદેશ પધાર્યા ત્યારે કોઈ પંડિત આ શ્રીપુરુષોત્તમજી સાથે વાદ કરવા માટે આવ્યો. ત્યારે પોતે શ્રીસર્વોત્તમજીનો પાઠ કરી શ્રીમદ્દાપ્રભુજીનું સ્મરણ કરી પંડિત સાથે વાદ કરવા નેકા અને તેમાં પંડિતને નિરાસર કરી પોતે વિજયી બન્યા. ત્યાર પછી શ્રીમદ્દાપ્રભુજીએ તેમને દસન આપી-પોતાના ગ્રંથોમાં ગ્રંથો વાંચવા જણાવ્યું અને તે ગ્રંથો આપણીને હૃદયારૂઢ થયા અને શ્રીપુરુષોત્તમજી પંડિતાને પાવ યજ્ઞ આપણીએ નિર્ભય સાદિ ગ્રંથોમાં ટિપ્પણ વગેરે લખીને મૂળ ગ્રંથોમાં ભગી ગણાવેલા અન્ય લેખાનું પૃથક્કરણ કરી બતાવ્યું હતું.

આ ઠામ એમણે ધણી બારીકે દ્રષ્ટિ અને તીવ્ર યુદ્ધિથી કરેલું છે. આ શુભપરિણામને લીધે શ્રીમદ્વાપ્તુજીના ગ્રંથોમાં વધારો થઈ રાખ્યો નથી અને હવે પછી વધારો થવાનો સંભવ પણ નથી. કારણ કે અમુક ગ્રંથ શ્રીમદ્વાપ્તુજીના લખેલ છે કે નહીં એવી શંકા થાય ત્યારે તેનું નિરાકરણ એ ગ્રંથ ઉપર શ્રીપુરુષોત્તમજીની દીકા છે કે નહીં એ પ્રશ્નના નિરાકરણથી થાય છે. જો આ કાર્ય દશદિગંતવિજયી પંડિતપુરંદર શ્રીપુરુષોત્તમજી મહારાજશ્રીએ કર્યું ન હોત તો આપણુ વૈષ્ણવ ભારે મુશ્કેલીમાં આવી પડત. આચાર્યશ્રી વિદ્વાન કે પંડિત હતા એટલુંજ નહિ, પણ શ્રીમદ્વાપ્તુજીની માફક એમને સેવામાં પણ ધણીજ રસ હોતો. પોતા મંગળાથી સેવામાં પ્રવેશ કરતા અને શુંગાર આરતી સુધી રહેતા. વૈષ્ણવોમાં ભક્તિ અને જ્ઞાનનો વધારો થાય તેટલા માટે પોતે નિત્ય કથા કરતા. આ આચાર્યશ્રી ઉત્તમ વક્તા અને સમર્થ લેખક હતા. આ આચાર્યશ્રીના વિવિધ દશ દિશામાં થયે હોય અને પોતે ખનાવેલા ગ્રંથોમાં નવવક્ત્ર શ્લોક થાય છે. સુરતમાં મોટી આગના સમયમાં થયેા ગ્રંથો બળી ગયા તેથી એમના અધ્યયન સચો હાથ લાગતા નથી. આ ધર્મધુરંધર આચાર્યશ્રીએ ચાર ધામની યાત્રા કરી અને કે પંડિતો સાથે વાદ કરી તેમાં પોતે વિજય મેળવ્યો હતો. આ આચાર્યશ્રી આપણુ આ પુષ્ટિ માર્ગમાં બીજા દિગ્વિજયી પુરુષ થઈ ગયા છે અને આ મહાન આચાર્યશ્રીએ પોતાની ૬૦ વર્ષની વયે લીલાપ્રવેશ કર્યો છે. વૈષ્ણવો આ દુરંધર આચાર્યશ્રીના નક્ષત્ર છે. આ આચાર્યશ્રી વિશેષ જ્ઞાનખાણ આપવાની જરૂર નહીં હોય. આજે હું મારી આપ યુદ્ધિઅનુસાર શ્રીસુરદેવની કૃપાપણે આપ સમક્ષ કાંઈ મોટી રહ્યો હતો. તે પણ આ આચાર્યશ્રીની કૃપાથીજ મોટો છું.

શ્રીતિલકાચત.

(૧)

શ્રીગોવર્ધનલાલ ! કહ્યાં જઇને નિવરણ કરો ? વૈષ્ણવજન આધાર, શ્રીહારતણા ધામી !

(૨)

કરણના અંદાર, કરણ કરી દેવી પર; હોડી આ મંસાર, વિમસો હો કઈ સદિમાં..

(૩)

મુક્તમને કાન, હોડ્યાં શ્રીહના ચરણ; પાછા નાગ્યા આપ, શ્રી કરા સાન્નિધ્યમાં..

(૪)

હૃદય દે છે આજ, સમાચાર અવજો સહી; ક્યાં વિમસો મહારાજ ? કલો દા, કલો દા આપથી.

(૫)

તેવ્યા આસા તાર, હોડ્યા બન્ધન જગતનો; નિવરણ શ્રીની પાસ, લીલા કરી ગયા ભૂતને.

(૬)

શ્રીગિરિધરના આસ, 'ગિરિધર' કરી અંબલિ; સ્વીકારજો શિરતાન, અદાંતસિ 'સચ્ચિદ્ર' તમી..

“સચ્ચિદ્ર”

કનકાભિષેકનો અનુભવ.

શુદ્ધદેવ ભક્તિમાર્ગમાં આડમા વર્ગના પાંચમા અંકમાં કનકાભિષેકનો શ્રેષ્ઠ શાસ્ત્રીય જટાશંકરભાઈનો વાંચ્યો. વાંચી તે સંબંધમાં મને મારો અનુભવ પ્રકટ કરવાનું મન થઈ ગયું. જટાશંકરભાઈને કનકાભિષેક સંબંધમાં તપાસ કરવાનું કાર્ય સોંપનાર અને મને સાક્ષાત્ કનકાભિષેકનાં દર્શન કરાવનાર એકજ અવતારી પુરુષ છે, તે તો મારો આ અનુભવ વાંચ્યા પછી વાચક અંતરમાં જાતેજ વિચારીને તેમાંથી શોધી શકે. ભૌતિક દૃષ્ટિએ કાંમ કરાવનાર લુદો હોય ને આંતરદાક્ષિ પ્રેરી કામ કરાવનાર લુદો હોય એ વસ્તુ અહીં ખૂબ સમજાવવા જેવી છે. મુદા-કંતના ઝડા (કનકાભિષેક સંબંધના શેષના) પેર પર જે પદ આપ્યું છે તે પદની આરમી અને તેરમી વૃક્ક ભવિષ્ય વાણીની છે, તેની સાથે મારા અનુભવનો સંબંધ છે. મારે અહીં આપું છું તે એક નૂક અહીં હું ફરીથી આપું છું. નરસિંહ મહેતા જેમ શ્રીપુષ્ટિમાર્ગના વર્ણના છે ને “શ્રીવલ્લભ વિદ્ય ભક્તે પ્રકટીને પુષ્ટિમાર્ગ ને વિદ્ય કરશે” ને ફરી નિરૂપાધન તરીકે આપ ઉદ્ધાર કરશે; એવું એક દર્શનમાં વર્તે છે. આજ પ્રમાણે આ લકુડિદાસ દાસના પ્રાકટ્યના આરમી વર્ષ પરના વચ્ચા છે એમ કહીશું તો જોડું નદિ કહેવાય. આ લકુડિદાસ કોણ હતા તે સંબંધી અત્યારે ખુલાસો આપવામાં નદિ આવે. કારણ કે શેષ અહીં કાંઈક થઈ ગયું, માટે મને વાત પર આવીએ.

દેવદીપ્તસો વલ્લભ જન્મે મેરે અંશ કહાધો:

તબ દિર શ્રીહરિ ચમુનદૂપતે આપ પ્રકટ હોઈ ગયો, તુમ પ્રભુ ૧૨ શ્રીગુરુકી ભવિષ્ય આનિ મુનિ સકલ શિષ્ય મુખ પાવો;
કાસ લકુરિ પદરજ શિર ધરી શ્રીગુરુકે મુન ગાયો.

પ્રભુ તુમ વલ્લભનામ ધરાયો. ૧૩.

ઉપરની વૃક્કમાં “દેવદીપ્તસો વલ્લભ જન્મે” એવું જે કાવ્યમાં છે તેનો ભાવ એવો છે કે નિત્યજીવાનુષ્ઠ પંચમણીકાધીશ્વર જાપાશ્રી દેવદીપ્તદેવાચાર્યશ્રી તે છે, આપશ્રીનું નામ “શ્રીદેવદીપ્ત” છે. આપશ્રીના કુમાર વિદ્યાનુમાન ચતુર્થપંચમણીકાધીશ્વર શ્રી૧૦૮ શ્રીવલ્લભાચાર્યજી ને “વલ્લભ જન્મે” આ વચનનો ભાવ છે. ભવિષ્ય વાણીનું કથન આ પ્રમાણે હોવાથી એ સાવચીતા યમુનાદૂપમાંથી નીકળેલી વસ્તુઓ તેમજ પ્રત્યુંત્તરવર અન્ય કોઈ આચાર્યશ્રી પાસે ન જતાં પોતાની પાસે પધાર્યું છે. એ દરદર મળ શ્રીનંદાપ્રમુખને મીનાશ્રી રાણીએ પુટ કરવા એવવા આપેલું તે છે, ને એજ શ્રીવલ્લભાચાર્યજીનું આ પ્રાકટ્ય હોવાથી ભવિષ્યવાણી પ્રમાણે પોતાને માથે પધાર્યું છે ને વસ્તુઓ પણ પોતાની પાસે આવી છે.

એ રામપ્રપન્નાચાર્યજી અથવા રાજેન્દ્રનાથજી કોણ છે, તે ખુલાસો અત્યારે નદિ આપવામાં આવે, પણ તેમની આરમી આ વસ્તુઓ તેમજ કુલો પ્રકટ થયો તેનું કારણ પાંચ પ્રાચીન સંબંધ છે. જે તાડપત્રોનો નાશ કર્યો, તેનું કારણ પણ પ્રાચીન છે. જેમણે તાડપત્રોનો નાશ કર્યો તેમના (જેને) કાથે સંપ્રદાયના ઘણા ગ્રંથોનો નામ પૂર્વના જન્મોમાં થયો છે.

આની બીજી વૃક્કમાં (તેરમીનાં) “શ્રીગુરુકી ભવિષ્ય આનિ” એ શબ્દો લખ્યા છે તેનું કારણ એ છે કે શ્રીમદ્વપ્રમુખજી એનેજોનો ઉપદેવ સમતાં ફરી તે વસ્તુઓની શોધ મારે ૭ મારસ પ્રયત્ન કરવા છતાં દાવની માફક ખુલેજાની ગાનની શુદ્ધિ નદિ હોવાથી તે જગ્યા સાવચીતી યમુનાદૂપની જરી નંદિ મેથી તે અમું પોતાના પુત્ર પ્રાકટ્ય સમયે પ્રકટ થશે એવી એમાં રાષ્ટ્ર

મંત્રા છે, એ તેજ પ્રાકટ્ય ચતુર્થપંચમપીઠધીશ્વર શ્રી ગો. શ્રી૧૦૮ શ્રીવજ્રભાગ્યાઈ મંદા-
રાશ્રી છે. આપશ્રી આપ સંસ્કૃતિના મહાન રક્ષક છે, ને તે કાર્ય લલિત્યમાં પણ આપશ્રીનેજ
યોરે પ્રમુખે ધર્યું છે. આપશ્રીની રક્ષિત્વો તે કામ કરીજ નહી છે. આમાં જે સંસ્કૃત સિધિનું
'વિચારત્તમ સમર્પયેત' સુધીનું અખાલુ છે, તે શ્રીમદાપ્રભુજી પરિશ્રમમાં સાથે રાખતા કરણ્ય
પોતે વિદ્યાનગરમાં (પિત્રવનગરમાં) સર્વ ધર્મો પર સિધ્ધિવત્ય કરી મુદાકૃત ભક્તિમાર્ગનું
આપના કર્યું, ને તેથી કનકાલિંગક સાથે અન્ય અલિંગક યથા તેના પુરાણ તરીકે સુવરાજક્રમાર
પ્રયત્નસેનાનિ (ભવિષ્યની કૃષ્ણદેવ રાજાની) સહી સાથેનું સર્ટિફિકેટ છે. તે સમયે સર્વજ ખખર
જાણનારાં દાસના જેવા સાધનો નહિ હોવાથી તે સાથે રાખવાથી વારંવાર કાઢને સિધ્ધિવત્યની
વાતો આપવાની જરૂર ન પડે, માટે સાથે રાખવામાં આવતું. તે ઉપરવને કીલે કૃપનાં પવરાત્રી
પેલું ને પોતે ઉપરવ સમતાં લઈ જવાનો નિર્ણય કરેલાં પણ લલિત્યના પુનઃ પ્રાકટ્યના પુરાણ
પર તે જગાં પ્રમુખે ન દેખારી ને તે વસ્તુ સ્પષ્ટ આપણે આપને અનુભવી રંગા છીએ.

સુવરાજકે પદેમાં ને આજે પણ સુદની તારીખો આપવા માટે મોટા લડકરી દોડા પર
આપના કરવામાં આવે છે. તેમ સુવરાજ કૃષ્ણદેવને સેનાનિ તરીકે રથાપન કરવામાં આવ્યા દગ્ગ
પે પોતાના પિતા વીર રસિદના સદ્ગત યથા પડી ગાદી પર આવ્યા. વીરનસિદ તે ધાર્મિક-
કેળવના વાદવિવાદને સમયે તથા કનકાલિંગક સમયે સખ્ત બીમાર દગ્ગ, તેથી સુવરાજ કૃષ્ણ-
વને હાથે કનકાલિંગક રનાન કરાવ્યું, પણ એથી વીરનસિદને સતોષ ન થયો તેથી નેમજો.
પીજે દિવસે પોતાની આચારના મીનાકીને હાથે રજતનનાન (રજત અલિંગક) કરાવ્યું. એ
તેમ પિત્રવના પુરાણ માટે સાતેય દિવસ જુદી જુદી વસ્તુઓથી આલિંગક રનાન કરાવ્યું. જેમ
જાન્યે સાત દિવસ શિરિરાજ ધારણ કર્યો, તે માત્ર દિવસ નહિ પણ આવાગિયાના દિવસ
પાત વાર છે તે નિત્ય છે તેથી ભાવ એવો છે કે સાત દિવસ એટલે સાત વાર જેમ નિત્ય છે
તેમ પ્રભુ સાતેય વારે નિત્ય શિરિરાજ ધારણ કરે છે. તેથી શિરિરાજવરણની લીલા નિત્ય હોવાથી
આપણે શ્રીશિરિરાજવરણ કી જય હમેશી બોલાવે છીએ. આમ કનકાલિંગક સાથે રજત અલિ-
ક વગેરે સાથે સાત અલિંગક કરાવ્યા નિ શ્રીમદાપ્રભુજીના નિત્ય પિત્રવ માટેનું નિમાન છે.
તેકાપ્રાપ્તિ જય કરાવે છે.

મારો સાદ્ગત અનુભવ ખાસ નજરે લેએલો.

આ કનકાલિંગક મેં નજરે લેયો છે. તે હું કુંકાલુમ. અહીં જેટલું જરૂરી છે
તેહું આપું છું.

શિરાજમાન ચતુર્થપંચમપીઠધીશ્વર શ્રી ગો. શ્રી૧૦૮ શ્રીવજ્રભાગ્યાઈ કે જે શ્રીમદા-
પ્રભુજી પુનઃ પ્રાકટ્ય છે તેઓશ્રીનો અપરાધ જ. કે નો પ્રાકટ્યદિવસ હોય. તે મનોદય કરવા
પોતાની પાસે ગયો. આગતે દિવસે રથયાત દત્તી. તેથી રથયાગના ઉત્સવયો પવરાત્રી આપશ્રી ગાદીપર
મરાવ્યા. આ વખતે આપશ્રીને હું પોણા કરને હતા, આપશ્રીએ પોતાના ચરણરવિંદા અવરમાં તકોયે
તે માગે તરફ લાંબા કર્યા એટલે હું ચરણરવિંદાના ચિન્દ નિરખવા શરૂએ. ચિન્દન મને જ્યાં
પ્રિયમંઈકના ચરણરવિંદાનોજ મને દર્શન થયાં. પડી પોતાની પોતીમાં મારી દટ્ટિ ગઈ. આ
ખતે આપશ્રીના ચરણરવિંદાની પામીયાં મને મ્હો સમાન તેજ દેખાડું. આ તેજ મારી દટ્ટિમા
સહુમાં) જેમ સર્વનાં કિરણ પડે તેમ વચું. મને મારી દટ્ટિ તુમ્હાં બાદગાડી લાગી. પોતાનું
અંત નિરણું છું. તો સાદ્ગત શ્રીમદાપ્રભુજીનાં મને દર્શન થયાં. મીઠાંજ તડન કૃષ્ણ-કૃષ્ણ દસો-
મં. આપ્યું. પીસ મિનીટ આ દર્શન થયાં. પડી પાજું શ્રીમુકાદેવ દરશ નિરખવામાં આવ્યું.

આ પછી થોડી વાર પછી આપશીએ મને શ્રીગોકુલેશ્વરસ્વરૂપે દર્શન આપ્યાં ને હિરે નજી શ્રીહરિપદ સાક્ષાત્ ગિરાન્યા હોય તેવાં દર્શન થયાં. આમ સર્વા કથાકમાં આ બધું બની ગયું. આપશીના શ્રીઅંગનો વર્ણ (૨૦) સ્થાપ છે, તે વર્ણ શ્રીમદ્દાપ્રભુજીના શ્રીઅંગનો વર્ણ છે, છે શ્રીઅંગનો દેખાવ ને અંગ સાક્ષાત્ શ્રીગુણાંક છે. પછી રાતના ડું સુતેસો ત્યાં આની આ દેકાણા વગરની દશામાં મને સાક્ષાત્ શ્રીમદ્દાપ્રભુજીની ઝાંખી થઈ તેમાં આપશી નજી પાંચ વર્ણના ગિરાન્યા છે ને પાસે લક્ષ્મણભટ્ટ શ્રીગીતાજીનો અગ્રદમો અધ્યાય વાંચે છે ને સંસ્કૃતમાં તેના અર્થનો લાવ વિચારે છે, તેમાં “સર્વધર્મોન્નપ્રિયઃ સ્વયમ્ ભગવત્ સર્વ પાપેભ્યો મોક્ષયિષ્યામિ મા શુચઃ” આ શ્લોક વિચારતાં શ્રીમદ્દાપ્રભુજી લક્ષ્મણભટ્ટને સંસ્કૃત ટીકા સમજતાં બૂલ ખતાવી ન્યાસાદેશ અર્થ સમજાવે છે. લક્ષ્મણભટ્ટ સંસ્કૃતમાં સમર્થ વિકાસ હતા. આ દરમિયાન મેં જોતી મીનિમાની શીત્રમની પેટેજ નેધું અને સાંભળ્યું ને શ્રીમદ્દાપ્રભુજીએ આ શ્લોક સમજાવ્યો તે પછી મેં પાસે બેસીને નજીને સાંભળ્યો.

પછી એકલા કનકભિરેકેની મને ઝાંખી થઈ તેમાં મેં એક મોટી સુવર્ણની કથરોદા મોઢાં આ કથરોદામાં કોઈ કોઈ જગાએ હીરા વગેરે નંગ જડેલાં હતાં, તેની અંદર મેં સુવર્ણના ચાર હોટા પણ સુંદર હાથી જોયા. આ ચાર હાથી પર ચાર સુવર્ણની પુતળીઓ હતી, તે દરેક પુતળીને ચાર ચાર લાથ હતા. બે લાથમાં કનકભિરેકેના સિંહાસનના પાયા હતા ને બીજા બે લાથ વિજેતાને જોડેલા હતા. સિંહાસનના પાયા પુતળીઓના લાથમાં હોઈ તે સિંહાસનપર શ્રીમદ્દાપ્રભુજી ગિરાજેલા હતા. આ શ્રીની કિરોરઅવરચા હોઈ સુંદરતાનો પાર નહોતો. કૃષ્ણદેવને મેં અંતર પ્રુક્ષેદાદિથી અભ્યંગ કરાવતાં નિરૂપ્યા, ને પછી સુવર્ણ કલશથી દેસરનાન કરાવ્યું. આભુજાણુ “શ્રીરત્નમાચાર્ય હ મહારાજકી જય” એવા યોગ પ્રકૃષ્ટિત ચિત્તે સર્વે ખૂબ ઉપજાઈથી બોક્ષતાં સંભળાતા હતા. શ્રીમદ્દાપ્રભુજીના સુંદર દરશનમાં માઈ ચિત્ત પ્રવેશી જંબાધી કનકાસન અને અભ્યંગ દેનાન કરાવનાર સિવાય બીજું ન જોવાયું. પણ જયધોષ ખૂબ સંભળાતા. બીજા અભિરેક મેં નથી જોયા, પણ ઉપરથી રજત અભિરેકની વાત આવી ત્યારે મને તે સમયની વિશેષ સ્મૃતિ આવી. અને દરખોડા દેટલોક ઉદ્ધવ પણ પડ્યો. આ બાબત મેં મારા એક બે મુરખશ્રી વેંચુલોને જારેક માસ પર ખાનગી રીતે લખી હતી. અને આજે ત્યારે કનકભિરેકને માટે ખૂબ ચર્ચા બુદ્ધિપાટે થઈ, પણ તેથી કંઈ તેનો અર્થ આવે નહિ એટલે મેં માને ધારણ કર્યું પણ ત્યારે સાવકીના યમુનકુળનો સંસ્કૃત લેખ ને આ ભવિષ્યકીર્તન વાંચ્યું એટલે મને તે સંબંધી સ્પષ્ટ પ્રકાસો કરવાની આકાંક્ષા થઈ. કનકભિરેક થવાની વાત માનનારાને તો કદી શંકા થવાનીજ નથી, પણ નથી માનનારા તે તો નજરે દેખશે તો પણ નંદિજ માને. માટે જે વસ્તુ સાચ છે તેને પુરાવાની જરૂર નથી. અને અનુભવની વાતને પુરાવાની શી જરૂર છે? મિતરી ગણી છે પછી તેને ચાખ્યા પછી તેને માટે અંધોમાં ગણી છે એવું લખ્યું હોય કે ન લખ્યું હોય પણ ચાખનાર તો તે જાણે છે કે મિતરી ગણી છે. એક વાર એક વેંચુલે શ્રીવશ્ય (મોયા લાલજી શ્રીગુણાંકજીના) ને કહ્યું કે રાજ, શ્રીમદ્દાપ્રભુજીને શ્રીગુણાંકજી શ્રીકૃષ્ણ છે એવું પ્રાચીન ગ્રંથોમાં લખાણ છે. આ વખતે શ્રીગોકુલનાથજીએ કહ્યું કે લખાણ પ્રાચીન ગ્રંથોનું હોય કે ન હોય પણ જે વાતો નજરના અનુભવની છે, તેને પ્રમાણની શી જરૂર છે?

શ્રીમદ્દાપ્રભુજી નિદ્રિતા એ વાતો વિચાળ છે કે એક વાર આખું જગત તે માન્ય કરશે. અનુભવમય તે વસ્તુ છે. માટે તકથી અધિકૃત બાબતો વિચારી તે એક મદાન અનુભવ છે. શ્રદ્ધાને અનુભવ એજ એજ સાબન અધિકૃત બાબતો વાંચી રાકે છે.

આ ભવિષ્ય વાણીનું કીર્તન આ સંપ્રદાયના અનુયાયીનું મોઝેલું નથી. પણ મદાન્ત અમીર-પ્રસાદજી અન્ય સંપ્રદાયના છે, એટલે તે બાજતમાં કોઈ પણ પ્રકારની શંકા ઉદ્ભવવાને પણ રથાન નથી. પ્રભુની સાર્વત્રિક શક્તિ સર્વત્ર આ નિશ્ચયો ખેલી રહી છે ને તેથી શ્રીમદાપ્રભુજી જગતને સત્ય અનુભવાવે છે. એ સિદ્ધાંત ત્રિકાલ્યાપત ધાર્મિક ગ્રંથાદિકને પૂર્ણપરના સંખ્યે તપાસતાં સ્પષ્ટ જણાય છે, પણ જેના હૃદયમાં કૃષ્ણ કરીને શ્રીમદાપ્રભુજી ઉતરે તેનેજ આ વસ્તુ અનુભવમાં આવે છે.

દીનકંકર.

[આવા અતૈદિક અનુભવો આરોપનાર દીનકંકરે મારા પર નોટીસ મોકલાવી છે અને કોટમાં મારી સામે ફોજદારી પગલાં બરવાલી દમગટી આપી છે. આ વસ્તુ પ્રભુનું શ્રીધારેશ્વર નહિ તો બીજું શું ? કદાચ શ્રીમદાપ્રભુજીએ આજ્ઞા આપી હશે ! તારી.]

જનતા જનાર્દન !

(શ્રી. ધીરજસાલ પરમાર્દ શેઠ-અનૂપ મુંબઈ)

જનતાશ્રી જનાર્દન સાચા, તે 'જનદેવ' ને પાવ નમું;
'એક પ્રભુનાં બાજ સર્વ છે' એ સમભાવના ચિત્ત ધરું.
વસે-દેવ જે મંદિરમાં, તે અખિત્ર વિશ્વમાં દેખી રહું;
સર્વશ્રુતસ્થિત પ્રભુ સેષીને જીવન માદરૂં ધન્ય કરું.
દેખી ન શકું, પ્રભુ ! દુઃખ દુઃખીયાનાં, દુઃખ ટાળવા શક્તિ ચરું;
તારાં બાજ, ને મુજ બન્ધુ સમ, વિશ્વજનોનું ગુણ ચરું.
દુઃખ દશે દુઃખ તપોનાં તો મુક્તિનો નવ શોખ ધરું;
જનસેવા અને યત્નિચિત, તે ધૃત-પર મોકળ બાજ ખરું.

૨. 'સેવા ધર્મ પરમ મહન છે' સંત જનો એમ પાણી વહે;
મહેન માર્ગને પચિક ચાલા એ પ્રભુ તું મુજને બળ દે !
તુજ કૃપાથી, કંટક-વેથો-માર્ગ, પુષ્પ-મય બની રહે;
તેમ છતાં યદિ સૂએ જ કંટક તોથે તે સુખરૂપ ખરે !

પ્રજાજન્ય મુગ્ધ પ્રસારે. ચંદન એવું મુગ્ધ ધરું;
જળી આપ, ને તિમિર નિવારે પરાપકારી રીત ખરું !
'મુગ્ધ ધરતાં ચુટશે લોકો' કહી, ન ખોસે મુ પુષ્પ ખરે !
'અનૂપ' કહે જે જીવે પરાયે હોને મુક્તિ પરજ પડે !

[આ કાવ્યના લેખક શ્રી. ધીરજસાલ પા. શેઠ. 'અનૂપ' ઉદશી (શ્રીસ્વામીનારાયણ) સંપ્રદાયના એક આદર્શવાદી અને સુસંસ્કારી યુવક છે. તેમણે પોતાના જીવનમાં ધાર્મિકભાવના ખીલવી છે એટલુંજ નહિ પણ તેને વિશેષ સુષત્વરિત કરવા અને પોતાના જીવનમાં ઉતારવા સસ્તાસાહિત્ય વાચન અભ્યાસનો દષ્ટિએ અવલોકી તેમાંથી સાર ગ્રહણ કરી, પોતાના જીવનને પ્રેમભવ બનાવી રહ્યા છે. તેઓ સાદા, સરળ, ઉચ્ચાદી અને સદ્ભાવનાશીલ છે એટલુંજ નહિ પણ ધાર્મિક, સામાજિક પ્રતીતિસ્પદિત્ય પ્રતિ અભિરુચિ ધરાવનારા છે. હૃદયે તેમને કાંઈ પ્રભુપત્ત, શક્તિ, પ્રદાન કરેલી હોવાથી તેઓ કેટલીકવાર, પ્રાસંગિક અનુવાદિત કે પ્રતિઅન્યાદિ લખી 'અનૂપ' ના નામથી સામવિદ્યોમાં પ્રકાશનાર્યે મોકલે છે.]

૧. કામચે, દુઃખવસ્થાનાં પ્રાણનામર્દિત્વાચનમ્. ૨. સેવાધર્મ પરમમહેનઃ સૌજિનામપ્યગમ્. ।

કે અંધી ચંદ્રાવલી તું જાન સાંન મુકીને તો આગે નથી આવી ! હા, ખરેખર તું આગે આંધળીજ થઈ છે, તારા હરતમાં પકડેલો કેળુ છે ! તે તો જરા નિહાળીને જો ! મારો આંધળુ તો મારી પાસેથી આગે કંઈ પણ ગયેલો નથી ! અને મારી ગોદમાં બેઠેલો છે. તું તારા પગે પકડી લાવી છે તે પણ જોતી નથી ! હર વખત તમે મુખાંચો મારા ભોળા બાળકને વગોવો છો ! ક્યાં પાંચ વરસનો મારો બાળકુળુ ને ક્યાં તમે આધેડ વયની વજ્રલક્ષ્મીઓ ! તમને આવા ભુલો આજ મુકતાં રાત્રી પણ નથી આવતી કે શું ! બીયારી ચંદ્રાવલીજ મદામુશીખને 'નેત્ર વિકાસીને પોતાના હાથમાં પકડેલા પોતાનાજ શ્રીદામાને જોતાં ખસીઆણું પડી ગયાં ! સર્વ ગોપીજનો મનમાં બોલ્યાં કે હે શ્યામ ! તારી લીલાની બહોલરી છે ! ગોપીજનો ચંદ્રાવલીની દુઃખરકરી કરી આનંદ કરવા લાગ્યાં ને આજ પ્રભુ પણ સર્વ સખા તરફ જોઈ હાસ્ય વિનોદ કરવા લાગ્યા. સુરદાસજી ગાય છે કે—

માખન કી ચોરી છોડ કનૈયા મેં સમજવું તોય, મેં સમજવું તેય કનૈયા મેં સમજવું તોય. (૧)
નવ લાખ ધેનુ નંદ બાપાકે ધર નિત્ય નયો માખજી હોય, જો આદે સો લેઓ મેરે લેયા હાંસી હમારી દોષર
ખરસાનેસે આઈ સગાઈ તેરી નિત્ય નઇ ચર્ચા હોય, બડે ધરનકી રાજ દુધારી નામ ધરીગી તોય. (૩)
ગોપીનકે સંગ ગાય ચરાઈ ગયો કદમ તરસોય, કાહુ ગ્યાલ સો મેલ મીથો હે નેરી ગઈ કામદીપાં બોય. (૪)
ના છોડુ માખનકી ચોરી હોલી હોય સો દોય, સુરસ્યામ જ્યોતમતી કે આગે દિયો નેન ભર દોય. (૫)

અહા ! જે ગોટિ બ્રહ્માંડને કર્તા દોઈ જે વ્રજનો નાથ છે ! જેની પસંદ માત્રથી કાળ પણ ભય પામે છે, ને જેના બધે દેવ, સૂર્ય, ચંદ્ર, વાયુ, અગ્નિ સર્વ પોતપોતાનું નિયત કાર્ય કરે બધ છે. શિવ, બ્રહ્મા, નારદાદિક જેના ચરણકમળમાં અર્પનિશ ધ્યાન મગ્ન રહે છે, ને જેનાં દર્શન દેવમુનિઓને પણ કુલંભ છે, એવા પ્રભુ હોવા છતાં તે ભક્તપાસલ દોદાધી જીજ્ઞાસુને આનંદ આપવા માટે વ્રજ બાળકો, ગોપીજનો સર્વ વ્રજવાસીઓ સામે આનંદના રમણ કરી પ્રેમબંધને પ્રત્યક્ષ દર્શન રસરંગ સુખ આપી ગ્રહેલા હતા ! ધન્ય છે એ વ્રજવાસીઓને કે જે પ્રભુ વ્રજજનો પામે પ્રત્યક્ષ માખજી જેની વસ્તુ નહીં મોગતાં તેઓના હિર કૃપા કરવા લૌકિક ચોરની પદવી પ્રાપ્ત કરી માખજી ચોર જેવી અનેક બાલકીલાઓ કરી ભક્તોને પરમાનંદ મુખમાં રસપ્રબંધ કરી રહેલા, એજ પ્રભુનું ભક્તપ્રીતિપણું બતાવી આપે છે. રાજા દુર્યોધનોને છપ્પન ભોગ ત્યાગીને વિદુરપત્નીએ ફેંકેલા કેળનાં છોડાં જ ફક્ત પ્રભુ યજ્ઞપ્રેમે આરોપ્યા, એ, તું મારાપે છે ! હજાર રૂપિય સ્વર્ણના રોજાપરે જ રજા છે પ્રભુ ત્રી સુખે કહે છે કે "હું ત્યાગી વસતો ચોગી તપસ્વી કે વૈકુંઠધામમાં પણ મારો જે પરમ પ્રિય પ્રેમાદર્શ બાન છે તેના હૃદય મંદિરમાં જ હું બિરાજું છું. ભક્ત અને અનિશ્ચય પ્રિય છે." અલૌકિક પ્રેમ એજ પ્રભુનું સ્વરૂપ છે, આ સર્વ તેના કૃપાબળે જ પ્રાપ્ત થાય છે. અને ભ્યારે પ્રભુની કૃપા થાય છે ત્યારે જ્યારે તેવી માયામાં લુપ્ત બનેલો હોય છતાં તે પોતે તેને પોતાના ચરણમાં રાખે છે. ફક્ત જીવનું કંઈ સાધન પપમાં આવતું નથી. પ્રભુ સ્વમુખે આજી કહે છે કે "પોતાના કૃપાપાત્ર ભક્તનું, ચિત્ત પોતાનામાં રહેવા માટે તેનું સર્વ લૌકિક સંસારધર્મ હું જગાડું છું, ધનમાં ચિત્ત હોય તો ધન હરી લઉં છું, પુત્રમાં ચિત્ત હોય છે, તેનો લય હઈ છું, તેમજ તેની લૌકિક વસ્તુના વિશેષ આસક્તિ હોય છે તે તમામ પ્રિય વસ્તુને હું હરી લઉં છું, અને એ રીતે ભક્તના ચિત્તનો નિરોધ મારામાં હઈ છે" એટલા માટે જ "જે ગોપીજનો અજાણાઓ હતાં પણ પ્રભુમાં અનન્ય નિષ્કામ પ્રેમવાળાં હોવાથી તેઓનું ચિત્ત શુદ્ધ સંસારમાં ચગન ન રહે તે માટે શ્રીકૃષ્ણ પોતે દુધ ની નયનીત આરોગી તેમ દરેક પ્રકારે હેરાન કરી તે દ્વારા અહર્નિશ તેઓના ચિત્તનો નિરોધ

પોતાનામાં નિયુક્ત કરતા હતા. " અને લૌકિક દૃષ્ટિએ જન્મ્યોત્તમ માખણ ચોર તે વિચિત્ર ચોર છે ! કારણ તે માખણ ચોર નહિ પણ " શ્રીગોપીજનોનું જે માખણ રૂપી મન હજી તે ચોરી તેજોની કૃપાદારા પોતાનામાં નિરોધ સિદ્ધ કરતા હતા. " આવી આવીરના બાળકને કરેલી અનેક આવલીલા તેમજ નિદોષ રાસલીલાને લૌકિક દૃષ્ટિથી પીળાં ચરમાં ચરતી દોપરપ ત્રેતા અત્તાનીઓ શ્રીકૃષ્ણને ભણે અન્ય રૂપે દેખે પણ " ગાત્રી ભક્ત જનના તે તે શ્રીવચનપ્રદારી બાળકનું સ્વભાવ ગોતોક્તનાય પૂર્ણ પુરોહિતમ શ્રીકૃષ્ણચંદ્ર છે. "

~*~*~

કચ્છારે ?

૧.

આપી છે નિરાશા બધે, મળતો મુખન્ય નહિ; હૃદ્ય તો મચ્છાવી રહ્યા, લોભ, મોહ, ક્રોધ, કામ, પૂર્વજ્ઞાન દોષક થયો છે મન્દ ક્રુમ સમ; પશ્ચિમી પવન જાન આવી રહ્યો અભિગમ દીન દીન નિજ દેશમાં ન લવચેત સુખ; પેનું વંદ્ય નાશ થઈ રહ્યો દીનમન્યુ ! રથામ ! લેશો સુધિ કચ્છારે જે અનાયના સનાય નાય ! દેશો કચ્છારે હવન નવીન પુનઃ પુનઃ થામ !

૨.

મજ્જ-રજ્જમાં આભોડી, હવન સમ્પન્ન કરી; જન્તાવન વિધન સ્ત્રોત વિચરેશો કચ્છારે ! પમુના પુલિનમાં સુરતેદયો પેકાર કરી, માનમ પરત પુષ્પનેલ ઉપાગ્રો કચ્છારે ! ગીતા-ગાનરસની પીપાસા નૃપ્યાતી તીવ્ર; પચારી શ્રીનાયકમુખ ! શેઠને દરશો કચ્છારે ! હિલવની પાંચે ગોપીયોનો પ્રેમ-યોગ મળી; આંસુઓથી બનવને નીલવ કરેશો કચ્છારે !

સે. ગિરધરલાલ જ. શાહ, મુંબઈ.

શરદ્ ચંદ્ર.

શાન્ત સુન્દર રજની આ, રસરાજ અનન્ત રેખનો

મજ્જરાજ રંતાવનમલો, રસકુંજ માંડી ખેડનો. ૧

રસગાન સુન્દર આદર્શ, વેણુ દણુ રજકારમા;

ભર લીધમાંથી જમણી કૃષ્ણ, રાત્રી રવા એ લાલમા. ૨.

પશુ પક્ષીઓ કહરવ કરે, પુખ્ત થઈ એ નાદમા;

મજ્જનાર મન્મથ આરણ્ય નિમંત્રી મોહક ભાદમા. ૩

રવજોગલાલ કેશવલાલ પારિખ.

ચર્ચાપત્રો.

૧. તમરછત તત્રીની દષ્ટિ.

‘પુષ્ટિપીયુષ’ પા. ૨૦ કામવનમાં પાકરાણા એ મયાના નીચે ‘હરિય’કર શોજીએ તેલની લાખમાં ચતુર્થપંચમપીઠાધીશ્વર મહારાજની તરફ હે કથણ કર્યો છે, તે આદે વૈષ્ણવોની લાખની કુખઈ છે તેના જવાબમાં નીચેની હજીકત આપના માસિકમાં પ્રકટ કર્યો. ઉક્ત શાસ્ત્રીય મંદિરોમાંની દરબમાં શાસ્ત્રીય વસંતરામ તરંગે ગુરંગે કાઢી, મહારાજશ્રીને અપયન કરી સંસ્કૃતમાં લાખણ કરવા રહ્યો છે. એ પોતાની મદાન પરિતાઈની વિભિર બરેલી દષ્ટિના કારણ સિવાય બીજું શું કોઈ કોઈ અહીં પુષ્ટિમાર્ગમાં તે “તેલો દરિ અખનથો ન જનાવે” તોલો સકલ સિદ્ધાંત મારગો પટે સુને નહીં આવે” એ પદ શાસ્ત્રી આંખો ઉપાડને લેઈ જ્યો તેા જણ્યો કે આ કૃપાભાગમાં તેા એક સાધારણ વૈષ્ણવ પણ તમારી સંસ્કૃતની રોચ પદોંચિલી પંડિતાઈના મદ પણ કૃપાભાગથી સદેશમાં ઉવારી શકે છે, તેાં શ્રીવલ્લભકૃપનાં આગ્રહ તરફ કથણ કરવામાં તમારી વિદ્વતાનો આગળ જણાવો છે, પણ તરૂં આમે પૂજા નાખવાથી કંઈ વળવાતું નથી. મજે પંડિતાઈનો ઉપયોગ વસંતરામ શાસ્ત્રી સામે વધારા તેા તમને જવાબ પણ મળે.

“આસેતુદિમાયક પંડિત” તંત્રોછ અને પ્રમાણે હે નોંધ લખી અને પ્રકટ કરી, તે વિષે યોગ્ય બરેલીનું ઉપજનું અર્થાંવ છે. એ નોંધ કેવળ બાહિરાત્મપૂર્ણ નથા દેખણું છે, કેમ કે “આમેતુદિમાયક પંડિત” આદે શ્રીમત્તામી બાલકો પાસે રહી આવ્યા, પણ તેમના સહવાસથી કેટલા સંસ્કૃત બાળમાં વધામ્મ લા ચલા તે તેા જણીટી વાત છે. છતાં આખરે “આસેતુદિમાયક પંડિત” ની આંખો ઉપડી છે અને એની મંદી નોંધ પોતાના માસિકમાં પ્રકટ થવા બદલ શ્રીચતુર્થપંચમપીઠાધીશ્વર મોક્ષામી શ્રીવલ્લભાચાર્ય મહારાજની રેખી મારી તથા રૂપર હામ યાચના કરવાતું તેમને રાવેલા સૂચનું છે. એટલે આ વર્ષ અદ્વૈતીય અટકે છે

૨. લંપટનયંત્રી કે શુદ્ધ-શતાબ્દિ.

આદે કેટલાક શુભશાયીઓ અને સહારો કવિ નમંદની ‘શતાબ્દી’ ગાંધા બની જઈ ઉત્તરી રહી છે. તેનું શું કારણ હશે ? તે સમન્વિત નથી. કવિ નમંદના મન્યા જોતાં એ મદાન નિંદક નારિતક દત્તો એ રૂપર તરવરી આવે છે પૂન્ય અચાર્યશ્રીઓ સામે તેનું એક ખરાબ લખી માફુ છે કે તે તેના પિત્રાચપણનું સખળ પ્રમાણ છે કવિ નમંદે પહેલાં પુષ્ટિમાર્ગની તથા શ્રીમદ્દાપ્રયુક્તની ‘શરતિ’કા કરી છે, પણ એ કેઈ બદવાની શીખવણીથી અને હાંચ લઈ કરેલી જણાય છે, અને તેના નિંદક બરેલા લખણોમાં સ.સ રૂપાવા મળે એ સંભવિત છે. અને એ લખ્યા પછી કેટલાક વર્ષો બાદ પુષ્ટિ માર્ગની બાદે રહી કરી છે તેનું કારણ કવિએ પાછા પૂન્ય મહારાજશ્રીઓ પાસેથી રૂપીયાની લાંચ લઈ કવિને કેમ ન કરી હોય ? કવિ નમંદે કુશ હુદ્ધિવાલો દત્તો. આવા શુદ્ધાબ્દીની શતાબ્દિએ જનવચારી રનાબ્દિ શબ્દનું યોગ્ય વધી જવા સંભવ છે. કવિ મદાન આવાવાની નિંદક નારિતક દત્તો, બલિયારી દત્તો. બધા કુશલિને જાહેર દત્તો. તેનું વ્યક્તિત્વ તે કાચમાં કંઈ પણ ન્દેતું. લા, લુપ્તવાડી બાપ જમના તેડે મદેનત સારી કરી દત્તો ખરી, પણ તેણી તેની કુશલ નથી મટી. ગયેરાને ખંખાળનાં જવડવરંથી કોં તે પોંદા થયો ?

લી. વગાતે શુનેમ્મક,

એમ. એન. મીઠાણી—કે. ઉત્તવારી બલર નામપુર સોરી.

નોંધ—એક બલિયારી લંપટને કુશાર કવિ તરીકે જાનીને શતાબ્દી જનવચારો આપને આજ સનના (૧) શુ બલિયારપૂજક અને સુનીતિ-કેન્દ્રક રૂપીયા મળે છે ? તંપટ અને રિપી નમંદની શતાબ્દી ઉત્તારીને આજના સાક્ષર મનને અચિંયની પ્રભ મટિ રોા વારતો આપે છે કે નમંદે રૂપી આદરણ કવિ દત્તો. એટલે જાણે તે. તે હટેલ, પટેલ દોર લેલો દત્તો. તેની શતાબ્દીએ ઉત્તારીને જનવચારો તે પહેલું વિચરવા મળે છે ? મહાત્મા શ્રીચતુર્થપાચાર્યના કાચ સાક્ષર યોગ્ય અંગરૂઠા શાક જની (નેચો સનાતની પણ છે) શું તેને કુનેસર બન્યા હશે ? પુષ્ટિમાર્ગવાને વિચારી જાણે

શ્રીનાથદાશમાં લાગી અધેતાં સીક—લા. રર મીના દિવસે સવારના ૭ વાગે એક તાર ધોનાથ-
દાશમાં ફૂલુ બેઠાર પર સીમલાથી આવેલો, તેમાં મો. વિવેકાચતથી એવધનવાલજના લીલામાં પધારાના
મુદપરેક સમયાર આવતાં વડા મહેલારી પં. રમાચંદ મહેલિયા શોરજીવાર સજ અધિકારી તથા
ફોન જરો અવાલાલજ તથા ફોનિયર પન્નાલાલજમે મદદાલજના રોજના મોટી મહેલના બંજારમાં જળને
ખાનથી મકાનને સીક માર્યા દતાં, તેમજ ધોનાથજના અવધરે વિંદે જોખમી હોરાત પર પાવુ ફૂલુમંદાર
નાગજીરાના નામનાં સીક માર્યા છે.

શ્રીમં વિવેકે સંજના ૪ વાગે ઉદેપુરથી લોરીમાં રાખીના સવારો તથા ખીલ મોટારમાં પં. મદન-
મોહનજ તથા બંધીરસિંદજ આગળ દતા તેમજે જ્યાં સીકે. દતાં તેની બીજાં ઉપર સીકે મરી
ફોનજરોની સદી લીધી હતી. કુલે ૧૮ નવાએ સીક પાવ્યાં છે, અને ફૂલુમંદારના હરેક અમદનીયા
તથા ખર્ચના રાષ્ટ્રાલજની આખરી મીતિની મોંઘાંવજ તે કુલ ચોપડાએ અધિકારીને મોંઘીને સદી લીધી
હતી. ફૂલુમંદારમાં તે વખતે રૂ. ૭૦,૦૦૦ ના સીકમાં દતા.

દંકારમાં રોડ સજા—શ્રી ૧૦૮ શ્રીચરખનવાલજ શ્રીવિવેકાચતથીના અચાન લીલાપ્રવેશથી
રંગારા સહેરમે વેળુવ નરનારીઓમાં બારે રોડની લાટણી ફેલાળી હતી. લા. ૨૫-૬-૧૯૩૩ ના રોજ
આખા સહેરમા પૂર્વે કરી નહી તેવી દળગાલ પડી હતી, શ્રીમદ્વરમાચાર્ પૂત રહેલોથી ખાસ પ્રજ
પ્રાર્થના કરવામાં આવી હતી. અને રોડ પ્રદર્શિત કરવા સમરત વેળુવોની એક સમા સાત રેશપની
દેલીમાં યાજાવવામાં આવી હતી. તે સમામાં નીચેના કસોડે યથા દતા ૧ દંકારની સમરત માલજ
જાડીની તેરમ્બે દિવસે મારાથી જમાડતી. ૨ મીચરમાં યાંસ આપવું ૩ ચકા પારવાના ચમમાં બદ
આપતી. ઉપર મુજબ કસવ સર્વાનુમતે પાસ થયે દતો અને વખતે ફંદ કુડુ દર્દ જેમાં કરાં વેળુવેએ
પાતાની સાત અનુસાર મંડાવ્યુ હતું.

સાવડીમાં રોડ—શ્રીમદ્ ૧૦૮ ગાસ્તામી શ્રીવિવેકાચત શ્રીચરખનવાલ મદારાજ લીલાપ્રવેશ
કર્મની ખજાર મળતાં વેળુવ સમાજમાં ફેલાયેલી યમનીનીથી તેમજાના ખાનમાં જાનરમાં અડતાલ પાડી
રૂ. ૨૦. ફેસાઈ જસમાક છત્રમાઈ સાદેલના પ્રમુખવળી નીચે બહેર સમા વર્ધ રોડ પ્રદર્શિત કરવામાં આવ્યો.
કસવાલુમાં રોડ—મુંબાઈ પાસેના કસવાળમાં પમુ વેળુવ જવાપારીએમે દડતાલ પાડી હતી.

મુરતમાં રોડ—પૂળપાદ ગો. શ્રી ૧ શ્રીવજરતજાલજ મદારાજથીના પ્રમુખપરે એક રોડ સમા
મળે હતી, તેમાં રોડનો કાવ પસાર કર્યો દતો.

માણસામાં—રોડ પ્રજાળીયાર ગેરામના પ્રમુખપરે સમા મળે હતી, અને રોડનો કાવ થયે.

ગોરામાખમાં રોડ સમા—નાથદાશથી: ગોસ્તામી શ્રી ૧૦૮ શ્રીચરખનવાલજ મદારાજથીએ
નિલલીવાપ્રવેશ કર્યો તે માટે રોડ બલાવચ અનેના વેળુવોની એક બહેર સમા મદ આસો મુદિ
જોઢરથી ટુંકવારના બેવારના ચાર વાગે મળી હતી. સમાર્ન પ્રમુખરેવાન વે. સાંજવંદ છમનલાલ રાઠે
રતીમાંડુ દર્ડે. કસવાલમાં સમા યોજાવવાનો ઉદેશ રા. મોહનગાલ માંધીએ સમજાવી પછી નીચે મુજબ
કાવ રજુ કર્યો દતો. કાવ—એક કોડ વેળુવોના સમાર વડા આચાર્ય શોનાવડારાધીય ગોસ્તામી
શ્રી ૧૦૮ શ્રીચરખનવાલજ મદારાજથીએ નિલલીવાપ્રવેશ કર્યો તે માટે આ સમા રોડ પ્રદર્શિત
કરે છે અને વેળુવોના પ્રાણામાર શોનાવજની સેવા મટે યોગ્ય મદારાજથીની મેલના યાવ એમ આ
સમા ઉદ્દે છે. તે માટે તેજ પ્રજ શોનાવજ સત્તર યોગ્ય પ્રેમ્ણા કરે એમ પ્રાર્થના છે. કાવ ઉપર
રા. મોહનગાલ માંધીએ વિચેચ કરતાં નિલલીવારજ મદારાજથીનું હુકું છવન ચરિત અંતરુનું દર્ડું.
અને શોનાવજની સેવા માટે સત્તર યોગ્ય પ્રતિજ્ઞા કાવ, વહેરે જળુનું દર્ડું. પછી કાવને યોગ્ય રેકા
કેરવા પછી સર્વેએ ઉમા વજ કાવ પસાર કર્યો દતો. પછી સમા વિસર્જન થઇ હતી.

મદ જાળથીના નિલલીવાપ્રવેશ માટે અસો મુદિ અટકી મંજવારે પાછી પાડવાની હતી. પરંતુ
મદો વેળુવોમાં ને તડ દોવાથી વિચારવિનિમ્બ થયો. તેમાં મહેલાના બેઠાજીસના દાવાલાએમે
દુકારે દડદાજ પાડવામાં અને નો સદમાર મદ જળુનું તે મુજબ ટુંકવારના દિવસે દડદાજ માટે
કેરવામાં આવ્યું પરંતુ ખર્ચના સંરેમરો જેમેના મદ ઉપરથી ઉડી મહેલા તેવા આ યોગ્યે દડદાજ
પડ નહિલ. બારે એક પસમાં બધી દુકાનો બંધ હતી. આ પમુ વેળુવોની જાડીદારીલ મજબ.

શુદ્ધાદિત અને લક્ષિતમાર્ગ.

બીજી સભા રાત્રે : આઠ વાગે : શ્રીગેશ્વરમંથનની સભા તરફથી રા. વેલ્લભાઈ સાહેબચંદ્ર સાહેબના પ્રમુખપદે બોલાવવામાં આવી હતી. તેમાં નીચે મુજબ કરત સર્વાનુમતે પસાર થયો હતો :—શ્રીનાથદાસાધીશ તિલકાયત ગોરવામી શ્રીગેશ્વરમંથનના મદારાજશ્રીના નિત્યલીલાપ્રવેશ માટે આ સભા રોજ નહેરુ ક્લેબ, તેમજ શ્રીની સંપ્રદાયના હનનિ મંદિરની અનેક પ્રવૃત્તિઓ માટે વેલ્લભા તેમના કળી છે. તેમજ શ્રીની ખોટ તે માટે જોવા જાય છે. આ સભા ક્લેબ છે. પચાસને બંદો મુચીસ—અથા અંકના મુખેપૂર્ણ દુપર થો. ને. ગો સાહેબી સહાયતામાં “પચાસ રૂપીયા” બહુથી ઉપાય છે. પચાસ રૂપીયા સહાયતાનાં મળ્યા છે. તા’ની.

નરીયાદમાં અપૂર્વ કિસ્સા—શાસ્ત્રી વસંતરામે બરાબર ૪ થી ૫ દિવસ સુધી વેદ શાસ્ત્રના પ્રમાણ આપી બહુસંખ્ય દીક્ષા લીધા હતા પ્રકાર પણ અનાદિથી ચોટ આવેલી તેને સમયને અનુસરી કોવલમે છોડવા અધિકાર મુજબ આ દીક્ષા આપવી રીત કરી છે તે સિદ્ધ કરી બતાવું હતું અને બીજા પક્ષ માંથી જવના પ્રવૃત્તિમાં સમત્વથી નરીયાદની પ્રવૃત્તિને મળી આવેલો આપો હતો. તદ્ વપરાત શ્રીપુષ્પમાર્ગીય પુસ્તકાલયની નજા વળીને અંકારવાળી જેઈ દિ’કુરતાનમાં એટલું નહિ, પણ શુદ્ધિ-સુધીમાં જેની પ્રશંસા છે એવી થા એક પ્રવૃત્તિમાર્ગીય પુસ્તકાલયની નજા વળીને સંકાયવાળી જેઈ દીક્ષાની દીક્ષા તે માટે વિચાર કરવા વેલ્લભાને સૂચના કરી હતી, તેમજ ‘વનુચ’ચંચમપીઠાધીસર પા. પા. મદારાજશ્રીએ પણ વખતોવખત પોતાની વચનસુધાનું પાન વેલ્લભાને કરાવી અત્યંત આનંદ આપ્યો હતો અને આ પુસ્તકાલયના મકાનની સંકાયવાળી નજા જેઈ વળીને દીક્ષાની દીક્ષા જેઈ અને તે મકાન માં કરવા વેલ્લભાને સૂચના કરીને તેની સહાયતામાં મંગલપૂર્ણ ૩. ૫૦૧) આવી પોતે મકાન ફેંક ખાતે બહુસંખ્ય આશીર્વાદ સાથે આગ્રહ હતા. બાદ ને ૭ રમી બરાબર હતી. લખન ૬ દિવસ સુધી અને વિખ્યાત મદારાજશ્રીનાં વચનસુધાની રૂઢિ થઈ હતી, તે દરમિયાન અનેના વેલ્લભામાં પણ ચા. મોહનલાલ લક્ષ્મણ તથા રા. શિરધરલાલ તારલદાસ તથા રા. અબ્દુલ મનનાદાસ તથા રા. મલિકાલ સરેલા વગેરે પણ તે અત્યંત રસ લેતા હતા.

૬૭—૩. ૫૦૧) (શિક્ષા) મદારાજશ્રીના, ૫૦૧ રા. મનલાલ માલજીમાં, ૫૦૧) રા. મોહીલાલ શિરધરદાસ કાનપુરવાળા, ૧૦૧ રા. જનલાલ શિરધરદાસ કાનપુરવાળા, ૧૦૧ રા. ગોરધનદાસ નીલાલ, ૩. ૧૦૧) ભરનારા-(શિક્ષા) દેસાઈ દીરાલાલ સુનીલાલ, વેરા માલિકલાલ જનલાલ, ૧૦૧) સોમચંદ્ર ત્રીકમદાસ, સરદાર બહાદુર ગોપાલદાસ પિંડારીદાસ દેસાઈ, ૩. ૫૧) ભરનારા-રા. દીરાચંદ્ર શિરદાસ ધીરાળા, તલાલી રણુદાસ શ્રેરદાસ, ૩. ૨૫) ભરનારા-રા. શુભાભાઈ નરોત્તમદાસ, ગાંધી સુનીલાલ હામેદારની દીકરી બાઈ જડાને રોહડા આપ્યા, ૩. ૧૫) રોહડા ભરનારા-રા. દરિલાલ બાપુજીભાઈ, રા. રોહડાલ જનલાલ, ૩. ૧૦) રોહડા ભરનારા-રા. સુનીલાલ લક્ષ્મીદાસ અણીદાવાળા, રા. મુજલાલ બહેચરદાસ કાવડારાળા, તલાલી તરિલાલ અપુરદાસ, રા. મનલાલ બાપુજીભાઈ, ૩. ૧૧) (શિક્ષા) રા. ગોહળદાસ જેઠીસનદાસ, ૩. ૧૦) (શિક્ષા) સમવદીય મંગાબહેન તે. રા. રમણલાલ પુષ્પાત્મદાસનાં મોતાઈ, ૨. ૫) (શિક્ષા) ભરનારા-રા. ગોરધનદાસ મનજીભાઈ, રા. નાંદલાલ મલ્લુભાઈ, ગાંધી સુનીલાલ હામેદાર, પરી. સોમચંદ્ર ગોહળદાસ, રા. મોહીલાલ વનમાળીદાસની દીકરી બાઈ જડાવ, રા. સુનીલાલ નાયાલાલ, રા. રૂબુદાસ ગોરધનદાસના માતૃશ્રી, રા. બાલુભાઈ સુનીલાલનાં માતૃશ્રી બાઈ દીવાળીના, દેસાઈ ધરસાઈ મોહીલાલ, પા. સંકરભાઈ મનોરમાઈની દીકરી બહેન ડાહીબા, રા. મનલાલ વનમાળીની દીકરી બહેન મદાલમી, રા. ત્રીશીરનદાસ બહેચરદાસ, રા. રામજીદાસ જનલાલ આસર, બહેન પારવતી મુજલાલ મનવતી દીકરી, રા. મનલાલ પીત્રાવરદાસ, બહેન રૂબ મોહીલાલ, ગાંધી મોહનલાલ મનલાલ, રા. મોહનલાલ રણુદાસ, શિરધરદાસ બાઈજીની દીકરી બહેન મદાલમી, ૩. ૫) (બાળીવાળા) બહેન ડાહી, રા. ભરજીદાસ સુનીલાલ, રોહડાલાલ માલિકલાલ રોહડાઈ, રા. બાપુજી ગોરધન, રોહડા તારાચંદ્ર વસરામ, વેરા પરીશીતમ શીવલાલ, સરેલા મળીદાસ ત્રીશીરન-રા. બાપુજી ગોરધન, રોહડા પારસ ગાંધી પાનાચંદની દીકરી, ૩. ૨) (શિક્ષા) પા. રણુદાસભાઈની ‘સુની’ દાસ, ૩. ૨) (બાળી) બાઈ પારસ ગાંધી પાનાચંદની દીકરી બહેન નમલા, મોહનલાલ જનલાલની પુત્રી બાઈ બહેન દીરાળા, રા. મનસુખ પાનાચંદની દીકરી બહેન નમલા, મોહનલાલ જનલાલની પુત્રી બાઈ બહેન દીરાળા, સુનીલાલ રોહડાઈનાં પુત્રી ચંચળા, બહેન રૂબીબા, બહેન ડાહીબા, બહેન ‘વચળા’,

૧. તેવનીવલાદ બાપુજી, ૨. ૧) શેઠ: અપ્પાભાઈ, ૩. મુલચાભાઈ દુલ્લભરાય, બાઈ. રતીબા, બાઈ
 મીલબા, બાઈ હીરાબી, દેસાઈ વાચીનાઈ ભાવરાય, બહેન ચંચલ, ૪. ૩) (શેઠા) બાઈ મેના,
 ૨) (શેઠા) બાઈ હરિબા, ૬. ૫) (શેઠા) બાઈ શક્તી બહેન, તથા રાહી મેન, ૬. ૨) (શેઠા)
 શાંતી રતીલક્ષ ઓમલાલ, શા. ઇગનલાલ નરસીરામ. કુરૂ ૩. ૭૫૭૬-૦-૦; વસુદેવ શાસ્ત્રી ૨. ૮૫૧-૦-૩.

છપાય છે!

છપાય છે!

શ્રીવલ્લુગીતમુખાધિનીજી.

આ ગ્રંથનો કેટલોક ભાગ આ માસિકમાં પ્રકટ થઈ ગયો છે. તરુણમાં સવળ
 યુવરાત્રી લાવા; શ્રીમુખાધિનીજી અને તે પરના સર્વ સાહિત્યનો સવિસ્તાર લાવાઈ
 આ ગ્રંથમાં છે. પુષ્ટિમાર્ગનું તરવ લાંબુનારે આ ગ્રંથ અવશ્ય વાંચવો રહ્યો. મૂલ્ય
 કુરૂ પછી.

વસંતરામ હરિકૃષ્ણ શાસ્ત્રી.

સત્તમહેતાની પોળ, અમદાવાદ નં. ૧

તૈયાર છે!

તૈયાર છે!!

તૈયાર છે!!

નવાં જાંનાં ન્હાનાં મ્હોટાં કાર્તિકી પંચાંગે, ચિરંધરંગી દર્શનીય મુખનોદર ચિત્રાવૃણાં
 કાનાં મ્હોટાં સામ્રાજિક કેન્દ્ર-ગ્રાં, ન્હાની મ્હોટી ગમરીઓ, રાજભેગ, ખીતાગાપરી (સન ૧૯૩૪) ની
 મોર્મોગેટ ઉપરાંત નવાં નવાં વર્ષના અગ્નિનન્દનના કેન્દ્રી સરભોધક મખાળુ અને ચિરંધરંગી
 યેગ્રાથી વિખૂંપિત ફોર્મોગ, સોમક, કાક, કોકોબી, કમાલ અને કવરો.

દર વર્ષની પોં અમ્હોએ આ પોં પળુ રા. ૧૯૨૦ અને સન ૧૯૩૪ ના ન્હાના મ્હોટા
 મેન્ડરી અમુક સંખ્યામાંજ તૈયાર કરાયા છે. જેમાં છુટી છુટી વ્યવસ્થા આવણકી કાંથી કાં
 વંતના ચિત્રો લેવામાં આવે છે. જેવાંકે શ્રીનાથજી, શ્રીમદભાગ્યજી, શ્રીનન્દનન્દન, શ્રીધામસુન્દર,
 શ્રીવલ્લુગપુરાજી, ભક્તમનચોર, માખનપ્રેમી શ્રીકૃષ્ણ, ભક્તરમખાન અને શ્રીકૃષ્ણ, શ્રીધ્રુવનારાયણ,
 શ્રીરુદ્રીખનોદર, શ્રીરામપંચાવતન, શ્રીગાંધીમદાપ્રજી, ગો. શ્રીઅનિરુદ્ધાચજી, ગો. શ્રીઆરકૃષ્ણ-
 યજી, ગો. ચિ. શ્રીદીક્ષિતજી, શ્રીનિમજ્જનતમજી, શ્રીદાસરાનારાયણ, અદ્યોદ્યોદાર પગેર.

ન્હાના કેન્દ્ર-ડર અને કાર્તિકી ન્હાના પંચાંગ દરેક નંગ એકનું મૂલ્ય રા. ૦-૪-૦.
 મ્હોટા " અને " મ્હોટા " " નંગ એકનું મૂલ્ય રા. ૦-૧-૦.
 માર્ગવ્યય કેન્દ્ર-ડર ન્હાનાના નંગ એકના રો આના અને મ્હોટાના નંગ એકના પ્રત્યુ આના
 દુસાર પંચાંગના પાળ મંગલવતારે મોઢકયા. મગરાનું સ્થાન:-

ગિરિધરલાલ જગજીવનદાસ શાહ.

છુકસેલર અને રોશનસ.

૩. શ્રીમાવખાવાનું મંદિર: લુલેધર, Bombay 2.

તા. ૩-૧-૧૯૩૫ વર્ષના સપ્તમાં પુણમી ઉપરાંત દરેક પ્રકારનો રોશનસી સામન અમ્હારે
 પોષા અગ્રાધી મળે છે. (૨) બ્હારમાખના એર્ડર ઉપર આસ પાન આપવામાં આવે છે.
 ૩) પેસાતર માટે જગાખી ઘડ" થા પેસાટ રાંધે મોઢકયા.

ગુણનુવાદ કેમ ગણો ? શુદ્ધ સંગીતનાં દિવ્ય કીર્તનો.

સારંગી, ધીન, દીલરૂખા, હાર્મોનીયમ વગેરે વાજત્રોમાં સાંપ્રદાયિક કીર્તનો ઉતારવાનું આનું આધન સંપ્રદાયમાં એકેય નથી. મંગળાધી સયન પર્યંતના મુખ્ય કીર્તનો, વધાઈ અને ધમાર એ બંધાનાં ૮૦ ગણોના ખાસ નોટેશનો આજ અંથમાં છે. પખાવજ શિષ્યનાર માટે તાલના બોલ પણ છાપ્યા છે, ગુજરાતી ભાષામાં સવિસ્તર સમજણ પાડી છે. નોંધાવર એ ફીઆ, પોસ્ટેજ પાંચ આના.

ડૅ. ભગવાનદાસ નારાયણદાસ કોટડાવાળા.
સુ. ધંધુકા, (જી. અમદાવાદ.)

હિસ્ટરિયાદિ વાતરોગ દર્શન.

ખ્લોક ૩૦ હિસ્ટરિયા, મૂર્છા, ચક્રી, ફેફર, ગાડપણ અને બકવાદ રોગની અમેરીકન છેલ્લી ગોધ મુજબ પાશ્ચાત્ય, યુનાની અને આયુર્વેદિક સિદ્ધાંતો, સમજૂતી અને સાદા ઉપચારોનું પુસ્તક વાંચેથી ધણી રાહત મળશે. કીમન ૧-૪-૦ પૌ. જુલું, દેશીનામું. નવા બ્લવડાગ પ્રમાણે રચના ૦૧. શાળા માટે નવ મંજુર કી. ૦૧ પૌ. ૦)૦.

હિસ્ટરિયા રોગનીજ રામખાણ,

પેટ'ટ દવા વાપરુકાળ છે. ઉપરના દરોમાં ૨૪ કલાકમાં દાપદો મળે છે. સિલોન, આફ્રિકા, ઇરાન અને રચન સુધીના દરદીઓ વાપરી સુખી થયા છે. મેડીકલ સરખનો છુટથી મંગાવે છે. દવા મહિનાની, કીમન ૩. ૫) પૌ. જુલું.

છગનલાલ લલ્લુલાલ નામાવાળા. પેલેસ રોડના નાકે—વડોદરા.

વીસમી સદીની નવીન શોધ

સંગ્રહણી (ગણણી) માટે અમૃતમય ઉપાય.

પ્રતિષ્ઠિત અને વિદ્વાન વૈદ્ય કોટડેરાની દવા ખાઈ કંટાળેલા સંગ્રહણી (ગળતી), મુગાષના માડા, અતિસાર અને આતરડાના દાપથી પીડાતા નિરાશાજનક દર્દીને આશીર્વાદરૂપ યથ પડેલી ત્રીસ વરસના અનુભવની રામખાણ દવા માટે રજૂ મળેા મા સવાલપત્ર મંગાવો. પત્રવ્યવહાર નીચેના સરનામે કરવો:—

માસ્તર ડૅ. જી. પટેલ એન્ડ સન્સ, ૨૨ સ્પેસીઆલીસ્ટ-માલુસાવાળા.

જોખેળાપ—દર રવિવારે, અમદાવાદ—દાહુપુર જાડીજરાની પોળમાં તંજુનરાની

મડાળી ૫૨ નં. ૩૫૬.

અમારે ખાલાનંદ બચ્ચાંઓને હજુ પુટ આનંદી અને મુંદર બનાવે છે. કી. ૦-૧૨-૦ પૌ. જુલું.

દુર્લભભાઈ ચુનીલાલની કું,

વસંતની ડાહી પાસે, ભરૂચ.

તમારું વિમાનું દરેક ટામ આપતા પહેલાં ઉપલી કંપનીમાં પુછવું.

અમે દરેક બાતનું વિમાનું ટામ-એવું કે આગ, દરિઆઈ, અંદગી, મોટર, વડંમેન ડાંખતમેશન-અને એકસીડન્ટનું ડફ્ટર છેએ.

એજન્ટ્સ અને રિપ્રેઝેન્ટેટીવસઃ—

ન્યુ બીલાંડ ઇનસ્યુરન્સ કું. લીમ. (આગ તથા દહીઆઈ)

ગ્રેશામ ફાયર એન્ડ એક્સીડન્ટ ઇન્સ્યુરન્સ સોસાયટી લીમ. (આગ)

લુપીટર જનરલ ઇનસ્યુરન્સ કું. લીમ. (અંદગી તથા આગ)

ન્યુ ઈન્ડીઆ ઇનસ્યુરન્સ કું. લીમ. (અંદગી તથા આગ)

એલાયન્ડ એન્ડ સ્ટર્ટગાર્ટર લીમ. (આગ)

પ્રોડેન્સીયલ એસ્યુરન્સ કંપની લીમીટેડ.

ભરૂચના બાણીતા વૈષ્ણવ મહાગૃહસ્થે આ કું. પ્રામાણિકતાથી ચલાવે છે. દરેક

વૈષ્ણવ આજ વીમા કું. લાભ લે એવી આશા છે.

ગિરિધરલાલ જગજીવનદાસ શાહ.

ધોળા દીવસે તાર.

શ્રી ગિરીરાજ આશુ તથા ગિરિનારના મહાત્માજી પાસેથી ધોળા દીવસના પ્રવાસથી મેલ્દાન પ્રવર્તે દિવ્ય વિદ્યા મેળવી આવનાર વૈચરાજ ભોતીલાલ મહારાજકર ભટ. L. W. T. રાજકાવાલા કે જેમની પાસેથી નીચે બતાવેલા કૃત્તિઓ અત્રી પ્રકાશ છે.

૧. જેઓ શેતાન શત્રુઓના નાસથી કંઠાગા ગયા હોય.
૨. વેપારની ઉચ્ચ પાયાઓમાં નુકસાનીમાં આવી ગયા હોય.
૩. યાત્રીઓ પછાતા મેળા રાણાંથી હૃદય કંટકી ઉઠ્યા હોય.
૪. તથા દરેક પ્રકારની સુંઘવણ, નામના વીચરો ઉપર વિચાર્ય મેળવી ધન, પુત્ર, માન, આનંદ, શ્રદ્ધા, વેપારમાં લાભ, કાર્ટે કસમાં ફતેહ, સારા પ્રકાર નોકરી, શત્રુ વિચાર્ય તથા ત્ત્રી પુરુષમાં અણુ બનામ રહેતો હોય તો અગ્નિ પ્રેમ કાગળી આપનાર તથા દમરો દવા વાપરના પ્રજા ભવકર દલીલા દીને નરહરના કેદની કારણોથી ન મરતાં હોય તેમણે ક્યારે મહી ખુશાઓ મેળાઓ.

ફક્ત પાંચજી ગીનીટમાં કેમકે મળવાથી તમારૂં આશુ ભવિષ્ય ફળ હાટી દેવામાં આવશે. એક પ્રજ્ઞા શ. ૧-૪-૦ પાંચ પ્રજ્ઞા શ. ૫-૪-૦ આખા ભવિષ્ય ફળના મ. ૧૦-૩-૦ ઉપરાંત મુઠ, ચોટ, ગ્રહણ, સાકળ, અભિગદાન પીગે નરહરના કારણો પોતાના દેવી પ્રયોગોના બળથી અગ્નિ રીતે ફર ફરી ફરી પ્રકાશ છે. મળો તા તમે,

વૈચરાજ ભોતીલાલ મહારાજકર ભટ. L. W. T.

(મંમદગીના ખામ પદ)

કે. શકીયાની પોળ સામે, પુરાણીનીવાસના મે. સારંગપુર-અમદાવાદ

દશી કારીગરીને ઉત્તેજન આપી

દેશનું ધન દેશમાં રાખો !

અમારે ત્યાં ચાંદી અથવા ચાંદી ઉપર સોનાનું ગિલીટ કરેલું મીણાકારીનું દરેક કામ જેનું કે નરહરન, સાદીપીન, હેયરપીન, રાષ્ટ્રીય મંજ. માથાના ચાક, એરોંગ, પોન્ડીયો, બંગલીયો, ૧૬, ચીંટીયો, પાંદરીયો, લોટીટ, ચમચા, જા.ત. કમીઓ અને પ્રજ્ઞાના શીર્ષાંગ માટે ચાંદી તથા મોનાના અશ્વપણ, મેષ, મણકા વિગેરે બહુજ કિંમત લાગતી મળશે. તેમજ આપના નાનકા સુશોભન મોનોગ્રામના જટન જોડેથી દરેક સુવર્ણના બનાવી આવવામાં આવશે.

તમારા ભગવાનો ગેલેરીઓ દુકાનો વિગેરેના દાથ કથમના ચિત્રોથી રાખાશે અમોરે ત્યાં દાથકથમના સુંદર સિનસીમેરીના તથા રામાયણ મહાભારતના તથા મનવર્ણના તથા દરિયાના ફરમાના ચિત્રો ગમે તેવી સાર્થકતા સારા કથમનાં મળશે. કથમના પદાર્થો વિચાર્યકો અને ધીનાયજના દરેક સુંબાર વિગેરેના ચિત્રોના સરક નેપાર મળશે અને સારાનાં સારા કથમનાં નમ પસંદ પડે એવી રીઝાઈનો એન્લાઈન વગેરે દરેક મુદતમાં જોડેથી બનાવી આવવામાં આવશે. નેટ કરવા સાધક દાયાદોતરી નાંવંડીઓ તેમજ શ્રીની મેવાના ઉપધોગી સમકામ વગેરે જેવાં કે વૃષભ, મમરી, કાવક, ચરખા દોઢર, બેઠમૂચ્છ શીશીઓ, કમીઓ, જરન, ગુર.ખદાની, કંકાની, બંદો મુલાલી, ચીંટીઓ, પેપરકટ થડીઆગતી મેંકે, કાદનપેન, સાદીપીન, દાધીના ખોંયા. બનવરોના લાકાટ તેમજ દરેક ધાર્મિક મૂર્તિના વગેરે વગેરે નેપાર મળશે.

વેચવાની છે—મહાત્માની એક પીઠાઈ મદોના દરેક તેમજ સાંખી પદ ફૂટની. કિં. ૨૫૦૦ની.

—આજેજ એક પોરકાર લખી આઈર્લેંડી કાગલો :—

પારિતોષિક પરીક્ષાઓ.

શુદ્ધાદૈત વૃદ્ધિસંપ્રદાયના અનુયાયીઓ—ખાસ કરીને યુવાન વર્ગ આંત્રિકાધિક સ્થિતિના અભ્યાસમાં વિશાળ દૃષ્ટિએ પ્રવૃત થાય એવા શુભ ઉદ્દેશથી આ ઇનામી પરીક્ષાઓ યોજવામાં આવી છે.

પ્રવેશપરીક્ષા—દીનકંકર કૃત બાલશિક્ષાં બાળ પાંચમો સંપૂર્ણ, પુષ્ટિમાર્ગનો ઇતિહાસ પૃષ્ઠ ૧૦૮, ચતુઃશ્લોકી, કૃષ્ણાચર્ય, મધુરાદિક, સર્વોત્તમરતોત અને મંગલચરણ. આ સંપૂર્ણ સ્તોત્રો કંઈક કરવાના છે. (આ સ્તોત્રો “આટલું તો કરજે” નામના પુસ્તકમાં છે.)

મધ્યમાપરીક્ષા—રસેશ ધ્રીષ્ટ્યુ, પોદશ ગ્રંથ, શ્રીનાથજીનો ઇતિહાસ તથા ભક્તિપોષણ અર્થ સ્થિતિ. ઉત્તમાપરીક્ષા—શુદ્ધાદૈતમાર્તક, શુદ્ધાદૈતસિદ્ધાંત, ગુજરાતી (વૈષ્ણવમહાસમાવાનો), શ્રીહરિરાયજી કૃત શિક્ષાપત્રમાંથી પૃષ્ઠ ૨૦, શ્રીપુરુષોત્તમજીનું જીવનચરિત્ર (સાત્રી હરિશંકરજી પ્રખેપ્ત ગુજરાતી અથવા ગ્રંથભાષામાં).

વિશિષ્ટપરીક્ષા—પ્રથમ વર્ષ—શ્રીમદ્ભુલાલ અધ્યાય ૧ થી ૨ જો, વિદ્-મંડન, આર્ષિર્જોવ-તિરોબાવવાદ સુધી, અક્ષવાદસંપ્રદમાંથી શ્રીહરિરાયજીનો અક્ષવાદ સરીકે અથવા મુખ્યોધિનીજી જન્મપ્રકરણ અને તામસ ફલ પ્રકરણ, ભક્તિપેતુનિર્ણય પૂરો, ભક્તિરસત્ત્વવાદ પૂરો અને અક્ષવાદ સંપ્રદમાંથી શ્રીવજરાયજીનો અક્ષવાદ.

દ્વિતીય વર્ષ—શ્રીમદ્ભુલાલ અધ્યાય ૩ જો અને મોઘો, વિદ્-મંડન અર્ચશિષ્ટાંશ લીલાનિત્યત્ત્વવાદ સુધી, અને અક્ષવાદસંપ્રદ પૂરો, શુદ્ધાદૈત પરિકાર સાથે; અથવા શ્રીમુખ્યોધિનીજી દ્વિતીય સ્કંધ પૂરો તથા તૃતીય સ્કંધ ૧૫ થી ૨૪ અધ્યાય, ભક્તિસંપ્રદ, આર્ષિર્જોવતિરોબાવવાદ, અક્ષવાદ સંપ્રદમાંથી શ્રીહરિરાયજીનો અક્ષવાદ અને શુદ્ધાદૈતપરિકાર, સાંખ્યકારિકા અથવા બેલગેદ, નિર્મલપરિણામવાદ ગીતા ૧૫ થી અધ્યાય વસ્તુતીકિકા સાથે, તથા વિદ્-મંડનમાંથી નિત્યલીલાસાદ.

આ પરીક્ષાઓમાં ઉત્તીર્ણ થનારાઓને વૈષ્ણવ મહાસભા તરફથી થોડા પ્રમાણસર પદ્મિનોગિક વસ્ત્રોમાં આવશે.

સામાન્ય નિયમો.

(૧) આ પરીક્ષાઓમાં પુષ્ટિમાર્ગની આંત્રિકાધિક દીક્ષા લેનાર કાષ્ઠ પણ વૈષ્ણવ ઓ કે પુરુષ જોસી ચક્રો. પરીક્ષામાં જોડનાર ઉમેદવાર ગમે તેટલી ઉંમરના હશે તો પણ તેને માટે દરકત આવશે નહિ. (૨) પરીક્ષાનો સમય સં. ૧૯૯૦ ના માર્ગશીર્ષ વદ ૯ થીમુસાંછજના દિવસનો હશે. પરીક્ષાનું પરીણામ સં. ૧૯૯૦ ના માઘ સુદ ૫ વસંતપંચમી ઉપર બહેર કરવામાં આવશે. (૩) બધી પરીક્ષાઓ લેખી લેવામાં આવશે. (૪) પ્રશ્નપત્રો તે ગામના નીમાવસા પ્રતિષ્ઠિત નિયામકોને પહોંચાડવામાં આવશે. (૫) પરીક્ષાનાં સ્થલ આદિની તજનીજ પહેલેથી નિયામકો સાથે કરીને તેમના દ્વારા તે તે ગામમાં પહેલેથીજ બહેર કરવામાં આવશે. (૬) ઉમેદવારોએ અરજીમાં પોતાનાં નામ કામ સાદ અદરે લખી મોકલવાં તથા કય પરીક્ષામાં જોડનાર છે તે પણ સ્પષ્ટ રીતે જણાવવું. (૭) પરીક્ષા માટેનું અરજપત્ર મોકલ્યાં મોકલે સં. ૧૯૯૦ ના શક્તિક સુદ ૧૫ સુધીમાંજ સ્વીકારશે.

મંચીઓ,

શ્રીપુષ્ટિમાર્ગીય વૈષ્ણવ મહાસભા, ૧૧૦-ગીરીરા, અમદાવાદ.

મહાશક્તિ વીર્યગુટિકા.

શક્તિની સર્વોત્તમ જડીબુટ્ટી આજકાલની શક્તિની દવાઓમાં પહેલે નંબરે પૂરવાર થઇ ચુકેલી વીર્યવર્ધક આ દવા છે. શરીરની નબળાઇ પર વિજ્ઞાપક અસર કરનાર અને આનંદ આપનાર આ દવા ખરડાના પહાડોની અમરકાંઠિક વનસ્પતિઓમાંથી બનાવેલી છે. ગોળી ૫૦ ના પાંચ રૂપીઆ. ટપાલ ખર્ચ છુટું નમૂનાની ગોળીઓ માટે આઠ આનાની ટીકીટો બીડા. શ્રીબક્ષ આયુર્વેદિકે ફાર્મસી, સુ. પોરબંદર (કાઠીયાવાડ).

નિરાધાર બાળકો માટે સારામાં સારો માગી કથો ?

તેમની સંભાળ લઈ, સારી રીતે ઉછેરી તેમને આદર્શ નાગરિક જનારવાં તે. આ કામ વધુ ઉત્સાહથી

નડીઆદ હિન્દુ અનાથાશ્રમ

કરી રહ્યું છે. આવાં નિરાધાર બાળકો ઉપરંત તત્ત્વવત્તાં બાળકો, નિરાધાર અધકા અને અર્ધગ્રામી-પુરો વગેરેની સંભાળ લેવાનું કામ આજ વર્ષે થયાં આ સંસ્થા કરી રહી છે. આ સંસ્થાને તમે અને તેટલી મદદ કરો. રૂ. ૧ અને તેથી વધુ દાન આપનારના નામ વાર્ષિક રીપોર્ટમાં છપાય છે.

મંત્રી—હિન્દુ અનાથાશ્રમ નડીઆદ. (ગુજરાત)

અત્ર પાવન માટે અજબ તુરખો, સ્વાસ્થ્ય શુદ્ધ મુંદર

હજમાહજમ ચૂણું.

આ ચૂણું વૃદ્ધ યુવાન બાલક વગેરે દરેક સેવન કરી શકે છે. આથી કબજવાત, અપચો, પેટનો દુખાવો, આક્રોશ, દાહ, મંદાસિ, ઉલટી, ઝાડા, બોળ, અજીર્ણ, અશક્તિ વગેરે તેમજ હાથ પગની તૃટ, વીર્યસ્રાવ, સ્વપ્નદોષ, શરદી, અજેષ્ઠમ વગેરે શરીરની વ્યાધિઓમાં અકસીર છે. ડિં. બા. ૧ નો રૂ. એક, ટપાલ ખર્ચ છુટું. નમુના માટે બે આનાની ટીકીટ મોકલો.

૬. ખરડા ફાર્મસી, પોરબંદર.

શ્રીપુષ્પિમાર્ગીય વિશ્વવિદ્યાલયોગી.

શ્રીમક્તિમાર્ગીય દર્શનીય ચિત્રસમૂહ

ચિત્ર સંખ્યા ૩૧

અવાપિ પર્યન્ત પ્રકટ થયેલ કાર્ડ શક્તિ વિચિત્રગી. (શ્રીનાથજી આદિ આર્કિ સ્વરૂપ, શ્રીમદાંત્રપ્રભુજી, શ્રીગુરુસાંઈજી, શ્રીગોકુલેશ અને શ્રી શ્રીગોકુલન ચણ મહારાજ શ્રીપ્રભૂતિના) ચિત્રઓ અપૂર્વ સંમદ ખીસામાં રહી શકે એવો પોકેટ સાઈઝ સુંદર ટકાવ અને સોનદેરી પાકે મુંદર ત્યાં ન્યોબલવર એક રૂપિયા. 'શુદ્ધદિત' ના ગ્રામ્યને શ્રીદ આનામાં આપવામાં આવશે બદારગામથી મંગાવનારે માર્ગવ્યયના બે આના વધારે મોકલવા.

મળવાનું ટેકાણું [ગાંધીનગર-૯ જ. શાહ. બુક્સેલર.

૬. શ્રીલાલભાવાણી મંદિર, ભુલેશ્વર. મુબાઇ નં. ૨.

તા. ૬.—અમદારે ત્યાં વેચાણ સમગ્રવધના સ્વયં પ્રતિષ્ઠા અને ચિત્રો મળે છે.

નં.	વિષય.	પૃષ્ઠ.	નં.	વિષય.	પૃષ્ઠ.	નં.	વિષય.	પૃષ્ઠ.
૧	ચલાકરમહામંત્ર ...	૨૩૧	૫	શીતિવ્રતચિત્ર ...	૨૪૧	૬	ધ્યાન ...	૨૪૬
૨	મનમાં શીકૃષ્ણ ...	૨૩૨	૬	કનકાભિષેકનો અનુભવ ...	૨૪૨	૧૦	શરદ્-ચંદ્ર ...	૨૪૬
૩	શીકૃષ્ણચિત્ર ...	૨૩૫	૭	બનમનનાઈન ...	૨૪૫	૧૧	ચર્ચાપત્રો ...	૨૫૦
૪	શીકૃષ્ણોત્તમ ...	૨૩૬	૮	નિશ્ચિત ચાર ...	૨૪૬	૧૨	સાંપ્રદાયિક પ્રવૃત્તિ ...	૨૫૧

આ કપરાંત ૧૭ થી ૩૨ પૃષ્ઠો પ્રવેશીત વિચારપ્રથાના છે.

સુપરસંચારકુંડળની મજા

દક્ષિણ

જ્યાં પ્રસિદ્ધ પૌષ્ટિક મધુર્ક અને લહેતતદાર પીંડ ખોરાક પચાવનાર જૂથ લગાડનાર લોહી માંન વધારી તાકાદ લાગણી બદલાય કિંમત ગાદતી નાનીનો રૂ. ૧) એડીના રૂ. ૨)

અયમપ્રાર

અયમં ઔષધિ મીઠિત હવન વધેક ખોરાક સર્દી, ખાંસી, સ્તેષ્ઠ અને છાતીના દોઈ પણ રોગોની પ્રસિદ્ધ દવા. કિં. તોડા ૨૦ નો રૂ. ૧૧

માલિકુ

દુખળા પાતળા અશાન્ત બાળકોને કષ્ટ પુષ્ટ અને સ્વસ્થિમય લાકતવાળા બનાવનારી મીઠી દવા. કિંમત ૧૨ આના

દેહકુ

જડન અને ગાસ નિવાય દોઈ પણ ભતની દાદર-ને રજ કલાકમાં આરામ આપનારી દવા. કિંમત દિખાલકી એકના ૪ આના

સુધારિય

કફ, ખાંસી, હમ, યુગ, કેલેરા, સંધકાંઠી, અતિ-આર, વમન થવું, બાધ, વગેરે એવાય રોગોની અનુપાન વચરની દવા. કિં. બા. એકના ૮ આના

આ સુપરસંચારકુંડળની મજા સુપરસંચારકુંડળની મજા નાકનજાદમા-ચા સુધિ પાલીકેન હી-વાયકેનિદવાલેકનમા-ચા સુધિ પાલીકેન હી-

પ્રશ્ન ૧૦૭—મનુષ્યનારે ધર્મનો કિયો સર્ગ અવશ્ય સંપ્રદ કરવા યોગ્ય છે ?

ઉત્તર—કામ, ક્રોધ, તપ, તિતિહા, શૌચ, બ્રહ્મચર્ય, અદિત્યા, આદિક સમગ્ર એવો જે ધર્મનો સર્ગ તે સંપ્રદ કરવા યોગ્ય છે.

પ્રશ્ન ૧૦૮—ત્યાગ કરવા યોગ્ય અધર્મનો સર્ગ કિયો છે ?

ઉત્તર—કામ, ક્રોધ, લોભ, મોહ, કલ, મદ, મત્સર, ધ્રુવ્યો, અનિમાન આદિક સમગ્ર અધર્મનો જે સર્ગ તે ત્યાગ કરવા યોગ્ય છે.

પ્રશ્ન ૧૦૯—સર્વ કાળને વિશે શ્રવણ કરવા સાંભળવા યોગ્ય શું છે ?

ઉત્તર—શ્રીપરબ્રહ્માના જે અદિત્ય તે સર્વ કાળને વિશે સાંભળવા યોગ્ય છે.

પ્રશ્ન ૧૧૦—પંડિતને પણ ભણવા ને ભણાવવા યોગ્ય શું છે ?

ઉત્તર—જેભે કદીને શ્રીકૃષ્ણ ભગવાનને વિશે ભાષાત્મ્યનાને શુદ્ધ ને દૃઢ અનન્ય પ્રીતિએ અદિત્ય બક્ષિ થાય તથા જેભે કદીને પોતાના ધર્મને વિશે અનન્ય નિષ્ઠા થાય એવું જે મત શાસ્ત્ર તે તો યદ્યપિ પંડિત હોય તેમણે પણ ભણવું તથા ભણાવવું.

પ્રશ્ન ૧૧૧—વિચાર કરવા યોગ્ય શું છે ?

ઉત્તર—જગતમાં જે સંપ્રદાતામતામદ્વેષ જે મિથ્યા પ્રપંચ તેને વિશે આશંકિત કરી પણ ન થાય એ વિચાર કરવા જેવું છે. તથા હાલે હાલે આયુષ્ય-મર્યાદાને કાળ ભરી છે જાણી પરબ્રહ્મોપાસના કરવા કાળજી રાખવી.

પ્રશ્ન ૧૧૨—નગવદર્મ પારણ કરનારે શ્રેષ્ઠ કિયાં મત પારણ કરવા યોગ્ય છે ?

ઉત્તર—અધિક પુરુષોત્તમ નાન અને બારે ગાયત્રીમાં આવનારી બંને પદ્ય (શુક્રત, ને કૃષ્ણ પદ્ય) ની એકાદશીઓ અને મુજબતે કરીને ચાર જયંતીઓ શ્રીકૃષ્ણજન્મભદ્રમી, શ્રીરામનવમી, શ્રીવામનદ્વાદશી અને શ્રીનૃસિંહચતુર્દશી એ ઉત્સવોનાં મત અવશ્ય પારણ કરવા.

પ્રશ્ન ૧૧૩—ત્યાગ કરવા યોગ્ય તે કિયો છે ?

ઉત્તર—જેનાં વચન પચ્ચરની પેઠે વા વચ્છણણ જેવાં પદ્યતાં હોય. ને અશુભ પોતાનારો હોય, હરિશુર આચર, મદાવ પુરુષની આત્માનો વિશેષ કરનારો (હરિતાં આત્મા યદી અવજો અલનારો) ને ત્યાં ત્યાં મનુષ્ય ગાયે પેરને કરનારો ને ક્રોધ કરીને - પાત્રી કામકામ કરવાનો આરંભ અનાદરે કરીને કરતો હોય, ને સમજો કરીને રદિત, ને પોતાનાં શુભનાં વખાણ પોતે કરતો હોય એવો જે પુરુષ તે ત્યાગ કરવા યોગ્ય છે.

પ્રશ્ન ૧૧૪—ઉત્તમ પુરુષ તે કોને કહાય ?

ઉત્તર—સર્વ પ્રાણી માનવ દુઃ સાચ એવું ઈચ્છતો હોય ને કોઈનું હુકમ સાચ એવું તો ક્યારે પણ ઈચ્છતો ન હોય ને ભય-ભ્રેશ્ણ હોય ને કોઈનું સ્વશીલવાળો હોય એવો જે પુરુષ, તેને ઉત્તમ કહાય.

પ્રશ્ન ૧૧૫—માનવ પુરુષ તે કોને કહાય ?

ઉત્તર—કર્મ કરીને, મને કરીને, તથા વાણીએ કરીને તથા હેઠે કરીને જેને વિષે જે પ્રકારે વર્તેલા હોય તેને વિષે પણ તેજ પ્રકારે જે પુરુષ વર્તેલા હોય, ને શુભને શુભ, ને દોષને દોષ; એ ગન્નેના અહણુ ડરનારા એવો જે પુરુષ હોય તે મધ્યમ જાણવો.

પ્રશ્ન ૧૧૬—કનિષ્ઠ પુરુષ તે કોને કહિયે ?

ઉત્તર—કર્મા (કૃત) (કરેલા ઉપકારને) ન જાતો, ને કોઈ મિત્ર હોય તેનું મિત્રપણું પણ કોઈ રાખે નહિ, ને પરથકી પોતાની શંકાનો કરનારો ને પોતાના હિતની વાર્તામાં પણ અદ્વાગહિત, અને કરવા યોગ્ય ને ન કરવા યોગ્ય જે કર્મ અકર્મ વિકર્મોદિ તેને જાણે નહિ ને કેવળ પારકાના દોષનેજ દેખતો હોય એવો જે પુરુષ તેને કનિષ્ઠ પુરુષ જાણવો.

પ્રશ્ન ૧૧૭—સકામ પુરુષ તે કોને જાણવો ?

ઉત્તર—શ્રીભગવાન વિના ધર્મ, અર્થ, કામ, ને મોક્ષ; એ પદાર્થને જે ઇચ્છે છે પણ એ આરેથી અતીત ઘર્ષ કેવળ શ્રીહરિના હિતાર્થની સેવા તેનેજ હરિપ્રાન્નતાર્થ કરવા ઉપર દૃઢમતિપૂર્વક આસક્તિ ઘર્ષ ન હોય તેવા જના અતુર્કશ લોક ભોગના મુખને ઇચ્છનારા જેવાને સકામી જાણવા.

પ્રશ્ન ૧૧૮—રાત્રિ દિવસ અતિશય ચિંતન કરવા યોગ્ય તે શું છે ?

ઉત્તર—પ્રત્યક્ પુરુષોત્તમ શ્રીકૃષ્ણ નારાયણ તેમનાં જે શુભ અરણ્યરવિંદે તેથી આરંભીને તે મસ્તક પર્યંતનું શુદ્ધ રમાત્મક આનંદમય અપ્રાકૃત દિવ્ય સ્વરૂપ તેજ અતિશય ચિંતન કરવા યોગ્ય છે.

પ્રશ્ન ૧૧૯—નિરંતર જીવવાએ કરીને ઉચ્ચારણુ કરવા યોગ્ય તે શું છે ?

ઉત્તર—મત્ત ચિત્ત આનંદરૂપ શ્રીકૃષ્ણ, નારાયણ, માધવ, મુકુંદ, જોષિદ, હરે, હે હરિ, હે ભક્તવન્દ્ય, હે હેશવ, હે કરુણામિધુ, હે દીન જાન્યુ, હે અશરણુ-ગરણુ, હે પતિતપાવન, હે અધમોદ્ધારણુ ઇત્યાદિ શ્રીપદ્મહરનાં નામો અનણિત છે, તે નામોનું ઉચ્ચારણુ નિરંતર કરવા યોગ્ય છે.

પ્રશ્ન ૧૨૦—મનુષ્યે કોના યદી નિરંતર જપ પામયો ?

ઉત્તર—જીવની હિંગ્યા આદિક જે અધર્મ તે યદી, તથા નાસ્તિકરૂપ જે કાળો નાગ તેથી, તથા ઉપર ઉપરથી દેખ્યા પામે તો ધર્મનો આભાસ જેવું આચરણુ જણાતું હોય ને અદરથી તપામેલો તે પાપે ભરેલો એવો જે પાપથી પુરુષ તે યદી, તથા પતિ જીવના છતાં પરપુરુષ યદી ઉત્પન્ન થયા એવા જે વર્ણસંકરે પુરુષ તેમના મંગ યદી, તથા સુરાપાનને તથા મોંઘબદ્ધાનુ કરનારા એવા અધર્મમાર્ગી પુરુષોના અંગ યદી તથા પોતાની અપદ્વીનિ યદી, અતુલ્ય તેમણે નિરંતર જપ રાખવો ને સર્વ દુર્લભ પણ અધિક ભય મહાન સાર્વભૌમ ચક્રવર્તી રાજાના પણ સંભરૂપ પરાતર પૂર્વ પરિશ્રમ તે સદા મર્ષદા સર્વ સ્થળે અપદિન ભારાજમાન છે એમ જાણી અધર્મમાર્ગે ન પડવાનો ભય વિશેષ રાખવો.

પ્રશ્ન ૧૨૧—નાસ્તિક કોને જાણ્યો ?

ઉત્તર—જે સર્વ અખિલ જગતમાત્રના કર્તા પતિ એવા મૂળ પરબ્રહ્મ જે સાયિક ગુણોથી સદા રહિત એવા, અને અમાયિક (અપ્રાકૃત દિવ્ય) ગુણે સુકા એવા ને સદા દિવ્ય અપ્રાકૃત આકાર મૂર્તિ એવા જે દૃષ્ટુ નારાયણ; તેમને દેવજ ચૂન્યરૂપ આકારરહિત કહેનારા તથા તેજ જગદેવો કોઈ છેજ નહિ એવું કહેનારા, અને જગતની ઉત્પત્તિ સ્થિતિ અને લયને કરનારો તો માત્ર સ્વતંત્ર કર્મજ છે, કર્મના ફલદાતા ઈશ્વર છેજ નહિ, એ પ્રકારે કહેનારા જાણનારા જે દેવજ કર્મજ નહિ અજ્ઞાની જનો તેને નાસ્તિક જાણવા.

પ્રશ્ન ૧૨૨—નિષ્કામ પુરુષ તે કોને જાણ્યો ?

ઉત્તર—શ્રીપરાત્પર પરબ્રહ્મ પુરુષોત્તમ ભગવાન વિનાની પ્રગતતા પૂર્વકની સેવા તથા ધર્મોદ્ધિષ્ટ પદાર્થને (પુરુષાર્થને) પણ ન ઇચ્છે ને જેમાં શ્રીહરિને સુખ, શ્રીહરિની પ્રસન્નતા, એ જે વસ્તુતા ઉપરજ પ્રાધાન્યપણે અંતઃકરણની વૃત્તિથી આશ્રય હોય તેવા જન તેજ નિષ્કામી પુરુષ છે.

પ્રશ્ન ૧૨૩—નિત્યપ્રલય તે કોને જાણ્યો ?

ઉત્તર—જેમ રાત્રિદિવસને વિષે નિરંતર ન દેખ્યામાં આવતી એવી જે ફલપુષ્પની વૃદ્ધિ તે ચતી જાય છે, ને તેની પૂર્વ અવસ્થાનો લય થતો જાય છે, તેમ જોળન આદિક જે અવસ્થા તે આવતી જાય છે ને જાણપણાદિક જે અવસ્થા તેનો નિરંતર ઘણુ અધશણે વ્યતીતરૂપ લય થતો જાય છે તે નિત્યપ્રલય જાણ્યો.

હાંત—જેમ પ્રજ્વલિત દીપકમાંથી મૃત તેજાદિક ખજી જતું રહે છે. નદીઓમાં નિરંતર જળનો પ્રવાહ વહન કર્યો કરે છે. જળાશયમાત્રમાંથી પવન તાપાદિકદ્વારાએ નિરંતર જળનું શોષણ થતું જાય છે ઇત્યાદિ હાંતો અનેક છે. સર્વનો સાર સિદ્ધાંત એ દે-દરદેજ ઘણુ ઘણુ કાળ બદલાય છે ને ગયેલો કાળ ફરી આવતો નથી. એમ અવસ્થાઓ દેહની બદલાયા કરે છે તેમ નિત્યપ્રલય ઉપર હાંત સૂક્ષ્મ વિવેકી જનનીજ હોય છે.

પ્રશ્ન ૧૨૪—નૈમિત્તિક પ્રલય તે કોને જાણ્યો ?

ઉત્તર—બ્રહ્માની રાત્રિને નિમિત્તે કરીને પાતાળથી લેઈને તે સ્વર્ગપર્વત ૧૦ દશ લોકોનો જે લય, અતળ, સુતળ, તળાતળ, વિતળ, મહાતળ, રચાતળ, પાતાળ, ભૂલોક, ભુવલોક, સ્વર્ગલોક, એનો જે લય તેને નૈમિત્તિક પ્રલય જાણ્યો.

પ્રશ્ન ૧૨૫—આત્મતિક પ્રલય (મહાપ્રલય) કોને જાણ્યો ?

ઉત્તર—શ્રીપુરુષોત્તમના ધામરૂપ જે અસૂરબ્રહ્મનું તેજ, તેને વિષે જ્યારે પ્રકૃતિપુરુષથી આરંભાને સર્વ લીન ચઈ જાય ત્યારે તેને આત્મતિક પ્રલય જાણ્યો.

પ્રશ્ન ૧૨૬—આસ્તિક કોને જાણ્યો ?

ઉત્તર—સર્વ લોકના કર્તાને સર્વજીવમાત્રને કર્મના ફલપ્રદાતા અને દિવ્ય અપ્રાકૃત છે. મૂર્તિ જેમની એવા જે મૂળ પરબ્રહ્મ તે, તેમના જે દિવ્ય અનંત

અવતાર તે સહિત માગીને તથા મૂળ એક બ્રહ્મ તેમ અગણિત સ્વરૂપે થઈ અસ-
ચર સર્વ પ્રાણી માત્રમા બિરાજે છે એવું જ્ઞાન ધરાવીને જે પુરુષોત્તમ પરબ્રહ્મને
સર્વોત્તમાવ રાખીને ભજતો હોય ને તેમના વચન (વેદશાસ્ત્ર, ગીતા, ભાગવતાદિ
પુરાણ સહિત-ઉપનિષદ-શ્રુતિ-સ્મૃત્યાદિની આજ્ઞાદૃષ્ટા) તેને વિષે દૃઢ વિશ્વાસ-
યુક્ત હોય તેને આસ્તિત્વ જાણવો.

પ્રશ્ન ૧૨૭—હૃલ્લ વસ્તુ કયી છે ?

ઉત્તર—જગતમા શ્રીકૃષ્ણ પરમાત્મા તેજ હૃલ્લ છે ને જેવા તે હૃલ્લ છે
તેવાજ તેમના પરમ એકાત્મિક લક્ષ્ય મહાનુભાવ ભગવદીય અને શ્રીસદ્ગુરુ પણ
હૃલ્લ છે. એટલુજ નહિ તે કદાચ મેળવ્યા હોય પણ તેમને આજખીને સેવા
વિષે દૃઢ પ્રીતિ રાખવી, એટલુજ નહિ પણ તે કહે તે પ્રમાણે સદા સર્વદા
વર્તણુ, એ પણ અતિશય હૃલ્લ છે ને સર્વથી હૃલ્લ તો એ છે કે એ મૂળ
પરબ્રહ્મની નિષ્કામ અચલિત પંરાલક્ષિ પ્રાપ્ત કરવી તે છે.

પ્રશ્ન ૧૨૮—જન્મ થવાનું મૂળ શું છે ?

ઉત્તર—અત કરણને વિષે ઝઢેલી એવી જે શુભ અશુભ વાસનાઓ તેજ જન્મ
લેવાનું મુખ્ય કારણ છે

પ્રશ્ન ૧૨૯—વાસના તે કેને કહિયે ?

ઉત્તર—સર્વજ્ઞાને વિષે કર્મની અધિ (ગાઠ) રૂપી જે વિષદ્વેષરૂપ વૃષ્ટા-
ઓની વૃત્તિ રૂપી જે વાસના (ઇચ્છા, અભિલાષા) અતઃમા જડાયા જેવી હોય
તે વાસના કહે છે.

પ્રશ્ન ૧૩૦ મોટા ઈવિ તેમણે મનુષ્યને કરવા ચોખ્ખું મુખ્ય કર્મ શું કહ્યું છે ?

ઉત્તર—જે કર્મ કરીને શ્રીકૃષ્ણ પરમાત્મા પ્રસન્ન થાય તેવું કર્મ તેજ કરવા
ચોખ્ખું કહ્યું છે. અનેક પ્રકારની ચતુરાઈ હડાપણુ હોય તો પણ જો શ્રીકૃષ્ણ પરમા-
ત્માને ન રીઝવ્યા ત્યારે તો એ સર્વ હડાપણુ અને ચાણુક્યપણુને પણ ધિક્કાર છે

પ્રશ્ન ૧૩૧—તમોશુષુ તે કેને કહિયે ?

ઉત્તર—અજ્ઞાન છે સ્વરૂપ જેતું, ને જેને વિષે મૂઢપણુ રહ્યું છે, ને હા અને
દેનારો, ને જીવોને સુખાવનારો એવો જે શુષુ તેને તમોશુષુ જાણવો

પ્રશ્ન ૧૩૨—રજોશુષુ તે કેને કહિયે ?

ઉત્તર—ગંગા (આસક્તિ પ્રીતિ) છે સ્વરૂપ જેતું, એવો ને ચચળ એવો ને
નાના (વિવિધ) પ્રકારની ક્રિયાને વિષે આસક્તિનો કરાવનારો ને વિષયને વિષે
જીવની વૃત્તિઓને ચોટાટી દેનારો એવો જે શુષુ તેને રજોશુષુ કહિયે

પ્રશ્ન ૧૩૩—સત્વશુષુ તે કેને કહિયે ?

ઉત્તર—રૂઢું છે જ્ઞાન તે જેને વિષે એવો તે પ્રકાશનો કરનારો ને આનંદનો
જ્ઞાને ને નિર્મળ પ્રસાદરૂપ એવો જે શુષુ તેને સત્વશુષુ કહિયે.

પ્રશ્ન ૧૩૪—સાત્વિક તપ તે કિયું જાણવું ?

ઉત્તર—શ્રીભગવાનને પામવાનું અર્થે કર્યું હોય ને પછી તે શ્રદ્ધાભક્તિએ તા હોય ને શ્રીકૃષ્ણ પરમાત્માની મૂર્તિને શ્રીકૃષ્ણ પરમાત્માની પ્રાપ્તિ માટે બા-કાંઈપણ ફળની ઈચ્છાએ રહિત એવું જે તપ હોય તેને આત્મિક તપ કહિયે.

પ્રશ્ન ૧૩૫—રત્નોગુણી તપ તે કોને કહિયે ?

ઉત્તર—પોતાની કીર્તિ વધારવાને અર્થે કર્યું હોય, ને લોકને વિષે પૂજાનું જ છે એક ફળ તે જેનું એવું જે તપ તેને રત્નોગુણી તપ બોલવું.

પ્રશ્ન ૧૩૬—તમોગુણી તપ તે કોને કહિયે ?

ઉત્તર—શત્રુ આદિક કોઈકે જીવના નાશ અર્થે અથવા બીજાને દુઃખાદિ ઉપદ્રવવાને અર્થે (જેમ કે મારણ મોહન ઉચ્ચાટન વશીકરણાદિ કરવા સાદું) કર્યું હોય તે દેવળ મૂંઝવણિયે કરીને (કોઈપણ પ્રકારના જ્ઞાનરહિતપણે કરીને) કર્યું હોય, ને પોતાને દુઃખરૂપ ફળનું દેનારું એવું જે ફળ, જેના થકી પ્રાપ્ત થાય, ત્યાં પ્રકારનું જે તપ તેને તમોગુણી તપ કહિયે.

પ્રશ્ન ૧૩૭—ચતુરુપોનો નિરંતર મત જગતમાત્રના જીવોને માટે કેવી તે વર્તેલો હોય છે ?

ઉત્તર—પ્રવાહી જીવોનું જન્મમરણ સંચુતિ ટૂંકી બીજી બીજી અને અજ્ઞાનતાની રૂપધિ પ્રાપ્તિ થાય તે સારું હરકોઈ જીવને શ્રીભગવાનની સન્મુખ કરવાને વિમુખ મોથી અલગ કરવા, ને આ લોકમાં તથા પરલોકમાં એ જીવનું અત્યંત કુદૃષ્ટિય એવા હિતોપદેશનું કહેવું તે રૂપી જે સહાનુ પદાપકારનું દાન દેવું એજ ચતુરુપના હૃદયે નિરંતર અભિપ્રાય રહેલો હોય છે. પોતે જેનું પ્રદાનનું મુખ હોલે છે તેનું સર્વ કોઈ પામે એવો આશય નિરંતર વર્તેલો રહે છે.

પ્રશ્ન ૧૩૮—સત્ શિષ્ય કોને કહિયે ?

ઉત્તર—પરમ એકાંતિક નિત્ય મુક્તજનો જે પ્રમાણે ભગવદ્ધર્મને વિષે જાણિત વર્તે છે તેવા ધર્મને વિષે કુશળ એવા જે સદ્ગુરુ તેમની શિક્ષાને અનુસરેલ નિરંતર વર્ત્યો કરે તેને સત્ શિષ્ય કહિયે.

પ્રશ્ન ૧૩૯—ચતુર પુરુષ કોને સમજવો ?

ઉત્તર—સીના કટાણે કરીને અને કાંચનાદિને દેખીને જે મોહને ન પામે તેજ પુરુષ જન છે. જગતમાં રીત પ્રસિદ્ધ છે કે, સ્ત્રી સર્વ વ્યવહારે ચતુર હોય પણ જેને પોતાના સ્વામીને રીઝવી તેની પ્રશન્નતા (કૃપા) ન મેળવી તો તે સર્વ પ્રકારવા યોગ્ય ગણાય તેમ સર્વ ઉપાયે કરીને પ્રભુને રીઝવવા એજ છે.

પ્રશ્ન ૧૪૦—વિશ્વાસ કરવા યોગ્ય નહિ એવો દીયો પદાર્થ છે ?

ઉત્તર—વિષ કરતાં પણ અધિક ઝેરરૂપ વિષય અને તેના નિવાસરૂપ સ્થાનની જે નારી તેનો કદિ પણ વિશ્વાસ ન કરવો.

પ્રશ્ન ૧૪૧—કયી તૃપ્તિ જીવ (બુદ્ધી) ચતી નથી ?

ઉત્તર—દેહની અર્ધ, પુદ્ગલ, જનવસ્થા ને તેમજ મૃત્યુની છે પણ તે સંમીપમાં આવ્યા છતાં પણ ધનાદિકની આશા, તથા અવવાની આશા તે તો કદી પણ અર્ધ થતીજ નથી.

પ્રશ્ન ૧૪૨—જગતમાં લાભહીન કોણ છે ?

ઉત્તર—શ્રીહરિ થકી વિમુગ્ધ હોય તેને લાભહીન બાણવો.

પ્રશ્ન ૧૪૩—સાચો લાભ તે કિયો બાણવો ?

ઉત્તર—શ્રીહરિની જે પ્રાપ્તિ તેજ ખરો લાભ બાણવો.

પ્રશ્ન ૧૪૪—સર્વગુણી કર્મ તે કોને કહિયે ?

ઉત્તર—રાજદેવાદિથી રહિત એવું ને રૂઢી યુદ્ધિયે કરિને કર્યું એવું ને પોતાના વર્ણશ્રમને યોગ્ય એવું કર્મ કર્યું હોય ને શ્રીભગવાન વિના બીજા કોઈપણ દેવના અનુસધાને રહિત જે કર્મ તેને સર્વગુણી કર્મ કહિયે.

પ્રશ્ન ૧૪૫—રત્નેશુણી કર્મ તે કોને બાણવું ?

ઉત્તર—દેવની અભિલાષાને વિષે યોગ્ય એવો જે ઉપાય તેણે યુક્ત, ને પ્રીતિએ સહિત એવું જે કર્મ તેને રત્નેશુણી કર્મ કહિયે.

પ્રશ્ન ૧૪૬—તમોશુણી કર્મ તે કોને બાણવું ?

ઉત્તર—હિંસામય એવું ને પોતાને હુઝાર થાય એવું હોય તેને ન જીવે, તથા પોતાનો નાશ થાય એવું હોય તેને ન જીવે, તથા પોતાનું જે ષળ તેને ન જીવે, એ પ્રકારે જોયા વિના ને તપામ કર્યા વિના જે પુરુષ કર્મ કરે છે તેને તમોશુણી કર્મ કહિયે.

પ્રશ્ન ૧૪૭—સર્વગુણી કર્તા તે કિયો બાણવો ?

ઉત્તર—ઉત્પાદે યુક્તા, અને ધીરતાયે યુક્ત, ને પોતાનું ધાર્યું થાય તથા ન થાય તો પણ તેને વિષે હર્ષ શોક ન પામે એવો, ને અહંકારે રહિત એવો, ને દેવની ઇચ્છાયે રહિત એવો જે કર્તા તેને સર્વગુણી કર્તા બાણવો.

પ્રશ્ન ૧૪૮—રાજસી કર્મનો કરનારો તે કિયો બાણવો ?

ઉત્તર—નિરતર પથ વિપથને વિષે આસક્ત એવો ને કિયાના દેવની ઇચ્છાવાળો જે પોતાના સ્વાર્થને અર્થે બીજાને પીડાનો કરનારો એવો ને હર્ષ શોકને પામનારો એવો જે કર્તા હોય તેને રત્નેશુણી કર્તા બાણવો.

પ્રશ્ન ૧૪૯—તમોશુણી કર્તા તે કિયો બાણવો ?

ઉત્તર—પારદામાં યથાપિ ચાલુજીના બંધાર હોય છતાં તેને વિશે હોયજીદિએ
કરીને લેવું તેવું નામ અમૂળ્ય કહે છે.

પ્રશ્ન ૧૫૧—ધૃત્યાં કોને કહે છે ?

ઉત્તર—બીજાની જે ન્દોટમતા તેને દેખી ન ખાયાય તેવું નામ ધૃત્યાં કહે છે ?

પ્રશ્ન ૧૫૨—કામના ઉદ્ભવ થવાનું મૂળ કારણ શું છે ?

ઉત્તર—મનને વિશે પંચ વિષયના અનુભવનો કરનારો એવો જે ધારૂપ
સંકેત તેજ કામનાનું મૂળ છે.

પ્રશ્ન ૧૫૩-૧૫૪—ચાતુ મરણ અથવા જીવન કોને લાગુ પડે ?

ઉત્તર—જીવેનો પુનઃ જન્મ ક્યારે પણ ન થાય, એટલુંજ નહિ, પણ જે
માતાએ જન્મ આપવા માટે ગર્ભરંધનમાં રાખી પ્રસન્ન્યો તે માતાને પણ ફરી
ગર્ભવાસનામાં આવવું ન પડે એવા ચાચા ભગવદ્ભક્તોનું મરણ તેજ ચાતુ મરણ.
અથવા અખંડિત જીવ્ય ગણાય છે.

પ્રશ્ન ૧૫૫—જન્મ્યો કોને લાલ્યો ?

ઉત્તર—જેવું ફરીથી મરણ ન થાય ને જેણે જન્મીને મનુષ્યદેહ ધરાવું
આકૃષ્ટ ચાર્યકૃષ્ણ પોતાનું ફરી બીજા જન્મને પણ એવા ભગવદ્ભક્તે માર્ગે
સંગાધ્યાએજ ચાતુ જીવન લાલ્યું.

પ્રશ્ન ૧૫૬—જન્મ ધર્મનું ચાકૃત્યપણું તે ક્યારે સમજવું ?

ઉત્તર—દેહને વિશે આત્મજીદિ તેનો ચર્વ મધારે ત્યાગ કરીને અને અસારૂપ
એવો જે જીવાત્મા તેને પોતાનું સ્વરૂપ માનીને પરમેશ્વરનો દેહ આપ્ય કરવો
એજ જન્મ ધર્મનું ચાકૃત્યપણું છે, કેમકે ચર્વ પદાર્થ માત્ર વિશે પોતાની સત્તા ન
માનતાં હું કર્યાપણું ને આ મદારૂ એ જે વાતની અદ્વંતામમતાના ત્યાગપૂર્વક
અર્ચના કરતાં ભર્તા ચંદર્તા પરબ્રહ્મનેજ ચર્વ આત્મનિવેદન અમ્યક રીતે અર્પો દેવું તે
પરમાત્માનો અંશરૂપ આત્મા તેણે અંશીરૂપ બ્રહ્મ તેમને ઉદ્દેશીનેજ તે પરબ્રહ્મના
વિતાર્થે નિષ્કામ જીદિએ ભગવદ્ભક્તોચરણ ચાલુજી ચત્પુરુષોના ચત્પુરુષમાં ફરીને
કરવું એજ ખરેખર જન્મ ધર્મનું ચાકૃત્ય છે.

પ્રશ્ન ૧૫૭—અસ્વશુભી જીદિ તે કયી લાગુ પડે ?

ઉત્તર—પ્રવૃત્તિકર્મ ને નિવૃત્તિકર્મ, તેના સ્વરૂપને જે યથાર્થપણે કરીને
જે જીદિ લાગુ પડે હોય તથા કરવા યોગ્ય અને ન કરવા યોગ્ય તથા ભયને અનુસર
તથા અધનને મોશ તથા ન્યાયને અન્યાય એ ચર્વના સ્વરૂપને યથાર્થપણે કરીને જે
જીદિ લાગુ પડે હોય તે જીદિને અસ્વશુભી લાગુ પડે.

પ્રશ્ન ૧૫૮—સ્વશુભી જીદિ તે કયી લાગુ પડે ?

ઉત્તર—ન કરવા યોગ્ય અને કરવા યોગ્ય એવું જે કર્મ તથા અધર્મ તેમને
યથાર્થપણે કરીને જે જીદિ લાગુ પડે ન હોય તે સ્વશુભી જીદિ લાગુ પડે.

પ્રશ્ન ૧૫૯—સ્વશુભી જીદિ તે કયી લાગુ પડે ?

ઉત્તર--જે બુદ્ધિ અધર્મને વિષે ધર્મને માનતી હોય તે જે અર્થ હોય તેને અનર્થ કરી નાખતી હોય તેવી બુદ્ધિને તમોશુણી જાણવી

પ્રશ્ન ૧૬૦--તમોશુણી લક્ષિત તે કયી જાણવી ?

ઉત્તર--પોતાના ગતુનો નાશ કરવાને અર્થે અથવા ખીલતુ અહિત કરવાને અર્થે શ્રીલક્ષ્મીપતિનુ જે લજન કરવુ તથા દલો કરીને જે લજન કરવુ તથા ગીલો ડોઠક દેવપૂજન કરતો હોય તેને દેખીને તેના ઉપર મત્તર લાવીને જે પૂજન કરવુ તેને તમોશુણી લક્ષિત જાણવી

પ્રશ્ન ૧૬૧--રજેશુણી લક્ષિત કયી જાણવી ?

ઉત્તર--રાજ્ય ધન આદિઃ ઐહિક માયિક સુખાદિની પ્રાપ્તિને અર્થે જે મકામપણે લગવાનની લક્ષિત કરવી તથા સાલોક્ય ગાયુજ્ય મામીખ્ય અને સાધિ એ આ મુક્તિની પ્રાપ્તિને અર્થે જે લક્ષિત કરવી તથા લોકને વિષે પોતાની કીર્તિ વધાવવા આદિ જે લક્ષિત કરવી તેને રજેશુણી લક્ષિત જાણવી

પ્રશ્ન ૧૬૨--સર્વશુણી લક્ષિત તે કયી જાણવી

ઉત્તર--પોતાના પાપોનો નાશ કરવાને અર્થે સમગ્ર પાપને નાશ કરનાર એવા જે શ્રીહરિ તેમની જે લક્ષિત કરવી તથા આ વસ્તુ શ્રીભગવાનને જાહુ પ્રિય છે ને આ પદાર્થ શ્રીભગવાનને અતિશય ગમે છે એવા પ્રકારે શ્રીહરિના સુખ મતોપને ગણપણનાજ સદરૂપે કરીને અતિશય શ્રદ્ધાએ સહિત શ્રીભગવાનનુ અપાર માહાત્મ્યજ્ઞાન જાણીને શ્રીભગવાનની અનન્યલક્ષિત કરવી તેને સર્વશુણી લક્ષિત જાણવી

પ્રશ્ન ૧૬૩--દર્શના અગ્ર સરખી ઝીલી બુદ્ધિ જેનો હોય એવો પુરુષ કેને જાણવો ?

ઉત્તર--પાતાલલોક થકી કરીને તે મૂળ પ્રકૃતિ પુરુષના લોક પર્યંત મર્વ લોકના વૈલવમાત્રને અગ્રિય જાણીને જે શ્રીહરિનેજ નિષ્કામબુદ્ધિએ અખડિત લજે તેને દર્શના અગ્ર સરખી તીક્ષ્ણ બુદ્ધિવાળો જાણવો

પ્રશ્ન ૧૬૪--મોલાગ્ર જેવી અથવા મૂસળતા અગ્ર લાગ સરખી સ્થૂળ બુદ્ધિ વાળો કેને જાણવો ?

ઉત્તર--શ્રીપરબ્રહ્મ પગતપર પૂર્ણ પુરુષોત્તમ વિના ૧૪ શાદ લોક લઈને પ્રકૃતિ પુરુષ પર્યંતના નાશવત સુખને વિષે સત્યપણાની બુદ્ધિ કરીને તેવા સુખોને જે મુજે છે તેને મોલાગ્ર અથવા મૂસળાગ્ર જેવી જડબુદ્ધિવાળો જાણવો.

પ્રશ્ન ૧૬૫--સત્ય વિષય તે કિયા જાણવા ?

ઉત્તર--યદ્યપિ પદ્યપર્વાતમક અવિદ્યા સખધી જે પદ્યવિષય તે જાદ્યમાન છે, તથાપિ શ્રીકૃષ્ણ ભગવાનનોજ જેમા સલમપણે હઠ સખધ ચાહુ હોય તેવા એટલે પરમાત્માને ઉદેશી તેમના સખધી જે શબ્દ, સ્પર્શ રૂપ, ગં ને ગંધના જે ભગવત્પ્રમાદી તુલ્યના જે પાત્ર પ્રકારના બ્રહ્મરસના વિષય તેજ માત્ર સત્ય છે ને

આતિપૂર્વક કૃષ્ણપ્રપત્તિવાળા તે જે જે દેશને વિષે વિચરતા હોય અથવા વાસ કરીને વિરાજતા હોય એવા જે દેશ, તથા ભગવદ્વતારે અથવા શ્રેષ્ઠભક્તિજ્ઞાનાદિ પંચના વૈષ્ણવાચાર્યોએ પધારીને પોતાના ચરણારવિદે કરીને અંકિત એવો જે દેશ, તથા શ્રીયમુનાળ, શ્રીગિરિરાજાળ, યૃદાવન, ગોધુલ, મથુરા, દારિકા આદિ સમ પુરીનાં મહાધામો તથા શ્રીવિષ્ણુપાદોદકી શ્રીગંગાળ આદિ લઈને સર્વ તીર્થો, તથા શ્રીકૃષ્ણ ભગવાનનાં મંદિર સંબંધી સમીપ એવો જે દેશ, શ્રીહરિ શ્રીસદ્ગુરુ અને વૈષ્ણવોના મંથનને પામ્યો એવા જે તે સર્વ દેશને તે ઉત્તમ સુદેશ જાણવો ?

પ્રશ્ન ૧૭૨—અસત્ દેશ તે કિયો જાણવો ?

ઉત્તર—આરે વેદ તથા શ્રીમદ્ભાગવતાદિક પુરાણ તથા ચારુવલ્ક્ય પરાશરાદિ મહાન ઋષિપ્રણીત સ્મૃતિ આદિ લઈને લગ્નવદ્ધર્મપ્રતિપાદક સર્વ સ્મૃતિઓને વિષે જ્યાં એવા જે વર્ણ આશ્રમના ધર્મપૂર્વક ભગવદ્ધર્મ તે થકી આવળા એવા જે પાપકર્મના આચરણ કરનારા જે દેશના રહેતા હોય એવો જે દેશ તે અસત્ દેશ જાણવો.

પ્રશ્ન ૧૭૩—સત્ કાલ કિયો જાણવો ?

ઉત્તર—શ્રીકૃષ્ણ, શ્રીરામચંદ્ર, શ્રીનૃસિંહલ, શ્રીવામનાવતાર આદિક જે શ્રીભગવાનનાં ઉત્સવ દિવસ તથા ૨૪ એકાદશીઓ શુદ્ધ ભાગવતધર્મપ્રણાલિકા ગિદ્દાંતાનુસાર વર્તન થતું હોય એવો જે કાળ તે સત્ કાળ જાણવો.

પ્રશ્ન ૧૭૪—અસત્ કાળ તે કિયો જાણવો ?

ઉત્તર—જે કાળને વિષે મનુષ્યોની મતિઓ મલિન વર્તતી હોય ને કેવળ અધર્મ તેજ સર્વ પ્રકારે વર્તતો હોય એવો જે કાળ તે અસત્ કાલ જાણવો.

પ્રશ્ન ૧૭૫—સત્ક્રિયા તે કયી જાણવી ?

ઉત્તર—આ લોક અને પરલોકને વિષે પોતાને સર્વ સુખને પ્રાપ્ત કરનારી એવી અને સ્વધર્મ જ્ઞાન ને વૈરાગ્ય એ ત્રણે અંગે કરીને યુક્ત એવી જે પરમેશ્વરની નવધા પ્રકારની ભક્તિ જેમાં દશમી પ્રેમલક્ષણાત્મક વરુદ્ધ સંયોગાનુભવ રૂપની મેહાસક્તિપ્રધાન એવી ભક્તિ શ્રી ભગવાનને પ્રસન્ન કરનારી જે ભગવદ્ધર્મપણી સર્વ ક્રિયા તેજ સર્વ પ્રકારે શુદ્ધ નિર્ગુણ સત્ ક્રિયા જાણવી.

પ્રશ્ન ૧૭૬—અસત્ક્રિયા તે કયી જાણવી ?

ઉત્તર—આ લોકને વિષે અને પરલોકને વિષે પોતાનું ભુકું કરે એવી અને જેણે કરીને શ્રીહરિ શ્રીસદ્ગુરુ કે સત્ગુરુષ સહ નહિ એવી જે ક્રિયા તે અસત્ક્રિયા જાણવી.

પ્રશ્ન ૧૭૭—સત્સંગતિ તે કયી જાણવી ?

ઉત્તર—શ્રીહરિને વિષે તથા ધર્મજ્ઞાન અને વૈરાગ્યાદિક પદ્મપતિ શુભે કરીને યુક્ત એવા જે શ્રીહરિના ભક્તજન તેમને વિષે પ્રીતિએ કરીને જે પ્રસંગ કરવો તેનું નામ સત્સંગતિ જાણવી.

પ્રશ્ન ૧૭૮—હુસંગ કેને જાણવો ?

ઉત્તર—સત્ધર્મે રહિત એવા જે અસત્પુરુષ તેમને વિશે જે પ્રસંગ તેને હુસંગ જાણવો.

પ્રશ્ન ૧૭૯—સત્ શાસ્ત્ર તે કિયું જાણવું ?

ઉત્તર—શ્રીરામકૃષ્ણાદિક લગવદ્વતારની દિવ્ય એવી ભૂતિઓ તથા જેમાં પરબ્રહ્મ ને તેમના અવતારોનું પ્રાકટ્ય, લીલા, ચરિત્રચુક્રત ધર્મ જ્ઞાન ને વેદાંશ્યાદિક ગુણચુક્રત એવી જે શ્રી લગવાનની અચલ સ્નેહાત્મક નિષ્કામ શુદ્ધિરૂપની લક્ષિત તેનું પ્રતિપાદન કરનારું એવું જે શાસ્ત્ર તે વેદાદિક સમાન ઉત્તમ સત્ શાસ્ત્ર છે એમ જાણવું.

પ્રશ્ન ૧૮૦—અસત્ શાસ્ત્ર તે કિયું જાણવું ?

ઉત્તર—જે શાસ્ત્રને વિશે શ્રીપૂર્ણપરબ્રહ્મ શ્રીકૃષ્ણ લગવાનનું ને ધર્મનું સુદ્ધિએ કરીને ખરું કર્યું હોય એવું જે શાસ્ત્ર તે સકલ, અસત્ શાસ્ત્ર લક્ષીને તેને સર્વથા અનાદર રૂપે ત્યાગ કરવો.

પ્રશ્ન ૧૮૧—સત્ દીક્ષા તે કંઈ જાણવી ?

ઉત્તર—વેદ શાસ્ત્ર પુરાણ ઇતિહાસ પંચરાત્રાદિ તત્ત્વ ગ્રંથ લાગવત ગીતા ઉપનિષદ વ્યાસસૂત્ર ને લગવદ્લક્ષ્મ્યાચો રચિત ભાષ્યો સ્મૃતિઓ આદિકમાં સ્થાપન કરેલો વર્ણ આશ્રમ ને ઉચિત મહાભાગ્યસંસ્કારપૂર્વક પરબ્રહ્મની પ્રાપ્તિ માટે સુમુક્ષુ દેવિનાં લક્ષણે ચુક્રત થઈ શુદ્ધ વૈદિક લક્ષિતમાર્ગના પ્રાચીન અનાદિસિદ્ધ સત્સંપ્રદાયોમાંથી પોતપોતાના રચિ અતુલ્લભતા પ્રમાણે શુભ વૈષ્ણવી દીક્ષા સ્નેહાત્ પૂર્વક લેવી-કે જે ઉપાયે આલવાથી બ્રહ્મનો સાક્ષાત્કાર સંબંધ થાય. મંત્રાર્થપૂર્વક થકણ કરી મંત્રના શબ્દો પરત્વે લક્ષ્યપૂર્વક બ્રહ્મસ્વરૂપના ધ્યાને પ્રવર્તમાન થઈ તેમના સ્મરણે સંયુક્ત થઈ અહિંસા આદિક રૂપ સત્ધર્મે પ્રવર્તમાન થઈ બ્રહ્મની શરણાગત પૂર્વક સર્વોત્તમનિવેદન કરી, જીર્વપુંડુ તિલક દાદશ સ્થાને ધરી, શુદ્ધનિર્ગુણ કરી શ્રીનુલસીલના ઢાળની લગવત્રસાદી એવડી કંઠી કંઠે ધારણ કરી તથા લગવદ્સુધાદિ પદ સુદ્રાચે ચુક્રત જોખીચંદનનાં ચિન્હ ધારણ કરવાં. સર્વ દીક્ષાઓમાં ઉત્તમ દીક્ષા આત્મધર્મની તો વૈષ્ણવ દીક્ષા તેજ છે ને તે સર્વોપરી છે.

પ્રશ્ન ૧૮૨—અસત્ દીક્ષા તે કયી જાણવી ?

ઉત્તર—જેનું વિધાન વેદશાસ્ત્રાદિ શુદ્ધ સત્ત્વ પુરાણ ઇતિહાસ સ્મૃત્યાદિ પંચરાત્રમાં ન હોય એવા પાપકર્મરૂપની કોઈ પણ દીક્ષા ન લેવી. જે અસત્ દીક્ષામાં આગળ વેશ ભુજા કુરૂપ થઈ જતો હોય, જેમાં વાંમમાર્ગી કુટુંબ પંથી કોલ માર્ગી આદિમાં અધર્મોચરણ માર્ગે દોરવતા હોય તેવી દીક્ષાએ કરીને શાંતિ તો થાય નહિ, પણ ઉલટો ઉદ્દેગ થાય ને વિષ્ણુલગવાનનું ચિન્હ રહિત એવી જે દીક્ષા તે તો અસત્દીક્ષા જાણવી.

પ્રશ્ન ૧૮૩—સત્ મંત્ર તે કિયો બહુવો ?

ઉત્તર—મંત્રનો જે બહુનારો તેની બુદ્ધિને શાંતિનો કરનારો એવો ને શુદ્ધ સંસ્કૃતબોધી નિશુલ્બ એવા પરબ્રહ્મ ને તેમનાજ અવતારાદિક સ્વરૂપના ચતો નામે યુક્ત-તમ અથવા દાસધર્મે શરણાગતિપૂર્વક સર્વાત્મનિષેદન બ્રહ્મસંબંધ થાય એવો કહેનારો જે મંત્ર તેજ સત્ મંત્ર બહુવો. ઉત્તમ બ્રાહ્મણાદિકને માટે પ્રણવબીજ મંત્રોચ્ચારસંયુક્ત તે પરબ્રહ્મનો મંત્ર તેનું ગ્રહણ કરવું તેજ અમંત્ર છે.

પ્રશ્ન ૧૮૪—અસત્ મંત્ર કિયો બહુવો ?

ઉત્તર—રજોગુણી અને તમોગુણી વા મલિન હૃદ્ દેવતાદિકના મંત્રો મારણ, મોહન, ઉચ્ચાટન, વશીકરણાદિક બીજાને ઉપદ્રવ કષ્ટ કે હાનિ દેનારા તેવા મંત્રોને સદા અસત્મંત્ર બાળી તેનો અનાદર કરી ગ્રહણ કરવા નહિ.

પ્રશ્ન ૧૮૫—સત્ધ્યાન તે કીયુ બહુવું ?

ઉત્તર—મૂળ અનાદિ સ્વયંસિદ્ધ જે પરાત્પર ત્રિગુણાતીત પરબ્રહ્મ પુરુષોત્તમ અને તેમના અવતારો અને તેમની ૮ પ્રકારે શિષ્ટ પુરુષોએ સિદ્ધાંત સ્થાપન કરેલી મૂર્તિઓ તથા સ્વયંભૂ ભાવી મહા અવતારો (જેવા કે શ્રીજગન્નાથરાયજી, શ્રીનાથજી, શ્રીરંગજી, શ્રીજગદ્ગીરનાથરાયજી) તથા ભક્તિમાર્ગના આચાર્યોએ નિરૂપણ કરેલી રીતે પૂર્ણ પરબ્રહ્મની અપ્રાકૃત દિવ્ય વેદ શ્રુતિસ્મૃત્યાદિપૂર્વક પ્રતિ-પાદન કરેલી રીતે તેમનું એકાગ્રચિત્તે સંલગ્ન મનબુદ્ધિ વૃત્તિ તાદાત્મ્યેકપણે જોડીને તદ્રૂપ રસાત્મક ભાવે ધ્યાન કરવું.

પ્રશ્ન ૧૮૬—અસત્ ધ્યાન કિયું બહુવું ?

ઉત્તર—મનઃકલ્પિતપણે સત્શાસ્ત્રના સિદ્ધાંતોથી વિરુદ્ધપણે અથવા ઉપાસન ધ્યાન કહ્યું તેથી ઉલટ કિવા વિપરીતપણે માયિક પ્રાકૃત ધ્યાન અન્ય છવાદિકનું કરવું તે તે અસત્ ધ્યાનજ સમજવું.

પ્રશ્ન ૧૮૭—શાસ્ત્ર શું હોય તે કહેવાય ?

ઉત્તર—ધર્મ, અધર્મ, કામ, ને મોક્ષ અથવા ધર્મ, અર્થ, કામ ને મોક્ષ એ પદાર્થના યોધને જે કરતું હોય તે શાસ્ત્ર બહુવું.

પ્રશ્ન ૧૮૮—જે પુરુષ પોતાના આત્મતિક કલ્યાણની વૃત્તિવાળો હોય અથવા પોતાની વૃદ્ધિ થાય એવું જે ઈચ્છતો હોય તેણે શું કરવા યોગ્ય છે.

ઉત્તર—પૂર્વે કહ્યા એવા જે મત્ દેશ સત્કાલ, સત્ક્રિયા, સત્સંગ, એ આદિક જે આરાં આઠ વાનાં તેમનો જોગ રાખવો, એ કરવાથી ત્યાં આત્મતિક કલ્યાણ તથા સર્વ શુભવૃદ્ધિ જરૂર થાયજ.

પ્રશ્ન ૧૮૯—ધર્મનો સર્ગ તે કિયો ?

ઉત્તર—શમ તથા મત્ય, શૌચ તથા દ્વંષા, તપ તથા દાન, દયા તથા દમ, એ આદિક મર્વે ધર્મનો સર્ગ બહુવો.

પ્રશ્ન ૧૯૦—અધર્મનો સર્ગ કિયે બાલુવો ?

ઉત્તર—ખોદું બોલવું તથા ક્રોધ કરવો તથા અવહિંસા તથા મતિનપણું તથા ઇદ્રિયોનો નિગ્રહ ન કરવો એ આદિ સર્વે અધર્મનો સર્ગ બાલુવો.

પ્રશ્ન ૧૯૧—શમ તે કેને કહ્યો ?

ઉત્તર—શ્રીભગવાનના સ્વરૂપને વિષે સ્થિરતાએ કરીને બેઠાયલી જે શુદ્ધિ તેને શમ કહ્યો.

પ્રશ્ન ૧૯૨—દમ કેને કહ્યો ?

ઉત્તર—પોતાનો જે ઇદ્રિયોને સમૂહ તેમને વિષય ક્ષત્રી પાછાં વાળી તે સવ મનોનિગ્રહ કરીને નિયમમાં રાખવો તેને દમ કહ્યો.

પ્રશ્ન ૧૯૩—ધીરજપણું તે કેને બાલુવું ?

ઉત્તર—શિશુ ઇદ્રિય અને અબુદ્ધિ એ બન્નેને વિશેષપણે કરીને જે અતણુ તેને ધીરજ (ધૈર્ય) બાલુવું.

પ્રશ્ન ૧૯૪—તિતિક્ષા કેને કહે છે ?

ઉત્તર—દેહને વિષે દુઃખ આવી પડે તે સહન કરવું તેને તિતિક્ષા કહે છે.

પ્રશ્ન ૧૯૫—શોચ કેને કહે છે ?

ઉત્તર—શુદ્ધ પવિત્રતા આચારપૂર્વક દર્મને વિષે અંગપણે કરીને જે વર્તાવું તેને શોચ કહે છે.

પ્રશ્ન ૧૯૬—અત્ય કેને કહે છે ?

ઉત્તર—અત્ય પરબ્રહ્મ છે, જે તેનાંજ અણિલાત્મક ચરાચર સર્વસ્વરૂપ છે, તે એકજ સત્ય પરબ્રહ્મ સર્વમાં કાર્યકારણપણે વ્યાપક અનુસ્મૃત રસા છતાં તે અલિપ્ત નિર્વિકાર શુદ્ધ અદ્વૈત વ્યતિરિક્ત (બુદ્ધિ) પણ છે. તેજ અણિલાત્મક બ્રહ્મનો અંશરૂપ આત્મા છે તે પણ સત્ય છે. તેમાં આત્મશુદ્ધિનિષ્ઠ, સ્પષ્ટ નિઃસંદેહ, જેનો જીજ્ઞે અર્થ ન થઈ શકે એવું સત્ય ધર્મ નીતિયુક્ત જે વચન બોલવું તે અત્ય કહેવાય છે.

પ્રશ્ન ૧૯૭—તપ કેને કહે છે ?

ઉત્તર—કાયાવડે કરીને, વાત્સલ્યવડે અને મને કરીને તપ થાય છે. દામનો જે ત્યાગ કરવો તે પણ તપનુંજ (અંગ) લક્ષણ છે.

પ્રશ્ન ૧૯૮—ઐષ દાન કેને કહ્યો ?

ઉત્તર—મોંઘાના અને કાળના ભયે રંધિત એવું જે આત્મીયક દયાણું જે મોહરૂપ અથવા મોહાધિક દીકુષ્ણના ભગવાનને સ્વરૂપાનંદનું જે દાન કરવું તે સર્વથી ઐષ દાન બાલુવું.

પ્રશ્ન ૧૯૯—સ્વર્ગસ્થાનરૂપ સ્થિતિ તે આને આ દેહમાં ક્યારે થઈ શકે ?

ઉત્તર—ક્યારે ક્યારે ચતુર્વિધનો ઉદય થતો હોય ત્યારે ત્યારે સ્વર્ગસ્થાન મનિરૂપ કહ્યો.

પ્રશ્ન ૨૦૦—શ્રોત્રવાન કેને કહિયે ?

ઉત્તર—કોઈક જાતનો બૂઝો સ્વભાવ પડી ગયો હોય તેને જીતવો તેજુ નામ શ્રોત્ર કહેવાય.

પ્રશ્ન ૨૦૧—મમત્ર જગતને કોણ જીતી શકે ?

ઉત્તર—જે પોતાના મનને જીતી લે તેણે અખિલ જગતને જીત્યું એમ કહેવાય.

પ્રશ્ન ૨૦૨—માહાત્મ્યે મહિત જ્ઞાન તે કેને કહ્યું છે ?

ઉત્તર—શ્રરાક્ષર અને લોકલોકાદિ પર્વતથી ઉદ્ભવીને આગળ જતાં સ્વેતદ્રોષ ત્રીરાષ્ટિ અને બદરીકાશ્રમાધિપતિ નરનારાયણાદિ અનંત કોટિ બ્રહ્માંડે બ્રહ્માંડે બિરાજતા શ્રોહરિનાં અગણિત સ્વરૂપોથી પણ પર, રમાવૈકુંઠાદિ રૂપાનથી પણ શ્રેષ્ઠ, અપરામત્ક નારાયણ વિષુ પ્રધાનપુરુષ આદિ ત્રિવિક્રમ વિરાટ સ્વરૂપાદિથી પણ શ્રેષ્ઠ મર્વ ધામને મર્વ સ્વરૂપોની ઉત્પત્તિનું મૂળ સ્થાન, ને સર્વ અવતારના અવતારી ત્રીરાષિકારમણ શ્રીવેદ્યુતિરૂપ શ્રીગોપીજનોના પ્રાણુવલ્લભિય જોલોકે અધિષ્ઠિત વિરાજમાન શ્રીકૃષ્ણચંદ્ર સ્વયંપ્રકાશિત, જેમના એક એક નખચંદ્રને વિષે કોટાનકોટ સૂર્યસમપ્રભાકરૂપ તેજની કાન્તિએ કરીને સર્વ પ્રકાશમાત્રને ઝાંખાં કરી નાખે એવા અગણિત પ્રકાશવત પરમાર્નવ છતાં ભકતોને શીતળ કોટાનકોટિ ચંદ્રના મમાન મધુરામૃતથી વૃષ્ટિરૂપ અદેયદાનકર્તા ને સર્વ કારણના પણ કારણ, મહાકારણના પણ મૂળ સ્વેચ્છાએ સર્વ કરનાર એવા જે મહા નિત્ય મહાન દિવ્ય અમાયિક મૂર્તિ શ્રીકૃષ્ણ ભગવાન, તે પોતે જીવોના કલ્યાણને અર્થે દેવી જીવોને નિજ સ્વરૂપની પ્રાપ્તિ કરાવી આનંદદાન વાસ્તે, તથા ધર્મના સ્થાપનને અર્થે અધર્મનું છેદન કરવા સારૂ, તથા માધુ, ગાય, પૃથ્વી આદિક દેવીજનો ઉપર અનુગ્રહ કરવા, તેમને મુખ દિતાર્થ કરવા આદિ અનેક કારણને અર્થે પોતાના અનંત પ્રકારના અભાવ નિત્ય પ્રતાપને મતાડીને પ્રાદૃતવત માનુષી લીલા ચલા કરતાં મહા નિર્દોષ પૂર્ણ સદ્ગુણ વિશદ દિવ્ય મૂર્તિ શ્રીકૃષ્ણ જેવા ભગવદવતાર બિરાજમાન છે તેને મહા મર્વદા નિત્ય અખંડિત છે એ પ્રકારે જે જાણુને તેને માહાત્મ્યે મહિત જ્ઞાન કહીએ.

પ્રશ્ન ૨૦૩—અત કરણની શુદ્ધિ થવાનો શ્રેષ્ઠ ઉપાય તે કયો છે ?

ઉત્તર—મત્ર અને અસત્ર એવા જે ભોગ તેમને યથાર્થપણે જાણીને સત્સાચ તેમણે પ્રતિપાદિત એવા જે સત્ર વિષયના ભોગ તેમને ભોગવવા તે સત્સાચ તેમણે પ્રતિપાદન કર્યા એવા જે અસત્ર વિષયભોગ તેમને મર્વથા ત્યાગ કરવો એ અતંકરણની શુદ્ધિ થવાનો ઉપાય છે. અથવા શીભગવાન મળથી જે વિષયને ભોગવવા, તે ભગવાનના સંગધથી મહિત એવા જે મર્વ અસત્ર પંચવિષયભોગ તેનો મર્વથા ત્યાગપણે છોડવો એ અતંકરણની શુદ્ધિ થવાનો ઉપાય છે.

પ્રશ્ન ૨૦૪—શુદ્ધનું શું લક્ષણ છે ?

ઉત્તર—અર્થમાત્રનું આશયપણ ને સર્વ વ્યવહારનું હેતુપણ જે જોલનારી સત્તિ સ્વરૂપ એ આદિકર્તુ જણાવી દેવાપણ ને અકાશને વિષે રોકાપણ ને આકાશની માત્રાપણ એ શુદ્ધનું લક્ષણ છે,

પ્રશ્ન ૨૦૫—રૂપાનું શું લક્ષણ છે ?

ઉત્તર—ઉપનિષદોમાં શીતળપત્તું ને કઠલાપત્તું ને દોમળપત્તું ને ત્વચા ઇન્દ્રિયે કરીને પ્રલભ્ય કરવાપત્તું ને વાયુનું માત્રાપત્તું એ રૂપાનું લક્ષણ છે.

પ્રશ્ન ૨૦૬—રૂપનું શું લક્ષણ છે ?

ઉત્તર—અર્થ પદાર્થમાત્રના આકારનું જગ્યાથી દેવાપત્તું ને દેશ કાળ ને જાતિ ને ગુણ તેમજે કંઈને અન્ય અવસ્થાને ધારવાપત્તું ને નેત્રે કંઈને પ્રલભ્ય કરવાપત્તું ને તેજનું માત્રાપત્તું એ રૂપનું લક્ષણ બાબતું.

પ્રશ્ન ૨૦૭—રસનું શું લક્ષણ છે ?

ઉત્તર—જળનું માત્રાપત્તું ને માધુર્ય ને તીષ્ણપત્તું ને કથાયતાપત્તું ને ખારા પાતું ને કંઠવાપત્તું ને જીહ્વા ઇન્દ્રિય કંઈને પ્રલભ્ય કરવાપત્તું એ રસનું લક્ષણ છે.

પ્રશ્ન ૨૦૮—ગંધનું શું લક્ષણ છે ?

ઉત્તર—પૃથ્વીની માત્રાપત્તું ને સુગંધપત્તું ને દુર્ગંધપત્તું ને પ્રાણ ઇન્દ્રિયે કંઈને પ્રલભ્ય કરવાપત્તું એ જે તે ગંધનું લક્ષણ બાબતું.

પ્રશ્ન ૨૦૯—પૃથ્વીનું લક્ષણ શું છે ?

ઉત્તર—સ્થાવર જંગમ પ્રાણિમાત્રના ચરીરનું પ્રસવવાપત્તું ને લોકે કંઈને સ્થાનકપત્તું ને દેહધારિમાત્રને ધરી રહેવાપત્તું ને આકાશાદિક જ જનને વિભાગ કરવાપત્તું એ પૃથ્વીનું લક્ષણ બાબતું.

પ્રશ્ન ૨૧૦—જળનું લક્ષણ શું ?

ઉત્તર—પૃથ્વી આદિક દ્રવ્યનું પીંચીભાવ કરવાપત્તું ને પૃથ્વી ચણે બંદુપત્તું ને આદ્ર કરવાપત્તું ને તૃપ્તિ કરવાપત્તું ને મૃદુતાનું હેતુપત્તું ને તરરયાને તાપનું સરવાપત્તું પ્રાણિમાત્રનું જીવવાપત્તું એ જળનું લક્ષણ છે.

પ્રશ્ન ૨૧૧—તેજનું લક્ષણ શું ?

ઉત્તર—પચાવવાપત્તું, ને પ્રકાશ કરવાપત્તું, ને રચાવિનું પાત કરવાપત્તું, ને સુધાપત્તું ને તૃપાપત્તું ને કાષ્ઠાદિકનું લક્ષ્ય કરવાપત્તું ને સુકાવી નાંખવાપત્તું ને જીવ દ્રવ્યનું રૂપરસ કરવાપત્તું શીતને સરવાપત્તું એ તેજનું લક્ષણ છે.

પ્રશ્ન ૨૧૨—વાયુનું લક્ષણ શું ?

ઉત્તર—તૃણપત્તું એ આદિકને ભેંતું કરવાપત્તું ને વૃક્ષાદિકને કેપાવવાપત્તું ને શબ્દાદિક પાંચ વિષયનું જાનેન્દ્રિયાદિ પ્રત્યે પગાડવાપત્તું એ વાયુનું લક્ષણ છે.

પ્રશ્ન ૨૧૩—આકાશનું લક્ષણ શું ?

ઉત્તર—અગ્નિમાત્રને દેહની આદીથી દોર ને દેહની લકારની દોર અવકાશ દેવાપત્તું એ આકાશનું લક્ષણ છે.

પ્રશ્ન ૨૧૪—કલ્યાણનો હેતુ કોણ છે ?

ઉત્તર—અનુભવ સંસ્પર્ષી મુર્તિને ધારણ કરનારા જેવા જે ઇન્દ્રિયાદિક મગવત-વનાર તે વધા તે શીષ્ટાન્તની જાનેન્દ્રિયો પરાબલિને પ્રવર્તેલી વિરતાર કરી રવત

વર્તન કરી બીજાને ઓઘ લેવા યોગ્ય આચરણની છાપ જણીત બેસાડનારા એવા સંપ્રદાયના આચાર્યો શ્રીસદ્ગુરુ તથા એવા શ્રીહરિને શ્રીઆચાર્યોના કૃપાપાત્ર પરમ એકાંતિક લક્ષ્મણો તથા એવી શ્રીકૃષ્ણ પરમાત્માની અને તેમના એકાંતિક ધર્મ પ્રવર્તક આચાર્યોની પ્રતિમા એ સર્વે કલ્યાણના હેતુરૂપ છે.

પ્રશ્ન ૨૧૫—વૈરાગ્ય ત્રણ પ્રકારે, ઉત્તમ, મધ્યમ અને કનિષ્ઠ હોય છે તેના આ લક્ષણો છે?

ઉત્તર—ઉત્તમ વૈરાગ્યવાન હોય તે ભગવતની ઇચ્છા વાં આજ્ઞા અનુસારે કે પોતાના પ્રારબ્ધ કર્મવશે કરીને વ્યવહારમાં રહે પણ તેમાં જનક વિદેહીની પેઠે તે વ્યવહારમાં આસક્તિરહિત રહે અને પોતાના પ્રારબ્ધાનુસારે પંચ વિષયના ભોગ પ્રીતિયે રહિત ઉદાસીયુક્ત ભોગવે અને વિષયને વિષે નિરતર દોષનેજ દેખતો રહે ને વિષયને ગત્રુ જેવા બાંધે અને સંત, સતસાચ અને ભગવાનની સેવાનો નિરતર સંગ રાખે અને કદાચ દેશકાળ પાત્ર ક્રિયા સંગ આદિ વિપરીત વિષમાપત્તિ આવી પડે તો પણ એની ઉપર કદી સમજણ તે નિરતર દૃઢ કાયમ રહે તે ઉત્તમ વૈરાગ્ય છે મધ્યમ વૈરાગ્યવાળો ઉપરનાં લક્ષણોવાળો દેશ, કાળ, ક્રિયા, પાત્ર, સંગ મળે ત્યાં સુધીજ તે દૃઢપણે રૂપણ કંઠણ વિષમાપત્તિમાં વૈરાગ્ય મંદ પડે તેને મધ્યમ જાણવો. કનિષ્ઠ વૈરાગ્યથી તો ચારા પાંચ વિષય પાત્ર ચાચ ત્યારે તે ભોગવવામાં આસક્તિયુક્ત બાંધાઈ જાય તેને મદ વૈરાગ્યવાન જાણવો.

પ્રશ્ન ૨૧૬—મત્પગમાં વિવેકીજન કેવી રીતે વર્તે છે?

ઉત્તર—દિનદિન પ્રત્યે પોતાના અવશુભને દેખે. અને શ્રીભગવાન આચાર્ય અને લક્ષ્મણને વિષે સદાજ સદ્ગુણીજ દેખે અને સંત મહાત્મ પુરુષો સંગત કરાવે તેમાં ગર્વના ધર્મ હિતને સાફ કંઠણવચન કહે, તો તેથી માત્ર ન દુહોતા અતિશય ચાલુ થાય અને એથી અધિક કંઠણ વચન કહેતા જાય એવી વાંછના રાખી શ્રવણ કરી પરમ, અનુચલ માને, પ્રપચથી વૈરાગ્યનિષ્ઠ રહી માન-લડાઈ-અરિયા આદિ દુર્ગુણોના ત્યાગ કરી લોભ, લાલચ, પ્રતિષ્ઠામાનને રચ પણ ન ઇચ્છે, અને મહાત્મ પુરુષો જેને કહે તે સર્વ વચનો ઉપર દૃઢ વિશ્વાસ પ્રીતિ સંયુક્ત રાખે.

પ્રશ્ન ૨૧૭—વારવાર જીવને જન્મ લેવો પડે છે તેનું કારણ શું?

ઉત્તર—પ્રીતરૂપ રહેલી વાસના તે વડે જન્મ થાય છે.

પ્રશ્ન ૨૧૮—વાસનાની અકુરીઓ કયાથી સ્ફુરે છે?

ઉત્તર—મનથી સફરૂપ ત્રિકરૂપ હોય થાય છે તેમાંથી વાસના સતત ચાલુ રહે છે.

પ્રશ્ન ૨૧૯—જ્ઞાનનાનું રૂપ શું છે?

ઉત્તર—પહેલાં જે જે પ્રકારના પાંચ વિષયને ભોગવ્યા હોય દીઠા હોય કે આભળ્યા હોય તેની અંતઃકરણને વિષે ઇચ્છા મર્તે તે વાસનાનું રૂપ છે અને જે ભોગવ્યા નથી એવા ઉત્તમ ભોગ ભોગવવાની અંતરમાં તૃષ્ણા ઉદભવતી હોય તે પણ વાસનાનું રૂપ છે.

લેખાનુક્રમ.

ક્રમિક સ. ૧૯૯૦.

વિષયો.	પૃષ્ઠ.	વિષયો.	પૃષ્ઠ.
૧. મનતામુપૈતિ . . .	૨૬૩	૯ શ્રીકૃષ્ણજયંતી ..	૨૭૪
૨ ચિરંતનો ...	૨૬૩	૧૦. શ્રીકૃષ્ણનાથ .	૨૭૪
૩ મગલપણને પામે છે ...	૨૬૫	૧૧ વિપરીત દશા ...	૨૮૧
૪. યુગ્મોનો ધર્મ	૨૬૬	૧૨ વજ્રવૈદને આપી ન	૨૮૭
૫. મેવા અને પૂળ ...	૨૬૯	૧૩ ચર્ચાપત્રો ..	૨૮૫
૬ ભગવતસંગ ...	૨૭૦	૧૩. શ્રીનાથદ્વારા પ્રકટ	૨૮૮
૭ માહાત્મ્યગાન ...	૩૭૧	૧૫. સાપ્રદાયિક પ્રવૃત્તિ	૨૯૦
૮ ભક્તને પ્રાપ્ત્ય હોય ...	૨૭૫	૧૬. પિતૃ મન્થનજીવી	૩૫૫ ૨

“ પિતૃમન્થનજીવિ ”

પુનિત વિનાશ પ્રેમાયુ અનિન્યા વિકસિત યજ્ઞેના,
 પોતાના જનકના આનાકિત વ્યાવહારિક જ્ઞાનમા અપેવા,
 શુદ્ધદેવ ભાગ્યના સુપ્રતિષ્ઠિત સ્વારૂઢ નિમગ્ન બનેના,
 સુધ્ધુ વે વિહિત આગા પાળીને મેટામા આણુમૂના મહેના
 દયારામભાઈ કૃત દેવી પ્રમદી જનતાને સુધ્ધુ સંભળાવના,
 નવીનતામા જનતાને પ્રામાદિક વ્યાપ્તિનુ યથાગ્રિથન દાન કૃત
 અભ્યર્ચના સહિત શુદ્ધદેવ બલરાદનું પાલન-પોષણ કરતા,
 આર્થિકસુખમા પકાઇને દર્શાવતી વંશજીવી જનતાને હમાનત
 શુ વિશે, એવા વિચિત્રાણુ પુરુષને માનિધ્યમા જોવાથી,
 સુધ્ધુ પામે રાખી, દર્શાવતી વંશજીવી કુનીન હીરો મળી,
 પ્રેમાયુ નયન પટામથી ઝરમરતા સ્ત્રીરો રેનાથી,
 પ્રેમિસત ભાવુની પ્રેમિસતા યજ્ઞાસાને શેકમય કરી નથી ?
 અરે ! વિશે, અમ રક આપની મામામા ગોદરાખના,
 એક સામારિક ત્રિયિત્રી જનતા સમક્ષ સંગઠન કરાવના,
 શ એઓથી ॥ સુધ્ધુને પ્રેમાયુમા જીવંતીએ ન બસા,
 શુ પિતૃસત્ય વના અભિનયોને મલા રીએ ન રાખના ?
 શ આપના અકિત વ્યાધિને ધનવતરી પહોચતા નહિ હોમે
 શ જવર-ખાસીનો એવો પ્રતાપ કે માનિધ્યમા અવાપ,
 શુ આપની મયામા ગોદરાખના એવો એ મમજતા હમે,
 શુ દર્શાવતી જનતા કાળે પ્રેમાયુ-રેડી રેનાનું નહીં કર્યું .
 હે વિશે અમ પામર જીવજ કૃપાદાન આત્મદાન કરો,
 પૂજ્ય પિતાશ્રીના આચાર-વિચારને અનુસરનારો બનાવી,
 પૂર્ણ કૃપાથી વેદિન-સચિત કિંવાવાનાનિ અનુસરત કરી,
 પાતુ આપની પાસે આસંગો ન રાખતા સ્વાચ્છ મળી
 આપના સરોજ સુમયગળમા પિતૃમન્થનજીવિ અર્પુ છુ
 જીવજીવાલ જગતજીવાલ જોથી, હોમોઈ-મનાપેર ચક્રન
 (માર્ગના પરિણિતના પ્રપાન)

श्रीवाक्पतिपादा विजयन्तान्तमाम् ॥

चप ८.

अं ८.

शुद्धाद्वैत

अने

शक्तिः

१८८०.

श्रीयज्ञसाम्

४५५.

सहितमार्तः.

अमङ्गलं मङ्गलतामुपैति ।

दैवी निशा याम्यादिशं गतोऽर्कः शेते हरिर्माप्रलिके निषेधः

कपालिमासः समलं दलं च कायाष्टमी पङ्गुगतिर्विषयः ॥१॥

निर्दोषकालः शुभकर्मवर्ग्यः कारागृहं कंसमहासलस्य ।

प्राफट्यतः कृष्णविभोः स्म सर्वम्-अमङ्गलं मङ्गलतामुपैति ॥२॥

यद्विद्वत्तं नाम जना विदन्ति यत्परतः तान्ति सर्वेयमायाः ।

यामे प्रयाणे ज्वनितं सरस्य यमङ्गलं मङ्गलतामुपैति ॥३॥

स्वनेऽपि यदर्शनतोऽशुभं स्याद् यदाहतिर्ना जनतोपदेतुः ।

श्रीरामकल्या स्म कुले कर्पानाम्-अमङ्गलं मङ्गलतामुपैति ॥४॥

रथोदकं यन्मलिनं सदैव क्रमेव्यगतादलसङ्गदुष्टम् ।

भागीरथोसङ्गनतः पवित्रम्-अमङ्गलं मङ्गलतामुपैति ॥५॥

धारं जलं यद्ववणाम्बुरारोः स्वादुभवेदास्यगमन्नुदानम् ।

स्याजीवनं रथावरजङ्गमानाम्-अमङ्गलं मङ्गलतामुपैति ॥६॥

यदोर्ध्वापानरतं कुलं यद् यथातिना शतमराग्ययोग्यम् ।

प्राफट्यतन्तस्य जगन्निमन्तुर्-अमङ्गलं मङ्गलतामुपैति ॥७॥

चिरन्तनेन.

(१) यद् "द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया" युता तु सम्पन्च उदात्तस्ते ।

रे जीव ! तेनैव कथान मेरी स्वस्तीयमिमेग चिरन्तनेन ॥१॥

पितामर्हा देवगतिं प्रयातो मुस्तेद्वन्ती पितरौ च यातौ ।

रे जीव ! कृपेन कथान मेरी स्वस्तीयमिमेग चिरन्तनेन ॥२॥

वामाङ्गभूता गृहिणी गता चां गता अनेके गुरवश्च मान्याः ।
 सार्धं सदा संव्यसतात्र मैत्री वधान मित्रेण चिरन्तनेन ॥३॥
 विहाय याता यद्वयो भवन्तं विहाय यातासि तथैव शेषान् ।
 सदा स्थिरेणैव वधान मैत्री श्रीकृष्णचन्द्रेण चिरन्तनेन ॥४॥
 कथा शुभा भागवते पुराणे स्कन्धे चतुर्थेऽस्ति पुरञ्जनस्य ।
 हंसोक्तिमाधाय वधान हंसेन मित्रेण चिरन्तनेन ॥५॥
 विद्युच्चलं जीवनमस्ति जन्तोरात्रलोकालोककलं चलं च ।
 सख्या सदा पूर्णतमेन तेन वधान सख्यं तु चिरन्तनेन ॥६॥
 य ईक्षते त्वां न तमीक्षते त्वं नुहत्तमं सर्वजनस्य नित्यम् ।
 भजस्व तं, तेन वधान मैत्री मित्रेण कृष्णेन चिरन्तनेन ॥७॥
 यः सर्वरूपोऽपि विलक्षणश्च सर्वेश्वरः सर्वगतश्च कृष्णः ।
 सदा स्वकीयार्तिहरेण मैत्री वधान तेनैव चिरन्तनेन ॥८॥
 नेत्रस्य नेत्रं मनसो मनश्च यत्प्रेरिता वागसवश्चरति ।
 नूर्याग्निचन्द्रादिषु यस्य तेजः सदा सुखं तेन चिरन्तनेन ॥९॥

(२) रामारमे यौवनजीवने च वपुःसुखे शक्तिमदाव्यक्ते च ।
 स्वार्थान्धभर्तुः करुणाद्य तेन दत्त पदं, ते तु चिरन्तनेन ॥१॥
 क्षोतोऽप्यनया विषयान्प्रसम्पद् चेश्यामजाशक्तिमपात्रमैत्री ।
 राज्यं प्रजापीडयितुः सुखं च कदापि लोकेऽत्र चिरन्तनेन ॥२॥
 पक्वं फलं यत्कमलं प्रफुल्लं विरक्तिरज्ञस्य रतिश्चलायाः ।
 विद्युत्प्रभा दर्शनमाद्यमिन्दोः कदापि लोकेऽत्र चिरन्तनेन ॥३॥
 चिरन्तनः कोऽपि न कृष्णचन्द्राद् रे चित् ! सञ्चितय शब्ददेनम् ।
 भातादिदं कृष्णकृपावलेन सतां प्रसादेन चिरन्तनेन ॥४॥

नन्दाष्टनन्दचन्द्रैश्च मिते धैरुनहायने ।

जयन्त्यां कृष्णचन्द्रस्य राचिता कृष्णसूनुना ।

स्यादियं कविता तुष्टयै गुणज्ञानां विपश्चिताम् ॥५॥

(ले.—कृष्णान्मज्ञकाशोरामशास्त्री—मांगरोलचन्द्र,)

મીલાગવતના ચતુર્થરેકન્ધમાં સુન્દર સુરંજન રાગની કથા છે તથા “સ્ત્રિયેવં માનસો હૃષો હસેન પ્રતિવોષિતઃ” આ હંમે ભગવાનની વચનને મનમાં ધારણ કરીને મિત્ર એવા હસેલી માથે મિત્રના બાંધ. (૫)

પ્રાણી માત્રનું જીવન વિગળી જેવું ચંચલ છે, અને બ્રહ્મલોક સુધી જઈ ચલ છે, માટે સદા પૂર્ણરૂપ ચિરન્તન મિત્ર એવા શ્રીકૃષ્ણ પ્રભુ સાથે સમ્બન્ધ બાંધ. (૬)

જે સાથે રહેલ અન્તર્યામી પ્રભુ તને લુપ્ત છે પરંતુ તુ તેને જોઈ શકતો નથી જે પ્રાણી માત્રના સુહૃત્તમ છે, તે પ્રભુનું ભજન કર, અને મિત્ર શ્રીકૃષ્ણ પ્રભુ સાથે મૈત્રી બાંધ. (૭)

જે સર્વરૂપ છતાં પણ સર્વત્ર વિલક્ષણ છે. સર્વના હૃદય, સર્વવ્યાપક શ્રીકૃષ્ણ ભગવાન, છે. હમોશ પોતાનાઓની પીડાને હરનાર, મિત્ર, તે પ્રભુ સાથે જ મૈત્રી બાંધ. (૮)

જે નેત્રનું નેત્ર અને મનનું મન છે. જેથી પ્રેરણેના વાણી અને પ્રાણ પોતપોતાની ગતિમા વિચરી રહ્યા છે. સૂર્ય-અગ્નિ અને ચન્દ્ર વગેરેના જેનું તેજ છે, તે ચિરન્તન પ્રભુથી જ જન્મ-તમા સદા સુખ છે. (૯)

પ્રભુ સિવાય ખીજું ચિન્તન નથી.

સ્ત્રી અને લક્ષ્મી, યૌવન અને જીવન, શરીર અને મુખ, શક્તિ અને મહાન્ધના, સ્વાર્થાન્ધ ધણીની દયા અને તેણે આપેલું પદ તે ચિરન્તન નથી. (૧૦)

સુદ નદીનો પ્રવાહ અને વિપયાન્ધ પુષ્પની સમ્પત્તિ, કુલદાસુતાનું સ્ત્રી અને આપાત્ર સાથેની મિત્રતા, પ્રજન-ખીડક રાગનું રાગ્ય અને સુખ કહી પણ આ લોકમાં લાંબો કાળ ટકતા નથી. (૧૧)

પાકેલુ ફલ અને ખીસેલુ કમળ, મૂર્ખનું વંશ્ય અને ચંચળ સ્ત્રીના એક, વીજળીની કાન્તિ અને ચન્દ્રનું પ્રથમ દર્શન આ લોકમાં કદિ પણ ચિરન્તન નથી. (૧૨)

માટે હે ચિત્ત! શ્રીકૃષ્ણસમાન કાઈ પણ ચિરન્તન નથી માટે નિરન્તર આ પ્રભુને યાદ કર. આ કાવ્ય ચિરન્તન એવા સપુત્રોની કૃપાથી અને શ્રીકૃષ્ણ ભગવાનની કૃપાના બગથી શોભે. (૧૩)

યુવકોનો ધર્મ.

(આખ્યાત્ય—શ્રીપુષ્ટિમાર્ગાબજમાર્તેડ શ્રીકૃષ્ણનાથસાસજ મહોદય, મુંબઈ.)

પ્રભુએ નિર્જેગથી દયોડક વહુદયમ પ્રજાલેય આ વચનાનુસાર અખિત બ્રહ્માનું નજન કર્યું અને રવધ વિધમા અનેક વ્રતો હાથમાત્રા ચર્ચ ગયા. સર્વસમર્થ શ્રીકૃષ્ણચંદ્રના ક્રોડભાડ આ વિશ્વની રચનામાં મર્વ પ્રાણીઓથી મનુષ્યોમાં કાઈક એવા બે ત્રણ તત્ત્વોની પ્રધાનતા દેખાય છે કે જેની સહાયતાથી અન્ય પ્રાણીઓથી મનુષ્યપ્રાણીનું પૃથક્કરણ રહેજે થઈ શકે છે. તે તત્ત્વોમાંથી પ્રધાનત્વ સનાતન ધર્મજ છે. અત એવ ધર્મહીન પશુ અને ધર્મવાન મનુષ્ય એ રૂપજ છે આઓમાંયે ઉચ્ચેષ છે કે ‘વર્મેણ હીનાઃ પશુસમાના.’ આધિદેવિક ધર્મથી મનુષ્યને અબુદ્ધ્ય કરનારી સમગ્ર મિદિઓ હરનામવકવન ચર્ચ નય છે. અન્ય દેશો કરતાં ધર્મનું વર્તિકચિત્ર વ્યવસ્થા પ્રભુકૃપાએ ભાગતવર્મા જળનાથ રહ્યું છે. એજ ભારતના અબુદ્ધ્યની ક્ષીણ આશા છે. ભારત વર્ષને ધર્મપ્રાણનું જે અભિમાનસૂચક વિશેષણ અર્પાય છે તે ઉપરથી એ નિશ્ચિત થાય છે કે આર્યો પૂર્વે અત્યન્ત ધર્મમય જીવન વિગાડના હતા. આ નગ્ન મત્ય છે, માત્ર કવિઓની કથાવકવન નથી, આપણા પૂર્વજોમાં ધર્મનું અત્યધિક અભિમાન હતું. એની

ભારતભાવનો એકત્વભાવનાથી પરાવાધ ગણા દેતા. પ્રથમ વિવાર્થાઓને અધ્યાપક મુખ્યત્વે ધર્મ અને નીતિનું શિક્ષણ આપતા હતા. અને ત્યારપછીજ અન્ય વિષયોના શિક્ષણો અપાતાં હતાં. તંત્રીય ઉપનિષદમાં વિવાર્થાઓને ધર્મ અને નીતિના ઉપદેશનો ઉદ્દેશ્ય મળે છે.

સત્યં વદ ધર્મં ચર, સ્વાધ્યાયાન્ મા પ્રપદઃ સત્યાન્ન પ્રમદિતવ્યમ્, ધર્માન્ ન પ્રમદિતવ્યમ્, સ્વાધ્યાયપ્રવચનાન્યાં ન પ્રમદિતવ્યમ્ ।

દુર્ભાગ્યે સામ્રાટમાં કરાલ ક્ષયિકાળમાં આપણા રાષ્ટ્રમાંથી ઉત્તમ પ્રકારના ધર્મ અને નીતિના શિક્ષણોનો હાસ થયે; અને આરંભમાં અને તેની સાથેજ ધાર્મિક સંગઠન પણ નષ્ટ થતું ગયું. એના કટુ ફલસ્વરૂપે આજે આપણા ભારતનો સાચાનીય દશા દષ્ટિગોચર થઈ રહી છે. આધુનિક ભારતીયોએ અત એવ ધર્મ અને નીતિ પરંતુ ભવિષ્યમાં ભારતનિર્માણકાર્યમાં વિશેષ લક્ષ આપવું જોઈએ. અને ધાર્મિક સંગઠનનું કાર્ય પણ નિઃસ્વાર્થ બુદ્ધિથી શીઘ્ર કરવું જોઈએ.

ભગવાન શ્રીકૃષ્ણચંદ્રની આચારુસાર “કર્મયોગવિષયકારણ મા કલેષુ કદાચન ।” નિષ્કામ કર્મ કરવું જોઈએ અને તેવું નિષ્કામ કર્મ શીઘ્ર ક્ષવિત થાય છે.

આપણા યુવક વર્ગ કંઈ નિર્બલ નથી. માત્ર તેમાં એકત્વભાવનાનો અભાવ છે. મહે ગુર્જર સાહિત્યના પ્રસિદ્ધ ‘કુમાર’ માસિકના એક અંકમાં ‘રાષ્ટ્રીય યુવક દલની શક્તિનો લેખ’ વાંચેલો તેમાં ઉલ્લેખ હતો કે ભારતવર્ષમાં પ્રતિ દસ દબારની વસ્તીમાં પંદરથી પચીસ વર્ષની વયના ૧૬૬૨ યુવક તથા યુવતીઓ છે. પ્રજાનો આ હોજી લાગે ધારે તો કંઈનું કંઈ કરી નાંખે. યુવક દલની શક્તિ એક સમાદમાં સંસારની ચાતે વસ્તુઓ ચીનની ભીતિ, અમેરીકાનું ધોજી, તાજમહાલ, પીસાની મીનાર, દીલ્હીનો લોહનો તંત્ર, પીરામીડ અને મેગેલીનના કુશળ ઉદ્યોગો ખનાવી રાકે છે. એટલુંજ નહિ પણ એક સમાદમાં સંસારના સમગ્ર ખેતરોને યુવક દલ ખેડી રાકે છે. માત્ર સંગઠનના તિરોધાનથીજ યુવકમાં નિરુત્સાહ અને નિરાશા દષ્ટિગત થાય છે. માટે પ્રભુ શ્રીકૃષ્ણચંદ્રના ઉપદેશાત્મક શબ્દોમાં કહું તો અરથાને નહિ જણાય કે “હુરં હૃદયદાઈલ્લં. ન્યક્તોક્તિ પાંતપ ।” હૃદયદાઈલ્લને સમૂળ નષ્ટ કરીને ઉઠવું જોઈએ, કર્તવ્ય પંથે પડવું જોઈએ. પાશ્ચાત્ય સંસ્કૃતિના મોહમાં અંતર્ગત ન જોવું જોઈએ, આર્ય સંસ્કૃતિ જીવનની જરૂરીયાતો ઘટાડે છે અને પશ્ચિમની જાલવાદની સંસ્કૃતિ જીવનની જરૂરીયાતો વધારે છે. માટે આપણને આપણા જીવનની બધી જરૂરીયાતોને ઘટારી દેવી જોઈએ. સ્વદેશી વસ્તુઓને અને સ્વદેશને ઉત્તેજન આપવું જોઈએ. પશ્ચિમના લોહી કાંઈ દિવસ પોતાના ધર્મને કે. દેશની વસ્તુઓના અભિમાનને ત્યાગતા નથી. ભલે તેઓના જીવન એનાથી મોંઘાં યર્ષ જતાં હોય. તો પણ તેઓ પોતાના તેવા ધર્મને વળગી રહે છે. અતઃ આપણને પણ એમની પાસેથી સ્વદેશપ્રેમનો આવો ગુણ ગ્રાહ્ય છે. આપણું બધું સાફ અને સ્વચ્છ છે. યદિ કાંઈ વિચારે તો ભારતમાં ઝોંઝામાં ઝોઝા ખર્ચે પોતાનું જીવન ગુખથી નીભાવી રાકે છે. માટે આર્ય સંસ્કૃતિનેજ અપનાવવી જોઈએ. “તમાફે તે તમાફે અને અમાફે એ તમાફે” એ આર્ય સંસ્કૃતિના ઉદાર સત્યનો હૃદયમાં કોતરી રાખના જોઈએ. પાશ્ચાત્ય સંસ્કૃતિ આપણી નથી એ વાત ન જાણવી જોઈએ. આપણા માટે બધી વાતમાં એ સંસ્કૃતિ તાનકારક છે. સદાચારપૂર્વક આર્યોની આર્ય સંસ્કૃતિ અને આદર્શ સિદ્ધાન્તોનું પાલનજ આપણા ઉદ્યોગના સાર્વભૌમ છે. ધર્મોપદી બનવું, સ્વદેશભિમાની બની રાષ્ટ્રના ઉદાર કાર્યમાં ભોગ આપવો, એટલુંજ નહિ પણ ભગવાન શ્રીકૃષ્ણચંદ્રની નિર્મળ પ્રેમભક્તિ દ્વારા જીવનને સંજળ બનાવવું. એજ આપણું ધર્મ છે અને એજ આપણી નીતિ છે. પ્રભુ સર્વેને સહાયદિ અર્પો !!!

શીજન-માણનીના પવિત્ર દિવસના આ મહોત્સવે શ્રીકૃષ્ણના વૈષ્ણવ સમાજને આથી વધુ શું સંદેશ હોય ?

સેવા અને પૂજા.

(લેખક:—શ. રા. પ્રજાવલ્લભ રતનલાલ પરીખ.)

દોમેશચંદ્ર—હેર ભાઈ પૂજા કર્યા બેઠા છો કે ?

ભગવતીપ્રસાદ—દલુએ તુ સમજ્યો નરિ કે ? મઈ કાને તને ભાગ્ય સાંભળવા યજી મયો દતો ત્યાં તે મું સાંભળ્યું ?

દોમેશચંદ્ર—કોણ જાણે. હું તો ભાઈ બ્રહ્મી એવા, એવું કાંઈ આપણને યાદ રહેતું નથી.

ભગવતીપ્રસાદ—ત્યારે તને મું યાદ રહે છે ? નાટક, સીનેમા અને ટેલીવિઝનનાં ચાલનાં ચાલ્યો, કેમ ખડુંને ?

દોમેશચંદ્ર—હા ! હા ! હવે મને યાદ આવ્યું. પૂજા અને સેવા વિગે મઠ કાને કર્યું હતું.

ભગવતીપ્રસાદ—ત્યારે તો તને યાદ દશે કે સેવા એટલે શું ? અને પૂજા એટલી શું ?

દોમેશચંદ્ર—ના ભાઈ એવું કાંઈ યાદ નથી.

ભગવતીપ્રસાદ—ત્યારે તો તું ખરેખર તમારો જીવને આવેશ દોષ એમ કાને છે.

દોમેશચંદ્ર—ના, ના. એમ કાંઈ દોષ ? મારો સ્વાભાવ જરા ભુલકો છે એટલે ભુલી જવાય છે. ખરું લાંબુ લાંબુ યાદ રહેતું નથી. તને આપ કૃપા કરી મને સમજાવજો : તે તમારો પંજો આભાર માનીયો.

ભગવતીપ્રસાદ—હીક ' તારી કન્યા છે તો સાંભળ, પૂજા કરેલાં એકજ પ્રકારથી થાય છે અને સેવા તમેશાં ભાવથી થાય છે.

દોમેશચંદ્ર—એકજ પ્રકાર એટલે શું ?

ભગવતીપ્રસાદ—કર્યાનાંથી જે પ્રમાણે વિગે ચાલેલાં દોષ અમર પટેલા દિવસે આપણે જે પ્રમાણે પૂજા કર્યું દોષ તે પ્રમાણે ખાંર દિવસ ક્યાં કરવું તેનું નામ એકજ પ્રકાર.

દોમેશચંદ્ર—વાર ! આ ભાગ્યનો મને ખુલાસો મળવાથી મને આનંદ મયો છે પણ તલુ એક સંકા છે : તે દર કરેલાં કે ?

ભગવતીપ્રસાદ—હા ! મું છે, બોલો.

દોમેશચંદ્ર—ત્યારે સેવા કાને કહેવી તે જતા સમજાવો.

ભગવતીપ્રસાદ—સેવા એ ભાવનાથી થઈ શકે છે. ચિવાળામાં કંઈ દોષ છે માટે પ્રત્યક્ષે મદદ ધરવામાં આવે છે અને દેવતાની સમીક્ષા આજુબાજુ મુકવામાં આવે છે. વગેરે ઉત્તરમાં મદદીને લીધે ઝીળા વગેરે પદાર્થમાં આવે છે તેમજ રૂબના મુંબાર વગેરે કરવામાં આવે છે જન્માટમને દિવસે પ્રત્યક્ષે પાર્શ્વે કુસાવવામાં આવે છે અને તે વખતે જુદી જુદી તરેલનાં જુદી જુદી ભાવનાથી જનુ અનુસાર લાઠ લગાવાય છે. ચાવણ માસમાં દિશિતે કુસાવવામાં આવે છે અને તે વખતે જુદી જુદી તરેલનાં વગેરે તેમજ આજુબાજુ પદાર્થમાં આવે છે. વગેરે ભોજન પણ જનુ અનુસાર પદાર્થમાં આવે છે. આથી રીતે જુદી જુદી ભાવનાથી જનુ અનુસાર લાઠ લગાવાય છે તેને સેવા કહે છે.

દોમેશચંદ્ર—ભાઈ ભગવતીપ્રસાદ તમે મજા ઉઠા ઉતરેલા લાગો છો. આપે મને આનંદ કૃપા કરી આ વિષયને સ્પષ્ટતાથી સમજાવ્યો તે માટે હું આપનો મનોમન આભારી છું. હવે પૂજા થઈ જતાથી રતન લઉં છું.

ભગવતીપ્રસાદ—હીક, ત્યારે ! જયશીવ.

દોમેશચંદ્ર—જયશીવ.

જેનાથી સરવાત કરી છે તે) એકસો આઠ ઉપનિષદોનાં મુદકાનાં પૃષ્ઠ ૫૨૧ થી ૫૨૩ સુધી આપેલું “દૃષ્ટ્વાપનિર્વત” મૂકું છું. તેની સરવાત ઋષિશ્રી-ગોપીઆની ઉપનિષત તથા રુદ્રાદિની આગણીથી કરીને જે જે લીલા-સામગ્રી તરીકે તથા લીલોપયોગી દેહો ધારણ થયા તે ગણવીને “ગોપસ્થો હરિઃ સાક્ષાત” શ્રીકૃષ્ણપરમાત્માને માટે સન્નોથી અર્થ યુતિ માય છે અને તેના માહાત્મ્યનું જ્ઞાન એથી પણ વધુ યાદ રાખવા લાયક સન્નોમાં ગાય છે (બુલો ન્હયા ૧૧-૧૨). “વદો યન કૃતો વંશઃ” ઇત્યા કનકાસન-મુનિનિન્દઃ ઇત્યાદિ એવા સમર્થ “કૃતો પ્રલૈવ સાક્ષત” ૥૧૨૥ એ પ્રમાણે મહાદેવજી, બ્રહ્માજી, શંકર ગિરોએ લીલોપયોગિ, સેનાપયોગી દેહો ધારણ કર્યા છે તેમ “યઃ શંકરઃ સ હવં વિષ્ણુઃ ૧૬” “રાઘવહો મંદહરઃ ૥૨૦” નદા ચ કર્ણલકા સાક્ષાત ૥૨૩” વિશેરે લીલા અને મેવાઉપયોગી દેહો તેમને અંગસંગો લાલ આપ્યો છે અને વેદન્યાઓ; ઉપનિષદો, મુક્તિ, લક્ષિત, પરમાન્દ, વેદાર્ય, સરસ્વતી, ધરા વગેરે સ્વરૂપ ધારી સર્વનાં વર્ણન તથા ગોકુલ-દાવન વગેરે વર્ણવીને “મ્નાયુતાપરિતં સર્વં વૈશુંડં સ્વર્ગગતિનાં એમ વર્ણન સમાપ્ત કરીને ફલશ્રુતિમાં એ જાણવાથી સર્વતીથે ફળ મળીને દેહમંથનમાંથી વિમોચન માય છે એમ શ્રુતિ અનુવાદ કરે છે. એ સર્વ લંબાણથી સંસ્કૃત ભાષામાં છે. પરંતુ તેનું શોકુંક “પદાત્મક” ગુજરાતી ભાષાના (નંદકુનાં પુર્વજીનાં) આદિકવિનરસિંદ મેહેતાજીએ કર્યું છે તે તેમના કાવ્ય સંગ્રહ પાન ૪૮૭ ઉપર છપાયું છે તે અત્રે ઉતાર્યું છે, અને ઉપરના શ્રીકૃષ્ણાપનિર્વદ મૂળ સાચેજ સરખાવ્યાથી ખાત્રી થશે કે નરસિંદ મહેતા પોતાનું મનઃકલ્પિત જોડી કાઢ્યું નથી પણ વેદપતિવાદિ શ્રીકૃષ્ણમાહાત્મ્ય જ નીચે પ્રમાણે બહુ ટુંકામાં વર્ણવ્યું છે:—

રાગ પ્રલાતિયું.

“ધન્ય રે ધન્ય મહાપુરુષ જ્ઞેષ્ઠાદાતણું પુત્રભાવે પરિશ્રવ ગિરાળે, “નંદનો નાં નાન્દ થય” અવતર્યો (સરખાવે “પ્રજાનં આન્દ બ્રહ્મા” “જાનન્દમ્વે ડમ્યાસાત” પ્રિયાદિ) “શેષ બલિભદ્ર સંગે બિરાળે” ॥ ધન્ય ધન્ય ॥૧॥ “અપર (દેવતાઓ) આઠી અધ્યાગ ગોપાંગના વક્ષવેશી સર્વ ઋષિરાણી “મક્તિ” તે સધિકા (મુળમાં “વૃન્દા લક્ષિતઃ” છે) મુક્તિ જ્ઞેષ્ઠામતિ મન્વંકુંદ તે વેદવાણી ॥ ધન્ય રે ધન્ય ॥૨॥ નિગમ વસુદેવજી ગાય ગોપી ક્ષાપ દેવકી વ્રજાવિદ્યા કલાવે, બ્રહ્મા કરે લાકડી જેણુ મહાદેવજી પંચ વદને કરી ગાન ગાવે ॥ ધન્ય રે ધન્ય ॥૩॥ શંદ્રે અર્જુન અહંકાર દુર્બોધન, દેવે તો સર્વે અવતાર લીધો; ધમ તે રાપ મુષિધિરો જાણ્યો, દાસનો દાસ નરસંદને ડીધો ॥ ધન્ય રે ધન્ય ॥૪॥ ઉપરાંત ગોપાલતાપિની શ્રુતિ ગાય છે કે “દૃષ્ટ્વા વૈ પરમં દૈવત” ગોપિન્દાવ મૃત્યુભિન્નિતિ ગોપીજનવલ્લભાદાનેન એત દિનાતં ભવતિ.” ॥૧॥ ચિન્તયન્ ચેતસા કુર્ણં મુકો ભવાત ઇન્દ્રોઃ ॥૩॥ આગળ ચાલતા “કુર્ણં તં વિદ્યા વહુધા યજન્તિ ગોવિન્દં સન્તં વહુધા આરાધયન્તિ ॥ તેમજ વાયુર્ધૈકો મુવનં પ્રવિદ્યો જન્યે જન્યે પંચકુરો વશ્ય” “જ્ઞાસ્તેકોડપિ જગદ્ધિતાર્થ શઘ્દેનાસૌ પંચપદો વિમાતિ.” “एको વશો તર્વેગઃ કુર્ણ દૈવ” “કર્મભ્યેકં તસ્ય દેવ્યો રિમાતિ તં પિઠેયડનુમજન્તિ ધારાઃ તેષાં ચિદિઃ શાશ્વતો મેતરેય”

અર્થ:—અથા શાસ્ત્રની અચાથી શ્રુતિ કરીને “તત્ત્વપ્રકુળ એવ પરમો દેવઃ તં ધ્યાયત તં રમયત દેવકીના પુત્ર શ્રીકૃષ્ણ એજ પૂર્વતાપિની પુરી યાય છે પછી ઉત્તરતાપિનીમાં પ્રેષઃ ભાવના, અગેષા રી સેવા એજ કર્યા છે. અર્થ સમગ્રવી ન્હાં શ્રીકૃષ્ણની બાર મૂર્તિઓ છે તેમાંની એકનું દીપી આ કાળ આપણને ઉઠીનું બ્રહ્માજીના પુત્રો, ગોથીનું મન્દહરજી, માંચમીનું વિનાયક, બીકું

પ્રજનવસુઓ, સાતમીનું કાપિઓ, આઠમીનું મન્ધવો, નવમીનું અમ્મરાઓ, દસમી વૈ જાતપાતે તિથિ, દસમી સ્વપદાતુળા, દ્વદશી મુઘ્યાં તથા તો દેવે વ્યગ્નિ તે મૃત્યુ તરન્તિ એવી પણ આદ્ય ક્ષેત્રી છે ઉપરાંત ઘોડા ઘોડા હરોળો છંદોઅ, મહાનારાયણ, વાસુદેવ, ગોપીચંદન વિગેરે ઉપ નિહોમાં છે. જુજ હોવાથી લંબાણ કરવા કરતાં પુષ્ટિકવિ દયાસમભાંઈની મરખીઓ નીચે આપો છે તેથી ભાવિક જગ્યા સંતુષ્ટ થશે. તેમના મન્ધકર પુરાણ ઇતિહાસમાંથી પણ લેધેલો છે.

૫૬.

સર્વના શિરોમણિ શ્રીનાથજીને લોચ,

- આપના સ્વરૂપ વિશે સર્વે મારા વ્હાલાજી હો, સર્વે સેવાયું તમને સેવતાં રે લોચ. ૧
- સગે આજુપણ આપુષ છે રે લોચ સેવામાં રહે તજ મર્વે મ્હારા વ્હાલાજી હો, સર્વે સેવાયું. ૨
- અત્યલોક કુકુટ મહારાજનો રે લોચ, સંખચોય કુંડલ જેઉ કણું મારા વ્હાલાજી હો, સર્વે ૩
- જન છે વૈકુંઠ ચમર ધર્મો છે રે લોચ પિંજન જમરૂપ શિરિશરણ મારા વ્હાલાજી હો, સર્વે ૪
- મહુ સરજ અંકમાં છે મન વિષે રે લોચ, ભૂકરી યમરાજ કુંડે એન મારા વ્હાલાજી હો, સર્વે ૫
- ગૈર્ભ અથો અમર, લગ્ન, લોલ છે રે લોચ, દંતકાનિ તત્ત્વ કમરનેન મારા વ્હાલાજી હો, સર્વે ૬
- મળ્યા વનમાળા દારપને વિશે રે લોચ, વૈજયન્તી ભક્તિઓ નિવાસ મારા વ્હાલાજી હો, સર્વે ૭
- કેસ મેષ, હિસા અવજુને વિશે રે લોચ, વદનવલ્લિ નાસાવાયુ વાસ મારા વ્હાલાજી હો, સર્વે ૮
- પ્રેમજન તો જ્યોત્ષ્ઠ પ્રાણનાથજી રે લોચ, પાતાંજર સ્વર હદ સાત મારા વ્હાલાજી હો, સર્વે ૯
- શ્રીવત્સલાંબન મહાનકમીજી રે લોચ, જીવતત્ત્વ કૈસ્તુભ સાસાત્ મારા વ્હાલાજી હો, સર્વે ૧૦
- વેદ મળ, તત્ત્વ છે ગરુડજી રે લોચ, મેષ સંધ્યારૂપે છે સેવ, મારા વ્હાલાજી હો, સર્વે ૧૧
- કામુકી મદા મહાકાળા છે રે લોચ, મુરલીનું સ્વરૂપ મહાદેવ મારા વ્હાલાજી હો, સર્વે ૧૨
- છે ખૂં જ્યૈષ્ઠ્યકળા કમળમાં રે લોચ, મુદ્રિકા છે અસપ વરદાન મારા વ્હાલાજી હો, સર્વે ૧૩
- ચક્ર તેજ સાર, સલિય શંખ છે રે લોચ, કમળ વિશ્વ, ધનુષ કાલરથાન મારા વ્હાલાજી હો, સર્વે ૧૪
- અન્ન, જ્યૈષ્ઠિકાને યુંગી હન્ડ છે રે લોચ, તિલક શુદ્ધ સ્નેહનું સ્વરૂપ મારા વ્હાલાજી હો, સર્વે ૧૫
- નખ શિખ આજુપણ સહુ ભક્ત છે રે લોચ વનસ્પતિ સૈમાવરી રૂપ મારા વ્હાલાજી હો, સર્વે ૧૬
- વીર છે સમુદ્ર નદી નાદીઓ રે લોચ, પર્વત છે પતિ ધરા અરત મારા વ્હાલાજી હો, સર્વે ૧૭
- અમણિય જ્ઞાંતર રોમરૂપમાં રે લોચ, હિર વિને જગત છે સમસ્ત મારા વ્હાલાજી હો, સર્વે ૧૮
- શુદ્ધ ભક્તિરૂપ રાણી રાધિકારે લોચ, જ્યોત્સના મુક્તિ જ્ઞાનિયાન મારા વ્હાલાજી હો, સર્વે ૧૯
- ગોપી સચા વેદ મંત્ર ગોપ છે રે લોચ, રામ, શેષ, સાસ્ત્ર છે ગાન મારા વ્હાલાજી હો, સર્વે ૨૦
- નિગમ પદ્મવદનને જાણીધેરે લોચ, અલવિલા દેવપ્રીત માત મારા વ્હાલાજી હો, સર્વે ૨૧
- કૃત્યાદિ સ્ત્રવ સંદિત દીર્ઘરિરે લોચ, દાસ દયાના પ્રમુ વિખ્યાત મારા વ્હાલાજી હો, સર્વે ૨૨

આ ૫૬ ધરનાં તમામ માણસો મોદે યાદ કરીને રાતે કામકાજ પદવારીને એકાં થઈને મોડે સ્વપ્ન લયકારવાનો એટલે કે ઉદ્દેશમાં કમ્પસ કહે છે તેમ મુર મિશ્રાવીને. ગાયનો રીવાજ દેક વૈષ્ણવ કહેલમાં પાડવામાં આવે તો દેવો આનંદ આવશે એ કરી જોયા પછી કોઈ અનુભવી વહુવટે તમા આપના માસિકમાં લખી મોકલશે એમ આચારા રાખી હવે સવારને મોડે દવારામજી તે પાત કુંડમાં આપે છે તે પણ ઉપર આવી ચળેલા મન્ધકરોનો જુજ. દેશકારવાળો સાર છે તે સર્વે વૈષ્ણવોને વ્યાખ્યાન સંગ્રહના મન્ધકરમાં લખાઈ ગયો તેથી અગ્રે આપો છે.

પ્રથમ પ્રમાણે શ્રીકૃષ્ણનું સ્મરણ કરીયે રે, ત્રજ્જીવા અગ્ની દરિની સગે ધ્યાન ધરીયે રે. ૧
 દરિનો મુગટ તે તો પેકુંદોનો સાર લઈયે રે, દરિનાં કુળ તે તો આંખ યોગે નિશ દઈયે રે. ૨
 દારને નાકે મોતી ગાંધિકાનું રૂપ છે રે, અંદાપથી ચિત્તુક આભરણનું સ્વરૂપ છે રે. ૩
 વેરિનું હસલું તે તો મોહિની આપા કહેવાય રે, મુરલી શિવજીનું સ્વરૂપ એનું વેદ ગાય રે. ૪
 લગિનું તિલક શુદ્ધ પ્રેમને પ્રમાણિયે રે, કૈસ્તુભવણિ હૃદયે ત્રય તત્ત્વ જાણીયે રે. ૫
 શ્રીયત્સર્વાંછન તે મણિની છાય, જાણ્યોને રે, વનમાળા યુગ્મ છે તે બકનો ઉર આણ્યોને રે. ૬
 માયા પીતાંબર ને છઠી બ્રહ્મારૂપ લણું રે, ઈંદ્ર ગુંડી મેઘ દેશનું સ્વરૂપ કણું રે. ૭
 સંજે ગોપીજન તે ક્રાંતિએ છે વેદનરિ, ગોપ મંત્ર નેની વાત કહું બેદનરિ. ૮
 શ્રીરાધાજી કૃષ્ણ આત્મરૂપ પ્રેમભક્તિરે, નંદજી તો અદ્વૈતબ્રહ્મ, જસોદા જાણે મુક્તિરે,
 શ્રીગોકુળ તે વ્યાપી પૈકુંદ આસાત છે રે, કર્મમાં કમળ વિચરૂપ વેદે વાત છે રે. ૧૦

એનું ધ્યાન સદા શ્રીકૃષ્ણનું પ્રીતિ ધરીયેરે, ત્રજ્જી વાસ મળે, ભવસાગરને ઘણામાં તરીયે રે. ૧૧
 સરવે વિસ્તારીને કહેતા ગીન વંધી જાય રે, માટે દાસ દ્યો, કાંઈ એક, દરિના યુધ્ધ ગાય રે. ૧૨

અને એથી પણ થોડાક દુઃકામા જોઈએ તો નરસિંહ મેતાજીનું પ્રમાતિયું પહેયું આપેયું
 છે તે તો રાગદારીમાં ગાળેને સ્વાચરમાં મર્વ કુટુંબીઓનાં મનરંજન કરી ગદા તેવું છે. નેમા
 માથ મોઢાનુંજ કાપ કરવાનું નથી પણ નેની સાથે શ્રીકૃષ્ણનું ધ્યાન હૃદયમાં નજર આગળ
 સ્વરૂપ ખડું થાય તે રીતે ખાસ સાથે આપ કરવાની ખામ રેવ પાપી નજરની છે એથી દેવ
 પ્રાણ ઈન્દ્રિયધર્મો દ્વારા આગાર પુત્ર આદિ બધાના દેવ અને મનસુદ્ધિ ચિત્ત પણ રંડેલ ધર્મજ
 યદ્યો. અજમાવીને અનુભવ લેવા વિનંતિ છે.

આ રીતે વિવેચન કર્યું અને હજી પણ વેદરૂપી માક્ષાત પરબ્રહ્મના શ્રીમુખમાયી નીકળેથી
 શ્રીમદ્ભગવદ્ગીતા, જે હૃદયપ્રેરિત પ્રસ્થાંતી વાળી (વેદ) નીજ પૈખી અવરજા છે, એટલે
 પૂર્ણપણે વેદરૂપજ છે અને લેશમાત્ર પણ ન્યૂન નથી તેમાંથી માહાત્મ્ય સમજાવનારા વાક્યો
 વિવેચનસંહિત આગળ લખાશે. તેનું કાચું સહેલાઈથી સમજી ગયાય તેવું છે કે હરદાઈ મનુષ્યને
 ત્રણ નામથી જાણતા હોઈએ તેના કરતા તેનાં વખાણુ બીજાને મોટેથી માલખો હોય નેમજ
 પ્રતિપક્ષી તરફથી આલેખો પણ સાંભળ્યા હોય તો ખરું શું છે તે જાણવાની વ્યાપારિક હિંમત
 થાય. અને તેથી વિશેષ પ્રયત્ન કરીને તેનું-ખરું માહાત્મ્ય જાણે સ્વરૂપ શું છે એ ઉંડા હિતરી
 (ઉપર ઉપરથી અટકાવે કરનારા માખીની જે રે મંદજીજી મોઢનારા પ્રતિપક્ષીઓ (જેના કે
 જૂનાં વખતના શિશુપાદાદિ અને આજના અપાખ્યાયીઓના મિથ્યા આલેખો, તથા વૃથા આલા-
 પોના ખંડન આજે નહીં પણ હજારો વર્ષો પહેલાં તરૂં લોકોએ તેમજ દેવી દૃષ્ટિનાળા ક્રમિ
 મુનિઓએ, શાસ્ત્રોએ તેમજ યુગે યુગે અને કવ્યે કવિ પ્રમંગાનુસાર આ વર્તન થનારા
 અવતારોનાં માહાત્મ્ય અતાવનારા ઉપનિષદાદિ ગ્રંથોએ કરી રાખ્યાં છે) તેનાં રહસ્ય નમજીને
 ઝોળખવામાં આવે તો બધી રીંકા તથા સાંભળેલા આલેખો દૂર થઈ ખરું માહાત્મ્ય જાણાય. ત્યાર-
 પછી જે અહુમાન જે પ્રેમ વાંકું ભોપવાવાળા સામે લડવાની વૃત્તિ, આદરભાવ, નેમની મેવા શી
 રીતે હું કે ? એવી ભાંડત વગેરે જનન થાય આ રથજે જગા કામા માગીને વધીય તરીકેની
 દલીલ એકે બે વખત જાહેર સભા આગળ મેં કરી છે (સનાતન ધર્મખંડન અમરેશીના
 પ્રમુખ તરીકે) તે સર્વ વાયકો આગળ રજી કરે છું. કેમકે યુવકોને તે જાણવાની જરૂર છે,
 એમ ધારે છું. એ કે (૧) શ્રીકૃષ્ણપરમાત્માને હોય આપનારા લોકોને જાતબાદિતી તો નથીજ.
 ૨) ત્યારે હોયદિ તેમનામાં આવી ક્યાંથી ? પાદગીઓ, ઇતરનારિવડો-અથવા આગ્રિક વિરોધીઓ

પાસેથી સાંભળીને પણ (૩) જે સ્થળે લીલાઓ વર્ણવી છે તે સ્થળે વાપરેલા શબ્દોના અર્થો સ્વતઃ અભ્યાસ અને પૂર્વોપદે સંબંધ વક્તા-શ્રોતા કોણ છે. પ્રસંગ ઉત્પન્ન, વર્ષ, દૈનિકાદિ વિગેરે સમગ્ર વિચાર કર્યા વિના-તેવા યોગ્યતાના પુરાવાના કાયદા પ્રમાણે જિન ભરોસેદાર છે. (૪) (Expertdirect નથી, knowledge નથી.) આંખમાં ક્રમેણ (prejudice) કિંવા દિવ્યદષ્ટિદોષ છે. (૫) તેઓ જે પુરાણુગ્રાહ્યોના અનર્થ કરે છે તે પુરાણુવાક્યો લખ્યાં અને રચ્યાં કોણે ? તે વિચારતા નથી, આશ્ચર્યોએ રચ્યાં છે. શ્રીકૃષ્ણાવતાર પછી તે બ્રાહ્મણોને આખા દિવ્ય-કુસ્તાનમાં રહેનારાને એક દારકાંના ખુણામાં યદ વસેલા અથવા મગમાં વસેલા શ્રીકૃષ્ણને પરમેશ્વર તરીકે વર્ણવતા, માનતા, પૂજતા, ખીન પાસે પૂજવવા, તેની-કથાનું નિત્ય અધ્યયન કરવાની બદલ આસેતુદિમાયક પ્રદેશ સમજામાં શું બદલ દે મરજ દત્તી ? (૬) મદાસ દંધાદા, મલખાર, દ્રવિડ તેલંગણુ વિગેરે દેશોના બ્રાહ્મણ, આચાર્યોએ એકદંદ એ જોપપાસક અને રાત્ર્ય વગરના યુવકને પરમેશ્વર તરીકે કમુક્ત રાખવાની શી બદલ દત્તી ? કાલી ખુશામત ખાતર ? તેનો તો વિચાર કરો. શ્રીમદ્ભગવદ્ગીતાજી ઉપરની કીકામાં વાપરેલા દરેક આચાર્યના શબ્દો વાંચો. આતિ ઉચ્ચ ગણ્યતા બ્રાહ્મણો એજ પાતળી યોગજ્ઞા કરે છે કે જે શ્રીમદ્ભગવત્પાદિ પુરાણમાં તથા શ્રીમન્મહાભારતમાં શ્રીકૃષ્ણપરમાત્માની સંમતિ તે વંખતના ઋષિઓ ભતમાહિનીથી તથા દિવ્યદષ્ટિયો કહેતા હતા અને તેમની પહેલાંના વેદવાક્યો (ઉપનિષદો) જેની વાનગી આજે આ લેખમાં આપના વાચકોને મેં આપી છે, તે વેદવાક્યોથી તથા શ્રીકૃષ્ણાવતાર પહેલાંના ઋષિ-મુનિઓ, મર્ગચાર્ય, નારદજી આદિ ગણના હતા અને આનુકૂળથી વાદ નેઈ રહ્યા હતા. તેવા ત્રિકાળગાની, ત્રિકાળદર્શી મહાત્માઓએ સ્પષ્ટ શબ્દોમાં અદ્વિતનિવારણ કરી તે ઉચ્ચારી હતી. મારે ભાઈઓ, ઉપરચોટીયા જ્ઞાનવાગ્યાના શબ્દોથી નહીં ભરમાત્તા લક્ષ્યપર્થી વિચારક બનેા તો સંપૂર્ણ ખાતરી થશે કે “કુર્ણસ્તુ મગવાત્ સ્વયં” જેને મારે આપણા સંપ્રદાય સિવાયના એક આચાર્યથી ગાય છે કે—

સ્વમાવગોડપાસ્તસમસ્તદોષ, ચરોપકન્યાણુગૈકરાણિ ।

બૃહાદ્ગિર્ન, વ્રણપર્, વરોણ ધ્યાયેમ કૃર્ણં કમલેશ્વરં હરિં ॥

એ પ્રમાણે ગાયત્રી મંત્ર તથા “જન્માયસ્વ ચતોડ્યવચાત્” ઇત્યાદિ શ્રીમદ્ભગવત્પ્રના મંત્રગણ ચરણમાં અનુક્રમે મર્ગ અને હરણ એવા મોખમ શબ્દો વાપરેલા છે તેને ખાસે સ્પષ્ટ “કુર્ણ” વાપરેને જગત્ આગળ ગાયત્રીદ્વારા અને શ્રીમદ્ભગવત્પ્રના પ્રતિપાદિત શ્રીકૃષ્ણજી જે એમ બનાવી તે વ્યાપ્ત તે સર્વેવેદ તે મજેવ જેની શી જો. તા. યુતિની આજ્ઞા છે તે મુજબ તેનું જ્ઞાન કરીએ છીએ. કેમકે તે પરદેશ છે, તે પરચલ છે, ખીનત મધા તેના બેઠા છે. શ્રીકૃષ્ણ પોતે “પર” છે તેમાં દોષ તો સ્વભાવથી (શ્રીકૃષ્ણનું સ્વઃ પોતાનું ભાવ એટલે અસ્તિત્વજન એવું છે કે આપોઆપ) દૂર કે દાઈ જાય. નહીજ આવી શકે નહીં તો આજ્ઞા કે વળગવાની તો પાતળ રાત્રી ? તમામ યુગોના લગ્ન છે અને દોષોના પ્રતિષેધી (anti) છે, એવું માનવ્ય છે.

મંત્રને પ્રારવ્ય હોય કે ?

(લેખક—પરમ ભગવદ્વીય વેલજી નયુભાઈ મીશ્રી.)

વિચાર કરીએ તો ભગવદ્ભક્ત કરણીને પણ દોષ એ સંભવિત બન્યું નથી. કારણ એવું છે કે જે કોઈ પ્રારવ્યને ઉત્પન્ન થયેલા સાધનો છે તેનો તો અનુમાં સંબંધ નેહી તેનો વિનિયોગ કરી આપ્યો છે, તો પછી પ્રારવ્યના પણ તેમાં વિનિયોગજ તત્ત્વગ્રાહીય તથા જે કોઈ જન્મમરણના ભોગ પ્રારવ્ય સિવાય બનતા નથી તો દેવ કે પ્રભુ કે પ્રભુ (કરણીને પણ ન

હોય તો) રહી શકે? આ શંકાને ઝાન છે. પરંતુ એ સાધનો (કર્મો) કર્મોથી ન માંરી પ્રવાહી જીવનાં હોવાથી તેને જન્મમરણના કારણરૂપ અવરૂપ દોષ શકે ખરાં, પરંતુ ભગવદ્ભક્તોને ભક્તિના પ્રભાવે જેના હૃદયમાં પ્રભુનો વાસો હોય, તે કર્મોથીન કેમ બની શકે? પ્રારબ્ધનું વિધાન દેહાભિમાની દ્વારમાંસના વ્યાપારવાળાને માટે જણાય છે. ભક્તોને દેહ તો, જગતના જીવવત્ પંચમહાભૂતનો છેજ નહિ, અને કર્મ તો જક છે, (તેમાં ક્રિયાશક્તિનો અભાવજ દોષ) એ કાર્ય જન્મમરણાદિની યોજના, અનાકાશજ કર્મ કેવા પ્રકારની શક્તિએ કરવા મર્મ્ય છે? એ તો ચૈતન્યનું કાર્ય ગ્યું, તો જકમાં ચૈતન્યપણાની ભાવના માનીએ તો, દેહાદિકનું રક્ષણ ને પોષણ કેવે પ્રકારે કરી શકે છે? ભક્તને તો એનું (અત્રીકિક જીવન છે) તે વડેજ એના દેહાદિનું રક્ષકને પોષક માની શકાય. કાંઈ પ્રારબ્ધ તો નહિજ, કારણ કે જેને શુભથી સીધી મંત્રી હોય તેને અન્ય કોઈ ભક્તિનું વ્યવધાન જરૂરનું નથી રહેતું. પ્રારબ્ધ તો અત્તાન અંધકારનું કાર્ય છે, પણ ગ્રેટિસ્યર્વત્ પ્રકાશિત હૃદયમાં એ અગાનગનક અંધકારનું કાર્ય (પ્રારબ્ધ) કયે સ્થાને રોકાઈ રહે છે? અવરૂપ જગત તરફ દષ્ટિ કરીએ તો પ્રાણ રોકાઈ જવાથી માધારણ પ્રવાહી નદિને મરતાં દેખીએ છીએ. અને યોગી લોકો પ્રાણને રોકી શકે છે, તો તેનું આયુષ્ય અનિચ્છિતજ રહે છે માટે સાધારણ મનુષ્યને એ ધરે છે કે પ્રારબ્ધ ચિન્તા રહેવું અમંભવિત છે. પરંતુ યોગશક્તિથી ક્રોટિ ગણી શક્તિવાળા પુરોષોત્તમ છે, તે જે શક્તિનું તેજ ગ્રેટિ પ્રદર્શાવે પ્રકાશે છે, ને રક્ષણ પણ કરે છે, એ શક્તિ સાક્ષાત્ ધીમધુમાનકુમારીજ છે, કે જે યુગ્મ સ્વરૂપના આતર વત્ત્વમાં ભક્તના હૃદયતરુઓ ઓતપ્રોત યધનેજ રહે છે, હાં પ્રારબ્ધનો લાગ કયે પ્રકારે લાગી શકે? દૃશાન્ત લઘ લો—જેમ તેવ છે તે ન્યોતમા પ્રવેશ કરી ભય છે, તેમ ભગવદ્ભક્તોનું સર્વ કર્મ પણ પુરોષોત્તમમાં લય યધ બવાથી પ્રારબ્ધની ઉત્પત્તિ કેવે પ્રકારે થઈ શકે?

વળી ભગવદ્ભક્તોમાં કોઈ દુઃખ સુખનો અનુભવ કરતું હોય તો એ કરનારનું અગાનજ છે, વરતુતત્ત્વથી તો એ ભગવદ્ભક્તો દુઃખ અને સુખથી, વિવક્ષણ યધ જાય છે, ભગવદ્ભક્તો તો જીનસુક્ષ્મજ છે જેને શાસ્ત્ર મનાધિ કહે છે તેમ ભક્તોની પ્રભુ પ્રત્યેની વત્સલતાગ્રા માનસી મિદ્ધિ છે, તેથી તેને સુખદુઃખની ગણના કરી હોતી નથી. એ ગણના તો જગતમાં ઉપાધિરૂપે સુખ દુઃખનું ભાન રહ્યા કરે છે, સિદ્ધાન્તદષ્ટિ કરીએ તો અત્તાની જીવ દુઃખ સુખનો ભાગી બને છે. પણ ભગવદ્વિદ્વારૂપ દાંડએ જ્ઞેનારા ભગવદ્ભક્તો મર્મ ઉપાધિઓ ભગવદ્વિદ્વારૂપ માને છે, જગતના જીવો સુખદુઃખનો અનુભવ કરે છે, તેમાં માત્ર માથાનું કારણ પ્રબલ છે, શ્રીહરિની ઉત્પન્ન કરેલી નેત્રી પોષણ કરેલી વરતુમા પોતાનો આત્મમંત્ર જોઈ પણ મમતાના બંધનમાં આપી દુઃખસુખનો અનુભવ કર્યો કરે છે.

જે વરતુનો મંચ યાય તેના વિયોગ યવા સંભવ છે, અને તેથી કરી દુઃખની ઉત્પત્તિ પણ યાય છે. આપણે હનરો સ્ત્રી પુરુષ, બાળકોને દુઃખી દેખીએ છીએ. તથાપિ તેનું દુઃખ આપણે આત્મામાં રસ પળે થતુ નથી; પરંતુ એમાંથી જેની માથે મંબંધ છે તેનું દુઃખ યાય છે. જેટલે દરજ્જે સ્નેહનું વધતાઓછાપણું તે પ્રમાણે દુઃખ પણઓછા વધતું યાય છે. પરંતુ સંગઠિતને માટે કોઈ પ્રકારનું દુઃખજ નથી. કેમકે તે મમતાના બંધનથી દૂર છે, માટે મંચજ દુઃખ રૂપ છે. તે બહારના મંબંધની વાત થઈ, પરંતુ આન્તરીય ભાવના સ્વાર્થને લહીને શરીરના મંચનું પણ દુઃખ પેદા યાય છે, પરંતુ બહુતા-મમતાનાથે સર્વવા નિરહજતી આ વચન પ્રમાણે ભગવદ્ભક્તોની ભાવના હોવાથી, તેને આન્તરીય દુઃખ મનોજન્ય તે પણ થતું નથી. કેમકે જેણે સંગ અને સંમોહને જીતી લીધો છે અને મોહરૂપી પાશમાંથી મુક્ત થયેલ છે, તેને સુખ વા

શ્રીકૃષ્ણજયંતી.

(લે—રા. રા. રમણલાલ સાકરલાલ શાહ, વાણસીનાર.)

ભગવાન શ્રીકૃષ્ણની જયંતી દરેકે ઉજવાય છે. આખા ભારતની અંદર આ મહામહોત્સવ મનાય છે, ભગવાન શ્રીકૃષ્ણચંદ્રની અણુભાંસી જાંસીના નાદ તમામ પ્રગળે કાને લાગ્યો છે, ભારતની પ્રગ્ન ઉપરાત પાઘાલોને પણ તેનો અવાજ પહોંચ્યો છે, અને તે પ્રગ્ન ભગવાન શ્રીકૃષ્ણના ચરણોમાં સિંઘ ઝુકાવતી માલમ પડે છે તેમજ તેની ચીતાની મુક્ત કંઠે પ્રસંસા કરી તેનું ધ્યેય સ્વીકારે છે. સારાય ભારતની અંદર આજ તેનું યજ્ઞોગાન થઈ રહેલું જેવામા આવે છે ભગવાન શ્રીકૃષ્ણની જાંસીએ આ જગતને મુગ્ધ બનાવી દીધું છે અને આખું જગત તેની દિવ્ય પ્રતિમા પ્રતિ આકર્ષીઈ તેના સ્વરૂપમા તક્ષીન થઈ રહ્યું છે, ભગવાન શ્રીકૃષ્ણના ભગ્નરમરણથી હૃદયના તાપો નાશ પામે છે. અને તેના અઘૌકિક સ્વરૂપનું જ્ઞાન થાય છે. ચોગી લોકો તેના દર્શન માટે હજારો વર્ષ સુધી તપશ્ચર્યા કર્યા કરે છે. ત્યારે તેમને દર્શન થાય છે. આ કળિયુગમા તેની તપશ્ચર્યા કરવાનું નથી ફક્ત ભક્તિથી પ્રસન્ન થઈ પોતે દર્શન આપે છે, અને તે હૃદયની પ્રેમશક્તિ ભક્તિજ. ગોપીજનો વગેરે તેની પ્રેમભક્તિથી પ્રભુને મેળવી શક્યા છે તે વિના ધણી દાખવાઓ મોલુદ છે. એ ભક્તવત્સલ ભગવાન પોતાના ભક્તોને તાપ જોઈ દર્શન આપી કૃતાર્થ કરે છે. માટે કળિયુગની અંદર કંઈ પણ સાધન કર્યા સિવાય વલ્કે કેશવકીર્તનાદ એ મુગ્ધનુસાર ભગવતપ્રાપ્તિ માટે તેનું ભજન. રમરણ, કીર્તન, હૃદયના પ્રેમગીતો ગાવડે કરીને કરવામા આવે તો પ્રભુભક્તોની મનોવાચનાઓ પૂર્ણ કરી પોતાના ચરણારવિન્દમા સ્થાન આપી પોતાની લીડનો આભારકાર કરાવેજ. તેટલા માટે શાસ્ત્રકારોએ નવધાભક્તિ કરવાનું કહ્યું છે:—

શ્રવણ કીર્તન વિષ્ણોઃ સ્મરણ પાદસેવનમ્ । અર્ચનં વન્દનં દાસ્ય સત્સ્યમાત્મનિવેદનમ્ ॥

એની રીતે નવ પ્રકારની ભક્તિ આ કળિયુગમા કરવામા આવે તો જરૂર ભગવતપ્રાપ્તિ થઈ શકે

ભગવાન અવતાર ક્યારે લે ?—પ્રથમ તો અવતાર એટલે શું તે સમજવું જોઈએ. અવતાર એટલે ઉપગતી તત્ત્વનીએ આવવું એટલે કે ભગવાન જગતના કલ્યાણ અર્થે પૃથ્વી ઉપર જન્મ ધારણ કરે છે. તેને અપણે અવતાર કહીએ છીએ. ભગવાને જે શ્રીગીતાજમા કહ્યું છે કે, યદાયદા હિ ધર્મસ્થ । હે અર્જુન ત્યારે જ્યારે આ પૃથ્વી ઉપર અધર્મ વધી જાય છે અને ધર્મ જાણો પડી જાય છે, ત્યારે હું મહારા દેહને સજી છું. મતવળ કે હું મનુષ્યકારે પ્રકટ થાઉં છું. સાધુમંત પુરુષાનુ ગ્રહણ કરવાને અને કુટ પાખંડી લોકોના નાશ કરવાને હું યુગેયુગે અવતાર લઉં છું. એની રીતે આ પૃથ્વી ઉપર અનેક જાતના જુલમો વધી જાય છે, લોકો અધર્મી બની જાય છે, ગોધાહણો અને ભક્તો ઉપર ત્રાસ પર્ને છે અને પૃથ્વી ઉપર કુટ વાતાવરણ પથરાઈ જાય છે, ત્યારે ભગવાન અવતાર ધારણ કરી ગોધાહણો અને માધુ-પુરુષોનું રક્ષણ કરે છે. ઉપર પ્રમાણે પૃથ્વી ઉપર જુલમ વધી ગયો ત્યારે ભગવાન પ્રગટ થઈ મોટા મોટા દેવો જેવા કે અગ્નિ, ગંધર્વ, આયુર તથા કંઈ જાના ગ્રહોનો સહાર કરી ભારતમા સર્વત્ર શાંતિ સ્થાપી, પોતે અવનવી બાળકીડાઓ કરી, ગોપીજનો તથા ભક્તોને આનંદના રસનું દાન કરી તમામ ગોકુલવાસીઓનો ઉદ્ધાર કર્યો અને ભગવાને પોતાની જાંસીના ચરે સમગ્ર ભારતવાસીઓનું મન દરી લઈ, જાંસીના મીઠા ચરોથી હૃદયના રોગો દૂર કરી, પોતાના સ્વરૂપનું દાન કર્યું ભગવાને તમામ ત્રણવિંતાઓને નિષ્કામ વૃત્તિથી ચસકીડા કરી પ્રેમામૃત પાઇ પોતાની અઘૌકિક

દિવ્ય લીલાનો સાક્ષાત્કાર કરાવી પોતાની લીલામાં હંમેશને માટે રચાવે આપ્યું છે. એ ભક્ત-
વત્સલ ભગવાનનો આજ પ્રાકટ્યમહોત્સવ છે. તેનું સ્મરણ હીતન કરી ભારતની પ્રજા ભક્તિ
રસની અંદર તહીન થઈ ગઈ છે. ભક્તિસંપ્રદાયોમાં તેના પ્રાકટ્યનો મહામહોત્સવ ઘણી ધામ-
ધૂમથી ઉજવાય છે. પુણિસંપ્રદાયમાં તો એ બાળકૃષ્ણ પ્રથમે પડેને કુલાવી પુણિમક્રો આનંદ
આનંદ માને છે. એ વચ્ચેના રક્ષણાર કનૈયાને એવો કથો ભારતવાસી દરો કે તેના ઉત્સવને ન
માને ? આજ એને પ્રકટ થયે દરેકરો વર્ષ પીતી ગયાં છે. પરંતુ આજ એ મંત્રગતિયિ
હોવાથી જાણે એ કનૈયા આજે પ્રકટ થયો છે એવો અનુભવ માથમ પડે છે. એ કનૈયા પ્રકટ
થઈને ભારતની અંદર ભક્તિની રેઝમહેલ વહેવડાવી છે, વનદ હો એ નંદનંદનને, જય હો
એ ભક્તવત્સલની.

શ્રીયમુનાજી.

સેતું સદા હું થમને પવિત્ર ! તારાં લસનાં મધુ પાદ-પદ્મ;
તું પાર પાડે જનવાંછનાઓ, તું છે ભગિની મમદેવતાની. ૧
તારે તરે કાનનકુંજ શોભે, મ્હેકંત લેરે મધુરા સમીર;
તારા જળે પુષ્પરમ્ભો દબેથી, ભાગીરથીનાં પદ્ય રહેજ દારે. ૨
જન્મી ક્ષિત્તિને જીવને વહે તું, મંજા વહેલી શિવની જટાથી;
મંજા મણિયે મુરતી ધુતી ને, તું કૃષ્ણની પાદરજે પવિત્ર. ૩
ત્યારે પદ્મધાં હુધીકાં રાગે, રસાધને વામુકિની રણુએ;
ને તાત સાથે નિગ, નંદજેડે, ત્હેં માર્ગ દીધા પગમાં જ ત્યારે. ૪
ધારી રૂં માનવરૂપ આજે, સંદારવા દાનવટંદ કાગે;
સાક્ષાત્ પદ્મધાં પશ્ચલ અગ્રે, તે જાણુનારી પ્રથમા જળે તું. ૫
કાન્તિનિદ ! કૃષ્ણે વિપિને ચરાવી, ગોપાલ સાથે નિત ખેલી ધેન;
સંદારવા પ્રસસ રૂંદ જાણે, આમર્ષ પામે જન મુગ્ધ ભાળી. ૬
હે સ્વર્ગપુત્રી ! તુજ પાટ ખેસી, તેણે જનની કલનાદ ખેસી;
મૂળે જનને એ પશુપંખી ગીઠો, આગાલટદો, વનિત્ય મનુષ્યો. ૭
તારે નિહાળી નિત કાંન કાળા, ગોપાલ જાણા નયનો નચાવે;
કુંજે વળા આદિરતી વધૂનાં, ચાખ્યાં દરો માખણુ દૂધ મીઠાં. ૮
તારા પુલ્કિને રસરાસ ખેલ્યા, વિશુદ્ધ ભક્તિ ઉજળા અનતે,
ને પ્રેમકોળો ઉજળા દિગતે, રાધા રમે ત્યાં નિત સ્થામ સાથે. ૯
પ્રેમે ન તે વૈભવના વિદ્યાસે, ના વાસના ત્યાં જરિકે તલસંતી;
ના ભોગ તૃષ્ણા, નદિ ત્યાં વિકારો, ને પીડતા આ જનના જનોને. ૧૦

રાધાનો સ્થામ સાથેનો, પ્રેમ દેતી સદા ખંડો,

કળે ના રમૂજ ચમુ જો, કામના ના વિકાર ત્યાં. ૧૧

અનંજા કાલિનાં ધાવી દેજ સિન્ધવ મૃદતા;

ગાદને કામદેવો ત્યાં પાદ-અજળે દળાં પડે. ૧૨

ઉઠાડે અક્ષિઓ મીચી પ્રભુના નેત્રની પ્રતિ,
 પુરારિ મમ અર્પે ના કદાચે દેહ દંધ જે ૧૩
 'એસ્થા'તા વ્યભુરેણુમા રાસ રડા રસિકડે,
 ચરના ચંદ્રની સાથે લાખે એવું જગે જનો ૧૪
 રમ્યા વળી આહિર બાળ સાથે, તારા પુનિતે યમુને ' સદા તે,
 નીરે પડ્યો કન્દુક, ધીર ઉડા, લેના પડ્યા બાળક કૃષ્ણ વાસે ૧૫
 ધારા સખાના નયનેથી વહેતી, વહેતી યસુના ધનસ્થામ ચબી,
 ચબ્યા વળી વાયુ દશે દિશામાં, ને મેધ છાયા ગગને અગણ્યે ૧૬
 રોચ્યા યશોદા નિજ પુત્ર કાન્તે, ચોધાર આસુ ઢળતા નદીમાં,
 ને નદનેટો વરસે અબજસ્તમ્, મેધે રુડો ત્રાવણ માસ જાણે ૧૭
 મનુષ્યો આપડા જાણે ના કદા જન્મદેવને ?
 ગયા શ્રીકૃષ્ણ નાનાશા, નાથવા કાલિ નાગને ૧૮
 કાલિન્દિ તાગ જળમાં જઈને, કૃષ્ણે જગાડ્યો અદિરાજ સુતો,
 કાલિય પત્ની વિનવે દમરો, લેણે ન માને, હરિ તો ઠકીતા ૧૯
 ફેણો દમરો ફરડાની સાથે, જાગ્યો તહો કાનીય નાગ કાળો,
 ફેણે ફેણે ત્યા મણિરાજ ભામે, તેજે મણિના અરિને નિહાળો ૨૦
 ને બાળ લાળી હસતો વહે તે, 'શુ' બાળ નીરે ત્રિપુરો પડ્યો તુ ?
 તારે શરીર લમતી પ્રજા છે, લેણે તુ માનો અગમામણો છે ? ૨૧
 છુ બાળ નાનો હલુ દૂધ પીતો, કા બીરના સાદમ આદરે તુ ?
 લાગી અહોંથી ફૂગ લાગી જાને, કા તુ ખુવે જીવન તાડ સાડ ? ૨૨
 વાકા ઉભેના, હસતા મધુક, શ્રીકૃષ્ણ બસી મધુરી મનવે
 ' છુ બાળ નાનો હલુ દૂધ પીતો, લેણે સદા આયર માહમો હુ ૨૩
 હુ લાડીને છુ મુજ માત દાનો, જૂ થો ન ઉડા જળમાં ! આજે,
 આઘ્યો અહોં તુજ પ્રાણુ નેના, તુ આ નદીમાં પિર નિત્ય વેરે ૨૪
 સૂણી ઇશિના વચ્ચે, નાગને ઝાગ લાગી ત્યા,
 પઝારી દેહ આખોયે, ઉઘળી ઝેર પુ કતો ૨૫
 તફકથો કૃષ્ણની મામે, નાગણો ત્યા ખસી ગઈ,
 જળે દહો રૂઠા જનમ્યા, બાહુના બગાયા લહે ૨૬
 પઝારી હસ્તથી ઝાલી, આપતા પાદ શ્રીહરિ
 હરાયો દર્પ કાળાનો. મોહ પામી ઢગી પડ્યો ૨૭

(દુતવિલંબિન.)

કરુણુ કહ્યો નાગણુ વિનખી, વિનતિ તે કરતી કર નેહીને
 ' નહિજ આજખીયા જનનાથને, દગિયુ ઝસરી માથ સદા મરે ૨૮
 નમન વદન નાથ દમર છે, નહિજ પ્રાણ હરો અમ નાથના
 લઈ ગમે પતિને વસીશુ દૂરે, નહિ કેલ વિપ તે જળમાં ફુંકે. ૨૯
 વિપત વાદળ છે પ્રભુ ઝેક તે, દગિ ' સદા/દગલે, મુખ આપળે.
 ગરડ તો અમને નિત લખતો, ગરડથી અમને નિત રક્ષજો. ૩૦

જાણે તેમને અને પુષ્ટિમાર્ગને કંઈજ સંબંધ ન હોય તેમ આ પાઠમાં એક પણ પુષ્ટિસિદ્ધાંતો અથવા તેમના આગયુરુ શ્રીમદ્વલ્લભાચાર્યજી માટે એક સખ્ત પણ સખવામાં આવ્યો નથી. તે હું ઘાટે જુ કે વૈષ્ણવ વિદ્વાન વર્ગ આ પ્રત્યે હવે જરા પણ દુર્લક્ષ કે દીવ નહિ કરશે અને સત્ત્વ પ્રધાન ગણુ ગણશે. આને માટે એક ચોક્કસ લખાણ લખી અને તેના પર સોંક્યો સહીઓ લઈ નામદાર ગવર્નર સાહેબ પાસે એક ટેપુટેશનની મારફતે આ અરજી લઈ જવાની ખાસ જરૂર છે. ટાઇ પણ રસ્તે વિદ્વાનોએ આ વસ્તુ ધ્યાનમાં લઈ ગવર્નમેન્ટમાં લાગતા વળગતા અધિકારીઓ સાથે મસલન ચલાવી આ લડતને અનેક રીતે પૂર્ણ પણે ઉપાડી લઈ પ્રાયશ્ચિક શાળાઓની વાચનનાળાના ઉપસા પુસ્તકોમાં શ્રીમદ્વલ્લભાચાર્યજીના શીર્ષક નીચે તેઓશ્રીનું છવનચરિત્ર અને તેઓશ્રીના સિદ્ધાંતોને મિશ્ર કરી એક રચના પાઠ મુકાવરાવવો જોઈએ. શ્રીમદ્વલ્લભાચાર્યશ્રીની કૃપાર્થી લડત ઉપાડતા આપણે તેમાં જરૂર ફગાવન ચર્ચિયું અને પુષ્ટિસિદ્ધાંતથી અત્યંત સમાજ દરજ્જાની ઇલાક મુજબણમાંથી મુક્ત ચર્ચિયું.

તા. કે.—જૈન ધર્મ, જૌહ ધર્મ, સંકરાચાર્યજી, મુમલમાન, પારસી
માતમી ચોપડી માતમી ચોપડી સાતમી ચોપડી પાચમી ચોપડી પાચમી ચોપડી
પાઠ ૬૦ પાઠ ૫૯ પાઠ ૬૫ પાઠ ૫૬ પાઠ ૫૭

ઉપરાંત પાચમી ચોપડી પાઠ ૨૦ અને પાઠ ૯ સાતમીમાં પાઠ ૬૪ છઠ્ઠીમાં પાઠ ૨૧ પચેદ અનેક ગ્રંથો જુદા જુદા ધર્મોનું સ્પષ્ટીકરણ કરેલું છે.

નોંધ:—રા. ચીમનલાલભાઈનો આ એક પ્રેરક સૂચના છે—કહો કે અર્ધ જાગૃત લાખો વૈષ્ણવોના હૃદય સુધી પહોંચનારો દુનંદુલિનાદ છે. મુનાઈ ઇલાકમાં લાખો વૈષ્ણવો છે અને તેઓ ધનાદય લોહને મોટી લાગવગ ધરાવનારા છે તેમના અદ્યક દ્રવ્યના દાનથી અનેક ઇતિર સંસ્થાઓ પોષાય છે. પણ સંપ્રદાય તરફ તેઓનો આત્મવિશ્વાસ જુગાતા દીવો જણાયો છે, એટલે તે દીવાને સંતોરને તેજ પૂરવાની જરૂર છે. જો તેઓ આ કામમાં અગ્રેસર બને તો ? ધણું થાય. ખીલું કેળવણીખાતાના આપણા પુષ્ટિમાર્ગો વિદ્વાનો છે, તેઓ પણ આ દિશામાં પ્રગતિ કરી શકે છે જો તેઓ મોટા મોટા ઓદ્યાઓ પર દત્તા અને છે, તેથી બાલમનોદશાના અનુભવોના અભાવે તેમણે ઉપેક્ષા કરી છે, જના હવે નો તેઓએ જાગૃત થવું પડે છે. આવી લડતની આગેવાની લેનાર પુષ્ટિમાર્ગના એક ચરવીર ચોદા નડિયાદવાળા લગવદીય રા. રા. મોહનલાલ લડુભાઈ શાંદ એ કામ રાજ ધરી રાં, પણ તેઓ હાલ લામા (મોતીયા ઉતરવાથી) જુની ગયા છે. મું પુરક મંડળ આ લડત નહિ ઉપાડી લે ? તંત્રી.

મુંસાફરી, ઘર અને દવાખાનાને ઉપયોગી

આયુર્વેદિક ગૃહચિકિત્સક બોક્સ.

મોટી પેટીની કી. રૂ. ૨૬. નાનીના રૂ. ૧૫.

આ પેટીમાં જુદા જુદા રોગો ઉપર આપવાની ૩૦ જાતની દવાઓ સખવામાં આવી છે વિવિધ માટે ક્ષમસીને લખો—

હર પ્રકારની શાઓકા
ગાઓ અગમે.

} મી. પી. આયુર્વેદિક કેમિકલ વર્ક્સ (લેબોરેટરી)-
રાયપુર. સી. પી.

ચર્ચાપત્રો.

૧. છંદોભંગદોષ !

૩. રા. શીમાનું “શુદ્ધાદિત” ના અધિપતિ આદેશ, વિ. “બીચૂરવિકા” ના પ્રથમ પુસ્તકની નવમી સંખ્યામાં અમારો મોકલાવેલો અભિપ્રાય પ્રકટ કરી તે નીચે ટિપ્પનીમાં “છન્દોમદ્ગદોષઃ” એવું લખ્યું છે, તે જોતામાં અત્રેથી “છન્દોમદ્ગદોષઃ” સંબંધે ખુલાસો થાવી મોકલવા પ્રયત્ન પત્રો લખાયા પણ કોઈને જવાબ નહીં મળ્યાથી અમે “શુદ્ધાદિત” ન્યાયનું અવલંબન કર્યું હતું. પણ ક્ષિત્તેશ્વરે આપના સાતમા વર્ષના ૧૦ મા અંકમાં તે સંબંધે પ્રકટ થયેલું “ચર્ચાપત્ર” આણુ આપારીઓમાં અમારા જોવામાં આવ્યું છે. જેથી ખરી દરખાસ્ત તરફ દેખી જવાબ આપવા ફરજ પડી છે. સગવડ આ નીચેના લેખને આપના માસિકમાં સ્થાન આપી આપારી કરશે અને આ જાગન જે અંકમાં આવે તે અંક અમને મોકલાવી અપવા તબતીબ કરશે.

“ચર્ચાપત્ર” માં “વાસ્તવિક પંક્તિ આ મુજબ છે. હરિશંકર શાસ્ત્રીવરપ્રાહિતા “બીચૂરવિકા” પ્રાપ્ત ઉપર જણાવેલી પંક્તિ તદ્દન અશુદ્ધ છે.” એવું લખીને “છન્દોમદ્ગદોષઃ” એ ટિપ્પનીને નિર્વાહ કરેલો છે. ટિપ્પનીમાં તેમ દેખા “છન્દોમદ્ગદોષ” લખીને માત્ર છન્દશાસ્ત્રની જ નિપુણતા પ્રતીતી હતી. હવે વળી આ ચર્ચાપત્રમાં “હમન્ત” શબ્દ સમાસમાં દીર્ઘ કેમ થાય એવું લખી ક્ષાલ્પન ની હોંશીયારી તરફ દેખી છે, પણ એ બધી ભુકી બનાવટ છે. કેમકે અમારા લેખકો અભિપ્રાયમાં શાસ્ત્રીવર એવો દ્વંતરધરશરણોજ શબ્દ છે. “બીચૂરવિકા” માં લખવા મુજબ અને “ચર્ચાપત્ર” માં લખવા મુજબ શાસ્ત્રીવર એવો દીર્ઘધરશરણો શબ્દ છે જ નહીં. જેથી દીર્ઘધરશરણો ખોટો આશ્રય લઈને જેટલું “ચર્ચાપત્ર” માં લખવામાં આવ્યું છે, તે બધું તરફદારેયું છે અને “શુદ્ધાદિત” નું અવલંબન કરી તદ્દન ભુકી ચર્ચા કરેલી છે.

“બીચૂરવિકા” માં લખાએલા અમારા અભિપ્રાયમાં મોટી ભૂલો ૫ અને ન્હાની ભૂલો ૭ મળીને બાર ભૂલો કપટ જોવામાં આવે છે, તે ઉપરથી જ પ્રશ્ન તપાસનારની હોંશીયારી સોંપ જોવાને સુવિધિત થાય છે. વધારે લખવાની જરૂર રહેતી નથી.

“હમન્ત” શબ્દસમાસમાં દીર્ઘ કેમ થાય તેવું આલેખકોએ સમાધાન કરવાનું રહ્યું એમ જોઈ જાય છે તે આપેજ ગણી જોવી.” એ પ્રમાણે લખીને ચર્ચાપત્ર લખનારે જો શાસ્ત્રીવર એવો દ્વંતરધરશરણો શબ્દ હોય તો પણ છન્દોમદ્ગદોષ કાયમ રહે છે નિરૂપ થતા નથી, એવી માન્યતા જણાવી પોતાનો “દુત્તવોષ” નો અભ્યાસ અને માત્રાએ ગણવાનું વિગત કું છે તે સોંપક પછે વિદિત કરી આપ્યું છે. જો દ્વંતરધર માનીને શાસ્ત્રીવર એવો દ્વંતરધરશરણો શબ્દ માની માત્રાઓની ગણતરી ગણાય અને “દુત્તવોષ” ની ઉપસ્થિતિ બરાબર હોય તો “વચ્ચાઃ પાદે પ્રથમે દ્વંતરધરમાઃ” એ પ્રમાણે પ્રથમ પાદમાં બાર માત્રાઓ બરાબર થાય છે. પછી છન્દોમદ્ગદોષ કે ક્ષાલ્પવોષ કેવી રીતે રહે છે ? તેમજ “આપેજ ગણી જતી” એમ લખ્યું છે તો દ્વંતર માની લીધા પછી નિર્દોષ બનેલા તત્તે પ્રશ્ન જોવાની શી જરૂર રહે છે ? બાર માત્રાઓ બરાબર

અર્થ ગયા પછી શું ગણવાનું બાકીમાં રહે છે? તેનો ખુલાસો ચર્ચાપત્ર લખનારે પોતાની સમગ્ર મુજબ જાહેર કરવાનો બાકી રહ્યો છે.

“ઉપર જણાવેલા સંમતિપત્રની અસર પ્રત મારી પાસે મોલુદ છે. જે રા નરોત્તમ શાસ્ત્રી તેનો બંધોક બનાવવાનું અર્થ સદન કરે તો તેમને ખરચે અસાધ્ય પ્રત વિક્રોની દૃષ્ટિમાં આવી શકે તેમ છે.” એ મુજબ ખરચનો બોલે બતાવેને રા. નરોત્તમ શાસ્ત્રીને અને “આ પ્રમાણે જે હસ્તદોષ બાની શ્રેવામાં આવે તો હસ્ત યતાં કેટલી માત્રાઓ થાય છે તે આપેજ મળી નેથી.” એ મુજબ માત્રાઓ ગણી જોવાનું જણાવી આપને પણ હાવાની આલાપી વાપરીને “નિર્વિવેકાપિ ચર્ષણ કતંત્યા મહતી ફળા” એ વચનનો પરિપૂર્ણ ઉપયોગ કયો છે. બંધોક બનાવવાનો અર્થ સદન કરવા અમો તૈયાર છીએ પણ તે સાથે “અસલમયમયમૂલકારણમ્” એ વચનનો અનુભવ થવાથી વિશેષમાં જણાવીએ છીએ કે “જેમની પાસે સેકેડે વિદ્યાર્થીઓ ઉચ્ચોમ્ન્ય અને વ્યાસરૂપ ભણી ગયા છે, અને લાક્ષણિક ભણી રહ્યા છે તેવા પાઠશાળાના અધ્યાપકોની કમીટી નીમીને તેમાં અમારી અસર પ્રત રજુ કરી બંધોકની સાથે અધ્યાપક કમીટીનું પ્રમાણપત્ર પણ જાહેર કરવું.” તે સંબંધે જે ખરચ થશે તે પણ સદન કરવા અમો તૈયાર છીએ, પરંતુ તેમ કરતાં પહેલાં જે અમારા લખેલા અભિપ્રાયમાં શાલિવર એવો હસ્તવર્ધકારવાળોજ શબ્દ હોય અને અમારી લખેલી “જાર્જી” દોષ વિનાની હોય તો “ચર્ચાપત્ર” લખનારે બંધોક અને અધ્યાપક કમીટી બાબત જે ખરચ થાય તેથી બમણી રકમ આપવાની પ્રતિજ્ઞા જાહેર કરવી જોઈએ.

“ચર્ચાપત્ર” માં જે સંકુલ પત્રની ત્રીજી આપી છે તે પત્ર અમોને મળ્યો નથી. જેથી તા. ૨૦-૧૦-૩૨ નો પત્ર લખવાની ચેષ્ટા સ્વભાવસ્થામાં થયેલી લાગે છે. જે જાગ્રદસ્થામાં સદરજુ પત્ર પોરટ થયો હોય તો અમને મળ્યા વિના રહેજ નહીં, અને, અમારે અગ્રેથી જા. નં. ૧૧ થી (૩૦-૧૦-૩૨) જે પત્ર લખ્યો પડ્યો હતો તેની દરકાર પછી રહે નહીં.

સંકુલ પત્રના જવાબમાં જણાવવાનું કે—

નાસ્ત્યેવાસ્મલોપિતે પત્રે સમ્બોધનાન્ત પદં દુષ્ટમ્ । નહિ સર્વેષાં સર્વત્ર સર્વદા સમ્ભવન્તિ પ્રમાદાઃ । શાલ્વિશ્વન્દસ્ય સમાસાન્તર્ગતવાદેવ દોષર્ણાલ્પરસ્યાપ્રવૃત્તૌ, હસ્તેન્કારસ્વસ્ત્વે, નૈવ સમ્ભવન્તિ કથાશ્ચિદ્વિષ્ણુન્દોમહદોષઃ । મવતુ નામ દિપ્તની યસ્ય કસ્યાપિ, દોષધેત્તદાવિકરણે કીદશઃ સ્યાન્કસ્યચિદપિ વિરોધઃ ? કિન્ત્વભિપ્રાયસ્સ્વસ્મામિઃ સ્વયમેવ લિલિત ઇતિ નૈવાસ્તિ તસ્મિન્દોષ-રાક્ષાવકાશ ઇતિ દૃઢં વિશ્વસિમ્

“ચર્ચાપત્ર” માં “શિષ્યોના પત્રની ઉપેક્ષા કરી” એમ લખ્યું છે, પણ અમોએ અગ્રેથી જા. નં. ૧૧ નો (૩૦-૧૦-૩૨) છેલ્લો પત્ર મોકલાવેલો હતો તે મળતાં તેનો જવાબ આપવા પુરતું પણ સૌજન્ય વાપરી શકાય નથી, હાત્તર્થ સુધારો છે કે સ્વયંચાલો છે, અને ગુરુત્કૃપ ગુમાવ્યું છે કે પાત્રન ક્યું છે, તથા દિપ્તનીમાં લખેલો “છન્દોમદ્દોષ” જ્ઞાનપૂર્વક છે કે અજ્ઞાન-પૂર્વક છે. તેમજ “ચર્ચાપત્ર” વાસ્તવિક છે કે અવાસ્તવિક છે, અને દુઃખાદસ કાનું અને કેના પ્રકારનું છે. વિગેરેની સદર મુજબ બંધોક સાથે અધ્યાપક કમીટીને અભિપ્રાય પ્રકટ થવાથી પદ્યોક્તિ ખાત્રી થઈ જશે. અસત્ય બાજબમાં મોન મેવનું કે ઉપેક્ષા કરવી સન્માર્ગ જણાય નહીં.

ગોપાલકૃષ્ણ શાસ્ત્રી, શ્રી સં. પા. મુસ્તયુગ.

અહીં છે અને અમે માનીએ છીએ (અધ્યક્ષાધી નહિ) છીએ. માનો કે ન માનો તેથી અમેને શું ? બીજાઓ ન માને તેથી કંઈ આચાર્યશ્રીની કીર્તિ જાંખી પડે તેમ નથી. કદરવાન વિદ્વાનો તો કદર હરી રહ્યા છે અને કહે છે. સૂર્યની સામે ગમે તેટલી ધૂળ ઉડયો તે કંઈ જાંખી પડવાને નથી. તેવી રીતે આ સૂર્ય સમાન તેમજની સંપ્રદાય ઉપર અમે તેટલી ધૂળ ઉડયો, જમે તેવા અણિયો પડો, તેથી કંઈ સંપ્રદાયને હાનિ થવાની નથી. જૂન્યપાદ આચાર્યશ્રીઓ તથા સંપ્રદાયના વિદ્વાનો પ્રત્યે અહારી પ્રાર્થના છે કે આચાર્ય શ્રીમદ્વાપ્તજીના “કનકામિયેક” ની વધુ શોધખોળ કરી આચાર્યશ્રીના નિષ્કલંક ચરિત્ર ઉપર વધુ પ્રકાર પાઠવાની ખાસ આવશ્યકતા છે. હાલના આચાર્યો ધારે તો ને કામ પાર પડ્યા વિના રહેશે નહિ, વિદ્વાનો શોધખોળને માટે તૈયાર છે. પરંતુ નાણાંને અભાવે કરી શકતા નથી. તે ખરેખર સારમાથા જેવું છે. આવા રહેલા સંપ્રદાયને શોભાસ્પદ નથી. લેઘનિક વેષ્ણુવો, તમ્ભરા દ્રવ્યનો સદ્ગુણોત્તમ પ્રભુની સેવામાં કરી કૃતજ્ઞ થશે એવી આશા છે અને વેષ્ણુવોને પ્રાર્થના છે કે આત્મા કલ્પિત વાતાવરણમાંથી બચવા માટે શ્રીમદ્વાપ્તજીના સિદ્ધિતાનું ગાન કરશે તો પ્રુહિમાર્જનું રહસ્ય સમજશે. એન વિજ્ઞાનિ. લી. વાડાસીનોરવાસી શા. રમણલાલ સાંસ્કારલાલના દીરંભરજી.

૩. રાધાકુંડના મુખ્યા.

લી. દાસાનુદાસ વૃષ્ણવૃષ વહીવટાસ રાધાકુંડના મુખીયાજી તમેને તસરી આપવામાં આવે છે કે, શુભે બાઈ આ રેવા ન્યાય છે ? હમોને શ્રીકૃષ્ણવારથી તો હમોને રાધાકુંડ શ્રીમેદ્વાપ્તની સેવા ટેહલ કરવા મોકલ્યા તે બે વરસ આનંદથી ને બની તે ટેહલ કરી પેટ ભરું છું. પરંતુ હવે હમારી સાથમાં ઘણી બનીવિથી ચારત લેવાયો. શુભે ને મણુસ પડેલાં રહેનો હનો જેના બારામાં તમે પડેલાં છાપું દઈ, તે ઘાસીરામ ઉર્ફે કીસનદાસ પાછા કમંચારીઓને સમજાવી હઈ પાછા રહો છે ને મારાથી એકામિકી સંભાલી લીધો, ન તો મને ઉત્થાપન કરવા દીધાં ને ચાર પાંચ સીપાઈ કામદાર આવી ઘેરીને અને ધમકાવીને બધા સંભાલી લીધો તેમાં કઈં વખું કઈં ના લખું ને આપસમાં મોટીઆ કેટલા વાંદી લીધાં ને મને બોલવા ના દેય. હું કેવા જઈ તો મને ધમકાવે. બાર ફરવાન પર સીપાઈ બેસાડી દીધા કે કોઈ આને ન્યાય નહિ. ને જખર મારાથી દસદત કચલી લીધા ને મને પાછી રસીદ પાંદડી આપી નહી. માગી ત્યારે રેવા લાગ્યા કે તમકું કીસ બાતકી રસીદ મળે એવી રીતે મારા માથે શુભરી છે, ને મારા પાસે પાઈ નથી. હવે માદે રૂં કરવું ? તમેને સૂચના આપી છે કે ગાયે જવા આવી રહી છે. બીજું ચોડાસ પાનાં છાપીને મને મોકલો તો હું જવામાં બધા વેષ્ણુવોને વેથો દઈ પછી તો આપની મરજી માફે કેહાનું શ્રીમદ્ગોડવલ્લ શ્રીકૃષ્ણકાનાથજીના મંદિરમાં કોટડીમાં ફરમ મોકલો તો કાઠાજીના મંદિર પર અખર શ્રીકૃષ્ણકાનાથજીના મંદિર પર મોકલવેને આપને તસરી આપી છે તે માફ કરને

નોંધ—વેષ્ણુવો તરફથી ઘણી સખત ફરીયાદો થયા પછી રથળે રથળે પ્રસિદ્ધ યદી મયલા રાધાકુંડના મુખ્યા ઘાસીરામ ઉર્ફે કૃષ્ણદાસને શ્રીનાથદાસથીથરે શ્રીમેદ્વાપ્તમાંથી કાઠી મૂક્યા હતા. પણ પાછા તેઓ તે રથળે જાખલ થયા છે. શ્રીનાથદાસપ્રકરણ જલદાનું છે. નવી વ્યવસ્થા ચાલ છે. હવે બહુ અધિર નમશે નહિ અને ઘાસીરામો બાગ્યેજ ફાળી જશે. ચોડા વખત માટે બલે ઘાસીરામજી ફાંફર કરી લે. તંત્રી.

શ્રીનાથદાસપ્રકરણ.

શ્રીનાથદાસની અદ્યક્ષ દુન્યવી સંપત્તિની નવી વ્યવસ્થા ઉદયપુરનરેજ કરે તો તેમાં બાજ લેવાની ઇચ્છાથી કેટલાક માણેદુનર ધનાઢય વેષ્ણુવો ઉદેપ્રર જઈ પહેંચ્યા હતા. તેમાં મુંબાઈથી ૧. સર મનમોહનદાસ રામજી, ૨. શેઠ લાલજી નારજી, ૩. શેઠ વહીવટાસ કરસનદાસ નાથા, ૪. શેઠ દેવીદાસ મહાવલ્લ કામરડી, ૫. શેઠ ભજાનદાસ મનમોહનદાસ, ૬. શેઠ જમનાદાસ રતનચંદ, ૭. અમદાવાદથી—શેઠ શ્રીમનલાલ ગીરધરલાલ, ૮. શેઠ ગોવિન્દદાસ માણેકલાલ, ૯. શેઠ હરિદાસ બચરતલાલ, ૧૦. શેઠ જીવજીલાલ ગિરધરલાલ, ૧૧. શેઠ શ્રીમનલાલ ગીરધરલાલ પટોદરા, ૧૨. શેઠ મંજારામ ખાંડવાળા સુરત, ૧૩. મદ્રાસથી દિ બા. ગોવિન્દદાસ ચતુર્જીનાદાસ, ૧૪. શેઠ પુરુષોત્તમદાસ ગોકુળદાસ, ૧૫. રામજીલાલ નારાયણદાસજી ભર્મન

૧૬૭૫, ૧૬. શેઠ નવલકિશોર ડાંગા કલકત્તા, અને દિવાન આદેબ પટવારીજી એ મુદરચે દતાં. અર્થાં શ્રીગોસ્વામી બાળક, 'મદનચં' વિદ્વંસ અને સાધારણ શિવલિના તથા ગરીબ વેપારી; જેઓની લાખિનો સંખ્યાનો કોઈ પ્રતિનિધિ નથી એ આશ્ચર્યજનક છે ! આ મુદરચે સાથે વાટચટ કરીને મદદાચ્છાએ તા. ૧૦-૧૨-૩૩ ના રોજ દુકમ નં. ૨૮૬૮ થી એને દુકમ ફરમાવ્યો કે, શ્રીનાથદાસના મીલિત્વાવિત તરીકે ચિ. શે. શ્રીગોવિન્દલાલજીને ભદેર કરવા. સગીર લાલબાવાની મીલકતના વલીવટદાર દેરીકે (Court of wards ની રૂબે) પંડિત રમાકંત માવતીય અને પંડિત મનમોહનલાલજી (કારમીરી)ને નીમ્યા છે. આ કપરાંત એક વ્યવસ્થાપિકા સૂચના બતાવી છે. તેમાં કપરાના એ અધિકારીએ કપરાંત મદેતા કુતોદયાલજી, પારેખ રતનલાલજી ચેડીવાળા તથા શેઠ લાલજી નારાયણ, શેઠ દેવીરાય આશવજી કાકરશી, શેઠ વલ્લભદાસ કરસનદાસ નાથા, રામભાણુ નારાયણજી, શેઠ મોવિન્દલાલ માતેલલાલ, શેઠ મોમનલાલ ગીરધરલાલ, શેઠ રણછોડદાસ જ્ઞાનવંદાસ પટવારી, શેઠ પુરુષોત્તમદાસ મોકુનદાસ, એ મુદરચેની વ્યવસ્થાપિકા સમિતિ નીમાઈ છે. પ્રશ્ન એ રે છે, તે આઈ ન કરે છે. છેલ્લાં દોઢ વર્ષથી વેપારીઓ સળગી રહેલી જ્વાળા પર એક રીને કાંઈક શીતલતા પ્રસરી. કમીટીના સદ્યુદ્દરચેને પ્રશ્ન સદ્યુદ્ધિ અર્થે અને એ અટગત દ્રવ્ય ત્યાં છે તેનો સદ્યુપયોગ કરવા માટેની વિગ્મત પ્રેરો. મનાદયો એ ઠબ્બે વધારવા માટેના મિચ્છામોદમાં નહિ પડતાં સંપ્રદાયની ઉતાવળ માટેની એક ચોખ્ખા કરીને તેને સદ્યુપયોગ કરી એવી આજ્ઞા છે. શ્રીયુત પટવારીજીને આ મૂલના બાળેજ કરવાની દોષ.

ઉક્ત સદ્યુદ્દરચોમાંના કેટલાક તો ગમે ગમે શ્રીનાથદાસાધીધરના સામ્રાટ આમંત્રાણથી ઉદયપુર ગયા હતા અને ત્યાં તેઓની એક કમીટી નીમવામાં આવી હતી. પણ પાછલથી એ કમીટીને ઠરાવી દેવામાં આવી હતી. આ પગથી સાથે મેં ભદેરમાં વસી વસાવ્યો દત્તો. આ ગમે તો ઉપર જણાવેલા સદ્યુદ્દરચે રહેવામાં ઉદયપુર ગયા હતા. ત્યાં જવામાં તેમના એ હેતુઓ દોઢ રાત્રે. એક તો આવી પહેલી વિકટ પરિસ્થિતિથી સંપ્રદાયને દારવારપદ થતો અટકાવવાની ધન્ય અને બીજી શ્રીનાથદાસના અટગત દ્રવ્યની સુવ્યવસ્થા થાય તેવી મુશ્કેલી. આ બે મુખ્ય ઠરાવા સંભવી શકે. મદદાચ્છાએ નીમેલી કમીટીમાંના સદ્યુદ્દરચે એવા મનાદયો છે કે તેઓને પોતાની મીલકતોએ વલીવટ કરતાં પછી પીવાની પણ દુરશ્ક મળે નહિ : તેઓ રાજપ્રખંધો ઉઘાટા શીશુખુમંદારનો વલીવટ કેમ કરી શકશે ? સમયનો કોમ્પ ક્યાંથી આપી શકશે ? અલગત, ત્યાંની કરોડોની રોકડ રકમોનું બજાર મેળવવા માટે તે સદ્યુદ્દરચેની સદાયતા આજરથક જણાશે. સંપ્રદાયની ધન્ય માટે ત્યાં એ મનાદય મંડળ ઉદયપુર સુધી મથું હોય તો તેને અમે તો શુભ ચિદ્વન જાણીએ છીએ. ત્યાં ગયેલા સદ્યુદ્દરચોમાંના સંપ્રદાયનું મમં સમજનારા અને સંપ્રદાયના મહાનુ વિશાળ આદર્શોથી વિરહ જતી હાલ આજની અચળ રૂઢિમાને સમજીને તેને દંભથી દેવાની હાંમલ થવાનારા કેટલા છે એ જ સવાલ કાઢ કરે તો ખરેખર, માયુજ જાળાવણું પડશે; કેમકે ત્યાં ગયેલા આયેલનર સદ્યુદ્દરચે શ્રીનાથદાસની તેમજ પોતાના જ જામોમાંના મોરાં મોરાં જણાતાં મંદિરોની એવી રૂઢિમાની બરદાસ કરી રહ્યા છે કે તે રૂઢિમા સંપ્રદાયિક આદર્શની કમોડીએ યથાવર્તા થીર જેવી જ સાબીત થાય. ખેર, "જમ્યા ત્યાંથી સવાર" એ કહેવત પ્રમાણે શ્રીનાથદાસને વલીવટ સુધારના ગયલા સદ્યુદ્દરચેની ધન્યને જમ્મિ અનેક વંદન કરીએ છીએ અને એ ધન્ય શિરથાલ છતો અને અગ્નિચક્ર પામે એવી આંતર આંતર અભિલાષા છે. આજ્ઞા છે કે, સંપ્રદાયને નિષ્કલંક બનાવવાની ધન્ય ધરવનારા સદ્યુદ્દરચે સંપ્રદાયનું મમં સમજીને, પોતાનાં ધર્મો અને કુટુંબમાં સંપ્રદાયને નામે આલવી અનેક રૂઢિમાને નેસ્તનાબૂદ કરીને, પોતાનાં જામોનાં મંદિરોને પણ આદર્શ મંદિરો બનાવવા માટેના પ્રયાસોમાં હવે પાછળ નહિ જ ખડે. નહિતર આ રોડાદોડીના અર્થે બલિબંધમાં કાંઈ જોડો જ શી ?

શ્રીનાથદાસપ્રકરણની આ ઉદાગ્રહ વખતે કેટલાક નિલચીલારથ શ્રીનાથસ્વામિભાગેશનું રમણ બાવ છે. એ તેઓશ્રી અત્યારે ગુલબર બિરજળા દોત તો આ સિતિ ન જ આવડ. શ્રીનાથજીનું વિઠામિત પદ લદગાઈ રહ્યું છે. શ્રીચિટ્કેશવપ્રજ્ઞના નચેક પુત્ર શ્રીનિરિધરજી પટેલા વિઠામિત થવા. તેઓશ્રીના આસુરખ્યમોદ પછી સાત ધરના અન્ય પાંચ ભાગોએ-મોં-વિંદજી આદિએ-અનુપ પુત્ર મીમે-કુટુંબજી પ્રમુને વિઠામિત પદ અર્પુ. આ એવિદાસિક સત્તરી અત્યારે પણ માર સાત ધરના શ્રીનાથસ્વામિજીના

પણ આવી ગયેલા, બહુ પોડું થવા લાગ્યું, ત્યારે આપ (શ્રીમદ્બુદ્ધ) બેઠકમાં પધારી હુમમ પધારાવી લાવી અને તાર્ણા ખુલાવી સંજનાઈ કર્યો, એવામાં સંજનાઈ સંભળીને તિલકાયતશ્રીની નિદ (ઉઠ) ઉઠી ગઈ, ભયૂત થયા. અને ખવાસને ખૂણે કે અમારા કદા સિવાય ચાલીને હુમમો કોણે પધાર્યા? ત્યારે ખવાસે વિનંતિ કરી, ને દુષાનાથ ! શ્રીકાંકરોલીવાળા બ.લક પધાર્યા છે તે હુમમ પધારાવી ગયા છે. તેણે સંભળીને શ્રીતિલકાયતશ્રી ચૂપ થઈ ગયા ! પછી આપશ્રી (શ્રીમદ્બુદ્ધ) સ્નાન કરી મંદિરમાં પધાર્યા અને રાજભોજ આપી કરી હુમમ લઈને આપના મંદિરમાં (શ્રીનાથદાસ-માના શ્રીદારકાધીયના મંદિરમાં) પધાર્યા, પછી ઉત્સાહપનસમયે હુમમ પધારાવીને શ્રીનાથજીના મંદિરમાં પધાર્યા, સેન પચેત સેરા પહેલો શ્રીદારકાજીને પેટાડી, અનોસર કરી, પછી તાળામંચગ કરી, હુમમ લઈને પોતાના મંદિરમાં પધાર્યા આમ આપશ્રી બે દિવસ સુધી ખીરાળ્યા, ત્યારુપી હુમમ આપનો પાસેજ રહ્યા, એક વખતે રાત્ર સમયે ભોજ થીને આપ ખીરાળ્યા હતા ત્યારે શ્રીતિલકાયતશ્રીને કહ્યું કે શ્રીનાથજીના મુખાર્થ સર્વ શ્રીગોસ્વામિજાલકોએ મળીને આપને શ્રીનાથજી સોંપ્યા છે; અને આપને ભગવામાં કોઈ કોઈ વખતે બહુ પોડું થય છે, અને શ્રીનાથજી બિરાજ રહે છે, માટે હુમમ પ્રસાદી બંડારમાં રાખવા, એવી આજ્ઞા કરી. તે વખતે તિલકાયતશ્રીએ કહ્યું કે આપ તે મોટો છો, આપ એવી શિષ્ટા ન કરો, તો કોણ કરે ? અને અમારી આ કચેલી ભૂત, કશુરને, આપશ્રી ક્ષમા કરો, અને આપની આજ્ઞા પ્રમાણે હુમમ પ્રસાદી બંડારમાં રહેશે, અને પ્રસાદી બંડારી મુખીયાએ આવતાની સાથેજ આપી દેશે અને અનોસર વખતે સંભાળી દેશે. એ પ્રમાણે કહી શિખામણ આપી. પછી તિલકાયતશ્રી આપની બેઠકમાં પધાર્યા બેઠકમાં પધારી વખતે અધિભરીએ વિનંતિ કરી ને દુષાનાથ ! જરો શુભો ? ત્યારે આપશ્રીએ આજ્ઞા કરી કે જયો સેનો ? એ તો ભૂવ ચૂની વાત છે. અને જોડા ન કહે ત્યારે કોણ કહે ! અને પહેલેથીજ ભૂતચૂની વાત કાંકરોલીવાળા બાળક કહેતા આવે છે. તેમાં કાંઈ નવી વાત નથી, એમના ચિત્તમાં શ્રીનાથજીની વત્સલતા આવી એટલે તેમણે અમને શિખામણ આપી, એમ કહી બહુ સહાઈના કરી. શ્રીદારકાજી નિત્ય કરી બંડે તાતજી શ્રી કાંકરોલી પધાર્યા એક વખત ઉત્સવપુરનેશ શ્રી સરદારસિંહજી અને તિલકાયતશ્રી ગોવર્દિંજીને જયો થયેલ તેથી શ્રીનાથજીને ભક્તતા આર થઈની વાર લાગી, ત્યાં શ્રી દાદાજી મહારાજ સંજાર કરવા પધારેલા હતા, તે જયો ભક્તને આપશ્રી શ્રીનાથજીને જગાવી સેવા સંજાર કરીને શ્રી ગોવર્દિંજીસથળે કહ્યું કે તરફદાર જયમાં શ્રીનાથજીને કેમ કું.ખ આપો છો ? આવી રીતે શ્રીનાથજીના ઘરમાં વ્યતિક્રમ થયો ત્યારે સર્વ શ્રીગોસ્વામિ-જાલકો મળીને કહેતા તે તિલકાયતશ્રી કણુવ રાખતા. અત્યારે તે શ્રીનાથજીના ધર્મ શ્રીતિલકાયત શ્રીગિરિધારીજી મહારાજની એવી ઈચ્છા થઈ કે સર્વ બાળકોને દર ઉઠાવી દીધો, તેવી (પ્રજ્ઞાલિખા વિરુદ્ધ) મરજી થવાથી તેમને પ્રત્યક્ષ રૂળ મળ્યું અને તે આપણે સર્વેએ બેથ કે મનવાસે કરવે પડ્યો. તેથી શ્રીનાથજીને અભિમાન શુદ્ધ નથી, આગળ જેમણે જેમણે અભિમાન કર્યો તે બધાનું અભિમાન નિવૃત્ત કર્યું જેમ કે આહુનાદિક બધાને, માટે શ્રીગુહિમાર્ગમાં પ્રથમે "જવ" સારો લાગતો નથી—"

રોક્ષસભા—રાયપુર (સી પી) તા ૨૧-૯-૩૩ ના રોજ શ્રીનાથદાસના તિલકાયત ગોત્રવામી શ્રી ૧૦૮ શ્રીગોવર્ધનવાલજી મહારાજના લીલાપ્રવેશના અત્યંત ખેદયુક્ત ખબર પેપરોમાં વાંચતા અહીંના શ્રીવલ્લભાશ્રિત વેળુવ સમાજમાં ધણીજ દીલ્હીરી દેવાઈ મઈ હતી અને શ્રીગોકુલચંદ્રમાળના મંદિરની દેખરેખ કરતા બે કસં રોક્ષ જાલગિરિય નવાનીજીએ સમસ્ત વેળુવાને રોક્ષસભા ભરવા નિવેદન કર્યું હતું. સંજે ૪ વાગે શ્રીગોકુલચંદ્રમાળના મંદિરમાં રોક્ષસભા ભરવામાં આવી હતી

(૧) પ્રારંભમાં રોક્ષસભા બોલાવવાનું મારજી વેવરાસી દારકાંકસભાધમે કહી સંભળાવ્યું હત અને સમાજ પ્રમુખરયાન રાયજહાદર રોક્ષ બંસીલાલ અગીરચંદ્રજી અનેની પેટીના મુનીમજી બો. ચેલરડો રોક્ષ જગનાથજી મુંદાને આપવા દરખાસ્ત કરી હતી તેને રોક્ષ સીવદાસજી ડાલા બેંકર ગોવર્ધનદાસ મોહારી તથા રાયસાહેબ નંદલાલના સાંકળીજી તથા ગોવરધનદાસભાઈએ ટોઠો આપ્યો હતો. (૨) ત્યારબાદ રોક્ષ રામક્રીડાજી નવાનીજી તરફથી પ્રવેશ રાખવામાં આગ્યો હતો કે સમસ્ત વેળુજી આપવી કાણે પાતાનો કારભાર બંધ (હટાવ) રાખે તેને રોક્ષ સુરદાસજી દમાળી, મોલીભાઈ લાલજીભાઈ દારકાં-

પાસમાં, દેવકરનમાં જોવામાં વગેરે અનુભાવ આપ્યું હતું અને સર્વાનુમતે ઠરાવ પાસ થયો હતો. (૩) બાદ દ્વારદાસમાં એક ઠરાવ એવો રહ્યો હતો કે આપશ્રીના લીલાપ્રવેશ માટે કેવલ બમણા નાણાંઆર (૧૫) તથા શ્રીમદ્વલ્લભચિત્ર મથેનું પકડ કરવું જોઈએ તે ઠરાવ સર્વાનુમતે પાસ થયો હતો તેમ ગાયોને પાસ નાંખવામાં પ્રબંધ થયો જોઈએ. (૪) બાદ સભાપતિ તરફથી આપશ્રીના શુભાનુવાદનું સ્મરણ અને આપશ્રીની ઉત્તમ સેવા પ્રવૃત્તિ અને આપશ્રી અને પ) સાથે પેલાં શ્રીચંપારમ્ય પદ્માર્પા હતા તે વખત વેંધુવો. પરની કૃપા ભદેર કરી અને પરિચય લતાળ્યા હતા આપશ્રીની સંપ્રદાયમાં મોટી ખામી પડી છે તેવી શોકોદ્યોગ કર્યા હતા અને વેંધુવોએ અગિયારમાં જન્મ બરાઈ આપ્યાં હતાં બાદ આપ્યાં ગાયોને પાસ નાંખવામાં આપ્યું હતું અને સભા વિસર્જન થઈ હતી.

અભિનંદન—સુપ્રસિદ્ધ સાક્ષરવધ્ શ્રીયુત અંબાલાલ જુલાખીરામ ભની બી. એ. એએએ ‘શુભરાતી’ પત્રદ્વારા મહાશુભરાતની જે સેવા બાળવી, તેને પચાસ વર્ષ પૂર્ણ થાય છે. ‘શુભરાતી’ પત્રની મોરબમ્ય કાર્યકીર્તિમાં, લોકપ્રિયતામાં શ્રીયુત ભનીજીને મદાન હોય છે. એક પત્રકાર તરીકે, એક સાહિત્યસેવક તરીકે અને ધર્મનિષ્ઠ તરીકે શ્રીયુત ભનીજીને અમારાં અનેક અભિનંદન છે અને તેઓના જીવનમાં મુલ્યમ્ મહોત્સવ ઉજવવાનો અવસર પ્રાપ્ત થયો એવી આંતર અભિલાષ સાથે મહાશુભરાતને અથવા એક વિદ્વાનને આ શુભ પ્રસંગે સત્કારવા નમ્ર વિનંતિ કરીએ છીએ.

નૂતનવર્ષાભિનંદન—નીચે નણાવેલા વિદ્વાનો, સાહિત્યરસજ્ઞો, વેંધુવોએ અમને નૂતન વર્ષાભિનંદન પાઠવ્યું છે જેને માટે અમે પૂર્ણ કૃતજ્ઞ છીએ:—૧. ‘શુભરાતી’ ના સદતંત્રી શ્રીયુત અંબાલાલ જુલાખીરામ ભની બી. એ., ૨. આસેતુદિમાચલ પંડિત મીમસાભૂષણ, વેદાંતવિચારક, મીસાસિક વગેરે વગેરે શા. શા. દરિયાકર મોનારજી સાક્ષી M. R. A. S. (મશીનાળા ગા. શ્રીમુરશીધરલાલજીના અને ગા. શ્રીમનલાલજી મદારાજ તથા ગા. શ્રીવશીભાચાર્યજી મદારાજના બૃતપૂર્વ સાક્ષી અને દાહમાં ગા. શ્રીઅનિલભાચાર્યજી મદારાજના સાક્ષી) ૩. પુરાણમૂલ્ય સાક્ષી નરનામ મીતીરામજી, ૪ શેઠ લક્ષ્મીદાસ બીમજી મચાણી, ૫. શા. શા. ગિરિધરલાલ જી સાહ, ૬. મંત્રી શ્રીગોપાલકૃષ્ણ બ્રહ્મચાર્યશ્રમ સિદ્ધપુર, ૭. મુખ્યાલ અમૃતલાલ ગિરિધરલાલ પંડ્યા, ૮. શા. શા. મોહનલાલ રવચંદ વેળીચંદ, ૯. શ્રીયુત પ્રમુશમ પ્રાગજી કાકર, ૧૦. શેઠ સુદર્લાલ પ્રમુશમ મણીયા, ૧૧. શ્રીતંત્રીયાલ ધીરજલાલ બમરાનદાસ, ૧૨. શં. શા. મોહનલાલ લલિતભાઈ સાહ, નડીયાદ, ૧૩. બમવદીય મીસી પ્રાગજીભાઈ નાનજીભાઈ, ૧૪. શેઠ મણીલાલ મુનીલાલ, ૧૫. દેસાઈ ચંદુલાલ જોગજીલાલ ૧૬. શા. કાનિલાલ મનજીલાલ સાહ, ૧૭. શા. ધીરજલાલ જોગજીલાલ સાહ, ૧૮. શેઠ ધરમસી કેલવજી મરચંદ, ૧૯. શા. શા. હોદાલાલ મનજીભાઈ.

નિરાધાર બાળકો માટે સારામાં સારો માગો કયા ?

તેમની સંભાળ લઈ, સારી રીતે ઉછેરી તેમને આદર્શ નાગરિક બનાવવાં તે. આ કામ બહુ ઉત્સાહથી

નડીઆદ હિન્દુ અનાથાશ્રમ

કરી રહ્યું છે. આવાં નિરાધાર બાળકો ઉપરાંત તબીબનાં બાળકો, નિરાધાર અરાકત અને અપંગ સ્ત્રી-પુરો વગેરેની સંભાળ લેવાનું કામ આજ વર્ષે થતાં આ સંસ્થા કરી રહી છે. આ સંસ્થાને તમે અને તેટલી મદદ કરો. રૂ. ૧ અને તેથી વધુ દાન આપનારના નામ વાર્ષિક રીપોર્ટમાં છપાય છે.

મંત્રી—હિન્દુ અનાથાશ્રમ નડીઆદ. (ગુજરાત)

શુણુનુવાદ કેમ ગાશો ? શુદ્ધ સંગીતનાં દિવ્ય કીર્તનો.

સારંગી, ખીન, દીલરૂખ, હાર્મોનીયમ વગેરે વાજીત્રોમાં સાંપ્રદાયિક કીર્તનો ઉતારવાનું આનું સાધન સંપ્રદાયમાં જોઈએ નથી. મંગળાચી શયન પર્યંતના મુખ્ય કીર્તનો, વધાઈ અને ધમાર એ બધાનાં ૮૦ રાગોના ખાસ નોંટશોનો આજ અંથમાં છે. પખાવજ શિખનાર માટે તાલના બોલ પણ છાખ્યા છે, શુભરાતી ભાષામાં સવિસ્તર સમજણ પાડી છે. નોંધાવર બે રૂપીઆ, પોસ્ટેજ પાંચ આના.

ડે. ભગવાનદાસ નારાયણદાસ કોટડાવાળા.

સુ. ધંધુકા, (જી. અમદાવાદ.)

હિસ્ટરિયાદિ વાલરોગ દર્શન.

ખેાક ૩૦ હિસ્ટરિયા, મૂળી, ચકરી, ફેફસે, ગાડપણ અને બકવાદ રોગની અમેરીકન છોટો શોધ મુજબ પાશ્ચાત્ય, યુનાની અને આયુર્વેદિક સિદ્ધાંતો, સમજૂતી અને સાદા ઉપ-ચારોનું પુસ્તક વાચેથી ધણી રાહત મળશે. કીમન ૧-૪-૦ પો. જુડું, દેશીનામું. નવા અવધાર પ્રમાણે રચના ગા. શાળા માટે નવું મંજુર કી. ગા. પો. ૦)૨.

હિસ્ટરિયા રોગનીજ સમજાણ,

પેટ'ટ દવા વાયુમુક્તાજ છે. ઉપરના દરદેમાં ૨૪ કલાકમાં ફાપદો મળે છે! સિયોન, આફ્રિકા, ધરાન અને રંગેન સંધીના દરદેઓ વાપરી સુખી થયા છે. મેડીકલ સરજનો છુટથી મંગાવે છે. દવા મહિનાની, કીમત રૂ. ૫) પો. જુડું.

છગનલાલ લલ્લુભાઈ નાઆવાળા, પેલેસ રોડના નાકે—વડોદરા.

વીસમી સદીની નવીન શોધ

સંઘદણી (ગળણી) માટે અમૃતમય ઉપાય.

પ્રતિષ્ઠિત અને વિદ્વાન વૈદ ડાક્ટરોની દવા આજ કંટાળેલા સંઘદણી (ગળતી), મુંઝામના ઝાડા, અતિસાર અને આતરડાના દામથી પીડાતા નિરાશાજનક દર્દીને આશીર્વાદરૂપ મધ પટેલી ત્રીસ વરસના અનુભવની સમજાણ દવા માટે રૂબરૂ મળેા યા સવાલપત્ર મંગાવો. પત્રબ્યવહાર નીચેના સરનામે કરવો:—

માસ્તર કે. જી. પટેલ એન્ડ સન્સ, રમ્પે રપેરીઆલીસ્ટ—માણસાવાળા.

જો મેળાય—દર રજિવારે, અમદાવાદ—કાલુપુર હાડીપરાની પોળમાં તંજુગરાની

મહડી ધર નં. ૪૫૬.

આમાં જીલાનંદ બચ્ચાઓને હૃદય પુષ્ટ આનંદી અને સુંદર બનાવે છે. કી. ૦-૧૨-૦ પો. જુડું.

પ્રશ્ન ૨૨૦—એકાંતિક લક્ષ્મી કોને કહિયે ?

ઉત્તર—જેને શ્રીહરિ વિના બીજી કોઈ પણ પ્રકારની વાસના કદિ સ્વપ્નાદિકમાં પણ નથી થતી તે પોતાને શ્રીહરિના અંશાંશ વિભૂતિ દાસરૂપ માનીને જે પરબ્રહ્મની ભક્તિ કરતો હોય તેને એકાંતિક લક્ષ્મી જાણવો.

પ્રશ્ન ૨૨૧—વિવેકી હર્મિલક્ષ્મીમાં શાં લક્ષણો હોય ?

ઉત્તર—સત્ય, અસત્ય, સાર અસાર, નિત્ય અનિત્યને જાણતો, પોતાના અવ-ગુણોને પોતે જાણી તેના વિચાર કરી તેને સારી રીતે ત્યાગ કરતો હોય, બીજા મહાન પુરુષોમાં સદા ગુણજ દેખે ને ગુણભાવને શ્રદ્ધા કરે, નિરંતર પોતામાંજ અવગુણ જુએ, પરબ્રહ્મને સદા નિર્દોષ જાણી તેમની સર્વ લીલા જન્મ કર્મ અસ્તિ-દિવ્ય પ્રભુવત્ નિર્દોષ જાણે, શ્રીહરિ અને મહાપુરુષ ધર્માચાર્યો જે જે હિતકારી વચન કહે તે સર્વ પરમ સત્ય હિતકારી ગણી, પરંપૂર્ણ સ્નેહયુક્ત શ્રદ્ધા કરી, તદ્વત્ વતે, તેમાં લેશ માત્ર સંશય ન રાખે, દેહાદિક પ્રપંચ અહંતા મંમતાથી સદા દૂર રહે, પોતાને જાંબન થાય એવું કોઈ પણ કંઈ નહિ, લગવદ્-ધર્મમાં પ્રતિબંધ કરનારા પદાર્થો ને અસત્સંગતિ તેને મન કર્મ વચને ત્યાગ કરી હંમેશાં શરણ અને સીધો વિચાર હોય તેનેજ અનુસરે.

પ્રશ્ન ૨૨૨—પ્રભુ પ્રસન્ન થવાનાં સાધન કીધાં ?

ઉત્તર—સ્વધર્મયુક્ત થઈ પ્રભુનું યથાર્થ માહાત્મ્ય જાણીને પ્રેમપુરઃસર ધર્મ જ્ઞાન વંશાચ્ચ ભક્તિ સત્સંગતિમાં દૈવ ચુરતપણે સર્વથી અધિક સ્નેહ રાખે અને સદા સર્વદા (સર્વકાળે સર્વ ક્રિયા કરતાં) અખંડિત શ્રીભગવાનના સ્વરૂપમાંજ વૃત્તિ રાખી ભજન કીર્તન સ્મરણમાં તો અવરથ કરીને પ્રભુની સ્મૃતિ ક્ષણે ક્ષણે રાખવી.

પ્રશ્ન ૨૨૩—કયાં વાસનાને બીજરૂપ જન્મ લેવાના કારણરૂપ માનવી ?

ઉત્તર—અનેક સંકલ્પવિકલ્પો થાય તેમાંથી જે દૈવ નિશ્ચયાત્મકપણાની વાસના કે જે ટાળી ટાળી શકાય નહીં એવી મજબુત અંધિરૂપ ગંધાઈ જાય છે તે જરૂર અંતકાળે મતિમાં સજ્જડ ક્ષેત્રી સ્કુન્ધમાન થઈ આવેજ, ને તે દૈવવાસનાએ કરીને અંતકાળે થયેલી મતિ પ્રમાણે ગતિ થાયજ.

પ્રશ્ન ૨૨૪—અંતકાળે (મરણસમયે) વાસના ન રહે આવા ઉપાયની શી સુક્તિ ?

ઉત્તર—અહંતામંમતારૂપ સંસાર (પ્રપંચ) ની નિવૃત્તિ જનક વિદેહીની માફક સર્વ કાર્ય કરતા છતાં હું અને મહાઈ એ ગ્રેધી રહિત થાય. પરમાર્થનેજ સ્વાર્થરૂપ જાણે. પ્રાપ્ત થયે હવે ન હોય ને વિયોગ થયે કદ ન થાય. એવી રીતે ગૃહસ્થાશ્રમમાં રહ્યા છતાં વતે ને સર્વમાં કાર્યમાં તથા કારણાદિમાં એક પરમાત્માનેજ જાણે તો વાસનાથી રહિત થવાયજ.

પ્રશ્ન ૨૨૫—અમુક મનુષ્ય સુધર્મી છે એમ શી રીતે જાણાય ?

ઉ ૨—જે સ્વતઃ પોતે સદાચાર પાળી, સ્વધર્મયુક્ત રહી, પ્રભુને ઉપાસે તે તો પ્રત્યક્ષ રીતે સુધર્મી સમજી શકાય તેમ છે. પણ જેનાથી તે પ્રમાણે કદાચ આચરાય

નહિ તો પણ જે કોઇ સુધર્મનું આચરણ કરતા તેને વિષેજ પેલાનું નિરંતર વહાલ પૂણે રહેલાનું જણાતું હોય એટલે તે એવું બંધુ જે મહારાથી તો સદોદિત તેમના જેવું વર્તન થતું નથી, પણ એ સુધર્મને બહુજ આરી રીતે સંભાળીને પાળે છે, આ પ્રમાણે સુધર્મી ઉપર વહાલ રાખે છે કે સુધર્મ પાળનારની પ્રશંસા કરે છે તે પણ સુધર્મીની કોટિમાંજ ઉત્તમ પ્રતિભા થઇ જશે, કેમકે પોતે પોતાથી સુધર્મ ન પળાયાનું હીનપણું માની સુધર્મ પાળનારના ધર્મ ઉપર જેને અંતઃકરણથી વહાલ છે.

પ્રશ્ન ૨૨૬—ગુરુ કોને કહેવા ?

ઉત્તર—તત્ત્વવેત્તા અસ્તાં પ્રાણિમાત્રનું ઉત્તમ હિત કરવાને નિરંતરે તત્પર રહેતા હોય તેમને.

પ્રશ્ન ૨૨૭—મનુષ્યત્વે પથ્ય રૂપ તે શું છે ?

ઉત્તર—સ્વધર્મયુક્ત ભક્તિનિષ્ઠ સદાચાર.

પ્રશ્ન ૨૨૮—પવિત્ર કોણ ?

ઉત્તર—શાશ્વત્તુદ્ધિ પૂર્વક જેનું અંતઃકરણ નિર્મળ (શુદ્ધ) વર્તનનું હોય તે.

પ્રશ્ન ૨૨૯—પંડિત કોણ ?

ઉત્તર—સુબુદ્ધિવાળો વિચારશીલ પુરુષ.

પ્રશ્ન ૨૩૦—મહોદો ભય કોનો ?

ઉત્તર—જન્મમરણાદિ સંસારિ આલુ છે, તેને મટાડનાર સર્વોધીશ કાળના કાળરૂપ પ્રભુની આજ્ઞા કે મર્યાદા ન પળાય તેનો.

પ્રશ્ન ૨૩૧—શરો કોને બહુવો ?

ઉત્તર—જેણે અંતરના પડ રિપુને ઝીટ્યા છે, અને તીવ્ર વેરાગ્યયુક્ત છે, અને અનેક પ્રકારની આપત્તિ આવ્યા છતાં ભગવદ્ધર્મકાર્યમાં જે લેશ માત્ર પણ ભોળો પડતો નથી તે.

પ્રશ્ન ૨૩૨—ભગૃત કોને બહુવો ?

ઉત્તર—સદા સારાસાર નિત્યાનિત્યનો વિવેક તારતમ્યપૂર્વક ઉત્તમ સારનેજ ઓળે છે, ને તે શ્રેષ્ઠસારરૂપ માર્ગ અનુસારે જે નિરંતર વર્તે છે તે.

પ્રશ્ન ૨૩૩—શ્રવણ કરવા યોગ્ય શું છે ?

ઉત્તર—જેણે કરીને સંસારની અહંતામમતાનો પ્રપચ ટળી અખંડ પૂર્ણ પરમાનંદ પુરુષોત્તમનું યથાર્થ માહાત્મ્યજ્ઞાનપૂર્વક સારી રીતે હૃદ અને અચળ શુદ્ધ નિષ્કામ સ્નેહ પરબ્રહ્મ વિષે ઉત્તમ પ્રકારે ધ્યાય એવો મદુપદેશ.

પ્રશ્ન ૨૩૪—નિદ્રાસ્થ કોને બહુવો ?

ઉત્તર—જે નિત્યાનિત્ય સારાસારને ન સમજે એવો મૂર્ખજન.

પ્રશ્ન ૨૩૫—અંચળ શું છે ?

ઉત્તર—તારુણ્ય, મંપત્તિ, આયુષ્ય અને મન; ક્રીડથી આરંભીને તે બ્રહ્મજ્ઞાન

પ્રશ્ન ૨૩૬—ઉત્તમ અલંકાર કીયો ?

ઉત્તર—સુશીલપણાંથી સુકન સત્ વિદ્યા (બ્રહ્મવિદ્યા) ના જ્ઞાનપૂર્વક મહેબુલુરૂપી આભરણનેજ ધારણ કરે છે તે.

પ્રશ્ન ૨૩૭—પક્ષ કેની કરવી ?

ઉત્તર—ધર્મન્યાય માર્ગની.

પ્રશ્ન ૨૩૮—જય, પરાલવ (પરાજય) વિષે શી રીતે સમજાવ કરવી ?

ઉત્તર—ન્યાયમાર્ગે કદાચ પરાલવ (પરાજય) થાય તે તો બહેતર પક્ષ અન્યાયે (અધર્મમાર્ગે) કરીને જય મેળવવાની ઇચ્છા ન રાખવી. પરાપકાર કરતાં કદાચ દુઃખ આવી પડે તો વિચારે કરીને આનંદ માનવો.

પ્રશ્ન ૨૩૯—સદાચરણ પ્રાપ્ત થવાને શું કરવું ?

ઉત્તર—મત્પુરુષો પાસેથી સુશિક્ષણ લેવું.

પ્રશ્ન ૨૪૦—જગતમાં મનુષ્યે જન્મીને શું સદા કરવું ને શું ન કરવું ?

ઉત્તર—પોતાને અને સર્વને ઉત્પન્ન કરનાર જગદીશસંબંધી પૂર્ણ જ્ઞાન પ્રાપ્ત કરીને તેમની કૃતિ પ્રતિપાદક ભક્તિ સંબંધી પ્રાર્થનાદિક ગુણગાન કરતા રહેવું અને જે બાબત અચલ સર્વસારમય અને સકળ સુખની સીમારૂપ અવિનાશી ન હોય તેની કદી પણ વાંછના ન કરવી.

પ્રશ્ન ૨૪૧—અત્યંત અલભ્ય (દુર્લભ) અપ્રાપ્ય વસ્તુની પણ શું કરવાથી મંદ પ્રાપ્તિ થાય ?

ઉત્તર—સદા સર્વદા સ્વતંત્ર અને સંપૂર્ણ મત્તાધીશ પરબ્રહ્મ પરમાત્માની કૃપાથી ગમે તેવી અસાધ્ય દુઃપ્રાપ્ય હોય એવું સકળ સાહિત્ય અનાયાસ અને અદ્ય સમયમાં શીઘ્ર પ્રાપ્ત થાય છે.

પ્રશ્ન ૨૪૨—પરમેશ્વર તરફથી જેને જેને શિક્ષા કરવામાં આવે છે તે તે પ્રભુને કૂર વા સદોષ વા વિષમ દોષલાવની બુદ્ધિવાળા માને છે તે યોગ્ય ગણાય કે ?

ઉત્તર—ના, સર્વને સન્માર્ગવર્તી કરવાને માટે અને તેના ઉપર પરમાત્મચક્ર કરવાને આટું પરમહિતાયે સદા નિર્દોષ બુદ્ધિથી પરમ દયાળુપણું નિરંતર કાયમ રાખીને તેના હિતનેજ અર્થે પ્રભુ કરે છે.

પ્રશ્ન ૨૪૩—દરેકજ નિત્યનિયમપૂર્વક કઈ કઈ બાબતનો વિચાર કરવો ?

ઉત્તર—હું કેણ છું ? મને શા આટું જગતકેતાએ અલ્પ છે ? હું શું કરું છું ? આજે મહારે હાથે કાંઈ પણ પાપાચરણું કૃત્ય બન્યું છે કે મહારે કર્તવ્ય કર્મ આવશ્યક ધર્મરૂપ ફરજનું સુકથી કરવું રહ્યું છે કે કેમ ? બુદ્ધિપૂર્વક ને એકાદ કર્તવ્ય કર્મ ત્યાગ કર્યું છે કે શું ?

પ્રશ્ન ૨૪૪—ગૃહસ્થાશ્રમમાં કેવી રીતે વર્તીએ તો પરમાર્થ સધાય ?

ઉત્તર—સુધાર લોકોનો વાંસુલો રહો ને કેરવત તે સર્વ કોએ ભયં હશે. પણ તેની કૃતિ ઉપર વિચાર કરીને ધ્યાન આપનારા યોગી જનો હોય છે. (૧)

વાંસલાની કૃતિ કેવળ સ્વાર્થપરાયણજ હોય છે. સર્વ કાંઈ છોત્તેલું પોતાના જોના-
માંજ જોયી લે છે. તેમ સર્વ કાંઈ સ્વાર્થ અને કુદ્દગીનું જ પોષણ કરવું
એટલુંજ સમજે છે તેવી કૃતિ ન કરવી, (૨) રહેા સર્વ ગહાર આપી દે છે તેમ
પણ ન કરવું. (૩) જેવી રીતે કરવત ખન્ને ગાળુ તરફ સરણ નાખે છે, તેવી રીતે
કુદ્દગનું પોષણ પણ કરવું ને કુદ્દગ વરામાં પરોપકાર રૂપ ધર્મવરો (ખર્ચ) પણ
કરવો. આથી કરીને ગૃહસ્થાશ્રમમાં રહ્યા છતાં પોષ્ય વર્ગનું પોષણ કરીને, પ્રદ-
્યારી, સંન્યાસી, સંત સાધુ, આચાર્યોદિતું પણ તન મન અને ધને કરીને સન્માન કરવું.

પ્રશ્ન ૨૪૫—કઈ કઈ વસ્તુની શુદ્ધતા રાખવાની જરૂર છે ?

ઉત્તર—ગાદ્યોપચારિક સર્વ પદાર્થો તથા શરીર અને આંતઃકરણ (મન) એ
૩ વસ્તુ સદા પવિત્ર રાખવી.

પ્રશ્ન ૨૪૬—સચરાચર વાસુદેવ શી રીતે જાણીને વર્તવું ?

ઉત્તર—સમગ્ર જગતને ઇન્દ્રના અંશરૂપ વિભૂતિ જાણી પ્રભુથી પૃથક કોઈને
પણ ન જાણવા. જે પ્રમાણે આપણને ટાઢ તડકો સુખદુઃખાદે લાગે છે એજ
પ્રમાણે સર્વે પ્રાણિમાત્રને થતુંજ હશે એમ જાણી કોઈ પણ પ્રાણીને ન, દુલવવાં.
તથા પોતાથી બને તેટલું યથાસંપત્ શક્તિ અતુસારે પરગણ (પરમાર્થ) પણ રાખવું.

પ્રશ્ન ૨૪૭—કેવું બોલવું અને કિયું ન બોલવું ?

ઉત્તર—સદા સત્ય, પ્રિય અને હિતકર લાપણ કરવું. લગવતનામસ્મરણ કરવું,
પરમાર્થરૂપની સર્વ સત્કૃતિ થવા અર્થે લગવતસંબંધ જોડાયેલી ગાખતોમાં બોલવું.
આમ્યવાતાં ન કરવી. અસત્ય, અપ્રિય ને અહિતકારક કડવું કે મર્મસ્થાન લેદાય
તેણું વક લાપણ કે અપશબ્દથી ન બોલવું.

પ્રશ્ન ૨૪૮—ગૃહસ્થાશ્રમ સાર્થક ક્યારે ગણાય ?

ઉત્તર—ગૃહસ્થાશ્રમ કેવળ લગવતસેવા સધાય અને આતિથ્યનો સંસ્કાર થાય.
દેવ ઋણ, મનુષ્ય ઋણ, પિતૃ ઋણથી મુક્ત થવાય તે માટે શ્રીહરિને સર્વોત્ત-
મ નિવેદનપૂર્વક લગવત શરણાગતિ એ લગવત્કાર્ય સાધી શકેમ તોજ તે સાર્થક.
રૂપ સાધ્ય શુણાય. ને તેથી વિપર્યય (ઉલટું) થાય તો બાધક થઈ પડે. ગૃહ-
સ્થાશ્રમમાં રહ્યા છતાં તેમાં અહંતામમતારૂપ પ્રાપ્ત્યેક આસક્તિ ન હોય ને જનક
વિદેહી જેવું જળકમળવત્ રહેવાય ત્યારે તો તે બાધક ન થાય. પણ જો અહંતા-
મમતાયુક્ત રહે ત્યારે તો તેને ગૃહસ્થાશ્રમ બાધક થાયજ.

પ્રશ્ન ૨૪૯—પંડિત કોણ ?

ઉત્તર—જેમાં અપાર વિદ્યા છતાં તેનો રંચ માન પણ ગર્વ ન હોય તે.

પ્રશ્ન ૨૫૦—જ્ઞાની કોણ ? ઉત્તર—જેને સર્વ સમજાયું હોય તે.

પ્રશ્ન ૨૫૧—તપસ્વી કોણ ?

ઉત્તર—જેને કદી પણ કોઈ પણ પ્રકારનો સંતોષ ન હોય તે.

પ્રશ્ન ૨૫૨—યોગી કોણ ? ઉત્તર—જેણે હુવાંનનાને જીતેલી છે તે.

પ્રશ્ન ૨૫૩—શ્રેષ્ઠ કોણ ?

ઉ ૨ ધર્મ ન્યાયને અનુસરીને યોજનારા ઉપરાંત તે પ્રમાણે વર્તન હોય તે.

પ્રશ્ન ૨૫૪—કીર્તિ કંથી ?

ઉત્તર—શ્રીભગવાનનો જ્ઞાની ભક્તજન એવો થાય કે જે સાંભળીને સત્પુરુષને પણ શીસ હલાવવું પડે, તેવા પુરુષને ધન્ય છે.

પ્રશ્ન ૨૫૫—પુણ્યવાન કોણ ?

ઉત્તર—પરોપકારજ જેને સદા પ્રિય છે એવી કૃતિવાળો.

પ્રશ્ન ૨૫૬—ધનવાન કોણ ?

ઉત્તર—દીન માણસને યથાશક્તિ સમજાવે અનુસારે મદદ કરે તે.

પ્રશ્ન ૨૫૭—મોટો કોણ ?

ઉત્તર—પારકું હુઁખ જાણીને તેને પોતાની શક્તિ પ્રમાણે કષ્ટમાંથી મુક્ત કરે તે.

પ્રશ્ન ૨૫૮—સર્વમાં આશક્તિ ઉઠાડી દેઈ ભગવાન ઉપરજ પ્રીતિ આશક્તિ કરવાનું શું કારણ ?

ઉ ૨—સંસાર અસારરૂપ છે. માથે પદાર્થોમાં અહંતામમતા રાખવાથી જન્મમરણરૂપ સંસૃતિના જંધનપણને પમાય છે. સંસારમાં વાસ્તવિક રીતે કંઈ પણ સુખ છેજ નહિ. સુખરૂપ લાસે છે એજ માયા છે. ક્યોએ એ કાંઈ છે કે મહારા આગળ અનેક પ્રદાનો પણ લય થયો. એટલી મુદ્દતનો હું ચિરજીવી જેવો છતાં મેં તો સર્વત્ર હુઁખ હુઁખ ને હુઁખજ જોયું છે. જે સુખ હુદ્દ વળી જેમાં અનેક પ્રકારના અનંત હુઁખો જોડાયલાં હોય છે, તેને સાચું સુખજ કેમ કહેવાય ? યદ્યપિ ૧૪ ચોક લોક પર્યંતનું સુખ ભૂતળ કરતાં અધિકાધિક વૈભવ ભોગ સગાદિનું કહેવાય છે. તથાપિ તે પણ માયાવેષિત છે. માટે હુદ્દ ને નાશવંત જાણી તેને વિષે પણ આશક્તિ ન રાખવી. કલિયુગમાંજ નહિ પણ સર્વ યુગમાં નિર્ભય સ્થાન તો એક અખંડાનંદ પ્રદનુંજ સર્વ સત્પુરુષોએ નિર્ધાર કરેલું છે કેમકે તેજ એક નિર્ભય સ્થાન છે. તે સિવાય સર્વત્ર હુઁખ ઉપદ્રવ ભય હાનિ વા ગણિત અસ્થાનંદ ને પતન થવાના ભયવાળું અસાર રૂપનું છે. માટે સુમુક્ત જને નિર્ભય પરમાનંદ પદમાંજ ૧ સર્વ પ્રકારે સ્નેહાશક્તિ જોડવાની છે.

પ્રશ્ન ૨૫૯—કીયું કામ સર્વ વહું ને સર્વ આશ્રમીએ કરવું જરૂરનું છે ?

ઉત્તર—શ્રીમૂલાચાર્ય પરબ્રહ્મથી આરંભીને શ્રીસદચરુ પર્યંતને વંદન નમન સેવન કરી, તેમના કૃપાપાત્ર પરમ વૈષ્ણવોનું પણ તેજ પ્રમાણે પ્રીતિભક્તિપૂર્વક સર્વ પ્રકારે સન્માન કરવું એ અવશ્ય કર્તવ્ય છે.

પ્રશ્ન ૨૬૦—ભગવત્પ્રી પ્રાપ્તિનું મૂળ શું છે ?

ઉ ૨—સત્પુરુષનો સદા સત્સંગ કરવો અને અસત્ પુરુષથી દૂર રહેવું એજ મુખ્ય ઉપાયે કરીને ભગવન્નાર્ગ જણાઈ તેથી અજ્ઞાન ટળી જ્ઞાનભક્તિ પ્રાપ્ત થાય છે.

પ્રશ્ન ૨૬૧—સંતપુરુષ કે અસંતપુરુષ કેમ ઓળખાય ?

ઉત્તર—પરોપકાર કરવામાં પ્રીતિ ને નમ્ર ડોમળ વાણી હોય ને પરમ પ્રીતિ શ્રીભગવાન ઉપર હોય તેને સંતપુરુષ કહેવા ને નિર્દય ને કેવળ આપ સ્વાર્થી હોય ને ભગવાનથી વિમુખ હોય તેને અસંતપુરુષ કહેવા.

પ્રશ્ન ૨૬૨—મોટામતાનો નાશ ક્રિયા ક્રિયા કારણથી થાય છે ?

ઉત્તર—પોતાની મેળે પોતાની પ્રસન્ના (વળાણ) કરે ને અન્યની નિંદા કરે ને વગર પ્રયોજને બહાર વગર અસત્ય કે મિથ્યા ભાષણ કરે કે કંઈ અપ્રિય બોલે તેણે કરીને મોટામતાનો અસ્ત થઈ જાય છે.

પ્રશ્ન ૨૬૩—સંસારમાં ઘણા પ્રસંગોએ ઘણા માણસો જીવંત જીવંત કહે છે તેમાંથી સાર રૂપ કીયું વચન ગ્રાહ્ય કરવું ?

ઉત્તર—કેવળ સંસારાસક્ત જનોનું ટોળું જાડું મોટું હોય પણ તે જ્ઞાનથી રહિત હોય તો તો તે મૂર્ખોના જીવંત વચન પણ લ્યાગ કરવું ને જ્ઞાની વિવેકી સંતપુરુષ કદાચ એકાદ હોય તોપણ તેનું વચનજ પરમાર્થતત્ત્વનું સ્વીકારવું, કેમકે લક્ષાવધિ મૂર્ખોથી કંઈ શાણપણું ન આવે, ને જ્ઞાની તત્ત્વદર્શી વિવેકી પુરુષનોજ સંતોષ કરવો.

પ્રશ્ન ૨૬૪—સંસારમાં સુખી શી રીતે વત્યાથી રહેવાય ?

ઉત્તર—ધર્મ ન્યાય નીતિએ કરીને દ્રવ્યોપાજ્ઞન કરવું, ધર્મ કરીનેજ અર્થ સાધવો, તે અર્થ સાધવામાં સુખ્યત્વે પરમાર્થનેજ શ્રેયસ્કર બાણવોઃ વિવેક દેરાએ કરીને આમકામ (સંતોષી થવું) સંતોષે કરીને પૂર્ણ કામનો લાભ થાય છે. અર્થાત મોક્ષાદિનો શ્રેષ્ઠ સ્વાર્થ આમકામ યથા વજર સધાતો નથી. ન્યાય લગી કુદ્ર પંચ માસિક વિષય પર લાલચ રૂપ તૃષ્ણા હોય ત્યાં સુખી પરમ પદના સુખની આશા રાખવી નિષ્ફળ છે.

પ્રશ્ન ૨૬૫—વાણીનો ઉચ્ચાર શી બાળતમાં કરવો ?

ઉત્તર—ભગવદ્ધર્મસંબંધી કાર્યોમાં તથા ભગવત્નામસંકીર્તનાદિમાં કરવો. અથવા પરોપકારાર્થે પ્રીતિપૂર્વક મૃદુ વાણી સ્પષ્ટ સત્ય ને સર્વના હિતકરપણાની બોલવી.

પ્રશ્ન ૨૬૬—આપતકાળે હુઃખાદિ સમયે શું કરવું.

ઉત્તર—ધૈર્ય અને સહનશીલતા રાખી સર્વને સુખદાતા શ્રીહરિની ઈન્દિયા વાણી પુરુષોત્તમને અનન્યચરણાગત સર્વોત્તમનિવેદન કરવું.

પ્રશ્ન ૨૬૭—સદા સર્વદા સુખ્ય ધર્મ ક્રિયા બળવવો ?

ઉત્તર—પરમ ધર્મ તો શ્રીપરબ્રહ્મની ભક્તિજ છે, તથાપિ પરોપકાર, દયા-કૃપા એ યથાશક્તિ પ્રમાણે વાણી માત્રનું ઉત્તમ હિત થાયે તેમ કરવું.

પ્રશ્ન ૨૬૮—સુસુદુ જને સાર સિદ્ધાંત શો ગ્રહણ કરવો ?

ઉત્તર—સદ્ગુરુની જે-જે આજ્ઞા રૂપી વચનો નીકળ્યાં હોય તે સર્વ.

પ્રશ્ન ૨૨૬—આગ કરવા યોગ્ય શું ?

ઉત્તર—જે કરવાને યોગ્ય તેવું અવિદિત નિયંત્રાવરણ લાગ કરવું.

પ્રશ્ન ૨૭૦—હાના, ધર્મ, અહનશીલતા ધેર્યપણે રાખવાનું શું કામ છે ?

ઉત્તર—કોઈક અસહ્ય વચન મર્મસ્થાન લેદાય એવું કંઈક કહેવું કહે છે નિંદા કરે યા તિરસ્કાર કરે કે તાડન કરે કે દુઃખ દે તો પણ તે રાહન કરવું, પણ તેના સામે કોઈ ન કરવો અને તેનું પણ બહું થાય એમ ઇચ્છવું એ સુખ ચતુરુપે રાખે છે. તેમાં હેતુ એ સમાયક્ષો છે કે જે નિંદક જન કે દુઃખ દેનાર જન કે અપરાધથી ખોટું ભાવણ કરનાર જન તેની કુદૃતિથી હણાયલા જેવો છે. તે નીચ ગતિ ભોગવી જ રહેલો છે. ત્યારે એવા હણાયલા જનને વિશેષ દળવો એ સાધુ પુરુષોને ન ધાળે. વળી નિંદા તિરસ્કાર કે અપરાધ કરવાથી તે જન પેલા ચતુરુપથી જે કંઈ અધર્મોદિક આચરણરૂપ દોષારૂપ કૃતિ થઈ હોય તે નિવૃત્ત થઈ કાળ તે અહિંત કરનારને થાય, વિભાગી થઈ ભોગવવું પડે છે, અને ચતુરુપે ચાલન કરી લેવાથી રાહન કરનારના જે કોષાદિક હુણ્ણો તે પેલા તિરસ્કાર કરનાર અસત્પુરુષને બાળી નાખવા રૂપ થાય છે. એટલું જ નહિ, તે તિરસ્કાર કે નિંદાદિક કરનારનું સર્વ સુકૃત્યકર્મ પણ તેજ રાણે હણાઈ જાય છે. માટે અપકાર કરનારને પણ સામે પ્રત્યુપકાર ન કરવો, પરંતુ તે અપકાર કરનારા જનો પુનઃ કોઈ ચાચે એવું ન વર્તે તે આરંભે તેમાં સુગુણ આવવા આરંભે શ્રીભગવાનની પ્રાર્થના કરવી. અને પોતાથી અને ત્યાં સુધી પોતાની અપેક્ષા સક્તિ અનુચાર તનમન અને ધનથી તેનું હિત થવાને સદા પ્રવર્તવું. આ પ્રમાણે કરવાથી ભગવદ્ભક્તમાં શ્રીભગવાનના સુહૃદ પ્રવેશે છે. આવું હ્રમાધર્મમાં ભ્રેષ્ઠ કાળ અપાયકું છે અને આવા પુરુષો તે દેવોને પણ માન્ય કરવા યોગ્ય ગણાય છે.

જે ચતુરુપ ક્ષતિ કરવાથી હર્ષને પામતો નથી, અને નિંદા કરવાથી ઉદ્વેગને પામતો નથી અને સદા દ્વેષપ્રપંચથી રહિત રહે છે, તે ચતુરુપોનો આદર સર્વ કોઈ કરે છે અને તે સદા નિર્ભય રહે છે. હ્રમાધર્મ અર્થને ચોલાવૃદ્ધિકારક છે. અને અસમર્થને સુખકારી છે.

પ્રશ્ન ૨૭૧—અચત્ પદાર્થને વિષે વાસના કેમ બંધાઈ જાય છે અને તે કયો ઉપાય કરવાથી ટળે ?

ઉત્તર—વાસના ઉદ્ભવ થવાનું કારણ મનની રુચિના સંકલ્પરૂપ મનોરથ છે. પણ જનમથી લાગેલા અધ્યાયથી વાસના જડીત થઈ જાય છે. જેને નિત્ય નિત્ય પદાર્થનો વિવેક અત્તાને કરીને હોતો નથી તેવા જનને અચત્ પદાર્થને વિશે મોહાસક્તિ થઈ વાસનાનું મૂળ બંધાય છે, સુવોને, સોભરી ઋષિ યરખાને તમ અવન ઋષિને સ્થૂત શરીર કરીને તો વાસના જણાતી ન હતી, પરંતુ અંતરમ વાસના હતી, જેથી બન્ને તપ વટાવી બન્ને પરજ્યા હતા. જે સારાસાર અને

નિત્યાનિત્ય પદાર્થને યથાર્થ રીતે સમજે અને તેનો અર્થ, રીતે અંતઃકરણના સાચા વશગતે કરીને ત્યાગ કરે અને નિરંતર છાતું ચિંતન જનન સમજી ધ્યાન બાહ્યાં-બ્યંતર સર્વત્ર પ્રદાદદિની મત રાખે તો સદજમાં તે વાસના નિર્મૂલ થઈ જાય. જેહને નિત્ય પદાર્થનું અને ઉત્કૃષ્ટ સાર પદાર્થનું અવિચ્છેદ જ્ઞાન છે અને જે સદા સત્પુરુષોની સંગતિમાંજ રહી અત્પુરુષોના પ્રસંગથી દૂર રહે છે, તેને માયિક પાંચ વિષયની સર્વ વાસના સ્વપ્ને પણ ઉદ્ભવતી નથી. જેની વાસના અંતઃકરણમાં બંધુ તરીકે જડાયલી નથી તેવા જનની મલિન વાસના તો સત્પુરુષનાં સમાગમે કરીને જ્ઞાન પ્રાપ્ત થતાં તરતજ નિવૃત્ત થઈ શકે છે. દૃષ્ટાંત (૧) જેમ પક્ષીઓ ઈંડા મુકે છે તે ઈંડાં જ્યાં સુધી કાચાં હોય ને તે પક્ષી જાય તો તરતજ તે ફેટી જાય ને તેમાંનું પાણી બહાર સર્વી જાય. પરંતુ જે ઈંડુ કાંઈક આકાર રૂપનું પાકુ થઈ ગયું હોય ને તે જો કોઈ ફેડે તો તેમાંથી બધું નિસરે કેમકે તેમાં ઈંડાં મુકનારની આકૃતિ બધાઈ ગયેલી હોય છે. માટે જડીત વાસના રૂપનું ઈંડુ આકારવાળું સમજવું અને કાંઈક વાસનાવાળા રૂપનું ઈંડુ તો કાચું સમજવું.

પ્રશ્ન ૨૭૨—અખંડ વૃત્તિ લગવાનમાં રહે તેનાં કાંઈક દૃષ્ટાંત કહો ?

ઉ ૨—જે પ્રમાણે નદીઓ નાળા વગેરે જળાશયોમાં મેળવું, અદુર પાણી આવ્યાં છતાં તેનો કાંઈ પણ ભાર તે નદી પોતાના વિષે ન રાખતાં પોતાના પતિ સમુદ્રને મળવાને આંકે કેટલા બધા તીવ્ર વેગથી વહન અહનિશ કર્યા કરે છે, તેને રોકવા માટે વચમાં મહોટાં મહોટાં વૃક્ષો અને પહાડ પથ્થર વગેરે પ્રતિબંધ કરે છે, તથા પે તેથી ન રોકાતાં તે જાડ પહાડ પથ્થર આદિનાં રોક્યાં ન રોકાતાં તેને તોડી ફેંકીને માર્ગ પાકીને પોતાના ધારેલા નિશાને પોતાના સ્વછેદ સમુદ્ર તરફ પહોંચવાને માટે સદા આતુર રહે છે, તેમ શ્રીલગવાન અપણુ સર્વેના સ્વામી છે, તેમના મિલનને માટે ચોપ ગળાવી. (૨) જેમ વરકન્યા હોય ને તેમના માતા પિતા તે તો જુદે જુદે દૂર વસતાં હોય તોપણ જો બન્નેની અખંડ સ્મૃતિ પરસ્પરમાં કેટલા બધા સ્નેહથી પ્રેવાયલી રહે છે. ભલે તે વેગળે છે તથાપિ અને તે પોતપોતાનાં અન્ય સર્વ કાર્યો કરે છે તથાપિ નિઃસીમસ્નેહ સહિતની મનોવૃત્તિ તે તો અરસપરસ એકમેકમાં કેવી રીતે જોડાયલી રહે છે જો દૃષ્ટાંતના સિદ્ધાંતે પ્રાણાધિક પ્રિયશ્રી પુરુષોત્તમને વિષે અખંડ સ્નેહ વૃત્તિ સર્વ કરતાં અધિક સંહોદિત રાખવી.

હૃદા—જલમેં ખસે કુમાદિની, ચંદા ખસત અકાસ;

જો જા કે મન ખસે, સો તારી કે પાસ.

શ્રીમજ્જલ્લ સુખ્ય શ્રીગોપીજનોની સ્થિતિ વિચારો કે જુઓ. પ્રભુએ મધ્ય રાત્રે વેણુનાદ કર્યો, તો તે શ્રવણ કરતાં માત્રમાં પોતાના સર્વ પતિ પુત્રાદિકના સુખ ભોગરાગ ઐશ્વર્યોદિ પદ જૂવણ વસ્ત્રાલંકારનું કાંઈપણ લાન ન રહેતાં માયિક સર્વ બાધકરૂપ ઉપાધિનો ત્યાગ તત્ક્ષણ કરી કોઈની લેશ માત્ર પણ પરવા કે

મયોદ ન રાખનાં અર્થ રાત્રિએ જે જેવી સ્થિતિમાં હતાં તે તેવીજ સ્થિતિમાં ઉઠી દોડીને ગયાં. કોઇનાં રોક્યાં ન રોકાયાં, અને ત્યાં પ્રભુની સમીપમાં પણ બોલ્યાં કે—સંત્યજ્ય સર્વવિપયાન્. ન સત્ત્વ ગોપંકાં તન્મત્તન્મદાલદાયાવાઃ એવી ગતિ થઇ ગઈ હતી. હજાંત ઇંદ્ર અને ચંદ્ર જ ને જલ્પાએ પેતાનાં ગુરુ શૃંગરપ તેનાં પત્ની (ગુરુપત્ની કે જે માતારૂપ થાય) તેમની સાથે ગમન કર્યું (૫) વ્યવન ઋષિ એટલા બધા સમર્થ હતા કે બીજાના દેહની નાડીઓને પણ બધ કરી શકે તેવા હતા, તથાપે તે પણ શ્રી વરવાનાં આસ્ર જેન થઈ પરણ્યા હતા. (૬) એકવચગી સુનિ કે જેહને શ્રી કે પુરુષનુ બાન પણ ન હતું, એવા સમર્થ છતાં તે પણ કામમાં આખરે બલવાયા (છેનરાયા) છે (૭) સૌમરી ઋષિએ પૃથ્વી ઉપર માથાનું વિશેષ આકર્ષણ થાય છ તેથી દૂન રહેવાને શ્રીયનુનાણનાં જળમાં પેચી ૬૦ સાઠ હજાર વરનું તપ કર્યું તેવા ઋષિ એકવાર મત્સ્યનો સંગ હ.પ્તએ પડતાંજ કામથી વિહવલ થઇ માંધાતા રાતનં ત્યાં જઈ પ. કન્યા પરણ્યા. (૮) પરાશર સુનિ, તેમણે શ્રીગંગાજના મધ્યપ્રવાહમાં દિવસે સૂર્ય વિષમાન છતાં દીમરની કન્યા (કુમારિકા કન્યા) સાથે ગળા બેઠીથી બારકર્મ કર્યું હતું. ઈત્યાદિ અનેક દાખલાઓ છે કે પુરાણ અને (મહાલક્ષ્મી રામાયણાદિ) ગ્રંથ પ્રસિદ્ધ છે. જ્યારે એનિકાનિક ઉપર લખ્યા સમર્થ પુરોહિત પણ માવાઅ ઝીત્યા ત્યારે પ્રાકૃત મનુષ્યને તે માયા 'દુર્જય' થાયજ. એ માયાના રૂપ અનેક પ્રકારે છે. કંચન-કામિની-ગૃહાદિ માયિક વેલવના ભોગરાગના મોહક પદાર્થો (પાંચ વિષયના પદાર્થો) માન ગણાઈ અભિયા છત્યાદિ માટે શ્રીમદ્ભાગવતે કહ્યું છે કે ગદરીકાશ્રમવાસી શ્રીનરનારાયણ 'દુર્જ' શિવાય બીજો એવો કોઇ પણ ધોર પુરુષ થયો છે કે જેણે સંપૂર્ણપણે કામને ઝીતો હોય ?

પ્રશ્ન ૨૭૩—જેહને સ્વપુરુષનો દુર્લભ સત્સંગ પ્રાપ્ત થયો હોય તેવા સુમુહુ જને શુ શું કરવું અને શુ શુ ન કરવું ?

ઉ. ૨—વર્ણાશ્રમના સ્વધર્મયુક્ત શ્રીપદ્મજનું મહાત્મ્યજ્ઞાનપૂર્વક અને સારી રીતે હૃદ (કદિપણ ન હોય તેવો સંપૂર્ણ) પરાતપર પર્યતનો મહેમા બાલ્યુતો અને સર્વ કરતા આધિક રનેહે કરીને તે પુરુષોત્તમને પ્રવક્ત કરવાને અર્થે નિષ્કામ ભાવે પ્રેમત્વજ્ઞા લક્ષિ કરવી. અહંતામમતારૂપ સાંસારિક પ્રપંચનો ત્યાગ કરવો હૃદ વૈરાગ્ય તીવ્રપણે રાખી તેનો સમ્યક રીતે ત્યાગ કરવો. વેદશાસ્ત્રાદિકમાં કહ્યા પ્રમાણે વિહેત પદાર્થનું જ ખાનપાન કરવું અને નિષિદ્ધ વસ્તુમાનનો સદા ત્યાગ કરવો. સદાચારવિચારસંપન્ન થઈ શિષ્ટ પુરુષોએ ગ્રાહ્ય કરેલા શિષ્ટાચાર પ્રમાણે વર્તવું. નિત્યાદિકકર્મ કર્તવ્ય કર્મ સમજીને અનાસક્તેથી બ્રહ્મ પ્રત્યે કરવાં અને નેગિક કર્મપણ પ્રસંગાનુસાર કરવાં પણ કામ્ય કર્મ તો નિષિદ્ધ બાલ્હી ત્યાગ કરવાં. સારરૂપ મેહોપયોગી જાતનો શીખવવામાં વયભાદિ ન વિચારવાં. શ્રીભગવાનના પરમ એકાંતિક ભક્ત થવા માટે અધર્મસર્ગ માત્રનો ત્યાગ કરવો. જ્યારે વિશેષ દેશગાળનું માન પ્રવર્તવું હોય ત્યારે, એટલે આપત્તિકાળે ધર્મ સંકટ

પ્રસંગે પણ સ્વધર્મરૂપ પરબ્રહ્મસંબંધી કર્મ જ્ઞાન ને ઉપાસનાનો કદિ પણ લોપ ન કરવો. વળતે કાલલોપ થાય તો તેની ચિંતા બહુ કરવી નહીં. અર્થાત્ કદાચ કાલ-લોપ થાય પણ કર્મનો લોપ તો સર્વથા ન કરવો. પરબ્રહ્મથી વ્યતિરિક્ત કોઈપણ પદાર્થને વિષે આસક્તિ ન રાખવી. આપત્તિ કાળે લગવત ભરોસે દૈવ ધૈર્ય રાખવું.

પ્રશ્ન ૨૭૪—સત્યભાગમે કરીને અવરય બાંધવા યોગ્ય અને કરવા યોગ્ય સાર રૂપની કઈ કઈ બાબતો છે ?

ઉત્તર—અંતરમાં રહેલા પરિચુ (કામ, ક્રોધ, મદ લોભ, મોહ, માત્સર્ય) ને પોતાના સ્વાધીન કરવા. યમનિયમાદિ પાળી પરબ્રહ્મનું ધ્યાન ચિંતન સ્મરણ સેવન કરવું. આસ્તિકબુદ્ધિથી દૈવ શ્રદ્ધાએ કરીને સત્પુરુષનાં લક્ષણ શિખવાં ને તે પ્રમાણે વર્તવા ઉપર દૈવાશ્રદ્ધ રાખવો. શ્રીભગવાનની ભક્તિ વગર વ્યર્થ કાળ દાણાધર્મ પણ ન શુભાવશે. સર્વમાં અત્યંત સારરૂપ પરાતપર પુરુષોત્તમ છે એ ભગવાનની અને તેમના રૂપ તાદાત્મ્યપણાને પ્રાપ્ત થયેલા આચાર્ય સદ્ગુરુની અને વેદશાસ્ત્ર પુરાણાદિકમાં કહેલી આજ્ઞાઓ તે પણ ભગદત્તનુલ્લેખ શ્રેષ્ઠ પ્રમાણી તેમનાં વચનોનો કદી પણ લોપ ન કરવો. સર્વના મૂળ પ્રાચાર્ય ધર્મ છે એ ધર્મની બાબતો બાંધીને ધર્મનો સદા સર્વદા સંબંધ કરવો અને અધર્મને તિલાંજલી આપવી. સર્વ મુખ માત્રનું મૂળ ધર્મમાં રહેલું છે એમ બાંધીને કદી પણ ધર્મનો ત્યાગ ન કરવો. એકાદ પણ ધર્મનો ત્યાગ કરવાથી સર્વ અધર્મનો સર્ગ પ્રવેશ કરે છે. જ્યાં ધર્મનું પાલન હોય ત્યાં જ ભગવાન અને ભગવાનની ભક્તિ વારસ કરીને રહે છે અને નવ પ્રકારના ભેદે કરીને મુખ્ય ગણાતી નવધા ભક્તિ ને ૧૦ દશમી પરા (અથવા પ્રેમ-લક્ષણા સ્નેહાત્મકપણાની ભક્તિ) પરબ્રહ્મની કરવી એ અત્યંત સારરૂપ છે અને સર્વ કામમાં શ્રેષ્ઠ કર્મ શ્રીકૃષ્ણપરમાત્માની સેવા એજ છે એમ શ્રીજગદીશ પ્રભુની પણ આજ્ઞા છે. एकं शब्दं देवकीपुत्रगतिं वगेरे निर्माण भने કરીને શ્રીભગવાન વિષે તથા તેમના અંતરંગ આચાર્ય અને ભગવદ્ભક્તો પરત્વે નિષ્કાંમ લાવ રાખી તેમને સેવવા એમ કરવાથી પ્રભુ શીઘ્ર પ્રસન્ન થાય છે. શ્રીમદ્ભાગવતમાં શ્રીભગવાનનું વચન છે કે મહારા ભક્તજન્મેને હું આરે પ્રકારની સુક્તિ પર્યંતનું દાન આપું છું છતાં મહારા તે નિષ્કામી ભક્તજન્મે મહારી ભક્તિ સિવાય અન્ય કોઈને પણ ઇચ્છતા નથી; ને હું પણ સર્વ કોઈને મહારી ભક્તિનું દાન આપતો નથી. કેમકે હું સ્વતંત્ર છતાં ભક્તિવદે કરીને તે ભક્તને પરાધીનવત્ થઈ જાઉં છું એવો મહારી ભક્તિનો અત્યુત્તમ પ્રભાવ છે. જુઓ શ્રીમદ્ભાગવત ૩-૧૧ સ્કંધ અને ૯ સ્કંધ. સર્વ સાધનો વડે કરીને કલાત્મક શ્રીકૃષ્ણની ભક્તિ કરવી એજ અંતિમ સાર છે.

પ્રશ્ન ૨૭૫—અંતઃકરણ મલિન રહે છે તેનું શું કારણ અને તે ચિત્તવૃત્તિ શુદ્ધ થવાનો ઉપાય શો ?

ઉત્તર—માયિક પાંચ વિષયના મનોરથો (સંકલ્પો) ભરી રહે ત્યાં સુધી અંતઃવૃત્તિ મલિન રહે છે વળી દેવાદિકનો કે સત્પુરુષનો અવશણ અંતરમાં આવે

તો તેણે કરીને પણ અંતઃકરણ દોષવંત થાય છે. એ ચિત્તમાં (અંતઃકરણમાં) જરાયલા મલિન દોષવાળી વૃત્તિઓ ટળવાનો ઉપાય પરબ્રહ્મપ્રીત્યર્થે નિષ્કામ કર્મ ભક્તિયુક્ત કરવાં એ છે તેમાં અત્યુત્ક્રમને સુચંગ કરવાથી પણ મરણને કરીને મરેલી કુષુદિનો સમ્યક્ રીતે નાશ થાય છે તથા શ્રીભગવાનનું અપરિમિત જ્ઞાન થાય છે તેણે કરીને પણ અવિદ્યા નિવૃત્ત થઈ અંતઃકરણ શુદ્ધ થાય છે.

પ્રશ્ન ૨૭૬—અનુભવભતાત્મકપણાનો પ્રપંચ ત્યાગ કરવામાં એક પ્રકાર છે.

ઉત્તર—ના. અનેક પ્રકાર છે. કેટલાક તો ચંપત્તિનો નાશ થઈ દરિદ્રપણાના કારણથી (નિર્ધનતાથી) કેટલાક ઓપુઆદિના મરણથી અને અલસપાદિ કુશુંભોથી અને ક્રોધથી કેઈ અજ્ઞાનથી ને કેઈ વિચારપૂર્વક ત્યાગ કરે છે.

પ્રશ્ન ૨૭૭—શ્રીભગવાનનું યથાર્થ જ્ઞાન શી રીતે સમજી શકાય ?

ઉત્તર—પ્રથમ અત્યુત્ક્રમદાર ભગવત્કથાવાતીનું શ્રવણ કરવું. શ્રીભગવાનના યશ અને લીલા શરિત તથા તેમનામાં રહેલું કર્તુમ્, અકર્તુમ્, અન્યથાકર્તુમ્ણણાનું અને તેમાં રહેલી અશય સર્વ પ્રકારની ઐશ્વર્યાદિક આમર્થ્યનું તથા પ્રભુના અપાર અદ્વિત્યજ્ઞાન જ્ઞાન થાય છે. કેવલ પોતાની મેળે સદ્મયો વાંચવાથી અપૂર્ણ યથાર્થ જ્ઞાન થતું નથી, માટે વિજ્ઞાની જેને પરબ્રહ્મનું અવિચ્છિન્ન જ્ઞાન પ્રદાના આદ્યાત્મક અનુભવવાળું પ્રત્યક્ષાનુભવતું જ્ઞાન પ્રાપ્ત થયું હોય તેવા અત્યુત્ક્રમ ભક્તિભાના સદુપદેશ વડે શુદ્ધ જ્ઞાન જેવું છે તેવું યથાર્થ થઈ શકે છે. જેમ જેમ ઉત્તમ દરજ્જાના વજ્રાનો ચંગ મળે તેમ એક ચમજવું. વિદુર નીતિમાં કહ્યું છે કે માદૃષ્ટિઃ સન્નિવસતિ જેવા પ્રકારના સંગતું સેવન કરે તેવા પ્રકારના રંગનું તેને જ્ઞાન થાય છે. શ્રીમદ્ ભાગવતે પ્રસંગમગ્નઃ પામ્યાન્નઃ ઇત્યાદિ.

પ્રશ્ન ૨૭૮—ભગવદ્ભજાને તીવ્રતર વૈરાગ્ય યવાળી ક્રિયા હેતુથી જરૂર છે ?

ઉત્તર—અનુદંઙ લોક પર્યતના (૭ સાતે પાતાળથી આરંભીને તે ઉપરના ૭ માટે લોક સુધી પ્રદ્યાલના સત્ત લોક સુખીના સર્વ રચાનો તેના) જોગ ઐશ્વર્ય નુશ્ઠ અને અચારરૂપના અને અનિત્ય છે એમ જાણી માયિકના ક્રોધપણ પદાર્થમાં કદિ પણ મોહાસક્તિ ન થાય તો અનન્ય પરબ્રહ્મમાં નિષ્કામે હતાશક્તિપણથી સ્નેહ બંધાય. વળી નાશવંત પદાર્થો પ્રભુની પ્રાપ્તિ થવામાં બાધક રૂપ છે એમ મમભાવ. વળી સર્વ વસ્તુમાયને પરમરૂપને સરજી છે માટે ખરેખર સર્વ પદાર્થના તેજ માલીક છે એમ જાણે અને તેનો વિનિયોગ પરમ પરમાર્થ રૂપ બ્રહ્મપ્રીત્યર્થે થાય, નિત્યાનિત્યવિવેક સમયે તો સાર અજ્ઞાન અત્થ સાર અને સારમાં પણ વિશેષ સાર જોગથી અજ્ઞાન તથા અજ્ઞાનને કાઢી સારના સારરૂપ (આયુષ્યમ્ સાર) ને વિશેષ આસક્તિ સ્નેહ બંધાય એ હેતુથી ત્યાગ, વૈરાગ્યનો સ્વાત્મનિવેદન ભક્તિ કરાવવા ઉપર તરફગિદુ રહેલા સમબાધ છે. માટે હું તો સત્પાત્રને જ્ઞાન દેવું. (પરમાર્થ કર્મ કરવાં) યા ઉત્તમેષામ અત્પાત્ર

પરબ્રહ્મને જાણી જે માલીક છે તેનાજ વિનિયોગમાં તે આવે એ સાર તે પર-
બ્રહ્મને સર્વ સમર્પણ કરવું. પ્રાકૃત લોગ રાગ ઔદ્યય ઇત્યાદિકનાં સુખ તે તે
કહેવા પૂરતાં છે. (કથનમાત્ર છે) કરણ કે કુદ્રાનંદ છે વળી અનૈત્ય છે. (નાશ-
વંત છે) અને તેમાં અનેક પ્રકારના કષ્ટ વિધની રેવાઓ ચાલુ રહે છે. અસરરૂપ
છે માટે બાહ્ય સુખોને નાશવંત ને નિરાનંદ જાણી શ્રીભગવત્સંગ્રાંધી અત્યંત સાર
રૂપ અને પરમાનંદ નિત્ય છે તેનેજ વિષે સાચું સુખ માનવું. ધર્મશાસ્ત્રમાં પણ
કહ્યું છે કે-યોન્તઃ સુલોન્તરાગમઃ

અશ્વ ર૭૯—સારની વાતો ગ્રહણ કરવામાં વ્યાદિનો વિચાર ન કરવો એમ
કહ્યું છે તેનો સ્પષ્ટ પ્રોથ સમજાવો.

ઉત્તર—મોક્ષને ઉપયોગી વાતો આરૂપ કહેવાય છે, તેની શ્રેષ્ઠ વાત જો
ન્હાનઃ બાળકમાથી મળતી હોય તો તેની પાસેથી પણ શીખવી, જુઓને, શ્રીશુક-
દેવજી મહારાજ પરીક્ષતે કરેલી શ્રેષ્ઠ પુરુષેની સલામાં પધાર્યા ત્યારે શ્રીશુકદેવજી
કરતાં પણ વચે કરીને મહારા એવા શ્રીશુકદેવજીના પિતા શ્રીવેદવ્યાજજી આદિ
અનેક મહર્ષિ વયોવૃદ્ધ બિરાજેલા હતાઃ છતાં તેમનાથી વયમાં નાના એવા શ્રીશુક-
દેવજી જ્યારે પધાર્યા ત્યારે તે સર્વ વૃદ્ધ ધર્મંડળે પણ હઠીને તેમને ઉચ્ચ
સિંહાસન ઉપર પધરાવી પૂજા સ્વાગત કરી અને તે સર્વ ઋવેઓએ પણ પરીક્ષત
રાજાની સાથે શ્રીમદ્ભગવાની કથા વણુ કરી માટે વયોવૃદ્ધતાના કારણથી કોઈ
શ્રેષ્ઠતા ન સમજવી. પણ તપોવૃદ્ધ કે જ્ઞાને વૃદ્ધ હોય તેનીજ જયેષ્ઠતા ગણવી. વૃદ્ધ
થયા છતાં પણ પર જ્ઞાના સ્વરૂપને જાણતા ન હોય ને ન્હાની વયના કોઈ જ્ઞાને
કરીને સંપન્ન હોય તથા પ તે બાળક જ્ઞાનવંત હેવાથી મહેટા સમજવા. વળી
જ્ઞાન ઉકરકામાં રત્ન પડ્યું હોય તો પણ તે શુદ્ધ કરીને ગ્રહણ કરી શકાય છે
તેમ કોઈ કદાચ જાતેજે કરીને નીચ હોય તથાપિ જો તેમાં જ્ઞાન વિશેષ હોય
તો તે જ્ઞાન તે દ્વારાજે ગ્રહણ કરવું. જુઓને સૂતપુરાણી લોભશ જાતિના હતા
તથાપિ તે શ્રીભગવાનનું જ્ઞાન જાણવામાં પુરાણ ઇતેહાસાદિમાં પ્રવીણ હોવાથી શૈન-
કાદિ અનેક ઋવેઓએ તેમની કથા શ્રવણ કરી તેમનાથી જ્ઞાન પ્રાપ્ત કર્યું હતું,
પ્રવ, પ્રહલદાદિ ભગવદ્ભક્તો ન્હાની વયના હતા ને તેમણે તે અવસ્થામાં
શ્રીભગવાનની જ્ઞાને સંહિત ભક્તિ કરી તો તેમના વર્તનનું અનુકરણ
અથાપિ અર્થત શિષ્ટ પુરુષોની માફક સર્વ સજ્જનો કરે જાય છે માટે
જ્ઞાન પ્રાપ્ત કરવામાં વય કે જાતિની લઘુતાનો વિચાર ન કરવો. જો
શ્રેષ્ઠ જ્ઞાન દાતા વજ્રાને વિષે અતિશય હેન ને તેમનાં વચનને વિષે
અતિશય દૃઢ શ્રદ્ધા અને તેઓ જ્ઞાનાના સ્વભાવ સુકાવવા કઠણ વચન કહે તે
હતકારી સમજી સહન કરી વર્તે તો સાર સમજાય. જેમાં જેટલું વિશેષ જ્ઞાન
હોય તેને ભગવાન સંગ્રાંધી કોઈ અટપટી લીલા જોઈને કુતક વિપરીત સંભાવના
ના થાય તે સદા અંશયરહિત નિર્દોષ ભાવ મનાય.

સહસ્રદશાનુ ત અહણુ ન કરે ન તમ ન વરતે ચા તે સતપુરુષ ઉપર અભાવ આદે
ત્યારે પણ તે સતસંગતિને છોડીને કુપયેજ નથે. આવા જનો તો સતસંગ શ્રવણ
કરવાના પણ અધિકારી નથી. જે કોઈ અવણાધિકારી જન પોતાની અશુદ્ધ
વાસનાઓ રૂપ કુબુદ્ધિને સહપદેશ પ્રમાણે સુધારવાને સાફ તીવ્ર લાગણીથી
વારંવાર છેદન કરતો જાય તો કાળે કરીને કુભાવ, કુર્તક, કુવાસના કુસ્તિત દૃતિની
જડ મૂલસંહિત તદ્દન નાશ થાય. દષ્ટાંત—જેમ વૃક્ષનાં ડાળાં પાદમાં પાંચડીને
વારંવાર કાંપ્યા કરતો રહે તો તે વૃક્ષનો મધ્ય ભાગ અને ધરીયું હળવે હળવે
સુકાઈ જાય છે. ને જે વચ્ચમાંથીજ કાપી નાખે ત્યારે તો થડ અને ડાળાં પણ
સુકાઈ જાય છે, તે મૂળમાંથી કાઢી નાખે ત્યારે તો મધ્ય ભાગ ને ડાળાં સર્વ
સુકાઈ જાય, માટે સતપુરુષનાં વચ્ચનો ઉપર ૬૬ વિશ્વાસ રાખી તેમની આરા
પ્રમાણે વર્તવાનો દહાથહ રાખવો. દષ્ટાંત (૧) સંગસંબંધે કરીને સંયોગમાં
મિશ્રણ થવાથી મૂળરૂપ બદલાય છે, જેમકે તાલને કુલમાં વસાવીને પછી તેને
ધાણીમાં પીલે છે. તો તે તાલનું મૂળ સ્વરૂપ ન રહેતાં પ્રલેલજ સુગંધીવાન થાય
છે. તેમ સંગની વાસ જરૂર લાગે છે. દષ્ટાંત (૨) જેમ કોઈ નદીના ધરામાં અતિથય
મલિન (અશુદ્ધ) જળ ધણા દિવસનું કહેાચલું ભરાઈ રહેલું હોય પછી તે જળમાં
ચોમાસાનું શુદ્ધ સ્વરૂપ આકાશી જળ પુષ્કળ પડે ને તે નર્તુ પાણી જુના મલિન
પાણીને સારી પેઠે ધોઈને વહેવડાવી નાખે ત્યારે તે ધરામાંનું પાણી પણ શુદ્ધ
સ્વરૂપ નિર્મળ જણાય છે તેમ મલિન અંતઃકરણવાળો જન સ્વરૂપ સમાગમે
કરીને સુબુદ્ધિવાળો બની જાય છે. જે જનો મૂળથીજ આસુરી સંપત્તિવાળા હોય
તેવાની કુબુદ્ધિ જડમૂળથી ટળી બદલાય નહિ પણ જે મીઠા જળની નદી જેવા
સમુદ્રના બરાના સંયોગ મિશ્રણે કરીને સારવાળા થયા હોય તે તો અસતપ્રસંગ
થી મુક્ત થાય તો સુધરી શકે.

પ્રશ્ન ૨૮૧—સતપુરુષમાં સુખ્ય શાશ્વ શુભો જોઈએ ?

ઉત્તર—૧ સ્વધર્મ, ૨ ધર્મ, ૩ જ્ઞાને સંહિત ભગવદ્ભક્તિ, ૪ ભગવાનનો
દહાથય, ૫ વેરાથ્ય, ૬ પ્રપંચને વિષે અનાસક્તિપૂર્વક પરમાત્માને વિષે સ્નેહાસક્તિ.

પ્રશ્ન ૨૮૨—સતપુરુષને સુખ્ય રૂપણરૂપ બાધક દર્તા ક્રીયા શુભો છે ?

ઉત્તર—૧ કામક્રોધાદિ પટરિયુનો સંગ્રહ, ૨ અસતપુરુષનો નિરંતર સંગ,
૩ માન, ૪ ગણધ, ૫ અરીષ્યા, ૬ અશ્રદ્ધા, ૭ અવિવેક, ૮ કંચન અને કામિનીનો
પ્રસંગ, ૯ જીન્હા ઈન્દ્રિયની લોહપત્તા, ૧૦ સત્ય હિતકાંડી ઉપદેશ દેવામાં કોઈ
પણ પ્રકારની સ્પૃહા કે ધરમ રાખવી.

પ્રશ્ન ૨૮૩—ભગવદ્ભક્તમાં સુખ્ય ક્રિયાં લક્ષણ બાધકરૂપનાં ગણાય છે.

ઉત્તર—કપટ, માન, લોભ, છલ, ઇર્ષ્યા, હાંસી, નિંદા, દ્રોહ.

પ્રશ્ન ૨૮૪—ભગવદ્ગીતામાં શ્રીકૃષ્ણ પરમાત્માએ પોતાની દેવી માયાને

હરત્યય કરી તેથી સુદા યદનો ઉપાય પ્રભુની અનન્યશરણાગનિનો કહેલો છે. એ માયાનો એટલો શો પ્રભાવ તે સમજવા રૂપ કંઈ દાખલા કહેા.

ઉત્તર—(૧) જુઓ બ્રહ્માણ કે જે સર્વ પ્રભાતી. પિતામહરૂપ કરેવાય છે તેમજે કામદેવને ૫ પાંચ બાણ આપ્યાં હતાં. તે કામે મોહરૂપ બાણ બ્રહ્માણ ઉપરજ સુકયું તો તેજે કરીને તે બાણ આપનાર બ્રહ્માણ તે પણ પોતાની પુત્રી સરસ્વતીજના રૂપ ઉપર મોહાચક્ત થઈ તે કન્યાની પાછળ કામવાહનાથી દોરવા બાંધુજ થઈ ગયા. (૨) જેજે એ કામદેવના આધિભૃતિક શરીરને આગીને ભસ્મ કર્યું તેવા શ્રીમહાદેવજ તે પણ શ્રીભગવાનના મોહિનીજ સ્વરૂપમાં અર્પત તંપટ-પણાને મોહથી પામી ગયા, ને ચિવજ અરખાનું વીર્યપતન થવાથી નનબંધ થયા. (૩) બ્રહ્માના માનસી પુત્ર દેવર્ષિ કે જે નૈષ્ઠિક બ્રહ્મચારી જેવા નારદજિ તેમને પણ કન્યા સાથે પરણવાનું (વરવાનું) મન થયું. ને તેમાં લંગ થયાથી શ્રીવિષ્ણુ-ભગવાનને પણ શાપ દેવા લાગ્યા. સૂર્ય અરખા દિવ્ય દેવને પણ મોહ્યા નામનો દૈત્ય સૂર્યોદય મુમે દુઃખ દેવા આવે છે અને અંદ્ર તથા સૂર્ય ઉભયને શત્રુ ગણવાને માટે આવે છે. ત્યારે અન્ય પ્રાકૃત સામાન્ય જીવોને કામક્રોધાદિ રિપુ કનકગળ કરવા આવે એમાં કાંઈ નવાઈ ન કહેવાય.

પ્રશ્ન ૨૮૫—સુખદુઃખાદિ દંદપણું કેમ મનાય છે ? અને દંદપણુંથી સ્થિત કેમ વર્તવાથી થવાય ?

ઉત્તર—અર્ષની કાંચળીની પેઠે જ્યાં મુખી દેહબાવને ત્યાંથી આત્મજનારૂપ ન થાય, એટલે જ્યાં મુખી જીવ પોતાને દેહરૂપે કરીને માને છે, ત્યાં મુખી તેને સુખદુઃખાદિપણું ચાણ રહે છે. પરંતુ એ પોતાનું સ્વરૂપ દેહરૂપ નથી. પરંતુ આત્મરૂપ પોતે છે, એમ જો દેહાભિમાનથી રહિતપણે વર્તે તો તેને કાંઈ પણ પ્રકારનું દંદપણું ન રહે. દેહને સાંખ્યયોગના વિચારે કરીને અનિત્ય નિજીવરૂપ ગણે. સુખદુઃખનો આધાર મને માનવા ઉપર છે માટે આત્મજાની થયું. સ્વલ્પ મુશ્કેલ અને કારણ એમ દેહનાં કે પ્રકારનાં શરીર છે, ને તે અસ્થિર છે. આ માધિદેહ પાંચમહાભૃતિક (પંચતત્ત્વનો) છે એમ જાણી શરીરને પોતાનું રૂપ ન ગણતાં આત્મરૂપે માનવું. માટે દેહાભિમાનને ગતત કરવું. અનિત્ય શરીરને વિષે નિમત્ત અજ્ઞાને કરીને અહંતામમતાથી રહે તે દેહથી આત્મા પૃથક છે એવું જ્ઞાન થાય તો દંદપણું સહજ મુકાય માટે આત્મરૂપે વર્તવું. જેથી રીતે આત્મજાણે કરીને શાંતિ તેવી શાંતિ કેવલ વૈરાગ્યે કરીને કે વૈરાગ્ય સાથે પુરાણના થવળે કરીને પણ થવી નથી. માટે વિગાની ભગવાનજના સમાગમે કરીને દેહાતીતપણાનું જ્ઞાન મેળવી આત્મકામ થઈ સ્વાત્મજાણપણારૂપ આત્મજનારૂપે વર્તે તો જરૂર દંદપણુંથી રહિત થાયજ ત્યારે દેહનું જરૂરપણું જાણી આત્માનેજ ચિત્તનાત્ત્વ માની નિત્ય જાણે ત્યારે દંદપણું ટલે.

પ્રશ્ન ૨૮૬—નિત્ય નૈમિત્તિક ક્રમે ક્યાં મુખી કરવાની જરૂર છે ?

ઉ ૨—સારી રીતે અંતઃકરણની શુદ્ધિ થઈ પ્રજ્ઞાનો સાક્ષાત્કાર થાય ત્યાં મુખી કર્મ કરવાની જરૂર છે. સદાકાળ પ્રજ્ઞાપગયણ તાદાત્મ્ય પ્રજ્ઞામય થાય ત્યારે એટલે જેને શોચાદિકનું પણ ભાન ન રહે એવી રીતે સર્વ પ્રકારે જેહને પ્રપંચની વિસ્મૃતિ થઈ ગઈ હો તેવા પરમહંસ જેવા વિજ્ઞાની ભક્તોને કર્મ કરવાની જરૂર નથી, કર્મનું પ્રયોજન ચિત્તશુદ્ધિ છે.

પ્રશ્ન ૨૮૭—સંચિત ક્રિયામાણ અને પ્રારબ્ધ કોને કહે છે અને તે મુક્ત થવાનો કાંઈ ઉપાય છે ?

ઉત્તર—અનેક જન્મ પર્યંત સુકૃત અથવા દુષ્કૃત જે કર્યા હોય તેવાં એકઠાં થયેલાં કર્મને સંચિત કહે છે. ક્રિયામાણ એટલે કર્મ કાંઈ પણ ક્રિયા કરવી તેનું ક્રિયામાણ. પૂર્વજન્મનાં એકઠાં થયેલાં સંચિત કર્મોમાંથી જન્મ પર્યંત ભુક્તમાન થઈ શકે તેટલાં ઈ રચણાથી જે નિર્માણ થાય તેનું નામ પ્રારબ્ધ અથવા ભાવી અથવા અદૃષ્ટ અથવા દૈવ અગર ભાગ્ય એવા બુદ્ધા બુદ્ધા નામથી કહેવાય છે તેનું નામ પ્રારબ્ધ સંચિત અને ક્રિયામાણ શ્રીહરિને ચરણે અનન્યપણે શ્રીસદ્ગુરુદ્વારા જવાથી તથા વિજ્ઞાની થવાથી ટળી જાય છે. પરંતુ પ્રારબ્ધરૂપ ભાવી ફળ તે તો અવશ્ય ભક્તમાન કરવું પડે છે. અદૃષ્ટરૂપ ભાવી પદાર્થ ફેરવવાને સામર્થ્ય સર્વેશ્વર પર પ્રજ્ઞામાં છે તથા તેમના પરમ એકાંતિક સ્વાત્માતુલવી મહાત્મ સતપુરુષોને છે કર્મફલપ્રવાતા સર્વેશ્વરની ઈચ્છાનુસાર નિમિત્ત થયેલા પ્રારબ્ધને ફેરવવાને કર્તુમંકર્તુમન્યથાકર્તુમ સ્વતંત્ર પરાતપર પરબ્રહ્મ અને તેમના પરમંકાંતિક વિજ્ઞાની ભગવદ્ભક્તો સિવાય અન્ય કોઈપણ દેવદેવી કે મનુષ્યા દેકને લેશ માત્ર પણ સત્તા કદિપણ છે જ નહિ. મંત્ર યંત્ર કે ઔષધાદિકે પણ તેમાં ફેરફાર થઈ શકતો નથી વિવેકી પુરુષો પ્રારબ્ધ કર્મને ફેરવવાને કદિપણ પ્રભુને કહેતાજ નથી. પ્રારબ્ધ સંચિત ક્રિયામાણને અનુસરીને ઈશ્વરે નિર્માણ કરેલું હોવાથી તેને ફેરવવાને તે પુરુષોત્તમ કે તેમના કૃપાપાત્ર અંતરંગ મહાતુલાવ ભગવદ્દીયોજ સમર્થ છે. તથા પે તે વિવેકી ભગવદ્ભક્તો તે ઈશ્વરેચ્છા માનીને ફેરવવા રહતા નથી.

પ્રશ્ન ૨૮૮—કેટલાક ભગવદ્ભક્તોમાં દોષ પણ રહે છે, તેનું શું કારણ ?

ઉત્તર—દોષનાં નામ તે ન થાય તેના ઉપાય શા ?

- ૧ અજ્ઞાન= { જેને પ્રજ્ઞાનું સાક્ષાત્ જ્ઞાન હોય તેવા વિજ્ઞાની ભક્તો સદા સમાગમ રાખે તો ટળે.
- ૨ મોહ= { તીવ્ર વૈરાગ્ય પ્રપંચને વિષે આવી સાચો એવ પ્રભુમાં યામ તો ટળે.
- ૩ પ્રમાદ= { શુદ્ધ અચિન્તિત જ્ઞાન સદા રાખે તો ટળે.
- ૪ આળસ= { ત્યારે તીવ્ર ભક્તિએ કરીને પ્રભુની આનંદ જગે સ્વારે ટળે.
- ૫ નિદ્રા= { પોતાને પરમ પ્રિય એવી ભગવત્કથાકીર્તનાદિમાં રૂચિ લેડે તો ટળે.

આ પ્રમાણે ૫ દોષને ઓછીને સદાકાળ ભગવત્પરાયણ રહે તો સર્વ દોષ ટળી

પ્રશ્ન ૨૮૯—જાતો દોષ જાણતા છતાં પણ કેમ તેને અડધું કરે છે ?

ઉત્તર—દોષમાં પણ ૧૪ જાતને શુભલાવ રહેલો દોષ છે. તે શુભને આ તે અડધું કરે છે. જુઓને કેમ ત્યાંહિ વિષ પદાર્થો વિષમકારક છે. તથા કોઈ કોઈ પ્રયોગે અગ્રાધ્ય રોગ મટાડવાને ધનવંતરી જેવા વૈદ્યો સરખાપણ તે ઔષધમાં તે વિષને મારીને દવા આપે છે. તો તેજુ કરીને અગ્રાધ્ય રોગ પા મટે છે. તેમ અનંત અવગુણોમાં પણ એકાદ મહાન શુભ દોષ તો તેટલા શુભને ખાતર દવા લાવીને તે વિષમ છતાં તેને જરૂર પૂરતાં સ્વીકારે છે. વળી જુઓ શ્રીમહાદેવજીએ ચંદ્રને શુરેષ્ઠલીંગમનના દોષવાળો જાણ્યા છતાં તેમાં શીતલતા શુભ જાણી તેને પોતાનો અરણ્યગત જાણીને સ્વીકારી પોતાના બાલને વિષે સહ રાખ્યો છે. વળી શ્રીમહાદેવજીએ ચંદ્રમંથનના પ્રયોગે નિકળેલા વિષને સ્વ પ્રલને વિષમ દુઃખદાયક થઈ પડ્યો એમ જાણીને દેવ દાનવ કે મનુષ્ય કોઈને પણ તે ઉપદ્રવ ન કરે એમ જાણીને શ્રીભગવાનની અંમલિથી અમર્યાલગ્નિદાતા શ્રીમહા દેવજીએ પોતાના કંઠને વિષ રાખ્યું હતું. મહાન પુરુષોના અભિપ્રાય બહુજ ઉત્તમ છતાં તેનું કારણ તેમજે પ્રકટ કરેલું ન હોવાથી દુષ્ટ સમજવામાં આવતું નથી તેટલા કારણથી કાંઈ તે જાતો દોષિત છે એમ કહી શકાય નહિ.

પ્રશ્ન ૨૯૦—અર્ધકાર શાથી થાય છે અને તેથી રહિત યવાના ઉપાય શા ?

ઉત્તર—જાનિ (વર્ણન), આશ્રમ. કુળ. રૂપ, શુભ, સામર્થ્ય અધિકાર, માન, રાજ્ય, યશ, (કીર્તિ) દ્રવ્યાદિ વૈભવ સંપત્તિ કુટુંબની વૃદ્ધિ હંત્યાદિ મરોટમતા-પણીને લીધે અર્ધના થાય છે માટે આ સર્વ ઉપાધિથી રહિત યવાથી અથવા તે ઉપરની મોહાદિ તૃષ્ણા તરી નિર્માન થઈ મહાપુરુષની મન કર્મ વગેરે કરીને તનમન અને ધનથી સેવા કરે તો તેમના સત્સંગ અને પ્રસાદ (દુષા) થી અર્ધ-કારની નિવૃત્તિ થાય. ત્યાં સુધી દેહાભિમાનની પ્રતિ હોય ત્યાં સુધી નિર્માનીયનું આત્મ પ્રાપ્ત ન થાય માટે દેહાભિમાનથી રહિત થઈ આત્મચત્તારૂપથી થતે તો જરૂર અર્ધકાર નિવૃત્ત થાયજ. જેવી રીતે નદાના બાજકને માનાપમાન કે પૂજા કરે થા પૂજા નાંખે તે સર્વે સમાન બાલે છે, તેમ વરતે, નીચી ઉંચી તમામ પ્રકારની સેવા શ્રીકૃષ્ણે સંબંધ જાણીને પોતાનું બાળ્ય માનીને કરતો રહે તો તે જરૂર અર્ધકારદોષથી મુક્ત થયેજ.

મુનિશ્રી ભક્ષ કવિશ્રી દયારામદત્ત પ્રરોત્તરવિચારમય અંપૂર્ણ.

૫૬.

કામજ્ઞાન કામજ્ઞ કીર્ત્તિ રે, હો કામજ્ઞાન, બંસીમાં કામજ્ઞ કીર્ત્તિ રે;—૨૩.
વેણુ વળી બાલે નગમાં તેડ્યાં, ચિત્ત ચોરીને કાંઈ લીધું રે. હો કામજ્ઞાન. ૧
એરે ચોરીએ મહા સર્વ વણગાઈયું, મદુદી દોરીને મદી પીધું રે. હો કામજ્ઞાન. ૨
યેલી કીધી એકલની નારી, ચોરીને નાદે મન વિંધું રે. હો કામજ્ઞાન. ૩
દયાના નાથે મને દયા કરી છે, આજ સર્વે કારણ મહારે સ્તીધું રે. હો કામજ્ઞાન. ૪

ઉત્તમ ભગવદીય.

સર્વ ઉપર કૃપાવંત રહે. ક્યારે પણ કોનો દ્રોહ ન કરે.

કોઈ અપરાધ કરે તો પણ તે સહન કરી ક્ષમા રાખે પણ તે ઉપર ક્રોધ ન કરે.

ભગવદીય દ્વી ક્રોધ કરે અથવા દુર્વચન બોલે તો તે વેળાએ પણ તેમનો ન ગણે, ને પોતાનો અપરાધ માની (વિચારી કાઢી) તેમનું પુરું ન કરે.

ઉલ્લુકું તેમના પગમાં માથું મૂકી મધુરાં વચન બોલીને પોતાના અપરાધની કરાવે. ભગવદીય તથા પ્રભુથી અને ગુરુથી સદાચાર રહે.

તેમના ઉપર સદા નિર્બળ મન રાખે. પોતાની ત્રીપુત્રાદિક ઉપર પણ ભગવત ધ જાણીને મન સમાધાનપૂર્વક સમજ રાખે.

સર્વના ઉપકારમાં રહે. અનધિકારી આગળ માર્ગ રહસ્ય પ્રકાશ ન કરે.

હરિ ગુરુ ભગવદીય, ઉપર મદા ભર લાવ રાખે, મન ડગવા ન દે.

મન કોમળ રાખે. અશ્રદ્ધાતુ પ્રભુને કામ ન આવે.

ભગવત્નિવેદિત પ્રસાદી માથે રાખી અહોભાગ્ય માની અંગીકાર કરે.

ઘણો પ્રસાદ સીધામાં આગસ-નિદ્રા રોગાદિ થાય ત્યારે ભગવત્સેવામાં રાય થાય. મન વિહવલ થાય તો પણ મનનો ભરોસો ન રાખે.

સદા ભજનમાંજ આવધાન રહે. મકલ કારજ કરતાં મન પ્રભુના ચરણકમલમાં રાખે.

જહિમુંજ લોક ચર્ચા કરે ત્યારે મૌન ધારણ કરી રહે. લોભાદિને વશ ન થાય.

ભગવદીયને માથે પ્રભુ વિરાળે છે, તેનો સદા ભય રાખે.

અનુચિત કર્મ ન થવા માટે પ્રભુજીની ખીક રાખે.

સદા ચિત્ત શ્રીજીતુ ચિત્તન કરે. પ્રભુ સ્વામી ને હું દાસ એ ભાવ કદી ન છોડે.

સર્વોત્તમભાવ સહેળે હોય. બ્રહ્મવર્ચસ, બ્રહ્મ તેજ બ્રહ્મનું જાણે.

પ્રભુથી વ્યતિરેક અન્ય દૃષ્ટિએ ન પડે.

(પરમભગવદીય શ્રીદયારામભાઈના જુના હસ્તલિખિત સંગ્રહમાંથી)

(૫૬.)

ત જા હરિપદ પંકજ ચિત્ત જા જા.

ટેક.

માત્ર સમીર રવિ ચક્ર સ્વયાં, વિધિ નાલિ અંબુજસર જા જા.

હરિપદ. ૧.

પુરસનકાદિ પાર ન લહે, જેણે કામક્રોધ વરજ્યા.

હરિપદ. ૨.

૧૬ અંબરીપ શુક વ્યાસ પરાશરે, પ્રેમભક્તિથી લજ્યા.

હરિપદ. ૩.

નદયાલ કૃપાનિધિ કેશવ, ઓ ગાતાં લજ્યા.

હરિપદ. ૪.

જ દયા હરિ ભજન તજે નહિ, રંક અથવા રાજ.

હરિપદ. ૫.

અપ્રતિદ્ધ પદો.

(૫૬, રાગ બિભાસ.)

ભજ સદા શ્રીકૃષ્ણ ચરણ, મૂરખ મનરે.—ટેક.

મૂઠ કાં યયો યો અબાણુ; મન વિષે યુમતિ આણુ;

કૃષ્ણ ચરણ અર્પણ કર, તું તન મન ધનરે.

૧ ભજ સદા.

કાળ દાઢમાં નિવાસ, કાં કરે વિવશ વિલાસ;

ચેત ચેત બદ્ય, હરિ ભજન વિના દનરે.

૨ ભજ સદા.

ચકલ ઘટમાં ય્યાપન કોણ ? હરિ વિના અવર ન જાણ;

કૃષ્ણ ચરણ કર કદણ, અવર આ કર અન્યરે.

૩ ભજ સદા.

હૃદે કપર કાઢ્ય બહાર, જ્ઞાન પાણ ખડગ ધાર;

કામ ક્રોધ લોભ મોહ, માર ચોર જનને.

૪ ભજ સદા.

દયા કે ખ્યારે શ્રીકૃષ્ણચંદ્ર, સબ કે મન ભયોં આનંદ;

ભવતારણ કૃષ્ણ નામ, કૃષ્ણ પંકજલોચનરે.

૫ ભજ સદા.

(પ્રભાતીક.)

ચરણ ત્હારા વિષે જન્મ જન્મ સદા, લભ રાખે હરિ મન મદાર;

દીન જાણી તુને કર કૃપા એટલી, નિવ રચના કરે રતણ ત્હારે.

૧ ચરણ.

શિવચનકાલિક શેષ આગરચુના, ચરણપંકજનું સેવન કરે છે;

હરિચરણ હરિચરણ તુલ્ય કે અન્ય નહે, વદત વાણી સદા એમ કહે છે.

નાભિ અંબુજ યદી જાગ્રા ને પ્રકટીયા, તે ચરણભાદાત્મ્ય વરણી ન જાણે;

સહસ્ર જીભા યદી શેષ ગારે સદા, વેદ પુરાણ નિગમ વખાણે.

૩ ચરણ.

ચરણ અમૃત તણું પાન કીધા યદી, દોરિ કલિમલ કપર દલેશ બાંધે;

હરિચરણસેવના ને કરે તે તણા, સંગથી હરિચરણ પ્રાપ્તિ યાચે.

૪ ચરણ.

મુરનર મુનિજન પાર પામે નહિ. ચરણ જ્યા વળુંવા કોણ ચણિ ?

ભણે દયો દીન તુને જાણું જહુપતિ; સદારે આપો ત્હારી ચરણભક્તિ.

૫ ચરણ.

કૃષ્ણ દીર્ઘન કયા કૃષ્ણના નામની, યવણ કરતાં ચક્ર પાપ બંધે;

બવ જન્મ મરણની ચાતના નવ અટે, લશ મોરાશીમાં નવ ખણાય.

૧ કૃષ્ણ.

મૂઠ માયા વિષે કાંકાં યયો મજ તું, કોણ છે તાત ને કોણ માય ?

પ્રેમયુક્તે પ્રભુચરણ આશ્રય કર્યો, ને યદી અખિલ આનંદ યાય.

૨ કૃષ્ણ.

નરણી તન ધનથી મન દાહાડી કરી, કૃષ્ણ દીર્ઘન સદા એ ન બાચ.

અદ્ય આયુષ્ય હજી ક્યાંકાં તું લેહેતો નથી ? ચેતરે ચેત રાણ બંડ કાય.

૩ કૃષ્ણ.

ગંગ તરંગ જલ બન્દવીને તણ, અદ્ય જલમાં જઈ રીદ ન્હાયે ?

કુખ કરવા સુખાતુલ્ય ભોજન મહે, તે તણ રેતુકા રીદ ખાયે ?

૪ કૃષ્ણ.

દેહ અભિમાન તુજ મન છે અતિ ઘણું, વદન મદ વાણી કહી સુખ્ય સ્હાયે;
 જોરે લંકાપતિ કાળ કર આવીયો, મૃત્યુ મન કો નહી રંક રાયે. ૫ કૃષ્ણ.
 કામ જોસે નહીં શ્રમ પહોંચે નહીં, વદનથી કૃષ્ણ કહેતાં શું થાય ?
 મણે દયો દીન હરિનામનોકા વિના, હુષ્ણ લવ પાર તે નહીં પમાયે. ૬ કૃષ્ણ.

(પદ, પ્રભાત ગુજરી મિશ્રિત.)

હરિ ભજન કર્યં બહેલો પ્રાણી, જન્મ જાય છે એજેરે;
 ઘડી પલકની વાત ન જાણે, જે શું નીપજશે કાલે રે. ટેક.

જેઆ મંદિર માળ રચીરે, ખેઠા મોજો મહાલેરે;

વરણગીમાં વાંકા ફરતા તેને સાદ્યા કાલેરે.

૧ હરિભજન.

મદરૂપી મધપાન કરીને, પરદારા શું નિહાલેરે;

સ્વપ્નતુલ્ય સુખ દેખી પ્રાણી, શું પડ્યો મોહની જાલેરે ? ૨ હરિભજન.

સાણુ સાણુ રથ હસતી ને ઘોડા, આગળ અતુચેર ચાલે રે;

તે જન કાલ તણે કર આવ્યા, જે જેસી કર્યા સુખપાલેરે. ૩ હરિભજન.

કુત્સિત કર્મ કરી ધન લાવે, નિજ કુટુંબને પાલેરે;

અંતે કો તહાડ નહિ પ્રાણી, જ્યારે ચમકિંકર લઇ ચાલેરે. ૪ હરિભજન.

માત તાત ને સગાં સહોદર, કો બેલી નહીં અંતકાલેરે;

દયો ભણે પારકું શું પડ્યું છે ? તું તહાડ સંભાલેરે ? ૫ હરિભજન.

(પદ, ઉપરના જોડાનું.)

હરિ નામનું નાવ થઈને, ભવસાગર પાર ઊતરનીરે;

અનેકવાર અવતરવે મરતું, તે ભયથી તું ટળનીરે. ટેક.

હુલ્લ મનુષ્યદેહ પામ્યો છે, હાવાં હરિભજન તું કરનીરે;

ચેતી લે નિશદિન ગોવિંદ ગા, પ્રેમે પ્રભુને મળનીરે. ૧ હરિનામનું.

લોભ મોહ મદ મત્સર સુકી, પરનિંદા પરહરનીરે;

અખંડ અદ્ભુત અવિનાશીનું, ધ્યાન હૃદયમાં ધરનીરે. ૨ હરિનામનું.

અહંકારે તું અંધ થઇને, વાત કરે છે આડંબરનીરે;

પણ કાળ ખમ્પર કોઇ નહિ મૂકે, કૃષ્ણચરણ સ્મરનીરે. ૩ હરિનામનું.

અશ્વગજની સુકી સ્વારી, કયાં કરે છે ખરનીરે ?

દયો ભણે હરિચરણ તણ, કયાં જમણુ કરે અવરનીરે. ૪ હરિનામનું.

(પદ, ઉપરના જોડાનું.)

અનેક લક્ષનાં કામ કર્યા પ્રભુ, લક્ષવત્સલ તમો કાહાવોરે;

દીનદયાળ કૃપાનિધિ દેશવ, માટે દારા કરે છે હાવોરે. ટેક.

નરસૈયાને હારજ આપ્યો, સાચી લક્ષિત જાણીરે;

ત્રિલોચનને મંદિર બહાલા, તમો ભર્યું છે પાણીરે. ૧ અનેક.

ચંદ્રહાસ ત્રણ વાર ઉગાર્યો, વિષ ફેડી વિપયા કીધીરે;

સળીનાં ણદરી (ખાર) આરોગ્યા, કુળજની અચાં લીધીરે. ૨ અનેક.

(૫૬, શ્રીવલ્લભ શ્રીવિકૃલ શ્રીલસ્વામી સમજીયા બહાલા તે પદની તરફ.)
 શ્રીહરિ વાહાલા જેહને કહીયે, સાહેલી માહારી; વૈષ્ણવ વાહાલા તેહને કહીયે, ૧.
 નીકર પાખંડ પ્રમાણો, સાહેલી માહારી; શ્રમ કરે તે ઠાલો બાણો, ૨.
 હરિ સેવે હરિજનને તરછોડે, સાહેલી માહારી, પગ પૂજે ને મસ્તક મોડે, ૩.
 નિર્મળ ભાવેથી સત્સંગ કરીએ, સાહેલી માહારી, દોષ કોઈના ના ઉર ધરીએ, ૪.
 જેહમાં બાનુ શ્રીહરિનું દેખો, સાહેલી માહારી, પ્રભુ સરીખા તેહને પેખો, ૫.
 હરિજન જેહેણે સંતોષ્યા, સાહેલી માહારી, પુરુષોત્તમ તેહેણે પોષ્યા, ૬.
 અંતરની વાત તે તો બાણે, સાહેલી માહારી, હરિ ભાવે હરિ રસ માણે, ૭.
 ભક્ત ભગવંતની તોલે, સાહેલી માહારી, કયો કહે એકાદશમાં બોલે. ૮.

(૫૬, રાગ કાફી.)

પ્રેમ રસ તે પિયેરે જેહમાંરે અતિ અનુજપણું;
 ઓટાઇ ઘણી માહીરે, સમજ ન રાખે ક્ષણું. ટેક.
 સુંદર સ્વાદ શકરમધ્યે, દીકી વેલુમાં વેરાઇ
 હસ્તી હુતા તે હારી ખસ્યા પાછા, તેને ગઇ પિપીલિકા ખાઇ;
 ઓટમ રખે રાખોરે. જે હું મહોટો બણું. પ્રેમરસ. ૧
 મહોટા વૃક્ષને ઘણું વિટંબણ, પીડાય બહુ પેરે કરી;
 સ્વપ્ને દુઃખ દેખે નહીરે, દૂર્વા સદા રહે હરીની હરી;
 સમજુ વિચારોરે, મુખ છે શામાં ધણું. પ્રેમરસ. ૨
 કમલતણા મકરંદ તે મધ્યે, જે ભુકતે જે સમીપે હોય;
 શુરદલ દૂર નિકટ દલ નાનાં; તેહ વિચારો સહુ કોય,
 પ્રકટ જઇ પેખો રે, જો હું ભુકું ભણું. પ્રેમરસ. ૩
 એક સિદ્ધાંત સમજવા માટે, કહ્યાં સર્વ ઇષ્ટાંત;
 શ્રીહરિ પણ દીનજંધુ કહાવે, નથી નથી મિત્ર મહાંત,
 માટે દયા યાનીરે તું તો નાહાનો અણુથી અણુ. પ્રેમરસ. ૪
 પ્રજ્જલાપાકે ૫૬.

મુરલીકે નાદ નાર પ્રજ્જલી બસ ગઇ હો; બંસીકે નાદ નાર પ્રજ્જલી બસ ગઇ હો-ટેક.
 બંસરી બગઇ નાથ, અકિત બયો સકળ સાથ;
 પ્રજ્જનનિતા બ્યાકુલ ભઇ, સાન ખિસર ગઇ હેરી. બંસરી. ૧
 બંસીકો સખી સુન્યો રહોર, બૃંદાવન આઈ દોર;
 કદમ છાંય ઠાડે હરિ, બંસરી બને હેરી. બંસરી. ૨
 બૃંદાવન રમ્યો રાસ, બિંધબિંધ કિયો બિલાસ;
 નાચત મુરલીધર, સખી મુખસે તતથે હેરી. બંસરી. ૩
 દયાકે ખ્યારે શ્રીકૃષ્ણચંદ, સખકે મન કરત આનંદ;
 મેં મુખયેં કહા બરનોં, ગતિ ગોકુલ નિત્ય ને હેરી. બંસરી. ૪

કામણુગારી ત્હારી વાંસળી, કામણુ કીધું છે લારી રે.-૩૬.

મોરલીને નાદે મન મોહી રહું છે, માંદે ગિરિવરધારી રે;

ધરધધો ગમતો નથી, હહે સુને લાગી છે ત્હારી રે.

કામણુગારી. ૧

મોર સુકુટ સિર સોહિતો, કુંડલકી છળી ન્યારી રે;

ચતુરા અપળ સુકી ધણું ધણું, મોહી રાધે પ્યારી રે.

કામણુગારી. ૨

સુરલી નાદ મધુરો સુણી, સુકયા શ્રીત્રિપુરારી રે;

સુરનર સુનિજન મોહી રહ્યા, કોણ માત્ર પ્રજનારી રે.

કામણુગારી. ૩

તનમનધન અપણુ કહે, અરણે કુંજ ગિહારી રે;

દયાના સ્વામી તમે શામળા ઝીત્યા ને અમો હારી રે.

કામણુગારી. ૪

આરતી (ઓ પૂર્ણપુરુષોત્તમની.)

(ભક્ત કવિશ્રી દયારામભાઈ કૃત.)

જય જય શ્રીત્રજરાયા ગોપીનાથ ગિરિવરધરા હો,

શ્રીયશોદોત્સંગલાલિત નંદાત્મજ શ્રીરાધાવરા હો.

જય જય.

નવાંબુદાનીક ચાર ત્રિલોક સમોહન શ્રેયસ્કરા હો,

ખડોપીઠ વિભુનાથ, મકરાકૃતિ કુંડલ સુંદરા હો.

જય જય.

પ્રકૃત્તરાજીવલોચન, આનન મદનાધિક મનહરા હો,

વેળુરવામૃત મોહક ગોકુલ રસમય રસિકેશ્વરા હો.

જય જય.

તિલક સુ લલાટ પટલે રાજીત કસ્તૂરીકેસરા હો,

નાસાગ્રે વરમુક્તા અમલ પ્રતિબિંબિત બિંબાધરા હો.

જય જય.

વક્ત્રસ્થળ કોસ્તુભમણિ શ્રીવત્સાંકિત શ્રી શ્રી ધરા હો,

વૈજયંતી વનમાલ વૃંદા શુભદિક આદરા હો.

જય જય.

લસતાંગદ કંકણ કર સુદ્રિકા કટિતટ પીતાંબરા હો,

કટિમેખલાપદાંબુજ નૃપર કલરવાદિ વિચરા હો.

જય જય.

ગોપસ્ત્રીપરિવેષિત ગાન તતર્યેઈ શમ્ભોચ્ચરા હો,

નંદસ્મિત મધુ ભાષણુ વિલેકન પરમાનંદાકરા હો.

જય જય.

ત્રિલંગલલિત મનોહર અગણિત મહાહર સ્મરા હો,

દિભુજ સદા પ્રભુ ગદા, પદ્મ, રયાંગાહિણુપ્રધરા હો.

જય જય.

ભક્તાતિહર શરણુગતવત્સલ હરિ અધમોહરા હો,

હરિ ઇચ્છા ભગવાન અનાદિ અચ્યુત વિશ્વેશ્વરા હો.

જય જય.

વેદ વિદ્યા શિવ શેષાદિ વંદિત પૂર્ણ સર્વેશ્વરા હો,

ઇતિ સ્તવ કૃષ્ણ નીરાજનસમયે ચે પદંતિ સ્ફુટ સુમહરા હો,

જય જય.

દયાનાથ સુપ્રસિદ્ધ ભવેદ્ધ દુવ સુરાધિકેશ્વરા હો.

અલૌકિક શિક્ષા

(કવિશ્રીના શિષ્યપૌત્ર બોલોડવાસી ભેખીજી નાથાલાલએ કવિશ્રીના અંશમાં તારવેલી શિક્ષા.)

દરોજ નિરંતર ભગવદ્ધર્મસંબંધી મુખ્ય બાબોમાં સ્મરણમાં રાખી વર્તન કરવા આ વિશેષ રીતે લક્ષમાં રાખવાની તે—

૧. શ્રી પૂણ્ય પુરુષોત્તમ જે પરબ્રહ્મ પરાત્પર અનિર્વચનીય સર્વના આવાદ્ય તેમનોજ આશ્રય સદોદિત રાખવો. એ ઈશ્વરેશ્વર અનેક દ્વારા (દોષપણું નિમિત્તે યા બદનાયી સર્વનું હિત કરે છે. માટે કદી પણ અન્યનો આશ્રય ન માનવો.
૨. સર્વના કર્તા સર્વના ભક્તી સર્વના નિર્ણતા એ ઈશ્વર સર્વના સ્વામી માલીક છે. તેજ તેમની સમગ્ર ચીજ હોવાથી તેમને નિવેદન યત્ન બ્રહ્મસંબંધ શ્રીચરુદેવ કરાવે છે. માટે પરબ્રહ્મના અર્થે સર્વનો વિનિયોગ યત્ન આગ્રહ રાખી પાછલ પ્રસાદી (ઉચ્છિષ્ટ) લઈ દાસ પદવી લેવી. જસ પ્રશંસા માટે સમર્પિત કરવાનો પણ ઉપયોગ અંશમાં ન કરવો. પણ ઔપધ કંઠવટ અને નિર્બેધ કરેલી અમલ્ય વસ્તુ શ્રીને કદી પણ ન ધરાવવી. કેમકે શ્રીદર્શિ સર્વ ઉત્તમમાત્રથી પણ ઉત્તમ હોવાથી તેમને ઉત્તમોત્તમ અંગીકાર થાય છે. જેથી સર્વ ઉત્પન્ન તે તેમના ઉત્પન્નકર્તાને આપવાની દરજ છે, રાખાડું નથી. ન આપ્યાથી દોષ થાય છે.
૩. ભગવદ્ધર્મો અનેક પ્રકારના છે. એ સર્વમાં શ્રેષ્ઠ ધર્મ એ શ્રીહરિની સેવા કરવી એજ છે. પણ એ સેવામાર્ગનું રૂપ લક્ષણ ક્રિયાવત્ પૂજનમાર્ગદિકથી અત્યંત લિન્ન છે. તેથી નિરૂપણ થયું પણ અશક્યવત્ છે, તેમાં પણ પ્રથમ તો પરબ્રહ્મનું માહાત્મ્યજ્ઞાનપૂર્વક સ્વસ્થ અનુસંધાનમાં વિસ્મૃતિ કે અજ્ઞાનતા ન થાય એ માટે મહદ્દ્વારા સ્મરણનું પડી તેની પ્રાપ્તિ અને તેમનું જ હિત થાય, એ કૃતિમતિથી અતિ આતુરતા થાય. એ માટે પશ્ચાત્તાપ ક્ષમા સ્તુતિ વિગતિ કરવી, અને એમાં મુખ્ય રોહ રસ અને તેથી અદતી પાયરી શ્રીહરિસંબંધી તાપકલેશવિરહોદિ વિપ્રયોગાત્મક સયોગાત્મકની સમગ્ર પડે એ માટે આ લક્ષણ છે. પ્રમાદ બ્યવસાય અન્યાસકિત ઈલાદિ પ્રતિબંધક માત્રો ત્યાગપૂર્વક પ્રયત્ન કરવો. અને તેમાં નેટલી કસર પડે અગર અશક્યપણું આવે, તે માટે પણ શ્રીહરિનું શરણ (આશ્રય) ગ્રહેવું. (લેવું).
૪. સત્કાર્ય ઇશ્વરપ્રેરણાનુંજ માની કુટુબને નિજ કૃતિ (હવકૃતિ) માની અપરાધપરિહારાય સદા ભગવદ્દામોચ્ચારણ કરવું, યા મન શ્રીહરિમાં સંલગ્ન કરી અપરાધક્ષમાસ્તોત્ર સ્તુતિ વિગતિ કર્યા કરવી.
૫. નિરંતર શ્રીહરિનું ચિંતન કરવું. લક્ષ્યાર્થ પણ ભગવદ્ધર્મનું વિસ્મૃતિ ન થવા ધ્યાન રાખવું.
૬. બીજી બાબતમાં વિશેષ ખુલાસો. શ્લોકસૂત્રોદિ પ્રસંગો અસમર્પિત ભોજન કરવું પડે ત્યારે શ્રીહરિચરણામૃત પધરાવીને પ્રસાદવત્ બણી પ્રત્યેક આસે અને પ્રત્યેક હુટકે ભગવદ્દામા લાય કર્યા જવો.

॥ श्रीविद्यानराचार्यवर्णा विजयन्तान्तमाम् ॥

सर्वोद्धारप्रयत्नात्मा, विश्वना तारुण्यद्वार जगद्गुरु आचार्यसभा
विश्वधर्मस्थापक श्रीमद्वल्लभाचार्यजना विश्वमान्य सिद्धांताने
प्रकाशनार्

शुद्धाद्वैत-संकितमार्त.५५.

पुष्टिभागीय-संतिहास-प्रकाशतो

आस अंक.

पृ. ८,] श्रीवल्लभाचार्यः ४५५ भागीयः अं. १९८०. [अंक ८.

प्राचीन-कीर्तन.

सहेरो ॥ अब गंध लवोरी मालिनीवां सहेरो । शुभ घरी शुभ दिन शुभ मुहूर्त लगे बनाने
नेहरो ॥ हरी चमेली गूलान निवासो महेकत आवे केसरो । बना बन्यो नवलपिय श्रीगोकुल में रोहरो ॥
दमाले । अति दूबी देत दमालो सीस ॥ मन्मथ मान हरत हस चितवत आज
बनेहे गोकुल ईस ॥ टाढे सिंगपोर अपने राग सग सखा दसवीस । दिगो सिरान चतुर्भुज
प्रभु लम्ब जीयो कोटि वरीम ॥

टीपारो । श्रीगिरधर बनते नामत सोहत ॥ पीत टीपारो सीस रगो फव छत्रीली
चाह मन मोहत ॥ गायनके पाउं पाछे आवत चन्नी दीखाउ तोय ॥ छीनस्वामी सबको मन
मोहत चक्रंधा दृष्टि करि जोय ॥

श्रीहरिरायजीकृत श्रीयमुनाजीके छप्पय.

अंस बंस अवतंस परम रसाह प्रसंसित । वरकल्लिगिरी पतन शिलर सुरहृद विपोसित ॥
सेविन तट वटानिकट चेद सुरी नरमुनि झुडन । सहज परम सुख करन धरन भुव मंडल मंडन ॥
सदृक्कपत्रगोकुलकर्णपत्रपत्र भविचरचरन । लाटिनी श्रीगिरिधरन मुखद सुजयनय श्रीयमुनावरन ॥
तीर समीर गंभीर चिर प्रफुल्लित व्रत मुनि सुर । सारस हंस बकोर मोर शुक्रपेठ अति फलवा ॥
विविध भौत रस पुज कुञ्ज रस पुजसो वरखत । सहज बदत निज धर्म पन निर्मल मुन हरखत ॥
परम हंस मुनिगन गुनत मड कण्ड स्वैदानगन । लाटिनी श्रीगिरिधरन मुनद सु जयनय ॥

शुद्धादित्य भग्ने लक्ष्मिभारतः

एकद्विकट भवस्य पर नैकद संकटाविनाशन । वारन दुरित हरन इदं जन उपप्रदाशन ॥
 जीत शक्ति अध हरन, ते तेही नाहि । जे अघशेकप्रसिद्ध भीटत मुन नीर प्रगढ़ ॥
 सुधामाधुरी करुणाकरन कृपासिंधु तारन तरन । लाडिली श्रीगिरिधरन सुखद सु जयजय०
 श्रीहरिपद अम्बुज जन्म सुभग हर जटा निहानी । घन भागीरथी त्रिपथ पितर उदेशे वस्तानी ॥
 जिनकारन कृपि अंश घंस अवतंस प्रसंसित । जगत पावन भद्र गंग सो तव संगत जस बर्नित ॥
 सो तव प्रतापवल माधुरी वरनन कोउ समरकरन । लाडिली श्रीगिरिधरन सुखद सु जयजय०
 भोम विषोसित नील कमलदल निर्मल बेनी । किथो मदन तूत संग लता शुभ धाराधरेनी ॥
 किथो क्रांत दुप वसन रसन खुर तट लह तनी । चलत फिरत तुम बेज किथो रतीरंग परनी ॥
 श्रीवृंदावन कंठमाळ किथो इंद्र नीलमन विस्तारन । लाडिली श्रीगिरिधरन सुखद सु जयजय०
 तटनिकुंज रसपुंज धरन सिरतरंग मुशोभिज । कर पुलिन रसधाम धीर सुरभजेनी जुग कल्पजर ॥
 निविडलता गतिमंद पद्मोप सुगंध मुरभार । सीतलजलनि परसि पवन सेवतसो मानसर ॥
 इंदनी चीख मुख सहचरी सो लखितादिक नैनाभरन । लाडिली श्रीगिरिधरन सुखद सु जयजय०
 मेघघटा भ्रम भ्रमिन मोर नाचन तट कुंजनी । घन तमाल पत्र घन वसवत रस पुंजनी ॥
 कृष्ण कान्त भ्रम जुगत विधु तरंग भुजनी । नैनकमलदेखनी शोभित अमल विमलनी ॥
 रसलोभित इंदनील चोतरा तापर मुरलीधुन करत । लाडिली श्रीगिरिधरन सुखद सु जयजय०
 नारदमुनि वचन कमलही लुटि करे रतन । भीटन भक्त अपराध परमि जलकर सावन ॥
 सप्तसिंधु जलभेद सरस रविमंडल सरनी । सहज सहज पटा सप्तधारा वृंदावन धरनी ॥
 अन्य द्वार वैभव लसत अचल वाम वज्र विस्तारन । लाडिली श्रीगिरिधरन सुखद सु जयजय०

१५६ :- राजगोत्र भगवानंदान चतुर्भुजदाम, भाष्यनगर

श्रीसर्वोत्तमस्तोत्रका हिंदी अनुवाद ।

साकृत्-धर्माश्रय-सहित, धर्म अर्थोक्ति नर ।
 स्तवन करूं निगम-कथित, साकृति गुह्य-स्वरूप ॥
 ज्ञाना पुरुषोंकी भी समर्थ, कालिय-तम से आच्छादित हैं ।
 उनके माहात्म्य से दस कारण, सब प्राण आज अपग्नित हैं ॥
 तब प्रगटानेकी निज-महाम, हरि दयान्त्य दृष्ट करके ।
 ओं पशुने भूत-के ऊपर अमृत का रूप बना करके ॥
 अब उनका कहा कठिन अति है, जिन से नुबोध कर सकते हैं ।
 एक सौ आठ शत-अव-हरी, उनके नामों को कहते हैं ।
 स्तोत्र अग्नि सुत, अपि वर्णन, कर रहे हैं जगती में है ।
 श्रीकृष्ण देवता करुणावत प्रभु इसके बीचस्थ से है ॥
 विनियोग भक्ति के लिये और, प्रतिबंध-विनाशक है इसल ।
 इसमें कोई संदेह नहीं, वस अभिरामन फल है इसका ॥
 आनन्द, परम-आनंद स्वतः ही है श्रीकृष्ण, कृपासागर ।
 देवी-उदार-प्रयत्नामा, आतिथ्य केवल स्थिति भर ॥
 गृहार्थ-प्रकाशन-पारायण तपर हो श्रीभागवत करे ।
 भाषन-कर्ता माकार-प्रत्यय-के, वेदका पार भरे ॥
 मायावाद के नाशकर्ता, सब वादी किये पराजित है ।
 भक्ति-पथ-कमल के मूर्ध, नारिकेल-जहाँ उजाड़ित है ॥
 कर अंगीकार गुरुओं का बलभी किये गोपीश शिष्य ।
 मर्यादा सहित प्रहृष्ट कर्ता, अग्रंत कारजिक, वैभवमय ॥

सुखसेव्य, दुःख से आराधित, दुःख है चरणकमल जिनके ।
 हैं उग्रप्रतापी, पूर्ण करें सब सेवक वाणी—अमृत से ॥
 पीयूषसमुद्र श्रीभागवत मथने की क्षमता रखते हैं ।
 तत्सार रास—गोपिका—भाव अति भरे आप में रहते हैं ॥
 श्रीकृष्ण—प्रेम साविध्यमात्र दे दान, विशेष—मुक्ति देने ।
 तात्पर्य रासलीला में रख, तत्कथा कृपा—प्रदान करते ॥
 अनुभव वियोग का करने को उपदेशक सर्व—याग के जो ।
 उपदेश किये आचार भक्ति के, कर्मपथ—प्रवर्तक हैं जो ॥
 उपदेश करें 'ज्ञानादि कर्म वन रहे भक्ति के साधन भर' ।
 हैं पूर्ण—आनंद, पूर्णकाम, वाणी के अधिपति, विबुधेश्वर ॥
 वक्ता हैं कृष्ण—सहस्र—नाम के आप, परायण भक्तों में ।
 आचार भक्तिका रचा रूप जिनने है नाना वाक्यों में ॥
 अर्प निज हेतु अखिल उनके प्राणप्रिय, तादृशी बीच धीरे ।
 साधन समग्र करने वाले दास हेतु, सब शक्तियां धरे ॥
 पृथ्वी में भक्ति प्रचार हेतु जिन किया वंश निर्माण, पिता ।
 है भरा स्वकुल में सब महान्म अपना गर्व के नाशकर्ता ॥
 पतिव्रता—नाथ, परलोक लोक—भू के पदार्थ देने वाले ।
 अति गुप्त हृदयवाले, अनन्य जन्म से आशय कहने वाले ॥
 जो सुग्ध उपासन आदि कर्म में उनका मोह मिटा देते ।
 सब पंथो बीच भक्ति के मार्ग को बलक्षण्य दिखा देते ॥
 उपदेश शरणपथ प्रथक किया, ज्ञानी श्रीकृष्ण हृदय के हैं ।
 पल पल निकुंज में जो लीला पारंपरित उसके रस से हैं ॥
 व्याकुलचित भगवत्कथा बीच, विस्मृत सब और जिन्हें ब्रज प्रिय
 प्रसवास जिन्हें प्रिय करें, करें पुष्टि लीला, एकांतवास में प्रिय ।
 भक्तेष्टानुरक लीलाज्ञान न सबको जिनका, अति मोहन ।
 हैं अनौसक्त सब में, केवल हैं भक्तासक्त, पतितपावन ॥
 अपना यश गाकर खिले हृदय करने वाले उनमें आसन ।
 यश—अमृत—लहरों से सब रम त्रिन किये तुम्ह, सबमे उत्तम ॥

अति भिगो दिये हैं भक्त देह सबहां लीज-अमृत-इनमें ।

गोवर्धन-दास-उत्साही हैं, मिथिबिद्या के प्रज्ञ से भरे ॥

यज्ञ के भोक्ता, यज्ञ करें चारों पुरुषांशों में पट्ट हैं ।

हैं सत्य प्रतिज्ञ, परे हैं गुण तीनों से नीति विशारद हैं ॥

बर्द्धक स्वकीर्ति के, तत्त्वज्ञ की टीका करनेवाले हैं ।

मायावाद-तुल्य हेतु अनल, अमरवाद रचने वाले हैं ॥

सज रहे अत्यंतिक दृग्गणों से सारे, सहज हाव्यवाते ।

भूषण त्रिलोक के, भूमिपान्य, स्वाभाविक तुंदरनावाले ॥

रज-धन जिनके चरणाब्जोंमें चाहते अशेष भक्तजन अति ।

ऐसे आनंद समुद्र रूप के नाम कहे अष्टोत्तर शत ॥

भक्तों से बुद्धि विशुद्ध बना जन पाठ करें प्रतिदिन इमका ।

एकाम्र चित्त से रिससंदेह यह सिद्धि प्रथम वर्णन जिसका ॥

यह मिले बिना है मोक्ष वृक्षा मित्यने पर मोक्ष निरर्थक है ।

इस से स्तोत्र सर्वोत्तम का कृष्ण-रस-चाखों को जप है ॥

दाते वनस्यामदास जीहरी की जयभीरुल्लस घोषिये.

वीकानेकरमें कनकाभिषेक.

सं. १९४० के ज्येष्ठ कृष्ण ३ कूं कामवनस्थ गोस्वामी श्री १०८ श्रीगोविन्द महामधुने आमुखायामोहलीला करी, ताके पहले आपके ज्येष्ठ लालजी श्रीदिवकीर्न्दत्त-मधु (वांपाश्री)ने अपने पितृचरण को विषोग होने ही वृद्ध्यांग कर अल्प निर्जनवन में विरहानुभव, जो सुष्टिमार्ग को महाफल है, ताको आम्वाद देनेको विचार कर राख्यो हो, ताकी खबर आपके पितृचरणों पर पड़ गई । ताही समय आपने वि. श्रीदेवकीर्न्दत्तलालकों पास बुलाय श्रीमस्तकपर आपको श्रीहस्त धरके आज्ञा करी जो नेने हमारी आज्ञा को उल्लंघन कर्षी नहीं कीनों, तागुं हम अत्यंत प्रसन्न हैं । और जो छेली आज्ञा करें ताहें अवश्य पालन करेगा, एसा हमकें पूर्ण विश्वास है । एक तो हमारे पधारे पीछे हैं घर छोड़ जायेंयेको विचार करे है सो सर्वथा न अपने राम-विहारी की सेवा छोड़कें मत जाइयो । दूसरी आज्ञा विवाह करकें श्री पितृदण्ड चुकाय-कें श्रीचंदबाबा की सेवा के लिये वंग स्थापित करियो । यह मुनिकें आप अत्यंत खिन्न होकें पिनानि सिंगे, जो मेने विना तो रांभा ये दोनों की कान्छे न

हो, पर आप या बखत आज्ञा करें हैं तो मैंने शिरोधार्य है। अनंतर थोड़ी देर में ही आपने लीलामवेश कियो। आपके उत्तरकर्म से निवृत्त होते ही आपके छोटे भाई श्रीगोपाललालजीने श्रीमदनमोहनजी के मंदिर की कब्जा कर लीनी।

तब आपके छोटे भाई श्रीजयदेवलाल अति खिन्न भये। तिनहुँ देख आपने श्रीजयदेवलालमें आज्ञा करी जो मेरो तो घर में रहिवेको ही विचार नहीं हो, पर श्रीपितृचरण की अंतिम आज्ञा को पालन करनो सो मैं परदेश फिर्हंगो, और ये श्रीचंदबाबा की सेवा और सब वैभव मैंने तेरे सुपर्द कर दीनो। ऐसे कहके चाचीनको झमका तथा आपकी मोहर सब आपहुँ सँभाल दीनी।

इन बातनकी खबर बीकानेरनरेश महाराज श्रीहंगरसिंहजी हुँ पड़ी। तब आपने अपने निज कृपापात्र भले मनुष्य और राज के नगरा निशान डेरा तबू सर राज्य विभूति संग देके कामवन भेज दीने, और कही जो जैसे दूने तैसे वेग महाराज हुँ बीकानेर पधराय लावो। खरचको कोई विचार मत करो। वह लवाजमा और भले मनुष्य कामवन पहुँचे।

वहाँ पहुँचकर तुरंत सब मध्य करके थोड़े ही दिनन में आपहुँ बीकानेर सं. १९४० के श्रा. सु. ११.हुँ पधसंय लाये और आपको मंदिर श्रीराजस्तनविहारीजी को है तामे आनंद सों विराजमान करे। पर आपको मन वैराग्य और विरहानुभाव करवे को हतो और दिन २ इड होतो गयो। यह देख मंदिर के अधिकारी जो महाराज के परम कृपापात्र और दरबार के भी कृपापात्र भोगीलाल उत्तमराम बडौदा जिला के सावली गाम के रहवेवारेने दरबार हुँ कही जो आप जैसे श्रीमहामुक्तो कनकाभिषेक राजा कृष्णदेव ने कियो तैसे ही आप श्रीमहाराजको कनकाभिषेक करो और विवाह करवे की गाढ़ी विनति करो, तो मैं इन को व्याह कर लाऊँ, और जैसे महामुक्तोने दिग्विजय कियो तैसे ही दक्षिण दिशा प्रभृति परदेश में डका बजबाय लाऊँ। सो दरबार ने स्वीकार कर लीनी और आश्विन शुक्ल १० विजयादशमी के दिन शुभ मुहूर्तमें आपको कनकाभिषेक को निश्चय कियो। और शंख, चक्र, छत्र, सिंहासन, पादुकाजी तथा पादुकाजी के विराजवेकी चौकी ४ छड़ी तामे २ सोने की तथा २ चाँदी की २ दीवी ये सब सामान चाँदी, सोने को सिद्ध करायके सुवर्ण के पुष्प बहुत सेवा तथा पूजा के सब पात्र चाँदी के सिद्ध होय गये। तब वा साल विजयादशमी को उत्पन्न ९ को हती सो सब आनंदसों करके श्रीचंदबाबा की विजयादशमी के साँझ के ४ बजे बीकानेर से २॥ कोस श्रीठाकुरजीकी ७०० गायें रहती

हती, तो गाम की नाम चीछवाल, तथा बाके पास जो कृशों बाकों नाग जीवनसर प्रसिद्ध है, तहाँ महाराज श्रीहंगरसिंह बड़ी सवारी सहित पथारकें शांडिल्यमहिता के स्तोत्र में महाराज के स्तान करवायो। जरी को केसरी पीताम्बर धराय भापकूं सिंहासन में पथराय दैव विभूति शंख, चक्र, छत्र, मुरज आदि राजविभूतिपुक्त आपको पोडशोपचार पूजन करकें, आचार्यतिलक करकें, पाँडे आपके पादुकाजी को पूजन हरि गुरु पीठ स्तोत्र में करके, स्वर्णपुष्पसों आपको तथा पादुकाजी को अभिषेक करके, कृष्णदेवके समान आपमें उपदेश मुनकें भेट न्योछावर करकें गाम चीछवाल सों सवारी कर बीकानेर के किले में दाखिल हुए। बाही दिनमें शहरमें वा अपने मंदिरमें पथारें ! वा कोई भी वैष्णव के यहाँ पथारई में पथारें। तब आप केवल धोती उपरना धारन करके म्याना में विरामें और आपके आगे राजविभूति नगारा, निशान खासा घोडां ४ ताके पीछे ४ घोडान पें ४ छडीदार जामें माचीन पाग कमरबंद। और मोने की छडी ताके पीछे २ छडीदार चौडी की छडी जियें “ क्षम्यतां, इतरत्र कमलकोमलचरणां मृदतया निर्धयितां ” इत्यादि संस्कृत अनेक गद्य तथा पद्य ऊँचे तथा मधुर स्वरीके स्वर सों पढ़त चलें। उनकी पीछे शंख चौडी के बटे ऊँचे दंडपर तामें रेशमी ध्वजा, तामें हनुमानजी को चित्र ऊपर चक्रराज को चित्र फहरातें चलें। और सब में आगे राज के बाजा बजतें चलें। या रीति में जहाँ कहीं भी पथारें आपकी पथरामनी होय वा अद्भुत सवारी की झांकी जयजंगलधर बादशाह महाराजा श्रीहंगरसिंहजी की कृपा-से बीकानेरवासीन कों दर्शन भए।

पीछे थोड़ेही दिनन में मंदिरवारे अधिकारी भोगीलाल कों दरबारने हुकम दियो कि—“ अधिकारीजी, मेरो मनोरथ युगलस्वरूपकी झांकी अग्नि दहन करत समय की करये को मनोरथ है, और यही श्रीगोविन्दमंथु की छैली भाजा भी है, जो आप स्वाक्ष करो. सो यह पालन करवेको यही मौका है। सो आपकूं मेरी तरफ से विनति करकें स्व. डाटमाट में दक्षिण पथरावे। और जैसे श्रीमदाचार्यजीने दिग्विजय गान्धार्य किया ताही प्रमाण देखाटन करो और आपको ग्याह करकें पीछे बीकानेर पथराय लावो, तब मेरो मनोरथ पूर्ण होय। स्वर्च को प्रबंध राज के खजाने से होयगा।” यह हुकम दरबार को मुनते ही परम वैष्णव श्रीबीकानेरनरेश को मनोरथ तथा श्रीगोविन्दमहाप्रभु की आज्ञाको पालन करना अपना परम कर्तव्य समझकें भोगीलालने ५ तो पंडित जों आपके पासमें ठहरतें, और सब शास्त्रन में निपुण

हते, उनमें से कन्हैयालालशास्त्री, जो राजके सरस्वती भंडारके संरक्षक, नारायण शास्त्रीजी दत्तिया के प्रखर विद्वान् उनके शिष्य मदनमोहनशास्त्री तथा कन्हैयालालजी शास्त्री के छोटे भ्राता पद्मगेन्द्र शास्त्री इनके संग लीने, और बीकानेर में लवानमा तथा अपने गुरुज परदार व सिपाही आपके सुपुत्र करके बड़े ठाटमाट में मद्रास पधार। वो आपका खटला ७६ आदमीन से खाने होके प्रथम नागौर मुकाम भयो। वहाँ पंडितन ने यह प्रश्न कियो जो कोई श्रीवल्लभकुल के बालक सिंहासन पे विराज अपने पादुकापूजन ही करावे और आपके साथ में जो यह राज तथा देवविभूति साथमें रखी जाय है याको कदा प्रमाण है? वही प्रश्न कु महाराजने और शास्त्री कन्हैयालालजी प्रभूतिनने वेद पुराण श्रुति स्मृति आदिसो पादुकापूजन सिद्ध करके नागौरके विद्वान की पादुकापूजन में संमति कराय लीनी। आगे मूडवा में भी ऐसे शास्त्रार्थ कर वहाँसे भी सम्मति कराय आप गुजरात पधार और वहाँ एक लक्ष श्रीमदष्टादशाक्षर गोपालमंत्र को पुरश्चरण करके बाके होम कमल के पत्रान में खीर भर कर तर्पण तथा ब्राह्मणभोजन कराय अजमेर तक पंगरस्ता पधार। पाछे रेलद्वारा अमदावाद बंधई होते हुए मद्रास पधार मगधर मुद में श्रीभोगीरथीजी बहूजी से विवाह करके दक्षिण की सय यात्रा करके शास्त्रार्थ करते, पादुकापूजन पे संमति कराते पंडितन को सत्कार करते भये दक्षिण हैदराबाद पूना होके बम्बई पधार।

पीछे बीकानेर सं. १९८२ में पधार महाराज श्री हंगरसिंहजी को युगल स्वरूप । झोंकी कराय दरबार के मनोरथ निर्विघ्नता से पूर्ण कियो पादुकापूजन को शास्त्रार्थ व सय देशन के पंडितनकी सम्मतिको पादुकापूजनको ग्रंथ भेरी प्राप्त है। यदि कोई देखो चाहे तो देखे। और भी देवकीनंदनार्यजी के अनेक दिव्य चरित्र है सो मेरे जैसो पामर कहा समझे? और लिख सके? १ छोटेमो चरित्र कृतकामिषेकको लिखकर अपनी जिह्वा पवित्र आप समस्त वैष्णवन को कृपा में करी है। यामें प्रमादमं अशुद्धि या झुटि होय तो आप कृपा करके सुधारेंगे। और या संबंधमे गोस्वामी श्रीदेवकीनंदनार्यजी महाराज तथा आपके मुख्य सेवक बीकानेरनरेश श्री हंगरसिंहजी के चित्रनके दर्शन करके नेत्रन को सफल करें।

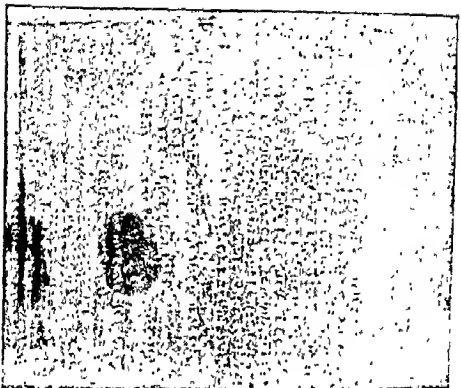




સુપ્રસિદ્ધ રાદેરી શેઠશ્રી ગોવિન્દરાય માણેકલાલ
(કલિંગસરના અગ્રણી દેવાળી)



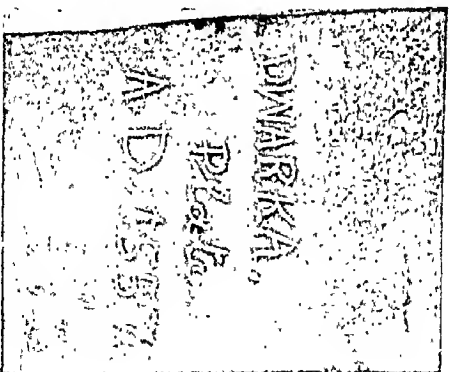
ભગવદ્ભૂપરાયણ શેઠશ્રી ગિરિધરલાલ હરિલાલ

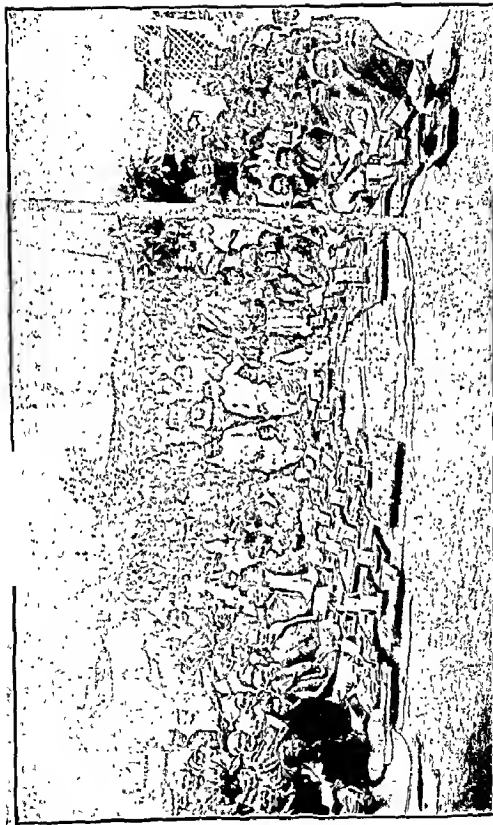


शान्तिदक्षिण मञ्जुपदो। द्वास्ताना

गुणोत्तम कालोत्तम आदि। नमः

सन्ति मन्त्रोत्तम. नमः





ધાર્મિક મહાન પ્રત્યક્ષ.

પુષ્ટિમાર્ગનો ઇતિહાસ.

શ્રીમદાચાર્યચરિત્ર.

[નોંધઃ—શુદ્ધાર્થ-પુષ્ટિમંત્રિમાર્ગના પ્રકટકર્તા અખંડબ્રહ્મસ્વાચાર્ય જ્ઞાનપુર શ્રીમદાચાર્ય-ચાર્યચરણના ચરિત્રવિષયક અનેક સંસ્કૃત-પ્રાકૃત મંચરત્નો વિરાજે છે, તથાપિ એ પ્રયોગમાં આધુનિક દષ્ટિએ ઇતિહાસનું જે પ્રાધાન્ય રહેવું જોઈએ તે રહ્યું નથી, માટે તે આધુનિકોની રચિતે પાત્ર થતા નથી એવો ખવનિ ધવો સમય થયા ક્ષણપિય થાય છે. જો કે જનારસવાળા પરમ ભગવદ્ભક્ત ભારતેકું આશુ હરિચન્દ્રએ શ્રીમદાચાર્યચરણનું ચરિત્ર ઇતિહાસની દષ્ટિએ લખવું શરૂ કરેલું, પરંતુ તેને લગતા સંપૂર્ણ સાધનોને અભાવે તે અસંપૂર્ણ રહ્યું હતું. ત્યારબાદ સદ્ગત રા. જી. લલિતભાઈ પ્રાણવલ્લભદાસે એ કાર્ય હાથમાં લીધું અને ઉપરિયત સાધનોને આધારે શ્રીમદાચાર્યશ્રીનું ચરિત્ર તૈયાર કરીને પ્રકટ થયું અને તે લોકહારને પાત્ર પળ થયું. જો કે એ મંચ, ધવો પ્રાચીન તેમજ નવીન મંચો અને કેટલાક અનુભવી સાંપ્રદાયિક વિદ્વાનોની સલાહવાળી લખાવેસો છે, તથાપિ સાધનોના અભાવે તેમાં ઇતિહાસનું અપેક્ષિત પ્રાધાન્ય સર્વોચ્ચ વ્યાપ્ત થઈ રહ્યું નથી. એ દિશામાં સાંપ્રદાયિક વિદ્વાનોએ એક મદાન પ્રયાસ કરવાની જરૂર છે અને તે સ્ત્રી શોધયોજા કરનારી એક સમિતિ નીમવાની પણ ધવો અગત્ય છે. આ કાર્ય કામ પ્રગતિપાત્રિની સંરથાથીજ થઈ શકે તેવું છે, અને તે આવાચરયક છે. ખેદની વાત છે કે 'શ્રીવંચરપરિવ' નું તે તરફ ખ્યાન પણ ખેંચાયું જતાનું નથી અને તે દિશામાં તેજી સારી પ્રગતિ કરી દેવા તે પણ જરૂરમાં આવ્યું નથી. ખેર, સાંપ્રદાયિક વિચોમાં રસ લેનારા વિદ્વાનો ફેલુપણ જાળવ થઈ એ દિશામાં પોતાની રચિતો વ્યય કરવા કટિબદ્ધ થશે તો સંપ્રદાયના એક મદાકારીના પ્રારંભ થપણે મળાશે. જો કે આ કાર્ય અતિપ્રયત્નપૂર્ણ છે અને તે માટે લાંબા સમયનો બોમ આપવો પડે તેમ છે, જ્યાં ઉપલબ્ધ સાધનોને આધારે શ્રીમદાચાર્યશ્રીનાં ચરિત્રના પૂરક પૂરક અંશો અને ઉપર જતાવેલા શીર્ષક નીચે પ્રકટ કરવાનો નિમય કયો છે. મોટે ભાગે ઐતિહાસિક પુરાવાને આધારેજ લખાય તો ઉત્તમ, એવો ઉદેશ રાખવામાં આવ્યો છે. આ આચરયક કાર્યમાં મદાવન્ય કરવા માટે અને અનુભવીઓને આમંત્રણ કરીએ છીએ.]

વંશાદિપરિચય.

શ્રીમદાચાર્યચરણના વંશાદિ તરફ દષ્ટિપાત કરતાં આ પ્રમાણે નિકાય ઉપર અવાય છે. આપશ્રી જે કુલમાં પ્રકટ થયતા તે કુલ ધવું ઉત્તમ અને ધર્મનિષ્ઠ હતું. આપશ્રીના એ સહાચારપરાયણ પૂર્વજો દક્ષિણ સિંહમાં આંધ્ર-તેલંગ-દેશમાં રહેતા હતા. એઓનું નિવાસસ્થાન કાંકરવલીમાં હતું. કેટલાકે એને કાંકરવાડ, કાંકુલકર વગેરે નામોથી ઓળખે છે. 'આ ગામ વ્યોમરથંબ પર્વત પાસે કૃષ્ણા નદીની દક્ષિણે હતું' એમ લખીને, તેની નીચે એક ટિપ્પણ લખતાં સદ્ગત રા. જી. લલિતભાઈ જણાવે છે કે:-"આ ગામ નિત્રાગ સરકારની હાલેની સરહદમાં હતું એમ અનુમાન થાય છે." વસ્તુતઃ એ વિરે હાલ કાંઈ ચોક્કસ પ્રમાણ નથી કે

એ આમવાળો પ્રદેશ હાલ કયે ઠેકાણે છે ? હાલ ગિરાજતા સંપ્રદાયના આચાર્ય-શ્રીઓ તેમજ સાંપ્રદાયિક વિદ્યાવિદ્વાસીઓ દક્ષિણુયાત્રાવેળાએ એ સ્થલ વિષે શોધખોળ કરીને કાંઈ નવો પ્રકાશ પાડશે એવી આશા રાખીશું. વૈષ્ણવધર્મપતાકાના પ્રકાશક શ્રીચુત આચર કે જેઓ એક તૈલંગ દેશના નિવાસી છે, તેઓના કહેવા ઉપરથી એમ જણાય છે કે એ ગામ ગોદાવરીના પૂર્વ કાંઠે હતું, પરંતુ હાલ તેના સ્થલમાં અને નામમાં પરિવર્તન થઈ ગયું છે. સંભવિત છે કે એવાં નાનાં ગામો કાંઈ સદીઓ સુધી એકજ સ્વરૂપમાં સ્થિતિ કરતાં ન હોય.

કુલ, ગોત્ર, આદિ.

આચાર્યશ્રીના વંશના મૂલ પુરુષ ગોવિંદાચાર્યજી હતા. જાતિ તૈલંગ બ્રાહ્મણ. વેદ-કૃષ્ણયજુર્વેદ. શાખા-તૈત્તિરીય. ગોત્ર-ભારદ્વાજ. કુલ વેલનાડું કે વેલનાટી એવા નામથી ઓળખાતું અને તે પ્રાચીન ઉચ્ચ ગણવામાં આવતું હતું. એ કુલની અવટક 'ખંભપટ્ટીવાર' હતી. કુલની દેવી રેણુકા મનાતી. પરંપરાપ્રાપ્ત વૈષ્ણવદીક્ષા અહિં કરવાનું એ કુલમાં પ્રચલિત હોવાથી એ કુલ વૈષ્ણવ તરીકે ઓળખાતું હતું. યજ્ઞયાગાદિનો પ્રચાર તે વેળાએ ધણોજ હતો. વસ્તુતઃ વેદના કર્મકાંડનો પ્રચાર દક્ષિણમાં વિશેષ હતો, અને અંત્યારે પણ છે. વર્ણશ્રમધર્માનુસાર વેદિક કર્મો આમરણાંત આશ્રય એ હિંદનું ઉત્તમ આરિચ્ચ દક્ષિણમાં વિશેષ જળવાઈ રહેલું છે. આચાર્યશ્રીના પૂર્વજોમાં યજ્ઞયાગાદિ વેદિક ધર્મ કેટલો વિશેષ હતો, તે નીચે આપેલાં કોષક ઉપરથી જણાશે.

નામ.

કેટલા સોમયાગ કર્યા ?

૧. યજ્ઞનારાયણજીહટ.

૩૨*

૨. ગંગાધર સોમયાજી.

૨૮

૩. ગણપંતિજીહટ.

૩૦.

૪. વલ્લભજીહટ કે બાલજીહટ.

૫

૫. લક્ષ્મણજીહટ.

૫

૧૦૦

સો સોમયાગ પૂર્ણ થયે તે કુલમાં પ્રભુ અવતાર ધરે છે એવી શાસ્ત્રીય માન્યતા છે. તદનુસાર સો સોમયાગ પૂર્ણ થયે શ્રીમદ્ભક્તોત્તમાચાર્યજી પ્રકટ થયા પેટલે તેઓશ્રી ભગવન્ના અવતાર તરીકે મનાયા.

શ્રીલક્ષ્મણજીહટ.

શ્રીલક્ષ્મણજીહટનું પ્રાકટ્ય ક્યારે થયું તેનું કાંઈ ચોક્કસ પ્રમાણ મળતું નથી. લક્ષ્મણજીહટના બીજા એક ભ્રાતા હતા, તેમનું નામ જનાર્દન ભટ્ટ હતું. ભારતેન્ડ

* મૂલ પુરુષ ગોવિંદાચાર્યના પુત્ર વલ્લભદીક્ષિત, અને તેમના પુત્ર યજ્ઞનારાયણજીહટ, યજ્ઞનારાયણ ભટ્ટી સહને ઉક્ત પૂર્વજો ક્રમશઃ વેદ, ગણેશ, સુષો, શોષ, એમના અવતાર ગણાતા.

બાપુ હરિશ્ચન્દ્ર લખે છે કે:-“ લક્ષ્મણલટ્ટની નાની અવસ્થામાંજ એમના પિતા પરલોકવાસી થયા. એથી એમનું લાલનપાલન એમનાં માતાના પિતાએ કર્યું. લક્ષ્મણલટ્ટના માતામહે લક્ષ્મણલટ્ટને વિદ્યાધ્યયન કરાવ્યું હતું.” એ રીતે લક્ષ્મણલટ્ટ એક સમર્થ વિદ્વાન હતા. પ્રસન્નચર્યનું પાલન કરીને વિદ્યાધ્યયન પૂર્ણ કર્યા પછી પોતે ગૃહસ્થાશ્રમમાં પ્રવેશ કર્યો. વિદ્યાનગરના મુશમાં નામના તે વેળાના પુરોહિતની કન્યા શ્રીયત્તામાગાજીની સાથે શ્રીલક્ષ્મણલટ્ટના લગ્ન થયાં. ગૃહસ્થાશ્રમના સ્વીકારને પરિણામે લક્ષ્મણલટ્ટને ૩ પુત્રરત્ન અને ૨ કન્યારત્નો પ્રાપ્ત થયાં. પ્રથમ પુત્રનું નામ નારાયણલટ્ટ, ઉપનામ રામકૃષ્ણલટ્ટ હતું. એઓએ યોગ્ય સમય પછી-સંન્યાસ લીધો હતો અને તપોમય જીવન ગાળવાનો આરંભ કર્યો હતો. સંન્યસ્તાવસ્થામાં એઓનું નામ કૃષ્ણપુરી પડ્યું. તપોમયથી એમણે એવી મિદિ પ્રાપ્ત કરી હતી કે તેઓ પગમાં પાંદુકા પહેરીને ગંગાજીના પ્રવાહ ઉપર સ્થળની પેઠે ચાલી શકતા હતા !

એક સત્યનો પ્રકાશ.

શ્રીરામકૃષ્ણલટ્ટના આ ચરિત્રનો આરોપ શ્રીમદ્દક્ષણાર્ચજીના ચરિત્ર ઉપર કરીને, “ તેઓશ્રી પ્રથમ સંન્યાસી થયા અને પછી ગૃહસ્થાશ્રમી થયા ” એવા મનમાનતા દેખમૂલક આરોપો આધુનિકો તરફથી થાય છે. એ આરોપો ઇતિહાસ-વિરુદ્ધ અને મનઃકલ્પિત હોવાથી ઉપેક્ષ્ય છે. શુદ્ધ ભાવે વસ્તુરિયતિનું અન્વેષણ કરનારને તો ઉપર જણાવેલોજ ઇતિહાસ મળ્યો અને તેના ઉપરથી તે ઉક્ત નિશ્ચય ઉપરજ આવશે. જેઓને તેમ કરવાની ઇચ્છા નથી, જેઓને અશ્વત્થ આરોપરૂપ પાપપંકને ખુંદવાની ટેવજ પડી ગઈ છે, તેને માટે કહેવાનું શું હોય ? રામકૃષ્ણલટ્ટજીએ ગૃહસ્થાશ્રમનો સ્વીકાર ન કર્યો, અને યદ્યદેવ વિરજેત્તદદેવ પ્રજેત્ત એ શુભ-નુસાર શ્રીશંકરાચાર્યજીની પેઠે તેમણે સંન્યાસ સ્વીકાર્યો, તેમાં તેમણે યોગ્યજ કર્યું. તેમનાં એ ચરિત્રને શ્રીમદ્દક્ષણાર્ચજીના ચરિત્ર સાથે સંકલ્પવાની પૃથ્થા અને તેમ કરીને એક મહાન ભ્રમિમાર્ગના ચંર્યાપક ઉપર ગમે તેવા રોપો પડી કાઢવાની તત્પરતા ઉક્ત ઇતિહાસથી તદ્દન ખુલી પડે છે અને સત્યચોધકોને સત્ય વસ્તુરિય-તિનું ભાન કરાવે છે.

શ્રીમદ્દામ્બુજી ઇલક્ષ્મણલટ્ટના ખીલ પુત્રરત્ન છે. ત્રીજા પુત્રરત્નનું નામ રામચંદ્રલટ્ટ હતું. રામચંદ્રલટ્ટ મહાપંડિત હતા, અને વેદાંત, મીમાંસા, વ્યાકરણાદિમાં એમની વિદ્વતા અપૂર્વ હતી. લક્ષ્મણલટ્ટના મામા પોતાને પુત્ર ન હોવાથી રામચંદ્રલટ્ટને પોતાને ત્યાં લઈ ગયા હતા એમણે જગજુહુત્ત મોવારસીયમહાકાવ્ય આદિ અનેક ગ્રન્થરત્નો રચ્યાં છે. એઓ અયોધ્યામાં રહેતા હતા. એવા સમર્થ વિદ્વાન અને ચારી હતા કે તેમને પરાસ્ત કરવાની શક્તિ તત્કાલીન પંડિતોમાં ખમિતજ હતી નહિ. લક્ષ્મણલટ્ટનાં તે કન્યારત્નોનાં નામો અનુક્રમે સરસ્વતી અને સુવદ્રા હતાં.

અનુવાદ.

૧. વિધાનગર, શ્રીનૃસિંહવર્મા ચક્રવર્તી કંઠ્યાણકારી સાંચાન્યમાં, મીન માસમાં-ચૈત્ર માસમાં-એકાદશીના રોજ લોકગુરુ આચાર્ય ચક્રવર્તી શ્રીપ્રભુવલ્લભને સુવર્ણલિપેક થયો.

૨. સાત દિવસ સુધી ભદ્રારકને (આચાર્યશ્રીને) અલિપેક થયા પછી પૃથ્વી, દેવ, દક્ષિણા, સવા લાખ સોના, ચાંદી અને તાંબાના શિલ્પો નિવેદન કર્યા.

૩. ગાય, હાથી, બળદ, घोडा એ કર્મ કરનારાઓને આપ્યું.

૪. દ્વાદશીના રોજ અંરુણોદય વેળાએ-વહાણામાં-મહારાણી, મુખ્ય પટ્ટરાણી મીનાક્ષી દેવીએ પોતાના હાથે અલિપેક કરાતા આચાર્યશ્રીને ચાંદીવડે અલિપેક કર્યો.

૫. આચાર્ય ચક્રવર્તી પોતાના કાકા સાથે રાજપરિષદમાં બિરાજ્યા.

૬. હાથી-૧૬, घोडा ૨૧, બળદ ૨૫, કુમારિકા ૧૬, વાછરડા સાથેની અને દાગીનાથી શણગારેલી ગાયો-૨૭.

૭. સોનાના ઘડા-૧૦૮, ચાંદીનાં ૧૨૧, તાંબાના ૧૩૧, કાંસાના ૧૭૫, માટીના ૨૪૦.

૮. સોનાનાં અને ચાંદીનાં કૃમીસન અને ભદ્રાસન, સોનાની પાલખી, છત્ર, ચામર, નક્ષત્રમાલિકા, (૧) કૃત્તિકા, (૧) પંખાઝારી.

૯. કડાં, બાણુળંદ, કુંડલ, રત્નના અલંકાર સાથે. રાયલું સેનાપતિ, શંભે સ્વામી શાસ્ત્રી, આચાર્યકૃષ્ણમૂર્તિ, અમાત્યવેંકટ, નૃસિંહદેવ.

૧૦. વાલ્મિકી (રામાયણી) લોકેશ્વરી ટીકા, આચાર્ય ચક્રવર્તીએ રચેલી વિજયાદશમીના રોજ પૂર્ણ થઈ. શ્રીરામલીલા કૃપા સમક્ષ પ્રેરણાથી લોકગુરુ આચાર્યચક્રવર્તી શ્રીમહાભાગવતનો નિત્યનો પાઠક્રમ પંચસપ્ત (પાંચસોમી કે પોણીસોમી) આવૃત્તિ પૂર્ણ થઈ. કાર્તિક શુકલ-૧૫મી ૧૫૬૫.

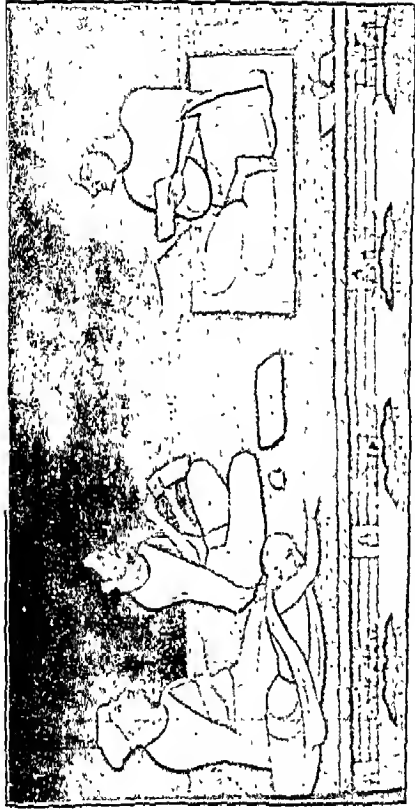
૧૧. પટ્ટરાણી.

૧૨. પોતાના ઈષ્ટ જાલારામ (જાલાલ ૧) સાથે આચાર્યચક્રવર્તીને અલિપેક કરીને પોતાના ઈષ્ટગુરુને સમર્પવા.

(આ લેખ પ્રાચીનમાર્ગના સ્થાપક શ્રીમદ્વલ્લભાચાર્યચરણનાં જીવનચરિત્રમાંના એક મહાન પ્રસંગનો ચિતાર આપે છે.)

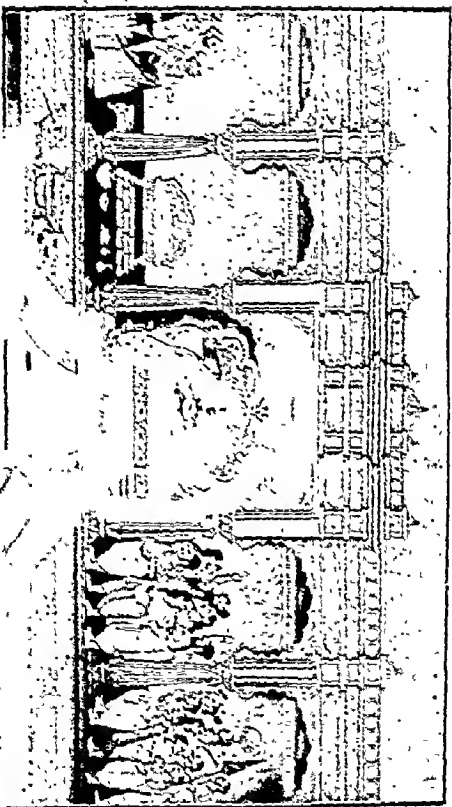
નોંધ:—આ જોદકામમાં મળેલી મૂર્તિઓ તથા બીજી બધી પ્રાચીન વસ્તુઓ ચાંદીના ખીલોના, ચાંદીના હોમકુંડ આદિ નિઠિયોદવાળા સુપ્રસિદ્ધ વૈષ્ણવ સરદાર દેસાઈ ગોપાલદાસ વિહારીદાસ મારફત મળી અને તે કામવંતમાં શ્રીદેવકીનંદના આચાર્ય પ્રાચીન સંગ્રહાલયમાં જળવી રાખવામાં આવી છે.

૧. આ મહાન પ્રસંગ એટલે શ્રીમદ્વલ્લભાચાર્યે કરેલા કનકલિપેક સમજવો.



જગદગુરુ શ્રીમદ્દત્તભાગ્યાર્યેભ્ય મહામયુત.
 (શ્રીકૃષ્ણગદ્યાના ચિત્રની પ્રતિમૃતિ.)
 પ્રાચીન મં. ૧૪૩૫ એવ તલ ૧૧

५. म. शिखर २



श्रीवह्मभीयसर्वस्व.

दक्षिण में तैलङ्ग देश में आंध्र प्रान्त में आकलीडु जिला में, स्वम्म, काकरिपल्लि ग्राम में यजुर्वेद तैत्तिरीय शाखा भारद्वाज गोत्र में महादेव पात्र के वंश के आश्रय रहते थे। इसी वंश में रामनारायण भट्ट के पुत्र यज्ञनारायण सोमयागी हुए। ये वेद के अवतार थे, इन पर वेद पुरुष अत्यन्त ही प्रसन्न रहते थे। जब इन को वेद में कोई संदेह होता तब स्नान कर के वेद पुरुष का ध्यान करते और वेद पुरुष प्रत्यक्ष हो कर संदेह नाश कर देते।

एक बेर मायावादियों ने हँसी में इन से कहा कि आप वेद के अवतार हो तो वक्रे से वेद पढ़वावो। तब यज्ञनारायण जी ने वक्रे की ओर देख कर कहा "भट्टिलय त्वं वेदानुचारय" इतना सुनते ही वह वक्रे वेदपाठ करने लगा। ऐसे ही दक्षिण में उन ने अनेक समझकार दिखाये। ये श्री रामानुजाचार्य मत के बड़ पण्डित थे।

जब यज्ञनारायण जी ने पहिला सोमयाग किया तब अग्निकुण्ड में से यह शब्द सुन पड़ा कि ऐसे सो सोमयाग के पाँछे भगवान का अवतार होता है। बीस सोमयाग करके ये देवलोक पधारे।

इनके पुत्र गङ्गाधर भट्ट सोमयाजी साक्षात् शिव जी के अवतार थे। जिन्होंने अवस्थ-स्नान करती समय लोगों की प्रत्यक्ष अपने केश में से जलधारा निकळती दिखाई। अष्टादस सोमयाग कर के ये देवलोक गये।

इन के पुत्र गणपति सोमयागी थे, काशी में पण्डितों की सभा में इन्होंने गणेश की भांति दर्शन दिया और इसी से सभा में इन का प्रथम पूजन होता था। एक बेर सय प्रसिद्ध नगरों में जाकर शांति का दिग्विजय किया था। तीस यज्ञ करके ये देवलोक सिधारे।

इन को तीन खी थीं उन में ज्येष्ठ स्त्री के ज्येष्ठ पुत्र वह्मभट्ट साक्षात् सूर्य के अवतार थे, क्योंकि एक बार इन्होंने यज्ञ करते करते सायंकाल की समय प्रहर दिन चढ़े के सूर्य की भांति दर्शन दिया था, पाँच यज्ञ करके ये भी देवलोक गये।

इनके पुत्र लक्ष्मणभट्टजी बड़े विद्वान साक्षात् अक्षरवक्त्र शेष जी के अवतार हुए। इन की छोटी ही अवस्था में इन के पिता का परत्येक हुआ था। इससे इन के मातामह ने स्नान-पालन कर के इन को विद्या पढ़ाया था। इन की खी देवकी जी का अवतार श्रीहनुमाचार्य जी थी। इन के तीन पुत्र हुए। बड़े भाई का नाम नारायणभट्ट खपनाम रामकृष्ण भट्ट। ये कुछ दिन पाँछे संन्यासी हो गये तब केशवपुरी नाम पड़ा। वह ऐसे सिद्ध थे कि खटाऊं पहिने गङ्गा पर स्थल की भांति चळते थे। मझले श्रीमहाप्रभु जी और छोटे रामचन्द्र भट्ट जी। ये महाभारी पण्डित थे। वेदान्त, गीर्वासा व्याकरण, काव्य और साहित्य बहुत अच्छा जानते थे।

लक्ष्मणभट्टजी के मातुल वसिष्ठ गोत्र के ब्राह्मण अपुत्र होने के कारण इन्हें अपने घर ले गये थे। कृष्णकुतुहल गोपाललीला महाकाव्य इत्यादि कई ग्रन्थ इन्होंने बनाये हैं। ये श्री महाभूषजी के विद्या में शिष्य थे और प्रायः अयोध्या में रहते थे। वादी ऐसे भारी थे कि प्रायः उस काल के सब पण्डितों को जीता था, यहां तक कि इसी वाद के लाग पर इन को विष दे दिया।

लक्ष्मणभट्टजी के पूर्व पुरुषोंने पञ्चानवे सोमयाग किये थे, सो इन्होंने पांच और कर के सौ पूरे किये। अन्त के सोमयज्ञ का आरम्भ चैत्र सुदी ६ सोमवार पुष्य नक्षत्र अभिजित् योग में संवत् १५३२ में किया। जब यज्ञ समाप्त हुआ तो कुण्ड से यह अलौकिक बाणी सुन पड़ी कि तुम्हारे कुल में पूर्ण पुरुषोत्तम का प्रागट्य होगा, यह बाणी सुनते ही यज्ञ में सब को बड़ा आनन्द हुआ और लक्ष्मणभट्टजी ने उसी समय काशी में सवा उष्ट्र ब्राह्मण भोजन का सङ्ग्रह किया। उसी समय में संयोग से दक्षिण में कुछ यवनों का उपद्रव भी हुआ इसमें लक्ष्मणभट्टजी कुटुम्ब को ले कर और बहुत सा द्रव्य साथ ले कर काशी की ओर चले।

विदित हो कि श्रीलक्ष्मणभट्टजी संवत् १५३२ के चैत्र के अंत में बहुत से विद्यार्थी और ब्राह्मण भोजन के हेतु बहुत सा द्रव्य ले कर काशी चले और कांकरवार से सात मन्त्रिण पर भृत्यसार्थक तीर्थ में जहां सर्वसोभद्रकुण्ड में राजा चरुण ने अपने यज्ञ का अवसृत्यज्ञान कियों है, तीन दिन तक रहे। वहां वैशाल वदी ११ की अर्द्धरात्र को श्रीठाकुरजी ने श्री शमिनीजी सहित दर्शन दिया और आज्ञा किया कि जब तुम काशी से लौट कर चम्पारण्य आओगे सब तुम्हारे यहां हमारा प्रागट्य होगा। यह आज्ञा कर के एक उपरना, एक तुलसी की नाला, एक कण्ठी, दे कर श्री मुख में कहा कि जब बालक हो तब उसको यह उपरना उडा देना, यह कण्ठी माला पहना देना और यह बीडा जन्म घोट्टी में पीला देना। इतना सुनते ही जब लक्ष्मणभट्टजी नींद से चौक पड़े तो इन वस्तुओं के सिवा और वहां कुछ न देखा।

लक्ष्मणभट्टजी भीमरथी, उज्जैन, पुष्कर, इत्यादि तीर्थ होते हुए प्रयाग आये। वहां भारद्वाज ऋषिके आश्रम में आकाशवाणी हुई कि तुम हमारे गोत्रमें धन्य हो, जिसके घर साक्षात् पूर्ण पुरुषोत्तम का प्रागट्य होगा।

प्रयाग से भट्टजी काशी आये। वहां गङ्गा त्वान काशीविधेधर का दर्शन करके एक स्थान लेकर उत्तरे और वेद का पारायण अग्निहोत्र और ब्राह्मणभोजन प्रारम्भ किया और थोड़े दिनों में सवा लाख ब्राह्मण का भोजन समाप्त किया। इसी समयमें दिल्लीके यवन राज्य में सुगरी और पठानोंके विरोधके कारण बड़ा उपद्रव उठा और भारतवर्षके पश्चिमोत्तर प्रान्तमें चारो ओर हल चल पड़ गई। लोग नगर छोड़ कर गांवमें बसने लगे। लक्ष्मणभट्टजीके जातिके लोग भी काशी छोड़ कर डगर उधर चले गये और लक्ष्मणभट्टजी भी क्रदम्ब लेकर दक्षिणकी ओर चले।

सात महीनका गमश्राव हुआ सां-माताजीने केले के पत्तेमें वह गर्भ लपेट कर शमीके लोदरेमें रखा दिया । यहांसे ये लोग चौंड़ा नगर गये और वहां सुना कि देशोपद्रव सब शांत हो गया । यहां एक रात्रि निवास करके जब लक्ष्मणभट्टजी फिर काशीकी ओर फिरे तो उसी शमीके वृक्षके नीचे चालीस हाथके लंबे चौड़े अग्निकुण्डमें बालक खेलता देखा । श्रीहृदमगारूजीके स्तनसे दूधकी धारा उस समय निकली, श्रीमहाप्रभुजीके मुखारविंदमें पड़ी । तब श्रीलक्ष्मणभट्टजीने वेद-मन्त्रसे और माताजीने अपनी भाषामें अग्नि और वरुणकी स्तुति किया और अग्निने हृदमगारूजीको मार्ग दिया । माताजीने बड़े आनंद और वात्सल्यसे पुत्रको गोदमें उठा लिया । उस समय आकाशसे पुष्पद्युष्टि हुई और देवताओंने प्रत्यक्ष ही कर वै जैकार किया । सबके चित्तमें अकस्मात् नन्दमहोत्सवके आनन्दका आविर्भाव हुआ ।

श्रीलक्ष्मणभट्टजी बाग्यको लेकर काशी फिर आए और श्रीठाकुरजीकी आज्ञा प्रमाण कण्ठी, माला, उपरना और धोड़ी श्रीमहाप्रभुजीको दिया । तत्परीय शास्त्रके अनुसार नाग-करणादिक सब संस्कार बड़े आनन्दसे हुए और जब श्रीहृदमगारूजी गङ्गा पूजनेको गईं तब श्रीगङ्गाजीने माताकी गोदही में श्रीमहाप्रभुजीका चरणस्पर्श किया और त्रियों सहित माताजीके बरदान मांगनेपर जलमें से शब्द सुन पडा कि तुम्हारा पुत्र सब बादियोंको जीतेगा ।

अथ जन्मपत्री ।

स्वस्ति श्रीमन्पतिविक्रमार्क सम्यग्दे १५३५ शके १४०० वैशाख मासे कृष्णपक्षे तिथौ १० रविवासरे घ० १६ प० १४ परच ११ तिथौ घनिष्ठा नक्षत्रे घ० ३८ प० ४६ शुभयोगे घ० ३८ प० २ चवर्णे श्रीगव्योदियान् इष्ट घ० ३७ प० ४२ अधिक लग्नादये श्रीलक्ष्मणभट्टपत्नी पुत्र रत्नमजीजनत् ।

सूर्य० १२।२२।११ लग्न ७।१०।१९।३१ दिनमान ३०।२८ रात्रिमान २९।३२। एक बेर श्रीहृदमगारूजी की व्रजयात्राकी इच्छा हुई और आपने अपने पतिसे निवेदन किया कि कृपापूर्वक व्रज चलिये, परन्तु भट्टजीने कहा कि पुत्रको यत्रोपवीत करके चले। यद्यपि श्रीहृदमा-गारूजीने पतिकी आज्ञाका कुछ उत्तर नहीं दिया तथापि व्रजयात्राकी आपकी चर्चा ही इच्छा थी यहां तक कि एक बेर श्रीमहाप्रभुजीको गोदमें लिये आप बैठी थीं सो व्रजका स्मरण करके उनके नेत्रोंमें जल भर आया । सर्वान्तरजामी श्रीमहाप्रभुजीने माताकी इच्छा पूर्ण करनेको जम्हाई लिया और मुखारविन्दमें चौरासी कोस व्रजका दर्शन कराया । श्रीहृदमगारूजीको यह देख कर बड़ा ही आश्चर्य हुआ और आपने लक्ष्मणभट्टजीसे सब वृत्तान्त कहा । भट्टजीने कहा कि एक बेर हम अग्निशायनमें भूमिपर शयन करते थे तब अग्निने स्वयं हमसे आज्ञा कि तुम इस बाग्यको विषयों सन्देह मत करना सो यह बाग्य अलौकिक साक्ष्यत् नारायणका स्वरूप है ।

एक बेर श्रीविश्वनाथजीने यह विचार किया कि श्रीठाकुरजीने हम को तो माया मत फैलानेकी आज्ञा दिया है और आप अपने संप्रदाय फैलानेको क्यों प्रगट हुए हैं ? इससे एक बेर दर्शन तो करना चाहिये कि आपने कैसा वेप लिया है और क्या इच्छा है । यह विचार कर योगी बनकर एक सोनेका बघनहां हाथमें लेकर श्रीलक्ष्मणभट्टजीके द्वार पर आये । श्रीमहाप्रभूजी उस समय बलान्त रुदन करने लगे और कोई प्रकारसे चुप न हो । तब लक्ष्मणभट्टजीने अपने पास बैठे हुए शिष्योंसे पूछा कि आज कल बालकके ग्रंथ कैसे हैं ? ब्राह्मणीने उत्तर दिया कि ग्रंथ तो अच्छे हैं परन्तु एक बघनहां इसके गलेमें पड़ा रहे तो अच्छा है । श्रीलक्ष्मणभट्टजीने अपने शिष्योंको आज्ञा किया कि अभी बघनहां गोल लेकर सोनेसे मटाकर पोहवा लाओ । शिष्य लोग जैसे ही बाहर निकले वैसे ही देखा कि एक योगी बघनहां लिये सड़ा है । वडे हर्षसे शिष्य लोग योगीको भीतर ले गये । श्रीमहादेवजीने श्रीमहाप्रभूजीको कटुला पहनाकर पूछा “ भगवन् कोयं वेपः ” श्रीमहाप्रभूजीने उसी क्षण उत्तर दिया “ सर्वेश्वर सर्वोपा निजेष्टतः करिष्यति ” यह सुनकर सब लोगोंको बड़ा आश्चर्य हुआ कि इतने छोटे बालकके मुखसे शब्द स्पष्ट और फिर संस्कृत कैसे निकल ? किसीने कहा योगी बडे सिद्ध हैं, किसीने कहा नहीं बालक ही बड़ा प्रतापी है । उस पीछे श्रीमहादेवजी कई बेर योगीके बेपमें खिलौना लेकर प्रायः मिलनेको आते थे ।

संवत् १५४० चैत्र बदी ९ अर्थात् श्रीरामनवमी रविवारको लक्ष्मणभट्टजीने वेदविधिसे आपका यज्ञोपवीत किया । सोरोंजी नामक प्रसिद्ध बाराह क्षेत्रमें केशवानन्द नामके एक बडे सिद्ध योगी वैष्णव संप्रदायके थे, सो जब श्रीमहाप्रभूजीका चम्पारण्यमें प्रागट्य हुआ उसी समय उन्होंने अपने शिष्योंसे कहा कि इस समय गृध्वापर कहीं पुरुषोत्तमका अवतार हुआ है उनके सेवकोंमेंसे कृष्णदास मेघन नामक एक सेवक थे सो वह गुरुका वचन सुनते ही यह विचार करके घूमने निकले कि जो पुरुषोत्तमका प्रागट्य कहीं हुआ होगा दरगज होहीगे । और जो हमको नाम लेकर मुकौरंगा उसीको हम पुरुषोत्तम जानेंगे यह कृष्णदास मेघन फिरते फिरते श्रीमहाप्रभूजीके उपवित समय काशीमें आये और भीड़ देखकर जो श्रीलक्ष्मणभट्टजीके घरमें गये तो उनको देखते ही श्रीमहाप्रभूजीने आज्ञा किया “ कृष्णदास तू आयो ” उन्होंने दण्डवत करके उत्तर दिया “ जै मैं आयो ” और एक अंगूठी श्रीमहाप्रभूजीके यज्ञोपवीत भिक्षा में दी और तबसे ये आजन्म श्रीप्रभुजीके साथ ही रहे ।

उपवीत धारण करके पहले और पीछे जब आप खेलते तो ब्राह्मणके उडकोंको शिष्य बनाते और आप गुरु बनकर उपदेश करते ।

लक्ष्मणभट्टजीके घरके पास समुनदास नामक दाढ़ी रहते थे उनको श्रीमहाप्रभूजीके दर्शन साक्षात् पूर्ण पुरुषोत्तमके होय इससे उनका नेम था कि नित्य आपका दर्शन करके तब जब

पति । तो जब श्रीमहाप्रभुजी चरणारविन्दसे चलने लगे तब आप उनके घर पधार कर दर्शन देते सो एक दिन श्रीलक्ष्मणभट्टजीने आपसे आज्ञा किया कि शत्रुके घर आप गत पधारा करो इस पर श्रीमहाप्रभुजीने यह वाक्य पडा "क्षियो वैद्यास्तथा शत्रास्तेपि यान्ति पराजतिं" यह सुनकर लक्ष्मणभट्टजी श्रीमहाप्रभुजीको सगुनदासजीके यहां जानेकी आज्ञा दिया ।

यज्ञोपवीतके पीछे श्रीमहाप्रभुजीको लक्ष्मणभट्टजी घरहीमें वेद पढ़ाते थे परन्तु आपको बुद्धि बड़ी तीक्ष्ण थी इस हेतु असाढ़ सुदी २ पुष्यार्क योगमें माध्वानन्द स्वामीके यहां लक्ष्मणभट्टजीने आपको पढ़नेको बैठाया सो चार ही महीनेमें चारो वेद, वहाँ शाय पढ़कर सबको बडा आश्चर्य उत्पन्न किया, गुरुदक्षिणामें माध्वानन्द स्वामीने श्रीठाकुरजीकी सेवा मांगी तब आपने आज्ञा कि जब श्रीनाथजीको प्रगट करेंगे तब आपको सेवा देंगे । इन्हीको और ग्रन्थोंमें माधवेन्द्रपुरी करके लिखा है और ये मध्व सम्प्रदायके आचार्य थे । और विद्याविलास भट्टाचार्यसे आपने न्याय, पातञ्जल और काव्य पडा । श्रीमहाप्रभुजीकी विद्या देख करके लक्ष्मणभट्टजीको फिर सन्देह हुआ परन्तु श्रीठाकुरजीने स्वयमें पुनःदर्शन देकर वह सन्देह निवृत्त कर दिया । यही माधवेन्द्रपुरी श्रीकृष्णचैतन्यके मन्त्रगुरु हैं और इसी कारण श्रीमहाप्रभुजी और श्रीकृष्ण चैतन्यसे गिरभाव था और आपने उनको श्रीगोवर्द्धनकी कन्दरासे लाकर कृष्णप्रेमामृत ग्रन्थ दिया था और ऐसे ही निम्बार्क सम्प्रदायके आचार्य केशव कास्मीरीजीसे भी आपका बडा संग रहता था । विदित हो कि कि चैतन्य सम्प्रदायके ग्रन्थ बृहद्गौरगणोद्देशदीपिकाके श्रीमहाप्रभुजीको चौंसठ महानुभावोंकी गिनतीमें अनन्त संहिताके ७५ वें अध्यायके प्रमाणसे श्रीशुकदेवजीका अवतार लिखा है ।

एक समय श्रीलक्ष्मणभट्टजीने मायावादी संन्यासियोंको अपने घर भोजनको बुलाया था सो श्रीमहाप्रभुजीने ऐसा शरार्थ उठाया जिसे मायावादका खण्डन होय तब लक्ष्मणभट्टजीने कहा जो अपने पर आवे उसका अपमान नहीं करना इसे आपने उनसे शरार्थ नहीं किया पर वैष्णवधर्मप्रचारकी आपको ऐसी उत्कण्ठा थी कि फासीमें जहां शरार्थ होता वहां आप जाते और वैष्णव मतका मण्डन और अन्य मतका खण्डन करते । वहां तक कि लक्ष्मणभट्टजीके पास लोग उराहना देने आते कि आपके पुत्रने भरी सभामें हमारा अपमान किया, तब लक्ष्मणभट्टजी आपको निषेध करते तब जिन पण्डितोंसे आप निषेध करते उन पण्डितोंसे शरार्थ न करते, उस कालमें विधनाथके सभामण्डपमें पण्डितोंकी सभा निय होती थी और ये लोग एक बात पर निर्णय करके तब उठते थे । सो श्रीमहाप्रभुजी उस सभास्थानकी भीति पर एक श्लोक नित्य लिख आते और जब पण्डित लोग उसका एक दिनमें निर्णय करते तो दूसरे दिन दूसरे श्लोकसे उनका सब निर्णय खण्डित हो जाता । ऐसे ही तीस दिन तक आपने यह खेल खेला और उसीसे पत्राव-तन्मय ग्रन्थ बन गया । एक प्रसंग यह भी है कि आपसे बहुतसे पण्डित शरार्थ करनेको आते थे और समय बहुत थोडा था इस लिये आपने पत्रावतन्मय ग्रन्थ करके विधेयके द्वार पर निपना

दिया था, और नगरमें नारो और विघ्नाथके द्वारपर भी डगडुंगी फेर दी थी कि जिसको हमसे शाखार्थ करना हो वह पहले जाकर वह पत्र देख ले। यह सुनकर जो पण्डित वह पत्र देखने जाते वह सब अपने प्रश्नका उत्तर पाकर चले जाते और इससे पत्रावलम्बन प्रथम बना।

श्रीलक्ष्मणभट्टजीको श्रीमहाप्रभुजीके इस घोर शाखार्थ करनेसे बड़ा धोम हुआ और आपने वात्सल्यभावसे यह सोचा कि ऐसा न हो कि द्वेष करके जादूसे कोई पण्डित हमारे पुत्रको मार डाले यह विचार कर अपने देश जानेका मनोरथ किया क्योंकि कि, बारह वर्षकी काशीमें रहनेकी आपकी प्रतिज्ञा भी पूरी हो गई थी। यह सब बात विचार कर आप सहकुटुम्ब काशीसे दक्षिण चले।

वहाँसे सात मंजिल पर यह सुन कर कि विष्णुस्वामी संप्रदायके कोई पण्डित लक्ष्मणभट्टजी अपने पुत्र सहित काशीमें अनेक पण्डितोंको जीत कर यहाँ आते हैं, बहुतसे पण्डित मिल कर एक साथ लक्ष्मणभट्टजीके डेरे पर शाखार्थ करने गए और जब श्रीमहाप्रभुजीने उनकी शाखार्थमें जीता तब लक्ष्मणभट्टजीने प्रसन्न हो कर कहा कि 'वरदान मांगो, तब आपने दो वरदान मांगे प्रथम तो यह कि आप हमको शाखार्थ करने जानेसे कहीं रोको मत और दूसरे यह कि शाखार्थमें कोई हमारा तेज पराभव न कर सके। लक्ष्मणभट्टजीने बड़ी प्रसन्नतापूर्वक दोनों वरदान दिए।

लक्ष्मणभट्टजी साक्षात् पूर्ण पुरुषोत्तमके धाम अक्षर ब्रह्म रोपजीके स्वरूप हैं, इससे आपको बिकालका ज्ञान है सो जब आपने अपना प्रयाग समय निकट जाना तब कांकरबासे नडे पुत्र रामकृष्णभट्टजीको बालाजीमें बुलया और वही आपने डेरा किया। पुत्रोंको अनेक शिक्षा देकर रामकृष्णभट्टजीको श्रीयज्ञनारायणके समयके श्रीरामचन्द्रजी पधराय दिए और कहा कि देशमें जाकर सब गांव और घर आदि पर अधिकार और बेल्लिनाटि तैलझ जातिकी प्रथा और अपने कुल अनुसार सब धर्म पालन करो। ऐसेही श्रीयज्ञनारायणभट्टके समयके एक शालिग्रामजी और मदनमोहनजी श्रीमहाप्रभुजीको देकर कहा कि आप आचार्य होकर पृथ्वीमें दिग्विजय करके वैष्णव मत प्रचार करो और छोटे पुत्र रामचन्द्रजीको जिनका काशीमें जन्म हुआ था अपने मातामहको सब स्थावर जङ्गम संपत्ति दिया * और श्रीमहाप्रभुजीके ग्यारह वर्षकी अवस्थामें लक्ष्मणबालाजीका

* ये रामचन्द्रभट्ट बड़े पण्डित थे। गोपालबीरामहाकाव्य, कृष्णकुतूहलमहाकाव्य और शृङ्गार वेदान्त ये तीन ग्रन्थ इनके मिलते हैं। अयोध्यामें ये रहते थे और श्रीमहाप्रभुजीको विद्यागुरु करके मानते थे। वैष्णव दीक्षा श्रीमहाप्रभुजीसे इन्होंने पाई थी कि नहीं इसमें संदेह है। और रामकृष्णभट्टजी कुछ दिन पीछे सन्यासी होकर केरवपुरी नामसे खड़ाक पहन कर जल पर चलनेवाले बड़े सिद्ध विख्यात हुए। इन लोगोंके सम कालके प्रसिद्ध पण्डित ये थे, गङ्ग नतमें व्यासतीर्थ, निम्बार्क मतमें केसरभट्ट, रामानुज मतमें ताताचार्य और न्यदुटाध्वरि, शंकर मतमें आनंदगिरि, स्मार्तों में बा अन्य मतमें सुकुंदानन्द, केवलानन्द, माधवानन्द, वरदराजके महन्त हस्त नवार् और शतनाथजीके महन्त आनंदराम।

शृङ्गार करने दुर्गमसमेत उगरे मन्त्रपौं लय हो गए । उनके पुत्रोंने दक्षगामद्वीपके यगदा
लौकिक संस्कार बड़ी धूमधामसे किया और श्रीमद्वाप्रभुजीने एक वर्ष तक यथामादयिनि सप्त
रीतिका बरताव किया ।

काशीमें वैष्णव तन्त्र, शैव तन्त्र, कौमारिक ब्राह्मण, सौतपथ इत्यादि नवके मन्त्र और
शैव, पाशुपत, काला मुस, अथौर, ये चार शैव संप्रदाय और विष्णुत्सर्ग, इत्यादिक चार वैष्णव
संप्रदायके ग्रन्थ नहीं मिलते थे इस हेतु दक्षिणके सम्भवती भण्डारमें जाकर इन ग्रन्थोंको अपने
अवलोकन किया और वेदकी ३६ शताब्दी संदिग्ध नामक इत्यादिक कम्प्रास किया । फिर जब
दक्षगामद्वीप पतिके हेतु विलय करती तब आपको दुरा होता । इसी श्रीवाल्मीकीने स्वयंमें दक्षगाम-
द्वीपको विलय करनेका निषेध किया ।

जब आपको पृथ्वी परिक्रमाकी इच्छा हुई तब मातृचरणको अपने नामाके पद्म पदुचानेको
आप विद्यानगर पधारे और मार्गमें अपने अन्तरङ्ग दामोदरदासजीको सेवक किया ।

श्रीमहाप्रभुजी अपने मामाके घर उतरे और वहीँ यह सुना कि राजा कृष्णदेवको सगामें आज फल नित मत मतांतरका बाद होता है, यह सुनके आपने इच्छा किया कि हम भी चलो। दूसरे दिन प्रातःकाल स्नान-संध्या होम करके ब्रह्मचारीका भेषकर आप राजाकी सगामें पधारे। इनका दर्शन पाते ही सब सभा तेजोव्रत हो गई और राजा कृष्णदेवरायने बड़े आदरसे इनको बैठाया। तब आपने राजासे सभाका वृत्तान्त पूछा। राजाने हाथ जोड़ कर निवेदन किया कि आज छ महिनेसे सब मतमतान्तरके पण्डितोंसे यहां शंखार्थ हो रहा है सो मायामतवालोंको अब तक किसीने जीता नहीं है। यह सुनकर आपने पण्डितोंसे प्रश्न किया और शंखार्थ प्रारम्भ हुआ। चौदह दिन तत्त्व विचारमें बारह दिन स्थानवाददेश इस सूत्रसे आरम्भ होकर व्याकरणमें और एक दिन जैन बौद्धब्राह्म विचारमें इस तरह सब मिला कर सत्ताइस दिन शंखार्थ हुआ और जितने वादी सगामें उपस्थित थे सब निरुत्तर हुए। तब राजाने सब पण्डितोंसे जयपत्र लिखवा कर उसपर अपनी मुहर करके इनको दिया और सब पण्डितों और मतके आचार्योंने मिलकर आचार्यपदवीसे महाप्रभुजीको पुकारा। राजा कृष्णदेवने कनकाभिषेकसे आपकी पूजा किया और सपरिवार क्षरण आकर सेवक हुआ। + इस अभिषेकके सोनेकी श्रीमहाप्रभुजीने दीन ब्राह्मणोंकी बांट दिया और अनेक ब्राह्मणके लड़कोंके यज्ञोपवीत और लड़कियोंके विवाह और अनेकका ऋण शोधन इससे हुंवा। इस सुवर्णके सिवा एक थाली भरकर मुहर राजाने आपको भेंट किया था। तब सात मोहर आपने अङ्गीकार करके उसका श्रीगार्धजीका नूपुर बनाया। फिर राजाकी

व्यङ्कटपतिराय, द्वितीय तमधराय, द्वितीय रामदेवराय और द्वितीय व्यङ्कटपतिराय हुए। द्वितीय व्यङ्कट मुगलोंसे हार कर चन्ददेवगिरिमें बसे। इनके पुत्र रामराय उनको हरिदास (१६९३), चक्रदास (१७०४), त्रिमदास (१७२१), रामराय (१७३४), गोपालराय व्यङ्कटपति, त्रिमल्लराय, वीर व्यङ्कटपति और रामदेवराय क्रमसे राजा हुए। इस वंशके अन्तिम राजा रामदेवराय जिनको सं० १८७५ (१८२९) ई० में टीपू मुल्तानने मारकर राज्य नाश कर दिया।

+ विधानगरके, कृष्णगढ़के और नवानगरके राजा लोग उसी कालसे इस मतके सेवक होते आते हैं किन्तु विधानगरका वंश अब नहीं रहा उस कालमें दक्षिण प्रान्तके सब राज्य बने हुए थे। विधानगर जानेके पूर्व आप हेमाचल गोआ इत्यादि होते हुए चोंडा गए थे। चोंडाके राजाने एक म्याना और दो प्यादा साथ देकर आचार्यको विधानगर पहुंचाया था। यहांपर एक बात और जाननेके योग्य है कि श्रीमहाप्रभुजी विधानगरकी सगामें श्रीविष्णुस्वामीकी गद्दी पर विराजे। इसी समय श्रीनिचमङ्गलजीने श्रीविष्णुस्वामीके और मतभेद सब आपकी देसकर विलक किया था। यह भी अनुश्रुति है कि श्रीमहाप्रभुजीने सगामें योगबलसे अपना कमण्डलु कँका जो सर्वका सा सगामें प्रकाश किया। तदनन्तर आप सगामें गए।

और वहाँके अनेक ब्राह्मणोंको बृहस्पतिसब वाजपेय आदि यज्ञ और अनेक महादान कराया और उससे जो द्रव्य एकत्र हुआ उसका तीन भाग किया। एक भागसे श्रीविठ्ठलनाथजीकी फट्टि मेखला बनी दूसरे भागसे पिताका ऋण शोधन किया और तीसरे भागको करणीय यज्ञके व्यय निर्वाहार्थ माताको सौंप दिया। और अनेक दिन तक ज्ञान भक्ति वैराग्य वत यज्ञादि धर्मका उपदेश करते हुए आप विद्यानगरमें विराजे।

कुछ दिन तक विद्यानगरमें निवास करनेके उपरान्त मानासे आज्ञा लेकर पृथ्वीपारिकमा करनेको संवत् १५४८ वैशाख वदी २ को आप नगरसे बाहर चले। उस समय जनचर्य्य मतके कारण सीआ हुआ बख नहीं पहरते थे इससे धोती उपरना पहनकर दण्ड कमण्डलु ब्रज और पादुका धारण किए हुए आप चलते थे। (इसी महाचर्य्यके दण्डधारण पर भ्रमसे बहुतसे मूर्ख आक्षेप करते हैं कि श्रीवल्लभाचार्य पहले दण्डी थे फिर गृहस्थ हुए) दामोदरदास और कृष्णदास ये दो सेवक आपके साथ थे। पहले भीमरथीके तटपर पण्डरपुरमें आए, वहाँ सप्ताहपरायण करके बैठक स्थापित किया। (आगे जिस तीर्थके वर्णनमें पा० वै० स्था० यह संकेत देखो यहाँ समझो कि पारायण करके बैठक स्थापन किया) फिर नासिक त्र्यंबक पञ्चवटी गोदावरी तीर्थमें आए। वहाँ त्रयाह पा० वै० स्था० वहाँसे उज्जयिनीमें आए वहाँ सीमा और अज्ञपात कुण्ड (जिसमें भगवान् जय सान्दीपनीजीके यहाँ पढ़ते थे तब पाटिया धोते थे) स्नान करके महाकालेश्वरका दर्शन करके नगरके बाहर एक पीपलकी डाल गाड़कर उसपर कमण्डलुका जल आपने छिड़का जिससे वह तत्क्षणात् एक वृक्ष हो गया और उसके नीचे सप्ताह पा० वै० स्था० (यह पीपलका वृक्ष अद्यपि वर्तमान है) वहाँसे पुष्करजी की यात्रा कर आप वजकी ८४ फोसकी परिक्रमा करनेके हेतु संवत् १५४८ के भाद्रपद कृष्णष्टमी अर्थात् जन्माष्टमीके दिन श्रीगोकुलमें पधारे। तब श्रीनाथजीकी यमुनाजलमें स्नान करते देख आप भी उनके समीप जाने लगे, तब तो श्रीनाथजी गिरिराज उपर आए, वहाँ भी आप उनके पीछे पीछे गये, इसीसे श्रीभगवानने प्रसन्न हो यह वरदान दिया कि “यावत् यमुनाजीमें गङ्गाजल गहेण, तावत् तुमारी संपत्त्य अचल रहेगी” ऐसा कहकर श्रीनाथजी अन्तरव्यान हो गये। तब आप जिस मार्गसे पूर्व में गए थे पूर्वगत मार्गसे अपने व्याकुल शिष्योंसे मिलकर आसनपर आए। तदनन्तर श्रीआचार्यजी महाप्रभुजी वजकी यात्रा करने चले, और उसका निर्णय करके अनुक्रमसे वर्णन किया है। और जिस जिस स्थलमें आपने श्रीमद्भागवतका पारायण कर बैठक निवस की है, जो अद्य पर्यन्त प्रसिद्ध हैं उस जगो ऐसा चिह्न किया है।

पञ्चावतंभन.

इक्षिणुभा अस्थि दीक्षित नाभना जेक विद्वान् यद्य गथा छे. सुप्रसिद्ध दीन-
मतवादी अष्टाध्यायीक्षितना वंशभाण आ विद्वान् यथा छे जे भ भागी शशाय.

અર્થથી દીક્ષિતે સં. ૧૫૮૫ માં “વ્યાસતાત્પર્યનિર્ણય” નામનો એક નાનો ગ્રંથ લખેલો હશે, તે “વાણીવિલાસ” ગ્રંથ તરફથી પ્રકટ થયો છે. સદ્ગત તેલીવાલાએ નાના સરળા પુસ્તકની નીચેની પંક્તિઓ પર મારું ધ્યાન ખેંચ્યું હતું.

નનુ પવંસતિ વ્યાસતાપર્યવિપયીમૂતાર્થનિર્ણયકુતુહલિનઃ પુરુષધૌરેયસ્ય પ્રમુશિરોમણેઃ સમા-
માગચૈકદિનપ્રમૃતિ માસાવધિ દ્વૈતાદૈતવિચારે સતિ તત્પક્ષયોર્મધ્ય એકસ્ય પ્રામાણ્યમિતિ મધ્યસ્થમુસેત
નિશ્ચિત્ય, તન્મતપવેશ એવાહ્નીક્રિયતે હિતિ પત્રાવલંબનપૂર્વકં સમયવચ્ચનં કૃત્વા, તત્સમાપ્રવિષ્ટમધ્ય-
સ્થવિદ્વત્સન્નિધાનચલેનાસ્મદાદિમિરેવ શ્રુતિપુત્રિવલ્લસ્વારસ્યચલાનુસારેણાયમેવાયો વ્યાસતાત્પર્યવિવચ
દ્યત્યવસાતું શવયત હિતિ ચેત, ન ।

ઉપરની પંક્તિઓ પૂર્વપક્ષરૂપે લખાયેલી છે. એનો ભાવાર્થ આ પ્રમાણે છે:-

પ્રભુશિરોમણિ અને પુરુષધ્રેષ્ઠ શ્રીકૃષ્ણદેવરાજાએ • જગવાનુ વેદવ્યાસજીના તાત્પર્યમાં કયો અર્થ સમાયેલો છે, એનો નિર્ણય કરવાની ઇચ્છા કરીને એક સભા કરી. એ સભામાં આવીને પત્રાવલંબન-કરારપત્ર-સાથે અમુક સમય નક્કી કર્યો અને ચોક્કસ કરાર એ કર્યો કે, “એક દિવસથી લઈને એક માસ સુધી દ્વૈતાદૈત ચાલે, તેમાં બંને પક્ષોમાંથી એકનું પ્રામાણ્ય મધ્યસ્થ હોય તે કહે એમ તટસ્થના મોઢાના નિર્ણય પછી તે મતમાં પ્રવેશ કરવો રહ્યો.” આવો કરાર કરીને મધ્યસ્થ વિદ્વાનોના સન્નિધાનગણથી અમોજ શ્રુતિ અને શ્રુતિનું બલ, તેમ રહસ્યના બલને ધારે આજ ભાવાર્થ વ્યાસજીના તાત્પર્યમાં રહેલો છે એમ નિર્ણય કરી શકીએ ને ને હોય તો તે અમે સ્વીકારી શકતા નથી.”

ઉપરના ભાવાર્થમાં આપણે પ્રવેશ કરીશું. શ્રીકૃષ્ણદેવ રાજાએ વિદ્વાનોની સભા કરેલી, તેનો ઇસારો તો ઉપરની લીટીઓમાં સ્પષ્ટ જણાય છે. તે પછી ત્યાં જઈને પત્રાવલંબનપૂર્વક કરારપત્ર લખાયો એવો ઉલ્લેખ છે. ગ્રંથકારે આપણા આચાર્યશ્રીનું નામ લખ્યું નથી. આચાર્યશ્રીના દિગ્વિજયરૂપ મહાપ્રયાસને અધ્યયુ દીક્ષિત પૂર્વપક્ષમાં ગાઠવે છે, ને એમ કહે છે કે, તમે કૃષ્ણદેવ રાજાની સભામાં આવીને, કરારપત્ર લખી વેદવ્યાસના કથનનું રહસ્ય આજ છે એવો ને નિર્ણય મધ્યસ્થો પાસે કરાવ્યો તે અમે સ્વીકારી શકીએ નહિ. એટલે સભામાં તમે વિજય મેળવ્યો તેથી શું થયું ? એમ કહીને આ વિદ્વાન આપણા સિદ્ધાંતોને પકકારે છે. આપણા આકર ગ્રંથો અર્થથી દીક્ષિતને મળેલા હોય એમ જણાતું નથી. એના નાનાશા ઉક્ત ગ્રંથમાં આપણા સિદ્ધાંતોનું શુદ્ધ અનુવાદપૂર્વક ખંઠન પણ નથી. માત્ર આચાર્યશ્રીના વિજયને એ વિદ્વાન સહન કરી શક્યો નથી. જેથી માત્ર ઠટાક કરીને તે વિરમે છે. શ્રીકૃષ્ણદેવ રાજાની સભામાં આપણા આચાર્યશ્રી પધાજી, ને ૨૮ દિવસ સુધી શાસ્ત્રાર્થ થયો એ વાતનો આપણે ત્યાં ઉલ્લેખ છે. પરંતુ આપણે એ ઉલ્લેખ બીજું કોણ સ્વીકારે ? બીજા સંપ્રદાયના પુરાવાથી તેને વધુ મજબૂત બનાવવો રહ્યો. અર્થથી દીક્ષિતની ઉપરની પંક્તિઓ આપણા ગ્રંથોનાં કથનને મજ-

ખૂત પુષ્ટિ આપે છે. કૃષ્ણદેવ રાજાની આજુ સભામાં ખીજા કોઈ આચાર્ય ગયા નથી. તેમણે કરારપત્ર કરી મધ્યસ્થ વિદાને પાસે નિર્ણય કરાવ્યો નથી. એમ કરનારા માત્ર આપણો આચાર્યશ્રીજ છે. વળી આપણે ત્યાં પત્રાવલંબનનો ઉપયોગ કોશીવિશ્વનાથના ધારણા પર થયો છે એવો ઇતિહાસ છે. આ પુરાવો કૃષ્ણદેવ રાજાની સભામાં પત્રાવલંબન થયું એમ કહે છે. કહાચ એજ પત્રાવલંબનનો ઉપયોગ જાનને સ્થળે થયો હોય અથવા વધુ સ્થળે પણ થયો હોય એમ પણ સંભવે છે. ગમે તેમ હોય, પણ આ પંક્તિઓ કાંઈ ઘોરા મહત્વની નથી.

દક્ષિણમાં આંધ્રદાયિક સ્મરણો.

છેલ્લા મદ્રાસ તરફના પ્રવાસમાં આપણાં હેટલાંક પ્રાચીન આંધ્રદાયિક સ્મરણો મને મળ્યાં છે, જેનો પ્રચલિત ઉલ્લેખ “પતાકા” માં કરવા ધાકે છું.

મદ્રાસથી પપ માઈલ દૂર શ્રીવિષ્ણુકાંચી તીર્થ છે છે. ત્યાં શ્રીવરદરાજસ્વામી ખિરાળે છે. મૂર્તિ મહાભવ્ય છે. વળી આ સ્થળે શ્રીવલ્લભાધીશ્વરની બેઠક છે. બેઠક ઘણી રમ્ય અને મોહક છે. વળી તે વિદ્વાન આચાર્યવર્ધ ગો. શ્રી ૬ શ્રીગો-કુલનાથજી મહારાજશ્રીની માલીકીમાં હોવાથી ઘણીજ સુંદર જાની છે વિષ્ણુકાંચીના આ તીર્થસ્થળની યાત્રા પછી હું સફળતે તેલીવાળા ગાયે :શ્રીલક્ષ્મણબાલાજી ગયો. શ્રીમહાપ્રભુજી આ સ્થળને શ્રીવેંકટેશ્વરધામ કહે છે. અહીં એ વેળાએ ગો. શ્રી ૬ શ્રીગોકુલનાથજી મહારાજ ખિરાજતા હતા. એઓશ્રીનીજ છાયામાં અભારે જાધાને નિવાસ હતો. એક દિવસે આપણીએ કૃપા કરીને નીચે જણાવેલું આંધ્રદાયિક સ્મરણ સ્પષ્ટતાપૂર્વક વર્ણવ્યું, જેનો ઉલ્લેખ અત્રે કયો વિના હું રહી શકતો નથી.

શ્રીમહાપ્રભુજી વિષ્ણુકાંચીમાં જ્યારે શ્રીવરદરાજસ્વામીનાં દર્શન કરવા માટે પધાર્યા ત્યારે આપણીએ પગથીયા પર ગીતગોવિંદમાંની અષ્ટપદી તેલુગુ અક્ષરોમાં કોતરણીની ભેદ, જાધા તો તે પગથીયાપર પગ મુકી ઉપર જતા હતા, પણ આપણી તેના પર ચરણ મુકી શક્યા નહિ, તેથી શ્રીવરદરાજસ્વામી ઉપરથી નીચે પધાર્યા, અને તે પગથીયાપર શ્રીમહાપ્રભુજીને દર્શન આપ્યાં. આ દિવસ હજુ પણ ત્યાં નોંધાયેલો છે, અને ત્યાંના પૂજારીઓ તે દિવસે તે પગથીયાપર શ્રીવરદરાજસ્વામી પધારે છે એમ માનીને ત્યાં ભોગ ધરે છે. આ એક આપણું ઉત્તમ આંધ્રદાયિક દર્શનક છે.

આ ભોગને અગે થતું ખરચ આંધ્રદાય તરફથી મળતું, તે જંધ થયું હતું, તે ગો. શ્રી ૬ ગોકુલનાથજી મહારાજશ્રીએ આજુ કરાવ્યું છે, અને આપણું આ સ્મરણ કાયમ રાખવાનું ઉમદા કાર્ય કર્યું છે.

આપણું પ્રાચીન તિલક.

શ્રીલક્ષ્મણ બાલાજીમાં ચાર પાંચ પૂતળાં છે. તે પંચ પાતુના કોઈ આપણી પ્રાચીન કળાઓના આદર્શરૂપ છે. તેમાં પેશતાં જગત્ની જાણુનાં ત્રણ તો શ્રીકૃષ્ણદેવ રાજા અને તેની બે સત્તીઓનાં છે. પેશતાં ડાબી જાણુએ શ્રીકૃષ્ણદેવ રાજાના પ્રધાન

તિરુગલ આદિનાં છે. તિરુમલના કપાળમાં સુંદર તિલક છે. તિરુમલ શ્રીમહાપ્રભુજીના સેવક હતા. એ તિલક નીચેથી ગાંધેલું છે. ગરોળર આપણે કરીએ છીએ તેવુંજ છે. કૃષ્ણગઢમાં ગિરાજતાં શ્રીમહાપ્રભુજીનાં પ્રાચીન ચિત્રમાં પણ તેવુંજ તિલક છે. તેથી સાબિત થાય છે કે, શ્રીમહાપ્રભુજીના સમયમાં તો આપણે કરીએ છીએ તેવુંજ તિલક હતું. માત્ર શ્રીનાથજીની આસાથી શ્રીગોકુલનાથજીએ દિરેળ એ નામથી છુટી એ લાંટીનું તિલક કર્યું, અને તે પછી તેઓશ્રીના ઘરમાં તે ચાલુ થયું. પણ શ્રીમહાપ્રભુજીના સમયમાં તો આપણું તિલક હતું, તેનો પુરાવો આનાથી વધુ ખીજે શો હોય ?

વિદ્યાનગરમાં શાસ્ત્રાર્થ.

ચાલુ ઐતિહાસિક શોધખોળ પછી શ્રીમદ્વાચાર્યશ્રીનું ચરિત્ર કાંઈ ચોરજ આલેખાશે. હાલ જેમ જેમ ગ્રન્થો મળતા જાય છે, તેમ તેમ આપશ્રીના ચરિત્રપર અનેરોજ પ્રકાશ પડતો જાય છે. શ્રીયુત તેલીવાલાની સૂચનાને આધારે એક ભાટિયા લેખક લગવદીય ભાઈ ગોવર્ધનદાસે “ મુખર્ષિ સમાચાર ” માં છેલ્લા કેટલાક માસથી આચાર્યશ્રીના ચરિત્રના ઐતિહાસિક અંશોપર ધણેજ સારો પ્રકાશ પાડ્યો છે. એમના બધા લેખો શ્રીમદ્વાચાર્યચરિત્રને ઇતિહાસ-દ્રષ્ટિએ જોવા ઇચ્છનારને ધણા મદદગાર થઈ પડે તેમ છે. તેમાં પણ એક વાતપર તો તેમણે ધણેજ સારો પ્રકાશ પાડ્યો છે. આપણા વાર્તાના તેમજ ખીજા કેટલાક હસ્તલિખિત સંસ્કૃત ગ્રંથોને આધારે આપણી માન્યતા એવી હતી કે, વિદ્યાનગરમાં શ્રીકૃષ્ણદેવ રાજાની સભામાં જ્યારે શ્રીવલ્લભાધીશ્વરે ૧ માસ પર્યન્ત શાસ્ત્રાર્થ કયો, ત્યારે આપશ્રીની ઉમ્મર માત્ર ૧૧ વર્ષની અથવા તો તેથીજ નહીની હતી. શ્રદ્ધા કે ભાવનાની નજરે આચાર્યશ્રીમાં તેવા અદ્ભુત સામર્થ્યનાં અસ્તિત્વની શંકા નજ સંભવે, છતાંજ, જ્યારે મનુષ્યનાટયનોજ આરંભ હોય ત્યારે તો તેને ગાંધેસ્તી લીલા દેખાડેજ છુટકો. એટલે ભાઈ ગોવર્ધનદાસે શ્રીકૃષ્ણદેવ રાજાનો ઇતિહાસ મેળવ્યો. હવે કૃષ્ણદેવ રાજા લગલગ સંવત ૧૫૬૬ માં ગાદીનશીન થયાનું ઇતિહાસલેખકો કહે છે. તે પછી બીજેજ વર્ષે શાસ્ત્રાર્થ યથાના પ્રમાણે પણ ઝાંખા સ્વરૂપમાં મળી આવ્યાં છે. હવે શ્રીમહાપ્રભુજીનું પ્રાકટય તો સં. ૧૫૩૫ માં થયું. એટલે શાસ્ત્રાર્થ સમયે આપશ્રીનું વય ૩૦-૩૧ તુંજ સંભવે છે. તેથી શાસ્ત્રાર્થ અને સર્વ પરિતોને જીતી લેવાનું કાર્ય આપશ્રીએ ખીજા પરિક્રમા વખતેજ કર્યું હોય એમજ સંભવે છે. આ વિષે છેલ્લા મદ્રાસના પ્રવાસ વેળાએ શ્રીયુત તેલીવાળાએ ત્યાંના વિદ્વાનોને ધણીજ પૂછપરછ કરી હતી; તેથી એમનો મત તો હવે ચોક્કસજ છે કે, શાસ્ત્રાર્થ આપશ્રીએ ૩૦ વર્ષની ઉમ્મર પછીજ કયો છે. હાલમાં શ્રીગોકુલેશ્વરપુસ્તકલંકારમાંથી આચાર્યશ્રીના ચતુર્થ પોત્ર શ્રીગોકુલનાથજીના ૧૫૦૦ વચનામૃતો પ્રાચીન લખેલાં ગણ્યાં છે. તેમાં એવો સ્પષ્ટ ઉલ્લેખ છે કે વિદ્યાનગરવાળો શાસ્ત્રાર્થ ખીજા પ્રદક્ષિણા વખતે થયો હતો. એ વચનામૃત આ પ્રમાણે છે:—

“ એક દિવસે કહ્યું ને, જેનું વિધાનગરમે શ્રીઆચાર્યજી દ્વસરી એર પરિક્રમા કરત પધારે, તળ બ્રહ્મવાદ સ્થાપન ઉપરાંત વહાં એક મધ્વાચાર્યમાંગી સંન્યાસી (વ્યાસતીર્થ ?) હતો, ઉનકે મનમે આયો ને મેરો શિષ્ય હોય તો લક્ષો, એ આચાર્યજી સોં મનુહારિ કરિકે કહ્યો: એ સળ સંપ્રદાય તુમકો સોપૂં અરુ તુમ યહાંહી રહો; તળ રાત્ર શ્રીઠાકુરજીને શ્રીઆચાર્યજીસોં કહ્યો, ને તુમ યા માંગેકો અંગીકાર મત કરિયો. ”

કનકાભિષેકના પુરાવા.

માલાપ્રસંગની યાદ—ચિદ્રૂપ નામના એક માયાવાદી દંબી દંડી સંન્યાસીએ ત્યારે ત્યારે જહાંગીરી અમલનો આશ્રય લઇને, પુષ્ટિસંપ્રદાયના આજ ચિન્હો માલાતિતક ઉપર હુમલો કર્યો ત્યારે તેની સામે જગદગુરુ શ્રીએકુલનાથજીએ જે સત્યાગ્રહના સંપ્રદાયે આનાં ઐતિહાસિક સૂત્ર ઉપર પણ કુતર્કો યમા આ જ્ઞાનામાં શું નથી યતુ ? હવે તો મેટલુક ને અમે કે તમે અમારા કે તમારા બાપના અંશ દીકરા છીએ તેમાં પુરાવો શો છે ? આવા ન્યાયો હવે જહેરમાં થવાના છે ! માલાપ્રસંગની ઐતિહાસિકતા ઉપર એવા આક્ષેપો થયા તરી ને વિશે એક સંગીન વિચારણીય લેખ રા. રા. રમદાસ સુનીલાલ મોદીએ લખ્યો અને ત્યારબાદ એ વિષેના આક્ષેપો બંધ થયા. હવે કનકાભિષેકનો વારો આવ્યો છે. કહે છે કે, તે વિશે સ્વતંત્ર (ખીમએનો) પુરાવો ક્યાં છે ? ને કે માલાપ્રસંગ વિશે પણ બદારના સ્વતંત્ર પુરાવા નહિ એવા જ ગણાય. મતસંગ કે, યરના પુરાવા ન આવે, બદારના, ખીમ સંપ્રદાયના પુરાવાઓ લઈ આવો. કનકાભિષેક માટે ધરના પુરાવા નહિ આવે. સંકરાચાર્યના જન્મ માટેના પુરાવા તો ધરના જ આવે, તેમનાં માબાપ વિષેના, તેમના આરિય વિષેના, તેમના દિગ્વિજય ! ; વિષેના પુરાવાઓનું ચલુતર તો લક્ષેને ધરતી ચાર દીવાલો ઉપર જ ફમ ન થયું હોય ? પાતાના ધરતી ગમે તેવી દયા છતાં અહીં તો પારકાના ધર ઉપર જ હુનકા કરવા છે ! ખીમએને હલકા પાડવા છે ! જોલો હવે કાંઈ કહેવું છે ? સંકરાચાર્યની કેત્તિતિના બદારના પુરાવાઓ ઘણા ખરાબ હોય તેથી અમને શું ? અમારી શ્રદ્ધા ધરવાની નથી. અમારે તો વેચ્છસેની જે અગ્ર શ્રદ્ધા છે તેની ઉપર હુમલો કરવો છે. ધીવડવઆચાર્યજીના કનકાભિષેક વિશે બદારનો પુરાવો લખિ. કાંઈ દિગ્વિજય, લાલપત્ર કે ખીનું કાંઈ બતાવો, નહિતર એ બંધને કિષ્કિત ગણીશું. આવી પોકલ પોકરાણ ચર્ચ રહી છે. આનો જવાબ આપીએ તે પહેલાં ધરના એકપક્ષી મજબૂત સંગીન પુરાવાઓથી ઇતિહાસનો નિર્ણય થાય કે નહિ તેને માટે જે મજબૂત દલીલો ઇતિહાસર રા. રા. મોદીએ કરી છે તે અહીં ઉતારીશું. રા. રા. મોદી લખે છે કે—

ઇતિહાસમાં એકતરફી પુરાવો પ્રાપ્ત છે—એકપક્ષી પુરાવો પણ ને વિશ્વસનીય હોય તો તે ઇતિહાસમાં પ્રાપ્ત થઈ શકે છે. એવા ઇતિહાસમાં ઘણા દૃષ્ટાંતો છે. ૧. મહાન સિકંદરની હીંદની ચલાઈ સંગેથી કેઇપણ હીંદી લેખનું પ્રમાણ નથી, છતાં ઘીક લેખકોના પુરાવા ઉપરથી એ ખીના ઐતિહાસિક દરી છે. ૨. મેદમ્બદ ગજનવીની સોમનાથની સ્વારી સંગેથી કેઇપણ પ્રાજ્ઞાણ જૈન મંથમાં નિર્દેશ નથી, દારસી ગ્રંથોના પુરાવાઓ ઉપરથી જ એનો ઇતિહાસમાં આદર થયો છે. ૩. અઘાઉદ્દીન ખૂત્તિને કર્ણના પ્રધાન માધવ ગુજરાતમાં લાવ્યો હતો એ માટે મુસલમાન લેખકોએ કંઈ લખ્યું નથી. પરંતુ ધર્મોદય અને કાન્હડે પ્રત્યેક એ પ્રાજ્ઞાણ

અંધો ઉપરથી અને તત્કાલિન જૈન અંધો ઉપરથી એ વાન સિદ્ધ થઇ છે. ૪. સાધી વધારે વધારે અગત્યની આવૃત્તિ તો સર શેખસ રોની જહાંગીરની મુદ્રાકાત સંબંધી છે. તે ઇંગ્લાંડના એક્સપી તરીકે આવ્યો હતો, અને જહાંગીરને અજમેર મોકલે ઈ. સ. ૧૬૧૬ ના જનવરીની ૧૦ મી તારીખે મર્યો હતો. છતાં જહાંગીરે તુઝકમાં એ સંબંધી ઇશારા સરખાએ નથી.

ઉપરના પ્રબલ પુરાવાઓ ઉપરથી સાબીત થાય છે કે, ઇતિહાસમાં એકતરફી પુરાવાઓ પણ સ્વીકારાય છે. શ્રીમદ્ધલાચાર્યજીના કનકાલિષેકના પુરાવાઓ, તે પ્રસંગના ઝારવના ઇતિહાસો સાંપ્રદાયિક અંધોમાં ન જળવાય તો શેમાં જળવાય ? જીજ્ઞાસુ એ ઝારવપૂર્ણ ઇતિહાસો ટાંકવાની શી ગરજ હોય ? તેથીજ સંપ્રદાયના અનેક સંસ્કૃત પ્રાચીન અંધોમાં તેનો ઉલ્લેખ છે. વળી આધુનિક વિદ્યાનુ પુરાતત્ત્વવેત્તા ઇતિહાસર લેખકો પણ કનકાલિષેકની ઐતહાસિકતા સ્વીકારે છે. હાથમાં મોઘાસામાંના જંતુઓની પેઠે ઉભરી નીકળેલા, ચર્ચાપત્રીઓમાંનો એક પણ એવો ઇતિહાસનો અભ્યાસી નથી. અરે અહીં જે પુરાવાઓ ટાંકવામાં આવશે, તે અંધોના લેખકોના ઝારવની શતાંશમાં પણ બરાબરી કરી શકે તેવો હમણાંનો એક પણ ચર્ચાપત્રી નથી. આ વાન વૈષ્ણવોએ હૃદયમાં કોતરી રાખવી રહી. હવે આપણે પુરાવાઓ જોઈએ.

૧. શ્રીગદાધરદાસજીની દીપિકા—શ્રીગુણકવચના સેવકો પૈકી જન્મવાનના દિવદી ગદાધરદાસજીએ પિ. સં. ૧૬૧૦માં સંપ્રદાયપ્રદીપનામનો એક ગ્રન્થ લખ્યો છે, તેમાં લખે છે કે— શ્રીવશ્વમે ભાવાવાહીને અસ્થ પ્રયાસથી જીત્યો. તે પછી શ્રીવશ્વભાચાર્યનો કનકાલિષેક કથી. પછી રાત્રીએ એમને વિનંતિ કરીકે “હે સ્વામિનં! આ દ્રવ્ય તમારે લઈ જવું” ત્યારે શ્રીવશ્વભાચાર્યજી બોલ્યા કે “આ દ્રવ્ય અમારે અંગીકાર કરવા યોગ્ય રહ્યું નથી.” જેમ સ્નાન કરેલું પાણી પુનઃ અંગીકારને યોગ્ય નથી તેમ.” એટલે શ્રીવશ્વભાચાર્યની આજ્ઞાથી એ દ્રવ્ય તેમની પૂર્વે જે જે જાણીઓ વિચાર કરી રહ્યા હતા તેમને આપ્યું.

૨. સાવલી (ગુજરાત-વડોદરા રાજ્યના તાળાનું ગામ છે) તેમાં જોદકામ કરતાં મળી આવેલો લેખ (મુબારક-ગુજરાતી પત્રના સં. ૧૯૭૬ ના દીવાળીના અંક ઉપરથી) તેમજ “પુષ્ટિમાર્ગના ઇતિહાસ” (લેખક શાસ્ત્રી વસંતરામ) નામના પુસ્તકમાંથી.

સં. ૧૯૭૬ ના આસો માસમાં સાવલી ગામમાં એક કુલો જોદકાં કેટલાક પ્રજાણુ જેણે મળી આવેલા હતા જેની સર્વિસ્તર હકીકત ગુજરાતી પત્રના દીવાળીના અંકમાં સં. ૧૯૭૬ માં છપાઈ છે. તે ઉપરથી શાસ્ત્રીજી વસંતરામે શ્રીપુષ્ટિમાર્ગના ઇતિહાસ એ નામે પુસ્તકમાં છપાવે છે. જેમાંથી કેટલીક હકીકત આપીએ છીએ.

“સાવલી ગામમાં નારાયણ મઠ નામની જગ્યામાં પાંડિત શ્રીધૃત રાજેન્દ્રનાથ રહે છે તેમજે કુલો જોદ્યા માંડ્યો. એક શ્રીમાલકૃષ્ણદાસજીની મૂર્તિ—સ્વરૂપ તથા કેટલેક ચીજો તાડપત્ર ઉપર લેખ, અરણ્યપાદુકા વગેરે મળી આવેલું.

તાડપત્ર ઉપર સંસ્કૃત લેખ છે. તેમાં લખે છે કે—

૧ વિદ્યાપત્તનમ્ શ્રીનૃસિંહવર્ય સાર્થમૌમ સ્થપિત શ્રી સામ્રાજ્યે મીન માસે ૧૧ લોકગુરુ-આચાર્ય ચક્રવર્તિ શ્રીમ્નુ વલ્લભદેમાભિષેકમ્.

આ સિવાય સંસ્કૃતમાં ઘણા લાંબો લેખ છે. (જુઓ શ્રીપુષ્ટિમાર્ગના ઇતિહાસ પા. ૧૯) એ આખા લેખનો ગુજરાતી અર્થ:—

વિવાનગર-શ્રીનૃસિંહ વર્મા ચક્રવર્તિ કલ્યાણકારી સામ્રાજ્યમાં મીન માસમાં-૧૧ માસમાં

જોદકાં કરીના નામ જોદકાં આચાર્યચક્રવર્તી શ્રીમ્નુ વલ્લભો સુવર્ણગિરિક થયો.

આન દિવસ સુધી ભરાકરને (આચાર્યશ્રીને) અભિષેક થવા પડી પૃથ્વી, દેવ, દક્ષિણ, ગંગા સાથે મેળા, આદી અને લાંબાના ચિહ્નાઓ નિવેશન થયાં.

ગાય, હાથી, બગદ, ઘોડા, એ હર્મ કરનારાઓને આપ્યું.

હાડથીના ઘેર અરણ્યોદય વેળાએ વદાણમાં-અદારણી મુખ્ય પદ્માદી મીનાડી દેવીએ પાંખાના હાથે અભયેક કરના આચાર્યશ્રીને આંદીવડે અભિષેક થયો.

ખાદશમ કરનાં મહેસી સીએ બધી કામવનમાં શ્રીદેવકીનંદનાચાર્ય પ્રાચીનસંપ્રદાયમાં મંગરી રાખવામાં આવી છે. આ પ્રાચીન લેખનો પુરાવો તાડપત ઉપરનો છે તે ઉપરથી આચાર્યશ્રીને દનકાન્તિએ થવાનું સિદ્ધ થય છે. આથી ત્રણેયશ્રીના પુગલા લદન નકામા-પાપ પિનાના મર્યાદા છે.

૭. શ્રીવદ્ધભાષ્યાનકતાં—પરમ ભગવદીય મહાનુભાવી ગોપાલદાસજી જેઓ લદન મુંગા દત્ત, પપ્પ શ્રીગુસંઈછની દૃપાથી વાચાળ થઇ ગયા અને લલકારા પેને નવ વદ્ધભાષ્યાન ગાયાં તેમાં વદ્ધભાષ્યાન શ્રીગતમાં—

કનકજ્ઞાન શન મજુ સુવર્ણે, કરામ્યું મદીપાળ;

તે મુજી તેજે આત્મીયા, ગાય દષ્ટિ ન પાછી વાળ.

આ વદ્ધભાષ્યાન શ્રીગુસંઈછનાં સંનિષ્ઠમાંજ પોતે ગાયાં છે તેથી તે પુરાવો વધારે મજબૂત માની શકાય. તેમજ આ નવવદ્ધભાષ્યાન જે રચેને ગાયાં છે તે રચકને તે મહાન પપ્પ અન્ધારે ગોઠવે છે, અપદારાક પાસે અમાર્યા છે. ત્યાં શ્રીગુસંઈછની ભેટક પપ્પ છે. તે સં. ૧૧૧૩ થી ૧૧૧૬ થી આસપાસ મળવા છે. વળી આ વદ્ધભાષ્યાનના કરોડો વૈષ્ણવો પાક કરી ગયા તે દલુ પપ્પ કરે છે.

આ મનથી વિશેષ સમજવા એ છે કે એ ગુરુગતી બાવાના કામ્ય ગ્રંથ ઉપર શ્રી ગો. શ્રીવદ્ધાચર્ય મહારાજની સંસ્કૃતમાં ૫૦૯ પાનાની લીકા છે. આ ગ્રંથ ફરકો બાવવાદી દશે તે આ ઉપરથી શ્રી. રંધીચાર્ય જેવા સમગ્ર સકારી કે ! વળી આ ગુરુગતી આખ્યાનો ઉપર મન્ત્રાધારમાં એક લીકા શ્રીહજનવાચર્ય (મુંગાઈમાં ગોરા મંદિરવાચર્ય) એ લખેલી છે અને તેની નીચે સચિત્તર દિપ્તિજી બારનખાનઃ પદ્મિત ગુરુગાચર્યએ કરેલું છે.

૮. મુરલીધરદાસકૃત શ્રીવદ્ધભાષ્યાચર્યચરિત્રમ્—આ ગ્રંથ સંવત ૧૧૧૦ લખતલ ભખાયો મનાય છે. મુરલીધરદાસ શ્રીગુસંઈછના મેચર દત્ત. તેમણે લખેલો આ ગ્રંથ મરુદદાસ સમકાલીન છે. બ્યારે મરુદદાસ જન્મ કરે છે કે કનકાન્તિએ થયો છે અને આ મુરલીધરદાસ પપ્પ કનકાન્તિએ થવાનું રસીકારે છે. એક આખ્યાલિકા મારે એ મન સરખા પડે છે.

“ સિન્ધેન સદ્ધ વિશ્વસાનગરે મલમમાં પ્રવિવેશ, સનગુમારગુકાદિવન્ સ્વનેજસા રાજમર્મ મલમવાસ, અસાદગ્ધો માતુષેઽપિ મ્માલીનજનઃ સર્વેર્મુપાઞ્ઞેત પાત્થવરો મુચા પ્રગુભાય શાન્તનવાસાસ, મહા મુદાં મલિતો મુચા રજામત ટલવિવેશ. લક્ષ્મી નત મિદત્તનઃ જનવર્ધાભાર્યજવલ્લભમગુનોન્ । સર્વં સદ્મહમાનો મજા ન પ્રાર્થિતઃ મ્મામન્ વચ્ચેવ દૈવ મામવત રાગાર્થવર્ધના મિમનુદૃ શિવા કૃપારાખનામકેત તેન મુષ્ટેત જનસામિતેર્મ પ્રાપ્તોતિ સ્વમત-માતમર્મવિજયમોજનવાઃ મલકદિલગનિશ્ચૃદ્ધવં વિસદ્ધવંતીર્થવાગ્ધયાં પ્રવિતઃ ।

भारतमें पक्ष राजाओं केके सब जन्म अपने राजा साथे परवश यज्ञने होता यज्ञ सन्मान कर्तुं राजाओं केके सन्मान करेका ऐसा पोते राजाओं सिंहासन उपर गिराव्या. ते पक्षों त्यों आवेका विद्वानोंना शास्त्रार्थोंमें अवैष्णवोंना विजय (अने वैष्णवोंना पराजय) साबित्यो. पोताने ते न सहन यथाथी अने राजांनी प्रार्थनाथी जणवैष्णवत् श्रीभागवतशास्त्रार्थनी चर्चाथी प्रतिपक्षीओंने छतीने राजाओं करेका कनकालिपेके पागाने पक्ष मान पोताना भले न स्थापवानुं अथोक्तं होवाथी भगवान् सिवाय भीष्म वस्तुमां पोतानुं निरुद्धपक्ष प्रकट करतां पोते ते छोटीने तीर्थयात्राओं पथायां.

५. प्राचीन ग्रंथोंना पुरावो—श्रीभट्टकृष्णधर प्रभुना छद्म कुमार श्रीमदुनायक महाराजोंके रचैका श्रीवैष्णवविजयग्रंथ ग्रंथमां (सं. १६५८ ईस्वुन सुद भीमना राज रचयवला), आ प्रमाणे उल्लेख छे—

अथपताका आदिथी अत्रांकृत भंडपमां पोताना यचना कनकालिपेकेना अतुच्छानार्थ सांपादित कनककत्ररा तथा सत्ताना साहित्यने संभाजवाने भाटे, "पक्षोंम्या....वैष्णवार्थ तथा अन्य पथांनी संभतिथी श्रीमदाचार्यवरछुने छोटीने भक्तिविक्र उपध्याय तथा राज सन्मुख शुद्ध सुवर्णना पाटका उपर गिरावमान कथां.....यथाविधि पूजन करी, पवित्र तीर्थ जलोथी महालिपेके तथा साम्राज्याभिपेकेना भत्राथी आपनो आचार्यसाम्राज्याभिपेके कथों."

६. निजवार्ता:—आ ग्रंथ श्रीगुसांछिना अतुच्छावच्छ श्रीगोकुलनायकोंके संभेक्षो छे. तमां विद्वानगरों प्रसंग ४ यो पानुं ७ थी १३ मां आपथी लगे छे छे:—राज कृष्णदेवनी धर्मराजाओं धरुा द्विसथी वादविवाद मासे छे. आथी आपथी सत्तामां पथायां. राज आपने पथराववा आग्या. आपथी सिंहासन उपर गिराव्या. वादविवाद थैर थयो. तमां भाषावादीओंमा "विज्ञानानंदगिरि" नामना महासमर्थ भाषावादी पंडित छता तेनी साथे भाषावाद अने ब्रह्मवादना प्रश्नोंमां २७ द्विस वाद आव्यो अते ते भाषावादी निरुत्तर थयो ते उपरथी ओके ओके विद्वानोंने पुछतां तेओ पक्ष वादमां दारी गथा. आ सत्तामां जैन, बौद्ध, नानकपंथी, निरंजनी, इथीरपंथी वगैरे धरुा विद्वानो छता ते सधना निरुत्तर थय गथां. आथी आ प्रश्नो विजय थयो.

"पाछे वैष्णव संप्रदायमेंके रामानुज संप्रदायमेंके हनुमंताचार्य, निम्बार्क संप्रदायमेंके केशवभट्ट काश्मीरी, ओर मत्त्व संप्रदायमेंके न्यासतीर्थ स्वामी इत्यादि आचार्य संतमहंतहुने विन सज्जनने कही जो हम श्रीआचार्यजीको तिलक करेंगे ॥ जो आजसे हमारे वैष्णव संप्रदायवगैरे ब्राह्मण सज्जनके ये राजा भये । ओर आचार्यपदवी दीनी जो हमारे सज्जनके सिरोंमांन ये हे जिनने हमारी वैष्णवता ओर वैष्णव मार्ग राख्यो । यह सुनिके राजा चहोत प्रसन्न भयो ओर कबो जो बौहोत आछो, तुम सज्जनने एसे विचार्यो हे तो में श्रीआचार्यजी महाप्रभुनको कनकाभिषेक करुंगो. तब सब वैष्णव संप्रदायमेंके आचार्य महंत प्रसन्न भये तब राजा कृष्णदेवने आछो मुहूर्त देखीके आपको शतमण सुवर्ण जलमें डारके कनकाभिषेक करांयो, ब्राह्मण सज्जनने तिलक कीयो. सब कोउ श्रीवैष्णवाचार्यजी कह्ये लगे. एसों नाम वा दिनातें प्रसिद्ध भयो.

(પચાસંબનગ્રન્થ) ૨૭ દિવસ વાદ કરી સમર્થ પડિતોને હતી માયાવાદનું ખંડન કર્યું. પછી વઘાનગર કૃષ્ણરાયની સભામાં ૧૬ દિવસ વાદ કરી પાખંડ મતનું ખંડન કરી, અહમદનું સ્થાપન કર્યું. સર્વ પડિતોને સ્તેષ્ઠાદથી હત્યા. રામ કૃષ્ણદેવે સતોષ પામવાથી સુપર્યુનો આલોક કર્યો. આ સુપર્યુ ઘણું હોવા છતાં સ્નાનોદક ગણી ત્યાગ્ય કર્યું.

આ કંડોલ નામનો ગ્રન્થ શ્રીગુસાંધરના સેવક ખંભાલીયાના રહીસ ગિરિનારા અહમદ કથાણુભટ્ટનો લખેલો છે. તેથી આ ગ્રન્થનો પુરાવો સગળ માની શકાય. તેમ આ લેખના લેખક પોતે વિદ્વાન સ્કોલર છે તેથી તે પ્રમાણે ગણાયજ.

૧૧. શ્રીવલ્લભવેલ—શ્રીગુસાંધરના ચતુર્થલાલજી શ્રીગોકુલનાથજીના એક સેવક “ કૃષ્ણદાસ કવિ ” યદિ ગયા જેઓ શ્રીગોકુલનાથજીના ખાત્ર લાગ્યો સેવક છે. તેઓએ શ્રીવલ્લભવેલ નામનું કાવ્ય રચ્યું છે તેમાં પોતે જણાવે છે કે:—

ખંડી માયાવાદ પોતે, સાકાર અહને સ્થાપીયા;

ફરી માયાવાદી હતવાને, વિદ્વાનગર પાકિંધારીયા.

ત્યાં તત્ત્વવાદી માયાવાદી, વાદ કરે તેણીવારે;

રામ કૃષ્ણરાય આગળ યાતાં, સોળ દિવસ થયા ત્યારે.

ફરી પોતે વાદ માયા, હતી ખંડ પાખંડ;

અહમદ તે સ્થાપ્યો નિર્ભય, મહાપ્રતાપ પ્રચંડ.

રીતી નુપમણિ જ્ઞાન કનકે, કરાવ્યું કર બેઠી;

સોળ સદસ તે મોહાર યદિ, તેના પૂર્વા મનના કોડ.

અંગીકાર ન કર્યો દ્રવ્યને, પાદોદકવત્ જળણી;

આ કૃષ્ણકાવ પછુ શ્રીગોકુલનાથજીના સમકાલીન હતા એટલે આ લેખ રાષ્ટ્રમાણુ માની શકાય, પુષ્ટિમાર્ગમાં લાલની પદ્ધતિ મુજબ વિગતવાર ઇતિહાસ લખવાનું કાર્ય શ્રીગોકુલનાથજી (૪ યા લાલજી) ના અનન્ય સેવકોએ કર્યું છે. આવી તવારીખ તો ઘણી પછુ સપ્રેક્ષમાં લખેલી મળી આવશે નહિ. શ્રીકથાણુભટ્ટ આદિ શ્રીગોકુલેશજીના સેવકોએ સર્વ સ્થળે શ્રીવલ્લભાચાર્યજીના કનકાભિષેકનો મહાન પ્રસંગ માનીને ગોંધી લીધો છે. માત્ર તેઓ શ્રીવલ્લભાચાર્યજીનાં પ્રાકલ્યની સાથ સં. ૧૫૩૫ ને બદલે સં, ૧૫૨૯ માને છે અને આ કનકાભિષેક ૩૦ વર્ષની ઉંમર પછી, લગ્ન થયા પછી થયો છે એવો સ્પષ્ટ ઉલ્લેખ એ ગ્રંથોમાં મળે છે. વિજયનગર અને કૃષ્ણદેવરાયના ઇતિહાસની સાથ સરખાવતાં આ વાત બંધનેસતી થાય છે. કનકાભિષેક તો બધા રીકારે છે.

૧૨. શ્રીમૂલપુરુષ:—(કર્તા ગો. શ્રીદારકેશજી મહારાજ) આપશ્રી આજ્ઞા કરે છે કે:—

છંદ:—કાંડે સખ સ્તુતિ કરે જળ, કિયો માયામત ખંડન;

રાખ્ત જે જે હોત સખ મુખ, લાકપર્ચંચ જુવમડન.

સ્તુતિ કરે દિગ્દ દાય બેરે, રાય મરતક નાવલી;

પરમ મંગળ હોત હે, કનકાભિષેક કરાવલી.

પાછે જલસોં ન્દાય વિરાજે, વિનતિ કરી રાયે મનં સાજે.

દ્રવ્ય સખે અંગીકૃત કરીયે, પ્રભુ ભોલે યહ નોંહી મહીયે.

૧૩. શ્રીવલ્લભવિલાસ ગ્રન્થ જાગ ૧ લે, પા. ૧૨ કાશીમાં લખાયેલો પ્રાચીન ગ્રન્થ છે. તેમાં પછુ લખે છે કે:—

“ શ્રીમદ્ભગવાત્ચર્યજી અનેક દેશાંતરમે માયાવાદીઓકોં પરાસ્ત કરિ, વિચાનગર રાજા કૃષ્ણદેવકે સભામેં પધારિ, માયાવાદરૂપી અંધકારકો નાશ કરી, અને ભક્તિમાર્ગકે સિદ્ધાન્તરૂપી તેજકો પ્રકાશ કરીયો. અર્થાન્ માયાવાદકો સંહન કરી વ્રહ્મવાદકો સ્થાપન કરીયો. ઔર વૈષ્ણવ-સંપ્રદાયકી ઝઙ્ઘાટતા વતારી તા સમેં ચહું ઔર તેં વડે જેજેકાર શબ્દ હોત મયો, રાજા સાઘાંગ દંડવત્ કરી કનકાભિષેક સૌ. ૧૦૦ મળ મુવર્ણ તેં કરાયો. સમાકે પંડિત મહંત આદિ સવ ઠાડે હોય અચંત ગદગદ હૃદયસો શ્રીમદ્વાચાર્યજી મહાપ્રમુનકો મુતિ કરત હે. x x x પાછે સ્વ આચાર્યને શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રમુનકો તિલક ક્રિયો.

૧૪. ભારતભાર્તિ: શુ' કહે છે ?—ભારતમાં મુખ્યત્વે અને જન-માન્ય વિદ્યાન ભારત-ભાર્તિ: પંડિત વેદાંતમહાશય શ્રીગદ્ગુણાકાચ તત્ત્વાર્થદીપનિષાધની સંસ્કૃત પ્રસ્તાવનામાં લખે છે કે—

તુંગમત્રાતેરે વિચાનગરે સકલવૈષ્ણવવિચ્ચવકાન્ વરૂપણાન્ વાદિગણાન્ વિજિત્ય સાયણ-માધવદ્વારા વેદભાષ્યકારાયિતુર્વાર્ણુકરાજસ્ય પૌત્રં કૃષ્ણદેવચર્માર્ણ મહાદેવમુદ્ઘાત્ય,....

૧૫. એજ ભારતભાર્તિના મહાન્ શિષ્ય સદ્ગત શ્રીશ્રી કવીશ્વર શ્રીનંદકિશોરજી લખે છે કે—

દક્ષિણપથપ્રધિતં તુંગમત્રાતેરવર્તિવિચાનગરાધિપતેઃ કૃષ્ણદેવચરેન્દ્રસ્ય સદાસિ સકલ્લવાદિ-હૃન્દવિજયાભિષોતકકનકાભિષેકવિશેષિતવૈદ્યુપ્પાતિશયવિસ્માપિતસકલજનસમાજાઃ....॥

૧૬. નિત્યશીશારૂપ ગોસ્વામી શ્રીગોકુલાધીશજી મહારાજ પથ લખે છે કે—

રાજા પ્રાજ્ઞાભિમાતિભરિતોદામદુર્વાદિજેતા વાચાં નેતાં શુભિ વિજયતે કલ્પપ્રદેમાભિષેકઃ ॥

આ શ્લોક ઉપરની દીકામાં ભારતભાર્તિ: લખે છે કે—

રાજા કૃષ્ણદેવાલ્યેન કલ્પપ્રદેમાભિષેકઃ રચિતઃ કનકાભિષેકો યસ્ય તાદૃશઃ । અથાભિષેક-મુવર્ણમેતદંગીકાર્યમિતિ વિજ્ઞાપિતે સતિ ત્વાનસલિલસદૃશં નાસ્માભિરિદ્મમાદીયેતે દ્યુત્યન્તંતઃ ।

૧૭. હિન્દી ભાષાના જનકશામા ભારતેન્દુ શુ' કહે છે ?—જેમને ભારતવર્ષ રાષ્ટ્રીય ભાષા-હિન્દી ભાષાના પિતા માને છે. જેઓ એક પ્રખર ઇતિહાસજ્ઞ અને પુરાતત્ત્વવેત્તા, અંગ્રેજી ભાષાના પદ્મ અધ્યાપક વિદ્યાન, તે ભારતેન્દુ બાપુ દરિયેદેશ પોતાના ‘શ્રીવત્સભીષ સંસ્કરણ’ નામના લેખમાં ૨૫૮ લખે છે કે—

“ ત્વ રાજાને સવ પંડિતોસે જયવત્ ઊલ્લાસ કરે ઉસ પર અપની મુદ્ર કરે દેન કો દિયા ઔર સવ પંડિતો ઔર મનકે આચાર્યોને મિલકર આચાર્યપદવીમે મહાપ્રમુજીકો પુકારા । રાજા કૃષ્ણદેવકે કનકાભિષેકકે આપકર્ષ પૂજા ક્રિયો ઔર સપરિવાર શમ્ભુ આકર સેવક હુઆ ॥”

૧૮. સંપ્રદાયના આગ્રહ્ય વિદ્યાન, ધર્મશાસ્ત્રઅન્યમાં મહાન નિપુણ, પુના કેમ્બ્રિજ કોલેજના સંસ્કૃતના પ્રોફેસર શાસ્ત્રીજી મમતાલા ગણપતરાય M. A. શુ' કહે છે ?

અનશિષ્ટ આઠ દિવસમાં સાંખ્યમીમાંસાની સમીક્ષા કરી, સર્વ આચાર્યો સમક્ષ વાગ્દીક્ષત્ય પ્રકટ કરી, નિર્મલ કર્મભાર, શુદ્ધ જ્ઞાનમાર્ગ અને નિરૂપાધિ ભક્તિમાર્ગનું સંસ્થાપન કર્યું. તેથી સર્વ આચાર્યોએ વિનયનિમિત્તક કરી, શ્રીવત્સભાષાએને વિનયપત્ર સમર્પ્યું. પોતાના સર્વ અંશયની અગતિ નિગતિ થઈ વ્યાપી રાખીને કેન્દ્રાભિષેક કરાવ્યો. સર્વેથી દક્ષિણામાંથી સમનિષેક

માનનો અંગીકાર કરી, રાગને શરણે લઈ, તેણે આપેલા છત્ર, ચામર, આદિ આચાર્યચિહ્ન ગ્રહણ કરી પાંદુરંગ-વિદ્યનાથ પધાર્યા.”

૧૯. સંપ્રદાયના સુપ્રસિદ્ધ વિદ્વાન અને ‘વિદ્વાન્-ડન’ જેવા મહાન અધ્યાના અનુવાદ કરનારા ગ. રા. નાનુલાલ નારાયણદાસ ગાંધી M. A. LL. B. ‘પુષ્ટિપાદાવલી’માં લખે છે કે:—

“શ્રીવલ્લભ દક્ષિણમાં વિદ્યાનગર પધાર્યા. ત્યાં વિદ્યાનગરમાં માથાવાદીઓને સંદેશથી દરાવ્યા. તેથી સંતુષ્ટ થઈ ત્યાંના રાગ કૃષ્ણગણે તેમનો સુવર્ણચિહ્ન કર્યો. અભિષેકવાળું સુવર્ણ સ્નાનગ્રંથ હોવાથી શ્રીવલ્લભે તેનો અંગીકાર ન કર્યો.”

૭ સાંપ્રદાયિક પુરાતત્ત્વવેદના શું કહે છે ?

‘પુષ્ટિમાર્ગ’ના મહાન અધ્યાપી અને અધ્યક્ષકટકતી તેમજ વિશ્વવિદ્યાલયનું વેદાંતપારિતોષિક મેળવનાર ઇતિહાસક તથા પુરાતત્ત્વવેદના સદ્ગત સાક્ષર શ્રીયુત તેક્ષીવાલા એક અંગ્રેજી ભાષણમાં કહે છે કે:—

૨૦. “વિદ્યાનગરના રાગ કૃષ્ણદેવે શ્રીવલ્લભાચાર્યજીને કનકાભિષેક કરીને ભારતવર્ષના તે સમયના સુખ્ય આચાર્યશ્રીનું પદ સમર્પ્યું.”

આ ઉપરાંત તેઓ રશ્મિનાથક શ્રીમદ્દલ્લાખની ‘પ્રકાશ’ નામની દીકાની દીકા પ્રદટ કરનાં, શ્રીમદ્દાચાર્યશ્રીનું અંગ્રેજીમાં હવનચરિત્ર લખનાં એ જ દર્શકત દર્શાવે છે.

તે ઉપરાંત ‘સિદ્ધાંતરહસ્ય ગ્રંથ’ની અંગ્રેજી પ્રસ્તાવનામાં લખે છે કે:—

“મને તેમ હો. પણ એટલું તો નિઃસંશય છે કે શ્રીમદ્દલ્લાચાર્યે કૃષ્ણદેવરાય, વ્યાસતીર્થ અને તત્ત્વચિંતકોના મન ઉપર અતીવ પ્રભાવ હાથ પાડી હતી. આ અધિવેશનના અંતમાં કૃષ્ણદેવરાયે ચાતમણ સુવર્ણથી આચાર્યશ્રીને કનકાભિષેક કર્યો, પરંતુ એવું કહેવાય છે કે આચાર્યજીએ આ સુવર્ણનો સ્વીકાર ન કર્યો, અને ત્યાંથી આગળ પ્રયાણ કરવાની તૈયારી કરી. શ્રીમદ્દાચાર્યચરણના આવા પ્રકારના ત્યાગથી ત્યાં ઉપસ્થિત યોગી સર્વે એકત્રિ તેમને માટે માનની સાગલી વૃદ્ધિ પામી. માત્ર વ્યાસતીર્થે તો પોતાની પાછળ પોતાના મહાન આધપતિ યજ્ઞને આપઘાતને વિનંતિ પણ કરી. વ્યાસતીર્થે કૃષ્ણદેવરાયની સાથે પુનઃ શ્રીમદ્દાચાર્યચરણની પાસે જઈને અમુક વસ્તુઓની ભેટ કરી. એવું કહેવાય છે ‘કે’ આ બંધી ભેટમાંથી શ્રીમદ્દાચાર્યજીએ હીરા, પત્તાદિથી વર્ણિત એક સુવર્ણ મેળવ્યા તેમાર કરારી વિજયનગરના વિદ્ય સ્વામીના મંદિરમાં શ્રીવિદ્યલેખને સમર્પણ કરી, અંતમાં એમ લાગે છે કે આચાર્યશ્રી સ્વયં અદ્વૈતી હોવાથી ક્ષતી વ્યાસતીર્થની વિનંતિ ન સ્વીકારી શક્યા. ‘પરંતુ’ તે સમયથી તેઓશ્રીની એક મહાન આચાર્ય તરીકે ગણના થયા સાગી.

તમે માત્ર વ્યાસયોગિચરિત્ર કે જે વિશ્વસનીય મનાતું નથી તેજ ફક્ત એક જ અંધ સામે દષ્ટિ કરી મીટ માંડી રહ્યા છો. પણ આજુબાજુ નજર ફેરવનાજ નથી. વેણુનાદ માસિક વર્ષ ૨ નું અંક ૬-૭ ૫૯ ૧૪૨-૧૪૩ વાંચો તો જરા શ્રી. તેક્ષીવાલા શું કહે છે ?

“દક્ષિણમાં વિદ્યાનગરમાં કૃષ્ણદેવરાયને ત્યાં વિષ્ણુચમાર્ગીઓ અને માયાવાદીઓ વગેરે બહુવાદીઓ વાદ કરવાને બધા દના. તેમાં કોઈના જ્ય પરાગળ્ય ન થયો તેથી રાગને ખેદ થયો. આ સમયે આચાર્યશ્રી ત્યાં પધાર્યા. વેદાન્ત વગેરેની સુક્તિઓથી સર્વે વિદ્વાનોનો પરાગળ્ય કર્યો. ત્યારે સર્વસામર્થ્યથી સંયુક્ત શ્રીવલ્લભાધીશને રાગએ કનકાભિષેક કરાવ્યો અને એ દ્રવ્યનો સ્વીકાર કરવાનું રાગએ કહ્યું ત્યારે આપઘાતને સ્નાનનું ઉચ્છિદ્ર દ્રવ્ય આપાલ છે એમ કહેનાં રાગએ ફરીથી બહુ દ્રવ્ય નિવેદન કર્યું. તેમાંથી પ્રથમે સાત લેમમુલ સ્વીકારી” વગેરે.

૨૨. શ્રીવલ્લભચરિત્ર—સદગત રા. બ. લક્ષ્મીભાઈ પ્રાણુવલ્લભદાસ પારેખ, રમોલકેશ કોટના જગત્ દત્તા. તેમણે ધણા મથો મુગ્ધાની બાપમાં રખ્યા છે. સંપ્રદાયના હિતમોક્તમ મથો તથા સિદ્ધાંતો સરૂપ મુગ્ધાની બાપમાં લખવાનું પ્રારંભિક માન એવું સદગત મુદરખને ધરે છે. એમણે ધણે પ્રવાસ કરીને શ્રીવલ્લભચરિત્ર એક ઐતિહાસિક દૃષ્ટિએ લખેલું છે. તેમાં નેચો 'સમે છે કે:—

“તે પછી પુરોદિત અને ત્રેધાંચિ હલું કે કનકાભિષેકનો સમય છે, તેથી રાગની આચારી પુરોદિત અને ઉપાધ્યાયે આચાર્યશ્રીને ત્યાં કનકાભિષેક માટે મંડળ રચું દતું ત્યાં એક મુંદર પાટ ઉપર પધરાવ્યા. તે વખતે રાગ અને બીજા આચાર્યો આચાર્યશ્રીને વિંટાઇ દિમા. તે પછી દેવી તેજવાળા વૈષ્ણવ બ્રાહ્મણો અને સંલુ આદિ સિયોને નવન રાગવિભૂતિઓ અને દેવ વિભૂતિઓ કૃષ્ણદેવ રાગને આપીને આચાર્યશ્રીનું પૂજન કરાવવાનો સંકલ્પ કરાવવાનું પોતાના પુરોદિતને હલું. તેથી પુરોદિતે પ્રથમ અભિષેકનો સંકલ્પ કરાવ્યો; પછી રાગને પાઘ, અર્ખા આચમન આદિ કરાવીને વિધિપુરસ્કર તીર્થોમાંથી આંલુલા જળથી મદાભિષેક અને સામાન્યાભિષેક મંત્રો પઠે અર્ચિત અને પુરોદિતની સાથે આચાર્યશ્રીને અભિષેક કર્યા.”

૨૩. કલકતામાં મળેલી સર્વ ધર્મોની પરિપદ—ઈ. સ. ૧૯૦૬ (સંવત ૧૯૬૫) માં આચાર્યના સર્વ ધર્મોની પરિપદ દલકતા ખાતે મળી. તે વખતે રવ. રા. બ. લક્ષ્મીભાઈ પ્રાણુવલ્લભદાસ પારેખ એઓ અમદાવાદ રમોલકેશ કોટના માલ જગત્ તથા મદાન તત્ત્વવેત્તા દત્તા. પોતે એ પરિપદમાં મળેલા ત્યાં તેમણે “શ્રીવલ્લભાચાર્યનું જીવન અને તેમનો તત્ત્વબોધ” એ વિષય ઉપર અંગ્રેજીમાં વ્યાખ્યાન આપેલું છે.

૨૪. શ્રીગોકુલેશજીનું જીવન ચરિત્ર—(લેખક-ગગનલાલ વામજી ગાંધી B. A. પ્રકાશક-લક્ષ્મીભાઈ જગનલાલ દેસાઈ.) બા લેખકે પોતે શ્રીગોકુલનાયજીનું જીવન ચરિત્ર આત્મારુપી કોષ્ટ પજ કેશણે લખાવું નથી તેથી બચીરય પ્રવલ લેખક અને પ્રકાશકે ધણાં શ્રામો કરીને શોધ કરી જાણ્યું છે. શોધખોળમાં શ્રીગોકુલેશજીના અનન્ય બાતો બરૂની વૈષ્ણવ સમાજ પાસેથી પ્રાપ્તિન મળ્યો મેળવી તે ઉપરથી મદરુદ્ધ મન્ય બનાવ્યો છે તેમાં લેખક જણાવે છે કે:—

“આ વખતે આચાર્યશ્રીએ વૈષ્ણવ ધર્મનું દક્ષણ કર્યું અને પાદમાં વેદવિરુદ્ધ તથા વેદનું ખર્કે દલકત નદિ સમજનાર સર્વ ધર્મોના પરાજય કરી એતન્માર્ગની જયપતાકા ઉઘાડી. તે મતામાં આચાર્ય પાસેથી સાથે શ્રીઆચાર્યજીએ લગભગ ૨૭ દિવસ સુધી વાદ કર્યો અને તે દ્વારા પોતાનું અપરિચિત શાસ્ત્રગાન જાહેર કર્યું રાજા કૃષ્ણદેવ સરણે આવ્યો ને તેણે તે કનકાભિષેક કરાવ્યો.”

ઉપરે નનુલું ભક્તિમાર્ગનું મંડન કર્યું. ત્યારપછી કૃષ્ણદેવરાજને સોનાના પુત્રોથી અને જળથી સ્નાન કરાવીને રાજાએ વિનંતિ કરી કે આ દ્રવ્ય અંગીકાર કરો ત્યારે આપશ્રીએ કર્યું કે આ સ્નાનનું જલ છે તેથી હમોને ખપે નહિ. તે દ્રવ્ય જ્ઞાતજોને વહેતી આપો. તે પ્રમાણે રાજાએ કર્યું. અને આપનો સેવક બનાવો એવી વિનંતિ કરી. તે પ્રમાણે સેવક બનાવ્યો. બેટમાં સુવર્ણના યાત્રામાં સુવર્ણની મહોરો મુકી તેમાંથી ફક્ત ૭ સોના મહોર દેવી હોવાથી તેનો અંગીકાર કરીને બાકીની મહોરોને જ્ઞાતજોને વહેતી આપવા આજ્ઞા કરી ત્યાર પછી પંદરપુર શ્રીવિઠ્ઠલા રૂપમાર્ગની યાત્રાએ પધાર્યા.

- ૨૭. શ્રીમદ્દલ્લભાચાર્યશ્રી-અચરિત્ર—તેજક:-સંપ્રત્યયા પ્રાચીન ગ્રંથોની શોધ કરી પ્રસિદ્ધ કરનાર શ્રીયુત રવ. ગોરમનદાસ લક્ષ્મીદાસ. સૌથી પહેલાં શ્રીવલ્લભાચાર્યજીના જીવન ચરિત્ર સંબંધમાં ઘટ્ટ લેખ પ્રસિદ્ધ નહી થયેલો તેથી તેમણે શોધ કરી ઉપસૂક્ત ગ્રંથ જેવો છે તે સં. ૧૯૫૪ માં છપાવ્યો છે. તેમાં તેઓ લખે છે:—

“ખીન્ને દિવસે પ્રાતઃકાળે રાજાએ ધણા લપ્ધી પ્રણામ કરીને જળથી કંચનસ્નાન (કનક-ખિષેક) કરાવ્યું ને તે દ્રવ્ય તેમને આપવા માંડ્યું. ત્યારે તેમણે ના. પાડી. પછી રાજાએ મોહરોનો એક થાળ બેટ કર્યો તેમાંથી દેવી દ્રવ્યની સાત મોહોરો દત્તી તે આપશ્રીએ લીધી અને તે મોહરોનાં શ્રીનાથજીને રૂપર કરાવ્યાં છે. આપશ્રી ત્યાંથી આગળ યાત્રાર્થે પધાર્યા.”

૨૮. શ્રીમદ્દાચાર્યશ્રી-મુંગાછમાં રા. સા. શેઠ ખીમજી કુંપરજી ૧૭. પી. તરફથી નીકળતા શ્રીમુખોધિનીજી માસિકના ગ્રાહકોને બેટમાં મળેલું પુસ્તક. બનારસમાં ગોપાલમંદિરમાં શ્રી. ગો. શ્રીગિરિશંકરદાસજીના પ્રમુખપણા નીચે થયેલી સભામાં અપાયેલાં આજ્ઞાનનો સાર:—

આપને સુના કી વિશાનગર કે કૃષ્ણદેવરાજાને ધર્મસભા એકત્ર કી હૈ જીસમેં સમસ્ત ધર્મ ને જો નિમન્ત્રિત કીયા હૈ ઔર જીસકા શાસ્ત્રાર્થદારાં જય હોગાં ડસીકા સ્વયં અનુયાયી મી હોના ચાહતે હૈં । આપ વહાં પધારે ઔર શાસ્ત્રાર્થ મેં જય સમ્પાદન કીયા । આપને વેદાદિ શાસ્ત્રોકે પ્રમાણદ્વારા જ્ઞાનવાદ શુદ્ધાદૈત વાદકા પ્રતિપાદન કીયા । વહાં પર ઉપસ્થિત સમસ્ત સમ્પ્રદાયકે આચાર્યોને આપકા વિજય સ્વીકાર કીયા ઔર કૃષ્ણદેવ રાજા સમેત સમી પંડિતોને આપકો નિમ્ન આચાર્યકી પદવી પ્રદાન કી.

“શ્રીવેદવ્યાસવિષ્ણુત્વામિ સમ્પ્રદાય સમુદ્ધાર સંમૃત શ્રીપુરુષોત્તમ વદનાવતાર સર્વાન્નાય સત્ચાર ધૈન્યવાન્નાયપ્રાચુર્ય પ્રકાશ શ્રીચિત્તમંગલાર્પિત સમ્રાજાસનાત્વંડમ્મંદલચાર્ય વર્ય જગદ્ગુરુ મહાપ્રભુ શ્રીમદાચાર્યા: ॥

ઔર રાજા કૃષ્ણદેવ ધારગાગત હુઆ । રાજાને કનકામિષેક કીયા ઔર બહુત મેટ ધરી પરન્તુ નિરપેક્ષ આચાર્યચરણને કેવલ શ્રીઠાકુરજીકે લીયે ૭ મુદ્રાવે સ્વીકાર કર અન્ય દ્રવ્યકો વટવા દીયા, ધ્યાન દીજિય કી હસે અધિક નિરપેક્ષત્વ કયા હો સકના હૈં ?

૨૯. વૈષ્ણવ માસિક રાજકોટ—(તત્રી-આખુંદછ વેતદ પરામાર) પોને જાતિએ ગોત્રી દતા તેઓ ચુસ્ત મરનલી વૈષ્ણવ દતા. મહેસાણામાં સુધી પહેલાં એજી માસિકપત્ર કદાહતા દતા. તેઓ પોતાના પત્રમાં જણાવે છે કે:—વિતાંગરમાં કૃષ્ણદેવ રાજાએ વેદિક સિદ્ધાંતોને નિર્ણય કરાવવા યજ્ઞશ્રુતિના સાંકડપતિવર યજ્ઞદેવતિ, માખ

આવતી કાચે શ્રીમદ્દાપ્રભુજીને કનકાભિષેક કરવાનો ઉત્સવ કરવો છે માટે નગરમાં ૩૭ વંગગાયત્રીને પ્રગ્લને સૂચના આપો કે સદુ લોકો પોતપોતાના ઘરના દાર ઉપર કેળના ચંચોનાં તોરણોનાં, ધ્વજોનાં અને મંગળકળશોનાં સ્થાપન કરે. રાત્રીમાંથી પહુ એવાજ પ્રકારની રચના કરાવવી. આ ઉપરથી રાત્રીથી લોકોએ નગરમાં સૂચના આપેતાં તે પ્રમાણેજ નગરને શણગારવામાં આવ્યું. કૃષ્ણદેવ રાજ્યએ પ્રાતઃકાળમાં ઉઠી નિત્યનિયમ પોહોંચી લઈ ઉત્તમ વસ્ત્રોને તથા ઉત્તમ અન્નકારીને ધારણ કરી બ્રાહ્મણમંડળીને તથા મંત્રી આદિ લોકોને સાથે લઈ રાત્ર વૈભવના ભપકાથી શ્રીમદ્દાપ્રભુજીની પાસે જઈ. કનકાભિષેકની વિનંતિ કરીને તેમને પધરાવી ગયો. શ્રીમદ્દાપ્રભુજીને પ્રથમ કનકાભિષેકની શાળામાં ગિરાજમાન કરી પછી સો બાર સોનાની પાટ ઉપર પધરાવી સદસ્ય હિરણ્ય સુભોચિત કરેલા સુપર્ણના પાત્રમાં અભિષેકનું જળ ભરીને કૃષ્ણદેવ રાજ્યએ શ્રીમદ્દાપ્રભુજી ઉપર અભિષેક કર્યો. તે સમયે બ્રાહ્મણો ચારે વેદના મંત્રો ભણવા લાગ્યા, સ્ત્રીઓ મંગળ ગાયન કરવા લાગી, સઘળા પ્રકારના વાજત્રો વાગવાં લાગ્યાં અને સર્વે લોકો ‘જય જય’ રાજ્ય ખેલવા લાગ્યા. આ પ્રમાણે અભિષેક કદી દિવ્ય વસ્ત્રો તથા દિવ્ય અન્નકારો તુ ધારણ કરાવી કૃષ્ણદેવ રાજ્યએ શ્રીમદ્દાપ્રભુજીને લુદાં લુદાં આચાર્યતિલક કર્યા. આ સમયે શ્રીમદ્દાપ્રભુજી ‘વલ્લભાચાર્ય’ એ નામ પ્રગટ થયું.

૩૪. શ્રીરામાનંદી પંડિત શું કહે છે ?—શ્રીરામાનંદ સંપ્રદાયના સુમસિદ્ધ વિદ્વાન અને વૈષ્ણવ તથા સત્યાગ્રહી દેશભક્ત પોતાના ‘સાધુસર્વસ્વ’ નામના સાપ્તાહિક પત્રના ક્રંલાંકમાં લખે છે કે—

ખાસાજકા દર્શન કરકે આપ વિદ્વાનગર પહુએ. વિદ્વાનગરકે રાજ્ય કૃષ્ણદેવકે દરબારમે રીવ જીર વૈષ્ણવોમે એક જખરદસ્ત સાર્થક હુઆ. સાર્થકમે વસલને રીવેકો ખરી તરફ પરાસ્ત ક્રિયા જીર વૈષ્ણવ ધર્મકી કાક જગાઈ. વડોમે વસલ ‘આચાર્ય’ પદમે વિશ્વપિતૃ હુએ.”

૩૫. “શુજરાતી” પત્રના આવૃત્તી શું કહે છે ?—શુજરાતી સાહિત્ય સપ્તદિમાં અદિતીય કાળે અર્પનાર સ્વર્ગરથ તંત્રી સાક્ષર ઇન્દિરામ સ્પર્શમ દેસાઈ શ્રીભાગવતની પ્રસ્તાવનામાં શ્રીમદ્દક્ષિણાચાર્યજીનું જીવનચરિત્ર લખતાં લખે છે કે—

“મહારાજ શ્રીકૃષ્ણદેવ વિદ્વાનોની સભામાં આવ્યા, અને કર્મવાદીઓનાં પરસ્પર વાદયુદ્ધ ઘર થયું છે, એટલામાં શ્રીવલ્લભાચાર્યજી પણ સભામાં આવ્યા. તેમણે પણ સારસ્વત્યમાં ભાગ લીધો. ભારે વાદ ૨૮ દિવસ સુધી ચલ્યો. ખંડન મંડન ચર્ચા....શ્રીકૃષ્ણ દેવરાજ શ્રીવલ્લભાચાર્યજીની વાદલેલી તેમજ તેમની વિદ્વત્તા ઉપર મોહિત થયો અને તેમનો સેવક થયો. અને જે સિંહાસન માટે માયાવાદીઓ તરફી રચ્યા હતા તે સિંહાસન ઉપર શ્રીમદ્દક્ષિણાચાર્ય ગિરાજમાન પડી ચારે સંપ્રદાયના આચાર્યોએ તેમને તિલક કરી શીશિયુસ્ત્રવાળીની ગાદીએ બેસાડી આચાર્ય પદે સ્થાપ્યા.”

ઉપરની પ્રસ્તાવનાને દાસના તંત્રી રા. રા. નટવરલાલ દ. સ. દેસાઈએ પણ મંજુર રાખી છે.

૩૬. જે વિદ્વાન બ્રાહ્મણોનો અભિપ્રાય—મહેતા ભાઈશંકર તથા ઉપાધ્યાય કુંદભરામે સં. ૧૯૨૮ માં છપાવેલા ‘વૈષ્ણવધર્મપ્રકાશ’ ગ્રંથમાં આ પ્રમાણે લખ્યું છે—

ત્યારપછી પ્રાતઃકાચે શ્રીમદ્દાપ્રભુજી, રાજ્ય કૃષ્ણદેવની સભામાં ગયા. ત્યારે તેણે યજ્ઞા દર્શની પ્રણામ કરીને જલમાં સતમણ સુવર્ણ નાંખીને તે જગથી તેમને કંચનસ્નાન કરાવ્યું.”

૩૭. શ્રીમુરત્તી શ્રીબાલકૃષ્ણ ચૈત્યસમાજ તરફથી નીકળેલી પત્રિકામાં લખે છે કે—

અને તે દિવ્ય પ્રકાશ પ્રસરાવનાર નો કોઈ હોય તો ભક્તિમાર્ગના છેલ્લા મહાન આચાર્ય શ્રીમદ્ભૂભાચાર્યજી છે, એમ હિન્દોના ઇતિહાસ કહે છે. તક અને યુક્તિઓના આંદોલનથી કઠોર બનેલાં હૃદયોને ઉપનિષદ્ગ્રંથ સુધાના સેચનથી કોમલ બનાવીને તકયુક્તિના મોહથી છોડાવનાર તરીકે શ્રીમદ્-ભૂભાચાર્યજીનું પુનિત નામ આખા જગતના ઇતિહાસમાં યાદગાર રહી જશે. જગતને મિથ્યા માનવાના મૂળ રહસ્યને ઓળખીને, પ્રભુસ્વરૂપ આ જગતને મિથ્યા માનીને ગૃહસ્થાશ્રમનો ઉચ્છેદ કરવાને પ્રવૃત્ત થયેલા અવૈદિક પથો, નીતિ, ધર્મ, વર્ણાશ્રમ વગેરેથી આતરાઈને કેવલ પાપમય બનેલા વામભાગીદિ નાસ્તિકમતોના વળગાડથી દેવી સૃષ્ટિને બચાવનાર તરીકે શ્રી વલ્લભપ્રભુનું નામ ભારતવાસીઓ કંદી નહિ જ ભૂલે. વેદાદિપ્રસ્થાનોની પ્રતિષ્ઠાનું પુનઃ સ્થાપન કરનારા, જ્ઞાનીઓને અનન્ય ભક્તિમાર્ગની દીક્ષા આપનારા, ભક્તોને પ્રભુરસમાં ભરત બતાવી દેનાર શ્રીમદ્ભૂભાચાર્યશ્રીની વધુ ઝાળખાણ શી હોય ? હા બે વસ્તોથી જ પોતાના દિવ્ય દેહને આરંભાદિત કરીને તીર્થાટનના . અને ત્યાગના વાતાવરણથી પૂર્ણ ગૃહસ્થાશ્રમ અને વર્ણાશ્રમધર્મરૂપ આર્યસંસ્કૃતિને આખા દેશમાં જળકેળતી રાખનારા ચિત્રમાં ગિરાજતા શ્રીવલ્લભપ્રભુ પાસે કયા પ્રેક્ષકનું શિર નહિ નમે ? શ્રીવલ્લભાધીશ્વરનો આથી વધુ પરિચય શો હોય ? તેથી જ હું પ્રસ્તુત વિષયને અનુસરું છું.

આરસો વર્ષ પહેલાંનું ચિત્ર.

આ ચિત્ર આરસો વર્ષ પહેલાંની ભારતીય ચિત્રકલાનો આદર્શ નમુનો છે નતુસ્થિતિનું ચિત્ર ખેંચતી આજકાલની ફોટોગ્રાફી કરતાં આ હાથની ચિત્રકલા કોઈ પણ રીતે ઉતરતી નથી એટલું જ નહિ પણ હાલની ચિત્રકલાને પણ ઝાંખી કરી શકે છે. આ ચિત્ર અત્યારે પણ અજમેર પાસે આવેલા કૃષ્ણગઢ રાજ્યમાં ગિરાજે છે અને તેની સેવા પ્રભુ શ્રીકૃષ્ણનાં સ્વરૂપની જેમ કૃષ્ણગઢના રાજવીઓ કરી રહ્યા છે. આ ચિત્ર અને તેને લગતો ઇતિહાસ જાણવા જેવો છે, એટલું નહિ પણ હૃદયમાં કોતરી રાખવા જેવો પણ છે. આ ઇતિહાસ પુષ્ટિમાર્ગીય આંધ્રધિક પુસ્તકોમાં નહિ મળે. આ ઇતિહાસ કોઈ પુષ્ટિમાર્ગીય ભક્તોએ આલેખી નાંખ્યો નથી. આ ચિત્રનો ઇતિહાસ તો શ્રીકૃષ્ણગઢના મહારાજાઓના જીવનચરિત્રોમાં લખી ગયલો છે અને તેમાં કોહીનૂરની જેમ પ્રકાશી રહ્યો છે. શ્રીકૃષ્ણગઢ રાજ્ય તરફથી બહાર પાડેલા ઐતિહાસિક કાવ્યમય પુસ્તકમાંથી આ ઇતિહાસ હું ‘શુભશતી પંચ’ ના વાચકો પાસે રજુ કરું છું. આમાં ઐતિહાસિક પરતુસ્થિતિ વિના ધીનું કંઈ પણ માહુમ પડશે નહિ.

આચાર્યશ્રીના આ ઇતિહાસ-મથૂર ચિત્રનો શુદ્ધ ઇતિહાસ શ્રીકૃષ્ણગઢના જૂના પૂર્વ મહારાજા શ્રીસાવંતસિંહજીએ કવિતાના રૂપમાં લખીને ઇતિહાસરસિકોને અમિતજ ઉપદ્રુત કર્યો છે. મહારાજા સાવંતસિંહજીનો જન્મ સં. ૧૭૫૬ માં થયો.

હતો. તેઓ એક શરવીર ક્ષત્રિય મહારાજ હતા. પંદર સોળ વર્ષની ઉંમરમાં તેઓ મહાકુદમાં પણ સામેલ થઈને પોતાના બાહુબળનો પરિચય કરાવી શક્યા હતા. મહારાજ આવંતસિંહજી શરવીર હોવા સાથે એક ઉત્તમ કોટિના પ્રભુલક્ષ્મી હતા. ભક્તિરસથી એમની કવિત્વશક્તિનો વિકાસ પણ અનુપમ રીતે થયો હતો. તેઓ વ્રજભાષાના એક મહાન કવિ હતા. તેમણે વ્રજભાષામાં પ્રભુલક્ષ્મી વિષે લગભગ ૫૦ ગ્રંથો ગનાવ્યા છે. હલુ પણ એમનું સુપ્રસિદ્ધ સાહિત્ય કૃષ્ણગદમાં મોજૂદ છે. તેઓ સં. ૧૮૦૫ માં ગાદીનચીન થયા. તે પછી રાજકાળમાં તેમનું મન લાચરું નહિ. લક્ષ્મીદેવ એ પ્રપંચોમાં કદી પડેજ નહિ. તેઓ તો સં. ૧૮૦૮ માં શ્રીવૃન્દાવન પધાર્યા અને વિરક્ત ભક્તના દેશમાં રહીને કેવળ વ્રજપતિ શ્રીકૃષ્ણના ગુણગાનમાં મસ્ત ગન્યા. આ વખતે તેઓએ પોતાનું નામ નાગરીલાક્ષ્મી ગાંધ્યું હતું. એમણે રચેલા ગ્રંથોનો સંગ્રહ નાગસમુચય એ નામથી એમના વંશજ મહારાજા શ્રીશાહજીસિંહજીએ પ્રકટ કરાવ્યો છે. એજ સંગ્રહમાં આચાર્યશ્રીનાં આ ઐતિહાસિક ચિત્રનો સુંદર ચિતાર છે.

આચાર્યશ્રી પોતાના પવિત્ર પાદારવિંદથી આ પૃથ્વીને જે વખતે સનાથ કરી રહ્યા હતા તે વખતે દીલ્હીની ગાદી ઉપર પ્રખ્યાત બાદશાહ સિકંદર લોદી હતો. તે ધર્માધ અને ક્રૂર હતો. પોતાનો મજબૂત સ્થાપવાની ધૂનમાં તેણે ભારતવાસીઓ પર સાધારણ અત્યાચારો નહોતાં કર્યાં. હિંદુ ધર્મ સાથે દુશ્મનાવટ ગાંધીં દ્વેનાર એ બાદશાહ હિંદુધર્મના આચાર્યો સાથે કયાંથી સદ્ભાવના સાધી શકે? તોપણ જગદ્ગુરુ શ્રીવૃન્દાચાર્યજી મહાપ્રભુજીની દીર્ઘ તેના કાન સુધી પહોંચી ગઈ. આચાર્યશ્રીના સદ્ગુણો અને પ્રભુતાથી પરિચિત થતાંની સાથે સિકંદર આચાર્યશ્રીનાં દર્શન કરવાને લલચાયો. એક વખતે ગુપ્ત રીતે, કંઈ પણ કાંઠામાં વિના, ચોક્કસ ચરદારો સાથે તે આચાર્યશ્રીનાં દર્શન માટે ગયો. શ્રીવૃન્દાપ્રભુનાં દર્શન કરતાંની સાથેજ તે મુગ્ધ ગન્યો અને તેનું બાદશાહી તાજ એઓશ્રીના ચરણારવિન્દમાં ઝુકી ગયું. આચાર્યશ્રીનાં સ્વરૂપદર્શનથી તો તેને મોહિની લાગી ગઈ! ઘેર આવીને તુરતજ પોતાના મુલકમથાહુર હોનકાર નામક ચિત્રકારને એ મહાપુરુષનું ચિત્ર વ્રજમાં જઈ આલેખી લેવાનો દુક્રમ કર્યો. આ વાતનો ઉલ્લેખ કરતાં મહારાજા આવંતસિંહજી લખે છે કે:—

(દોહા) શ્રીલક્ષ્મણ ભંટ ગૃહ લયે, શ્રીવૃન્દા દિવસાજ;
પનરાચેર પેતીસયે, ભક્ત ઉધારને કાજ.
શાહ સિકંદર લોદી હો, દીલ્હીપતિ બાહાગ.
પ્રભુતા^૧ સુનિ લખિ હિય લયે, સરસ શ્રવન અનુરાગ.

૧ દિવસાજબાદજોમાં એવ, દિવસ કુલીન પ્રાંતજી. ૨ સં. ૧૫૩૫ ની સાતમાં આચાર્ય-ધાનું પ્રાકટ્ય છે. ૩ બો-ચો. ૪ ભાગ્યશાળી. ૫ આચાર્યશ્રીની પ્રભુતા સંભળીને, બનવીને, હૃદયમાં એઓશ્રીના ગુણો સાંભળવા માટે પ્રેમ-હૃદયન થયો.

પુષ્ટિમાર્ગના ઇતિહાસ.

લયો શ્રવન અતુરાગ તેં, દર્શનકો અતુરાગ.
તવ દીલ્હીપતિ ચિત્ત ભઈ, ચિત્ર કરાવન લાગ;
'હોનહાર' નામ હુતો, ચતુર મુન્નવર^૧ વિસ;
તબ તાકો હુકમ દિયો, દીલ્હીપતિ મુઅલિસ.

ઉપરના દોહરા સ્પષ્ટ છે. દીલ્હીપતિ સિકંદર શાહે આચાર્યશ્રીનું 'ચિત્ર' બનાવવા માટે હોનહાર નામના ચિતારાને હુકમ કર્યો એવો ઉલ્લેખ ઉપરના દોહરામાં છે, તો આપણે હવે હોનહાર કોણ હતો એનો વિચાર કરીશું. સિકંદરલોદીની પેઠે હોનહારનું નામ પણ ઇતિહાસમાં લખાઈ ગયું છે. એ એક મહાન ચિત્રકાર હતો. તે વખતે ભારતવર્ષમાં હોનહાર બીનહરીફ હતો. એ કેવો મહાન ચિત્રકાર હતો તેનું વર્ણન અચ્છી તરેહથી કરવામાં આવ્યું છે. હોનહારે ચિત્રકલાનો સંપૂર્ણ અભ્યાસ કરીને પોતાની કળાની કદર થવા માટે બાદશાહ સિકંદર લોદીની પાસે હાજરી આપી. બાદશાહ આગળ પોતાની કલાનું નિવેદન કર્યું. તેમાં એક અદ્ભુત કળા બતાવી. પહેલાં તો તેણે એક લાંબી પાઘડી મંગાવી લીધી. એ પાઘડીના બે છેડા બે માણસોના હાથમાં આપીને, પાઘડીની લંબાઈને અંતરે તે બન્ને માણસોને ઉભા રાખી દીધા. હોનહાર પોતે તો એક પવનવેગી અથ્થ ઉપર બેસી ગયો અને હાથમાં આંગળીનો કોયલો રાખ્યો. તે પછી ઘોરાને પૂર વેગમાં દોડાવ્યો અને હાથમાંના આંગળીના કોયલાથી પેલી પાઘડી પર એક લીંટી ખેંચી કાઢી. પાઘડીનો છેડો પૂરે થતાં ઘોરાનો વેગ રોકીને પોતે બાદશાહ પાસે આવ્યો ને પેલી પાઘડી લઈને બાદશાહને બતાવી. તેમાં એ ખુબી કે, પાઘડીમાં ઘણાં તાંત-ણાઓ હતા, પણ તેમાંનો એકજ તાંતણું એક છેડાથી તે બીજા છેડા સુધી કાઢ્યો થયેલો હતો. દોડતે ઘોડે ચઢીને હાથ સ્થિર રાખીને, બારીક તાર પર છેલ્લે મુઠી એક સરખી પીંછી ફેરવવી એ કંઈ સાધારણ કલા નજ ગણાય. હોનહારના આ મહાન ગુણની બાદશાહે કદર કરી અને તેને પોતાના ચિત્રકાર તરીકે પોતાની પાસે રાખ્યો. મહારાજ સાવંતસિંહજી લખે છે કે:—

(દોહડા) હોનહારકો કહત હોં, અબે. ચકલ ઇતિહાસ;
તાકે મુનતહી હોત હે, ચતુરનિ ચિત્ત હુલાસ.
ચિત્ર લિખનકે ઇલમકોં, સીખ મુખુદિ અથાહ;
ગયો હાજરી દેનકો, દીલ્હીપતિ દરગાહ.
હોનહાર તબ થોં કરી, ઇક ઉખ્તીયર મંગાવ
દે - નર દો કાટે કરે, ચિત્તાકો^૨ પડરાય.
હોનહાર હયથે ચરયો, કરમેં લઈ લુ ગાલ;
ઘોરાકોં રપટાયકે, ખેચી રેખુ અટાલ.

વહ ઉષ્ણીપ મંગાયકે, હોનહાર કિય અર્જ;
યાદો સૂત્ર કઢાયકે, લખહુ રેખકો મર્જ.
દીક્ષીપતિ ઉષ્ણીપકો, દેખ્યો સૂત્ર કઢાય;
રેખ એક વહી સૂત્રપે, આદિ અંત સરસાય.
યા ગુનકો લખિકે બહુત, દિયો ઢાન સુન્માન;
હોનહાર સુ ખિતાબ દે, ગુનકો કિયો બખાન.

હોનહારની ચિત્રકળાનો આ પરિચય છે. દોહરા રૂપે હોવાથી તે પર વિવેચન કરવાની કંઈ અગત્ય જણાતી નથી.

ચિત્રકલાના આદર્શને પહોંચીને બાદશાહી માન પ્રાપ્ત કર્યો પણી હોનહારના અભિમાનનો પાર રહે ખરો કે? દિવસે દિવસે બાદશાહને પોતાની કળાથી સુગ્ધ બનાવીને, ઉચ્ચ પદવીને પ્રાપ્ત કરનાર હોનહારના હૃદયમાં મગરૂખી સમાતી ન હતી. તેટલામાંજ બાદશાહનો હુકમ થયો કે, “શ્રીમદ્વૃક્ષભાર્યાજીની એક મુંદર છબી તૈયાર કર.” મહારાજા આવંતસિંહજી એક દોહામાં લખે છે કે—

શ્રીવૃક્ષ આચાર્યકો, લાવહુ ચિત્ર બનાય.

લેઉ યથાજ મિલાયકે, પ્રજામંડલમેં જાય.

હોનહારના મનથી તો કાચું સુરકીલ હતુંજ નહિ. એ તો એકદમ મજામાં આવ્યો અને આચાર્યશ્રીનાં દર્શન કરીને ચિત્ર આવેખવા લાગ્યો. જેનું વર્ણન—

હોનહાર કરતારસોં, ગર્વ ધારિ મજ જાય;

શ્રીવૃક્ષ મહારાજકે, મુંદર દર્શન પાય.

પણ હોનહારને ખબર નહોતી કે, આજે હું કેની સાથે કામ લઈ રહ્યો છું? પ્રભુની સાથે ગર્વ ક્યાંસુધી ટકવાનો હતો? શ્રીવૃક્ષપ્રભુનાં મુંદર દર્શન કરીને હોનહારે પીંછી ચલાવીને એક ચત્ર તૈયાર કરી નાંખ્યું. એ ચિત્ર લઈને આચાર્યશ્રીનાં સ્વરૂપ સાથે સરખામણી કરી, તો જણાયું કે તેની બધી મહેનત છુટી પડી હતી. તુરત થીજી વારં ચિત્ર લીધું. તે પણ સરખાવતાં તદ્દન નફામું લાગ્યું. એનું વર્ણન નીચેના દોહરામાં મહારાજા આપે છે:—

ચિત્ર બનાયો ચિત્ત દે, અતિઆતુરતા ધાર;

મિલ્યો કછ નાહીં તમે, ફેર રચ્યો ચિત્ત ધાર;

દ્વિતીય ચિત્ર દૂ નહિ મિલત, હોનહારકે ચિત્ત;

દીક્ષીપતિકી દહરકો, પ્રજટયો પ્રલય અમિત.

બાદશાહો કેવા તુમાખી. મીનજના હતા અને એમની સંતાઓ કેવી અમાતુષ હતી એ આપણે જાણીએ છીએ. હોનહારની સ્થિતિ ટેવી જાની હશે એની કાંઈક અટકળ આપણે આ ઉપરથી કરી શકીશું; હોનહાર પાસે બીજો કંઈ ઇલાજ ન હતો. આચાર્યશ્રીની પાસે રહેવાથી તેને એઓશ્રી માટે ઘણાજ પૂજ્યભાવ ઉત્પન્ન થઈ ચુક્યો હતો. વળી આચાર્યશ્રીની પ્રભુતા પણ તે અનુભવી શક્યો હતો. તેથી આખરે આચાર્યશ્રીને ચરણે ગયો, અને ચરણકમલમાં માથું નમાવીને દીનતાથી તેણે વિનંતિ કરીધી, જેનું વર્ણન નીચે મુજબ છે:—

તબ શ્રીવલ્લભરાજકે, ચરન વંદિ છલ ઘોર;
કીની વિનંતિ દીન બહે, હોનહાર કર જોર.
દીક્ષીપતિકે હુકમતે, હો આયો ત્રજમાંહી;
લિખન રાવરે ચિત્રકોં, પૂરન ચિત્રે મિલાહી.
મો મતિકે અભિમાનતે, કીને ચિત્ર સુ દોય;
કહુ ન મિલે નિજ રૂપમેં, દેખે બહુવિધ જોય
જો નહિ મિલિહું ચિત્ર તો, દીક્ષીપતિ તકરાર;
કરિકે પુન કરિહું કહા, કહા જાનો તિહિ વાર?

શુદ્ધ અંતઃકરની વિનંતિથી દીનજંઘુ આચાર્યશ્રીનું હૃદય દ્રવે તેમાં આશ્ચર્ય શું? આપશ્રીને હોનહારની કોશી સ્થિતિપર દયા આવી અને તેના જેવા ઉત્તમ ચિત્રકારની એ દશા થાય તે આપશ્રીને કેમ રહે? એટલે તેને નવેસરથી ચિત્ર લેવાની પોતે આજ્ઞા કરી. મહારાજ આવંતસિંહજી લખે છે કે:—

દીનજંઘુ કરુણાનિધિ, શ્રીવલ્લભ દિવસાય;
તબ કરુણા કરિકે પ્રભુ, નિજ પ્રભુતા હરસાય.
અબ તુ ચિત્ર જાનાયકે, લેહુ જાવ ધરિ ધીર;
ચહ વચનામૃત સુન મિટી, હોનહાર હિય ખીર.

આચાર્યશ્રીની આજ્ઞા ચતાંની સાથેજ હોનહારનું દર્દ દૂર થઈ ગયું. આચાર્યશ્રીની આજ્ઞા મુજબ તે ચિત્ર લેવા બેઠો.

સાચંકાલનો સમય હતો. પ્રભુને પોદાડીને સેવામાંથી આચાર્યશ્રી બહાર પધાર્યો. નિજ મંડલી સાથે શ્રીમદ્ગોકુલમાંના શ્રીહકુરાણીઘાટ ઉપર આપશ્રી બિરાજ્યા. નિજ સેવકોને પોતે શ્રીભાગવતની કથા કહી રહ્યા છે. શ્રીભાગવત જેવા મહાપ્રસ્થાન પર લાઘ્યરૂપે પોતે લખેલી શ્રીસુબોધિનીટીકાનું રહસ્ય સેવકો પાસે પોતે પ્રકટ કરી રહ્યા છે. અદિતીય વિદ્વાન અને પરમભક્ત માધવભટ્ટ કારમીરી સામે બેસીને આપશ્રીનાં વચનામૃતરૂપ શ્રીસુબોધિનીજી લખે છે, જોમની પાછળ ગુરુદેવમાં પૂર્ણ પુરુષોત્તમના સ્વરૂપને અનુભવતા શ્રીકૃષ્ણદાસ મેઘન નામના સત્રિય વીર ક્ષાત્ર જોડી બિરાજેલા છે. નિજ ગૃહાદિનો ત્યાગ કરીને શ્રીમહાચાર્યપરિચર્યાનેજ

પરમ કર્તવ્ય સમજીને સર્વોત્તમાયે આચાર્યશ્રીનીજ પવિત્ર છાયામાં જીવન વ્યતીત કરતા મહાનુભાવી શ્રીદામોદરદાસ હરસાની આચાર્યશ્રીને સાધાંગ દંડવત્ પ્રણામ કરી રહેલા છે. ઉનાળાના દિવસો છે. સંવત્ ૧૫૬૭ની સાલમાં ઉક્ત વર્ણનવાળું ચિત્ર હોનકારે લીધું, જે ચિત્ર હાલમાં શ્રીકૃષ્ણગદમાં બિરાલ છે. કેવા સુંદર ચણદોમાં તેનું વર્ણન મહારાજ સાવંતસિંહજી આપે છે, તે આપણે જોઈએ:—

પાય અનવસર સમયકો, શ્રીયમુનાતટ ધામ;
કહત ભાગવતકી કથા, શ્રીમુખાધિની નામ.
તહાં ભટ માધવદાસ જી, હાજર રહત હમેશ;
શ્રીમુખાધિની લિખત હે, શીખ સુશુદ્ધ વિશેષ.
કૃષ્ણદાસ^૧ મેઘન જહાં, હાજર દે કરજેર;
લીન દિવસ કાટો રહ્યો, પુરુષોત્તમ કે જોર.
દામોદર હરસાની જહાં, કરત દંડવત્ આય;
શ્રીધમ ઋતુ કે સમયમેં, એસો સમય મુપાય.
પતરાસે સરસક લખો, સંવતકો અનુમાન;
સંપ્રદાયકપદુમસુ, પુસ્તકમાંહિ પ્રમાન.

ઉપર પ્રમાણે હોનકારે ચિત્ર લીધું. આચાર્યશ્રીની ઇચ્છાથી એ ચિત્ર લેવાયું, તેથી તેમાં બીલકુલ ફરક પડે નહિ. આજની ફોટોગ્રાફી પણ ભાગ્યેજ એવું ચિત્ર લઈ શકે. ચિત્રમાં ખાસ ખુબી એ છે કે, આચાર્યશ્રી કથા કરી રહ્યા છે, એ વખતે આપના વિકાસ પામેલા મુખારવિન્દમાંની દંતપંક્તિ સ્પષ્ટ રીતે અસલ ચિત્રમાં દ્રષ્ટિગોચર થાય છે. હોનકારે તે ચિત્ર કરીને પાછું સરળાવી લીધું. અવયવોના ગંધાં ચિન્હો મેળવી લીધાં, જાણે શ્રીમહાપ્રભુજીનાં સ્વરૂપનું પ્રતિબિંબજ ન હોય તેવું તે ચિત્ર બન્યું. એ ચિત્રને લઈને હોનકાર દીદહીપતિ પાસે આવ્યો અને તેના મુખારક હાથમાં એ ચિત્ર એણે મૂકી દીધું, ચિત્ર જોઈને સિકંદર મુન્ધ બની ગયો. સિકંદરને આચાર્યશ્રીની પ્રભુતાનો ખ્યાલ તો હતો જ, તેથી તેઓશ્રીનું આવું સ્વરૂપ ચિત્રમાં આવેલું જોઈને તેને તાજુબી થઈ. તુરતજ તેણે હોનકારને પૂછ્યું કે; “હોનકાર! આવું સુંદર ચિત્ર તું કેમ ઉતારી ગયો?” ત્યારે હોનકારે બધી આપવીતી કહી સાંભળાવી, જે સાંભળી જાદુશાહના આનંદનો અવધિ થયો. તે પછી એ ચિત્ર પોતાના ખાત્ર મહેલમાં જાદુશાહે રચાવી દીધું. મહારાજ કૃષ્ણગદનરેશ લખે છે કે—

મુની વૃત્તાંત નૃપેશ લખિ, પ્રભુદી દો અવતાર;
૬૯ કરિ લીનો ચિત્તમેં, ચહ વિચાર નિર્ધાર.

૧ શ્રીકૃષ્ણદાસ મેઘન આચાર્યશ્રીનાં સેવક હતા. આચાર્યશ્રી ત્યારે બદરીનાથ પધ્યામાં, ત્યારે કૃષ્ણદાસને રહેલું કે તમે અહીં ઉભા રહેજો. તેથી તેઓ ત્યાં ત્રણ દિને સુધી એમને જોમ ઉભા રહ્યા. તુરંતેની આગાના એવા પાલક જગતમાં વિરચાન હોય છે.

પૃથિમાગ્નીના ઇતિહાસ.

નિજ ચિત્રાલયમેં ચહે, દિશે ચિત્ર ધરવાય
દર્શન રુચિ જળ ચિત્ર બદે, તખલી લેત કંઠાય.

એ ચિત્ર કૃષ્ણગદમાં કેમ આબું ?

હવે એ પ્રાચીન ચિત્ર કૃષ્ણગદમાં કેમ આબું એ વિષેનો ઇતિહાસ અસર-કારક છે. કૃષ્ણગદના સિંહાસન પર ભકતરત્ન મહારાજ રૂપસિંહજી ચર્ચ ગયા છે. આ મહારાજનો જન્મ સંવત ૧૬૬૫ માં વૈશાખ સુદ ૧૧ ના રોજ થયો હતો. વિષ્ણુતિથિએ જન્મેલા મહારાજ પરમ વૈષ્ણવ થયા હતા. આ મહારાજ અતુલ-ખલશાલી અને પરાક્રમી હતા. સુદૃઢલામાં તેમની પ્રવીણતા અજળ હતી. તે વખતે દીલ્હીનું રાજતંત્ર શાહજહાંના હાથમાં હતું. શાહજહાંને તારીફ સાંભળીને મહારાજ રૂપસિંહજીને લખ્યું કે, તમે પોતે કાબુલ તરફના સુલક પર હુમલો લઈ જાઓ અને હુસ્મનોને મહાત કરો. તમારા મુખપર રજપૂતનું સુદ્ધ નર ચમકે છે, તો તમેજ આ કાર્ય કરી શકશો.” આ શાહી ફરમાનને તાજે થઈને મહાશૂરવીર મહારાજ રૂપસિંહજી દીલ્હીપતિની ફેજના વડા સેનાધિપતિ અફસર ખાનીને કાબુલ પર ચડાઈ લઈ ગયા અને પોતાની લડાયક કુનેહ અને બહાદુરીથી હુસ્મનોને મહાત કરીને આખો કાબુલ રેશ તેમણે સર કરી લીધો. તે પછી તેઓ દીલ્હી આવ્યા. શાહજહાંની ખુશાલીનો પાર ન રહ્યો: તેણે ખુદા દીલથી જે જોઈએ તે માગી લેવાનું રૂપસિંહજીને કહ્યું. પણ રૂપસિંહજી કંઈ હુન્યવી હોલતને પોતાનું સર્વસ્વ માનતા ન હતા. એમના હૃદયમાં તો કોઈ અલૌકિક પ્રેરણા સમાયલી હતી. મહારાજ રૂપસિંહજી આચાર્યશ્રીના પ્રાચીન ચિત્રના ઇતિહાસથી સારી પેઠે વાકેફ હતા. એ ચિત્ર મેળવવા માટે તેઓ તલપી રહ્યા હતા. એ ચિત્ર માટે તેમની તપશ્ચર્યા અદ્વિતીય હતી. એવો અવસર તેઓ કેમ ચૂકે ? તુરતજ દીલ્હીપતિ શહાજહાંને વિનંતિ કીધી કે:—

શ્રીવલ્લભ આચાર્યજી, હોનહારકે હાથ;

ચિત્ર કરાયો પ્રીતિકર, શાહ સિકંદર નાથ.

વહી ચિત્ર અતિ મહર કર, કર દીજે બક્ષીસ;

ઉપર મુજબ માગણી કરી. રૂપસિંહજીને ખબર હતી કે, સિકંદર લોદી પછી એ ચિત્ર-ખજાનો અકબર પાસે અને તે પછી તેના વારસ તરીકે જહાંગીર અને શાહજહાં પાસે આવ્યો હતો. એટલે રૂપસિંહજીએ પોતાનાં સર્વસ્વરૂપ એ ચિત્રની માગણી કરી. શહાજહાં તો આલોજ બની ગયો ! મહામહેનતે કાબૂલ જેવા બેશવર દેશની છતના બદલામાં માત્ર એક ચિત્રનીજ માગણી ! ગરીબ બિચારો શાહજહાં ! ભકતહૃદયની પ્રેમમસ્તીને ક્યાંથી ચમત્ શકે ? એને શાની ખબર હોય કે; ભકત લોકો પોતાના પ્રેમપાત્ર પ્રભુની પાછળ ચોદે બ્રહ્માંડને નોટાવર કરીને ફેંકી દે છે ! છતાંજે એ પ્રાચીન મહાચિત્ર યોડીક આનાકાની સાથે મહારાજ

રૂપસિંહજીને માથે ચક્રાવલોકિ પધરાવી આપ્યું. મહારાજા રૂપસિંહજીને તો ત્રણે લોકના વેલવ કરતાંજે એ ચિત્રથી વિશેષ આનંદ થયો, છતાં ચક્રાવલોકિને તૃપ્તિ થઈ નહિ. એનો તો મોટો ભગીર ભક્તી હતી, એટલે ફરી કહ્યું કે તમે આટલું શું માગ્યું ? ફરીને માગ્યો. ત્યારે રૂપસિંહજીએ પોતે પોતાના સ્વાર્થને માટે કંઈ ન માગતાં પોતાના માર્માના દીકરા ભાઈ મુળસિંહજીનું જે સલામતીનું રાજ્ય ખાલસા થયું હતું, તે પાછું તેમને ગળે તેણે માગ્યું. બાંદશાહને મહારાજાના અપૂર્વ સ્વાર્થ-ત્યાગ અને પ્રભુભક્તિ માટે અદ્ભુત માન ઉદભવ્યું. એ રીતે એ વિશ્વવિખ્યાત ચિત્ર શ્રીકૃષ્ણગદમાં આવ્યું તે હજી મુખી ત્યાજ ગિરાજે છે. શ્રીકૃષ્ણગદના મહારાજા ઉત્તરોત્તર એવાજ વૈષ્ણવ થતા રહ્યા છે. હાલના મહારાજા પણ સુસ્ત વૈષ્ણવ છે. અને છેહા મહાશુદ્ધ વખતે તેઓ જ્યારે કાન્સમાં ગયા હતા, ત્યારે પણ પોતાના ગુરુનાં તથા પ્રભુનાં ચિત્રો પોતાની પાસેજ રાખતા હતા. તેઓ કહે છે કે, એ ચિત્રોના પ્રતાપે વિમાનો પરથી પડતાં બોંબ કે મશીનગન વગેરે મારો વાંજ પણ વાંકો ફરી શક્યાં નથી. પ્રભુ એ વંશમાં એવીજ વૈષ્ણવતા કાયમ સ્થાયો ?

કૃષ્ણગદમાંના એ ઐતિહાસિક ચિત્રપરથી શ્રીનાથદારાના એક મથાદુર ચિત્ર-રાએ એક મહિનાના લાંબા સમય પછી એક ચિત્ર તયાર કર્યું, જે હાલમાં અહીંના વૈષ્ણવ મથાદુરેસ્ય ચેક અચાભાઈના પરમાં છે. એમના સત્પુત્ર ચેક હરિદાસભાઈની ઉદારતાથી એ ચિત્રનો ફોટો લીધો છે, ને તેને જોઈક છાપ્યો છે.

પ્રિય વાંચક વર્ગ ! ફરીને એ દિવ્ય ચિત્ર તરફ જો ! એ ચિત્રના ઉપર્યુક્ત ઇતિહાસમાં દૃઢ્યને અવગાહન કરાવી દે, એની ભાવનાનો વિચાર કરીને ભક્તિરસની દિવ્ય લહેરીઓનો આનંદ લે ! અને મહારાજા સાવંતસિંહજીના છેહા આ છાપ્યને દૃઢ્યમાં કોતરી રાખો :—

શ્રીલક્ષ્મણ ભટ ગેહ પ્રભુ અવતાર લિવાયો,
શ્રીવલ્લભ આચાર્ય મહાપ્રભુ નામ કહાયો;
માયાવાઈ વિખંડ ભક્તિપથ પુષ્ટિ બધાયો,
દેવી જીવ ઉદાર હેતુ ચહ માર્ગ બતાયો.

ભટ માધવ કૃષ્ણ હિ હાસ જી, દામોદરકેં કર સુચિર,
ધરિ વિચરૂં રૂપ મુચિત્રમય, જયતિ જયતિ નૃપરૂપ ગિર.

[શ્રીકૃષ્ણગદના રાજપીઓના કાર્યપૂર્ણ અને ભક્તિરસથી છલકાતાં ચરિત્ર વાંચવા હોય તો રા. રા. લક્ષ્મણાઈ હમનગાલ દેરામજે પ્રકટ કરેલા શ્રીસૂરદાસજીનું ચરિત્ર વાંચવાની સૂચના વાંચકોને હું કરીશ. આ લેખમાં પણ એજ અંચનો આધાર દેતલેક સ્થળે લીધો છે.]

પ્રકીર્ણ પ્રસંગો.

[શ્રીગોકુલેશ પ્રભુના અનન્ય સેવકોએ આપશ્રીની વચનપ્રધાનું અદનિશ પાન કરીને, ભવિષ્યની વૈષ્ણવસુદિના કલ્યાણ માટે અનકલ પ્રયત્ન કરીને એ વચનામૃતો

લખી રાખ્યાં છે, જેમાંથી શ્રીવૃક્ષભાષીન્દર વિષે જે કેટલીક ઐતિહાસિક આત્મકો આપશ્રીએ કરેલી છે તે અહીં ઉતારવામાં આવે છે.

આચાર્યશ્રીના ત્રણ ભાઈઓ.

૧. એક દિવસે શ્રીગોકુલેશ્વરપ્રભુએ આજ્ઞા કરી કે, શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજીના ત્રણ ભાઈ હતા. તેમાં એક મોટા નારાયણ અને તે પાંછળથી સંન્યાસી થઈ ગયા. સંન્યાસતાવસ્થામાં એમણે પોતાનું નામ કેશવપુરી રાખ્યું. એક વખતે કેશવપુરી સંન્યાસી પોતાના માતાજી પાસે આવ્યા અને નમસ્કાર કર્યો. સંન્યાસીએ માતાને નમસ્કાર કરવા જોઈએ એમ શાસ્ત્ર કહે છે. ત્યારે પોતાના મોટા પુત્રને સંન્યાસી તરીકે જોઈને માતાજી શ્રીવૃક્ષભાગ્યજીને બહુ જ દુઃખ થયું. ત્યારે કેશવપુરી સંન્યાસીએ શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજીને દેખાડીને કહ્યું કે—“તમારા આ પુત્ર એવા છે કે બીજા પુત્રની તમને અપેક્ષા નહિ રહે. તો પણ માતા તે માતાજી કહેવાય એટલે કલેશ કરવા લાગ્યાં. વળી આચાર્યશ્રીના બીજા એકભાઈ રામકૃષ્ણજી નામના હતા, તે મહાન પંડિત હતા. (એમના રચેલા ગ્રંથો હાલમાં મોજૂદ છે) તેઓ બાંધવગદ શહેરમાં ગયા.....આ વાત સાંભળીને માતાજીને બહુ જ દુઃખ થયું.

સાર—આ વચનામૃત ઇતિહાસ પર મહાન પ્રકાશ પાડે છે. આચાર્યશ્રીના મોટાભાઈએ સંન્યાસ લઈ લીધો એ ઇતિહાસચિદ વાત પરથી આંજકાલ કેટલાક નિંદાઓરો આચાર્યશ્રીની વ્યર્થ નિંદા કરે છે અને આચાર્યશ્રીના મોટાભાઈની વાતને શ્રીમહાપ્રભુજીનાં નિર્મલ ચરિત્રમાં લેગવીને જેમ તેમ બદલે છે.

૨. એક દિવસે મંગલાનાં દર્શન સમયે હોમધરમાં શ્રીગોકુલનાથજી તેલગાદીએ બિરાજેલા હતા તે વખતે નિજસેવક પંચોલીજીને કહ્યું કે, “શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજીએ ત્યારે પૃથ્વીપરિક્રમા કરી ત્યાર આપશ્રીની સાથે ચાર સેવક રહેતા હતા. તેઓ શિક્ષા માગીને નિર્વાહ કરતા હતા. શ્રીઆચાર્યજીએ જો સેવકોને આજ્ઞા કરી કે, શિક્ષા માગજો પણ કોઈને માલાતિલક બતાવયો નહિ. આપશ્રીની સાથે જે સેવકો રહેતા, તેમનાં નામ આ છે—ગોવિંદ દવે, જગન્નાથ જોષી, ચિદંદરપુરીના રામદાસભાઈ, અને કૃષ્ણદાસ મેઘન. આ ચાર સેવકોમાંથી વચનામૃત તો કૃષ્ણદાસ મેઘનને આપે સંભળાવ્યું છે.

સાર—માલાતિલક દેખાડીને કાંઈપણ ચાચના કરવાથી ધર્મ નાશ છે, અને લાલપૂળ માટે પ્રયાસ કરનારની કોટિમાં પ્રવેશ થાય છે, માટે ધર્મને નામે વેષ્ણુવધી એક પાઈ પણ મગાય નહિ અને લેવાય પણ નહિ. આ વાર્તા હાલના વેષ્ણુવોએ આસ હૃદયમાં કોતરી રાખવી ઘટે.

૩. એકવાર શ્રીગોકુલનાથજીને સમાનંદસસ્તવતી શ્રીપાતે પુછ્યું કે, “મહારાજ! શ્રીઆચાર્યજીનું નામ શું લગવાનું છે?” આ પ્રશ્નના જવાબમાં આપશ્રીએ આજ્ઞા કરી કે, “નહિ.” ત્યારે ફરી શ્રીપાતે પુછ્યું કે, “એ નામ સંભવે અરે?” તો

આથે જવાળ આથો: “હા, સંભવે, પણ જેને એણેદુષ્ટિ હોય તેને સંભવે. (શ્રીઆચાર્યજીમાં અને શ્રીકૃષ્ણમાં જે લેશ પણ ભેદ ન જોતા હોય તેને એ વાત સંભવે.) જેને ભેદબુદ્ધિ છે તેને એ વસ્તુ દેખાય નહિ. એજ નિશ્ચય છે. શ્રીગુણ-દંત્રીએ પણ શ્રીવલ્લભાષ્ટકમાં “વસ્તુતઃ કૃષ્ણ એવ” (ખરી રીતે જોતાં તો શ્રીઆચાર્યજી શ્રીકૃષ્ણ જ છે) એમ કહ્યું, પણ તેથી આપનું નામ શ્રીકૃષ્ણ ન રખાય. (માત્ર જેને એવી ભાવના હોય તેને એવો અનુભવ થાય.)

સાર—કેવું સચોટ વચનામૃત છે? શ્રીઆચાર્યજી પોતે પૂર્ણપુરુષોત્તમ ખરા; પણ તે કંઈ ગધાને માટે નહિ, પણ અનુભવીઓને માટે. તેથીજ આપશ્રીનું નામ શ્રીકૃષ્ણ તરીકે પ્રસિદ્ધ થયું નહિ. એટલે કોઈ અનુભવી પોતે શ્રીઆચાર્યજીમાં પૂર્ણ પુરુષોત્તમનાં દર્શન કરીને તેનો આનંદ લીધા કરે, પણ તેથી તેવી દષ્ટિ વિનાનો ખીન્ન લોકો ‘ભગવાન’ એ નામે શ્રીઆચાર્યજીને ઓળખાવી શકે નહિ.

૪. એક દિવસે કહ્યું કે; “શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજીએ જ્યારે સંન્યાસ ગ્રહણ કરવાનો વિચાર કર્યો ત્યારે પોતાનાં ધર્મપત્ની શ્રીઅક્ષાજીની પાસે એ વિચાર આપશ્રીએ પ્રકટ કર્યો. પણ શ્રીઅક્ષાજીએ સંન્યાસ લેવાની આજ્ઞા આપી નહિ. ત્યારે ભગવદ્દિશાથી એક દિવસે ઘરમાં અકરમાત્ આગ લાગી. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજી પુસ્તક વાંચતાવાચતા ઊંચાજી રહ્યા. ત્યારે શ્રીઅક્ષાજીએ ત્યાં જઈને કહ્યું કે, “અહીંથી જલદી બહાર નીકળો, બહાર નીકળો; અહીં કેમ બેસી રહ્યા છો?” ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ શ્રીઅક્ષાજીને પુછ્યું કે, “બહાર નીકળવાની (ઘરનો ત્યાગ કરવાની) તમારી આજ્ઞા છે?” ત્યારે શ્રીઅક્ષાજીએ કહ્યું કે, “હા જાઓ, જાઓ,” ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ તો ઘરનો ત્યાગ કર્યો. શ્રીઆચાર્યજીનો એક પ્રાદાલ્લુ સેવક હતો. તે એવો દુષ્ટ અને બહિષ્કૃત હતો કે, કોઈ કંઈ જો કહે તેમ કરી નાંખે, કયો વિચાર કરેજ નહિ. તેને કહે કે ઉપર ચઢ, તો ઉપર ચઢી જાય. તેજ પ્રાદાલ્લુને ઘેર સંન્યાસ લેવાની પહેલેથી ગાંધી તૈયારી કરી ગાંધી હતી, પણ તેણે કોઈને તે વાતની ખબર સુદ્ધાં આપી ન હતી. પછી આચાર્યશ્રી પેલા પ્રાદાલ્લુસેવકને સાથે લઈને સોમેશ્વર પધાર્યા; અને ત્યાંજ સંન્યાસ ગ્રહણનો વિધિ પ્રારંભી રીધો. હવે સંન્યાસ ગ્રહણ કરતી વખતે ત્યાં પુત્રની જરૂર પડે છે, તેથી આપશ્રીએ પોતાના જ્યેષ્ઠ પુત્ર શ્રીગોપીનાથજીને ત્યાં બોલાવ્યા, પણ શ્રીગોપીનાથજી તો એ વાત સાંભળીને ઘણાજ ખેદ પામ્યા; એટલે ત્યાં પધાર્યા નહિ. પછી શ્રીગુણદંત્રીની અવસ્થા નાની રહી. તેથી આજ્ઞા મતાં ત્યાં પધાર્યા. આ વાત સાંભળીને આચાર્યશ્રીના માતાજીને ધણુંજ દુઃખ થયું. આખરે એ વૃદ્ધ માતાજી ત્રણવાર ગંગાજીમાં પડ્યાં અને દેહત્યાગ કરવાનો પ્રયાસ કર્યો. પણ ત્રણ વખતે ગંગાજીએ તેમને બહાર કાઢી રીધાં. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ કહ્યું કે, “ભુજો, આ મારા માતાજી છે, અને ત્રણ વખત ગંગાજીએ તેમને બહાર

કાઠી લીધાં છે. ” માતાજીનું આ હુઝાર અને કલેશ શ્રીઆચાર્યજી સહન કરી શક્યા નહિ. તેથી આપ વારાણસી-કોશી પધાર્યા. ત્યાં જઈને માધવ સરસ્વતીજી નામના એક સંન્યાસીને પોતે નમસ્કાર કર્યો. તે વખતે બીજા સંન્યાસીએ માધવેન્દ્ર સરસ્વતીને પુછ્યું કે, “ તમે સંન્યાસનો ઉપદેશ આચાર્યશ્રીને કર્યો છે ? ” ત્યારે માધવ સરસ્વતીએ કહ્યું કે, “ એ તો ઇશ્વર છે, હું કોણ જે એમને ઉપદેશ કરે ? ” ત્યારે પેલા સંન્યાસીએ વળી પાછો પ્રશ્ન કર્યો કે, “ ઉપદેશ વિના સંન્યાસ કેમ લેવાય ? ” ત્યારે માધવ સરસ્વતીએ જવાબ આપ્યો કે, “ મને તે વાત પૂછવાનો અધિકાર નથી. તમે પૂછી શકતા હો તો પૂછ. ” શ્રીઆચાર્યજીએ સંન્યાસીઓમાં થતા આ ગરબગટને-ધુસપુસને સાંભળી લીધી. તે વખતે તો આપશ્રીએ કંઈ જવાબ આપ્યો નહિ, પણ “ સંન્યાસનિષ્ઠ ” ગ્રંથ લખીને પેલા ગરબગટ કરી રહેલા સંન્યાસીઓને મોકલી આપ્યો, વળી લખ્યું કે, “ યદહરેવં વિવ્રજેત્ તદહરેવ પ્રવ્રજેત્ જે દિવસે વૈરાગ્ય આવ્યું, ઘર છોડ્યું, ત્યારથીજ સંન્યાસ લઈ લીધો ગણાય. આ ગ્રંથ પેલા સંન્યાસીએ બધાને બતાવ્યો અને કહ્યું કે, “ આનું નામ તે સંન્યાસ, બંદી બીજું બધું તો વિડંબન-ફારસ છે ” શ્રીઆચાર્યજીએ, તે પછી ૪૦ દિન મૂતલપર પ્રકટદર્શન આપ્યાં છે.

આ વચનામૃતપર કંઈ પ્રભુ વિવેચન કરવાની જરૂર નજ હોય.

૫. એક દિવસે શ્રીગોકુલનાથજીએ કહ્યું કે, “ શ્રીઆચાર્યજીના સેવક ગોવિંદ દેવેએ શ્રીઆચાર્યજીમહાપ્રભુજીને વિનતિપત્ર લખ્યો કે, “ સેવા કરીએ છીએ પણ મનની વિશિષ્ટતા-આમતેમ ભટકવાની વલણ-જતી રહેતી નથી, મનની મુનમાંજ રહે છે. ” આ વિનતિપત્રના ઉત્તરમાં આચાર્યશ્રીએ નવરત્ન ગ્રંથ લખીને મોકલી આપ્યો અને જણાવ્યું કે, “ આ ગ્રંથનો પાઠ કરજો, મનની વિશિષ્ટતા રહેશે નહિ.

એક દિવસે શ્રીગોકુલેશપ્રભુએ આજ્ઞા કરી કે, આચાર્યજી મહાપ્રભુજી ન્યારે બીજા વાર શ્રીદારિકાજી પધાર્યા ત્યારે ગુજરાતમાં થઈને પધાર્યા. તે વખતે ગુજરાતમાં બાદશાહ મહમદ બેગડો રાજ કરતો હતો. મહમદ બેગડાની એવી ધાક હતી કે તેની પાસે થઈને તેના દેખતાં કોઈ પાલખીમાં બેસીને નીકળી શકે નહિ. શ્રીમહાપ્રભુજી તો તે વખતે પાલખીમાં ઘિરાજીને પધારતા હતાં. પાલખી ચપરાવનાશ સેવકોએ દૂરથી જોયું કે મહમદ બેગડો સામે ગોખમાં-છળમાં બેઠેલો છે. દુરતજ પાલખી ઘોલાવીને સેવકોએ વિનતિ કરી કે જે “ મહારાજ ! આ બાદશાહની પાસેથી કોઈ પાલખીપર બેસીને નીકળી શકતું નથી. ” બીજા સાથેના લેખકોએ પણ તેવુંજ કહ્યું. ત્યારે શ્રીમહાપ્રભુજીએ આજ્ઞા કરી કે, “ હું પોતે પોતાની મરજીથી આ પાલખીમાં બેઠો છું એમ તમે સમજો છો કે શું ! તમે પાંચ જણાએ મળીને મને બેસાડ્યો છે તેથી હું બેઠો છું ” વળી આપશ્રી આજ્ઞા કરી કે “ તમે રજો નહિ. શ્રીદાદેવજીએ જે અધિકાર આપ્યા છે, તો તે માટે

બીજો શું કરી શકનાર છે ? ” એમ આજ્ઞા કરીને પાલખી આગળ ચલાવી. સવારી ગાદશાહ પાસે આવી પહોંચી. એ વેળાએ. ગાદશાહ પાસે ઉભેલા એક સરદારે કહ્યું કે. “ આ કોઈ હિન્દુ તમારી સામે પાલખીમાં બેસીને જાય છે ” ત્યારે ગાદશાહે પોતાના સરદારને જવાબ આપ્યો કે “ મારી આજ્ઞાથી કોઈ મનુષ્ય તો એવી રીતે જઈ શકે જ નહિ, પણ આ તો કોઈ પરમેશ્વરનું તેજ છે. ”

સાર—શ્રીવલ્લભાધીશ્વરના પ્રકટ પ્રતાપનું વર્ણન શ્રીગોકુલનાથજીએ ઉપરના વચનામૃતમાં કર્યું છે. ગમે તેવા વિધર્મીઓ પણ આપના તેજ સામે નમી પડતા એનું આબેશ્વર વર્ણન આ વચનામૃતમાં છે.

એક દિવસે શ્રીગોકુલનાથજીએ આજ્ઞા કરી કે, શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજી ત્યારે અદેશમાં ગિરાજતા હતા ત્યારે સંમેશમાં પોતે કયા કરતા. આ કથાનું શ્રવણ કરવા ઘણા વેળાએ આવતા. તેમાં એક દિનકરદાસ ચેઠ નામના દુનિય પણ આવતા. ચેઠ અત્યંત વિરજા દશામાં રહેતા હતા. એટલે માત્ર લોટ માગી લાવીને પોતાનો નિર્વાહ કરતા હતા. પોતાની પાસે એક પણ વાજણ રાખતા નહિ. લોટ લાવીને તે શ્રીયશુનાલના તટપર શ્રીયશુનાલથી જાંધી લેતા અને તેના ટીકડા (રોટલા) ચિલ્લ કરીને, પ્રભુને ધરાવીને લેતા. એક દિવસે લોટ માગતા કાંઈક વાર થઈ અને પોતે ઉતાવળથી શ્રીયશુનાલના તટપર લોટ જાંધવા લાગી ગયા. તેટલામાં એક જલભરીઓ ત્યાં આવ્યો, તેને દિનકર ચેઠે પૂછ્યું કે, “ શ્રીમહાપ્રભુજી શું કરે છે ? ” ત્યારે જલ ભરનારે કહ્યું કે, “ પુસ્તક ખોલ્યું છે અને કથાનો આરંભ કરે છે. ” આ સમાચાર સાંભળતાવિંતજ દિનકર ચેઠ લોટમાં વધારે પાણી ફેરીને, તેને ઘોળીને પી ગયા, રોટલા બનાવવા રહ્યા નહિ. તરતજ કથામાં આવીને બેસી ગયા. ભગવતકથામાં લેખકે એવી આસક્તિ હતી; તેમજ અનુસાર હતો. કથા થઈ રહ્યા પછી રાત્રે જલભરીઓએ શ્રીમહાપ્રભુજીને વિનંતિ કરી કે, “ કૃપાનાથ ! દિનકર ચેઠ તો લોટ ઘોળીને, પીને કથામાં આવ્યા છે. ” આ વાત સાંભળીને શ્રીઆચાર્યજીએ દિનકર ચેઠને કહ્યું, “ તું લોટ ઘોળીને પીને કેમ આવ્યો ? ” ત્યારે દિનકર ચેઠે વિનંતિ કરી જે “ રાજ, અંગારખી (રોટલા) તો રોજ ખાઉ છું અને ખાઉં છું પણ આ ભગવતકથાના કયાં મજવાનો છે ? ” ત્યારે શ્રીમહાપ્રભુજીએ આજ્ઞા કરી કે, “ સંવેથી તું રોટલા કરીને આવજે. તું આવીશ ત્યારેજ હું કથા કરીશ. મારો શ્રોતા તુંજ છે. ”

સાર—કથામાં આસક્તિ દેવી લેવી જોઈએ તેનું હૃદયભરતક ઉદાહરણ આના વિના બીજો કંઈ નહિ મળે. ‘ ચેઠ ’ છતાં ‘ વિરજા ’ રહીને દિનકરદાસ શ્રીવાક-પતિની વાકસુખાના રમધાનમાં કેના આસક્તિ રહેતા એનો ખ્યાલ આ વચનામૃતમાં છે. મર્યાદાધનવળ ભક્તિમાં જેમ પરીક્ષિત રાજાનું નામ લખાયું તેમ પ્રતિની શ્રવણ ભક્તિમાં ચેઠ દિનકરદાસનું નામ લખાયું છે. શ્રીવલ્લભાગિના વચનામૃતમાં અહીં આસક્તિ રહે એ તો અપરોપિત પ્રતિજ્ઞા કરાવીને.

એક દિવસે શ્રીગોકુલનાયલની પાસે પુત્રપુત્રી વિષે વાત ચાલી. શ્રોતાઓ કહેવા લાગ્યા કે, છોકરો અવતરે તો બધા સુશ યાય' અને છોકરી સાંપડે તો કોઈ રાજ થતું નથી. આ વખતે શ્રીગોકુલેશપ્રભુએ આજ્ઞા કરી કે, છોકરી અવતરે તો 'ગોદુ' શું થયું? બધા લોકો છોકરા માટે છે પણ છોકરી માગતા નથી. પણ અમારા શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુલનાં માતાજીએ તો પોતાનાં કુલદેવી વેણીની પાસે પ્રમના કરીને એક દીકરી માગી છે. મૂળે પુરુષ ચતનારાયણ બદલથી લઈને શ્રીમહાપ્રભુજી સુધી કોઈને પુત્રી થયલી નહિ. મંગળ પ્રસંગે આરતી કરવા માટે બીજા કોઈને બોલાવાને આરતી કરાવવી પડતી. આચાર્યશ્રીના માતાજીએ કહ્યું કે, એટી વિના કુલ શા કામનું? રોજ ઉઠીને બીજાને બોલાવવું એ શું? ત્યારે આચાર્યશ્રીનાં માતાજીએ કુલદેવી વેણીની પાસે પ્રાર્થના કરી કે મારા પુત્ર ને ત્યાં પુત્રી થાઓ. ત્યારે વેણીદેવીએ કહ્યું કે તમારા પુત્રને તો પુત્રી થશે નહિ, પણ પુત્રના પુત્રને ત્યાં પુત્રી થશે. તે પછી ગુણાંધજીને ત્યાં બેઠીજનાં પ્રાર્થ્યો થયાં.

માર—વેણુવ ગૃહસ્થાશ્રમમાં પુત્ર અને પુત્રીનો વિનિયોગ પ્રભુસેવામાં થાય એટલે પુત્રીના પ્રસવથી અપ્રસન્ન બનવાનું ક્યાંથી હોય? પ્રભુસેવાનાં, તત્તર હોય તેવાંજ પુત્ર અને પુત્રીની સંતાન તરીકે ગણના થાય, બીજાં તો ભારમૂલજ ગણાયા.

દૌકિક સંબંધમાં અતૌકિકતા.

એક દિવસે શ્રીગોકુલેશપ્રભુએ આ પ્રમાણે આજ્ઞા કરી: 'અમારી કાકીની (પોતાની માતાને કાકી કહેતા) માએ (નાનીએ) કહ્યું કે મને બે પુત્રીઓ સાંપડી છે, તેમાં એક દૌકિક સાથે છે અને બીજી અતૌકિક સાથે છે. કાકીએ (અમારાં માએ) ૧૮ બાળકોને જન્મ આપ્યો છે. તેથીજ અમારા ગોવિંદમામા કહેતા હતા કે, બે શ્રીગુણાંધજીને બે ભાલક બીજા થાય તો હું શ્રીરુકિમણીવહુજનાં લગ્ન બીજવાર શ્રીગુણાંધજી સાથે કરે. વળી અમારાં માતામહા (નાના) વિશ્વનાથ લટ બાગરોટી હતા. તેઓ તો મહાન વેણુવ હતા. એમની પાસે શ્રીઆચાર્યજીએ શ્રીગુણાંધજીની વેરે કન્યાનું માગું કર્યું ત્યારે બાગરોટી વિશ્વનાથ લટ સાંભળીને બેસી રહ્યા, પણ ઉત્તર દીધો નહિ. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ વિચાર કર્યો કે મને ઉત્તર આપતા નથી તે શું? ફરીને શ્રીઆચાર્યજીએ જવાબ ન આપવાનું કારણ પુછ્યું, ત્યારે અમારા નાનાએ, કહ્યું કે, તમારા પુત્ર શ્રીગુણાંધજી વેરે મારી પુત્રીનાં લગ્ન કરીને હું મારે સેવક ધર્મ, શું શુભાવી દઉં? કેમ કે અત્યારે તો હું આપનો સેવક છું, પછી વેવાઈ થઈશ, એટલે આપ મને નમસ્કાર કરશો, મને આવતો બેઠીને ઉભા થઈ જશો, તેથી મારો સેવક ધર્મ નષ્ટ થશે. હું બે શરતે શ્રીગુણાંધજી સાથે મારી પુત્રીનાં લગ્ન કરી દઉં. તે બે કે આપ મને નમસ્કાર ન કરો અને હું આપું ત્યારે ઉભા થાઓ નહિ. આ શરત શ્રીમહાપ્રભુજીએ કબુલી અને કહ્યું કે હું તેજ પ્રમાણે વર્તીશ. એટલે વિશ્વનાથલટજીએ પોતાની પુત્રીનાં લગ્ન શ્રીગુણાંધજી સાથે કરી

હીમાં. ત્યાર પછી તો વિશ્વનાથલટલએ વેણુવો પામેથી એક કોડી પણ લીધી નહિ. પોતે દહેતા કે વેણુવોનું ધન તો મારી પુત્રીનું છે, તો પુત્રીનું ધન પિતાને કેમ ગપે ?

માર—વચનામૃતમાં ઘણાજ સુદા સમાયલા છે. શ્રીગુણાંધલ સાથે જે પુત્રીનાં લગ્ન થયાં તે પુત્રીએ અલૌકિક સાધુ એમ એમનાં માતાપિતા માનતાં. આમાં એક ઐતિહાસિક બીના એ છે કે શ્રીરુકિમણીવહુલએ ૧૮ બાલકોને જન્મ આપ્યો છે. અત્યાર સુધી આપણે એમ સમજતા કે શ્રીરુકિમણીવહુલના ૬ પુત્રો અને ૪ પુત્રી છે, પણ આ વચનામૃતથી નવે પ્રકાશ પડે છે. વળી શાસ્ત્રમાં એવી મર્યાદા છે કે, એકજ સ્ત્રીથી ૨૦ સંતાન થાય તો એજ સ્ત્રી સાથે ફરીને વિધિપૂર્વક લગ્ન કરવાં. તેથીજ શ્રીગોકુલનાથલના મામાએ ૨૦ બાલકોનાં પ્રાકટ્યની આશા રાખી હતી. શ્રીગોકુલેશ્વરલુના નાના ભટ્ટ વિશ્વનાથ બાગદોદીની વેણુવતા તો એક આદર્શરૂપ છે. આચાર્યશ્રી ઉપરનો તેમનો ભાવ અફલુત છે. લૌકિક સંબંધ છતાં અલૌકિક ભાવની સુખ્યતા કેમ જાળવવી તેનું ઉદાહરણ આનાથી સ્પષ્ટ બીજુ કંઈ નહિં મળે. તેમાંએ વેણુવોની પણ પાઈ ન લેવામાં જે રહસ્ય છે તે તો આપણા હૃદયમાં કોતરી રાખવા જેવું છે. પ્રદક્ષિણા પછી વેણુવના સ્વર્ણવની માલીછી કોની હોય તેનો ઉકેલ આ વચનામૃતમાં છે.

લુહું તહોમત—એક વેળાએ એક વેળાએ એક સંન્યાસીએ આચાર્યશ્રી પાસે ફરીયાદ કરી કે, તમારા સેવકે મારા શાલિગ્રામલ ચોરી લીધા છે. ત્યારે શ્રીમહાપ્રભુલએ કહ્યું કે, તું તારા શાલિગ્રામને જોડે છે ખરો ? ત્યારે સંન્યાસીએ જવાબ આપ્યો કે જોગપુ. છું. તેજ વખતે શ્રીમહાપ્રભુલએ પેલા સંન્યાસીને શ્રીકૃષ્ણની ઘાટના શનીવૃક્ષમાં બે હંતર શાલીગ્રામ લટકેલા દેખાડ્યા. આ દૃશ્ય જોઈને સંન્યાસીને આશ્ચર્ય થયું અને તે મનમાં પસ્તાવા લાગ્યો, ત્યારે શ્રીઆચાર્ય-મહાપ્રભુલએ આજ્ઞા કરી કે, અમારા સેવક તારા શાલિગ્રામ શા માટે ચોરી લય ?

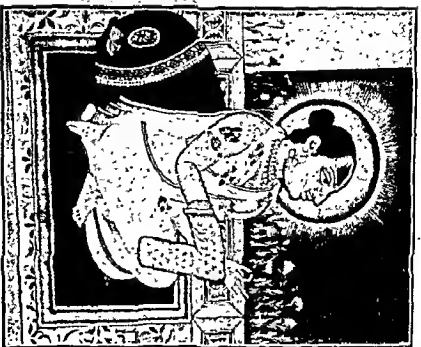
શ્રીઆચાર્ય સાથે મિલાપ—એક વખતે શ્રીગોકુલનાથલએ ક્રીડાએ આજ્ઞા કરી કે, શ્રી આચાર્યલ બદિકાશ્રમ પધાર્યો, ત્યારે શ્રીવેદવ્યાસલનાં ત્યાં દર્શન થયાં, એટલે આચાર્યશ્રીએ કહ્યું કે, આપે વેદાંતના એવાં સૂત્ર કેમ કહ્યાં કે જેનો અર્થ માયાવાદ તરફ પણ લગાડી લેવાય. ત્યારે શ્રીવેદવ્યાસલએ કહ્યું કે મને એવીજ આજ્ઞા હતી કે એવાં બે અર્થ વાળાં સૂત્રો કરવાં. ત્યારે શ્રીઆચાર્યશ્રીએ કહ્યું કે મેં તો તમારા સૂત્રનો અર્થ પ્રદક્ષિણાનેજ લાગુ પાડ્યો છે. આ અર્થ શ્રીઆચાર્યલે આચાર્યશ્રીએ સંલગ્નાવ્યો. વળી ‘વામગ્રાહુકૃતવામકપોલો’ એ સુગલગીતનો શ્લોક પણ વ્યાસલે સંલગ્નાવ્યો. અરુણર વ્રજુ દિવસ વીતી ગયા. આ શ્રવણ દર્શને વ્યાસલ ઘણા પ્રયત્ન થયા. તેથીજ કહ્યું કે ‘વ્યાસસ્ય વિદ્યોઃ પ્રિય’ એટલે કે વિપ્લવગી વ્યાસલે પ્રિય એવો શ્રીભગવનને અર્થ આચાર્ય-

શ્રીએ કયો છે. આવો અર્થ કોણે જાણત અને પૂણ પુરુષોત્તમને કોણ જાણત ? શ્રીમહાપ્રભુએ અર્થ પ્રકટ કર્યો ત્યારે બધાને ખંજર પડી. માટે એ અર્થ વ્યાસણને પ્રિય છે.

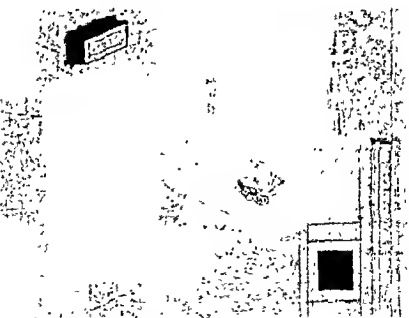
મજનું મહાત્મ્ય—એક વાર શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુએ પ્રભુદાસ જલોટા ને પોતાની સાથે રહેનારા સેવક છે, તેમને કહ્યું કે ચાલો, પ્રસાદ લેવાને આવો, ત્યારે પ્રભુદાસે કહ્યું કે, મેં સ્નાન કર્યું નથી. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ એ પ્રશ્નો કહ્યા તેનો અર્થ આ છે—જલથી પણ ત્યાં રજ પવિત્ર છે, રજથી પણ ત્યાં જલ શ્રેષ્ઠ છે, તેવા વૃંદાવનમાં તે વળી ન્હાવાની વાતો શેની ? ફરેક વૃક્ષે ત્યાં વેલુધારી છે, પાંદડે પાંદડે ત્યાં ચંતુભુંજ છે, એવા વૃંદાવનમાં લક્ષ્ય અને અલક્ષ્ય કયાઓ વળી કેવી ? એવીજ રીતે આચાર્યશ્રીએ કૃષ્ણચૈતન્યને પણ કહ્યું, આ વચનામૃતનો ભાવ ઘણોજ ગંભીર છે. [આ વચનામૃત પર વધારે વિવેચનની કશી જરૂર લાગતી નથી.]

પ્રકટ પ્રતાપ—શ્રીમહાપ્રભુનાં અલોકિક સરિત્રનું વર્ણન કરતાં શ્રીવિકુલેશ્વર પ્રભુના ચતુર્થ કુમાર શ્રીગોકુલેશપ્રભુએ આરા કરી કે, ‘શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુ શ્રીમેટ દારકમાં રણુછોકરાંયજી પાસે શ્રીમંદ્વાગવતની કયા કહેતા હતા, તે વખતે એકદમ વરસાદ પડ્યાં માંડયો, ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ મેઘની સામે જોયું એટલે વરસાદ સમજી ગયો અને શ્રીમહાપ્રભુ ને સંભામાં ખિરાજતા હતા તે ચલામાં વરસ્યો નહિ અને બીજે બધે ઠેકાણે વરસવા લાગ્યો. ત્યારે નારાયણ દેવેએ વિનંતિ કરી કે, રાજ, આ શું ? આપ તો ને છા તે છોજ, તોએ આ અનુભવ આમને માટે દેખાડો છો ? ત્યારે શ્રીમહાપ્રભુએ આરા કરી કે ના, આમાં અનુભવ આનો ? મેઘથી કયામાં રસાભાસ થતો હતો તેથી મેઘને સલાથી ફરે કયો.’

દેવું કરીને સેવા કરવી—એક દિવસે વળી શ્રીગોકુલેશપ્રભુએ વચનામૃત કયા કે, શ્રીમહાપ્રભુ જનશિક્ષા માટે સ્વયંજીએ એક લીલા ગતાવી દીધી. એક વેળાએ પોતાના ઘરમાં લૌકિક સામગ્રીની ખેંચ એકદમ આવી પડી. ત્યારે શ્રીઅક્ષાએ શ્રીમહાપ્રભુને વિનંતિ કરી કે, “ઘરમાં આમગ્રી તો ઘણી છે.” ત્યારે શ્રીમહાપ્રભુએ પુછ્યું કે ‘શ્રી આમગ્રી છે ?’ ત્યારે શ્રીઅક્ષાએ વિનંતિ કરી કે “છેલા ઘણા છે.” આ સાંભળીને શ્રીમહાપ્રભુએ આરા કરી કે “છેલા (ચણા) જ લીંબવીને, તળીને લોગ ધરો.” આ વળતે એક સેવક ત્યાં ઉભો હતો તેણે વિનંતિ કરી “મહારાજ, જલરમાંથી ઉધાર આમગ્રી લઈ આવું ?” ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ જવાબ આપ્યો કે, “જો તું ઉધાર લાવીશ. તો ચુકાવશે કોણ ? શું અમોરે જાગીર કે પરગણાં છે, ત્યાંથી દ્રવ્ય આવે ? અમે શું પરગણાં મેળવીને કમાઈને ચુકવીશું ? હમણાં ઉધાર લઈને પછી આપીએ ક્યાંથી ?” ત્યારે સેવકે વિનંતિ કરી કે, “શ્રીકાકુરજી આપે ત્યારે દેવું ચુકવી દેવાશે.” ત્યારે શ્રીમહાપ્રભુએ આરા કરી કે “જો શ્રીકાકુરજીની આપવાની ધન્ય હોય તો



ଶ୍ରୀଗୋପୀନାଥେନା ହୁଆର ଶ୍ରୀପ୍ରବୋଧାବତେ
 ଖ. ନଂ. ୧୫୯୭ ଗାନ୍ଧ୍ୟାସ ୨୫ ୮



ଶ୍ରୀମହାଶିବାୟ ନମଃ
 ଖ. ନଂ. ୧୫୯୭ ଗାନ୍ଧ୍ୟାସ ୨୫ ୧୨

સ્થાપન આપશ્રીએ કર્યું. તે ઉપરાંત ત્યાં એક મધ્વસંપ્રદાયના એક સંન્યાસી હતા. તેના મનમાં એમ આવ્યું કે, શ્રીઆચાર્યજી જેવા દિગ્વિજય કરનારા મારા શિષ્ય થાય તો સારું. તેથી તેણે શ્રીઆચાર્યજીને બહુ જ આજીજ કરીને કહ્યું કે, મારા આ. સંપ્રદાય તમને સોંપુ છું અને તમે અહીંજ રહો. ત્યારે રાત્રે શ્રીઠાકુરજીએ પધારીને શ્રીઆચાર્યજીને આજ્ઞા કરી કે, તમે મધ્વસંપ્રદાયને અંગીકાર કરશો નહિ.

ઐતિહાસિક ઉલ્લેખો.

[શ્રીવલ્લભાધીશ્વર અને એઓશ્રીના બે કુમાર શ્રીગોપીનાથજી અને શ્રીગુણાંજીએ ગુજરાતને કેટલીવાર પુનીત કરી તેને લગતી ઐતિહાસિક નોંધ પ્રાંતીજના મંદિરના પ્રાચીન પુસ્તકમાંથી મળી છે, તે નીચે આપીએ છીએ.]

શ્રીમદાચાર્યજી મહાપ્રભુજીએ જ્યારે પૃથ્વી પરિક્રમા કરી, ત્યારે એઓશ્રી ગુજરાતમાં પધાર્યા. તે વખતે ગુજરાતમાં બાદશાહી અમલ હતો. તે પછી સં. ૧૫૮૫ માં શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજી બેટદારિકા દર્શનાર્થે પધાર્યા. ૧ વર્ષ સુધી આપશ્રી દારિકામાં બિરાજ્યા છે. શ્રીરણુછેડરાયજીને શ્રીમદ્ભાગવતની કથા સંભળાવી. તે પછી બધી સામગ્રી શ્રીરણુછેડરાયજીને ભેટ કરી અને રાજનગર (અમદાવાદ) પધાર્યા. રાજનગરમાં વેણીદાસ નામના નાગર વાણીઆના ઘરમાં ૩ દિન બિરાજ્યા પછી ગમીજ ગામમાં ૬ છા ગોપાલ રહેતા હતા, તેનો ઉદાર કરવા માટે તેને ત્યાં પધાર્યા. તેને આપશ્રીએ આજ્ઞા કરી કે “તું અહીંજ રહેજે. એક સુંદર કન્યા વિના પ્રયાસે તને કોઈ લાવી આપશે, તેની સાથે લગ્ન કરીને ગૃહસ્થાશ્રમ માંડીને ભગવત્સેવા કરજે.” એવી આજ્ઞા આપીને પછી આપશ્રી ઘર તરફ પધાર્યા. તે નીતે જે જે જીવ વૈષ્ણવ થયા, તેનાં નામો આ છે—બ્યાસ રાણા સાચોરા, જોષી નરહરિ સિદ્ધપુર, ખેરાગુના દવે નારાયણ સાચોરા, વડાલી દેશના દવે ગોવિંદદાસ સાચોરા, વરજા ભટ્ટ ગોપાલદાસ ઓદીચ્ય ગમીજના, માકુઈના નરસિંહદાસ ભાલેજ ઓદીચ્ય, વડાલીના સાચોરા દેશવલટ્ટ, હવેલીના સોનીચંકર શંદુઆ, આવાં ઘણાજ સેવક થયા છે. કેટલાના નામો લખીએ ? તે પછી આપ શ્રીજીને ઘેર પધાર્યા છે.

શ્રીગોપીનાથજી—અંત ૧૫૬૨ માં દારિકાજી દર્શન મટે પધાર્યા. પહેલાં આપશ્રી રાજનગર (અમદાવાદ) પધાર્યા છે. સિકંદરપુરમાં [હાલમાં હગન ભાઈ ચંદની વાડીને નામે ઓળખાતા રથલમાં] ભટ્ટ જયદૃષ્ટ સોઠેદરા નાગર બ્રાહ્મણના ઘરમાં બાગ હતો, ત્યાં આપશ્રી ઉતર્યા. ત્યાંથી શ્રીમદનમોહનજી (હાલમાં રાજનગરમાં પોળમાં બિરાજતા શ્રીઠાકુરજી) પ્રકટ થયા છે. એ ઠાકુરજીને શ્રીગોપીનાથજીએ સિંહાસનપર પધરાવ્યા છે. આપની સાથે શ્રીહરિવંશજી હતા. ભાઈલાલ દોહારી, બાઈ બીકુભાઈ સોનાં આદિ ઘણા સેવકોને ધનુંજ સુખ આપ્યું. તે પછી આપશ્રી દારિકા પધાર્યા. ત્યાં એક માસ સુધી બિરાજ્યા. ત્યાં નરહરિદાસ કારમીવી ચંદુ હતાં. એ પ્રમાંહે દારિકા યાત્રા પછી આપશ્રી ૧૫૮૫ ને ૧૫૮૬ પધાર્યા.

શું આચાર્યશ્રીની લક્ષ્મી નામની પુત્રી હતી ?

(રા. રા. જોડાલાલ ગોવર્ધનદાસ શાહ એમ. એ.)

તા. ૬-૮-૨૫ ને રોજ “શુભરાત્રી” પત્રની સાહિત્યપૂર્તિમાં પ્રસિદ્ધ કરવામાં આવેલા “જંગસાહિત્ય” નામના લેખમાં જંગ કવિ વૃન્દાવનદાસના “ચૈતન્યભાગવત” નો ઉલ્લેખ કરેલો છે અને લેખકે તેમાં કૃષ્ણચૈતન્ય વિશે લખતાં તેમનું લક્ષ્મીશ્રીવલ્લભાચાર્યની લક્ષ્મી નામની પુત્રી સાથે થયું હતું એવો નિર્ણય જણાવ્યો છે. આ લેખના આધારે કેટલાક ખુદિના આંધળા પુષ્ટિસંપ્રદાયના શત્રુઓ તથા પોતાની જાતને શંકરમતાનુયાયી તરીકે ઓળખાવવાનો દાવો કરનારા પંડિતમન્યોએ ‘પ્રભામિત્ર’ ને પારસી તથા ‘સનાતનધર્મ’કેસરી તેમજ ચીચરીયા ‘પોલ’ માં શ્રીવલ્લભાચાર્યજી વિષે અસહ્ય હુમલાઓ કર્યા છે. જો કે ‘શુભરાત્રી’ ની સાહિત્યપૂર્તિમાં લેખકે કોઈ પણ જાતના દેવ સિવાય કે અંગત ઉલ્લેખના હેતુ સિવાય શુદ્ધ હૃદયથી લેખ લખ્યો છે. પણ જેવા ધર્મઘાતકોએ તો શિષ્ટાચારનો પણ ત્યાગ કરીને યદ્વાતદા જેમ આવે તેમ બકી નાંખ્યું છે, માટે અહિં તેઓએ જે ગંપગોળો ગળાડાવ્યો છે તેમાં કેટલું સત્ય છે તેની પરીક્ષા ઐતિહાસિક દૃષ્ટિથી કરવાની જરૂર છે.

પ્રસ્તુત વિષયમાં વિવાદનો પ્રશ્ન માત્ર એટલોજ છે કે—શ્રીવલ્લભાચાર્યજીની પુત્રી લક્ષ્મીનું કૃષ્ણચૈતન્ય સાથે લગ્ન થયેલું કે નહિ ? પણ આ પ્રશ્નને અંગે ખીજા પણ પ્રશ્નો વિચારવા યોગ્ય છે અને તે એ કે—૧ શ્રીવલ્લભાચાર્યજીને લક્ષ્મી નામની પુત્રી હતી કે નહિ ? ૨ અને હોય તો કૃષ્ણચૈતન્યની સાથે તેનું લગ્ન થયેલું કે નહિ ? ૩ કૃષ્ણચૈતન્યનું લગ્ન ખીજા કોઈ લક્ષ્મીનામની પુત્રી સાથે થયું હતું ? ૪ જો તે લક્ષ્મી નામે કન્યા સાથે હોય અને તે શ્રીવલ્લભાચાર્યજીની પુત્રી સાથે થયું હોય તો તે વલ્લભાચાર્ય કયા ? ૫ શુદ્ધાદૈતવાદી પુષ્ટિપથપ્રવર્તક બ્રહ્મવાદી તે શ્રીવલ્લભાચાર્યજી કે અન્ય કોઈ ?

આ પ્રશ્નના મુખ્ય મુદ્દાઓ તપાસતાં પહેલાં શ્રીવલ્લભાચાર્યજી અને કૃષ્ણચૈતન્યના જન્મકાલ વગેરે તરફ આપણે આપણી દૃષ્ટિ ફેરવી દેઈએ.

શ્રીવલ્લભાચાર્યજીનો જન્મ નિર્વિવાદ રીતે સંવત ૧૫૩૫ માં અગર ઇ. સ. ૧૪૭૯ માં નક્કી થયેલો છે. શ્રીવલ્લભાચાર્યજીની જન્મપત્રિકા જૂહસ્તોત્ર-સરિત્સાગર ભાગ-૨ ના પૃષ્ઠ ૧૪૮ માં આપેલી છે. અને તેના અંતમાં નીચે પ્રમાણે લખ્યું છે. સંવત ૧૫૨૫ શકે ૧૪૦૦ વૈશાલકૃષ્ણે ૧૧ રવૌ ધનિષ્ઠાનક્ષત્રે શુભયોગે વવકરણે एवं પચાક્ષે શ્રીદિનગતસમસ્તરાત્રિગતપટી ૬ । ૪૪ સમયે શ્રીધિકૃત્યે શ્રીદ શ્રીચલ્લભાચાર્યપ્રાકટયમ્ । સદ્ગત લલ્લભાષ પ્રાણુવલ્લભદાસ પણ પોતાના વલ્લભચરિત્રમાં તેમજ અંગ્રેજીમાં તે સાલ આપે છે. તેમના અંગ્રેજી પેન્ડેલેટમાં નીચે પ્રમાણે લખેલું, Vallabhacharya who was a high caste Brahmin, who born in Cham-

paranya near Rajim of the Raipur district in the Central Provinces in A. D. 1479. "

આ ઉપરથી શ્રીવલ્લભાચાર્યજીનું પ્રાકટય સંવત ૧૫૩૫ ગણાય છે અને સન ૧૪૭૬ છે, એટલે તેમાં ૫૬ ઉમેરીએ તો ૧૫૩૫ થાય. કૃષ્ણચૈતન્યનો જન્મકાલ તેમના જીવનચરિત્રોમાં ૧૪૮૫ નો સન છે. મી. આઉઝ બંગાલી વૈષ્ણવો સંબધી લખતાં નીચે પ્રમાણે આપે છે; He (Chaitanya) was born in Nadia in Bengal in A. D. 1485. આ ૧૪૮૫ની ઇ. સ. માં ૫૬ વર્ષ ઉમેરતાં ૧૫૪૧ જન્મસંવતનો કાલ કૃષ્ણચૈતન્યનો ગણાય. આ બંને કાલ સાથે ગિલકુલ વાંધો નથી.

હવે આ બંને જન્મ સંવતો લઈને લક્ષ્મીપુત્રીનાં લગ્ન સંબધ ઐતિહાસિક અસંગતિ (Historical inconsistency) કેટલી છે તે આપણે તપાસીએ. વસ્તુતઃ દલીલ તો એવી સિદ્ધ થયે કે શ્રીવલ્લભાચાર્યજીની લક્ષ્મી નામની પુત્રી જ નહોતી. તેમ છતાં દલીલ ખાતર તે હતી એમ માનીએ તો પણ નીચે પ્રમાણે ઐતિહાસિક અસંગતિનો બાધ આવે છે.

કૃષ્ણ ચૈતન્ય. (જન્મ સંવત ૧૫૪૧.)

શ્રીવલ્લભાચાર્ય—(પ્રાકટય સંવત ૧૫૩૫ લગ્ન (શ્રીવલ્લભદિગ્વિજય તથા લ. પ્રા. કૃત શ્રીવલ્લભચરિત્રના આધારે) ૩૦ વર્ષની વયે—સંવત ૧૫૬૫.)

(લગ્ન પછી ધારે કે પુત્રીનું પ્રાકટય થયું અને તે પુત્રીનું નામ લક્ષ્મી હઈ તો) પુત્રીનો જન્મ સંવત ૧૫૬૬.

લક્ષ્મી સાથે કૃષ્ણચૈતન્યનું લગ્ન.

અર્થાત્ પોતાની ૧૫૪૧-૧૫૮૧=૪૦ વર્ષની વયે લક્ષ્મી નામની પુત્રી સાથે લગ્ન કરેલું હોયું જોઈએ.

(શ્રીગોપીનાથજી પ્રથમ પુત્ર પ્રાકટય સંવત ૧૫૮૨) ‘‘પ્રબંધિત્ર’’ અને ‘‘પારસીમાં’’ લખનાર પુષ્ટિમાર્ગનિ-દક ટીકાકારના કથન પ્રમાણે શ્રીવલ્લભાચાર્યની પુત્રી લક્ષ્મી મોટી ઉમ્મરની કોઈ પણ લેતું નહોતું, માટે કૃષ્ણચૈતન્યને પરણાવી. આ ટીકાના આધારે વિચાર કરતાં તે પુત્રીની મૂલ વયતની ઉમ્મર આઠામાં આઠી ૧૫ વરસની અવશ્ય હોવી જોઈએ એટલે ૧૫૬૬+૧૫=૧૫૮૧.

ઉપરની દલીલ પ્રમાણે શ્રીવલ્લભાચાર્યજીને લક્ષ્મીનામનાં પુત્રી હોય તો તે પુત્રીનું લગ્ન સંવત ૧૫૮૧ માં એટલે કૃષ્ણચૈતન્યની ૪૦ વર્ષની વયે થયું હોયું જોઈએ.

પણ ‘શુજરાતી’ સાહિત્યપૂર્તિના લેખમાં જણાવ્યા પ્રમાણે પૃન્દાવનંદાસના ચૈતન્યલાગવત અનુસાર અને કવિ કણ્ડાપુરના સંસ્કૃત ‘‘ચૈતન્યચંદ્રોદય’’ નાટક અનુસાર શ્રીચૈતન્ય સંસાર ત્યજીને ૨૪ વર્ષની ઉમ્મરે ‘સંન્યાસ’ ગ્રહણ કર્યોની હકીકત જણાવી છે. વળી મી. આઉઝ પણ એ મતને મજબૂત આવે છે. તેમજ સાધુચરણપ્રસાદકૃત (નવીયાની હકીકતમાં) ‘‘ભારત ભ્રમણના લાગ ૩ જમાં’’ ‘‘જે જ હકીકત મળે છે; અર્થાત્ ચૈતન્યે પોતાની ૨૪ વર્ષની ઉમરે સંન્યાસ

લીધો. ઉપર આપણે જોયું કે ૪૦ વર્ષની ઉંમરે લક્ષ્મી નામની વહુભાચાર્યની છોકરી સાથે લગ્ન કરે છે. અને હવે આપણને તેમના ચરિત્રનિરૂપકો ૨૪ વર્ષની ઉંમરે ચૈતન્યે સંન્યાસ સ્વીકારવાની હકીકત નિવેદન કરે છે. આ બંને વચ્ચે કેટલો બધો પરસ્પર વિરોધ છે? આ ઐતિહાસિક અસંગતિથી કૃષ્ણચૈતન્યના, વહુભાચાર્યની પુત્રી (?) લક્ષ્મી સાથેના લગ્નને બાધ થાય છે. અર્થાત્ શ્રીવહુભાચાર્યજીની લક્ષ્મી નામની પુત્રી સાથે તેમનું લગ્ન સંભવી શકતું જ નથી.

૨ શ્રીચૈતન્યના ચરિત્ર નિરૂપકો કહે છે કે:—ચૈતન્યનો જન્મ નદીયામાં (બંગલામાં) થયો હતો અને ત્યાં વહુભાચાર્યની પુત્રી લક્ષ્મીને જોઈને મોહિત થયા. (જુઓ વેપ્પુલ ધર્મનો ઇતિહાસ) આ દલીલથી બ્રહ્મવાદી શુદ્ધદ્વૈતપ્રતિપાદક શ્રીવહુભાચાર્યજીની પુત્રી લક્ષ્મી હોવાનો સંભવ બની શકતો નથી, કારણ કે શ્રીવહુભાચાર્યજીએ કોઈ પણ સમયે બંગાળાનો પ્રવાસ કરેલો નથી.

શ્રીવહુભાષ્યાન બીજામાં ભક્તકવિ ગોપાળદાસ ગાય છે:—

અંગ; બંગ; કલિંગ કેકટ, માગધ, મારુ મુર સિંધ.

તે તામસનાં અથ હર્યા, પ્રતાપ પદરજગંધ.

આ લીટીમાં જણાવેલા દેશો ‘તામસ’ જણાવવાથી આપ કદી પણ ત્યાં પધાર્યા નથી. એટલે નદીયામાં ચૈતન્યની મુગ્ધકાત યવાનો તથા તે સમયે પોતાની લક્ષ્મી નામની પુત્રી (?) નો ચૈતન્ય સાથે મેળાપ યવાનો પણ સંભવ નથી. આથી શુદ્ધદ્વૈતપ્રવર્તક શ્રીવહુભાચાર્યજીની લક્ષ્મી નામની પુત્રી સાથે ચૈતન્યનું લગ્ન થયું નહોતું એ સિદ્ધ થયું.

૩ પણ શુદ્ધદ્વૈતવાદી શ્રીવહુભાચાર્યજીને લક્ષ્મી નામની પુત્રી હતી કે કેમ? આનો ઉત્તર નકારમાં જ હોય. શ્રીવહુભાચાર્યજીને લક્ષ્મીનામની પુત્રી હોય એવો ઉલ્લેખ કોઈ પણ સાંપ્રદાયિક ગ્રંથોમાં ઉપલબ્ધ નથી.

“લક્ષ્મી સતભામા એક અગ્રજની અનુહાર” એ વહુભાષ્યાનની પ્રક્રિયથી શ્રીગુણધંજીના જ્યેષ્ઠ પ્તાતા શ્રીગોપીનાથજીને લક્ષ્મી અને સતભામા એ નામની બે પુત્રીઓ હતી. પણ શ્રીગોપીનાથજીની લક્ષ્મી નામની બે પુત્રીનું પણ ચૈતન્ય સાથે લગ્ન સંભવી શકતું નથી. શ્રીગોપીનાથજીનું પ્રાકટ્ય સં. ૧૫૬૭; લગ્ન ધારો કે ૨૦ વર્ષની વયે; એટલે સંવત્ ૧૫૮૭ માં, લક્ષ્મી પુત્રીનું પ્રાકટ્ય બીજે વર્ષ લેતાં સં. ૧૫૮૦; આ લક્ષ્મીનું લગ્ન ચૈતન્ય સાથે હોય તો તે લગ્નવખતનું તેનું વય ૧૫ વર્ષનું હોવું જોઈએ. કારણ કે મોટી ઉંમરે ચૈતન્ય સાથે લગ્ન કરેલું એવું વિરોધીઓનું કહેવું છે. એટલે લગ્નની સંવત્ ૧૫૮૬+૧૫=૧૬૦૧. ચૈતન્યનો જન્મ ૧૫૪૧ માં છે. એ તેનું લગ્ન શ્રીગોપીનાથજીની પુત્રી લક્ષ્મી સાથે હોય તે સંવત્ ૧૬૦૪ માં હોવું જોઈએ. અર્થાત્ ૬૩ વર્ષની ઉંમરે હોવું જોઈએ; પણ પોતે ૨૪ વર્ષની વયે સંન્યાસ ગ્રહણ કર્યો છે તે જાબત ૨૫૪ થઈ છે, તેમજ તેમનું અવસાન સંવત્ ૧૫૮૩ માં થયું છે. એટલે ૧૬૦૪ માં લગ્ન થાય એ વાત

“ અ-પુષ્પ ” અગર વંધ્યાપુત્રનેવીજ છે. એટલે એ લક્ષ્મી શ્રીગોપીનાથજીની પુત્રી હોઈ શકે શકે નહિ. શ્રીવલ્લભાચાર્યજીને એ પુત્રો સિવાય કોઈ પણ પુત્રીજ નહોતી. એટલે મૂલં નાસ્તિ કુતઃ શસ્ત્રા? એ નિયમ પ્રમાણે શ્રીવલ્લભાચાર્યજીને પુત્રીજ ન હોય, તો પછી ચૈતન્ય સાથે લગ્ન શી રીતે સંભવી શકે ?

૪ મી. આઉઝ પણ However that may be, when he had arrived at the age of 24.....as a religious teacher, એ વાક્યમાં However that may એ શબ્દોથી વલ્લભાચાર્યજીની લક્ષ્મી નામની પુત્રીનાં ચૈતન્ય સાથેનાં લગ્ન સંબંધમાં તે શંકા દર્શાવે છે.

ભારતભ્રમણ ભાગ ૩ માં આણું સાધુ ચરણદાસ પૃ. ૭૪૪ (૧૨૮) નીચે પ્રમાણે લખે છે:—મહાપ્રભુને સન ૧૪૮૫ ઇસ્વીમાં નદીયાં કે જગન્નાથમિત્ર વ્રાહ્મણની છાંકે ગર્ભસે જન્મ લીધા । વહ સંપૂર્ણ વંગાલ ઔર ઉડીસેમાં વિષ્ણુકી ભાક્તિકા ઉપદેશ કરતે હે । ઉન્હોનેં એકસત્તકી પુત્રીસે જપના વિવાહ ક્રિયા થાં કિન્તુ ૨૪ વર્ષકી અવસ્થામેં વહ ગૃહકો છોડકર ઉડીસેમેં ચલે ગયે.

આ ફકરો ઐતિહાસિક ગવેષણાપૂર્વક સાધુચરણદાસે લખેલો છે, આમાં કૃષ્ણચૈતન્યનું લગ્ન એક સંતની પુત્રી સાથે થયેલું એમ સ્પષ્ટ લખેલું છે. આથી શ્રીવલ્લભાચાર્યની લક્ષ્મી નામની પુત્રી સાથે શ્રીચૈતન્યનાં લગ્નનો નિષેધ કયો છે. આમ છતાં જો ચૈતન્યભાગવતના આધારે તેમનું લગ્ન ‘લક્ષ્મી’ અને ‘વિષ્ણુપ્રિયા’ એમ બન્ને સાથે થયેલું માનીએ, તો પણ ઉપર જણાવેલાં કારણોની પ્રહારવાદી શ્રીવલ્લભાચાર્યજીની લક્ષ્મી નામની પુત્રી સાથે તે સંભવી શકતું નથી, કોઈ અન્ય એ નામના હોવા ભેધએ.

ઉપરની દલીલોથી તારવેલાં અનુમાનો.

૧ શ્રીવલ્લભાચાર્યજીની લક્ષ્મી નામની પુત્રી સાથે શ્રીચૈતન્યનું લગ્ન થયું નથી.

૨ પ્રહારવાદી શ્રીવલ્લભાચાર્યને એ પુત્રો સિવાય પુત્રીજ નહોતી.

૩ લક્ષ્મી સાથે લગ્ન માટે મી. આઉઝ સદેહ દર્શાવે છે.

૪ સાધુચરણદાસ શ્રીચૈતન્યનું લગ્ન ફક્ત એક સંતની પુત્રી સાથે થયાનું કહે છે.

ચૈતન્યનો જન્મ નદીયામાં હોવાથી તથા પ્રહારવાદી શ્રીવલ્લભાચાર્યજી કહિ પણ નદીયાના પ્રવાસે ગયેલા નહિ હોવાથી નદીયામાં કૃષ્ણચૈતન્ય જે લક્ષ્મી નામની છોકરીના મોહમાં પડે છે તે વાત તદ્દન ખોટી ને નિર્મૂળ છે.

ઉપરની ઐતિહાસિક સંશોધનપૂર્વક આપેલી દલીલોથી સંપ્રદાયના વિરોધીઓએ જે ગપગોળા ચલાવ્યા છે અને શ્રીવલ્લભાચાર્યજી વિરુદ્ધ કાઢવ દેવકવા માંડયો છે તેમાંની સત્ય હકીકત નિષ્પક્ષપાત વાંચનાર કદબી શકશે, હાલ આટલુંજ બસ છે.

શ્રીકૃષ્ણચૈતન્ય:

(લેખક:—પ્રોફેસર શ્રીયુત ગ્રાન્ટ્સ લેકીંગવિન્ડ લઈ M. A.)

તા. ૧-૧૧-૨૫ ના “ ગુજરાતી ” ના અંકમાં શ્રીવલ્લભાચાર્યજી અને કૃષ્ણ-ચૈતન્યના સંબંધમાં મારા સ્નેહી લાઇ જેઠાલાલનો લેખ વાંચ્યો. આ વિષયમાં મેં પણ જેટલાંક ઐતિહાસિક સાધનો એકઠાં કર્યા હતાં. આમાનાં ઘણાંખરાનો ઉપયોગ તા. જેઠાલાલે સ્વતંત્ર રીતે કર્યો છે. આકીનાં સાધનો નીચે આપવામાં આવ્યાં છે:—

ચૈતન્ય-જેટલાંક વર્ષ લગ કર્યું તે પ્રશ્ન વિચારવા જેવો છે. એ મત પ્રમાણે ચૈતન્યનું લગ્ન ચૌદમે કે પંદરમે વર્ષે થયું. (જુઓ The Chaitanya movement by M. T. Kennedy, M. A. 1925, p. 15. ‘ Soon after his (Chaitanya's) father's death, when the boy was only 14 or 15 years of age, he married and became a house-holder, ’) જીન મત પ્રમાણે તેમનું લગ્ન અઢારમે વર્ષે થયું. (જુઓ Vaisnavism etc. etc. by Sir R. G. Bhandarker, 1913, p. 83 ‘ when he (Chaitany) was eighteen years of age he married a wife of the name of Lachmi Dabi.....) આ બે મતમાંથી એટલું તો પ્રતીત થાય છે કે ચૈતન્યનું લગ્ન ચૌદથી અઠાદ વર્ષની અંદર થયેલું હોવું જોઈએ, આ પ્રમાણે જ્યારે ચૈતન્યનું લગ્ન થયું ત્યારે પુષ્ટિમાર્ગપ્રવર્તક શ્રીવલ્લભાચાર્યજીની ઉંમર વીસથી છઠ્ઠીસ વર્ષ સુધીની હોવી જોઈએ. [શ્રીવલ્લભાચાર્યજીનો જન્મ ઇ. સ. ૧૪૭૯, ચૈતન્યપ્રભુનો જન્મ ઇ. સ. ૧૪૮૫ (સી. કેનેડીના મતે ઇ. સ. ૧૪૮૬)] શ્રીવલ્લભાચાર્યજીએ ત્રીસમે વર્ષે લગ્ન કર્યું હતું એમ સાંપ્રદાયિક પુસ્તકો ઉપરથી જણાય છે. આ ઉપરથી એટલું તો નિર્વિવાદ સિદ્ધ થાય છે કે ચૈતન્યના લગ્ન સમયે શ્રીવલ્લભાચાર્યજી બ્રહ્મચર્યપ્રથમમાં હતા, પછી એમની પુત્રીને પરણવાનો અવસર જ્યાં રહ્યો ! એ વાત અર્ધનગર જેવીજ લાગે છે.

હવે બીજી વાત. જેટ ઇંક ઐતિહાસિક પુસ્તકો વાંચતાં મલમ પડે છે કે ચૌરાંત મહાપ્રભુ ચૈતન્યના સસરાનું નામ વલ્લભાચાર્ય હતું અને તે નદિયામાંજ રહેતા. સસરાનું નામ વલ્લભાચાર્ય અને પુષ્ટિમાર્ગ-પ્રવર્તકનું નામ શ્રીવલ્લભાચાર્ય, આ નામના માત્ર સામ્યથી શ્રાન્તિ થઈ કે પુષ્ટિમાર્ગીય આચાર્ય શ્રીવલ્લભાચાર્યજી ચૈતન્યના સસરા થાય થાય પણ વસ્તુસ્થિતિ એમ નથી. આ વિષે Dr. T. Farquhar, M. A. D. Litt, પોતાના An outline of the religious literature of India, 1920 નામના પુસ્તકના ૩૧૨ માં પૃષ્ઠ ઉપર નીચે પ્રમાણે લખે છે:— ‘ But he (Vallabhacharya) was not his (Chaitanya's) father-in-law the two men had the same name, but that is all the basis that the story has. ’ આ ઉપરાંત ‘ The Chaitanya movement, 1925 ’ નામના પુસ્તકમાં ૧૫ માં પૃષ્ઠ ઉપર સી. કેનેડી લખે છે કે:— ‘ Owing to the fact

of his (Chaitanya's) father-in-laws name being Vallabhacharya, it has been stated in various English works that Chaitanya was son-in-law to the founder of the Vallabhacharyas; and, because of this fact a relationship has been traced between the two sects. *This is pure fiction*, as Chaitanya's father-in-law was a Nadia house-holder, while the founder of the Vallabhacharyas was not only from the Deccan, but was a contemporary of Chaitanya himself."

આ સર્વ ઉપરથી નીચેની જે વાત નિર્વિવાદ સિદ્ધ થાય છે:—

(૧) બંગાલાના કૃષ્ણચૈતન્યનાં લગ્ન વખતે પુષ્ટિમાર્ગપ્રચારક શ્રીવલ્લભાચાર્યજી બ્રહ્મચર્યાવસ્થામાં હતા.

(૨) કૃષ્ણચૈતન્યના સસરાનું નામ વલ્લભાચાર્ય હતું અને તેથી જ ચૈતન્ય શ્રીવલ્લભાચાર્યજીના જમાઈ હતા એમ જાણ થયો.

હવે આ જે સિદ્ધ વસ્તુથી સ્પષ્ટ થયે કે શ્રીવલ્લભાચાર્યજી અને ચૈતન્યનો સંબંધ સસરા જમાઈનો નહોતો. એ વાત બ્રાહ્મિણી જ પ્રચલિત થઈ છે, એમ સુરા વાચકને જણાયા વિના નહિ રહે.

શ્રીવલ્લભાચાર્યજી અને કૃષ્ણચૈતન્ય.

(લેખક: પ્રોફેસર શ્રીયુત જેઠાલાલ ગોવર્ધનદાસ શાહ એમ. એ.)

સાહેબ, ગત "શુન્દરાતી" ના અંકમાં મારા ફેરફારો રા. ભટ્ટ એમ. એ. તથા મી. ભટ્ટાચાર્યનાં પત્રો મેં વાંચ્યા છે. રા. ભટ્ટાચાર્યનાં ચર્ચાપત્રો એક જ અંકમાં પ્રસિદ્ધ થયેલાં જોઈને હું થોડો ખુશી થયો છું. દારણ કે મારા કથનને વધુ સમર્થન આપનાર સત્જનક પુરાવા રા. ગોવિંદલાલ ભટ્ટે આપેલાં છે. એટલે જો મી. ભટ્ટાચાર્ય તે ચર્ચાપત્ર આવધાનતાથી વાંચી જોશે, તો તેમને આ વિષયમાં કોઈ પણ શંકાને સ્થાન નહિ રહે.

મી. ભટ્ટાચાર્યને મારે જણાવવું જોઈએ, કે જો તમે ઇતિહાસના સત્યને કબુલતા હો તો રા. ભટ્ટની દલીલને તથા તેમણે આપેલાં ઐતિહાસિક પ્રમાણોને કબૂલે જ તમારો છૂટકો છે. તેમાંથી એક પણ મારા આપેલાં અનુમાનથી વિરુદ્ધ અનુમાન તારવી શકાય એમ નથી.

મેં જે દલીલો આપી છે તે કેવલ સાંપ્રદાયિક ગ્રંથોમાંથી નથી આપી હલદું શ્રીકૃષ્ણચૈતન્ય સંબંધી જે સાહિત્ય પ્રકટ થયેલું છે તેમાંથી પ્રમાણભૂત સંવતો લઈને, મારા કેસને મજબુત કર્યો છે. ભારતવ્રમણ, મી. આઉઝ, તથા ડૉ. Farquhar તથા મી. Kennedy જેવા ઐતિહાસિક સંશોધનમાં રસ લેનાર તથા સત્યને સમજનાર ગૃહસ્થોના આ બાબતમાંથી પૂરાવા એકઠા કરવામાં આવ્યા છે.

વૃંદાવનદાસના ચૈતન્યભાગવતમાં શ્રીચૈતન્યનું લગ્ન વલ્લભાચાર્યની લક્ષ્મી નામની પુત્રી સાથે થયું હતું એમ જ કહેવામાં આવ્યું છે; અને તેના ખુદ્દનમાં

મેં મારા લેખમાં સ્વતંત્ર પ્રમાણો આપ્યાં છે. તેમાંથી મેં મુખ્ય મુદ્દાઓ તારવેલા. (૧) શ્રીકૃષ્ણચૈતન્યનું લગ્ન શ્રીવલ્લભાચાર્યજીની પુત્રી લક્ષ્મી સાથે થયું નથી. આ દલીલને બાબુ સાધુચરણદાસના ભારતખ્રમણમાં આપેલી હકીકતથી વધારે ટેકો મળે છે. કારણ શ્રીકૃષ્ણચૈતન્યનું લગ્ન એક સંતની પુત્રી સાથે થયેલું એમ બાધાભારે કહેલું છે. (૨) બીજું અનુમાન એ છે કે જે વલ્લભાચાર્યની પુત્રી સાથે લગ્ન થયેલું એવી દલીલ ઘડીલર દલીલ ખાતર માની લઇએ તો પણ અહિં નામના સંબંધથી પુષ્ટિમાર્ગસંસ્થાપક પ્રદ્ધવાદી શ્રીવલ્લભાચાર્યજી તો ન જ હોઈ શકે, કારણ કે જે શ્રીકૃષ્ણકૃષ્ણચૈતન્ય અને પ્રદ્ધવાદી શ્રીવલ્લભાચાર્યજી અમદાવાદીન હતા, છતાં ચૈતન્યના લગ્નની સંવતો મળતી નથી, તેથી ઇતિહાસ દિધી દાલની અસંગતિ આવે છે.

આ વલ્લભાચાર્ય અને પુષ્ટિમાર્ગપ્રવર્તક શ્રીવલ્લભાચાર્યજી એક ગણવા નહિ આ સંબંધી ફકરાઓ મારા મિત્ર રા. ભટે મી. કેનેડીના "The Chaitany movement" નામના પુસ્તકમાં પૃ. ૧૫ ઉપર આપેલા, તેનું અવતરણ કર્યું છે, તે પુનઃ વાંચવાને મી. ભટ્ટાચાર્યને હું ભલામણ કરું છું.

મી. ભટ્ટાચાર્ય ! એ ફકરાનું લખાણ પુષ્ટિસંપ્રદાયની વ્યક્તિએ કરેલું નથી, માટે તેને બરાબર આવધાનતાથી વાંચ્યો અને તેનું મનન કર્યો, અને તમે જે પ્રકારે શ્રીવલ્લભાચાર્યજી ઉપર કાઢવ ફેંકીને પરિણામ ઉપભવવાનો દુરાચાર કર્યો છે તેને ત્યજ દેશો.

વૃંદાવનદાસની હકિકત ખોટી છે એવું હું કહેતો નથી, તે છતાં જે તેને કબૂલ કરતા હો તો પણ અમારો મત બિલકુલ એવો નથી. કારણ પ્રદ્ધવાદી શ્રીવલ્લભાચાર્યજીની પુત્રી લક્ષ્મીનું લગ્ન કોઈ પણ રીતે સાબીત થઈ શકતું જ નથી. શ્રીવલ્લભાચાર્યને લક્ષ્મી નામની પુત્રી જ નહોતી. મી. ભટ્ટાચાર્યે ઐતિહાસિક પ્રમાણોથી પોતાનો મત સિદ્ધ કર્યો પડ્યો. ભદ્રંભદ્રની પ્રાચીન શૈલીથી અભ્યાસને સિદ્ધિત વર્ગ તેમના કથનોમાં તથા અનુમાનોમાં શ્રી મૂઢી શક્યો નહિ; ઉલટા એવા પ્રયત્નો તકના અભાવને લીધે હાસ્યાસ્પદ લેખાયો.

હવે મી. ભટ્ટાચાર્ય જે એવું કહે છે કે શ્રીવલ્લભાચાર્યનો સંવત સદ્ગત લક્ષ્મીબાઈના જીવનચરિત્રમાં આપેલો છે તે આધુનિક અગર કાલ્પનિક છે; તે વિષે હું તેમને જણાવીશ કે તે વાતમાં કાંઈ પણ વલ્લુદ નથી. શ્રીશંકરાચાર્યનો જન્મ વગેરેની બાબતમાં કાલગણના માટે વિદ્વાનોમાં એકમત એવામાં આવતો નથી પણ શ્રીવલ્લભાચાર્યજી સંબંધમાં એવું બન્યું નથી. શંકરાચાર્યની કાલગણનામાં હજારો વર્ષોના મતભેદ વિદ્વાનોમાં દિગ્વિચર થાય છે પણ શ્રીવલ્લભાચાર્યના જીવનપ્રસંગોના ઉલ્લેખો જે જે એવદેશીય અગર યુરોપીય વિદ્વાનોએ કરેલા છે તેમાં ચોક્કસ સંવતો મળી આવે છે, તેથી મી. ભટ્ટાચાર્યને તેમના સાચીઓને એ બાબત ન.

કાંઈ પણ શંકા લેવા જેવું નથી. સદ્ગત લલ્લુભાઈએ જે સંવત લીધો છે તે એમના મગજમાંથી ઉપજીવી કાઢ્યો નથી પણ તેમની પહેલાંના પ્રાચીન લેખોમાં આપેલા સંવતોજ તેમણે લીધા છે.

શ્રીદ્વારકેશજી નામના ગોસ્વામી આજથી ૧૫૦ વર્ષ ઉપર થઈ ગયા, તેમણે મૂલ પુરુષ નામનો ગ્રંથ લખ્યો છે તેમાં પણ સંવત ૧૯૩૫ ની સંવત આપી છે, ધન્ય સંવત પંદ્રહા, પેતીસ માધવ માસ છે:

કૃષ્ણ એકાદશી શ્રીવલ્લભ પ્રકટ વદન વિલાસ છે.

વળી બીજા પ્રાચીન પદમાં પણ તેજ સંવત દિગ્ગોચર થાય છે.

તરવ^૧ શુભ^૨ બાણ^૩ ભુવિ^૪ માધવાસિત તરણિ પ્રથમ ભગવંદ દિવસ પ્રકટ લઈમન સુવન, ધન્ય સંપારણ્ય મન ત્રેલોક જન અન્ય અવતાર હોય છે ન એસો ભુવન !

આ પંક્તિ પ્રમાણે ભૂ=૧, બાણ=૫, શુભ=૩, અને તરવ=૫, સંખ્યા લેતાં સંવત ૧૫૩૫ નીકળે છે.

સગુણદાસજી શ્રીમહાપ્રભુજીના સમકાલીન હતા, તેમણે શ્રીવલ્લભાચાર્યજીની વધાઈઓ માઈ છે, તેના આધારે તથા ‘નિજ વાર્તા તથા ધરૂ વાર્તા’ તેમજ શ્રીગિરિધરજીનાં વચનામૃત વગેરેના આધારે એજ સંવત નક્કી થયેલો છે; અને “જન્મપત્રિકા” માં એજ સંવત આપણે જોઈએ છીએ. તેથી સદ્ગત લલ્લુભાઈએ જ આ સંવત જાહેરમાં મૂક્યો છે એ કહેવું હરહરતું ભૂલું છે ! ભારતભ્રમણ ભા. ૧ નાં પૃષ્ઠ=૨૨૬ બાણ સાધુચરણદાસ પણ નીચે પ્રમાણે કહે છે : (આ પુસ્તકના ઉપોદ્ધાતમાં લેખક લખે છે કે તેણે ૧૮૯૧ માં ઐતિહાસિક વિગતોની શોધની નોંધ કરેલી છે, એટલે એમના અભિપ્રાય ૧૯૦૭ પૂર્વના છે.)

મદરાસ દેશ-તૈલંગદેશકે કાંકરવલ્લી ગાંવમે મારદ્વાજ ગોત્ર તૈલંગ બ્રાહ્મણ લક્ષ્મણમટ્ટજી રહતે થે । उन्होंने एक समय काशी-यात्रा की । बिहारप्रदेशके चम्पारण्यमें चौरा गांवके निकट उनकी पत्नी इलमागारुके गर्भसे सम्बत १५३५ वैशाख वदी ११ को श्रीवल्लभाचार्यजीका जन्म हुआ ॥

આ બધી દલીલો ઉપરથી આટલું પ્રતીત થયે કે આ સંવત આધુનિક નથી, તેથી તે સંવતના આધારે જે અનુમાનો અમે ઐતિહાસિક પુરાવાથી આપ્યાં છે તે કોઈ પણ રીતે ખોટાં નથી, પણ અમારી દલીલને તે વધારે મજબુત બનાવે છે.

સદ્ગત લલ્લુભાઈએ શ્રીવલ્લભાચાર્યના જન્મકાલ નક્કી થયો નથી, એવું કોઈ પણ સ્થળે લખ્યું હોય તો તે મેં વાંચ્યું નથી. મી. ભટ્ટાચાર્યે જે તે વાંચ્યું હોય તો સ. લલ્લુભાઈના શબ્દોને જાહેરમાં મૂક્યો, તો તે વિષેના હું મારો અભિપ્રાય આપીશ.

બાકી શ્રીવૃક્ષભાષ્યાંજી જગન્નાથ પધારેલા છે અને અંગાળમાં પધાર્યા નથી, તેનું કારણ કે જગન્નાથ એ ઝોરીયામાં છે. મી. ભટ્ટાચાર્યને ભૂગોળજ્ઞાન પણ ઝોાઈ હોય એવું જણાય છે.

જગન્નાથપુરીમાં શ્રીમહાપ્રભુજી પધાર્યા તે માટે શા માટે પ્રાયશ્ચિત્ત કરે ? અનેક જીવોના ઉદ્ધાર કરવાને પોતે ત્યાં પધાર્યા છે, અને વળી તે પ્રદેશ તામસ નથી. આ વિષેનો પ્રશ્ન કરનાર ભટ્ટાચાર્યની છુદ્ધિની મને ખરેખર હયા આવે છે, તો તેમની સામે હું એમ પણ પ્રશ્ન કરું કે વેદનું પ્રામાણ્ય નહિ સ્વીકારનાર અને છતાં સનાતનધર્મી દહેવડાવનારે પણ શા માટે પ્રાયશ્ચિત્ત કર્યું નહિ ? શ્રીશંકરાચાર્ય અક્ષસૂત્ર ભાષ્યના બીજા અધ્યાયમાં વેદનું પ્રામાણ્ય પણ સ્વીકારતા નથી, તો તેમણે પ્રાયશ્ચિત્ત કર્યું હશે વાં ? આવો પ્રશ્ન પૂછનાર વેદને સમજતોજ નથી. વળી વેદની શ્રુતિઓના letter ને વળગવાનું તે સગર્થ આવ્યથો આપણને કહેતા નથી; પણ તેના સંસ્થાને spirit ને જોવું જોઈએ. વેદપાઠી અગર “પદો પોષટજી અચરે રામ” એવી રીતે વેદનો ઉપયોગ કરનારથી વેદો પણ ત્રાસે છે. જો આ બાબતનો ઉદ્ભવ મી. ભટ્ટાચાર્યે ન કર્યો હોત તો વધારે આંધાત; કારણ કે મૂળ સુદાની સાથે આની કશી પણ સંગતિ નથી.

આખરે સત્ય વસ્તુ સત્ય જ રહે છે. મહાન આવ્યથોની નિંદા કરનાર પ્રયત્નમાં પાછા ફરે છે. જો તે ઇરાદાથી મી. ભટ્ટાચાર્ય અર્ચાપત્રના સુદમાં અપ-લાવતા હોય તો તેમની તે ગાળતમાં ક્ષેત્રી સ્થિતિ ન થાય તે માટે હું ચેતાવવા માંડુ છું.

શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરચરિત્ર.

उन्मिपत्तमुदवाग्धरोचिःपाटला इव दिशो विदधानाः ॥

मोहयन्ति मदयन्ति विदग्धान् विट्ठलेशपदपल्लवभासः ॥ १ ॥

पूर्णसप्तविर्षाणि दिनान्यष्टौ च विज्ञातिः ॥

वसुधायां व्यंराजन्त श्रीमद्वિठ्ठलदीक्षिताः ॥ २ ॥

પ્રાદુર્ભાવમહામહોત્સવ.

શ્રીમદ્ધિકુમાર શ્રોવિઠ્ઠલાધીધરનું પ્રાકટ્ય સંવત ૧૫૭૨ ના મઝ પોષ કૃષ્ણનવમીના પરમ મંગલમયદિને ચલુ હતું. એઓથીના પ્રાકટ્યમહોત્સવનો આનંદ હિંગોઅર કરીને એઓથીના કૃપાપાત્ર મહાનુભાવી શ્રીગોપાલદાસજી શ્રીવૃક્ષભાષ્યાન અન્યમાં તે સુદર રીતે વર્ણવે છે. એવા લોકિક વાણીથી અવર્ણનીય અલોકિક પ્રચરો ગુરુકૃપાભાજન મહાનુભાવી દવિવરો જ. આલેખી ચક્રે છે. એનાં ઉદ્ધરણ-રૂપ ઉક્ત ભગવદીયકૃત વૃક્ષભાષ્યાન છે. શ્રીવૃક્ષભાષ્યાનમાંનું “પોષ મધ્યાહને

નોમે શ્રીનાથજી ? એ પદ આપશ્રીના પ્રાકટયમહામહોત્સવનું એવું ઉત્તમ ચિહ્નિમાં લાવે છે કે મહોત્સવનું સાક્ષાદર્શન કરવા આપણે જાણે હમણાં જ ભાગ્ય શાળી થયા હોઈએ ! આપશ્રીનું પ્રાકટયસ્થળ કાશી પાસે આવેલું ચરણાટ છે આપશ્રીના પ્રાકટય પહેલાં શ્રીમદ્વાચાર્યચરણ જ્યારે પંઢરપુરમાં પધાર્યા હતા ત્યાં શ્રીવિકુંભનાથજી (પાંડુરંગના સેવ્ય) એ સૂચના કરી હતી કે અમારી આપશ્રી ત્યાં નામસ્થાપ્યમારે કરીને પુત્ર તરીકે પ્રકટ થવાની ઇચ્છા છે. અર્થાત્ આપશ્રી ત્યાં જે પુત્ર પ્રકટ થાય તેનું નામ શ્રીવિકુંભનાથજી રાખવાની મારી સૂચના છે શ્રીમદ્વાચાર્યચરણે શ્રીવિકુંભનાથજીની આ સૂચનાને આજ્ઞા તરીકે માન્ય રાખી અને શ્રીપ્રભુચરણનાં પ્રાકટય પછી શ્રીવિકુંભનાથજી એ નામ ધર્યું.

યજ્ઞોપવીત અને વિદ્યાધ્યયન.

શાસ્ત્રોક્ત વિધિને અનુસરીને શ્રીમદ્વાચાર્યચરણે કાશી પાસેના ચરણાદ્રિમાં (ચરણાટમાં) જેને ચૂનારગઢ કહેવામાં આવે છે ત્યાં પધારીને પોતાના બન્ને કુમારો-શ્રીગોપીનાથજી અને શ્રીવિકુંભનાથજીને યજ્ઞોપવીત પ્રદાન કર્યું. યજ્ઞોપવીત સંસ્કાર થયા પછી કાશીમાં મધુસૂદનસસ્તવતી નામના વિદ્યાનું સંન્યાસી પાસે શાસ્ત્રાધ્યયન કરવા માટે શ્રીવિકુંભાધીશને આજ્ઞા કરી. શ્રીવિકુંભાધીશ્વરે અતિવરોધી શાસ્ત્રાધ્યયન પ્રારંભ્યું. વેદ, વેદાંગ આદિનું અધ્યયન સારી પેઠે કર્યું. થોડા સમય પછી એ વિશ્વનાભદ્રની કન્યા શ્રીરુકિમણી સાથે શ્રીવિકુંભાધીશ્વરનાં લગ્ન કર્યા.

પિતૃચરણનો આસુરવ્યામોહ.

આપશ્રીનું વય ૧૭ વર્ષનું થવા આવ્યું. તે અરસામાં પ્રભુની ત્રણવાર આજ્ઞા પ્રયાથી શ્રીમદ્વાચાર્યચરણે નિત્યલીલામાં પધારવાનો નિશ્ચય કર્યો. શ્રીવિકુંભાધીશ્વરને સ્વસન્નીપ બોલાવીને, પોતાના કંઠની આજ્ઞા એજ્ઞાશ્રીના કંઠમાં પધરાવીને માર્ગ સંબંધિ જે કાંઈ ક્ષેત્ર હોય તે શ્રીદામોદરદાસજી આદિ નિજ અંતરંગ લગવદીયો પાસેથી જાણી લેવાનું કહીને પોતે ભક્તિમાર્ગીય સંન્યાસ ગ્રહણ કર્યો. લગભગ ૪૦ દિન સુધી સંન્યાસ સ્વીકાર્યો. સંવત્ ૧૫૮૭ ના આપાદ શુદ્ધ તૃતીયાને દિવસે ગંગાજીના તટ ઉપર પધાર્યો. મધ્યાહ્નનો સમય પાસે આવ્યો. પોતાના બે કુમાર અને અન્ય નિજ સેવકોને શિદ્ધાપ્લોકીથી ઉપદેશ આપ્યો, અને પ્રભુ નિકટ પધારવા વિનય કર્યો. આચાર્યશ્રી ભૂતલ ઉપર પર વર્ષ, ૨ માસ, ૭ દિન સુધી બિરામ્યા.

અઠેલમાં સ્થિતિ.

આચાર્યચરણના આસુરવ્યામોહ પછી શ્રીમદ્વિકુંભાધીશ્વર પિતૃચરણની આજ્ઞા મુજબ અઠેલમાં બિરામ્યા. ત્યાં પ્રભુની સેવા કરતા. જે જે વિજ્ઞાસુ વૈષ્ણવો ત્યાં આવે તેને શ્રીવાકપતિવાકસુધાનું પાન કરાવતા. શાસ્ત્રાર્થ કરવા આવનાર પંડિતો સાથે શાસ્ત્રાર્થ કરીને તેઓના માનનું ખંડન કરતા. અનેક પંડિતો આપશ્રીનાં અપૂર્ણ પાંડિત્ય, પાંખડ મતોનું ઉન્મૂલન કરવાની વેદસિદ્ધ અદ્ભુત સુક્તિ, નિજપક્ષ

સમર્થને કેરવા માટેનું અગાધ બુદ્ધિબલ આદિને અવલોકીને મુગ્ધ બની જતા. આપશ્રીએ અટેવમાં બિરાલને શ્રીમદ્વાચાર્યચરણના અપૂર્ણ રહેલા અંથો-પૂર્ણ કરવાનો પ્રયાસ કર્યો. ગ્રહસૂત્ર ઉપરનાં પિતૃચરણપ્રણીત અલુભાધ્યમાં છેલ્લા દોઢ અંધ્યાય ઉપર ભાષ્ય લખીને અલુભાધ્યન સંપૂર્ણ કર્યું. તત્ત્વદીપનિર્ણયાંતર્ગત લાગવતાર્ય પ્રકરણનો પ્રકાશ પિતૃપાદે તૃતીયસ્કંધ સુધી જે અપૂર્ણ રહ્યો તે અપૂર્ણ પ્રકાશ પંચમસ્કંધ સુધી આપશ્રીએ લખ્યો. પિતૃચરણના શ્રીમુખોધિની આદિ અનેક અંથ ઉપર આપશ્રીએ સુંદર ટીકાઓ લખી, અને તેમ કરીને શ્રીમદ્વાચાર્યચરણની અનવગમ્ય નાળીનો સ્વાદ લેવા દેવસૃષ્ટિને લાભચાળી બતાવી. આપશ્રીએ રચેલા અંથોની ટીપ નીચે પ્રમાણે છે:—

શ્રીવિક્ર્લેશપ્રભુપ્રણીત અંથો.

(૧ વિદ્ય-મંડન, ૨ અલુભાધ્યનો અંતિમ ૧૫ અધ્યાય, ૩ નિર્ણયપ્રકાશ (૩ સ્કંધથી ૫ સ્કંધ સુધી), ૪ શ્રીમુખોધિનીલ ઉપર દિપ્પણી, ૫ લક્ષિતકંઠ, ૬ લક્ષિતહેતુ, ૭ લક્ષિતનિર્ણય, ૮ લક્ષિતજીવન, (૧) ૬ ગીતાપ્રથમાધ્યાયટીકા, ૧૦ ગીતા-તાત્પર્ય, ૧૧ ન્યાયાદેશવિવૃત્તિ, ૧૨ ગીતાહેતુ (૧), ૧૩ માયત્રીકારિકા, ૧૪ પોદ્ધ્ય અંથ ટીકા. (૧ સિદ્ધાંતમુક્તાવલી ટીકા, ૨ ચમુનાદક ટીકા, ૩ નવરત્નપ્રકાશ, ૪ સિદ્ધાં-તારહસ્ય વિવરણ). ૧૫ શૃંગારરસમંડન ૧૬ રસસર્વસ્વ, ૧૭ વ્રતચર્યા, ૧૮ સ્વપ્રકર્શન, ૧૯ ગુપ્તરસ, ૨૦ સેવાદ્વિષ્ટ, ૨૧ પુરુષોત્તમપ્રતિષ્ઠાપ્રકાર, ૨૨ શ્રીસર્વોત્તમસ્તોત્ર, ૨૩ શ્રીવલ્લભાદક, ૨૪ સ્ફુરતકૃષ્ણપ્રેમામૃત, ૨૫ શ્રીજોકુલાદક, ૨૬ સ્વામિન્યદક, ૨૭ સ્વામિનીસ્તોત્ર, ૨૮ ભુવંગપ્રયાતાદક, ૨૯ લલિતત્રિલંગસ્તોત્ર, ૩૦ શ્રીચમુના-દપદી, ૩૧ આર્યા, ૩૨ વિનયિ, ૩૩ પ્રબોધ, ૩૪ ચતુઃસ્તોત્રી, ૩૫ પ્રેમામૃતભાષ્ય, ૩૬ વૃત્તામૃતચતુઃસ્તોત્રીટીકા, ૩૭ પ્રેમપર્યટશયનમ્, ૩૮ મંગલમંગલમ્, ૩૯ લાવેર-કુરિતમ્, ૪૦ સૌન્દર્યનિજહૃદયતમ્, ૪૧ ગદ્યાર્થ, ૪૨ જન્માદમીનિર્ણય, ૪૩ રાગનવમીનિર્ણય. ૪૪ ગીતગોવિન્દપ્રથમાદ્યપદીટીકા, ૪૫ આદ્યારનિરૂપણ, ૪૬ પત્રો, ૪૭ રક્ષામરણમ્.

ઉપર જણાવેલા અંથો ઉપરાંત શ્રીમદ્લાગવતના સ્તોકો, શ્રીમુખોધિનીલ, આદિ ઉપર પ્રકીર્ણ લેખો ઘણા છે.

આપશ્રીનો સુદ્રલેખ.

જાનીત પરમં તત્ત્વં યત્તોદોત્સાહલાલિતમ્ ।

તદન્યદિતિ યે માહુરામૃતાંસ્તાનદો બુધાઃ ॥૧॥

શ્રીમદ્વાચાર્યચરણ અને તેઓશ્રીના સેવકોપ્રતિ અનન્ય ભાવ.

શ્રીમદ્વાચાર્યચરણ અને તેઓશ્રીના સેવકો પ્રતિ શ્રીશુદાંઠલનો ભાવ અવલું-

૧૧૫ માં નંબરની ૧૮ નંબર સુધીના પ્રત્યેમાં ૧૧-૧૭ એક છે, અને તેનો સમાવેશ ૨૫ માં નંબરમાં કરી ગયો છે.

નીચળ છે. શ્રીવલ્લભાષ્ટકમાં શ્રીમહાપ્રભુજીનાં સ્વરૂપની ઝાંખી કરતાં જણાય છે કે આપશ્રીજી શ્રીવલ્લભાધીશ્વરનું સ્વરૂપ બાણવાં સમર્થ છે. પોતેજ પોતાનું સ્વરૂપ બલે; અન્ય ક્યાંથી બલે ? શ્રીમહાપ્રભુજીનાં શ્રીદામોદરદાસાદિક સેવકો પ્રતિ આપશ્રીનો ભાવ અત્યદ્ભુત હોય એમ જણાય છે. આપશ્રી એક વેળાએ બાલ્યાવસ્થામાં ખેલી રહ્યા હતા, ત્યારે શ્રીદામોદરદાસજીએ આજ્ઞા કરી કે ‘ખાવા, ચહેં માર્ગ ખેલવે કુદવેકા નહિ હે.’ શ્રીમહાપ્રભુ જેમના હૃદયમાં ખિરાજે છે એવા એક અનન્ય સેવકની આજ્ઞાને શ્રીમસ્તક ઉપર ચઢાવીને આપશ્રીએ હસ્તપરવશતા પ્રકટ કરી છે. શ્રીકૃષ્ણદાસ અધિકારીએ આપશ્રીની પ્રભુસેવા બંધ કરી ત્યારે પણ આપશ્રીએ એ અધિકારીની આજ્ઞાને માન આપીને પ્રભુવિપ્રયોગનો અનુભવ કર્યો. આપે સમર્થ હોઈને પણ શ્રીમહાપ્રભુજીના સેવકની આજ્ઞાને અનાદર ન કર્યો. આપશ્રીએ પ્રભુસેવા છુટી જવાથી છ માસ પર્યંત પ્રભુવિરહનો અનુભવ કર્યો છે. એ સમયમાં પ્રભુને આપશ્રીએ વિરસિપત્રો લખ્યા છે. એ પત્રો ‘વિરસિ’ એ નામથી અત્યારે પણ પ્રસિદ્ધ છે. આ વિરસિપત્રો એટલા તો હૃદયવેધક છે કે તેના અર્થનું અનુસંધાન માત્ર યતાં રોમાંચ શરીર થઇ જાય અને સાથુ નેત્ર ખળી જાય છે. આ ઉપરાંત આપશ્રીએ અનેક પત્રો સ્વળાલકો ઉપર પણ લખેલાં છે.

ભારતમાં પર્યટન—આપશ્રી આર્યોવર્તના કયા કયા સ્થલમાં પધાર્યા હતા તે નીચે લખેલી આપશ્રીની બેઠક ઉપરથી જણાશે.

૧ શ્રીગોકુલમાં બે બેઠક છે. ૨ શ્રીવૃંદાવન. ૩ શ્રીકુંડઉપર. ૪ પરાસોલીમાં. ૫ ચંદ્રસરોવર ઉપર, ૬ ગોપાલપુરમાં ૭ કામવનમાં, ૮ પ્રેમ સરોવર ઉપર, ૯ સંકેતવટ, ૧૦ રિટોરામાં, ૧૧ ઠરેલા; ૧૨ કોટવનમાં, ૧૩ ચીરઘાટમાં, ૧૪ વત્સવનમાં, ૧૫ વેલવનમાં, ૧૬ ચરનાટમાં, ૧૭ અઢેલમાં, ૧૮ ગોઠ દેશમાં (નારાયણદાસજીના ઘરમાં.) ૧૯ સોરમજીમાં, ૨૦ ગોધરામાં, ૨૧ અલીયાના (મહુધા) દર અસારવામાં (સાજનગર), ૨૩ ખંભાતમાં, ૨૪ જામનગરમાં, ૨૫ ગંગા ગોડગઢ (જળલપુર પાસે), ૨૬ દારકામાં, ૨૭ સમજીના મંદિરમાં (દારકાની પાસે) ૨૮ શુરવટમાં.

ઉપર પ્રમાણે શ્રીગુણાંજીની ૨૭-૨૮ બેઠકો છે. ઉપરથી સહજ જણાશે કે આપશ્રીએ ભારતવર્ષનાં ઉક્ત સ્થળોને પવિત્ર કર્યાં હતાં, મુશ્યેય આધનોનાં અભાવથી તે તે સ્થળોમાં પધાર્યાના દિનો અને ચરિત્રોની નોંધ યથાસ્થિત આપવી એ કાર્ય અસંભવિત છે. જે કાંઈ લખેલું મળ્યું, તેને સંક્ષેપમાં અત્રે ઉતાર્યું છે.

આપશ્રીના અનન્ય સેવકો—આપશ્રીએ અનેક જીવોને શરણે લીધા છે. આપશ્રીના મુખ્ય કૃપાપાત્ર વૈષ્ણવોનાં ચરિત્રોનું ‘વર્ણન’ ‘ખસો બાવન વૈષ્ણવોની વાર્તા’ માં છેજ. શ્રીમહાપ્રભુજીના કૃપાપાત્ર જેમ સૂરદાસજી, શ્રીપરમાનંદદાસજી, શ્રીકૃષ્ણદાસજી, શ્રીકુંભનદાસજી એ ચાર સખા છે, તેમ શ્રીપ્રભુચરણના કૃપાલાબન મણુ શ્રીનંદદાસજી, શ્રીચતુર્બુજદાસજી; શ્રીછીતરંગામી એ મુખ્ય ચાર સખા છે,

એમ વાર્તાપ્રાંગ ઉપરથી જણાય છે. આ અદ્દ ભગવદીયોના લીલાવિષયક કીર્તનો પ્રમુખમક્ક ગવાય છે અને તેને આશય દૃઢ્યને રસાદ્ર કરે છે.

આપશ્રીનો પરિવાર—આપશ્રીનાં પ્રથમ પત્નીનું નામ શ્રીરુકિમળીવદ્દલ અને દ્વિતીય પત્નીનું નામ શ્રીપદ્માવતીવદ્દલ. શ્રીરુકિમળીવદ્દલથી નવ પુત્ર અને નવ પુત્રી પ્રકટયાં હતાં. ત્રણ પુત્રોએ આલપણમાંજ લીલા કરી હતી. તેમજ પાંચ પુત્રીઓ પણ લીલામાં પધાર્યાં હતાં. શ્રીપદ્માવતીવદ્દલથી એક પુત્ર પ્રકટ થયા હતા, આપ-શ્રીનો વંશવિસ્તાર આ પ્રમાણે વૃદ્ધિગત ચતો ગયો હતો.

પુત્રરત્ન.

- ૧ શ્રીગિરિધરજી પ્રાકટય સં. ૧૫૬૭ ના કાર્તિક સુદ ૧૨
- ૨ શ્રીગોવિંદરાયજી પ્રા. સં. ૧૫૬૬ ના માર્ગશીર્ષ (મજ) વદ ૮
- ૩ શ્રીભાલકૃષ્ણજી પ્રા. સં. ૧૬૦૬ ના (મજ) આશ્વિન વદ ૧૩
- ૪ શ્રીગોકુકનાથજી પ્રા. સં. ૧૬૦૮ ના માર્ગશીર્ષ સુદ ૭
- ૫ શ્રીરણનાથજી પ્રા. સં. ૧૬૧૧ ના કાર્તિક સુદ ૧૨
- ૬ શ્રીચંદનાથજી પ્રા. સં. ૧૬૧૩ ના ચેત્ર સુદ ૬
- ૭ શ્રીધનરાયજી (શ્રીપદ્માવતીજીના કુમાર) સં. ૧૬૨૮ ના માર્ગશીર્ષ (મજ) વદ ૫૩.

શ્રીમાદભગવદ્ગીતા

શ્રીરુકિમળીવદ્દલથી પ્રકટ થયેલાં બેટીજનો—૧ શ્રીગોખાબેટીજી, ૨ શ્રી યમુનાબેટીજી, ૩ શ્રીકમલાબેટીજી, શ્રીદેવકાબેટીજી.

ઉપર પ્રમાણે આપશ્રીનો વંશવિસ્તાર વૃદ્ધિ પામ્યો. હાલમાં તે આપશ્રીના જ્યેષ્ઠ પુત્ર શ્રીગિરિધરજી ૫૪ પુત્ર શ્રીચંદનાથજી મહાગજનો વંશ બૃત્તવ ઉપર છે.

નિત્યલીલાપ્રવેશ—ઉપર પ્રમાણે દેવી યદિનો ચમુદાર કરીને, જગતમાં સર્વોદ્ધારક ભક્તિમાર્ગનો પ્રકાશ કરીને, જનોને સુખ કરનારા પાખંડમનું ખેંદન કરીને શીમત્રપ્રચરણ સં. ૧૬૪૨ ના માઘ વદ ૭ ના રોજ શ્રીગિરિશંજીની કંઠરામાં પધાર્યાં. શ્રીગિરિધરજી આદિ નિજ ભાવકોને પોતાના શ્રીઅંગ ઉપરનું વસ્ત્ર આપીને તેને આપારે સર્વ વૈદિક ઔષ્ધકૌશિક ક્રિયા કરવાનું જણાવ્યું.

ઉપસંહાર:

આપશ્રીના અલોકિ-દિવ્ય-અસ્ત્રોનું આલેખન થયું હોકિ વાળીથી અસાધ્ય છે, તેમજ એ ચરિત્રની રમ્યમયતા, અનંદમયતા અનુભવેકગમ્ય છે, એટલે અત્રે વિશેષ ન લખતાં વિ:ભીજી.

શ્રીગુણાંજીનો સુન્દરાતનો પ્રવાસ.

[આ પુનિદાસના ઉદ્દેષે પ્રાનિજના મંદિરના નેત્ર અદિપ્રાચીન પુસ્તકમાં છે.]

શ્રીગુણાંજી—જન્મ ૧૬૦૦ માં દારિક દર્શનથી પધાર્યાં. પહેલાં આપ કંદાર પધાર્યાં, આપશ્રીની જાણે શીમત્રપ્રચરણના રોવકો અને શ્રીજી કવરેશીએ પણ

હતાં. હરિવંશજી પણ સાથે હતા. તે વખતે આપશ્રીનું વય લગભગ ૨૦ વષ હતું. (૧૮ વર્ષનું હોતું ભેદજી?) આપશ્રી દારિકા, યાત્રા કરીને ફરી શુભરાત પધાર્યાં. ત્યારે વચ્ચરી ગામમાં રાજા ભારમદા વગેરે ઘણા સેવક થયા અને રાં પુલ્કતા. મામાના ગામમાં કોઠારી જેત, રામા, લીમા એમને ઘેર પોતે પધાર્યાં. યધાની ઉપર અનુગ્રહ કર્યો તે વખતે કોઠારી હરજીવન છ વરસનો હતો ત્યા તેની માએ તેને શ્રીગુસાંઈજીને ચરણે ધર્યો, શ્રીગુસાંઈજીએ કૃપા કરીને તેને અષ્ટ દ્વર મંત્ર આપ્યો. પછી ત્યાંથી આપ વડાલી ગામમાં પધાર્યાં અને ત્યાંથી રાજનગર પધાર્યાં. રાજનગરમાં (અમદાવાદ ગોટું રાજધાનીનું ચહેર હોવાથી) ભગવત્સેવા ઉપયોગી થાય તેવી વસ્તુઓ લેવા પધાર્યાં તે વખતે આપ ઝવેરીની પોળમાં એ પરદેશીનું ઘર કે જે ઘર હરિહટ શાલની ચેરી વચ્ચે હતું, તેમાં આપ બે દિવસ બિરાજ્યા. તે પછી સિકંદરપુરીમાં પાછલી પોળમાં નહુઆ ગોપાલદાસ અં રામદાસ નામે બે ભાઈઓ રહેતા, તે આપના સેવક થયા, એમને ઘેર ૩ દિવસ બિરાજ્યા. એવી રીતે પાંચ દિવસ આપ રાજનગરમાં બિરાજ્યા છે. તે વખતે રાજનગરમાં ચોરા સેવક હતા. પછી આપ અડેલ પધાર્યાં.

વળી સં. ૧૬૧૩ માં આપશ્રી દારિકાજી દર્શનાર્થે પધાર્યાં. તે વખતે આપે ઈંડર દેશ કૃતાર્થ કર્યો. તે પછી જાલા ગામમાં વૈષ્ણવ શંકર સંધાવાધાને થો પધાર્યાં. હરિવંશજી અને કંઠારી આપા સાથે હતા. ત્યાં વચ્છા ભટ્ટ ગોપાલદાસ દર્શનાર્થે આગ્યા, તે પછી આપ અચારવાગાં કોઠારી ભાઈલાલ હરિજીવનને ઘેર પધાર્યાં. બે દિવસ રહીને દારિકા પધાર્યાં તે વખતે શ્રીમહાપ્રભુજીના ઘણા સેવકો સાથે હતા રામદાસ, નાગજી, દવે મહાદેવ ગદા તથા બીજા પણ સેવકો સાથે હતા. એ પ્રમાણે દારિકા ચઇને ફરીને આપ અચારવા પધાર્યાં. ત્યાં દાનદીલાસજીનું વ્યાખ્યાન આપે કર્યું. ૧૫ દિન અચારવામાં બિરાજ્યા. બધા વૈષ્ણવને ખૂબ સુખ આપ્યું.

સંવત ૧૬૨૦ ની ચાલમાં શ્રીગુસાંઈજીએ શ્રીપદાવતી વદ્દજી સાથે લગ્ન કર્યો. આ બીજી વારના લગ્ન કર્યા પછી વૈશાખ સુદ બીજના રોજ શ્રીદારિકાજી દર્શન માટે પધાર્યાં. ત્યારે શુભરાતમાં અચારવા ગામમાં કોઠારી ભાઈલા હરજીને ઘેર પધાર્યાં, એમને ઘેર થોડા દિવસ રહીને પછી આપશ્રીએ દારિકા તરફ પ્રયાણ કર્યું. ત્યાંથી આપશ્રી ઉતાવળા ફરી અચારવામાં અસાડ સુદ બીજના રોજ પધાર્યાં. કંઈક આવશ્યક કાર્ય હતું. આ વખતે નાસવણદાસજીને રાજપદવી મળી હતી, એટલે તેઓ ઈંડરના રાજ થયા હતા. પછી જલાલપુર પધાર્યાં. ગાઈ જસુની, ભક્ત રામકૃષ્ણદાસ, બલપદાસ, એ બધા પર અનુગ્રહ આપશ્રીએ કર્યો, તે પછી પાટણ પધાર્યાં. ત્યાં મહુ, કીકા વગેરે ઘણા વૈષ્ણવોનો ઉદાર કર્યો. ત્યારબાદ પ્રભુને માટે ઉત્તમોત્તમ સામગ્રી લઈને પ્રસન્નતાથી ઘેર પધાર્યાં, તે વખતે આ વૈષ્ણવ સાથે હતા. લક્ષ્મીદાસ, ગોપાલદાસ, ભીમજી, માધવદાસ વેળીદાસ અને બીજા. પણ વૈષ્ણવો હતા. ભગવદ્વાર્તા પણ અતી હતી. શ્રીગુસાંઈજી ઘણીજ કૃપા કરતા...

સંવત ૧૬૨૨ ની સાલમાં શ્રીગુસાંઈજી શ્રીદારિકાનાયજીનાં દર્શન કરવા માટે પધાર્યા. તે વખતે સહાદરા ગામમાં (હાલના સાદરામાં) પધાર્યા તે વખતે ભાઈલા કોઠારીને ત્યાં બોલાવ્યા. કોઠારીજીએ પણ ત્યાં જઈને શ્રીજીનાં દર્શન કર્યાં. પછી શ્રીજીએ (શ્રીગુસાંઈજીને સેવકો શ્રીજી કહેતા હતા) આજ્ઞા કરી કે, અમે તુરતમાં જ શ્રીદારિકાજી થઈને અસારવા આવીશું. આવી આજ્ઞા કરીને આપશ્રી દારિકાજી પધાર્યા અને તુરતજ પાછા અસારવા પધાર્યા. સત્યસંકેષ પ્રભુએ પોતાનું વચન પાળ્યું. વૈષ્ણવોને ધણું જ મુખ આપ્યું. તે પછી પ્રસન્નતાથી ઘેર પધાર્યા.

સંવત ૧૬૨૭ ની. સાલમાં વરસ બેસતાં જ શ્રીગુસાંઈજી દારિકાજી દર્શનાયે પધાર્યા. તે વખતે આજો સોરઠ દેશ ઉજ્જવળ થઈ ગયો હતો. ભયંકર હુકાળ ફેલાઈ રહ્યો હતો. શ્રીગુસાંઈજી ધોળકા તરફને રસ્તે પધાર્યા. પાંચ દિવસ ધોળકામ બિરાજ્યા. સાથે ઘણાજ સેવકો હતા. બોખાજી, શંકરજી, નાહી ગામવાળા વિષ્ણુજી સંવત ગોવિંદજી, મયાજી, કેશવદાસ જલભરા, પરમ ચૂરવીર ધીર પૂંજીજી આદિ બીજા ધનુધારી ઘણા સાથે હતા. તેમજ બોખાજી, રામદાસ, સવજી સાથોરા, વાણીયા માધવદાસ, બીમજી, ચેળીદાસ, ત્રવાડી પળા, હરિવંશજી, ચાંપા ભંડારી, શંકર અધિકારી, બંવારા ધારી વગેરે બધા સેવકો સાથે હતા. ન્યારે પોતે નવાનગર (હાલનું જામનગર) પધાર્યા ત્યારે રાજા દર્શન કરવા આવ્યો, ત્યારે તેણે વિનંતિ કરી કે, “મહારાજ, રસ્તો વિપત્તિ (ભયંકર) છે. મારી મા શ્રીદારિકાજી દર્શન માટે ગઈ હતી, પણ રસ્તામાં બહારવટીઆઓએ લુંટી લીધી. આવ્યામાં રાજા કેવી રીતે પધારી શક્યો? ત્યારે શ્રીગુસાંઈજીએ આજ્ઞા કરી કે, અમે પ્રભુનાં બલથી પધારીશું. તમે રૂપ યંદ જાઓ. પછી શ્રીજી તો ત્યાંથી શ્રીદારિકાજી પધાર્યા. ન્યારે રાજા જામનગર પધાર્યા. ત્યારે તો પાંચસો ઢાળા (બહારવટીઆ) આવી પહોંચ્યા પણ તે વખતે શ્રીજીએ એવો પ્રતાપ બતાવ્યો કે તેમનું કંઈ આવું નહિ. તેઓ બધા હારી ચાકીને પાછા ફર્યા. શ્રીજી આનંદમંગલથી દારિકાજી પધાર્યા. દારિકાજીના ધાણુદારની શ્રી ગોરબાઈ હતી, તેણે શ્રીજીને ઘણા સત્કાર કર્યો. શ્રીજી ન્યારે દારિકાથી વિદાય થયા ત્યારે તે બાઈ નવાનગર સુધી સાથે પહોંચ્યાકવા આવી તે પછી શ્રીજી રાજનગર અસારવા પધાર્યા. ત્યારબાદ ખંભાતમાં કાંઈક ભગવત્સેવામાં ઉપયોગી વસ્તુ લેવા પધાર્યા, ત્યારે ત્યાં કલ્યાણરાયે ઘણા સત્કાર કર્યો. તે પોતે તો અન્યમાર્ગી હતા. ખંભાતમાં બીજા કેટલાક જીવોને પોતે ઉદ્ધાર કર્યો. તેનાં નામો-આચાર્ય મુરારિ, પટેલ જીવા, પટેલ હાંસુ, શાહ, સહજપાલ, ભૂપતિ, વેરય, દેવરાજ વગેરે કેટલાકે જીવોને પ્રભુએ કૃપા કરી અંગીકાર કર્યો. તે વખતે શ્રીજીએ કલ્યાણરાયને કહ્યું કે, ગાંધી દેવલ પોતાનાં વાહરંજો માટેજ દૂધ આપે છે, પણ વચ્ચે કાંઈ બીજા જ કોડો દૂધ કોડી લે છે, તેવો પ્રકાર અત્યારે થયો. (આ આજ્ઞાનો અભિપ્રાય એ છે કે, શ્રીજી પોતે તો ભગવત્કાર્યમાં ખંભાતમાં સહજ પધાર્યા તો વચ્ચે ઉપર જણાવેલા જીવોને અંગીકાર પણ થઈ ગયો. આવા

પ્રજા દયાળુ છે.) ત્યારપછી ખંભાતમાંથી ઉત્તરોત્તમ વસ્તુ કર્પૂર ઘડા ૧ તથા ચંદન તથા પદ્મવત્ર, (અનેક જાતનાં) વગેરે ઉત્તરોત્તમ પદાર્થો લેઈને ફરી રાજનગર પધાર્યા. તે પછી થોડાક દિવસ પછી પરમ આનંદથી ઘેર પધાર્યા.

સંવત ૧૬૨૭ વર્ષ ઉતરતાં શ્રીગુસાંઈજી જ્યેષ્ઠ પુત્ર શ્રીગિરિધરજીની સાથે શ્રીદ્વારિકાજી દર્શન માટે પધાર્યા. તે વખતે પહેલાં આપશ્રી ઈંદર પધાર્યા, ત્યાંથી વિસલનગર, વડનગર, મહેસાણા, ગોહરીઆ, ચિદ્વપુર, ખિંદુસરોવર-શ્રીગદાધરરાયજીનાં દર્શન કરીને, સાવલી, ભદ્રેસર, વણા તથા લીલોડા; આટલા દેશ પર આપે કૃપા કરી. તે પછી પ્રસન્નતાથી આપ અસારવા પધાર્યા. ત્યાં ભાઈલા હરજી કોઠારીને ઘેર કેટલાક દિન સુધી ખિરાન્યા. પછી દારિકા પધાર્યા. દારિકાથી ફરી ગુજરાત પધાર્યા, ત્યારળાદ ખંભાત, ગવાડ, ગણસુલ, મહુધા, ઉમરેક, નડિયાદ, મહેમદાવાદ, અલીણા, વાડાસિનોર, વીરપુર, હુણાવાડા, પધાય. તેમજ મહી નદીના તીરપર લીંબોદરા ગામમાં સૂર્યચક્રુ કર્યું. બીજાં પણ કાંઈ કાંઈ હતાં તેથી પાંચ દિવસ સુધી લીંબોદરામાં ખિરાન્યા. તે પછી રાજનગરની પાસે નલપુરા, કઠાસણ, અગ્ર-લજ. ઉંઆરસજ, મોઢાસર, હરસોલ, પ્રાંતીજ, પીંઠારીઆ સહાદરા એટલા ગામોમાં પધાર્યા. છાંદા ગામમાં મેઘજી કરમસી નામના રાજપુતનો અંગીકાર કર્યો. એવીજ રીતે બધાં ગામો કૃતાઈ કર્યા. આ વખતે આપશ્રીની સાથે શ્રીહરિવંશજી, શંકર અધિકારી, ખવાસ હરિદાસ સાઠોદરા બ્રાહ્મણ હતા તે પછી સં. ૧૬૨૮ ની સાલ એકી ત્યારે રાજનગરમાં પ્રશ્નોરા દેશવજીનો અંગીકાર કર્યો. બાઈ લાંબાબાઈને ઘેર આપ પધાર્યા હતા. રાજપુરમાં રામદાસ વેણીદાસને ઘેર આપ પધાર્યા અને એવીજ રીતે બધાને ખૂબ સુખ આપ્યું. ત્યારળાદ અતિપ્રસન્નતાથી ઘેર પધાર્યા.

એવી રીતે છ વખત શ્રીગુસાંઈજી દ્વારિકાજી દર્શનાર્થ પધાર્યા.

કમનસીબ—ગુજરાતીઓનો સંઘ—સંવત ૧૬૧૫ ની સાલમાં શ્રીગુસાંઈજીના દર્શન માટે ગુજરાતમાંથી વૈષ્ણવોનો મોટો સંઘ નિકળ્યો. તે સંઘમાં ગોપાલજી, વૈશ્ય રામદાસજી, નાગા ગોપજી, વિસરામ, ચવજી, જીર્ણભાઈ, સાચોચ નાંગજી કોઠારી, ભીમાબાઈ કુંવરી અને ગોરખાઈ (સીરાહીતા રાજાની રાણી); ત્રવાડી પણ વગેરે બીજા ઘણા વૈષ્ણવો હતા. ગાડીઓ તથા વાહનો ઘણાં હતાં બધાં શ્રીગુસાંઈજીનાં દર્શન માટે આહ્યાં. બધા પહેલાં શ્રીકપુરદ્વારમાં શ્રીજીદાસ આવ્યા. (શ્રીનાથજી શ્રીગિરિરાજજીમાં ખિરાન્યા હતા.) આ વખતે શ્રીજીદાસમાં કૃષ્ણદાસ અને ચંદુ અધિકારી હતા. જ્યારે વૈષ્ણવો આવ્યા ત્યારે કૃષ્ણદાસ અધિકારીએ ઘણું સન્માન કર્યું. શ્રીકૃષ્ણદાસ શ્રીમહાપ્રજીજીના સેવક હતા. તે મંળંધથી વૈષ્ણવોનું સમાધાન તેમણે ઘણુંજ કર્યું. (ખૂબ ખાતર બરદાસ કરી.) કૃષ્ણદાસ મહાન અપરાધી હતા, તેથી શ્રીગુસાંઈજી તેમના પર ઘણુંજ અપ્રસન્ન

રહેતા. શ્રીગુરુસાંઈજી તેથીજ શ્રીઠાકુરદ્વાર પધારતા નહિ. તે વખતે વિરહ અતુલવીને પ્રભુને વિનતિપત્ર લખતા. વળી ઉત્તમોત્તમ વસ્તુ જે મળતી તે શ્રીજીને અંગીકાર કરાવવા માટે કોઈની સાથે મોકલી દેતા; પણ આપશ્રી પોતે તો ત્યાં પધારતાં ન હતા. એ વેળાએ આપ અડેલમાં ગિરાજતા. શ્રીગુરુસાંઈજી ગુજરાતના વૈષ્ણવોની વાંટ જોતા હતા કે, વૈષ્ણવો ક્યારે આવશે? વાટ જોતાં ઘણા દિવસ નીકળી ગયા. તેથી પોતે ચિંતા કરવા લાગ્યા, કોઈકવાર પોતે મુઆફરોને પૂછતા કે, “ગુજરાતના વૈષ્ણવો અમારા દર્શન માટે ગુજરાતથી ક્યારનાએ નીકળી સુક્યા છે, ઘણા દિવસો વીત્યા, પણ કરા સમાચાર મળ્યા નથી. રસ્તામાં કુશળ તો છે ને? તેઓ હજી સુધી કેમ ન આવ્યા?”, આવા પ્રશ્નો આપશ્રી કરતા. થોડાક સમય પછી આપને સમાચાર મળ્યા કે, જ્યાં ગુજરાતી વૈષ્ણવો ઠાકુરદ્વારમાં રહ્યા છે. દોઢ મહીનો થયો. દૃષ્ટાંતજીએ તેમનું સમાધાન કર્યું છે અને તેમને ચારી પેઢે રાખ્યા છે. મહાંપ્રસાદ લે છે, અને દર્શન કરે છે. તેઓ અડેલ આવ્યા નહિ. પછી શ્રીગુરુસાંઈજીએ એક પત્રમાં શ્લોક લખીને તે પત્ર એક સેવકદ્વારા પેલા ગુજરાતી વૈષ્ણવોની પાસે ઠાકુરદ્વારા મોકલ્યો. (આ શ્લોક પણ બરોબર સમજતો નથી) તોપણ વૈષ્ણવો આવ્યા નહિ, માતા શ્રીરુદ્ધિમણીજી (શ્રીગુરુસાંઈજીનાં વહુજી) છ પુત્ર સાથે ગિરાજતાં હતાં. એઓ પણ વૈષ્ણવોની વાટ જોતાં હતાં કે ક્યારે આવશે? તોપણ વૈષ્ણવો આવ્યા નહિ. વૈષ્ણવોનાં અભાગ્યજ ગણાય. પછી અડેલમાં ચેરચોનો ઉપદ્રવ થયો ત્યારે શ્રીગુરુસાંઈજી બાંધવગદમાં પધાર્યા. થોડાક વરસ પોતે ત્યાંજ ગિરાજ્યા પછ. આપ મથુરા પધાર્યા. મથુરામાં થોડાંએક વરસ ગિરાજ્યા. ત્યારબાદ સં. ૧૬૨૭ દાગજી વઠ ૭ શુભ દિને શ્રીગુરુસાંઈજીએ ચર્વ બાલકો સાથે કુટુંબ પરિવાર સાથે શ્રીગોકુલમાં વાસ કર્યો, દેટલાક વરસ સુધી જ્યાં બાલકો અને પરિવાર સાથે એકઠા મળીને સેવા કરતા. પછીથી આવે બાલકોએ પોતપોતાનાં જુદાં જુદાં મંદિર ગનાવ્યાં અને સાત સ્વરૂપને સાતે મંદિરમાં પધરાવ્યાં. શ્રીનવનીતપ્રિયજીને શ્રીઠામોદરજીના મંદિરમાં પધરાવ્યા. શ્રીમથુરાનાથજી મોટા શ્રીગોપીનાથજીને ચેર પધાર્યા. શ્રીવિહંગનાથજી શ્રીગોવિંદનાથજીને ચેર ગિરાજ્યા. શ્રીદારિકાનાથજી શ્રીબાલકૃષ્ણજીના મંદિરમાં પધાર્યા. શ્રીનાથજી શ્રીગોકુલનાથજીના મંદિરમાં પધાર્યા. શ્રીગોકુલચંદ્રમાજી શ્રીરમુનાથજીના મંદિરમાં ગિરાજ્યા. (અહીં છૂટા લાલજીને માટે ક્યો ઉલ્લેખ નથી.) શ્રીમદનમોહનજી; શ્રીધનરંજનાથજીના વરમાં પધાર્યા આ પ્રકારે આવે બાલક પોતપોતાના મંદિરોમાં પ્રભુની સેવા કરવા લાગ્યા. જ્યાં બાળકોનો દિનપ્રતિદિન પ્રતાપ વધતો ગયો.

શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વર.

[સદ્ગત તેલીવાળાના અગ્રેષ્ઠ ઉપોદ્ધાન. ઉપરથી. અનુવાદકઃ—શ્રીપુત્ર પ્રોફેસર સાંકળચંદ્ર
જ્ઞેષ્ઠવાલ શાહ એમ. એ.]

પ્રાકટ્ય આદિ—વિદ્-મંડલ ગ્રંથના કર્તા શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરદીક્ષિત શ્રીવલ્લભાચાર્યજીના દ્વિતીય-
કુમાર છે. તેમનો પ્રાદુર્ભાવોત્સવ સંવત ૧૫૭૨ ના માર્ગશીર્ષ માસની વદ ૬ મી તિથિએ અઢાળાદ
પાસે ચરણાટ (સુનાર) માં થયો હતો. પોતાની ઉત્તરાવરથામાં શ્રીવલ્લભાચાર્યજીએ અરેલને
પોતાના કામમના નિવાસ તરીકે સ્વીકાર્યું હતું. અને તેથી શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરની આસ્થાવરથા ત્યાં પસાર
થઈ હતી. સંવત ૧૫૮૭ માં ત્યારે શ્રીવલ્લભાચાર્યજીએ ત્રિદંડ સંન્યાસનો સ્વીકાર કર્યો ત્યારે
વિઠ્ઠલેશ્વરની ઉપર પંદર વર્ષની હતી. તેમના જ્યેષ્ઠભાતા શ્રીગોપીનાથજી તેમના કરતાં પાંચ વર્ષ
મોટા હતા. તેમના ઉપવીત સંસ્કારની વિધિ શ્રીવલ્લભાચાર્યજીએ કરી હતી, પણ તેમની આસ્થા-
વરથાની કેળવણીનો સારો પ્રબંધ થયો હોય એમ લાગતું નથી. સંપ્રદાયમાં એવી ગાથા પ્રચલિત
છે કે શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વર પ્રભુચરણ આલપણમાં ધણી રમતીયાળ સ્વભાવના હતા. પોતાને માથે દટવો
ભારે લુખ્યો છે તેનો તેમને ખ્યાલ નહોતો, તેથી અગ્રગણ્ય વૈષ્ણવ શ્રીદામોદરદાસજીએ તેમને
દુપટ્ટા આપ્યો હોય એમ કહેવાય છે. અને તેમને અભ્યાસ કરવા માટે સમજાવ્યા હતા, જેથી
ત્રાયક પિતાના લાયક પુત્ર તરીકેની જવાબદારી અદા કરવા માટે થોડો થવાય. એટલું તો નિઃશંક
છે કે શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરને રમત ગમતમાંથી કૃષ્ણલીલાનું અવગાહન કરવાને રસ્તે ચડાવવામાં દામોદરદાસે
સાફ કામ કર્યું હતું. આચાર્ય તરીકેનું પોતાનું કર્તવ્ય સારી રીતે જાળવવામાં આવ્યા હરિવંશજીએ
પણ શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરને સારો ઉપદેશ આપ્યો હતો. આચાર્ય હરિવંશજીની વૈષ્ણવો વધારવાની પ્રવૃત્તિઓ
ધણી વિશાળ હતી. જે જે જગ્યાએ શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજી પધારતા તે તે જગ્યાએ તેમના પહેલાં આવ્યા
હરિવંશજી જતા અને શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજીના સિદ્ધાંતોનો સ્વીકાર કરવા માટે લોકોને તૈયાર કરતા. જે
જે પુસ્તકો લાલ મળે છે તેમાં જે અગાધ જ્ઞાન તરી આવે છે તે જ્ઞાન શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરે જોની મદદથી
મેળવ્યું તેનો ખરાબર નિર્ણય થઈ શકતો નથી. એક ગાથા એવી છે કે શ્રીવલ્લભાચાર્યજીએ
શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરને અભ્યાસ માટે માધવસરસ્વતી પાસે મોકલ્યા હતા, પણ ત્યાં કાંઈપણ અભ્યાસ
કરવાને બદલે, પોતે પોતાનો ખર્ચો વખત શ્રીમદ્ભાગવત વાંચવામાં ગાળ્યો. ઉપરની ગાથામાં ગમે
તેટલું સત્ય હોય, પણ એટલું તો નિર્વિવાદ છે કે પોતાના પિતા શ્રીવલ્લભાચાર્યની માફક શ્રીવિઠ્ઠ-
લેશ્વરને પણ શ્રીમદ્ભાગવતમાં ધણીજ આસક્તિ હતી અને ભાગવત પર ઘણો કાલુ હતો. સંવત
૧૫૮૭ માં શ્રીવલ્લભાચાર્યજીએ લીલા કરી ત્યારપછી શ્રીગોપીનાથજી અને શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વર બન્ને અરેલમાં
ઝિરાભ્યાસ સાધનદીપિકા, અને સેવાપદ્ધતિ સિવાય શ્રીગોપીનાથજીએ બીજા અગત્યના ગ્રંથો લખ્યા
હોય એવું જાણવામાં આવ્યું નથી, અને તેથી શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરને પોતાના મોટાભાઈ શ્રીગોપીનાથજી
પાસેથી લખિયની સાહિત્યની પ્રવૃત્તિઓ સારું શું વિદ્યા મળી તે નિર્ણય કરવાનાં આપણી પાસે
સાધન નથી. શ્રીગોપીનાથજી અને તેમના પુત્ર શ્રીપુરુષોત્તમજીએ સંવત ૧૫૯૦ અને ૧૬૦૦ સાલ
દરમિયાન લીલા કરી હોય એમ લાગે છે. એમણે લીલા કર્યા પછી શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વર એમના પિતાના
માન્ય પ્રતિનિધિ તરીકે ઘણાવા લામ્યા અને ત્યારપછી તેમણે ઘણી સુસાહરીઓ કરવાનો દરોહો
કર્યો અને સંપ્રદાયના પ્રચાર સારૂ ગ્રંથો લખવાનો વિચાર કર્યો.

ચૂલકસ્થાપન—શંકર, રામાનુજ, મધ્વ, ચૈતન્ય અને બીજા ઘણા આચાર્યોએ ઉપનિષદની
ગાથાઓ પ્રમાણે અનુસરણ કર્યું નથી. પણ શ્રીવલ્લભાચાર્યે ઉપનિષદ પ્રમાણે આચરણ રાખ્યું અને

યાજ્ઞવલ્ક્ય અને બીજા પ્રવિઝોની માફક યજ્ઞરથો હેઠળને આચાર્ય રહ્યા. તેમના પછી તેમના મોટા પુત્રે પણ યજ્ઞરથ આચાર્ય તરીકે જીવન ગાળ્યું. શ્રીગોપીનાથજીએ શ્રીવિદ્યેશ્વરજીનું લક્ષ શ્રીરક્ષિત્સી સાથે કર્યું હતું. શ્રીરક્ષિત્સીજી પોતાની નાતિના વિશ્વનાથ ભટ્ટ અને ભવાનીનાં પુત્રી યાય. બન્ને બાઈઓ વચ્ચે સ્વપ્રસારો હતો. શ્રીવિદ્યેશ્વરે પોતાના મોટાભાઈ શ્રીગોપીનાથજી પર જે પત્ર લખ્યો છે તે પરથી જણાય છે કે એમને પોતાના મોટાભાઈ માટે ઘણુંજ માન હતું.

શ્રીનાગજભટ્ટ—શ્રીગોપીનાથજી અને શ્રીપુરુષોત્તમજીએ કીર્ત્તિ કરી પછી શ્રીવિદ્યેશ્વરજીએ બહારગામ પધારવાનો આરંભ કર્યો. સંવત ૧૬૦૦ માં પહેલા અડેવથી ગુજરાત પધાર્યા અને ખીજવાર સંવત ૧૬૧૩ માં પણ અડેવથી ગુજરાત પધાર્યા. ગુજરાતમાં એમની પ્રકૃતિએ મુખ્યત્વે અમદાવાદ, ખેડાત અને ગોધરામાં હતી. ગોધરામાં શ્રીગુણધર્મજીએ એક નાગજભટ્ટને આ સંપ્રદાયની દીક્ષા આપી હતી. આ નાગજ ભટ્ટ એમ કહેવાય છે કે સરકારી અમલદાર હતા અને (પંચમદાસ નામ પાડ્યું છે તે તેમની પ્રવૃત્તિને સેધને છે,) “પંચમદાસ” ને પાંચ ભાગમાં વિભક્ત કરનાર આ વ્યક્તિ હતી એમ મનાય છે. નાગજ ભટ્ટ સાકોદરા નાગર હતા. પ્રખ્યાત ગુજરાતી વ્યોમવૃદ્ધ સાક્ષર દીવાનમહાદુર કેશવદાસ દર્વેદરાય દુવ આ નાગજભટ્ટના વંશજ છે. જ્યારે જ્યારે શ્રીવિદ્યેશ્વરજી ગુજરાતમાં પધારતા ત્યારે ત્યારે નાગજભટ્ટ તેમના સંતસંગેનો સાથ જરૂર લેતા. શ્રીવિદ્યેશ્વરજીએ નાગજભટ્ટને જે પત્રો લખેલા તેમાંના થોડાએક અસત્ર પત્રો મેવાડમાં શ્રીનાથદાસમાં અપાપિ મુદ્દી સંપ્રદ કરી રાખેલા છે. નાગજભટ્ટ ઘણા બુદ્ધિશાળી અત્યુચારી હતા. નાગજ ભટ્ટે શ્રીવિદ્યેશ્વરજીને ઘણા પ્રશ્નો પૂછ્યા હોય એમ લાગે છે. શ્રીવજ્રમસંપ્રદાયનો પ્રચાર કરવામાં પંચમદાસમાં તેમણે શ્રીવિદ્યેશ્વરજીને ઘણીજ મદાયતા કરી હોય એમ દેખાય છે. શ્રીમુખોદ્ધતી, નિબંધ વગેરે ગ્રંથો વાંચ્યા પછી શ્રીમદ્વજ્રમાચાર્યજીના ઉપદેશના મુખ્ય સિદ્ધાંત શું છે તે જણવાની તેમની ઇચ્છા યઈ. આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં શ્રીવિદ્યેશ્વરજીએ તેમને એક વચ્ચેક લખી મોકલ્યા, જેમાં શ્રીવજ્રમસંપ્રદાયના ચતુર્ન ઉત્તમ ગ્રંથોમાં સંક્ષેપમાં વર્ણન છે.

શ્રીવજ્રમાચાર્યમતે ફલં તત્માકલ્પમગ્રાજ્યમિચારિદેહુઃ ।

પ્રેમૈવ તસ્મિન્નપ્યર્થોક્તમક્તિસ્તયોપયોગોઽસ્તિલસાયનાનામ્ ॥

શ્રીમદ્વજ્રમાચાર્યનાં મત પ્રમાણે ભગવત્પ્રાકટ્ય એજ ફલ છે અને તેનો રામબાણ ઉપાય ભગવત્પ્રેમ છે. બીજાં બધાં સાધનો આ પ્રેમ ઉત્પન્ન કરવામાં ઉપયોગી છે. નાગજભટ્ટે શ્રીવિદ્યેશ્વરજીની સાથે ગુજરાતમાં રહ્યા એટલુંજ નહિ પણ શ્રીવિદ્યેશ્વરને પોતાના દંડવત્ પ્રણામ કરવા પોતે અડેવ પણ ઘણીવાર જતા. શ્રીગોવર્ધનના શિખર પર જતીપુરામાં શ્રીગોવર્ધનનાથજીનાં દર્શન કરવા નાગજભાઈ ગયા છે. એવી માનદતી મળે છે અને ત્યાં જ એક મહીના મુદ્દી નિવાસ કર્યો છે. આ પરથી એમ લાગે છે કે નાગજભાઈ આ સંપ્રદાયના સાત્ત અને સેવકપ્રકાર બન્નેથી અભિન્ન હતા, અને સંવત ૧૬૦૦ થી શ્રીવજ્રમસંપ્રદાયનો ગુજરાતમાં સીધ પ્રચાર કરવામાં સદાયમૂત થયા હતા.

શ્રીભાઈલા કોહારી—આ સંપ્રદાયનો પ્રચાર કરવામાં બીજાં જે વ્યક્તિએ મદદ કરી તે અમદાવાદ પાસે અસારવા ગામના રવીંદ્ર ભાઈલા કોહારી છે. જ્યારે શ્રીવિદ્યેશ્વરજી દારકા અથવા ગુજરાત પધારતા, ત્યારે જ એક મહીના મુદ્દી ભાઈલા કોહારીને ત્યાં તેમનો મુકામ રહેતો. ભાઈલા કોહારીના જમાઈ ગોપાલજીસે આ સંપ્રદાયને નવાખ્યાન નામનું મુંદર અને અપ્રતિમ કાવ્ય આપ્યું છે. સાંપ્રદાયિક ગાથા એવી છે કે આ ગોપાલજીએ આગળનાં ગાંધીજીનાં ચરિત્રનાં

મહેતા હતા. ગમે તેમ હો, પણ નરસિંહ મહેતાનો કાચનિર્ણય કરવામાં આ ગાથાથી મદદ મળે છે. શ્રીવિદ્યેશ્વરજીની સં. ૧૬૦૦ માં ગુજરાતમાં પ્રથમ પદ્મરામણી યથા ગોપાલદાસની ઉમર તે વખતે નવ વર્ષની હતી. ગોપાલદાસનું નવાખ્યાનનું કાવ્ય વૈષ્ણવોમાં ઘણુંજ લોકપ્રિય અને આદરણીય કાવ્ય છે. વૈષ્ણવ નર અને નારીઓ આ કાવ્યનો મુખ પાક કરે છે. આ કાવ્યપર વ્રજભાષામાં અને સંસ્કૃત ભાષામાં ટીકાઓ લખાઈ છે. ગુજરાતનો વેપારી વર્ગ તો એના પર મુગ્ધ થઈ ગયો છે. ગોસ્વામી બાલકૃષ્ણ તરફ તો વૈષ્ણવોની જુલિ-ઘડવામાં આ કાવ્ય ઘણુંજ સદાય-ભૂત થયું હોય એમ લાગે છે. ગોસ્વામી બાલકૃષ્ણ તરફની વૈષ્ણવોની અગાધ પ્રીતિ અને આદર આ કાવ્યના પ્રસારથી ઉત્પન્ન થયાં હોય તો કાંઈ નવાઈ નથી. આ કાવ્યમાં શ્રીવિદ્યેશ્વરને ગોસ્વામી તરીકે સંબોધેલા છે. સં. ૧૬૩૪ માં ત્યારે અક્ષર આદ્યારાહે શ્રીવિદ્યેશ્વરજીની ગણેને સરકારી તેમજ ખાનગી અર્થાં ખેતર પર ચરાવવાનો પરવાનો કરી આપ્યો ત્યારથી શ્રીવિદ્યેશ્વરજીનું ગોસ્વામી તરીકે લખાવાનું શરૂ થયું. આ ઉપરથી એમ અનુમાન થાય છે કે ગોપાલદાસનું નવાખ્યાન સંવત ૧૬૩૪ ની સાલ પહેલાં અથવા હોવું જોઈએ નહીં. સાંપ્રદાયિક ગાથા એવી છે કે આ કાવ્ય રચવાની પ્રેરણા ગોપાલદાસને શ્રીવિદ્યેશ્વર તરફથીજ થઈ હતી. એવું કહેવાય છે. કે ગોપાલદાસ મૂળા હતા અને શ્રીવિદ્યેશ્વરજી તેમને ચર્ચિતાતીજ્ઞ આપ્યું. ત્યારપછી તેની પ્રસાદીથી તેમની વાચા ચમત્કારિક રીતે ખુલી ગઈ. ત્યારે શ્રીવિદ્યેશ્વરજી લાખડિયા કોઠારીને ઘેર પધારતા ત્યારે ઘણા મનુષ્યો તેમને મળ્યા આવતા અને તેમનો સંપ્રદાય અંગીકાર કરતા.

જીવા પારેખ—ખલાતમાં વૈષ્ણવ સંપ્રદાયનો પ્રચાર કરવામાં મદદ કરનાર જીવા પારેખ નામના એક પ્રખ્યાત વલ્લિક વેપારી હતા. એકંદરે ગુજરાતમાં શ્રીવલ્લભસંપ્રદાયનો પ્રચાર જગદીપી અને સંપૂર્ણપણે થયો. ઘણી રાતિઓ અને પેઠા રાતિઓ વૈષ્ણવ સંપ્રદાય સંપૂર્ણ પણે પાળવા લાગી. શ્રીવિદ્યેશ્વરની પછીથી પણ વૈષ્ણવોની સંખ્યામાં ઘણો વધારો થતો ગયો.

ગુજરાતમાં પદ્મરામણી—શ્રીવિદ્યેશ્વરની ગુજરાતમાં યોજામાં યોજી છે વખત પદ્મરામણી યથા. પ્રથમ પદ્મરામણી અટેલથી સં. ૧૬૦૦ માં થઈ. બીજી પણ સંવત ૧૬૧૩ માં અટેલથી યથા અને ત્રીજી ગઢાથી સંવત ૧૬૧૯ માં યથા. ચોથી સંવત ૧૬૨૩ માં મથુરાથી યથા, પાંચમી સંવત ૧૬૩૧ માં અને છઠી અને છેલ્લી સંવત ૧૬૩૮ માં ગોકુલથી યથા. આ ઉપરથી એમ નજાય છે કે શ્રીવિદ્યેશ્વરે લગભગ ચાલીસ વર્ષ મુખી ગુજરાત અને કાઠીઆવાડ પર પોતાનો પ્રતાપનો પ્રકાશ પાડ્યો. શ્રીવિદ્યેશ્વરજી દારકાનાથજીના પવિત્ર ધામે પધારતા ત્યારે ગુજરાતમાં પધારતા. પોતાનો પિતાજીનો તથા પોતાના ગાદાભાઈ શ્રીગોપીનાથજીના દારકામાં અને ગુજરાતમાં પ્રથમથીજ ઘણો સારો સત્કાર થયેલો તેથી શ્રીવિદ્યેશ્વરને દારકાં અને ગુજરાત માટે સારી મમતા અને પ્રીતિ ઉત્પન્ન થઈ હતી. શ્રીમદ્વલ્લભાચાર્યના પિકાન અનુયાયી રાણાવ્યાસ સિદ્ધપુરમાં સંપ્રદાયના પ્રચાર માટે સારું કામ કરતા હતા, નવોડમાં પ્રચાર કામ ગોપાલદાસ કરતા. શ્રીમદ્વલ્લભાચાર્યજીની દારકામાં યોજામાં યોજી ત્રણ વખત પદ્મરામણી થઈ હતી. છેલ્લી પદ્મરામણી સંવત ૧૫૮૫ની સાલમાં થઈ હતી. દારકામાં પોતે જ માસથી આગ્રહ રહ્યા હતા એવું કહેવાય છે. જે દારકામાં દારકાનાથજીનું જે સ્વરૂપ છે તેની પ્રતિષ્ઠા શ્રીમદ્વલ્લભાચાર્યે કરી હતી.

જગન્નાથપુરીમાં—સંવત ૧૬૧૬ના માસ વદ ૧૩ ને દિવસે શ્રીવિદ્યેશ્વર પુરીમાં જગન્નાથજીના ધામમાં ગયા. પોતાનાં વડુજ મદારાજ રકિમણીજ પોતાની મોરી પુત્રી શેલભાઈ અને ન્યેથપુત્ર ગિરિધરજી સાથે હતાં. ત્યાં પોતે લગભગ છ માસ સુધી રહ્યા. પુરીમાં રથોત્સવનાં દર્શન કરી પોતે અટેલ પાછા રથાં હોય એમ લાગે છે. પોતે પુરી પધાર્યા ત્યારે પોતાની સાથે ગરરા નામના સત્તારને લેઈ ગયા હતા. જગન્નાથજીના રથનો નમુનો ઉતારી લેવા સારુ રથને

લેઈ ગયા હતા. એમ કહેવાય છે કે શ્રીવિદ્યેશ્વરજીએ અંદેશ પધાર્યા પછી જગન્નાથજીમાં જેવા રથ હતો તેવો રથ તૈયાર કરાવ્યો અને અંદેશમાં દાકારજીને તે રથમાં પધરાવી મોટા વરધોટા કપાડ્યો. પોતે ગદામાં રળા ત્યારે પણ રથોત્સવ તેજ પ્રમાણે ઉજવ્યો હતો. પણ ત્યારે પોતે પોતાનો નિવાસ મંથુરામાં લાખ્યા ત્યારે મુસતબખોના ધર્મનિયમજીને લીધે રથોત્સવ બહાર રીતે ઉજવવાને ત્યાર માંડી વાળ્યો, પોતે જગન્નાથજીમાં રતા ત્યારે જગન્નાથજીમાં રહેતા ચૈતન્યના અનુયાયીનાં સંસર્ગમાં આવવાને શ્રીવિદ્યેશ્વરજીને પ્રસંગ પ્રાપ્ત થયો. એમ સંભળાય છે કે સ્વામિનીઅષ્ટક અને સ્વામિનીસ્તોત્ર અને બીજાં નામોં સ્તોત્રો, જેમાં ત્રાસાકુરજીની પદરાખી રાધાજીની શ્રીવિદ્યેશ્વરે ધણી સ્તુતિ કરી છે તે આ સમયમાં રચાયેલા હોય, અથવા તે ચૈતન્ય સાધુજીની સોધી અથવા આડકતરી અસરને લીધે આ સ્તોત્રો રચાયેલાં હોવાં જોઈએ. અમાર જાણવા પ્રમાણે જેવી રીતે શ્રીવિદ્યેશ્વરે શ્રીરાધાજીની સ્તુતિ કરી છે તેવી રીતે શ્રીવલ્લભાચાર્યે કોઈ પણ સ્તોત્રમાં અથવા બીજા કોઈ લેખમાં કરી નથી. શ્રીમદ્વિદ્યેશ્વરજી પર ચૈતન્યની અસર ફેરફાર અને ફેરફાર કાળ મુખી રહી એ નહીં કરવાનાં અમારી પાસે સમ્બંધની ધણી મુશ્કેલી છે. પણ ત્યારે વિચાર કરીએ છીએ કે અણુભાષ્યના અંતના ભાગમાં શ્રીવિદ્યેશ્વરજીએ શ્રીનયનીન-શ્રિવજી અને શ્રીગોવર્ધનપર એ બેનું સ્મરણ કર્યું છે. એટલે પાછલા સમયમાં ચૈતન્યના સિદ્ધાંતોની અસર લઈને જતી રહી હોય એમ લાગે છે. જુગ્મપ્રેમાગૃહ અને ડૂંગારમગૃહન આ બે ગ્રંથો પરની તેમની ફેલી ચૈતન્યવિચારસાગરને લખેને હોય એમ લાગે છે. એમ પણ હોય કે તે સમયે આખા વિદુસ્તાનમાં રાધા-કૃષ્ણની સેવા કરવાનો એક તરંગ આવ્યો હોય અને ઉપરના સ્તોત્રમાં ચૈતન્યના વિચારોની ફેરફાર અસર હતી તે કહેવું મુશ્કેલ થઈ પડે તેમ છે. વિચારની મોક્ષિકતા અને વિચારરસની પદ્ધતિ એ બંને શ્રીવિદ્યેશ્વરનાં પોતાનાં જ છે. પણ આ સમયમાં આ બે સ્તોત્રોની રચના થઈ એમ કહીએ તો અમે ખૂબ કરીએ છીએ એમ અમને લાગતું નથી. આ સ્તોત્રો સરસ્વતીસંવાદને લખેને હોય એમ સંભવિત છે. બીજું કારણ માણુમ પડતું નથી.

વિદ્વન્મંદનરચનાસમય—સંવત ૧૬૧૬ ના આઘાદ માસથી તે સંવત ૧૬૧૮ ના આરંભ મુખી શ્રીવિદ્યેશ્વરજીએ અંદેશમાં નિવાસ કર્યો હોય એમ લાગે છે. જગન્નાથજીમાં થાય છે તે પ્રમાણે અહીં પણ રથોત્સવ ઉજવ્યો હતો. આ સમયમાં તેમજો વિદ્વન્મંદનનો અંધ રચ્યો છે. સંવત ૧૬૧૮ ના વૈશાખ સુદ ૧૨ ની તારીખવાળી દસ્તાવિજિત પ્રત મળે છે તે પરથી આ અનુમાન બંધાય છે. આ ગ્રંથની રચનાની તારીખ સંવત ૧૬૧૮ થી પછીની હોઈ શકે નહિ. સંવત ૧૬૧૮ માં અંદેશપર મુસતબખાને લોકોએ ચલાઈ કરી એટલે લગેયને માટે શીશુસાંછડીને અંદેશ હોયું પડ્યું.

બંદેગદમાં—અંદેશથી બે ત્રણ જગ્યાએ મુદ્દામ બદલા પછી તેમજો બંદેગદ પોતાનો મુદ્દામ ફેરવ્યો. તે વખતે બંદેગદમાં વાધેલા રજપૂત રાજા રામચંદ્ર રાજ્ય કરતા હતા. તેમજો શીશુસાંછડીને સારો સત્કાર કર્યો. પોતે ત્યાં બે ગાસ સુધી રળા. શીશુસાંછડીના જ્યેષ્ઠપુત્ર શ્રીશિરિ-વંદજીને આ રાજાની સાથે ધણી સારો સંબંધ હતો. શીશિરિવંદજીના મોટા પુત્ર શ્રીમુરલીધરજીને જન્મ વિજયાદશમીને દિવસે અહીં થયો હતો. પ્રખ્યાત ગાયો તાનસેન રાજા રામચંદ્રને સંગીત-ગાની અને ગાયો હતો, પણ અકાચર બારસાદની માગણી આવવાથી બારસાદને સોંપવો પડ્યો હતો. તાનસેન શ્રીવિદ્યેશ્વરના સંસર્ગમાં અહીં આવ્યો. પણ શીશુસાંછડી અહીં લાંગે સમય વિતાવ્યા નહિ આગળ ઉપર ત્યારે વિદ્યેશ્વરજીએ પોતાના કાવ્ય નિવાસ તરીકે ગોકુળ સ્વીકારુ ત્યારે આ રાજા રામચંદ્ર ગોકુળ આવ્યા હતા. શીશુસાંછડી અને શ્રીશિરિવંદજીને તેમનું ગોકુળમાં બહાર રાખવાનું થયું હતું.

ગદારાણી દુર્ગાવતી—અન્ટેગદથી શ્રીવિઠ્ઠેશ્વરજી ગદા પધાર્યા હોય એમ લાગે છે. નર્મદાના કિનારા પર આવેલું જળપુર-એ તે વખતનું ગદા દશે કે કેમ એ કહેવું મુશ્કેલ છે. જળપુરની પાસે શ્રીવિઠ્ઠેશ્વરજીની બેઠક આવી છે, તે પરથી એમ લાગે છે કે ગદા પણ આજુબાજુ કંઈ આવેલું હોયું જોઈએ. અકબર બાદશાહના સેનાપતિ અસફખાને આગળ પર એવો સખત લુચ્ચ પતાંગ્યો હતો કે તે જગા અત્યારે ઝાળખી કાઢવી એ ઘણુંજ મુશ્કેલ થઈ પડ્યું છે. ગદા જ્યાંની શ્રીવિઠ્ઠેશ્વરની સ્વાભાવિક ઈચ્છા હતી. ગદાની રાણી દુર્ગાવતી ઘણી ખ્યાતિવાળી હતી. દુર્ગાવતીના પતિનું નામ દલપતિસાહેબ હતું અને તેમનું લગ્ન કંઈ વિચક્ષણ રીતે થયું હતું. તેમને એક પુત્ર હતો. આ પુત્ર ત્રણ વર્ષનો થયો ત્યારે દલપતિસાહેબનું અવસાન થયું. ત્યાર પછી પોતાના પુત્ર વીરનારાયણના રીજન્ડ તરીકે દુર્ગાવતીએ રાણી તરીકે ગદાનું રાજ્ય સંભાળ્યું. વીરનારાયણ ઉપર લાયક થયો છતાં પોતે રાજ્ય સંભાળવાનું આજુ રાખ્યું. તેના રાજ્યમાં બધા મળીને ૫૨ (પાવન) ગદા હતા, અને રાણીએ ઘણી લદાઇઓમાં ભાગ લીધો હતો. તેની અસાધારણ શૌર્ય-બહાદુરીને લીધે તેને દુર્ગાસાહેબ એવું નામ આપવામાં આવ્યું હતું. પોતે ઘણીજ ધર્મિષ્ઠ હતી અને ઘણા વિદ્વાન્ બ્રાહ્મણોને આશ્રય આપતી હતી. શ્રીવિઠ્ઠેશ્વરના કુટુંબ સાથે જે તેમણે બ્રાહ્મણોના લગ્નો સંબંધ હોય તે કુટુંબો અહીં રહેતાં હતાં.

વિજયનગર રાજ્યના તે વખતના રાજા કૃષ્ણદેવે શ્રીમદ્વલ્લભાચાર્યજીને પોતાના રાજ્યમાં મોટામાં મોટા આચાર્ય તરીકે સ્વીકારી લીધો. આ રાજ્ય સ્વતંત્ર રહેલું રાજ્ય હતું. આ સિવાય રાણી દુર્ગાવતીએ પણ પોતાના સ્વતંત્ર હિંદુ રાજ્યમાં બ્રાહ્મણોને ધણું ઉત્તેજન આપ્યું હતું અને તેના રાજ્યમાં લોકો (મુલ) ઘણા સુખી હતા. તેની રાજ્યપદ્ધતિ અદ્વૈતિ હતી અને આ રાણીના રાજ્યપર અકબર બાદશાહે જે ચડાઈ કરી તેને સારા ઇતિહાસકારો બાદશાહની પોતાની રાજ્ય પધારવાની તૃષ્ણા અને જ્યાં નારા કરવાની જાતનું પરિણામ હતું એમ માને છે. ત્યારે શ્રીમદ્વલ્લભ પ્રથમ આ રાણીની રાજ્યધાનીમાં પધાર્યા ત્યારે તેમણે જન્મનીય-તત્ત્વાવ અથવા તો રાણીતસારના કંઠાપર પકાવ નાંખ્યો. શ્રીવિઠ્ઠેશ્વરજીના સાધુચરિત્રથી, અગ્રાધ જ્ઞાનથી અને કૃષ્ણની ઉત્કટ ભક્તિથી દુર્ગાવતી રાણીપર એવી હઠી છાપ પડી કે રાણી પોતે તેમના આશ્રમમાં વારંવાર આવતી અને ગદામાં પોતાનો કાયમનો નિવાસ રાખવા રાણીએ શ્રીવિઠ્ઠેશ્વરજીને વિનંતિ બદ્ધ આજીજી કરી. તેમના મુકામ અને સન્માનને સારૂ ઘણી સારી ગોઠવણ કરવામાં આવી હતી. શ્રીવિઠ્ઠેશ્વરજી ત્યાં ત્રણ વર્ષ રહ્યા, તે સમયમાં રાણી દુર્ગાવતીનો અને શ્રીવિઠ્ઠેશ્વરનો સંબંધ ઘણો (cordial) હાર્દિક હતો. શ્રીવિઠ્ઠેશ્વરજીના પ્રથમ વડછત્રદારાજ શ્રીરમિષ્ણીજીએ ધણું ખર્ચ આ સમયમાં લીધા કરી, અને તેમની ઈચ્છા બીજવાર લગ્ન કરવાની બિલકુલ હતી નહીં, પણ રાણી દુર્ગાવતીના આગ્રહ અને દબાણથી શ્રીવિઠ્ઠેશ્વરજીએ સંવત ૧૬૨૦ માં અક્ષયતુલીયાને દિવસે રામભટ્ટની પુત્રી શ્રીપદાવતી સાથે લગ્ન કર્યું. બીજે પ્રસંગે રાણી દુર્ગાવતીએ શ્રીવિઠ્ઠેશ્વરજીને ૧૦૮ ગામ બક્ષિસ કર્યા, અને તેઓશ્રીએ પોતાની જાતિના ભક્તોને બક્ષિસ કરી દીધાં ! અને જેનો ઉપભોગ હજી પણ તે ભટ્ટના વારસો કરે છે. ગદામાં નિવાસ કર્યો ત્યારે એક બ્રહ્મદાસ નામનો બ્રાહ્મણ તેમના સંસર્ગમાં આવ્યો. તે બ્રાહ્મણને શ્રીવિઠ્ઠેશ્વરજીએ પોતાની પાસા ખંડી આપીને આશિષ આપી. આ દિવસથી આ બ્રાહ્મણના લાગમનો ઉદય થયો અને ત્યારથી એ અકબર બાદશાહનો માનીતો અને વિશ્વાયુ સલાહકાર બન્યો અને તેનું નામ ત્યારથી બીરબલ રાખવામાં આવ્યું. જે નામથી એ અત્યારે ઝાળખાય છે. આ બીરબલનો અને શ્રીનિરધરજીનો સંબંધ ઘણો ગાઢ હતો, એમ શ્રીવિઠ્ઠેશ્વરજીના પત્રોપરથી જાણી મળે છે. બંનેનો સેવક પાસેથી પાછળથી

ત્યારે ગોવર્ધન પર્વતપરના શ્રીનાથજીના મંદિરનો કળજો અને બોગવટો લેવાનો વખત આવ્યો ત્યારે બીરબલે શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજીને ઘણી સારી મદદ કરી હતી અને શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજીને તેના કળજો આપ્યા હતા.

ગ્રજમાં નિવાસ—લગભગ ત્રણ વર્ષ દુર્ગાવતીના રાત્ર્યમાં રહ્યા પછી શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજીને માણસ પડ્યું કે આ રાત્ર્યપર પણ અકબરના સૈન્યો દુમશે લાવશે. સંવત ૧૬૨૧ માં દુર્ગાવતી રાણી પાસે અસહ્યાને તેના માનીતા દાથી ગુરુદયની મામણી કરી. આ મામણીના દુર્ગાવતી રાણીએ સ્વાભાવિક રીતે સ્ત્રીકાર કયો નહિ. ત્યારે દુર્ગાવતી રાણીએ પોતાના પ્રધાન અધરદાસને અકબર આજ્ઞાદના દરબારમાં મોકલ્યો હતો, તે વખતે અસહ્યાને દુમશે કયો એ બહુજ આશ્ચર્યજનક છે. ગદાનો ત્યાગ કરવાનું શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજીનું મુખ્ય કારણ આજ હોયું નોંધવું. તેટલા માટે એઓશ્રીએ રાણી દુર્ગાવતીને પોતાની ઈચ્છા જણાવી કે હવે મારે મનુનાના તીરપર રહેવાનો વિચાર છે. એઓશ્રીની ઈચ્છા પ્રમાણે રાણી દુર્ગાવતીએ મયુરામાં સતપરા નામનો મહેલ બંધાવી આપ્યો. શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજી અને તેમના સાત પુત્રોએ મયુરામાં આ સતપરામાં વાસ કર્યો. ત્યારે શ્રીગુસ્તંધજી ગુજરાત પધાયો હતા ત્યારે શ્રીમદ્ધરજીએ ગોવર્ધન પર્વતપરથી સંવત ૧૬૨૩ ના ક્રાંત્યુન વદ ૭ ને દિવસે શ્રીનાથજીને લગભગ બે મહિના મુધી આ સતપરામાં પધરાવ્યા હતા. આ સતપરા હાલ મોહુદ નથી, પણ જે જગાએ આ સતપરા બંધવામાં આવ્યું હતું તે જગા હજી મયુરામાં સતપરા તરીકે ઓળખાવવામાં આવે છે. પશ્ચિમ દિશાએ હતા બગરની પાછળ આ જગા આવેલી છે અને પરિક્ષા કરનાર માત્રાજીએ આ જગાથી પરિક્ષામાનો આરંભ કરે છે. ગદામાં શ્રીગુસ્તંધજી ઘણા આનંદમાં રહ્યા હતા, તેમજે રથોત્સવનો ઉત્સવ ત્યાં ઉજવ્યો હતો. એક મોટા વરષામાં રથને ચક્રેની આજુબાજુ ફેરવવામાં આવ્યો હતો. રાણી દુર્ગાવતી અને તેમના દરબારના સદાચરે વગેરેએ પણ રથોત્સવમાં ભાગ લીધો હતો. રથોત્સવનો ઉત્સવ ઉજવવામાં રાણી દુર્ગાવતીએ પોતાના રાત્ર્ય તરફથી બધી નોંધની મદદ આપી હતી.

શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજીએ ગદા છોડ્યું ત્યારે રાણી દુર્ગાવતીએ પોતાના પ્રધાન અધરદાસને સાથે મોકલ્યા. એટલુંજ નહિ પણ સાથે મોટું લોકર પણ મોકલ્યું. શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજી ગદાથી મોકલ પધાયો ત્યાર પછી રાણી દુર્ગાવતી શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજી પાસે ગયાં હોય એવું માન્ય પડ્યું નથી. અસહ્યાનની સાથે બદાદુરીથી લડતાં તેમજે પોતાના માણસો ત્યાગ કર્યો; અને તેના પુત્ર વીર નારાયણે પણ લડાઈમાંજ દેહ ત્યાગ કર્યો હોય એમ જણાય છે. રાત્ર્યનો બધો ઉમદા ખખડો અસહ્યાને લુંટી લીધો અને પોતે સાથે લઈ ગયો, ચક્રેને એટલું ખરાબ રીતે પાષમાલ કરી હોયું કે ઇતિહાસકારો આ બદાદુર અને પ્રખ્યાત રાણીના રાત્ર્યના એકલસ ચિન્દ પણ મેળવી શકતા નથી. ગદામાં શ્રીગુસ્તંધજી નિવાસ કર્યો તેની ઝેબાણી એમની બેઠાને લઈ જવામાં રહી છે. આ બેઠક જગતપુરની પાસે આવેલી છે અને શ્રીગુસ્તંધજીનું શ્રીપદાવતી વડુછની સાથેનું બીજાવાનું લગ્ન ઉપર લખ્યા પ્રમાણે આ રથએ થયું હતું. ગદાથી શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજી પોતાનો મુકામ પ્રયાગ (અમદાવાદ) લાવ્યા હોય એમ જણાય છે. અહીં પોતે કેસોટ વખત ધણી સુખથી રહ્યા અને શીફળની સેવામાં પોતાનો વખત નિર્જનન કરી સોમવાસ કર્યો.

શ્રીમદ્ગોકુલમાં—શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજી પ્રયાગથી સંવત ૧૬૨૨ ના બાદપદ પૂજ્યા ૩ ના દિવસે મોકલ પધાયો એમ જણાય છે અને મયુરદાસમાં ત્યારે શ્રીમદ્વલ્લભાચાર્યજી અને શ્રીગોપીનાથજી પધારતા ત્યારે જે જગાએ મોકલમાં રહેતા તે જગાએ પોતાનો નિવાસ રાખ્યો. શ્રીગુસ્તંધજી મોકલમાં આશરે ૮૪ દિવસ રહ્યા. સંવત ૧૬૨૩ ના ક્રાંતિક શુકલ ૧૧ ને દિવસથી પોતે

પોતાનો મુકામ મથુરામાં રાખ્યો. અને રાણી દુર્ગાવતીએ બંધાવેલા સતધરામાં રહ્યા. માં પોતે સંવત ૧૬૨૩ થી ૧૬૨૯ સુધી શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજીએ મથુરામાં પોતાનો વસ કર્યો. ગુજરાત પધાર્યા ત્યારે શ્રીગોવર્ધન પર્વત પરથી શ્રીગારધરજીએ શ્રીનાથ મથુરામાં પધારાવ્યું અને સતધરામાંજ શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજીના ઘરમાં લગભગ બે મહીના અને સુધી શ્રીનાથજીની સેવા કરી. સતધરામાં શ્રીનાથજીને રાખ્યા. એ શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજીને પસંદ નહીં, કારણ કે મથુરામાં ગુસધમાનનો દોર બહુ વધી ગયો હતો. મથુરા ગયા પછી એએ રથનો ઉત્સવ ઉજવવાનું પણ બંધ કર્યું તેનું પણ એજ કારણ લાગે છે. પોતાના પિતૃને પસંદ કરેલી ગોવર્ધનપર્વતની જગા શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરને બધા કરતાં વધારે અનુકૂળ લાગી. સંવત ૧૬૨૩ માં ગુજરાત પધાર્યા પછી મથુરા આવ્યા પછી પોતે શ્રીનાથજીના સ્વરૂપને ફરીથી શ્રીગારધર પર પધારાવી ગયા અને સંવત ૧૬૨૪ ના વૈશાખ સુદ ૧૪ ને દિવસે ફરી પાટોત્સવ કર્યો. મથુરાના સહેરી નિવાસ કરતાં શ્રીગુણધરજીને ગોકુલની સાંત જંગા ધણીજ રીતે વધારે ગમ્યા. આવી અને સંવત ૧૬૨૯ ના ફાગણ કૃષ્ણ ૭ થી પોતાનું કાયમનું રથાન ગોકુલ સ્વીકાર્યું.

બાદશાહી સમાગમ—સંવત ૧૬૨૮ ની સાતતી ૧૬૪૨ માં પોતે લીલા કરી ત્ય સુધી શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજી ગોકુલમાં રહ્યા અને પોતાની સાહિત્યની અને ધાર્મિક પ્રવૃત્તિઓમાં પોતાને કામ નિર્ગમન કર્યો. અકબર બાદશાહ પરશોકના સંબંધી પ્રમોની ચર્ચામાં ઘણો આનંદ લેતો આ સમયમાં તેણે વૃંદાવનના ગોસ્વામીઓની પણ મુલાકાત લીધી હતી. પરમાત્માના વિષયનું ચુટીકરણ કરવા અકબર બાદશાહે શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વર દિશીતને આમંત્રણ કર્યું હતું. તેમના મુલાકાસંગ્રામ અને સમભુતીઓથી અકબર ઘણો ખુશ થયો હતો. અને કાંઈપણ બહિસ માગવા. તેણે તેમને વિનંતિ કરી. શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરે અકબર બાદશાહને ગોકુલ ગામ બહિસ આપવા કહ્યું. આ જગા સાંત હોવાથી પોતાના સ્વભાવને અને જરૂરીઆતોને અનુકૂલ હતી, વળી મહાવન પાસે યમુના મૈયાના તીર પર આવેલી હતી. આ પરથી અકબર બાદશાહે પોતાની મહોરવાળો ગોકુલ બહિસ કર્યોનો એક લેખ કરી આપ્યો, અને તે ફરમાન શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરને સંવત ૧૬૩૪ હીજરી સાત્ર ૯૮૫ ખીજા મહીનાની ૨૯ મી તારીખે આપ્યો. (ઈસ્વીસન ૧૫૭૭) શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરને ખીજા ત્રણ ફરમાન પણ કાઢી આપવામાં આવ્યાં હતાં. જેમાં બાદશા અને નંગીરની ભૂમિપર તેમની ગાયો, ઠોર પગે જનાવરને ચરાવવાનો હક્ક બહવામાં આવ્યો હતો. ખીજો એક પરવાનો અકબર બાદશાહની મા હનીદાબાનુ બેગમે પણ કરી આપ્યો હતો. નતીપુરા ગામ ન્યાં શ્રીગોવર્ધનનાથજીનું મંદિર આવેલું હતું તે ગામ પણ તેમને બહીસ આપ્યું હતું. પોતે ગોકુલમાં રહ્યા તે દરમ્યાન બે વખત ગુજરાત પધાર્યા.

શ્રીવલ્લભાખ્યાન—પ્રથમ સંવત ૧૬૩૧ માં અને બીજવાર સંવત ૧૬૩૯ માં નવાખ્યાનના કર્તા ગોપાલદાસનો મેલાપ છેલ્લી વખતે સંવત ૧૬૩૯ માં ગુજરાત પધાર્યા ત્યારે થયો હોવો જોઈએ, ગોપાલદાસે ઘણું સુંદર કાવ્ય રચ્યું છે અને તેમાં છેલા પ્રકરણમાં શ્રીગુણધરજીના સકલ કુટુંબનું વર્ણન કર્યું છે. આ છેલા પ્રકરણમાં શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજીનાં સાત પુત્ર અને તેમનાં વહુજીઓનાં નામ છે. શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજીનાં એક વહુજીના નામનો આ કાવ્યમાં ઉલ્લેખ નથી. આ ઉપરથી એમ અનુમાન થાય છે કે શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજીનાં બન્ને વહુજીઓએ લીલા કર્યો પછી આ કાવ્ય રચાયું હોવું જોઈએ અને એમનાં કનિષ્ઠ પુત્ર ધનસ્થામજીનું જો કે જન્મ ન થયું હોય પણ તેમનો વિવાહ કૃષ્ણાવતી સાથે થયો હતો. તેમનાં ત્રણ બેટીજીઓનાં જન્મ થયાં હતાં. અને પોતાના બેદ જાતા શ્રીગોપીનાથજીની બે વિધવા બેટીજીઓ લક્ષ્મી અને સત્વલામા તેમની સાથે રહેતાં હતાં અને શ્રીનવનીતપ્રિયજીની સેવા કરી મૂર્ત્યુ આનંદમાં. પોતાનાં વૈધવ્યનો કાલ વીતાવતાં.

પધરાતા, અને તે ન હોય ત્યારે રામદાસ વગેરે શ્રીનાથજીની સેવાનું કાર્ય કરતા હતા. શ્રીમદ્ વલ્લભાચાર્યજી અને શ્રીગોપીનાથજીએ લીલા કર્યા પછી બંગાળી અને શ્રીવલ્લભી વૈષ્ણવો વચ્ચે કંઈ અણબનાવ થયો હતો. ત્યાં સુધી માધવેન્દ્રપુરી ત્યાં હતા, ત્યાં સુધી કંઈપણ ખટપટ ઉભી મડી નહોતી. ચૈતન્ય સંપ્રદાયના લેખકોએ પોતાના ગ્રંથમાં આ મુદ્દિને ગોપાલનું નામ આપેલું માન્ય પડે છે. માધવેન્દ્રપુરી મથયાગર ચંદન લેવા સાર દક્ષિણમાં ગયા. ત્યાં તેઓએ આશરે ૧૩૦ વર્ષની મોટી ઉંમરે દેહ મૂક્યો અને કૃષ્ણદાસ અધિકારીજીના અંકુશ અને દેખરેખ નીચે શ્રીનાથજીની સેવા બંગાળી વૈષ્ણવો કરતા હતા. શ્રીગોપીનાથજી ગુજરાતમાં પધાર્યા ત્યારે સેવા સાર આશરે એક લાખ રૂપિયા લાગ્યા. આ દ્રવ્ય તેમણે શ્રીનાથજીને અર્પણ કરી દીધું. શ્રીવિદ્યેશ્વરજીની ગુજરાતમાં ધણી પધરામણીઓ થવાથી ગુજરાતના ધનિક દોષ્ટિ પણ શ્રીનાથજીનાં દર્શન કરવા આવતા અને શ્રીનાથજીને મોટી ઉમદા બોણ કરતા, એમ જણાય છે કે જે બંગાળી વૈષ્ણવો સેવા કરતા હતા તે હાનામાના આ બંધી બેટની વસ્તુઓ તેમના ગોસ્વામી જે વૃદ્ધાવનમાં રહેતા તેમની પાસે ભેઈ જતા. આથી ગુજરાતના વૈષ્ણવોમાં ઘણો અસંતોષ પેદા થયો. જેને અર્પણ કરેલા દ્રવ્યનો આલે દુરુપયોગ થતો જોઈને અનંતદાસ નામના વૈષ્ણવે મોટી રાક પાડી. તેણે આ રીત બંધ કરાવવા અને બંગાળી વૈષ્ણવોને કાઢી મૂકવા કૃષ્ણદાસ અધિકારીને સમજાવ્યું, શ્રીવિદ્યેશ્વરની મંજૂરી સિવાય આ કામ કૃષ્ણદાસ આધિકારીથી બને તેમ નહોતું. આથી તેણે અનંતદાસને શ્રીવિદ્યેશ્વર પાસે જઈને મને સમજાવવા કહ્યું. પહેલાં તે શ્રીવિદ્યેશ્વરજીએ આનાકાની કરી, કારણ કે પોતાના પિતૃચરણે આ બંગાળીઓને સેવા કરવા રાખ્યા હતા. પણ કેટલીક વારાપાટ પાડી આ કાર્યને સાર રાગ ખીરબધ પર ભરામણનો પત્ર કૃષ્ણદાસ શ્રીવિદ્યેશ્વરજી પાસેથી મેળવી શક્યા. આ પત્ર લેઈને કૃષ્ણદાસ ખીરબધને મળ્યા, પછી ચોક્કા માણસો ભેગા કરી અને બંગાળીઓનાં હુપડાં સંગ્રામી દીધાં. જે કણે બંગાળીઓને આ વાતની ખબર પડી કે તરત ગોવર્ધન પર્વત પરથી બધા નીચે ઉતરી આવ્યા. પહેલાં તે તેમણે કૃષ્ણદાસની સામે ઘણો વિરોધ કર્યો પણ આખરે યરણે ચપા અને કૃષ્ણદાસને એકલાને આ મંદિરનો કબજો અને ભોજવો મળ્યો. રાગ ખીરબધને શ્રીવિદ્યેશ્વરજીના જ્યેષ્ઠ પુત્ર શ્રીગિરિધરજી સાથે ઘણો ગાદ સંબંધ હતો. પોતાનો એકલાનો કબજો અને અધિકાર ક્યાપવા સારજ શ્રીગિરિધરજી ગોપાલ શ્રીનાથજીના સ્વરૂપને સંવત ૧૬૨૩ માં પોતાના ઘરમાં પધરાવ્યાં. આ સમયથી શ્રીગુસ્તંધજીએ સેવાના નેક ભોગમાં ઘણો વધારો કર્યો, આ સ્વરૂપ અને શ્રીવિદ્યેશ્વરજીનું ઘર એ વલ્લભી વૈષ્ણવોનું જ સ્થાન બની રહ્યું. અને બંગાળી વૈષ્ણવો પોતાના પહેલાના સંબંધને બૂંધવા લાગ્યા. શ્રીવિદ્યેશ્વરજી અને ચૈતન્યના અંગત સંબંધ ઘણો પ્રેમાળ હતા, જે આપણને શ્રીનાથજીના સ્વરૂપના રચાપન કરવા સંબંધી દહીકત પરથી માન્ય પડે છે. ચૈતન્યચરિત્રના લેખકો તેમાં પણ મુખ્યત્વે કરી કરીને કૃષ્ણદાસ ને બંગાળમાં રહેતા અને જેણે ચૈતન્યચરિત્રાવૃત નામનું પુસ્તક રચ્યું છે તેને શ્રીનાથજી પરનો તેમનો હક જવાબી ધણુ જ તોત દુષ્ક થયું. ચૈતન્યની પ્રસંસા કરવાનાં તેમના હિસાબમાં શ્રીમદ્ વલ્લભાચાર્યજીના કાર્યોને દહકા પાડવાનો તેણે પ્રયત્ન કર્યો શ્રીવલ્લભાચાર્યજીના લેખોમાં કોઈ પણ દેકણે ચૈતન્યના સંબંધમાં કંઈપણ અસત્ય-કઠોર રાખે વાપરવામાં આવ્યો નથી. ચૈતન્ય સંપ્રદાયના લેખકો એવો આલેખ મૂકે છે કે જે કે શ્રીવલ્લભાચાર્યે ચૈતન્યનાં વખાણ કર્યા છે, પણ તેમના સત્સંગીઓને ઉતારી પાડ્યા છે અને શ્રીવલ્લભાચાર્યે ભાગવતનું શિક્ષણ જનનાથપુરીમાં ચૈતન્યના શિષ્ય જગદાનંદ પાસેથી લીધું. એ જાને વાતો ઐતિહાસિક રીતે અસંભવિત છે અને હક પોતાના ખોટા બંધાઈ ગયેલા મતને લખે છે. આના કરતાં ખીતું વધારે બૂધાઈ થું હોઈ

રહે? હાસના બંગાળી લેખકો જેવા કે ડૉ. સેન અને ખીખર જે આ વાતોનું અનુકરણ કરે છે તેમણે આ આખતોના વિવેચનભુક્તિથી અભ્યાસ કર્યો નથી. અર્થે એમ માનીએ છીએ કે ઉપર લખ્યા પ્રમાણે શ્રીનાથજીના સ્વરૂપનો કંબળે જવાથી ઘટાવનના ચૈતન્ય ગોસ્વામીઓને ઘણી નિરાશા ઉત્પન્ન થઈ અને તે આખતોના નિરાશાનો ઉદારો તેમણે આ પ્રમાણે કહાડ્યો છે.

ઘટાવનદાસના ચૈતન્યભાગવતમાં પુરીના બનાવ સંબંધી કંઈ પણ ઉલ્લેખ નથી એમ અમારી જાણમાં છે. શ્રીનાથજીના સ્વરૂપનો કંબળે શ્રીવિદ્યેશ્વરજીનાં હાથમાં આવ્યા તેથી ઘણાં સારાં ફળ થયાં. અકચર બદલાઈ ખાસ કરીને કહાડીને શ્રીવિદ્યેશ્વરજીને જાતીપુરા ગામ જાણે આપ્યું. શ્રીનાથજીના અંગની સેવાનો આધાર ફક્ત શ્રીવિદ્યેશ્વરજીના પુત્રો, વડુજીઓ અને મેરીજીઓને રહ્યો. આઠણોમાં ગિરનારા અને સાચોરાઓ જેમણે આ સંપ્રદાયનો પ્રથમથીજ અંગીકાર કર્યો હતો તેઓને સેવાના કામમાં રાખવામાં આવ્યા. હવેથી સામાન્ય વૈષ્ણવોને સદાને માટે શ્રીનાથજીના સ્વરૂપને સ્પર્શ કરવાનું બંધ કરવામાં આવ્યું. ત્યારે શ્રીમદ્વંદસભાચાર્યજી અથવા તો શ્રીવિદ્યેશ્વરજીના મનમાં આ પરિણામ લાવવાનો વિચાર હશે કે નહીં તે સંકટ બરેહું છે. ત્યારે શ્રીમદ્વંદસભાચાર્યજીએ આ સ્વરૂપની રચાવના કરી અને ત્યારે શ્રીવિદ્યેશ્વરજીને શ્રીનાથજીનો અમનિહત કંબળે મળ્યો, શ્રીવિદ્યેશ્વરજીનો મુખ્ય આશય બંગાળીઓને સેવાથી દૂર રાખવાનો હતો. આ પ્રસંગે આટલું કહેવાનું અરથાને નહીં ગણાય કે સંવત ૧૬૧૬ માં જગન્નાથ જવાથી શ્રીવિદ્યેશ્વરજી ઉપર ચૈતન્યના મતાના તત્ત્વોની જે અસર થઈ હતી તે મુદ્દે રહી નહિ.

૧૬૨૯ માં શ્રીવિદ્યેશ્વરજી ગોકુલ રહ્યા ત્યારે રાજા ટોડરમલ આપને મળ્યા આવ્યા હતા. રાજા હાઉસી સાથે જિદારમાં રાહી લરકરનું સેનાધપતિપણું લેઈ લગાઈ કરવા જવાનું તેને કરમાન થયું હતું. આ કામ થઈને જોખમ ભરેલું હતું અને આ સાદસ પર જતાં પહેલાં ટોડરમલ આશીર્વાદ લેવા શ્રીગુરુજીની પાસે આવ્યા. એઓથીએ તેમને એક ‘ગીતામ્બર’ આપ્યું જે આ લગાઈ કરવા નીકળ્યા ત્યારે પોતાના શિર પર બાંધ્યું. આ પરથી માત્રમ પડશે કે ટોડરમલને શ્રીવિદ્યેશ્વરજીના માટે ધર્મજી માન હતું.

શ્રીવિદ્યેશ્વર સાથે પહેલાં જણાવ્યા પ્રમાણે ખીરખજનો સંબંધ પણ ઘણો ગાંઠા હતો. ત્યારે એઓથી શુભરાતમાં પધાર્યા ત્યારે જન્માટમીનો ઉપવાસ ક્યે દિવસે પાળવો તે સંબંધી મતભેદ થયો. શુભરાતમાંથી પાછા ફરતાં તેમને આ વાતની ખબર પડી. તેમણે જન્માટમીનિર્ણય નામનું પુસ્તક કારણો સહિત બહાર પાડ્યું. આખીજ પરિસ્થિતિમાં તેમણે રત્નનવમીનિર્ણયનું પુસ્તક પણ રચ્યું હતું. ગોકુલમાં આનંદથી નિવાસ કરવાથી પોતાના પિતૃચરણો જે ધાર્મિક ક્રિયાઓ દાખલ કરી હતી તે બધી ક્રિયાઓ બરાબર ચોક્કસ કરી.

શ્રીગોપીનાથજી આચાર્ય તરીકે—શ્રીમદ્વંદસભાચાર્યજીના પછી શ્રીવિદ્યેશ્વરજીના જ્યેષ્ઠ ભાત્તા શ્રીગોપીનાથજી આચાર્ય તરીકે ગાંઠીએ આવ્યા. શ્રીગોપીનાથજી મોટા લક્ષ હતા. પોતાના જ્યેષ્ઠ ભાતાને મારે શ્રીવિદ્યેશ્વરજીને ઘણું માન હતું. પોતાના પિતૃચરણના સિદ્ધાન્તો શ્રીગોપીનાથજી ફરી રીતે સમજતા અને ફરી રીતે તે લોક આગળ મૂક્યા તે જાણવા સાર આપણી પાસે સામગ્રી નથી. આપણે એટલું જાણીએ છીએ કે જાની મોટા ભાગ પોતે અંગેજ રહેતા અને શુભાંશમાં પોતાના પિતૃચરણ પેઢે પોતે જન્માં પધારતા. ત્યાં તે ગોપાલ-ઉપાસના કરતા. સાધનહીન પકા નામનો ગ્રંથ એથણે રચ્યો છે એમ કહેવાય છે. આ ગ્રંથમાંથી આપણને ઘણું જાણવાનું મળતું નથી. આ ગ્રંથમાં એક એવો કાનુન મૂક્યો છે કે વિધવા સ્ત્રીએ કૃષ્ણની સેવા જાતભાવથી કરવી. પણ જાભાગવતી સ્ત્રીએ કૃષ્ણની સેવા ભર્તૃ-ભાવથી કરવી. શ્રીમદ્વંદસભાચાર્યના

રાગમાંજ સવારના કીર્તનો ગવાતાં. સંજના કીર્તનો પણ 'સંજે ગવાય' તેવા રાગમાં ગવાતાં. જન્માષ્ટમી, અનનૂદ એવા મોટા ઉત્સવો હોય ત્યારે આ નિયમો પાળવામાં આવતા નહિ. આવા પ્રસંગે ગમે તે સમયે ગમે તે ગાગમાં કીર્તનો ચતાં, સંગીતમાં ઝડુ અનુસાર રાગ, ખલ્લાય છે. નિત્યસેવામાં હિંઆ પ્રકારના સંગીતના સાજ તંબુરો, ખીન, મૃદંગ, સારંગી વગેરે વપરાતાં. આજ રીત હજી પણ સંપ્રદાયમાં ચાલુ છે. અને માનીએ છીએ કે શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજીના મુન શ્રીધુનાથજી પોતાના પિતાજીને ગીતસંગીતસાગરનું નામ આપે છે તે યોગ્ય છે.

ઝડુ-અનુસાર સેવાક્રમ—નિત્યસેવાનો ક્રમ પણ ઝડુ અનુસાર બદલાતો. ફરક ખામતની એવી ઉત્તમ ગોઠવણી રગવામાં આવી હતી કે શીતકાળમાં કોઇ પુષ્ટિમાર્ગીય મંદિરમાં પ્રવેશ કરે કે તરતજ તેને શીતકાળની જરા પણ અસર થતા બાહ્ય પહેનાહોં. તેજ પ્રમાણે ઉષ્ણકાળમાં શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજીના મંદિરમાં પ્રવેશ કરે કે તરતજ ઉષ્ણકાળ છે એજ તમે બહી જાઓ. સંચર્યતા એટલી દદ મુંધી છે જવામાં આવી હતી કે દરરોજ ઉત્તમમાં ઉત્તમ જે જે વસ્તુઓ શ્રીદ્વારજીને ધરાવવામાં આવે તેમાં દિવસનો વખત અને ઝડુનો વિવેક સાંખવામાં આવતો. અકબર ખાદશાદ શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજીની મુલાકાત લેતો અને આપશીએ તેને દર્શન કરવાની છૂટ આપી હતી. સંપ્રદાયમાં એવી ગાથા પ્રચલિત છે કે ઝડુપણિયા અથવા ઘરતપણિયાને દિવસે અકબર ખાદશાદ શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજીને ત્યાં આવ્યાં. ઉત્તમમાં ઉત્તમ રસાગારનું આધેવ શ્રીધુજી છે. શ્રીધુજી સ્થામ છે એમ ધર્મનું છે અને તેથી તે દિવસે પિછાઈ, ખિજાત વગેરે બધે સાંજ સ્વાભાવિક રીતે સ્થામ રંગનો હતો. અકબર ખાદશાદની વિચ્છિપરથી સ્થામ વસ્ત્રને બદલી મહેદ રૂપેરી કપડાં ગાખ્યાં અને આ રીત હજી પણ પુષ્ટિમાર્ગીય મંદિરમાં કાયમ છે. ચિત્રકળા જે પણ શ્રીધુલેશ્વરજીનો એક આનંદનો વિષય હતો. પોતાના કાકુરજી શ્રીનવનીતપ્રિયજીનું મુંદર ચિત્ર પોતાના હાથે તૈયાર કરેલું મુંખજીના ગોસ્વામી શ્રીદ્વારજીજી મહારાજના કળામાં છે. ઉત્સવના દિવસે મુંદર આર્તિઓ પીતરવામાં આવતી અને તેમાં મોટી ગોઠવવામાં આવતાં અને તેમાં રંગોનું મિશ્રણ અતિ ઉત્તમ રીતે કરવામાં આવતું. આ આર્તિઓના નમુના એએઓના કુટુંબનો સ્વીવર્ગજ કરતો અને હજી પણ કેટલાક આર્તિના નમુનાના નામ શ્રીભક્તજીજીની વગેરેની આર્તિઓ કહેવાય છે. ધર્મજી માપસર ચિત્રકામ આ આર્તિઓમાં માલુમ પડતું. વસ્ત્રત્કરુમાં સ્થામ અને લીલા રંગોમાં મુંદર છાપોવાળા પદ્મ અને પીંછાઈ જે નિલસેવામાં વપરાય છે, તે ઉપયોગમાં લેવાતાં. તેજ પ્રમાણે સાંજના દિવસોમાં ઉત્તમ પ્રકારના રંગોમાં ડુધુલીલાઓનું વર્ણન કરતી શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજીની પ્રેરણથી જાકુલો, સાદ રીપર, કંડારમાં અલ્લી, હિરમ, જૂક જેવું કે, ચુલામ, અંબેલી, અરુક, જરૂમ, કાળ વગેરે શ્રીદ્વારજીને અર્પવાની માળા મુંધવામાં વપરાતાં. ઉષ્ણકાળમાં પ્રુલ્લખજીઓ તૈયાર કરવામાં આવતી. તેમાં જુલ ધણીજ મુંદર અને રસિકતાથી મુંધવામાં આવતાં અને પીરવામાં આવતાં. ટુંકામાં અકબર ખાદશાદના સમયમાં જે જે લલિતકળાઓનો વિકાસ થયો હતો તે બધીનો શ્રીધુજીની નિત્યની સેવામાં ઉપયોગ કરવામાં આવ્યો હતો.

શુજરાતનો ઉદ્ધાર—શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરજીની ધાર્મિક પ્રવૃત્તિઓનું ક્ષેત્ર મુખ્યત્વે શુજરાત અને કાઠીઆવાડ હતું. આ રથળનાં લોકો સ્વભાવે વેપારી હતા. આવા લોકોને વત્તવાનના મહત્ત્વ વિષયોના પ્રશ્નો ચર્ચનારાં પુનઃક્રમમાં રસ લેતા કરવા એ કંઈ મુશ્કેલ હતું. શ્રીધુજીની સેવા એજ મનુષ્ય માત્રનું ધ્યેય છે એ વાતનો સ્વીકાર કેમ કરાવે એ શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વરની પાસે મોટો પ્રશ્ન હતો. શ્રીધુજીની લીલાઓનો આખેદુજ ખ્યાલ આપે તેને સાદું. રાસધારીની ગંજીની ચોળનાનો પ્રમંથ કર્યો. આ રીત અન્ય રીતે ક્ષેત્રમંદ નીવડી અને શુજરાતની જામી સાતિઓએ ધર્મજી ઉદ્ધારી

અને શીઘ્રતાથી કૃષ્ણસેવા-માર્ગનો સ્વીકાર કર્યો. ખરું જોતાં જે કંઈ આપણે આપણું પોતાનું માનીએ તે સર્વથા શ્રીકૃષ્ણને અર્પણ કરવાનું છે. તે વસ્તુઓ કાઢીને આપી દેવાની નથી, પણ મનમાં એવી ભાવના રહીશૂન કરાવાની છે કે જે કંઈ આપણી પાસે છે તે પ્રભુનું છે અને પ્રભુને માટે છે. આવી ભાવના મન-સિદ્ધાંત જે શ્રીમદ્વલ્લભાચાર્યજીએ લખેલા પૂજના નદા વચ્ચેના-વર્ણનાનો ઉપદેશ કરેલો તેથી વૈષ્ણવોએ પોતાના આચારમાં સંસારની અહંતા અને મમતા કાઢી નાંખી પ્રભુ તરફ અહંતા અને મમતા વાળા દીધી. શ્રીવિદ્યેશ્વરજીએ શ્રીકૃષ્ણની સેવાનો સારો અને સ્વચ્છ ઉપાય પોતાનો ઉદ્દેશ પાર પાડ્યો. શ્રીકૃષ્ણની સેવામાં કુટુંબનો દરેક માણસ ભાગ લેઈ સદે અને જે વસ્તુઓ પોતાનો માનવામાં આવતી હોય તેનો શ્રીકૃષ્ણને માટે ઉપયોગ થાય. આ રીતે મુજરાતના મોટા જાગીરામાં શ્રીવિદ્યેશ્વરે વૈષ્ણવ સંપ્રદાયને એક ધરતે ધર્મ બનાવ્યો.

આદોષપરિહાર.—શ્રીવિદ્યેશ્વરજીના પ્રભાષનાં મૂળ એટલાં ઉંડાં નાંખ્યાં હતાં કે યોગ્ય સમયમાં તેનો એટલો દર બુધી પ્રચાર થયો કે જ્યારે મુજરાતમાં વૈષ્ણવ સંપ્રદાય ઉચ્ચાર થાય ત્યારે તેનો અર્થ પુષ્ટિમાર્ગીય વૈષ્ણવ એવાજ થતો. કાકર ભાંડારકર જે રીકા કરે છે કે શ્રીમદ્વલ્લભાચાર્યજીનો સેવાક્રમ ભાવનાપ્રધાન કરતાં નાટ્યપ્રધાન હતો તે ખીનપાયાવાર છે. શ્રીકાકરજીનો ખાસ કૃપા સિવાય અને પ્રેમભાવના સિવાય સર્વ મેવાસામગ્રી નકામી છે. એવા શ્રીવિદ્યેશ્વરજીએ ઉપદેશ કર્યો હતો. કાકર ભાંડારકર જે રીકા કરી છે તેનું કારણ પુષ્ટિમાર્ગીય મંદિરમાં જે સંવાદકાર ગાંધે છે તેનાથી તેમનું અપરિચિતપણું અને ખીલું જે કંઈ મેવાસામગ્રીનું જાન તેમણે મેળવેલું તે કાઢના પાસેથી મેળવેલું દરે એમ કહે છે. રામાનુજ માખ, મોરીઆ અને જમનાથના કૃપ્ય કથાનો અને શ્રીવિદ્યના મંદિરનો અભારા અનુભવ એમ કહે છે કે કૃષ્ણસેવાનો પ્રકાર જે શ્રીવિદ્યેશ્વરજીએ બોધ્યો છે તે અદ્વિતીય અપ્રતિમ અને અનુપમ છે. આ જાનાને સ્વીકાર મુજરાતના એક મોટા વૈષ્ણવ ગુરુ સ્વામીનારાયણે મુકત કંઈ કર્યો છે અને પોતાની શિક્ષાપત્રીમાં પોને શ્રીવિદ્યેશ્વરજીને વૈષ્ણવચર્યાનો રાજ તરીકે સંબોધે છે. શ્રીસ્વામીનારાયણે ખુદના અનુયાયીઓને શ્રીવિદ્યેશ્વર જે સેવાપ્રકાર બોધી આપ્યો છે, તે પ્રભાણે આજના શિક્ષાપત્રીમાં ઉપદેશ કર્યો છે. ખરી જાત એ છે કે મનુષ્યમાનની ઉંચા પ્રકારની હલની ભાવનાઓનો વિકાસ કરતા આ મંદ્યપ્રકાર રચ્યો હતો. એટલે આ સેવામાર્ગને નાટ્ય-પ્રધાન કહેવા એ આખા મોટા આચાર્યને અરેખર તત્ત્વ અન્યાય કરવા જેવું છે. અનુભવસિદ્ધ કહે છે કે આ સેવાપ્રકારનું અનુસરણ કરવાથી અનુયાયીઓને સંસારના બંધનોનું વસ્ત્રદળ થય શામું એટલુંજ નહિ પણ શ્રીકાકરજીના અનુભવ કરવામાં આ સેવાપ્રકાર તેમને ધણીજ સદાપ્રજ્ઞ થયેા વ્યવહારમાં હોય માત્રમ જે પણ શ્રીવિદ્યેશ્વર જે ઉચ્ચ આદર્શ રાખેલો ત્યાં નહીં ન પડેલાય એમ કાને તેમ જતાં આખા સેવાપ્રકારને નાટ્યપ્રધાન કહેવા એ તે ભાવાનો દરપોષ થવા જેવું છે.

મંદિરો કેવાં હોય ?—નહિ જાણવામાં શ્રીવિદ્યેશ્વરજીએ પોતાનાજ પાન કાંધી કાઢ્યો. મંદિરોને સાર મોટાં અને જન અચ્છોથી મક્કનો, ગંધવાનો વિચાર તેમને પસંદ નહોતો, મોટાં આશીશન મંદિરો વધેલા ને નમસ્કારથી સંબંધી સદીસલામત નહોતું. આજ કાલુચી પોને પશ્ચિમ કાંઠી પલ્લિપ્ત નહિની રચના કરવાનું કહેલું. બહારના દેખાવવાથી મંદિર છે, એમ જાણવાજ નહીં. બહારના દેખાવથી નો તેમનું મંદિર એક સપાટાનું રહેવાના મક્કન જેવુંજ જણાય. પણ તેમ જતાં નહિતરી બંધની રચના કરવામાં ધણીજ કાળજી રાખવામાં આવી. (Free)-માર્ગનો દેવા અને અનુભવ મને દિને મોટે પાસ ખાન આપવામાં આવતું. અલ્પિ પણ

શ્રીનાથજીના મંદિરની રચના ધણીજ સાદી પદ્ધતિની છે. મંદિરની અંદર મધ્યમાં ત્રણ કમાનવાળી ગેલેરીઓવાળો ચોક રાખવામાં આવ્યો હતો. આવી એક ગેલેરીની પાછળ નિજ-મંદિરનો ભાગ હતો. આ નિજ-મંદિરની એક બાજુએ શયનગૃહ રાખવામાં આવ્યું હતું. આ શયનગૃહને ગૃહિક બનાવવામાં ધણીજ ખર્ચ કરવામાં આવતો. બીજી બાજુએ ભોગગૃહ રાખવામાં આવતું ત્યાં શ્રીકાકુરજીને ભોગ-સામગ્રી સમર્પવામાં આવતી. ભોગગૃહથી આગળ પાકગૃહ અથવા શ્રીકાકુરજીને માટે ભોગ તૈયાર કરવા જે ઓરડાઓ રાખવામાં આવ્યા હતા. ડુલ, શાક, પાન, જળ આદિને માટે જુદા જુદા ઓરડાઓ રાખવામાં આવ્યા હતા. જેને ડુધધર શાકધર, પાનધર, જળગૃહ વગેરે નામોં આપવામાં આવ્યાં હતાં. કંમિતી અકંકાર, આજુપણ અને વાધાવસ્ત્ર જે શ્રીકાકુરજીને શૃંગારવા રાખ્યા હતા તે પણ સહી સલામત જગામાં રાખવામાં આવતા. આ મંદિર મધ્યમાં રાખવામાં આવ્યું હતું અને મંદિરની આજુબાજુ મહારાજને સારૂ રહેવાનાં મકાનો અને પ્રચારકોને સારૂ મકાનો બાંધવામાં આવ્યાં હતાં. ચૂળ ખ્યાલ એ રાખવામાં આવ્યો હતો કે શ્રીકાકુરજી એ મૌનિક અને ઓરવામી મહારાજશ્રીઓ અને બીજા જાણ તેમના ગ્રેવક છે. આ વાત ખ્યાનમાં રાખી રહેવાનાં મકાનોની રચના કરવામાં આવી હતી.

નામસેવા અને કુટુંબપોષણ—સેવા-પ્રકારના વિકાસ કરવાની સાથે પોતાના પિતૃ-શ્રવણના સિદ્ધાન્તો અને મતોનું વિવરણ કરવામાં અને સમજાવવામાં તેજલાજ ઉત્સાહથી પોતે પોતાનું મન લગાડ્યું. પોતે જે સાહિત્યના ગ્રંથો રચ્યા તેમાં વિચારની અને બાબતી પરિષ્કરતા જણાઈ આવે છે. વેદાન્ત-સૂત્રોપર જે અણુભાષ્ય તેમના પિતૃશ્રવણે લખ્યું હતું તે આ સમયમાં પોતે સંપૂર્ણ કર્યું. મોટા ધાર્મિક ગુરુઆચાર્યો તરીકેની તેમની પ્રતિષ્ઠા નિર્વિવાદ હતી. યુગશતના વૈષ્ણવો તરફથી ઉમદા કોટી તેમના તરફ સંખ્યાબંધ આવતી. અકબર બાદશાહ અને તેના પ્રખ્યાત પ્રધાનો ટોડરમલ, ખીરખત્ર, રાય પુરુષોત્તમ અને બીજાઓએ વગર માગે પોતાની મહક આપી હતી. પોતાની રાતિના વિદ્વાન માણસો જે તેમની સાથે ગદામાં રહેતા હતા તે બધારે ત્યારે તેમની પાસે આવ્યા તેમને પોતે સારો આશ્રય આપ્યો—આ બ્રાહ્મણોની સાથે પોતે લક્ષ્મીના સંબંધ બાંધ્યા, અને તેમના પુત્રોને પોતાની બેરીછત્રો લગામોં આપી અને તેમની પુત્રીઓ પોતાના પુત્રોને સારૂ લક્ષમાં લીધી. એમની રાતિના આ બ્રાહ્મણો હદ તરીકે જોળખાવા લાગ્યા. પોતાના પૂર્વજોના દેશ સાથેના સંબંધની શ્રીવિઠ્ઠેશ્વરને હવે જરૂર ન લાગે તેમ ત્યાંના સંબંધ ધણીખરો છુટી-ગયો અને પોતે ચોકુલવાસી થયા. ધીમે ધીમે પોતાની માતૃભાષા તેમણે બદલે રૂપાનિક ભાષાને પોતાની માતૃભાષા કરી. વૈષ્ણવો તેમજ હદ લોકોનો શ્રીવિઠ્ઠેશ્વરજી તરફ ધણીજ ભક્તિભાવ હતો. આનું પરિણામ એ થયું કે શ્રીવિઠ્ઠેશ્વરજીને પોતાની મદતાનું એટલી હદ સુધી ભાન થયું કે પોતે પોતાને મોટે માનાર્યમાં જાહેરચાલના પ્રયોગ કરવાં (વાપરવા) લાગ્યા. સાંજના અનનસરના સમયમાં બધારે વૈષ્ણવોને શ્રીસુગોધિનીજી સંભળાવતા ત્યારે શ્રીસુગોધિનીજીના અથરા ભાગ પર પોતે નોંધ અથવા ટીકા લખતા. આ ટીકા બધી સાથે બાંધવામાં આવી અને તેનું નામ વિશ્વતિપ્રકાશ આપવામાં આવ્યું. મંગલાચરણમાં 'શ્રીવિઠ્ઠલ' કિચ્તે-રાખ્દ છે તે પરથી દર્શાવેલી સ્વમદતાનું ભાન તેમને હશે એમ સ્પષ્ટ થાય છે.

દાંડભાગ—શ્રીમદ્વલ્લભાચાર્યજીએ પોતાના ભક્તોને દેવદાંડ સ્વરૂપ પદ્ધતી આપ્યાં હતાં. બધારે જે જે ભક્તો ગોનોકવાસી થયા અને તેમનો વંશ રહ્યો નહિ અથવા સ્વરૂપની સેવા કરવા અશક્ત થઈ ગયા, ત્યારે તે ભક્તોએ તે સ્વરૂપ શ્રીસુસાંછજીને પાછો સોંપ્યાં. આમાંના ચાત અથવા આક પોતાને મળ્યાં હતાં. એઓશ્રીએ દાંડભાગમાં સંવત ૧૬૩૪ માં પોતાના પુત્રોને આ સ્વરૂપ

વહેંચી આપ્યાં દત્તાં. શ્રીનાથજીની સેવના અધિકાર સાતે પુત્રોને મળ્યાં (સંયુક્ત) આપવામાં આવ્યો. પોતાના મોટા પુત્ર શ્રીશિરધરજી એક પુત્ર હોવાથી ગાદીના અધિકારી હતા તેમ તેમની તાબામાં એ શ્રીનાથજીનું સ્વરૂપ રાખવામાં આવ્યું. સંપ્રદાયમાં આ સાત સ્વરૂપને સાત નિધિ કહે છે. સાતે પુત્રોને સાત મકાન ગોઠવવામાં બાંધી આપ્યા દત્તા અને દરેક પુત્રને એક એક આપવામાં આવ્યું હતું (શ્રીવદુનાયજી, શ્રીરક્ષિતભણીજીના પુત્ર જે સાથી નાના દત્તા અને જે મોટા પુત્ર શ્રીશિરધરજીની સાથે રહેતા તેમને માટે મકાન બાંધ્યું નરિ હોય). ત્રણભાગમાં આપેલાં સ્વરૂપને દરેક પુત્રે પોતાના સ્વેચ્છા સ્વરૂપ તરીકે સ્વીકાર્યું અને તેને માટે મંદિર બાંધ્યું. સંપ્રદાયમાં આ સાત મંદિરોને સાત ગાદી તરીકે ઓળખવામાં આવે છે. શ્રીચિત્રેશ્વરજી એક પત્રમાં પોતાના પુત્રોને વદુનાયજીને માટે ધર બાંધવા જગ્યા પસંદ કરવા લખે છે. એમ ત્રાગે છે કે શ્રીવદુનાયજીને માટે મંદિર બાંધાયું તે પહેલાં પોને લીલા કરી હોય. આનું પરિણામ સંપ્રદાયમાં અનિશ્ચિત આવ્યું, કારણ કે શ્રીવદુનાયજીની ગાદીના મુખ્યેક તરીકે ચાર વંશજોને પોતાનો દાદા બતાવે છે.

ભક્તિદ્વંસ—શ્રીચિત્રેશ્વરજીનાં છઠ્ઠાં વંશે ગોઠવવામાં વણા મુખથી પસાર થયાં. એક મુશ્કેલી નામના પંડિતે તેમને એક એવું પુસ્તક આપવા લખ્યું કે જેમાં પુષ્ટિમાર્ગના મૂળ સિદ્ધાંતોનું એવું સ્પષ્ટ વિવેચન હોય કે જેથી પોતાના દેશના જ્યાં વિરાધીઓને પોતે નિરુત્તર કરી દાદે. આના જગ્યામાં શ્રીચિત્રેશ્વરજીએ ભક્તિદ્વંસ નામનો ગ્રંથ રચ્યો અને તે ગ્રંથ તે પંડિતને મોકલ્યો. આ ગ્રંથ મળ્યાથી તે પંડિતને ધણો અનંદ થયો અને ભક્તિના મૂળ કારણની વધારે સમજુતીને સાદે માગણી કરી. આ માગણીથી તેમણે ભક્તિ-દેવુ નામનો ગ્રંથ રચ્યો. આ એ પુસ્તક ભક્તિનું મુખ્ય કારણ પ્રગટની દ્વારા અથવા અનુગ્રહ છે અને પૂર્ણ પુરુષોત્તમ પોતાના અંતરંગ ભક્તોની સાથેજ રમવા કરે છે, મન, તન કરાથી વસ થતા નથી. એમ દુઃકમાં સમજાવે છે.

આચાર્ય-વ્યાખ્યાન—શ્રીચિત્રેશ્વરજી સિવે વંચી અધિક જૂતાં પર બિરાજ્યા. એમના જીવનમાં સંપ્રદાયના ચાલુ સિદ્ધાંત અને સેવાપ્રકાર બનેલી ચોખ્ખી પરિપૂર્ણતા હતી. પોને ક્ષેત્રી રીતે લીલા કરી તે જાગત તેમના ભાતોએ અધિકારમાં રાખ્યા છે. ગોપાલદાસ ચ્યારાના રક્ષી તરફથી આપણી ખબર મળે છે કે તેમને જગ્યા અને પેટમાં કાંઈ દરક થયું જેથી સંવત ૧૬૪૨ ના માર્ગ માસની દુબ્બ ૭ ને દિવસે પોને લીલા કરી. આ રીતે આ બગીચા કાર્ય કરનાર આચાર્યશ્રીનું પ્રકટ જીવન તિરોદિત થયું. જેનાં મુશ્કેલીઓ દાદા પાત્ર વાંચનાના ઉદયમાં છે.

વિગમ—શ્રીચિત્રેશ્વરજીના જીવનના એક પ્રસંગમાંથી-મોટામાંથી સારાને ઉદ્ધતવ યાચ છે એ કથનનો આપણે ખ્યાલ આવે છે. શ્રીમદ્વક્ત્રાચાર્યજીએ ગોલધર્મ પર્વન પરના શ્રીનાથજીના મંદિરના અધિકારી તરીકે કૃષ્ણસરને નીમ્યા દત્તા. શ્રીચિત્રેશ્વરજીની સાથે કેમકે તત્કારણે લેકો કૃષ્ણામે શ્રીચિત્રેશ્વરને મંદિરમાં આવવા બધે કહ્યું. શ્રીચિત્રેશ્વરજીએ અધિકારીઓને દુકમ માન્ય કર્યો અને પરાસોલી, ચંદ રોજર પર ૭ માસ સુધી દેશવરો બેઠાં. આ સમયમાં પોને કેટલીક ઉત્તમમાં ઉત્તમ વિગમિઓ લખ્યાં છે. એમ કહેવાય છે કે કરોજ એક વિગમિ લખાવી અને સમજાસ તે વિગમિ શ્રીનાથજી પાસે લેઈ જતા. શ્રીચિત્રેશ્વરજીના અંતરોના મુંઝવિ ભાવ દત્તા તે આ વિગમિઓ પરથી દેખાઈ આવે છે. આ વિગમિઓના વિચાર અને બાબતોથી બનેલો મોર મેગ (આ વિગમિઓમાં) જામ્યાં છે. આ વિગમિઓ વાંચીને આપણા મન પર કાવમની છાપ પડી જાય છે. પોતાના પ્રાણુઓને મજાત નથી રહેતા ચિરદસદેવ હૃદયનું આ પરિણામ છે. દુષ્કર્મને શા કારણથી શ્રીચિત્રેશ્વરજીને શ્રીનાથજી કૂર રાખ્યા તે જાગત અધિકારમાં છે, તેમ છતાં, આખરે દુષ્કર્મને પળાવ્યા અને શ્રીચિત્રેશ્વરજીની માગી માગી અને મંદિર આપવાને

માટે વિનવતિ કરી. આ વિરસિઓમાં દરેક શ્લોક નિરાળો જ છે. એક પ્રકારકે ૨૫ શ્લોકનું એક છુમ્મુ કરી બુદ્ધુ જાણ્યું, પણ એમ કરવાને અર્થને તો કંઈ કારણ જણાતું નથી. આ વિરસિઓ રી રીતે લખાઈ તે બાબતમાં અમારો શું અભિપ્રાય છે તે જણાવવું અગત્ય નાહ જણાય. શ્રીવૃદ્ધેશ્વરજી પત્ર લખવામાં ધણા કુશળ હતા. ધણા વૈષ્ણવોને પોતે પત્ર લખતા અને ધણા વૈષ્ણવો તરફથી તેમના પર પત્ર આવતા. આ પત્રો સંસ્કૃત ગદ્યામાં લખાતા, પણ પત્રના આરંભમાં અને અંતના ભાગમાં પોતે એક જે શ્લોક લખતા અને પોતાના વૈષ્ણવોને પોતાનું ધાર્મિક કર્તવ્ય શું છે તે જણાવતા. વખત જતાં પરોનો નીરસ ભાગ હુમ થયો, પણ શ્લોકોનો સંગ્રહ થયો અને તે જળવાયા. વિરસિઓની ઉત્પત્તિનું આ કારણ હોવાથી શ્લોકોની અસંખ્યતાનું કારણ આપણને સમજણ પડશે. અસંખ્ય છે છતાં, કતીની અનદદ ભક્તિનું તેમાં દર્શન છે. દેશીક વિરસિઓમાં તો ઉત્તમમાં ઉત્તમ અને ઉમદા ભાવનાઓ પ્રાપ્ત કરવામાં આવી છે.

કૌટુંબિક જીવન—શ્રીવૃદ્ધેશ્વરજીનું કૌટુંબિક જીવન ઘણું સુખી હતું. પ્રભુએ તેમને મોટું કુટુંબ બંધ્યું હતું. પોતાનાં પહેલાં વડુજી રકિમણીજીથી છ પુત્ર અને ચાર પુત્રીઓ પ્રાપ્ત થયાં હતાં. શેાભા, યમુના, કમલા અને દેવકા બેરીજીઓ પહેલાં વડુજીથી થયાં હતાં. તે સહિતે પદ્મજીઓ હતાં, અને તેઓ પણ તેમના પતિની સાથે શ્રીવૃદ્ધેશ્વરજીના ઘરમાંજ રહેતાં. શ્રીગિરિધરજી, શ્રીગોવિંદજી, શ્રીઆલકૃષ્ણજી, શ્રીવલ્લભજી, શ્રીરઘુનાથજી અને શ્રીવૃદ્ધનાથ પોતાના પહેલાં વડુજી શ્રીરકિમણીજીના છ પુત્ર હતા. શ્રીલક્ષ્મણજી સાતમાં અને પદ્માવતી વડુજીના એકના એક પુત્ર હતા. શ્રીવૃદ્ધેશ્વરજીનું પહેલું બાળક શેાભાજી હતાં અને તેમના પછી ભ્રેષ્ઠ પુત્ર ગિરિધરજીનો જન્મ થયો હતો. પોતાના ભ્રેષ્ઠ બાતા શ્રીગોપીનાથજીના એક પુત્ર પુરોત્તમજીએ લીલા કરી હતી, પણ પુરોત્તમજીની જે બેનો લક્ષ્મીજી અને સ્વભાગાજી શ્રીવૃદ્ધેશ્વરજી સાથે નિવાસ કરતાં. તેમણે બન્નેએ શ્રીનવતીતપ્રિયજી તથા તેમના ધરના હકોરજીની સેવામાં પોતાનો વૈધવ્યને કાળ ધણા સુખમાં નિર્ગમન કર્યો. જે કે શ્રીવૃદ્ધેશ્વરજી ચંદ્રચાત્રમી અને મોટા કુટુંબની જંગળવાળા હતા છતાં પણ સાંસારિક ઉપાધ્યો અને દુઃખમાંથી એમનું ઘર મુક્ત હતું. પોતાના કૌટુંબિક જીવનમાં સંસારની ગન્ધ નહોતી. પોતાના પાંચમો પુત્ર શ્રીરઘુનાથજીના પુત્ર શ્રીરંધીનંદનજીએ રસાધિનામનું કાવ્ય લખ્યું છે તેમાં શ્રીવૃદ્ધેશ્વરજી પોતાને દેવી રીતે રમાડતા અને ખેલાવતાં તે લખી ગયા છે.

આ ઉપરથી માલુમ પડશે કે પોતાના બાળકોને રમાડતાં પણ પોતે પોતાના સ્વામી શ્રીકૃષ્ણને ભૂલતા નાહ. એટલુંજ નહીં પણ નાનાં બાળકોના કુમલા મગજ પર તેમનું કર્તવ્ય તેમના સ્વામી શ્રીકૃષ્ણની સેવા કરવાનું છે એવી જાણપડતા. તેમની પાંચ શ્રીકૃષ્ણભૂરાયજીનું રજેલું એક કીર્તન છે. શ્રીવૃદ્ધેશ્વરજી ઘર છોડવા પોતાની નામરજી-દેવા નાભુક રાખેદોમાં આવે છે. ત્યારે શ્રીવૃદ્ધેશ્વરજીના કાકા સંતતિ ન હોવાથી તેમના એક બાલક પુત્રની માગણી કરવા આવ્યા ત્યારે શ્રીવૃદ્ધેશ્વરજીના સંતાન વચરના કાકા ત્યારે તેમના એજ બાળક પુત્રની માગણી કરવા આવ્યા ત્યારે તેમના પાંચ શ્રીકૃષ્ણભૂરાયજીએ શ્રીવૃદ્ધેશ્વરજી ઘર છોડવાની પોતાની નામરજી સુંદર અને ભાવવાહી રાખેદોમાં એક કીર્તનમાં ઉતારી છે. શ્રીકૃષ્ણભૂરાયજીને એમ બીતિ હતી કે હું પ્રથમ પાંચ છું એટલે મને આપી દેશે. શ્રીકૃષ્ણ પ્રભુનાં કીર્તન કરી શ્રીવૃદ્ધેશ્વરજીના ઘરમાં રહેવાનો વિચાર દુનિયાની ગમે તેટલી મોહક વસ્તુઓ મેળવવાં કરતાં શ્રીકૃષ્ણભૂરાયજીને વધારે રચિકર લાગ્યો. શ્રીવૃદ્ધેશ્વરજી પોતાના બાળકોના સ્વભાવ સમજતા અને પોતાના લાલચમાંથી કાઢપણ પોતાનું ઘર છોડી જવા દેતો નથી, એમ જણતા હતા તેથી તેમણે પોતાના કાકાને કહ્યું કે જે લાલચ આપતી સાથે

આવતા ખુશી હોય તેમને સેઈ જાઓ. આ જગ્યાથી પોતાના કાકા ભોદા પરી ત્યાં અને નિરાશ થઈ પાછા ગયા. સંપ્રદાયમાં એવી ગાથા પ્રચલિત છે કે શ્રીવિદ્યેશ્વરજીના વંશને તેમના કાકાએ ત્રણ શાપ આપ્યા. આ ત્રણ શાપ આ પ્રમાણે છે—(૧) પોતાના જન્માર્થમાં બરાબર પાપણ (૨) કરજ અને (૩) મુસાફરી. આ ગાથામાં દરજા પ્રમાણમાં અને કરજ સત્ય છે તેનો નર્ણય કરવો મુશ્કેલ છે, પણ પહેલો શાપ તો અત્યારના સમયો પડ્યો છે એમ લાગે છે. અત્યારે પણ, ગોસ્વામી બાળકોની બેરીછના પતિઓ જેમને ભદ્ર કહેવામાં આવે છે, તેમને તેમના બધા કુટુંબની સાથે પોતાના ધરમાંજ પાળવામાં આવે છે. બીજા શાપના સંબંધમાં આપણને તેના સત્ય માટે દરજોડ પુરાવા મળે છે. શ્રીવિદ્યેશ્વરજીએ પોતાના પુત્રોને પત્ર લખ્યા છે તેમાં પોતાનું દેવું વાળવાને માટે લખાણ છે. હવે તો શાપ નથી પણ આસીર્વાદસ્થાન છે; કારણ કે તેથી વૈષ્ણવોની સંખ્યામાં વધારો અને સંપ્રદાયની આબાદી થાય, અને તેમ હો. પણ શ્રીવિદ્યેશ્વરજીની મનોમતિ તો ૧૫૪ દેખાય છે, એમણે શ્રીમદ્વલ્લભાચાર્યજીના અલ્પાગ્રહ બીજી માર્ગ પ્રદર્શ કર્યો. પોતાની બેરીછઓ સંસારમાં નિમગ્ન રહે એ પોતાને રુચું નહ. તેથી કરીને બેરીછઓને પોતાના ધરમાં રાખી જેથી પોતાના પુત્રો જે સમયથી સેવા કરી શકે તેજ સમયથી તેઓ પણ શ્રીકૃષ્ણ પ્રભુની સેવા કરી શકે. તેમને અત્યંત પરજીવી હતી, પણ તેમના પતિ ભદ્રો શ્રીકૃષ્ણ પ્રભુના સેવા પ્રકારમાં કાંઈ દંડ નહોતો રાખ્યો. ગોસ્વામી બાળકોના કાર્પણ મંદિરમાં અવાપિ પણ કાર્પણ બહુને અંદરની સેવાનો અધિકાર આપવામાં આવતો નથી. શ્રીકૃષ્ણપ્રભુની શ્રીમદેશ્વરજીની સેવાને સેવ જે કરજ થતું કે કાર્પ વખત થોડા પડતું મળતું નહોતું. આ દેવું સંસારના કામકાજ માટે નહોતું તેથી કરજના અનિષ્ઠ પરિણામનો આ દેશની સાથે સંબંધ ન ગણાય.

સેવકો પર કથા—શ્રીવિદ્યેશ્વરજીના વંશને પર આ શાપની બરાબર અસર થઈ નહોતી. તેમનો મુદ્દાચાત્ર સુખી હતો. શ્રીવિદ્યેશ્વરજી અને શ્રીમુનાયજીનાં વડજી બન્ને બેનો થતાં, તેમ શ્રીવલ્લભાચાર્ય તથા શ્રીધનસ્થામજીનાં વડજી પણ બેનો થતાં. તેમનાં કુટુંબનાં માણસો સુખી દલાં એરપુજ નદિ પણ જે જે શ્રીવિદ્યેશ્વરજીના સંપર્કમાં આવ્યા તે પણ ધણી સુખી અને મનોમી દતા. આ બાબતનું વર્ણન માધવ દિવેલી નીચેના શબ્દોમાં કરે છે:—

શ્રીચિદ્વલે દીક્ષિતે ચ રાજમાને મદીતલે ।

વૈકુण્ઠગમનેન્દ્રા કૃષ્ણતા વૈકુણ્ઠયાસિનામ્ ।

મિરનારા અને સાયેરા ગ્રામજો જેમણે પ્રથમથીજ સંપ્રદાયનો સ્વીકાર કર્યો હતો તેમને અંદરની સેવાનો અધિકાર શ્રીવિદ્યેશ્વરજીએ આપ્યો હતો અને તેમણે કાર્પણ આર્થિક ગદગાની અવેશા વગર સેવા કરી. તેમને ધર્મ શ્રીવિદ્યેશ્વરજીની આજ્ઞા પ્રમાણે શ્રીકૃષ્ણપ્રભુની સેવા કરવાનો હતો. એજોશ્રીએ તેમના નિર્વાહને માટે થોડા જોડાવટ કર્યો હતો. પોતાના સેવકોના સુખને સાર પાતે દરજી કાગળ રાખતા તે નીચેની દલીલ પરથી જણાઈ આવશે. નિત્યની સેવા માટે સેવકોને અધિકર જઈ શ્રીમુનાયજી સાચું પડતું હતું પણ શ્રીવિદ્યેશ્વરજી પોતાના પત્રમાં લખે છે કે જે સેવકોને શ્રીમુનાયજીમાંથી જઈ આવવાનું જરૂર થયે તેમને મહેનત આપકો નહીં કારણ કે શ્રીકૃષ્ણ પાત્ર કોમલ સ્વભાવના છે અને કસેટથી કંઈ વસ્તુ ગ્રામ કરીને તેમને માટે આવવામાં આવે તો તે સ્વીકાર કરે નહીં, (શ્રીમુનાયજીનાં જોડાવટ : જેવકો : જોડાવટ, વગર નાતેસેવક, કલસાવિક : કોમલસ્વભાવ) જેવકોને માટે પોતાને આટલી બધી ધાતવી હતી તો તેમના બાને પણ પોતાની ધાતવીઓ તથા પ્રભુજીમાં પ્રસિદ્ધ કરેલ. આપણી કુટુંબ સંસ્કાર

વર્ણન કરતાં ગોપાલદાસ કવિ તેમના કુટુંબને કલ્પદ્રુ તરીકે વર્ણવે છે તે ખરેખર ચોખ્ખા છે. (શ્રીવિદ્યલ કલ્પદ્રુમ પદ્યો તેના કાલ્પ પ્રસી અનેકો રહ્યાં)

વેદનો ખરો અર્થ—પ્રાચીન સમયથી વેદ ઈશ્વરપ્રણીત માનવામાં આવે છે. અને બ્રહ્મના સીધા સંબંધમાં હતા તે ઋષિઓને તે પ્રકટ થયા હતા અને અઘાપિ પણ કોઈ ઋષિની ગોત્ર માર-કત પોતાનો વંશ માનવામાં ધણા હિંદીઓ અભિમાન માને છે. વખત જતાં આ સીધો સંબંધ નાશ પામ્યો અને શ્રુતિમાં મતભેદને લેઈને બ્રહ્મના ખરા સ્વરૂપ વિષે સંદેહો ઉત્પન્ન થયા. આ સમયમાં ભૂતકાળે બાહ્યાયણુ વ્યાસનો અવતાર થયો, અને તેમણે પોતાના બ્રહ્મસૂત્રમાં બધી શ્રુતિઓના સમન્વય કર્યો. જુના સંપ્રદાયના હિંદીઓ બાહ્યાયણુ વ્યાસને ગોનાવતાર માને છે. અને વેદાન્તના બધા અર્થ કરનારાઓ બાહ્યાયણુ વ્યાસની 'authority' (આધાર) માન્ય રાખે છે. વખત જતાં બ્રહ્મસૂત્રોના ખરા અર્થનું વિસ્મરણ થયું અને જુદા જુદા રીકાકારોએ જુદી જુદી રીતે અર્થ કર્યો. હિંદુસ્તાનમાં બ્રાહ્મના ફેલાવા સાથે, આ બધા બ્રહ્મસૂત્રના અર્થના ગ્રંથો નારા પામ્યા, અને થોડી શ્રુતિઓ સિવાય, સાથી પ્રાચીન અર્થવાળી શ્રુતિ આપણને શ્રીશંકરાચાર્યની મળે છે. (Oriental) પૂર્વની વિદ્યાના પ્રખર વિદ્વાનોએ શ્રીશંકરના ભાષ્યનો સારી રીતે અભ્યાસ કર્યો છે, અને તેઓ કહે છે કે શ્રુતિઓના (સાદા અને સહેજ) શ્રીશંકરના પછી ભાસ્કર, રામાનુજ, મધ્વ અને નિમ્બાર્ક અને બીજા આચાર્યો યથા જગણે (શ્રીશંકરના) એમણે કરેલા ભાષ્યના અર્થો ખરા માન્યા નથી. અને જેમ જેમ શ્રીમદ્ભવલ્લાભાચાર્યના અંબુભાષ્ય અને પ્રકાશનો અભ્યાસ થાય છે તેમ તેમ બ્રહ્મસૂત્રોના સાચા અને શબ્દના ખરા અર્થના મેળોતા તરીકે Mierity લોકો શ્રીવલ્લભાચાર્યને કબૂલ કરે છે. પોતાના આ ગ્રંથમાં શ્રીશંકરે અર્થ કર્યો પ્રમાણે બ્રહ્મનું ખરું સ્વરૂપ નિર્વિશેષ છે કે સર્વિશેષ છે કે બંને છે; તેનો શ્રીવિદ્યેશ્વરજીએ વિવરણ કર્યું છે અને ગ્રંથકર્તાએ બધા તકરારી વિષયો ઉપર જોશથી અને નવીનતાથી વિવેચન કર્યું છે.

અંબુભાષ્યના પાછળના સાગમાં વિદ્વન્મંડનમાંથી ઉતારા આપ્યા છે પરંતુ વિદ્વન્મંડનમાં છેલ્લાં સુવોમાંથી કંઈપણ હવાનો આપવામાં આવ્યો નથી. તેથી એમ અનુમાન થાય છે કે અંબુભાષ્ય સંપૂર્ણ કર્યા પહેલાં શ્રીવિદ્યેશ્વરજીએ વિદ્વન્મંડન રચ્યું હશે. શ્રી ૬ વિચારો અને સંયોગ દલીલો ઘણી પ્રતિભાશાલી અને સદૃશ ભાષામાં આ ગ્રંથમાં દર્શાવેલાં છે અને તેનું નામ વિદ્વન્મંડન વિદ્વાનોનું જૂથણુ આપ્યું છે તે ચોખ્ખા છે.

વાદશાહી ફરમાનો.

[જગદ્ગુરુ આચાર્યવર્ય શ્રીનાથદ્વારાધીશ્વર શ્રીગોસ્વામી તિલકાચિત શ્રી ૧૦૮ શ્રીગોવર્ધનવાલઃ મહારાજશ્રીએ આ વાદશાહી ફરમાનોને સુંદર ગ્રંથ સીમલામાં તા. ૨-૧૦-૩૨ ના રોજ નાખ વાઈસરોય સાહેબ લોર્ડ વિલિંગ્ડનને બક્ષીસ કર્યો ત્યારે તેમણે તે સાથે જે પરિચયપત્ર અંગ્રેજી રજુ કર્યું હતું તેનો અનુવાદ નીચે આપેલો છે.]

સદુપયોગ માટે અને સમજણ માટે સક્ષિપ્ત ઇતિહાસ—શ્રી ૧૦૮ શ્રીમાન ગોસ્વામીશ્રી તિલકાચિત શ્રીગોવર્ધનવાલજી મહારાજ, નથદ્વારાધીશ, ગેવાડોત્તરગત, આપશ્રી વલ્લભસંપ્રદાયન મુખ્ય આચાર્ય છે; આપશ્રી “સંપ્રદાય-જગદ્ગુરુ” શ્રીવલ્લભાચાર્ય, “શ્રીમહાપ્રભુ”, “આચાર્ય સમ્રાટ” થી ૧૪ મી પેઢીએ આવે છે. (આ પેઢીઓ દક્ષિણનાં હિન્દુ સંપ્રદાય મહારાજા કૃષ્ણ દેવરાય, વિજયનગરાધીશ, કે જેઓ આચાર્યશ્રીના એક શિષ્ય થયા હતા, તેમણે સત્કાર કરી

માનપૂર્વકે રાત્રિચિહ્નોસહિત આપેલી છે.) શ્રીવજ્રમાચાર્યના પુત્ર ગોસ્વામી શ્રીવિદુલનાથજી યથા આપશ્રીને અને વંશજોને મોગલસમ્રાટ ખાદશાહ અકબર અને તેમના વંશજો પાસેથી અનેકાનેક ફરમાનો, સનદો મળેલાં છે. આ ફરમાનોમાં શ્રીવિદુલનાથજીને “ હકાયાક વા મારફતે આગા ” નો ઈતિહાસ આપવામાં આવ્યો છે, અને મોગલ સામ્રાજ્ય નિત્ય ટક્યું રહે તેવી પરમેશ્વરને પ્રાર્થના કરવાની વિનંતિ કરવામાં આવી છે.

ખાદશાહ શાહજહાન તરફથી શ્રીવિદુલનાથજીને, એટલે કે તેમના મૂળ સ્થાપકથી પાંચમા વંશજને “ તિલકાયત ” નો ખિતાબ આપવામાં આવ્યો છે. (તે કારણે આજ સુધી શ્રીનાથજીના મદારાજો તિલકાયત કહેવાય છે.)

શ્રીદામોદરજીના મદારાજ, ૬ નં પેઢીમાં. ૧૧ મા આપશ્રીને, નામ. હોડાં આમદરજી, હિંદુપુરના મદારાજોને, જયપુરના મદારાજોને, કોટાહતના મદારાજોને જે ખરીદી લખ્યા છે, તેમાં હકાયાક વા મારફતે આગા તરીકેના ખિતાબ મંજૂર રાખ્યો હતો અને અંગત મુલાકાતો પશુ લાલ આપ્યો હતો. આપશ્રીને હિંદુપુરના મદારાજોએ આગાઈ ઇનામ-બેટ તરીકે આપેલાં છે અને ન્યાયાધિકારની સત્તા સુધાં આપી છે.

[મદારાજશ્રીના હકાયાઓ—પરમપૂજ્ય, જગદ્ગુરુ, આચાર્યસમ્રાટ, હકાયાક વા મારફતે આગા, તિલકાયત શિરોમણિ ગોસ્વામી શ્રી૧૦૮ શ્રીગોવર્ધનનાથજી મદારાજ, શ્રીવજ્રમજ્જપ્રદાયના મુખ્ય આચાર્ય શ્રીનાથદાસ-મેવાડ અ. પ્રભાણે છે.]

પ્રાચીનકાળથી ગોસ્વામી મદારાજશ્રીઓના કુટુંબીઓ સરકારનું લઘુ માહનારા છે, અને સાંપ્રત સમયમાં ગોસ્વામી મદારાજોએ દેશકલ્યાણનાં ધણાં સારાં કામો કર્યાં છે, અને નામ. બ્રિટિશ સરકારે તેઓને દિવાની કોર્ટમાં અંગત હાજરી આપવાથી મુક્ત કર્યાં છે.

સાંપ્રત સમયના મદારાજશ્રીને જાણારાજના મદારાજ રાણા જવાનસિંહજીએ એક જોડ પિત્તળની તોપાની પશુ બેટ આપી છે.

હિંદુપુર, જોધપુર, કોટા, જુહિ, જાલારામ, વોહરા, બારીપર, હિંદોર, ગિઠાનેર, અલ્વર, કોટલી, ભરતપુર, બનારસ, દરમંગા, દયવા, કુંભરપુર, વાંસવાડ, પ્રતાપગઢ, કિશનગઢ, પાર, દીવાસ, ખિલ્તીપુર, પોરબંદર, જનમનગર, ચિખડી, મોરખી, લખતર, કચ્છ, રતલામ હત્યાદિના મદારાજોએ એક અને સર્વે આપશ્રીને ગુરુ નરિંકે માન આપે છે, અને મામો, જમીનો બેટ-કનામમાં આપ્યાં છે, અને ઘણા બધા કાળે તેમણે ગિરસ લાલના મદારાજશ્રી મોગલના આપ્યા છે.

બનારસ-કાશીમાં ત્યારે બ્રાહ્મણમદારાજોએ મળ્યું હતું અને જળગ્રામમાં અખિલ ભારતવર્ષીય વજુશ્રિમ સ્વરાજ્ય સંઘનું અધિવેશન થયું હતું ત્યારે, આપશ્રીના પ્રથમ પુત્ર લાલનાથવા રાણેજી શ્રીદામોદરજીના મદારાજ શ્રીશંકરાચાર્ય અને શ્રીરામાનુજચાર્ય ઈવાદની હાજરીમાં પ્રમુખરૂપે વરણા દત્તા.

શાહી ફરમાન ૧ હુ (ગોકુળમાં નિરાંતે રહેવા બાબદ.)

જલાહુદીન મહમ્મદ અકબર ખાદશાહ ગાઝીનું ફરમાન—તે પોતે સ્વતંત્ર છે,

જલાહુદીન મહમ્મદ અકબર ખાદશાહ ગાઝી.

વિદુલનાથ જે કે નિરાંતે દમણું લઈ જઈનાર છે, અને જે કસને ગોકુળમાં રહે છે, તેમને તેમજ તેમનાં સમાંવાદો અને મોહરયાકરને આ આપી ફત્વીઓના રસકે ખાદશાહન. તેમજ બીજા અધિકારીઓએ કોઈ રીતે સતાવવા નહિ. અને તેમની પાસેથી મેલ પશુ રીતે કોઈ પણ અંગતી માગણી કરવી નહિ. એમને પોતાના રોકાણમાં અને પોતાની જગ્યામાં

હોડીઘાટ પેઠી દર પેઠી ગોસ્વામી વિઠ્ઠલરાયને માવચ્ચંદ્રદિવાકરો આપવામાં આવ્યાં છે તથા તેનો કમળે પણ સોંપી દેવામાં આવ્યો છે, તે આ સર્વમાન્ય આરા કાઢવામાં આવે છે કે સઘળા દિવાની અમલદારો, જાગીરદારો, કરોડીઓ; મુદ્દક અધિકારીઓ અને ચોપરીઓએ સદરહુ હુકમ મુજબ વર્તવું અને સદરહુ ગામ તથા હોડીઘાટ સદરહુ રાખસના તાબામાં રહેવા દેવાં. એ હુકમમાં તેમણે જરાપણ ફેરફાર કરવો નહિ અને જમીનના કર, કારખાતાના કર, કોષ પશુ જાતનો માથાવેરા, દીવાની કે ફોજદારી; વગેરેની માગણી તેમની પાસે કરી તેમને હેરાન કરવા નહિ, તેમને એ સઘળા માગણીઓથી મુક્ત ગણવવા. દરેક વર્ષે તેમની પાંસ નવાં નવાં કરમાન કે પરવાના માગવાં નહિ, જેથી કરીને એઓ આ શહેનશાહી મહેરબાનીથી સતોપ પામી નિરાંતે હમારા ચિરસ્થાથી રાજ્યના શ્રેય માટે ધૈર્ય પાસે પ્રાર્થના કરવામાં મશગૂલ રહે.

લખ્યું, જોરદાર માસને ૧૫ મે દિવસે ઈલાહીસતેના વરસ ૩૮ માં (રમઝાન માસની ૫ મી તારીખ. હી. સ. ૧૦૦૧, શનિવાર ૨૬ મી મે ઇ. સ. ૧૫૯૩, વિક્રમ સંવત ૧૬૪૧)

શાહી ફરમાન ૬ હું (જતીપુરા અને કર માફી બાબદ)

શાહજહાન બાદશાહનું ફેરમાન.

ધૈર્ય રહેાટો છે.

સહાર પરગણાના હાલના તથા હવે પછીના યનારા અમલદારો જેઓ શહેનશાહની મહેરબાનીથીજ એ ઓહો ભોગવે છે, તેમને માલમ માથ કે હમણું હમારી પવિત્ર દરબારમાં એવી અરજ મુજબવામાં આપી છે કે ગોરખનનાથના દીકાયત ગોસ્વામી વિઠ્ઠલરાય જેઓ ગોકુળમાં રહે છે, તેમણે મોજે જતીપુરા હું ગોપાલપુરમાં દામ આપી, જમીનના માલિક સ્થિતી જમીન ખરીદી, તેના પર મકાન, ગૌશાળ, બાગખગીયા, કારખાનાં-ગોવરખનનાથના પયોગ માટે-હિંમાં કરી પોતે પશુ ત્યાં રહે છે, તે ઉપરથી સર્વમાન્ય અને આકાશ જેવા ઉચ્ચ ક્રમ બહાર પાડવામાં આવે છે કે એ મોજની જમીનો નામદાર શહેનશાહ તરફથી તેમને તેમના તાના ઉપયોગ તેમજ હાથરદારના ખરચ માટે કરથી મુક્ત તથા વેરા ભરવાની જવાબદારીથી મુક્ત, એવી રીતે આપવામાં આવી છે. તેથી વર્તમાન તથા લવિષ્યમાં યનારા દરેક હાકમ અને મુદ્દક અમલદારો તથા જાગીરદારોની એ ફરજ છે કે તેમણે આ મદાન શહેનશાહી હુકમને જાણી રાખવા તથા તેનો અમલ યતો રહે તે બાબતની તાકીદ રાખવા કોશીસ કરવી અને સદરહુ ગોસ્વામીના તાબામાં એ જમીનો પેઠી દર પેઠી ચાલુ રાખવા દેવી. એ હુકમમાં તેમણે જરા પશુ ફેરફાર કરવો નહિ, તેમ જ એ મોજ (ગામ) ને સંબંધે જમીનવેરા, કારખાનાનો વેરા, માથાવેરા, મુકાદમી વેરા, કાનુન ગોઠવે વેરા, દીવાનો કર, શહેનશાહી માગણીઓ વગેરે જાતના વેરા ભરવાની માગણી કરી તેમને હેરાન કરવા નહિ. તેમ દરેક વર્સે તેમની પાસે નવાં નવાં કરમાન માગવાં નહી અને આ ફરમાનની વિરુદ્ધ વર્તવું નહિ.

લખ્યું, મેહર માસને ૧૭ મે દિવસે ઈલાહી વરસ હજામાં (રવિવાર, તા. ૨૬ મી સપ્ટેમ્બર ઇ. સ. ૧૬૩૩, વિક્રમ સંવત ૧૬૮૦)

શાહી ફરમાન ૭ મું (ગોકુલવાસ બાબદ).

અબુલ મુસદ્દેદ્દીન શાહજહાન બાદશાહનું ફેરમાન—ધૈર્ય રહેાટો છે.

હાલમાં એક સુખપ્રદ અને મદાન ફરમાન એવું બહાર પાડવામાં આવ્યું છે કે મહાવન પરગણાનું ગોકુળ ગામ જુના વખતથી વિઠ્ઠલરાય ગોસ્વામીના ફરજતેને તેમના હાથરદારના

● આ દીકાયત અથવા તિલકાયત-એ ઉલ્કાબ સોપી પહેલો શાહજહાન બાદશાહે આ ધરના આદીપતિને આપેલો છે.

ખરચ માટે કર્યા મુકત કરી આપવામાં આવ્યું છે, તેથી આ સર્વામાન્ય આગ્રા પ્રસિદ્ધ કરવામાં આવે છે કે હાલના તથા હવે પછી યનારા સર્વ મુલકી અમલદારો અને જગીરદારોએ આ હુકમને આધીન થવું અને સદરહુ ગામ એ હાકોરદારના ખરચ માટે તેમની પાસે રહેવા દેવું. અને સદરહુ ગોસ્વામી તથા તેમના ફરજદારને સંબંધે તેમાં કોઇ પણ પ્રકારનો ફેરફાર કરવો નહિ, અને તેમને દરેક વતના કરવેરા, માયા વેરા, ઝાડની હિપજના વેરા, મુલકી તથા ખીજત કર આપવામાંથી મુકત અને છૂટા ગણવા, અને તેમની પાસે નવા પરવાના માગવા નહિ કે જેથી એ ગોસ્વામી જે જુના વખતની હમરા ચિરસ્થાથી રાજ્યના શ્રેયે સંબંધે ઇશ્વરપ્રાર્થનામાં મશગૂલ રહેતા આવ્યા છે તે પોતાની રિયતિથી સતોપ પાગી હમરા હમ્મેશ સુધી ટકે એવા રાજ્યના ભલા માટે ઇશ્વર પાસે પ્રાર્થના કરવામાં કાળ વ્યતીત કરે.

લખ્યું, આખાન માસને ૬ ફે દિવસે ઇલાહી વરસ જહામાં (તારીખ ૧૮ મી ઓક્ટોબર ઈ. સ. ૧૬૮૩. વિક્રમ સંવત ૧૬૯૦)

શાહી ફરમાન ૮ સુ (ગોકુલમાં નિશ્ચિંતવાસ અને ગાયો બાબદ.)
તે પવિત્ર (પરવરદગાર)ના નામથી શાહજહાન બાદશાહનું ફરમાન શાહજહાન બાદશાહના શાહઝાદા મહમ્મદ હાસ સિકોહની મહોર હી. સ. ૧૦૫૩, (ઈ. સ. ૧૬૪૩).

હાલમાં એવું આગ્રા ફરમાન પ્રસિદ્ધ કરવામાં આવ્યું છે કે વિઠ્ઠલરાય તે હામોદર દીક્ષિતના પુત્ર આ ચિરસ્થાથી રાજ્યનું ત્રણ પ્રાર્થનાર, ગોકુળ કરવામાં રહે છે, અને એ જગા સદરહુ અમલનું વતન છે; તેથી ત્યાં તેમની મિલકત આવેલી છે તથા ત્યાં તેમની ગાયો રહે છે, (તેથી) હુકમ ફરમાવવામાં આવે છે કે કોઇ પણ વ્યક્તિએ એમને હેરાન કરવા યા રંજાડવા નહિ કે જેથી તેઓ પોતે નિશ્ચિંત અને હમારૂં ચિરસ્થાથી રાજ્ય ચિરકાળ ટકે તેને માટે ઇશ્વર પાસે પ્રાર્થના કરવાની માત્ર રાખે અને તે કાર્યમાં મચ્છા રહે. એ જગાની પાટોશના બદમાશોએ તેમ જ ખીજતોએ એમને એમની મિલકતના સંબંધમાં હેરાન કરવા નહિ કે તકલીફ આપવી નહિ.

— શાહી ફરમાન ૯ સુ (દાણામંડીના હક્ક બાબદ.)
ઇશ્વર મહોર છે.

— ઇસ્લાહ આઝમખાન શાહજહાનના તાબેદારની મહોર (હી. સ. ૧૦૫૬).

મહાવન પરગણાના હાલના તથા હવે પછી યનારા દીવાની અમલદારોને મક્કમ થાય કે નાયા નામના એક શખ્સે એવી અચળ ગુનગરી કે ગોકુલની દાણામંડી (હાટ)ના તોળાટની મુકો લેવાનો દક્ક જે તેને આપવામાં આવે તો દર વરસે સરકારમાં તે રૂ. ૧૭૫ ભરશે. પરંતુ અત્યાર સુધી આવ્યા આપના રિવાજ મુજબ એ મંડીને સંબંધે હિપસાવવામાં આવતાં નાણાં કદિ પણ સરકારી ત્રીજેરીમાં લેવામાં આવ્યાં નથી. તેમ જ એવું પણ કહેવામાં આવેલું કે એવી રીતના દક્ક ગ્રાસ કરી મજદુર નાથાનો ઇરાદો ત્યાં આગળ એક દુકાન જમાવવાનો છે, અને જો તેમ કરવા દેવામાં આવે તો વેપારીઓની આવજમ જો થઇ જવાનો કર રહે છે. તથા ત્યાંના વતનીઓ તથા રહેવાસીઓ જેઓ પોતાને જોષ્ઠો દાણો તથા ખીજ વસ્તુઓ એ મંડીમાંથી ખરીદે છે તેમને માટે પણ એક દરકત રૂપ થઇ પડે, અને વળી જુના વખતથી એ મંડી ગોસ્વામી

જરૂર હિસ્તાનમાં દાણાનું બનલ (દાર, મંડી, મંદી) નથી બસાય છે ત્યાં દાણો વેચનાર પોતે ખરીદનારને દાણો તોળી આપતો નથી; પણ જોડા તોળાટ રાખે છે, તે તોળાટને ખરીદનાર યા અનાજ આવે છે. તે મુકો લેવાના દક્કને સંબંધે આ સનદ છે.
(ફ. મો. જવેરી.)

વિકુલરાયનાં માણસોના કબજામાં ચાલતી આવેલી છે, તેમજ ત્યાંથી માલ ખરીદ કરનાર વેપારીઓ તથા ખીજ ગ્રાહકો પોતાની રાજપુત્રીથી વિકુલરાયનાં એ માણસોને મુજબ આપે છે. તેટલા માટે એવો દુકમ કરવામાં આવે છે કે રેલ્વેનાં ભંડારને ખાતર એ મંડી કરીમના રિવાજ મુજબ ગોસ્વામી વિકુલરાયનાં માણસોના તાગામાં ચાલુ-રાખવામાં આવી છે. માટે અમલદારોએ ખાતર રાખવું કે કોઈ પણ ખીજ માણસો તેમાં દખલખીરી કરે નહિ, કે જેથી વેપારીઓ નિર્ધિતપણે આચળવ કરે અને કોઈ રીતનો નવો રિવાજ દાખલ થાય નહિ. આ બાબતમાં આવો દુકમ થયો છે તે સૌને રાચન થાય.

અર્થ, મહાન સાગાન માસની ૧૦ મી તારીખે હી. સ. ૧૦૫૧ (ઈ. સ. ૧૬૪૬, વિક્રમ સંવત ૧૭૦૩.)

શાહી ફરમાન ૧૦ મું (ગોકુલની દાણામંડી બાબત)

ઈશ્વર મહોરો છે.

શાહજહાનના તાબેદાર મુકરમતખાનની મહોર.

મહાવન પરગણાના હાલના તથા હવે પછી યનારા મુલ્કી અમલદારો તથા દીવાની અધિકારીઓને આજ્ઞ થાય કે મળકુર પરગણામાં આવેલી ગોલે ગોકુલની દાણામંડી ગોસ્વામી ગિરધરલાલના તાગામાં આપવામાં આવેલી છે. તેથી નજીકવાતું કે આગલા દિવસ મુજબ મળકુર મંડી મળકુર રાખના તાગામાં રહેવા દેવી. એ અધિકારીઓએ એમને એ બાબતમાં કોઈપણ પ્રકારે હેરાન કરવા ચા રંગાડવા નહી. આટલા માટે એ બાબતમાં આ દુકમ કાઢવામાં આવ્યો છે.

અર્થ, સદર માસની ૧૦ મી તારીખે બાદશાહને તખ્તનચીત થયાના ૨૦ માં વરસમાં (રવિવાર તા. ૭ મી માર્ચ ઈ. સ. ૧૬૪૭, વિક્રમ સંવત ૧૭૦૩)

શાહી ફરમાન ૧૧ મું (ફરિયાદો સાંભળવાં બાબત)

તે દયામય અને કૃપામય (ઈશ્વર)ના નામથી શાહજહાન; બાદશાહ

ગાઝીના શાહજહાન મહુમ્મદ દારા શિકોહની મહોર.

હુમારી કૃપાને માટે દરેક રીતે લાયક તથા અનુમદાને માટે સંપૂર્ણ રીતે યોગ્ય એવા મુકરમતખાનને આજ્ઞ થાય થાય કે ગોકુલ અને ગોપાલપુરના રહીશ, દામોદરના પુત્ર વિકુલરાય જે કે હમારા ચિરંજીવી રાજ્યના એમને અર્થે હંમેશા ઈશ્વરની પ્રાર્થના કરે છે તેમજ હાલમાં (હમને) મહાન રહેનશાહને અરજ મુજબી રાજ્યના સ્તંભે (મુકરમતખાન) તરફથી જે જે એમના એમને અર્થે કરવામાં આવ્યું તે તે જણાવ્યું. (એ અરજ સાંભળ્યા બાદ) તેમને રીતસર અત્રેથી વિદાય થવાની રજા આપવામાં આવી છે, અને તેથી તેઓ પોતાને વતન પાછા પાછા ફરે છે. તેટલા માટે આ મહાન દુકમ કાઢવામાં આવે છે કે રાજ્યના સ્તંભ પાસે તેઓ પોતાના કોઈ પણ કાર્ય માટે વિનવિ કરે તો આ દુકમ મુજબ અને તેટલું તેમનું ભયું કરી આપવાની પોતે કેશેશ કરવી અને દુકમની વિરુદ્ધ કોઈને વર્તવા દેવું નહિ, તેમજ એમને કે એમના ભાઈઓને કોઈપણ પ્રકારે હેરાન કરવા નહિ, કે જેથી પોતાના વતનમાં પોતે આપાદ થઈ આ ચિરંજીવી રાજ્યની આબાદી માટે ઈશ્વરની પ્રાર્થના કરવા રહે.

અર્થ, પહેલા જમાદી મહિનાની ૨૭ મી તારીખે હી. સ. ૧૦૫૭ (ઈ. સ. ૧૬૪૭, વિક્રમ સંવત ૧૭૦૪)

શાહી ફરમાન ૧૨ સુ (શ્રીનાથજીની ગાયો બાબત).

બુલંદ ઇકબાલશાહ મહમ્મદ દારા શિકોહ શાહજહાન બાદશાહ ગાઝીના શાહઝાદાનું ફરમાન.

શહેનશાહની મહેરબાનીના ખાહેશમંદ, હાલનો અને લવિષ્યના જોડ પરગણાના મુઢી અમલદારોને ઝાંહેર થાય કે આલી શહેનશાહની પાસે અરજ મુજબવામાં આવી છે કે ગોરધન નામનું દેવાલય કે જે મોજે ગોપાલપુરમાં આવેલું છે, તેના તાબાની ગાયો મજદૂર પરગણાનાં ગામ બહાવ અલગજાની જમીન (સીમ) માં ચરવા નય છે, અને તેથી આ શહેનશાહી ફરમાન કાઢવામાં આવ્યું છે, (કે) જે દેવાલયના તાબાની ગાયો તેરહી ગાયો તે જગાએ ચરવા નય તો ચરાઈના કર લેવાને બદલે કોઇએ તેમને (ચરતાં) અટકાવવી નહિ અને એ બાબતમાં કંઈ લોભ કે આશા રાખવાં નહિ. આ બાબતમાં આવે ખરેખરો હુકમ સમજવો.

લખ્યું, જમાદી ખીમત મહીનાની આઠમી તારીખે શહેનશાહના ગાદીએ આવ્યાને ૩૨ મે વરસે (ખુધવાર ૧૩ મી માર્ચ ઈ. સ. ૧૬૫૮ વિ. સં. ૧૭૧૪)

શાહી ફરમાન ૧૩ સુ (ગોકુલ અને કરવેરાની માટી બાબત)

તે કયામત અને કડખામત (ઇંદર) ના નામથી શાહજહાનના ફરમાનની મહોર દારા શિકોહની મહોર.

શહેનશાહની મહેરબાનીની ઉમેદ રાખનારા, હાલ તથા હવે પછી ધનારા, મહાવન પરગણાના કિવાની અમલદારોને માલમ થાય કે આલી ફરજના શહેનશાહ પાસે અરજ મુજબવામાં આવી છે કે તેમના મહાન ફરમાન મુજબ મજદૂર પરગણામાં આવેલું ગોકુલ ગામ સેવક ગિરધરને ગોકુલનાથના હકોરદારના અરજને માટે આપી દેવામાં આવેલું અને મજદૂર ગિરધરના પરચોકવાસ બાદ તેના વારસોના કબજા બોગવટામાં તે ચાલુ છે; તો આ મહાન ફરમાન કાઢવામાં આવે છે કે જેને તાજે ચતું બેઠ્યું. એવાં (આમણાં) ફરમાનોની રૂએ અને અપાર મુશી આલતા આવેલા રિવાજ મુજબ તે ગામ ચિટુલરાયના મુત ગિરધર તથા સદગતના નળીરા તથા બીજા વારસોના તાબામાં રહેવા હેતુ અને જે જે કરવેરામાંથી તેમને મુક્ત કર્યા છે તે તે કરવેરા તેમની પાસથી માગી તેમને હેરાન કરવા કે રંજાડવા નહિ.

લખ્યું, રજબ મહિનાની ૨૭ તી તારીખે હી. સ. ૧૦૬૮ (ઈ. સ. ૧૬૫૮ વિક્રમ સંવત ૧૭૧૪)

શાહી ફરમાન ૧૪ સુ (ગોકુલ ગામ બાબત)

તે પવિત્ર અને મહાન ઇંદરના નામથી અબુલ મુઝફ્ફર જલાલુદ્દીન મહમ્મદ

શાહ આનમ બાદશાહ ગાઝીની મહોર હી. સ. ૧૧૬૪.

આ સુખના સમયમાં આ ઉચ્ચ અને દયાળા તરેલું ફરમાન કાઢવામાં આવ્યું છે કે, ખિસાફતના સ્થાન અકબરાબાદના સુખમાં આવેલા ઇસ્લામાબાદના સરકારમાં મહાવન પરગણાનું ગામ મોજે રસાલપુર ઉર્ફે ગોકુલ તીમગાઝનામ તરીકે ધાર્મિક સભ્યોથી સીત, અને સત્ય જ્ઞાનથી અંકિત એવા ગોસ્વામી મુરલીધર તથા તેનાં ફરજ દોને કરવેરાથી મુક્ત કરી આપવામાં આવ્યું છે. તેનાં સબેધમાં તાલુકાના મજદૂર મુજબ મુસકાનઘણીનાં પાનખર

●વાવચ્ચદ્રિવાકરી બોગવાય તેવી નગીર, કરવેરાથી મુજબ રેશી. સહાય અને વારસોને ઉતરે તેવી શહેનશાહ મંદૂર કરેલા ફરમાનનો ખરોડ. ફ. ૬૭૬. નીન પ્રમાણે ગણાતા વાર મહિનામાંના એક મહિનાનું નામ. (ફ. મો. એવેરી).

અતુલ્ય એક એવો તુમાર બહાર પાડવામાં આવે છે કે હમારા નામાંકિત અને વિશ્વાસુ શાહજાદાઓ, સત્તાવાન હિસાબી ખાતાના વચ્ચે, ઉચ્ચ ઉમરાવો, આખરદાર, હાકીમો, મુખી મુદ્દી અમલદારો, રાજ્યના દીવાની અધિકારીઓ, શહેનશાહી કારોબારના ઓદેદારો, જગીરદારો અને કરોડીઓ, હાલના તથા ભવિષ્યના એમણે આ ફરમાન-મુજબ યાવઅન્દરદિવાકરૌ વર્તવા પ્રયત્ન કરવો અને મળદૂર ગામ તેમના વંશવારસોના કબજા ભોગવટામાં રહેવા દેવું, તેમાં કોઈ રીતનો ફેરફાર કરવો નહિ. રથાનિક કે શહેનશાહી સવળા પ્રકારના કરવેરામાંથી તેને મુક્ત ગણવું, તેમની પાસે પેશકશ, જમીનનો કે કારખાના પરનો કર, માથાવેરા, કરવેરા ઉધરાવનારનો વેરા, દારોગાશી, શિકારની વેક, બેગાર (મજૂર તરીકેની વેક), મુકાદમી, કાનુનગોઈ વગેરેની માગણી કરી, તેમને હેરાન કરવા કે રંજનપા નહિ. તેમની પાસે દર વરસે નવી સનદ માગવી નહિ, આ હુકમને તેમણે ખરેખરો સખત હુકમ મણવો. આ શહેનશાહી ફરમાનની વિરદ તેમણે વર્તવું નહિ.

લખ્યું, ખીજા જમાદી મહિનાની ૧૫ મી તારીખે હમારા તખ્તનાશીન ધયાના ૧૩ મા વરસમાં (તારીખ ૨૫ મી સપ્ટેમ્બર ઈ. સ. ૧૭૭૧. ડિ. સં. ૧૮૧૭).

શાહી ફરમાન ૧૫ મું (ગોપાલપુરા બાબદ)

જેવી રીતે આગલું ફરમાન શાહઆલમ બાદશાહે ગોકુળ ગામની જગીર માટે આપ્યું છે તેવું આ ફરમાન ગોપાલપુર ગામ માટે છે. એની ભાષા માત્ર ગામના નામ સિવાય અક્ષરશઃ આગલા ફરમાનની ભાષા મળતી આવે છે. (ક. મો. ઝવેરી)

શાહી ફરમાન ૧૬ મું (ગોકુલ અને કરમાફી બાબદ)

બક્ષી ઉલ્-મુલક નજદે હલદિકાર ઉદ્દૈલાં મીરઝા બેગખાન બહાદૂર

ગાલેખ બાદશાહ શાહઆલમ ગાઝીના તાબેદારની મહોર.

શહેનશાહી રથાન અકબરાબાદના સૂબામાં આવેલા મદાવગ તાલુકાના કસબા ગોકુળના મોધરીઓ, કાનુનગો, અમલદારો, ખેડૂતો, ગણેતીઆ, અને મુદ્દી અમલદારોને માત્રમ યાવ કે મોજે શ્રી ગોકુળ તથા મુખારકપુર અને તેને લગતી જમીનો વગેરે કદીમ વખતથી એ કસબાના હક્કદારના મળદૂર મુજબ ગોસ્વામી મોરલીધરને નામે કરી આપવામાં આવેલી છે, અને તે મળદૂર શાખસના કબજા ભોગવટામાં આવું રહેલી છે. આ સળખથી એમને સરકારી કરવેરા ભરવાની જવાબદારીમાંથી મુક્ત કરવામાં આવેલા છે, અને તે મુજબ કરવેરાથી તેઓ મુક્ત રહેલા છે; તેથી તમારી એ ફરજ છે કે તમારે મળદૂર ગામે કદીમ રિવાજ મુજબ મળદૂર શાખસના કબજા ભોગવટામાં તેમની મિલકત તથા વારસામાં મજેશી મિલકત તરીકે રહેવાં દેવાં, અને અંદા, ઈનામ, ઘાટની શી લેવાનો તેમનો હક્ક છે, એમ આગળથી નક્કી થયેલું છે તે મુજબ તેમને લેવાં દેવાં. તેમને કોઈ રીતે હેરાન કરવા મા રંજનપા નહિ. વળી હુકમ મુજબ કરવેરા તથા માલ મુજારી વસૂલ કર્યા બાદ, તેમાંથી દર વરસે અને દર વરસે તેમનો હક્ક મુજબનો ભાગ તેમને આપી દેવો. આ હુકમને તેમણે સખત હુકમ ગણી તે મુજબ વર્તવું.

લખ્યું, રાજાલ મહીનાની ૧૫ મી તારીખે શહેનશાહી તખ્તનાશીનીના ૧૫ મા વરસમાં (તારીખ ૩૦ મી ડીસેમ્બર ઈ. સ. ૧૭૭૩. ડિ. સં. ૧૮૨૬)

શ્રાહી પ્રમાણ ૧૭ (ગોવધની મનાઇ બાબત)

લોઈ લેકનું સ્વમાન.

મજની ભૂમિ એટલે મથુરા એ દિંદુઓનું જગતનું પવિત્ર ક્ષેત્ર છે, તેથી તે જુદાના
ગાયને કોઈ પણ તરફથી કોઈ રીતની ઈર્ષ્યા કે દરદસ્ત યાજ તે યોગ્ય કહેવાય નહિ તેથી કહેવાય
સેનાધાપતિ બનરજી દ્વારા લેકે માણે, જેઓના રચનામાં હતા અને કહેવાય કે
કરે છે અને જે કથિરના વિશ્વમનીય સેવક છે તેઓ એકે દુઃખ કરે છે કે કહેવાય કે
કરનાર યા કોઈ પણ અન્ય માણસ, પછી તે મથુરાનો વસ્તી હોય કે કોઈ સિદ્ધાંત હોય, કે
મથુરાની આસપાસ રહી સફરમાં આવનાર કરનો હોય તેણે ગાયનો વંદ કરવો નહિ. આ
સાબળથી એવું કરમાત કાઢવામાં આવ્યું છે કે ઉપલી દરમાં કોઈએ એવું કહે નહિ જે
કુકમનો કોઈ અનાદર કરશે તો તેના પર 'અથેકર' ક્રમ વધાવવામાં આવશે અને તેના વસ્તી
કોઈ જાતનું બહાનું સાંભળવામાં આવશે નહિ. લખ્યું તરીકે ૩૯ અથકે . સ. ૧૮૨૬

શ્રીવલ્લભરાય.

શ્રીગિરિધરજી*૪

(જન્મ ૧૭૪૩ આસો સુદ ૬) (જન્મ સં. ૧૭૪૫ ચેત્ર સુદ ૩)

૩ મા ટિકેત-પેઢી ૯ મા-૮ મા ટિકેત

શ્રીમુરલીધરજી*૧૧

શ્રીમાલકૃષ્ણજી.

જન્મ સં. ૧૭૭૪.

જન્મ સં. ૧૭૭૫.

શ્રીગોવિંદરાયજી*૫

શ્રીગોવિંદજી.

(જન્મ ૧૭૬૩ આસો વદ ૧૦)

(જન્મ ૧૭૬૯ માગસર વદ ૧૧)

૬ મા ટિકેત | પેઢી ૧૦ મા.

શ્રીગિરિધરજી*૬

(જન્મ ૧૮૨૫-જેઠ વદ ૦)

૧૦ મા ટિકેત | પેઢી ૧૧ મા.

શ્રીદામોદરજી*૭

(શ્રીદામજી)

(જન્મ ૧૮૫૩ આસો સુદ ૪)

૧૧ મા ટિકેત | પેઢી ૧૨ મા.

શ્રીગોવિંદજી*૮

(જન્મ ૧૮૭૬ મારતક વદ ૧૪)

૧૨ મા ટિકેત | પેઢી ૧૩ મા.

શ્રીગિરિધરીજી*૯

(જન્મ ૧૮૯૯ જેઠ સુદ ૧૨)

૧૩ મા ટિકેત | પેઢી ૧૪ મા.

વિવ્રમાન) શ્રીગોવિંદરાયજી*૧૦

(જન્મ ૧૯૧૭ આસો વદ ૧)

| પેઢી ૧૫ મા.

વિવ્રમાન) શ્રીદામોદરજી*૧૧ બાવાસાહેબ

(જન્મ ૧૯૫૩-ગોષ સુદ ૬)

| પેઢી ૧૬ મા.

વિવ્રમાન) શ્રીગોવિંદરાયજી.

(જન્મ સં. ૧૯૮૨).

આવરચક સમજીતી.

૧ ખીળ ટિકેત શ્રીદામોદરજી અને તેમના નાના ભાઈ શ્રીગોવિંદરાયજી વચ્ચે સં. ૧૬૬૫માં પ્રથમ ટિકેત શ્રીગિરિધરજીએ લગવડાસાથી સેવા વહેંચી આપી હતી.

૨ ચોથા ટિકેત શ્રીગિરિધરજીના આઈ શ્રીગોવિંદજી પોતાના ભત્રીજા પાંચમા ટિકેત શ્રીદામોદરજી નાની ઉંમરના હતા ત્યારે તેમના આજ્ઞાદર્શનથી જીવનની દૂર આદરજાણના નાસથી કંટાળીને શ્રી ગિરિધર ઉપરથી શ્રીનાથજીના સ્વરૂપને મેલાકમાં રાજ્ય સુખનિર્મલના રાત્રનામાં પધરાવી લાવ્યા. (સં. ૧૭૨૬-૧૭૨૯ માં).

૩ ૫ મા ટિકેત શ્રીદામોદરજી શ્રીનાથજીને મેલાક-સિંદાઃ નાયકરામાં દાકતી સદાચી પધરાવી લાવ્યા. તેઓને મેલાકા કેષવાર જૂઝ યતી ત્યારે પડોસમાં ખીમતોરમાં ગિરાજતા શ્રી હરિરાયજી મહાપ્રભુજી ચારવાર ત્યાં શ્રીનાથદાસમાં આવી સેવાની રીત સિખવના અને સુધરવા. શ્રીદામોદરજી શ્રીહરિરાયજીનું હમેશા જન્મ માન રાખ્યા.

૪. શ્રીદામોદરજી પાંચમા ટિકેતને ત્રણ પુત્રો હતા. તેમાંથી શ્રીવિદ્યારાય મોટા પુત્ર તે શ્રીનાથજી ૬ મા ટિકેત યમા. ૨ને શ્રીવલ્લભનાથજી-ખીળ પુત્ર ગોવિંદજીએ વંદ-શ્રીહરિરાયજી

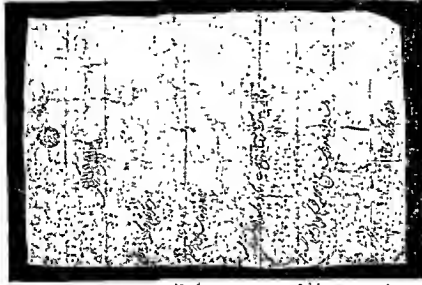
પુષ્ટિમાર્ગના ઇતિહાસ

શાહી ફરમાનો

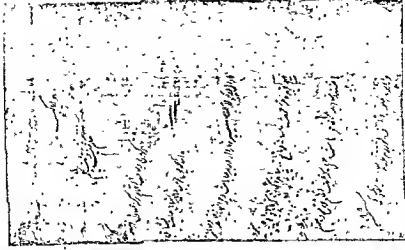
અસલાથિત્રો



અકબર બાદશાહનું ફરમાન નં. ૧



અકબર બાદશાહનું ફરમાન નં. ૨



અલી અકબરનો પુનાનું ફરમાન નં. ૩

- ૪ ૨ શ્રીવિઠ્ઠનાથજી ગુરુદિગ્દેશ
વિ. સં. ૧૫૭૨-૧૬૪૨ દક્ષિણ વા મારફતે આગા ફર- અહમદ બાદશાહે
આગા નં. ૧-૨-૩-૪-૫ મેળવનાર આપ્યા
- ૫ ૩ શ્રીગિરિધરજી ૧ લા ટિકેટ
સં. ૧૫૨૭-૧૬૭૭ શ્રીવિઠ્ઠનાથજીના સાત પુત્રોમાં
ન્યેષપુત્ર
- ૬ ૪ શ્રીદમોદરજી ૨ ના ટિકેટ સં. ૧૬૩૨ તિલકાયત-૫૬ મળ્યું
- ૭ ૫ શ્રીવિઠ્ઠનાથજી ૩ ના ટિકેટ સં. ૧૬૫૭ શાહનવાજ બાદશાહે
આપ્યું
- ૮ ૬ શ્રીગિરિધરજી ૪ થા ટિકેટ સં. ૧૬૮૮ શ્રીવિઠ્ઠનાથજીના ચાર પુત્રોમાં
ન્યેષપુત્ર
- ૯ ૭ શ્રીદમોદરજી ૫ મા ટિકેટ સં. ૧૭૧૧ શ્રીનાથજી મેવાડમાં પધાય ત્યારે ઔરંગઝેબનો નાસ
આ મહારાજ બાળક હતો
- ૧૦ ૮ શ્રીવિઠ્ઠનાથજી ૧ ફા ટિકેટ સં. ૧૭૪૩ મેવાડમાં જન્મ રાણા ગુનસિંહના મે
(શ્રીગિરિધરજી સં. ૧૭૪૫) વાડમાં જન્મ્યા, ત્રીજા
ધરમાં મોટે બચા
- ૧૧ ૯ શ્રીગોવિંદનાથજી ૭ મા ટિકેટ સં. ૧૭૬૩ શ્રીગોવિંદનાથજીએ નિર્વસ લીલા
કરી તેથી નાના બાઈ ગોવિંદજી
તે ગાદીએ આવ્યા
- ૧૨ ૯ શ્રીગોવિંદજી ૮ મા ટિકેટ સં. ૧૭૬૬ પ્રથમ શ્રીવિઠ્ઠનાથજીના ચતુર્થ
કુમારશ્રીગોકુલનાથજીની ગાદીએ
બચા હતા, પણ ન્યેષ બંધુએ
નિર્વસ લીલા કરી ત્યારે પાછા
ગાદીએ આવ્યા, અને ત્યારથી બે
ગાદીના માલીક રહ્યા હતા
- ૧૩ ૧૦ શ્રીગિરિધરજી ૯ મા ટિકેટ સં. ૧૮૨૫ શ્રીનાથજી ઘરયાદ પધાર્યા
સં. ૧૮૫૮ હોલકરના નાસને મેરે
- ૧૧ શ્રીદાહજી-૧૦ મા ટિકેટ સં. ૧૮૫૩ શ્રીનાથજી ઘરયાદથી પાછા
પધાર્યા સં. ૧૮૬૪ લે. છામદ દેવી
મુલાકાત લીધી-કદ-
કત્તામાં દક્ષિણ
માર્ફત આગાને
ખિતાબ કબુલ રાખ્યો
- ૧૫ ૧૨ શ્રીગોવિંદજી ૧૧ મા ટિકેટ સં. ૧૮૭૬ શ્રીદમોદરજી તે ૫ મા ટિકેટના
બીજા પુત્ર શ્રીગિરિધરજીના વગે-
માંથી મોટે પધાર્યા
- ૧૬ ૧૩ શ્રીગિરિધરજી-૧૨ મા ટિકેટ સં. ૧૮૯૬ સંપ્રદાન મહારાજાઓ
- ૧૭ ૧૪ શ્રીગોવિંદનાથજી ૧૩ મા ટિકેટ સં. ૧૯૧૭ શાહવાડે તેથી પિત્ર
- ૧૮ ૧૫ શ્રીદમોદરનાથજી બાવાસાહેબ સં. ૧૯૫૩ બાવિતિગ્રામયત્ર ગની તેથી મળે છે
- ૧૯ ૧૬ શ્રીગોવિંદનાથજી (બાવાસાહેબના ચિરંજીવી, સાવિતિગ્રામયત્રના પુત્ર
[સં. ૧૯૮૮ ના 'ગુજરાતી' પત્રના ટીપ્પણસર્વાં પૃષ્ઠો જુદા ફેરફાર સાથે]

પુષ્ટિમાર્ગના ઇતિહાસ.

શ્રીગોકુલેશચરિત્ર.

માર્ગશીર્ષે સિતે પક્ષે સપ્તમ્યાં મૃગુવાસરે ॥

નિશામુખે જાયમાનો રુવિમળ્યાં ગોકુલેશ્વરઃ ॥૧॥

માયાવાદિચિદ્રૂપાદિપ્રતિબંધનિવારકઃ ॥

દર્પદા દુર્મદાન્ધાનાં પાયાદો મક્તમૂષ્ણઃ ॥૨॥

શ્રીવિકૃલાધીશ્વરના ચતુર્થ કુમાર શ્રીગોકુલનાથજી પ્રભુચરણનું પ્રાકટય વિક્રમ સંવત ૧૬૦૮ ના માર્ગશીર્ષ શુકલ સપ્તમી અને શુક્રવારે પૂર્વાભાદ્રપદ નક્ષત્ર વેળાએ ત્રિવેણીતટ ઉપર આવેલા પ્રયાગ નગરમાં અઢેલ ગામમાં થયું હતું. એઓશ્રીના પ્રાકટયસમયના વર્ણનમાં અનેક વધાઈઓ મળ્યાપામાં ગવાઈ છે, તેમજ ગુર્જર ભાષામાં પણ તેઓશ્રીના કૃપાપાત્ર ભગવદીયોએ અનેક ધોળપદો રચ્યાં છે. તે ઉપરથી આપશ્રીના પ્રાકટયોત્સવ આ સંપ્રદાયના પ્રત્યેક ઘરમાં આનંદપૂર્વક થાય છે, શ્રીગોકુલનાથજીના ઘરના લેખીયોમાં તો એ પ્રાકટયદિન મહોત્સવનો મનાય છે અને તેઓને ત્યાં આગશર સુદ ૧ થી મંડપ બાંધી પૃથક્ પૃથક્ ભાવનાત્મક અનેક કીર્તનો ધોળ આદિથી ઉત્સવનું યથાર્થ સ્વરૂપ પ્રકટ થાય છે. ઉત્સવો નામ મનસઃ સર્વવિસ્મારક આહ્વાદઃ એ શ્રીવલ્લાધીશ્વરનાં વચનના સાક્ષાત્કાર શ્રીગોકુલનાથજીનો અનન્ય સેવકો કરાવે છે.

શ્રીગોકુલેશ પ્રભુનાં પ્રાકટયસમયે જે આનંદોત્સવ થઈ રહ્યો હતો, તેનું વર્ણન એક ભગવદીય આ પ્રમાણે ગાય છે:—

આજ તો અઢેલ ગામ પ્રયાગ ત્રિવેણી મુખધામ,

મહારાજધિરાજ ધિરાજે શ્રીવિકૃલશરી ।

તિન ત્રિલોકીનાથ પ્રકટ પુરુષોત્તમ તહાં,

અદ્ભુત સ્વરૂપ પ્રકટે શ્રીગોકુલેશરી ॥ ૧ ॥

શ્રીગિરિવરધારી સાથ શ્રીવિકૃલેશ મદનમોહન,

પાછે તે પધારે મયુરેશ દ્વારકેશરી !

દિન દિન અધિક પ્રતાપ તેજ આનંદ અત્રિક,

વલ્લભપ્રિય નિજ દાસ મિલો જગબલેશરી ॥

આ ઉપરથી જણાશે કે શ્રીમદ્ધિકુમાર શ્રીવિકૃલેશ્વર પ્રભુચરણે શ્રીગોકુલેશના પ્રાકટયસમયે શ્રીગિરિજાધરણ આદિ સ્વરૂપોને પધરાવીને મહોત્સવ કરેલો હતો.

યજ્ઞોપવીત અને અઘ્યયન—સંવત ૧૬૧૬ ચૈત્ર શુકલ ૬ શુક્રવારે શ્રીપ્રભુચરણે શ્રીગોકુલનાથજીને યજ્ઞોપવીત દાન કરીને સાંપ્રદાયિક પ્રણાલી પ્રમાણે બ્રહ્મસંજ્ઞા કરાવેલો હતો. ત્યાર પછી શ્રીમત્પ્રભુચરણ અઢેલથી દ્વારકા પધાર્યા. ત્યાંથી પાછા અઢેલ પધારીને કણોટક દેશના ઉપાધ્યાય નારાયણલક્ષ્મીને વેદાધ્યયન કરાવવા માટે નિજબાલકો પાસે રહેવાની યોજના કરી. વેદાધ્યયન કર્યા પછી આપશ્રીએ બ્યાકરણ

આદિ વેદાંગોનો અભ્યાસ કર્યો.' તદનંતર દર્શન ગ્રંથો અને સાંપ્રદાયિક ગ્રંથોનું અધ્યયન પિતૃચરણ સન્નિધાનમાં જ કર્યું.

લગ્ન અને દૈવજીવોદ્ધાર—યોગ્ય વયને પ્રાપ્ત થયા પછી શ્રીગોકુલનાથજીનાં લગ્ન સંવિધિ થયાં. તેઓશ્રીનાં ધર્મપત્નીનું નામ શ્રીપાર્વતીવહુજી હતું. તેઓશ્રીનાં સ્વરૂપવર્ણનમાં મહાનુભાવી કવિવર ભગવદ્દીય શ્રીગોપાલદાસજી લખે છે કે.—

શ્રીગોકુલપતિ અતિ શુણ્ણિધિ, તાત તણે પ્રતિબિંબરે રસના;

પાર્વતીપતિ પ્રેમમું, ગોલા, ગકલ કુટુંબ રે રસના.

આપશ્રી આર્યાવર્તના પ્રત્યેક ભાગમાં મધાર્યા હતા. એઓશ્રીના અનેક સેવકો થયા છે. એ સેવકોમાં મુખ્ય ૭૮ ભગવદ્દીયો છે. એની નામાવલી વ્યાસવાળા ગોપાલદાસે રચી છે. એ મુખ્ય ભગવદ્દીયોમાં પુષ્પ ભગવદ્દીય કદ્યાણુભટ્ટ અને ભરૂચનિવાસી ભગવદ્દીય મોહનભાઈજી મુખ્ય ગણાય છે. ભગવત્સેવાપરાયણ મોહનભાઈજી શુરભક્તિનું મૂર્તિમત્ સ્વરૂપ હોઈને શ્રીગોકુલેશપ્રભુના અનન્ય સેવક હતા. એઓની સ્વશુરદેવમા અસાધારણ પ્રેમભક્તિ હતી. એઓના સંસર્ગથી કેટલાક વૈષ્ણવોની શ્રીગોકુલેશમાં આસક્તિ થઈ અને તેઓ 'પાવડીઆ' ના નામે ઓળખાવા લાગ્યા. એઓમાં પણ ભેદ છે. ૧ પાવડીઆ, ૨ લીમડીઆ, 'પાવડીઆઓ' ની શુરભક્તિ આદરણીય અને પ્રશંસનીય છે, પરંતુ સ્વશુરવંશ અને સ્વશુરવંશસેવ્ય પ્રભુ તરફ અપેક્ષિત ભક્તિભાવનો અનાદર તો પ્રશંસાઈ નથીજ. લીમડીઆ વૈષ્ણવો 'પાવડીઆ' જેવા અંકુચિત દષ્ટિવાળા નથી. તેઓ સ્વશુરવંશને અને સેવ્ય સ્વરૂપોને માને છે.

મહાનુભાવી કદ્યાણુભટ્ટજી—શ્રીગોકુલનાથજીના અન્તરંગ ભગવદ્દીયોમાં મહાધિપતિ શ્રીકદ્યાણુભટ્ટજી પણ છે. તેઓ ગિરિનારા પ્રાદ્યજી અને સંસ્કૃત ભાષાના ઉત્તમ જ્ઞાતા અને કવિવર હતા. વાર્તાપ્રસંગથી જાણી શકાય છે કે શ્રીગોકુલનાથજીના યુવમા ગિરિનારા પ્રાદ્યજીનો આદર વિશેષ હતો અને છે. ગિરિનારા પ્રાદ્યજી ત્યાં સુધી મળે ત્યાં ખીજ પ્રાદ્યજીનો સેવામાં અંગીકાર કરવામાં આવતો નથી. ગિરિનારા પ્રાદ્યજીનાં આથી વિશેષ ભાગ્ય શા હોય ? શ્રીકદ્યાણુભટ્ટજીએ 'કલ્લોલ' નામનો અન્ય સંસ્કૃતમાં ગનાવ્યો છે. જેનું પૂર ચાલીશ હજાર શ્લોકનું કહેવાય છે. આ ગ્રન્થમા શ્રીગોકુલનાથજીના લીલામૃતોદધિનું વર્ણન છે. એ ગ્રન્થનો એકાદ તરંગ મૂલ સંસ્કૃતમાં અમને મળ્યો હતો, જે વાંચવાથી સ્પષ્ટ જણાય છે કે શ્રીકદ્યાણુભટ્ટજી અપૂર્વ ભગવદ્દીય હતા અને તેમની વાણી રસનિઃસ્પંદિની અને પુષ્ટિભક્તિના અલૌકિક રંગથી છલકાતી છે. તેઓએ ગીતા ઉપર એક રીકા પણ લખી છે, જેની એક લિખિત પ્રત 'શુભગતી' પ્રેમના માલીકિના પુસ્તકાલયમાં છે. એનું પૂર ૧૫૦૦૦ શ્લોકનું છે. એ ઉપરથી જણાશે કે આપશ્રીએ અનેક દેવી જીવોનો ઉદ્ધાર કર્યો છે.

એક અદ્ભુત પ્રસંગ—શ્રીગોકુલેશ પ્રભુના જીવનચરિત્રમાં એક પ્રસંગ સર્વનું ધણું ધ્યાન ખેંચે છે. એ પ્રસંગે આપશ્રી તરફ માહાત્મ્યદષ્ટિએ જોના-

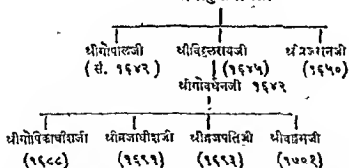
રાના હૃદયમાં ઉઠી છાપ બેસાડી છે. સાંપ્રદાયિક ઇતિહાસમાં એ પ્રસંગ સોનેરી-અક્ષરે કોતરાઈ રહ્યો છે. એનું સંક્ષિપ્ત વર્ણન અત્રે આપીએ છીએ.

ચિદ્રપ નામનો એક સંન્યાસી હતો. અર્ધવિશ્વવવાહિમતનો તેણે સ્વીકાર કર્યો હતો. ગુજરાત આદિ સ્થળોમાં જઈને પોતાના અર્થદિક્ક મતનો ફેલાવો કરીને અનેક જનોને ધર્મવિમુખ બનાવતો હતો. ધર્મનો નાશ કરીને ધર્મચિંહોને ત્રાસ આપીને ભગવદ્ગીતોક્ત આસુર પ્રવૃત્તિમાં મસ્ત રહેતો હતો. એ જ્યાં જતો ત્યાં ધર્મદ્રોહનો દાવાનળ સળગાવતો, અને અનેક નિર્દોષ પ્રાણીઓની હત્યામાં નિમિત્ત બનતો હતો. એક વેળાએ તે ફરતો ફરતો ઉત્તરેન પાસે આવી પહોંચ્યો. તે નગર પાસે આવેલી ભતૂંહરિની શુક્લમાં તે ઉતર્યો તે વેળાએ ઉત્તરેનનો સરદાર મહમદ તકી નામનો યવન હતો. તેને ચિદ્રૂપે બહેકાવીને વૈદિક ધર્મનો નાશ કરવામાં પ્રવૃત્ત કર્યો. આરે સંપ્રદાયના અનુયાયીઓનાં ધાર્મિક ચિંહોને ફર કરવાના કાર્યમાં મહમદને મદદગાર બનાવ્યો. ઘણા લોકો જનોએ નગરના સરદારના ત્રાસથી ધાર્મિક ચિંહોનો ત્યાગ કરવા માંડ્યો. તે સમયે ઉત્તરેનમાં શ્રીવલ્લભાધીશ્વરના કૃપાપાત્ર શ્રીગોકુલેશના સેવક બે વૈષ્ણવો હતા. ૧ ત્રિકમ ભટ્ટ, ૨ દેવાલાઇ, આ બન્ને ધર્મત્રહી વૈષ્ણવોએ તિલકમાળા આદિ ધર્મચિંહોનો સુદૃઢ ત્યાગ કર્યો નહતો. એક વેળાએ તેઓ ચિદ્રપની શુક્લ પાસે ઘડને નિકળ્યા, પણ તે પાખંડી સંન્યાસીને નમન કર્યું નહિ. આ અપમાનથી ચિદ્રૂપે પોતાની પાસે બોલાવીને તેઓને જણાવ્યું કે:—“તમે ત્રિકમ આદિથી વૈષ્ણવ જણાઓ છો, પરંતુ નગરના હાકેમના હુકમ પ્રમાણે તમે હવે શુધી એ ચિંહોનો ત્યાગ કર્યો નથી, માટે તમે શુનેહગાર થયા છો, માટે જો તમારે શિક્ષા ન ભોગવવી હોય તો તિલકમાળાનો ત્યાગ કરો.” સંન્યાસીના આ વચ્ચે તરફે સંઘ પણ લક્ષ્ય દીક્ષા વિના ધર્મપરાયણ વૈષ્ણવો પોતાને ઘેર ગયા. આ તરફ સંન્યાસીની પિત્તો ખરી ગયો. એકદમ ગુસ્સાના આવેગમાં મહમદ પાસે ગયો. મહમદને કહ્યું કે:—“જહાંગીર બાદશાહે પોતાની સલ્તનતમાં જે લોકો ધાર્મિક ચિન્હ ધારણ કરતા હોય તેઓને તે ચિન્હો છોડી દેવાની તાકીદ કરવાનો હુકમ કાઢ્યો છે અને તેનો ઠેકઠેકાણું અમલ કરવાને અને ફરમાશ કરી છે. જો તેનો અમલ તમારા રાજ્યમાં ગણખર નહિ થાય તો બાદશાહ તમારા પર નારાજ થશે. માટે તેનો સત્તર અમલ તમારા રાજ્યમાં થવાની તમને ખબર આપેલી છે છતાં પરિણામ ઠીક નથી આવ્યું. આજેજ બાદશાહી હુકમના અનાદર કરનારા તમારા રાજ્યમાં મેં જોયા છે.” સરદારે તુરતજ સંન્યાસી પાસેથી તે માણસોની માહિતી મેળવીને તેઓને પોતાની પાસે બોલાવી મંગાવ્યા. મહમદે તેઓને તિલકમાળાનો ત્યાગ કરવા કહ્યું ત્યારે તેઓએ જવાબ આપ્યો કે:—“તિલક માળા તો શિરને સાટે ગુરુદેવે બાંધેલી છે, તેને તોડવાની સત્તા ત્રિભુવનમાં કોઈને નથી, શિર છુદ્ડ થાય તોજ માળા પણ છુટી થવાની.” મહમદે આ ઉપરથી ગુસ્સે ધડને તેઓને હાથીના પગ નીચે કચડી નાખવાની શિક્ષા કરી. શિક્ષાનો અમલ

આપશ્રીના પરિવાર અને ચરિત્ર—શ્રીગોકુલનાયજીના ઘરના લેખલુવ રા. ઉત્સવલાલ પાસેથી એક લખેલી નોટ મળી, તેમાંથી “શ્રીગોકુલેશાષ્ટક” સંપૂર્ણ મળી આવ્યું. એ એષ્ટક મહાનુભાવી દેવ્યમૂર્તિ શ્રીહરિરાયચરણ કૃત છે, તેનું સુદૃઢ પ્રયત્ન કરવામાં આવ્યું છે. શ્રીહરિરાયજીના જ્ઞાનસંબંધમંત્રદાતા આપજી હતા. એ નોટમાં “શ્રીગોકુલેશાષ્ટોત્તરશતનામાવલી” એ નામનો એક અન્ય દષ્ટિગોચર થયો. તેમાંથી કેટલીક ઐતિહાસિક વાર્તા મળી આવી, તે અત્ર પ્રકટ કરીએ છીએ. શ્રીગોકુલેશ પ્રભુના ત્રણ બાળકો પ્રકટ થયલા. ૧. શ્રીગોપાલજી ૨. શ્રીવિઠ્ઠલેશરાય ૩. શ્રીગોવર્ધનેશજી. આપશ્રીના બિરાજતાં જ સ્વયંજ નિત્યલીલાસ્થ થયો હતો, એમ કહેવાય છે. આ ઉપરાંત ઉક્તાનામાવલીમાં લખ્યું છે કે જહાંગીરના કંથનને અનાદર કરીને આપશ્રી દ્રાક્ષીર પધાર્યો હતા. ત્યાંથી સોરમજીમાં વાસ કર્યો હતો. ત્યારબાદ જ્યેષ્ઠ જ્ઞાતા લીલાસ્થ થયાના સમાચાર શ્રવણ કરીને શ્રીગોકુલમાં પધાર્યો હતા. જ્યેષ્ઠ જ્ઞાતાની પાદુકાજીને શ્રીજુસાંઇજીની પાદુકા સાથે આપશ્રીએ જ પધરાવ્યાં હતાં. આ પ્રમાણે નિષ્ઠુદ ભાવનો આધાર કરીને પુનઃ આપશ્રી સોરમજી પધાર્યો, ત્યાં થોડો સમય રહીને પરિવારસમેત ફરીને મજમાં વાસ કર્યો. આપશ્રીને સારંગી અતિપ્રિય હતી. આપ નિત્ય લગવદીયોને અતીક્રિક્ત લગવદીયોરસનું પાન કરાવતા. આટલી વિશેષ હકીકત ઉક્ત નામાવલીમાંથી મળી છે.

એક પ્રાચીન કલ્પવૃક્ષમાં શ્રીગોકુલેશપ્રભુના પરિવારનું આ પ્રમાણે દર્શન થાય છે.

શ્રીગોકુલનાયજી



આસુરવંધામોહ—પુષ્ટિમાર્ગના અતીક્રિક્ત રસના વિલાસનું ફેવી ચણિને દાન કરીને આપશ્રી સંવત્ ૧૬૯૭ ના માઘ વદિ ૯ નવમીને દિને નિત્યલીલામાં પધાર્યો. આપશ્રીની ભૂતલ ઉપર સ્થિતિ ૮૯-વર્ષ, ૨ માસ, ૧૭-દિન સુધીની છે. આપશ્રીની નિત્યલીલાસ્થિતિના સમાચાર શ્રવણ કરીને આપશ્રીના અનેક અંતરંગ લગવદીયોએ આ લોકને ત્યજ્યો હતો એમ ઉલ્લેખ છે.

ઉપસંહાર—ઉપર પ્રમાણે આપશ્રીનાં દિવ્ય ચરિત્રોને સંક્ષિપ્ત ઉલ્લેખ કરીને અત્ર વિરમીશું. સાધનોના અભાવને લીધે તેમાં ન્યૂનતા આવે એ સ્વાભાવિક છે, તે તરફ લક્ષ્ય ન આપતાં સાર શ્રદ્ધ કરવા વિનંતિ કરીએ છીએ.

માલાપ્રસંગની ઐતિહાસિકતા.

(લેખક:—૨૧, ૨૨ રામલાલ સુનીલાલ મારી.)

પ્રથુસૌ વર્ષ ઉપરનો સત્યાગ્રહ.

વિક્રમના સત્તરમા શતકના છેલ્લા ચરણના આરંભમાં એક સત્યાગ્રહનો પ્રસંગ બન્યો હતો. ગાંધીજીનો સત્યાગ્રહ રાજ્યપ્રાપ્ત અને ભારતવ્યાપી હતો. ત્યારે આ સત્યાગ્રહ ધાર્મિક અને મધુ-રોની આસપાસના વનખંડમાં જ ફેલાયો હતો. પણ એ ધાર્મિક સત્યાગ્રહ વ્યક્તિવાચક-એકે જ વ્યક્તિના અભય અને ધૈર્યના ફલરૂપ હતો, ત્યારે આ રાજ્યપ્રાપ્ત સત્યાગ્રહમાં લગભગ આખા સમાજે ભાગ લીધો હતો. છતાં પણ બને સત્યાગ્રહની પદ્ધતિ સરખી જોવામાં આવે છે. જાને નિઃશસ્ત્ર હતા અને પ્રમુખ રાજ્યસંતાની સામે હતા. પરંતુ ત્યારની રાજસત્તાના અને હાનની રાજ્યસત્તાના સ્વરૂપમાં ફેર છે. હાલની રાજ્યસત્તા અમે તેણે પણ કાયદાથી નિયંત્રિત છે અને તેને જળતના અનુકૂળ અને ઉત્તેજક અભિપ્રાયની અપેક્ષા રાખવી પડે છે. અસારના સત્યાગ્રહી પાસે પ્રકાશન અને પ્રચારનાં જેવાં વિષુદ્ધ સાધનો છે, તેમાં પ્રાચીન સત્યાગ્રહી પાસે ન હતાં. તે વખતે બાદશાહનો રાજદ તે જ કાયદો મણતો અને તેને જળતના અભિપ્રાયની ફરકાર નહોતી. તેમાં પણ એ સત્યાગ્રહ જહાંગીર જેવા મમતી અને સત્તાપ્રિય બાદશાહ સામે હતો. છતાં પણ સત્યાગ્રહના મુળભૂત સિદ્ધાન્તો અનુસાર તે નિઃશસ્ત્ર અને ધૈર્યયુક્ત હોવાથી સફળ થયો હતો. ગાંધીજી કહે છે કે પ્રમુખમાં પ્રમુખ સત્તા સામે એક પણ વ્યક્તિ નિર્દોષ સત્યાગ્રહ આદરે તો પણ તે વિજયી થયા વિના રહે નહિ, એ સિદ્ધાન્તનું આ સત્યાગ્રહ સમર્થન કરે છે.

આ સત્યાગ્રહની હકીકત ટૂંકમાં આ પ્રમાણે છે. ચિદ્રૂ નામના સંન્યાસીના ઉપદેશથી જહાંગીર બાદશાહે એવો હુકમ કર્યો હતો કે ગ્રામજે તુલસીની માળા પહેરવી નહિ તુલસીની માળા વૈષ્ણવ સંપ્રદાયેનું આવશ્યક ચિહ્ન મણુપ છે. એથી એનો ત્યાગ એ સંપ્રદાયેને ૧૫વાદક હતો. પરંતુ જહાંગીરના હુકમની સામે જાણુ ચર્ચ શરૂ થી તે સમયે વનખંડમાં શીવજીભાગ્યજીના શુદ્ધાદિત અને શ્રીહિતહરિવંશજીના રાધાવલ્લભી સંપ્રદાયનું પ્રાબલ્ય હતું. તેમના ઘણા અનુયાયી-ઓએ તુલસીમાળાને ત્યાગ કર્યો, પણ શીવજીભાગ્યજીના (ચતુર્થ) પૌત્ર શ્રીગોકુળનાથજી- (સં. ૧૬૦૮-૧૬૯૭) એ તેમ કર્યું નહિ. જહાંગીરના હુકમનો અમલ કરાવવા ચિદ્રૂ ઉત્તર-નથી મધુરામાં આવીને રહ્યો હતો અને જહાંગીરે તેને એ બાબતમાં સર્વ સત્તા સોંપી હતી. તેણે શ્રીગોકુળનાથજીને ઘણી ઘણી લાલચો અને ધમકાઓ આપી, પણ તેને વસ્ત થયા નહિ. છેવટે પોતાના હુકમના અનાદર માટે જહાંગીરે તેમને કાસીર જેવા દુર અને વિકટ માર્ગવાળા પ્રદેશમાં જોખાસાની ઝલુમાં બોધાવ્યા અને તેઓ સીતેર વર્ષની ઉમ્મર છતાં પ્રવાસનાં અનેક કષ્ટો ભોગવી ત્યાં ગયા. ત્યાં પણ માળા ઉતારવાને તેમણે સાફ ના પાડી, એ ઉપરથી જહાંગીરે તેમને ધરખાર ત્યજવાનો હુકમ કર્યો. તે પ્રમાણે તેઓ ગોકુળ ત્યજીને શ્રોત્રમમાં જઈ રહ્યા, પણ માળા ત્યજ નહિ. પાછળથી જહાંગીરને પોતાની ભૂલ સમજાઈ અને તેનું ચિદ્રૂ પ્રત્યેનું માન ધરી ગયું, ત્યારે તેણે પોતાનો હુકમ રદ કર્યો અને શ્રીગોકુળનાથજી ગોકુળમાં આવીને રહ્યા.

મૂળ કાવ્ય.

આ પ્રસંગ વ્યારાના રહેવાસી વૈષ્ણવ કવિ ગોપાળદાસે ‘માલોદાર’ એ નામના મનમિશ્રિત સુન્દરાતી ભાષાના વિસ્તૃત કાવ્યમાં વર્ણવ્યો છે. એ કાવ્ય સં. ૧૬૯૯ માં રચાયું હતું. ત્યાર

કાવ્ય આખું પ્રકટ થયું નથી, પણ તેનો હેતુ સાર નહીંઆદનો સ્વ. લક્ષણાધારે એ સં. ૧૬૧૪ માં પ્રકટ કર્યો હતો અને કંઈક લાંબો સાર ગોઠાસના યી. મનલાલ આંધીએ લખેલા શ્રીગોકુલનાથના જીવનચરિત્રમાં આપેલો છે. મેં પણ એ કાવ્યની એક હસ્તલિખિત પ્રત જોઈ છે.

પરંતુ આ પ્રસંગની હકીકત શરૂથી પ્રથમમાં નોંધાવેલી જેવામાં આવતી નથી, તેથી ઘણને તેની ઐતિહાસિકતા વિશે સંકા ઉત્પન્ન થઈ છે. એ સંકાનું નિવારણ કરવું, એ અલેખનો ઉદ્દેશ છે. મૂળ પ્રસંગ બન્યા પછી આ કાવ્ય માત્ર વીશ વર્ષમાંજ રચાયું હતું, અને શ્રીગોકુલનાથના લીલામાં પ્રવેશ પછી બે જ વરસમાં રચાયું છે. તેમાં એટલી બધી-ઝીણી વિગતો છે કે તે પ્રથમ દરને જ ઐતિહાસિક હોવામાં સંકા ઉત્પન્ન થાય તેવું નથી, છતાં પણ તેને બારીકાપથી તપાસી, તેની ઐતિહાસિકતા સિદ્ધ કરીશું. આ પ્રંયમાં ફરહીદ બાબતો અતિશયોક્તિભરેલી છે એ કબજ કરીશું; પણ તે ઇતિહાસ નથી, પણ કાવ્ય-અભિનૈક કાવ્ય-છે એ વાત જૂલની જોઈએ નહિ. છતાં પણ એમાંની વિગતો ઇતિહાસ સાથે મેળવતાં મને સત્ય જણાયું છે, એમાં એક પણ પ્રસંગ એવો નથી જણાયો કે ઇતિહાસવિરોધી હોય.

કોઈ પણ કાવ્યની ઐતિહાસિકતા સ્થાપિત કરવામાં આગળનાં સત્ય છે કે કેમ તથા તેનો ઇતિહાસ સાથે મેળ મળે છે કે કેમ તે જોવું જોઈએ:—(૧) સ્થળો, (૨) મતુઓ અને (૩) પ્રસંગો. આ કાવ્યની આ બાબતો તપાસીએ.

સ્થળો:

આ કાવ્યમાં શ્રીગોકુલનાથના કારમીરના પ્રવાસનું વિગતવાર વર્ણન છે. તેમાંનાં સ્થળો કાવ્યનિક નથી, કેટલાંક અત્યારે પણ હયાત છે. બાકીનાં જહાંગીરના પ્રવાસવર્ણન સાથે મળે છે. ખુદશના બગવા વખતે આગ્રાથી લાહોર અને ત્યાર પછી કારમીરના પ્રથમ પ્રવાસે તે જાય છે. એ પ્રવાસોમાં કરેલા મુકામનાં જે નામ આપ્યાં છે તે-શ્રીગોકુલનાથના પ્રવાસનાં ... સાથે ઘણી ખરી રીતે મળતાં છે.

કાવ્યમાં ગોકુળથી કારમીરનું અંતર-મીનગર સુધીનું-૪૪૪ દિવસ જણાવ્યું છે. જહાંગીર આગ્રાથી કારમીરનું અંતર ૨૭૬ દિવસ લખે છે. પરંતુ, આમાં બે બાબતો વિચારવાની છે. જહાંગીરે કારમીરની હદ સુધીનું અંતર લખ્યું છે, એટલે કારમીરની હદથી મીનગર સુધીનું આગાંચેક દિવસનું અંતર કાવ્યના અંતરમાંથી બાદ કરવું જોઈએ. વળી શ્રીગોકુલનાથના કારમીર જતા નિકળ્યા તે વખતે પ્રથમ આગ્રામાં ત્યાંના હાકેમ લરકરખાને મળ્યા ગયા હતા. એટલે ગોકુળથી આગ્રાનું ૨૦ દિવસનું અંતર પણ તેમાંથી બાદ કરવું જોઈએ. એ બે અંતર બાદ કરીશું તો બને આંકડા સરખાજ થશે.

કારમીરના વર્ણનમાં ત્યાંના બ્રાહ્મણોના આચારસંજ્ઞાથી કાવ્યમાં આ પ્રમાણે લખ્યું છે:—

“હઠાં વિવા તો હે બહેન, પેં નહિ કહુ આચાર;

બાલણ અરુ નામ મેં-હાં તેસોઈ વિહવાર.” (૧, ૪૩૨)

૧ કવિશ્રી નાનાલાલે આ પ્રસંગ ‘જહાંગીર-દુરબંદી’ નામના પોતાના નાટકમાં નોંધ્યો છે (પ. ૧૧૧) કવિશ્રી ઇતિહાસના-ખસ કરીને મુગલ યુગના-પ્રજ્ઞા અસ્થાસી છે. ઇતિહાસના દુષ્ણદાત્મક અસ્થાસમાં તેણે મુનશવતમાં અદ્વિતીય છે. તેમણે બાદશાહનામાંના નાટકોમાંએક પણ પ્રસંગ ઇતિહાસવિરોધી લીધો નથી. આ પ્રસંગ તેમણે નાટકમાં કુશળી તેથી તેની ઐતિહાસિકતા તપાસી જ લે. એ તેમને તે વિશે સદેજ પણ સંકા હોત તો એ નોંધવું નહિ.

આ સંખ્યામાં જહાંગીરનાં તુકુકે જહાંગીર આ પ્રમાણે લખે છે:—

“ Although most of the houses are on the riverbank, not a drop of water touches their bodies. In short, they are dirty outside as inside, without any cleanliness.

There is also a body of Brahmans living from old in this country who still remain there and talk in the Kashmiri tongue. Outwardly one cannot distinguish them from Mussalmans. They have, however, books in Sanskrit language and read them.”

—રોજર્સ અને બિચરિન્ડટ અનુવાદ ભા. ૨ પૃ. ૧૫૮ અને ૧૫૦.૧

મનુષ્યો.

આ કાવ્યમાં જણાવેલાં સ્થળો જેમ સત્ય છે, તેમ તેમાં જણાવેલાં મનુષ્યો પણ ઐતિહાસિક છે. તેમાં જણાવેલાં જહાંગીરના કુટુંબનાં માણસો અને સરદારોનાં નામ ફારસીઓમાં મળ્યાં આવે છે. એટલુંજ નહિ પણ તેઓ જે હોદ્દા ઉપર રતા તે પણ ઇતિહાસ તપાસનાં સાચાં લાગે છે. તેનો વિચાર અહીં કરીએ. તેમાંથી જે નામો સામાન્ય ઇતિહાસમાં પ્રસિદ્ધ છે તેવાં કે ખુશ, ખુર્રમ, તુરજહાં, અસરખાન—તે તપાસવાની જરૂર નથી, પણ જે નામ સામાન્ય ઇતિહાસમાં પુસ્તકોમાં લેવામાં આવતાં નથી તે અહીં તપાસીશું.

(૧) ઉત્તરજેનનો હાકેમ મહુમ્મદ તકી.

જહાંગીરે તેને સં. ૧૬૭૧ માં માંડું ગોદલ્યો હતો (તુકુક, ભા. ૧ પૃ. ૨૫૮) માંડે માળવાના મુંબાનું મુખ્ય સ્થળ હતું, એટલે ઉત્તરજેન તેના તાબામાં હતું.

(૨) આઝાનો મુબેદાર લરકરખાન.

સં. ૧૬૭૬ માં ત્યારે જહાંગીર કાશ્મીર જ્યાં નીકળ્યો ત્યારે તેને દક્ષિણમાંથી બોઝાવી આઝાનો હાકેમ નીમ્યો હતો. (તુ. ૨, પૃ. ૮૧.)

(૩) ચિરૂપતું અપમાન કરનાર તુરજહાંનો બનેલી હાકેમ બેગ.

તેજેજહાંની બેન ખાદીબ બેગમને તે પરણ્યો હતો. (તુ. ૨, પૃ. ૩૦૬)

(૪) શ્રીગોકુલનાથજીનો વિરોધી સારંગદેવ.

એ પંડિતજીના કાઠ ગામનાં જહાંગીરદાર અને જહાંગીરનો ખીદમતગાર હતો. (તુ. ૨, પૃ. ૧૮૨)

(૫) શ્રીગોકુલનાથજીને સોરમ નહિ જતાં પોતાના રાજ્યમાં આવવાનું

આમંત્રણ આપનાર રાય રતન હોડિા.

એ ખુદીના રાજા બોજ હાડનો પુત્ર હતો. એને જહાંગીરે સર ખુશદામનો ઇકામ આપ્યો હતો. (તુ. ૧, પૃ. ૧૩૧.)

(૬) જહાંગીરની મહેતારીર મરીઅમ ઝમાની.

અકબરે આદશાહની બેગમ, જહાંગીરની મા અને રાજા હમવાનહાડની બેન (તુ. ૨, પૃ. ૬૪).

૧. આ લેખમાં જ્યાં જ્યાં તુકુક જહાંગીરી (સંક્ષિપ્ત તુકુક)નો નિર્દેશ છે, ત્યાં ત્યાં આ અંક નવારું ન સૂચન સમજાવું.

૨. સ્વ. લલ્લુભાઈ પારેએ મહેતારીનું અર્થ જ્ઞાનજ્ઞાનાની ઉપરી સ્ત્રી અમલદાર એવો કર્યો છે. (પૃ. ૧૮) એ ખૂબ છે. તેનો અર્થ મા યાય છે.

(૯) જાયસંગ ભુરડીઆની દીકરી અને જહાંગીરની બેગમ માનીઆઇ.

મિકનેરના રામ રાય કથાલુખતો પુત્ર રાય રાયસિંહ એ ભુરડીઆ કહેવાતો (૫. ૧. ૧૩૭) તેની પુત્રીને જહાંગીર પરણ્યો હતો. (૫. ૧. ૫. ૧૩૨) આ બેગમનું નામ કાસી પ્રધોમાં નથી, આ કાન્ય તે નામ પૂરું પાડે છે.

(૮) જેના માથા ઉપર જહાંગીરે ચિરૂપનો હાથ મૂકાવ્યો હતો તે જુલાહી.^૧

જહાંગીરના પાટકુવર ખુશનો પુત્ર, જેને અસફખાને જહાંગીરના મરણ બાદ થોડા દિવસ માટે દાવરઅસ નામથી આસપાદ બનાવ્યો હતો. પણ પાછળથી શાહજહાનના દરબાર પ્રમાણે મારી નાખ્યો હતો. આ નામ તુલુકે જહાંગીરીમાં નથી,^૨ પણ Peter Mundy ને પ્રવસજીતનામાં (History of Jahangir by Beni Prasad. p. 338) અને Gladwin ના જહાંગીરના ઇતિહાસમાં (૫. ૧૬૦) છે. કલ્લેહમાં પણ એ નામ છે, અને શાહજહાન તેના કરાવેલા ખૂનની નોંધ તેમાં છે. (૭. ૨૦).

પ્રસંગો.

રચગ અને મનુષ્યોના નામ કરતાં, ઐતિહાસિકતાના પ્રતિષાદનમાં પ્રસંગોની સ્થિતિ અને તેમનું કાલાતુસંધાન વધારે મહત્વનાં છે. તેનું નિરીક્ષણ આપણે હવે કરીએ.

(૧) સં. ૧૬૭૪ માં જહાંગીર ગુન્રાતમાં આવ્યો હતો, ત્યારે તે ચિરૂપને ઉત્તરેન અખગ એક શુક્રમાં મળ્યો હતો,

“એટલે સંવત સોળ આહોતેર થઇ એક વાત
જહાંગીર નુપ આમરેથી જાતો હતો ગુન્રાત.
× × × ×
અવંતી જહાં ઉત્તરો નુપ જોવાને કરી આંત,
પૂછ્યું તે વળતું તેહને ‘ક્યાં રહે છે મહાંત ?’
શુક્ર માંડાં દેખાડીએ ત્યાંડાં મળ્યો તેણી વાર.”

આમાં પ્રથમ સંવતનો વિચાર કરીએ. આ કાન્યમાં જણાવેલા વર્ષ અને માસ ઉપર હિંદની મળુના અનુસાર છે, એટલે સંવત ચેતમાં જલ્દાય છે અને માસ પૂર્ણિમાન્ત છે, અર્થાત્ વદમાં માસારંભ થાય છે. જહાંગીર ઈ. સ. ૧૬૧૬ ના નવેમ્બરની દસમી તારીખે નીકળી (૫. ૧. ૫. ૩૪૦) માંકું તથા ખંભાત થઇ ગુન્રાતના પાટનગર અમરાવાદમાં ઈ. સ. ૧૬૧૮ ના જાનેવારી માસની પાંચમી તારીખે, એટલે સં. ૧૬૭૪ ના પાંચ માસમાં દાખલ થયો હતો. તેથી કાન્યમાં આપેલો સંવત ગણેશ્વર છે.^૩

૧. સ્વ. લક્ષ્મણસિંહ પદ્મિનિ જુલાખ એલે નાકની વાળા એ ઉપરથી જુલાખી એલે મહમ્મદ વાહી પહેરનાર જહાંગીરનો કોઇ મંત્રી એવો તક કરે છે. (૫. ૧૮), પણ એ ઘટિત નથી, તેમ તેને માટે કોઇ આધાર પણ નથી.

૨. તુલુકે જહાંગીરના અનુવાદક રોલસ અને બિવરિંગ તેની સૂચિમાં જાનીઆવની પુત્રીનું નામ જુલાહી હતું એમ જણાવે છે. મૂળ ગ્રંથમાં એમણે એ નામ ‘કાંસમાં લખ્યું છે, એટલે એ એમનો તક કરો. તે વાત સાચ હોય તો પણ ખુશના પુત્રનું નામ જુલાહી હતું એ ચાક્રસ છે, અને માત્ર વારસ તરીકે તેને ચિરૂપ પાસે આશાવાદ અપાવ્યો હોય એમ માનવું વધારે યોગ્ય છે.

૩. શ્રીગણકવનાપણના ચરિત્રમાં સં. ૧૫૭૨ નું વર્ષ આપ્યું છે, એ શા આધારે તે સમજાવું નથી. સ્વ. લક્ષ્મણસિંહ સં. ૧૬૩૪ નું વર્ષ આપે છે અને એ એલેશી હાથપ્રતમાં પણ એ જ વર્ષ છે. સં. ૧૬૩૪ વલ્લોહમાં પણ બહુ ન થયે તેવા અમરાવાદમાં સં. ૧૬૭૪ નું વર્ષ ૨૫૪ રીતે છે.

પુરુષાર્થસુધારિતેનુસારે વર્ષ (૧૬૭૪) જહાંગીરે ચક્રવાનામાલિકાનાં વારંમીનો વિજાન્નવણાત.
ગુર્મરેલે...૧૦ ૭, ૧૦ ૧)

with Jahangir for the release of Khusrau Achadrup spoke accordingly and Khusrau was released." (Tuz. 11, p. 104, foot-note).

ફલ્લોભમાં પણ આ વાત મેંધેલી છે.

(૫) શ્રીગોકુળનાયજી સં. ૧૬૭૭ ના આવણ (ગુજરાતી આવણ) વદ ૬ ના રોજ ગોકુળથી નીકળ્યા કાશ્મીર ભાદરવા સુદ ૧૩ ના દિવસે પહોંચ્યા હતા. અને આસો વદ ૨ (ગ. ભાદ્રપદ) ના દિવસે બાદશાહની મુલાકાત લીધી હતી. હવે એ જોવાનું છે કે એ મુદત દરમ્યાન જહાંગીર કાશ્મીરમાં હતો કે નહીં? તુઝુક ઉપરથી જણાય છે કે તેણે ઈ. સ. ૧૬૨૦ ના મિલિદર મહિનાની ૧૩ તારીખે કાશ્મીરમાં દશરતો તહેવાર ઉજવ્યો હતો અને એ જ મહિનાની ૨૭ મી તારીખે લાંથી આગ્રા જવા નીકળ્યો હતો. ઈ. સ. ૧૬૨૦ એટલે ભાદરવા-આસોમાં ચૈત્ર સંવત ૧૬૭૭ હતો.

(૬) બાદશાહે કાશ્મીરથી પાછા આવતાં ગોકુળમાં મુકામ કર્યો હતો અને મોલાનિવેધનો દુકમ રદ કર્યો હતો. આથી શ્રીગોકુળનાયજી સં. ૧૬૭૭ ના ચૈત્ર (ગ. ફાગણ) વદ ૫ સોરમથી નીકળ્યા વદ દશમે ગોકુળ પાછા આવ્યા હતા.

“ ચૈત્ર વદિ પંચમી ગુરુવારે સૂર્ય ત્રણ ધરી અગ્ને
વિજય કર્યો સોરમથી મહા મુજલ નગરા ધડતે.

x x x x

સંવત સોળ સતોતરે ચૈત્ર વદિ દશમી બુધવારે ૨
શ્રીગોકુલેય ગોકુલ પ્રવેશ કરે ચરેલ દિન ધરી ચાર ૨.

આ ઉપરથી જણાય છે કે બાદશાહે ફાગણ સુદમાં દુકમ રદ કર્યો હતો.

જહાંગીર કાશ્મીરથી આવતાં ગોકુળ મુકામ કર્યો હતો, એનો તુઝકમાં ૨૫૪ નિર્દેશ છે:—

Next day Gokul was the place of encampment." (Tuz. 11, p. 166)

સમય માટે નીચેની હકીકત ધ્યાનમાં લેવાની છે, કાશ્મીરથી આવ્યા પછી તુરત તેણે ઈ. સ. ૧૬૨૧ ના માર્ચ માસની દશમી તારીખે પોતાના રાજ્યાભિષેકનું સોળમું વર્ષ ઉજવ્યું હતું. (પ. ૨, પ. ૧૯૯) એટલે સં. ૧૬૭૭ ના મદ્ય કે ફાગણમાં (ફેબ્રુઆરી) તે ગોકુળમાં હતો એ ૨૫૪ છે.

આ પ્રમાણે આ કાવ્યમાં જાણવેલાં ત્રયો, મનુષ્યો અને પ્રસંગો એ અધાન ઇતિહાસિક હો છે, તેથી તે કાવ્ય કાવ્યનિક નથી. તો પછી મોલાનિવેધનો પ્રસંગ કાશ્મી અથોમાં કેમ નથી? આના ઉત્તરમાં જણાવવાનું કે જહાંગીરના સમયના અધાન કાશ્મી ઇતિહાસના ત્રયોના અનુચ્છદ હજી પ્રકટ થયા નથી, માત્ર તુઝુકે જહાંગીરનો અનુવાદન પ્રકટ થયો છે. તેથી અધાન ત્રયોમાં નથી, એમ ચોક્કસ રીતે ન કહી શકાય. આ પ્રસંગ કાવ્યનિક ઉભો કરવાને કશું જ કારણ નથી. કદાચ એમ માનીએ કે શ્રીગોકુળનાયજીના સેવકે તેમનું ગૌરવ વધારવાને આ પ્રસંગ ઉભો કર્યો છે, પણ તેની અંદર એવી કેટલીક વિગતો છે કે જે એ બનાવટી હોત તો તેમાં દાખલ કરવામાં આવતજ નહિ. શ્રીગોકુળનાયજી ચિદ્રૂપ પાસે વારંવાર જાય; જહાંગીરે એનું લખી આપે કે ચિદ્રૂપ ધર્માનુસાર જે કહેશે તે કબજ કરીશું. તેમના મોટા ભાઈની આગાનો અનાદર, મુસલમાન અમલદારોને વારંવાર મળવું—એ એવી બીનાઓ છે કે જેનાથી તેમનું ગૌરવ વધતું નથી. વળી, જે પ્રસંગ કાવ્યાનુસાર ઉભો કર્યો હોય તો શ્રીગોકુળનાયજી અને બાદશાહના

માંથી જ મળી આવે છે. અકબરના લેખલખર્ચ પ્રત્યેના વધુથી હકીકત પણ આદર્શી ફરમાનોમાંથી મળે છે.

જહાંગીરનું લખાણ.

જહાંગીરે તુઝુકમાં લખ્યું છે કે પ્રતાપનો પુત્ર અમરસિંહ પોતાની સાથેના યુદ્ધની શરૂઆતમાં જ નખી પડ્યો હતો અને તેના પુત્ર વાલસિંહને પોતાના હસ્થારમાં મોકલ્યો હતો. આ ખીના પણ ખીન પ્રમાણના આધારે પશ્ચિમ ગરીબ કરે નાપાયાદર સાબીત કરી છે. જહાંગીરે ખીન ઐતિહાસિક બાબતો સંબંધી પણ કાં તો ખાન સેયું છે અથવા તો તે પાંદર લખી છે. તુઝુકનો તરજુમો કરનાર બિચરિજ લખે છે કે જહાંગીરે પોતાના બાપ સાથેના બળવાની બાબતમાં અને શેર અફઘાનના મૃત્યુના સંબંધોની હકીકતમાં ઢાંકીછોડા કર્યો છે:—

“Jahangir has glossed over his rebellion against his father and the circumstances of Sher Afghan's death”—Preface to Tuzuk.

તેણે નૂરજહાંનના પૂર્વગ્રેમ તથા તેની સાથેના પોતાના લગ્ન સંબંધી પણ એક અદ્ધર પણ લખ્યો નથી. વળી પોતે ખુશરૂની આંખો ફાંપવી હતી અને શાહજહાંએ તેનું ખૂન કરાવ્યું હતું એ સંબંધી ખાન સેયુંનું પ્રમાણો મળે છે. છતાં પણ જહાંગીરે તો તે બાબતમાં ખાન જ સેયું છે. આપણે આગળ જોયું કે ચિદ્રૂપના કહેવાથી ખુશરૂને છોડ્યો હતો છતાં પણ તેણે પોતાનું મહત્ત્વ ધરે તેથી ચિદ્રૂપની દરખાશગીરીના રીકાર કર્યો નથી. શી. વેલીપ્રસાદ જહાંગીરના પ્રશસક હોવા છતાં લખે છે કે જે બાબતમાં પોતાના ઉપર સહેજ પણ બળવાજદારી આવે તેણે એક પણ પ્રસંગ જહાંગીરે નોંધ્યો નથી:—

“The former (Jahangir) would hardly mention a deed for which ultimately he must be partly held responsible.”

(History of Jahangir, p. 335)

આના અપવાદરૂપે અશુભકર્મના ખુનનો પ્રસંગ મળ્યો પડે.

સર દોમસ રોની મુલાકાત.

પરંતુ સૌથી વધારે અગત્યની બાબત તો સર દોમસ રોની જહાંગીરની મુલાકાત સંબંધી છે. તે ઇંગ્લાંડના રાજાના એકઘી તરીકે દિલ્હીમાં આવ્યો હતો અને જહાંગીરને અગમર

૧ આ ફરમાનો દિ. બ. કૃષ્ણલાલ જોરીએ સંપાદિત કર્યાં, પણ હજી પ્રગટ થયાં નથી. તેમની કૃપાથી તે હું જોઈ શક્યો છું. તેમાં શ્રીવિક્રમનાથએ ગોળ અને નીલીપરા માંમની જમીન આપ્યાં, (એ ગામે હાલ પણ તેમના વંશજોના ટાણામાં છે) તેની હદમાં સિંકાર ન કરવાનું અને શાહી અમલદારોએ તેમની પાસેથી કરવેરા ન લેવાનું, તેમને ઠાઠ પણ પ્રકારે સત્કારણી ન કરવાનું વગેરે જણાવ્યું છે. એક ફરમાનમાં શ્રીવિક્રમનાથએ “મારું-અજા” એટલે ધરૂરી જ્ઞાનના કાલા બુલાવેલા છે. એક ફરમાન તો અકબરની આતા હમીદા બેગમના નામનું છે, જે મુગલ ઇતિહાસમાં વિરલ છે એમ દિ. બ. કૃષ્ણલાલનાઈને ધાર્યું છે. મધુસૂદનમહાદેવ વૈશ્યાલિખાં લખ્યું છે કે સં. ૧૬૨૮ માં શ્રીવિક્રમનાથ અને અકબરનો મેળાપ થયો હતો અને તેણે હાલનું ગોળ જે જગ્યાએ છે એ જમીન આપી હતી. ત્યાં કને ગામ વસાવી, શ્રીવિક્રમનાથ મધુસૂદની આવી રહ્યા હતા. હાલ પણ એ નવા ગોળજના નામે જ પ્રસિદ્ધ છે કવિશ્રી નાનાલાલે અકબરસાહેબનાટકમાં “ગોળ ખુસઈએ આવ્યું” એમ લખ્યું છે, પણ પાછળથી “જાન મધુસૂદને આવ્યું” એમ દુષ્ટિપ્રત્યક્ષમાં સુધાર્યું છે. તેમને એ આ હકીકતની ખબર હોત તો એમ સુધારો કરવાની આવશ્યકતા ન રહેત.

આ ફરમાનોમાં જહાંગીરનું અદ્ધરપ્રસંગ સંબંધીનું ફરમાન નથી, પણ તે હોવાનો સંભવ નથી, કેમકે જહાંગીરે મોહાના હુકમો ક્યાંદતા, હોખી ફરમાન એ સંબંધી કાઢ્યું નહોતું. એમ કાળ નાંચતાં જણાય છે.

પ્રતિભાગેનાં દર્શિત્વસ

ચાલી કરમાનો

અમલ વિશે



કરે છે છતાં પણ મથુરામાં તેને મળવા કેમ નથી જતો? આ થું તેનું મન-ચિદ્રૂપ ઉપરથી ઉતરી ગયું હતું એમ નથી જણાવવું? ખીલું, ઇકલ્લાખનામાં લખ્યું છે કે ચિદ્રૂપને જહાંગીરના સાદુ હાકિમભેગે નિર્દય માર માર્યો હતો:—

“He was Cruelly beaten by Hakim Beg”.

(Tuz II, 1004-foot-note).

જે ચિદ્રૂપ ઉપર જહાંગીરનો આભાવ થયો ન હોત તો હાકિમભેગ આટલી ગંધી હિમ્મત કરે ખરા કે? કલ્લોલમાં લખ્યું છે કે જહાંગીરે કાંરમીર જતાં મથુરામાં મુકામ કર્યો હતો; ત્યાંથી તેણે મુકામ ઉપાડ્યા પછી, એક દિવસ હાકિમભેગે ચિદ્રૂપની શુંકામાં જોડા પહેરીને જવાનો પ્રયત્ન કર્યો હતો. એટલા નજવા કારણથી જહાંગીરે તેને મારી નાંખવાનો હુકમ કર્યો હતો, પણ પાછળથી ખુશરના કહેવાથી તેને સજા કરવા ચિદ્રૂપ પાસે મોકલ્યો હતો. અરવે તેને એનાજ જોડા માથામાં મારીને કાઢી મૂક્યો હતો. એ વાતનું વેર લેવાને જ કદાચ હાકિમભેગે જહાંગીરનો ચિદ્રૂપ પ્રત્યે આભાવ સવાધી તેને માર્યો હતો, જે આ પ્રમાણે અર્થાત્ થયો હોય તો જહાંગીરને ચિદ્રૂપની વાત ખોટી જણાતાં માહાનિર્વેધનો હુકમ તેણે રદ કર્યો હોય એમાં કંઈ આશ્ચર્ય નથી. પ્રત્યક્ષ પ્રમાણો.

હવે આપણે માળાપ્રસંગસંબંધી પ્રત્યક્ષ પ્રમાણો જોઈએ: ‘માલોદાર’ કાવ્ય સંબંધી એ આપણે ઉપર વિસ્તારથી વિચાર કર્યો છે. તે સિવાયનાં પ્રમાણો અવલોકીયું.

૧. કલ્યાણભટ્ટ નામના શ્રીગોકુળનાયકના સેવક શ્રીગોકુલેશ્વરનારાયણ નામનું બૃહદ્ વિરત્ત કાવ્ય રચેલું છે. એમાં શ્રીગોકુળનાયકનું ચરિત્ર વધુવિદ્યું છે. એના વક્તોલ નામના પંદર ખંડ છે, અને પ્રત્યેક વક્તોલમાં ત્રણ નામના અખ્યાય છે. તેમાં વક્તોલ ૭, ૮, ૯, માં માલાપ્રસંગનું વર્ણન છે. આમાંથી પ્રો. ગોવિંદલાલ બટ્ટની કૃપાથી ક. ૭, ૮ મેં વાંચ્યા છે. જહાંગીર સાથેના શ્રીગોકુળનાયકનો કાંરમીરની અંદર યજ્ઞેયો સંવાદ ત્રણ તરંગોમાં વર્ણવેલો છે. આ કાવ્યમાં શાહજહાન ગાદીએ આવ્યાને નિર્દેશ છે અને દાગોદરના “પાખંડપ્રકાશ” માં કલ્યાણભટ્ટ ઉપર કટાક્ષ છે, તેથી તેની રચના સં. ૧૬૮૫ થી સં. ૧૬૯૩ સુધીમાં યજ્ઞેયી એમ હું માનું છું.

૨. શિક્ષાપત્ર ગ્રંથથી જેઓ સંગ્રહમાં પ્રસિદ્ધ છે અને જેઓ શ્રીગોકુળનાયકના ભગીન હતા, તે આચાર્ય શ્રીહરિરાયજીએ શ્રીગોકુળનાયકની સ્તુતિનું એક અષ્ટક રચેલું છે. તેના ૮ માં શ્લોકમાં માળાપ્રસંગનો ઉલ્લેખ છે:—

તાતૈશ્વકપર: પરાશયવિદાં વર્ય: પરાનન્દદો માલ યેન સુરક્ષિતા નિર્જમહાયકેન કંઠે સતાં ।

ધર્મો યેન વિવર્ધિત: પિતૃપદાચારપ્રચારૈ: સદા સ શ્રીગોકુલનાયક: કરુણયા મૃયાદરો સેવિનામ્ ॥

શ્રીહરિરાયજીના જન્મ સં. ૧૬૪૭ માં થયો હતો, એટલે માળાપ્રસંગના સમયે તેમનું વય ત્રીસ વર્ષનું હતું. આથી એ પ્રસંગની તેમને જાતભાસીતી હતી.

૩. દયારામ કવિએ ગુજરાતીમાં ‘વક્ત્રભનો પરિવાર’ એ નામનું કાવ્ય લખ્યું છે, તેની એક પંક્તિમાં પણ આ પ્રસંગનો નિર્દેશ છે:—

“શ્રીગોકુલેશ સુખધામ જેની માળા રાખો દામ રે.” (દ. કૃત કા. સં. ૫. ૧૨૯)

૪. હિંદી ભાષાનાં ફેટલાક કવિઓએ આ પ્રસંગ સંબંધી રચેલાં કવિત મંજી આવ્યાં છે. તે શ્રીગોકુળનાયકના ચરિત્રકારે સંગ્રહ કર્યો છે. એ આ પ્રમાણે છે:—

૧. માલોદારકાવ્યમાં આ પ્રાણવર્ત્ત એમ લખ્યું છે કે હાકિમભેગે કાંર પાને દાઢમાં કાંરનો પાત્રો માર્યો એમના પચાત્ન કર્યો કર્યો હતો. આ જાત અતિગંભીરની જાણ છે; વક્તોલની

क. विहारी पक्षः—देक की, देक की, देक की दे, गिरे टेकें टरे तो टरे घुब तारो,
धींगोकुलनाथजी माला तेजे वो शेष न शीदा धरे भूमारो,
बोल सके तो सके तो सके, मंत्रकी पन कोन करे महीमे रतनारो !
श्रीवल्लभवंश विहारी कहे, कवि गणत है जगमें जरा पारो.

ख. पृथ्वीपति—अथम उद्धारन तुम नाम, बल्लभ मणि पेज प्रतिपारन,
तपसीवापनिवारन, दुष्टसंचारन, तिलकमाल-उधारन;
मानी मान निवारन, रसिक धिरोमनी, रससंचारन,
हृन्दावन, गोकुलपति, नागर प्रकटे निजजनकारन.

ग. प्राशुनाथ — मत जानो ह्याल, धींगोकुलनाथजुही माला है,
बसानीहु वेदमरजादहु बखानी है.
दारे गुंजा थीव माला अमृत रसादा है,
घुलाये जहांगीरने जाय के जुयाय दियो,
हिन्दुकी हद राखी, धींगोकुलनाथ प्रतिपाला है.
प्रातनाथ कहे, बात सुनो सचे जान दे,
मत जानो ह्याल धींगोकुलनाथजुही माला है.

घ. श्रीपति—शाह फकी सो तैं न फकी, करी सो वेदपुरातन भारी,
मालतिलक जनेउके फारन अटैन पंडन गारो,
धीपत कहे, जहांगीर के खान, जे उमराव से सब सारी.
धीनिकुलनाथजुके धींगोकुलनाथजु, सब हिंदनकी पन रागी !

પ્રકીર્ણ ઇતિહાસો.

ઇતિહાસનું અવલોકન.

[સં. ૧૯૮૨ ની સાલમાં અમદાવાદમાં બહેર સભામાં વર્સિતરામ રાસ્ત્રીએ આપેલું ભાષણ.]

આજનો આપણા સંપ્રદાયનો મહાન મંગલમય સુદિન ઇતિહાસમાં કોઈ અનૈરી રીતે પ્રદાદી રહ્યો છે. આજના સુમંગલ દિનનો પરિચય તારા મહેતાના વક્તાએ આપને આપ્યો છે જ, તેથી આપે બળ્યું હશે કે, આજે આપણા શ્રીગોકુલેશ્વરપ્રભુ પ્રકટ થયા છે. જ્યાં સુધી ભારત વર્ષમાં એક પણ તિલકમાળા ધારણ કરનાર પુષ્ટિમાર્ગીય વૈષ્ણવ હશે ત્યાં સુધી શ્રીગોકુલેશ્વરપ્રભુ પ્રકટ દર્શન આપતા રહેશે. તિલકમાળામાં શ્રીગોકુલનાયથના જ દર્શન પ્રભાતમાં દેક વૈષ્ણવે કરવા હશે, શ્રીગોકુલનાયથ સં. ૧૬૦૮ ની સાલમાં માર્ગશીર્ષ સુદ ૭ ના રોજ પ્રકટ થયા હતાં, આપ પ્રકટ થયા ત્યારથી જ્યાં સુધી ભૂતકાળ દર્શન આવ્યા ત્યાં સુધીનો બધો ઇતિહાસ લખાવેલો છે. એએશ્રીના સેવકોએ એમનેજ પોતાનાં સર્વસ્વ માન્યા હતા અને એએશ્રીની જીવનશૈલીના દસનો અનુલભ કરવામાં પોતાની કૃતાર્થતા માની હતી. તેથીજ શ્રીગોકુલેશ્વરપ્રભુનો દિવસે દિવસનો ઇતિહાસ ધારી મેળનીશીના રૂપમાં આપણને મળી શકશે. આ ઇતિહાસ રા. લક્ષ્મીભાઈ જનનલાલ દેરાધરજી ઘણે ખર્ચે છપાવી પ્રકટ કર્યો છે. તે વાંચતાં આપણે તકીન ખતી બંધીએ છીએ, એએશ્રીના સેવકો અથવા આપણા પૂર્વજોએ આપણને વારસામાં એ દિવ્ય સાહિત્ય આપ્યું છે. આપણા એ પુનિત પૂર્વજોએ શ્રીગોકુલેશ્વરપ્રભુનાં વરોગાનનું મહાસાહિત્ય, કે જે સાહિત્ય ગુજરાતી સાહિત્યની દૃષ્ટિએ ઉત્તમોત્તમ છે, તેનો દિવ્ય વારસો આપણને કૃપા કરીને આપ્યો છે. શ્રીગોકુલેશ્વરપ્રભુના હૃદયમેદક વચનામૃતો લગભગ એક લાખ છે. એ બધાં આપણાજ પૂર્વજોએ યત્ન કરીને લખ્યાં છે. આનો વિવાસ આપણા જીવનને દિવ્ય બનાવવામાં કારણરૂપ છે એમ હું માનું છું.

હિંદના ઇતિહાસમાં જેમ અંસીની રાણીએ પોતાનું સૌંદર્ય ગુવર્ણીકરે અંકિત કરાવ્યું છે, તેમ ગદાની મહારાણી શ્રીદુર્ગાવતીએ પણ પોતાનું યશ જળદળનું રાખ્યું છે. આ મહારાણી વૈષ્ણવ હતી અને તેને માટે આપણે મગર યર્ષ શકીએ. એણે વૈષ્ણવ છતાં વિદ્યાર્થીઓ સામે તલવારથી લડીને એક શરવીર કાચાણીની જેમ પોતાના દેહનો ત્યાગ કર્યો છે, એ ઇતિહાસ આપણા સંપ્રદાયને શોભાસ્પદ બનાવે છે. શ્રીગુરુસંપ્રદાય પોતે અંબેલમાં બિરાજતા હતા, તે એ મહારાણીનાજ અત્યાગ્રહથી ગદામાં પધાર્યા. શ્રીગોકુલનાયથ તે વખત બાળક હતા. આ અવસરમાં પણ તેમનો પ્રભાવ અદ્ભુત હતો. શ્રીવલ્લભાધીશ્વરે રથપેઠે ચરણ ધર્મ શ્રીગોકુલેશ્વરમાં બાલક-અવરયાથીજ ગળાવી રહેલો હતો. શ્રીગોકુલનાયથનું મૂળ નામ તો શ્રીવલ્લભ હતું, પણ સેવકોએ એએશ્રીને શ્રીગોકુલનાયથ તરીકે પ્રસિદ્ધ કર્યો, જે પ્રસિદ્ધિ અત્યારે પણ તેવીજ છે, આપની યોગ્ય ઉમર યતાં યજોપવીત સંસ્કાર લણાજ હાથી ચલેો હતો. ગદાની મહારાણીનો વૈભવ અવલુનીય હતો. આર હમર તો હાથી અને ૪૦ હમર ઘોડાઓ હતા. તેજ પ્રમાણમાં બીજા પણ સંપત્તિ અનુકૂળ હતી. શ્રીગોકુલનાયથ મોટા થયા, વિદ્યાભ્યાસ કર્યો, અનેક સંસ્કૃત પ્રાકૃત ગ્રંથો રચ્યા, મોટા મોટા મહારાજાઓ અને સરદારો તથા ધનાઢ્યો આપના ગ્રંથોવધી મુગ્ધ બન્યા. આપશ્રીનું જીવન સેવામય હતું. હાલ તો આપણી નજરજ્ઞ જોઈ જતી છે. એક ગામથી બીજા ગામ લટકે, પુજા મુખપટારો કરે, તેજ જાણે દેરાનું કે ધર્મનું કંઈએલું કરે છે અને બીજા નમ્ર એવું આપણે

ચિદરૂપે મયુરામાં મુકામ કર્યો. હવે લગતું - સ્વરૂપ જીવમોહસરતું - થયું હતું. અનેક વૈષ્ણવોની માળાઓ અને તિલક ઉતારવા માંડ્યા. ઘંટાવનમાં ચિદરૂપની ફેરો ભાવાઈ, પણ શ્રીમદ્ભગવદ્ ગ્રંથે નજીવી રહ્યું હતું, સાક્ષાત્ શ્રીગોકુલનો નામ ન્યાં બીરાને ત્યાં ટેક ન હોય તો ક્યાં હોય ? વાસ્તવિક જોતાં માહાતિથક જાદારના ચિન્હ છે. પોતાનો ધર્મ બચાવવા ખાતર લોહી રેપતું અટકાવવા ખાતર, પ્રભુસેવા કરવા માટે માહાતિથક છુપાવાય, જગતમાં દેખાડાય નહિ તો કશો વાધો નથી. પણ આ તો સંપ્રદાયની લાગત હતી. જો તેવી નળગાંધી જતાવવામાં આવે તો આખો સંપ્રદાય જમીનફોડાઈ જશે. તેથી લગતની આગેવાની શ્રીગોકુલનાયકએ લીધી. શ્રીગિરિધરજી પોતે મોટાભાઈ હતા, ધર્મી સ્વરૂપ હતા તેથી શ્રીજીની સેવા સંભાળી. શ્રીગોકુલનાયક પોતે ઘણીવાર ચિદરૂપ પાસે જતા, પણ એ સંન્યાસી રૂપમાં તો કંઈ કહેતો નહિ પણ પાછળથી એ પોતાની સેવાનયત દાખવતો. જહાંગીરને આ કલેશ વધવાની ખબર પડી, પોતે મદાન સરદારો સાથે આવ્યો. શ્રીગોકુલનાયક અને ચિદરૂપનો મુકાબલો કરવાની જહાંગીર ઈચ્છા કરી, શ્રીગોકુલનાયક તો માહાતિથકને વૈદિક દરજ્જા તૈયારજ હતા. પણ એ સંન્યાસીએ તો ઈન્કારજ કર્યો. મને આશ્રમ થયા કરે છે કે, વૈષ્ણવો પોતાના સંપ્રદાયને વૈદિક માને તેમાં બીજાને શું ? ગમે તે જાહને હરી લેવાની યત્તિવાળો ભિક્ષુકો કહે છે કે, તમે અલસખંધને વૈદિક કેમ કરાવો છો ? આ બોલનારાઓના હૃદયમાં ફેટલો દ્રેષ છે તે સાબિત થાય છે. અમારું મતેન્ધ્ર વેદસિદ્ધ છે એમ સિદ્ધ કરીએ તેમાં બીજાને શું ? અલખત, અમે બીજાના મતને અર્થદિક કહેતા હોઈએ તો એક જુદી વાત છે. અમે આખા જનસમૂહને માથે પરજીવે અમારા વિચારો ઠોકતા હોઈએ તો અમારી કદાચ કમ્પુર ગણાય. જેમ અમે અમારા સિદ્ધાંતને વૈદિક કહીએ છીએ તેમ તમે પણ તમારા સિદ્ધાંતોની વૈદિકતા જાહેરમાં કહો. પ્રભુને જે ગ્રંથજી કરવું હશે તે કરશે, તેમાં હારજીતના ભુગાના દંભથી ખરડાવાતું પણ નહિ રહે. વાસ્તવિક રીતે વેદની મારામારી નકામીજ છે. વેદથીજ ફકાર થાય તેવો સિદ્ધાંત હીંદુધર્મમાં છેજ નહિ. વેદપર ખોટો મત્તર જાંધી હીંદુધર્મને સંકુચિત મતાવવાનો સમય હવે પડી ગયો છે. અરે ખુદ વેદ પણ પ્રભુના લજ્જનથી આખા જગતનો કેદાર થાય તેમ કહે છે, શ્રીમદ્ભગવદ્ગીતામાં તો પ્રભુ કહે છે કે કેવળ મારા આશ્રયથી મધા તરી જાય છે. આવા વેદવાક્યો તથા પ્રબુવાક્યોથી મજબુત અનેકા શ્રદ્ધા અને - ભાવનાથી પોપાયલા ભક્તિમાર્ગથીજ હવે તો જગતનો ઉદ્ધાર છે. શ્રીગોકુલનાયકનાયકજી કહે છે કે સ્ત્રીશર જે વેદ સાંભળે તો તેમના કાનમાં સીસુ રેડવું હવે જો વેદ લણવાથીજ ઉદ્ધાર થતો હોય તો સ્ત્રીશરોના જન્મ એજજ ગયા એમ સમજવું. અરે રાવજી તો મોટો વેદ જાણનાર હતા પણ તેના હૃદયમાં ફેટલી રાવતાન્યત ભરેલી હતી ? માટે હાલ તો શ્રીરામ અથવા શ્રીકૃષ્ણ નામના જાણથી પણ ઉદ્ધાર થાય છે. એજ મદાન પવિત્ર સિદ્ધાંતોજ દિગ્વિજય થયો છે. પછી ભલે તેને અર્થદિક કહીને લોકો કાબજીઓ ફેટે તેની કોઈને પરવા નથી. અમે વૈષ્ણવો અમારા મતને વૈદિક કહીએ, અમારા પ્રાણિક સર્વસ્વ આચાર્યશ્રીને અખંડભૂમંડાલ્યાચાર્ય માનીએ તેમાં બીજાને શું ? અનંતાચાર્યજી શ્રીરામાનંદ સંપ્રદાયના છે, છતાં પોતાને “જગદ્ગુરુ” કહે છે. નૃસિંહ પરમાત્મા અને ઉપેન્દ્રભગવાન કહેવાય છે, તેની સામે કેમ ચુપ છો ? માટે આવા શ્રદ્ધાઓ અર્થ વગરના છે.

કટોકટીનો મામલો—જહાંગીરની કોશેશ પડી ભાંગી, શાસ્ત્રાર્થ થયો નહિ. પણ પોતે સમ્રાટ હોવાથી હુકમની અમલ ન થાય તે ઠીક નહિ એ વાતપર તે ચક્રમ રહ્યો. પોતે સરદારોને હુકમ કરીને કાશ્મીર તરફ સીધાઓ પંજી ચિદરૂપ તો રાક્ષસ બન્યો. વૈષ્ણવો પર કાળો કહેર વરસાવવા માંડ્યો. અનેક અત્યાચારો કર્યા પણ તેથી વૈષ્ણવો વધુ મજબુત પાયા. આખરે એણે

સરદારને ઉરકેરીને શ્રીગોકુલમાંથી શ્રીગોકુલનાયજીને ગિરજાતાર કરવાની પેઠવી કરી પણ શ્રીગોકુલમાં જે સરદાર જતા તે શ્રીગોકુલેશપ્રભુની પ્રેમમય ભૂતિમાં ઢોટપોટ થઈ જતા. આખરે મદાન મુગ્ધ અવસ્થા સાથે છેવટનો નિકાલ કરવાનો દસવ ક્યો. આગાના સરદારે મધુરામાં આવ્યા હતા. તેમના કહેણને માન આપીને ભોજન ક્યાં વિનાજ શ્રીગોકુલેશપ્રભુ મધુરામાં પધાર્યા. એઓશ્રી સાથે ૩૦૦ રજપુતો હથીયારબંધ હતા કે એઓએ પોતાના પ્રાણ એ પ્રભુ પર નોંઝાવર કીધા હતા. ૨૪ કલાક અન્ન જળ વિના રહીને આણુ મામણ માટે જાડાયાટ ચગાવી. તેની વચ્ચે એવો પ્રસંગ આવ્યો કે જેથી શ્રીગોકુલેશપ્રભુ સાથેના ૩૦૦ રજપુતોએ સમશેર ખેંચી, પણ અહિંસાપર, પ્રેમદયા અને મૈત્રી સ્વપાલના વૈષ્ણવધર્મના નાદકનું લોહી વહેવડાવવાનું નજ દોષ. પ્રભુએ તુરંતજ બધાની સમશેર આનમાં નખાવી. આખરે શ્રીગોકુલનાયજીએ આ મામણનો છેલ્લો નિકાલ કરવાનું નક્કી કર્યું અને ૭૦ વર્ષની પ્રાંત ઉંમરે કાશ્મીરની બર્ષકર સુસાધરી રાઝ કરી. ૫૦૦ માધવ લાંગો પંથે હતો. ૭૮ દિવસે ત્યાં પધાર્યા. આ બધા દિવસોની મીનીટે મિનીટની નોંધ છે. જહાંગીરને પોતે મળ્યા..

મદાન વિજય—જહાંગીર પહેલાં તો એકોત્રા જે થયો નહિ. એક સખાટ પોતાના વચનો કેમ પાછાં ખેંચી લે? પોતાની દાર કેમ કમ્પ્રે? આખરે શ્રીગોકુલેશપ્રભુ પણ પોતાના નિશ્ચયમાં મુકમ રહ્યા. જહાંગીરે કહ્યું કે, તમારી સત્તા સામે અમારે કંઈ કહેવું નથી, પણ આપના હુકમથી હમણે નિર્હીન ધર્મનિકે વૈષ્ણવો પ્રાણધ્યાન કરવા તૈયાર થશે અને તે તેમને ગોલનું નથી. જહાંગીર ચોંકી ઉઠ્યો; એના છગરમાં ઉપરનાં વાક્યોએ અપૂર્વ અસર કરી. શ્રીગોકુલનાયજીની ધર્મનિષા માટે માન ઉત્પન્ન થયું. ચિદરૂપ માટે તિરકાર થયો. આખરે પોતાની પાત રાખવા માટે કહ્યું કે, તમે માણસતિલક રાખો, પણ તમારે મારી આગા માનીને શ્રીગોકુલને ત્યાગ કરવો પડશે. જહાંગીરના આ હુકમમાં પણ કસોટી હતી. ગોકુલના વરચાર અને મદાન કંટોટોને રાજવૈભવ સંપત્તિ છોડાવે કે કેમ? પણ બાદશાહના હુકમનો હર્ષપૂર્વક રસીકાર ત્યારે શ્રીગોકુલેશો ક્યાં ત્યારે બાદશાહી તાજ એઓશ્રીને નમ્યું. પોતે સાદી શામ્યાનામાંથી બદાર પધાર્યા. સાથેના વૈષ્ણવોએ વિજયમાળા આરોપી. તે વખતનું મિત્ર એક રાહી મીતારાએ લીધેયું છે, અને હજી એ વિજયનો પ્રત્યક્ષ પુરાવો છે. પ્રભુએ ગોકુલ છોડ્યું, જેમને તિત્રાંગની આપી, ધર્મનો રક્ષા કરી પોતે સોરમજમાં ખીરાવ્યા. આ તરફ ચિદરૂપના પાપકર્મો બદાર પડ્યાં, શાહી શુરનાની આગમાં તે દુષ્ટ ખાખ થઈને નરકમાં ગયો.

દંડાકર તિલક—શાસપુરાણોમાં જે પ્રકારના તિલકો અચલથી ચાલ્યાં આવે છે. એક તો ચરણાકાર જોટલે અપહો પ્રભુનાં ચરણકમલના આકારનું કરીએ હીએ તે; અને બીજું દંડાકાર; જે તિલક શ્રીગોકુલનાયજીના વરમાં ચાલુ છે તે. શ્રીમદા-પ્રભુજી અને શ્રીશુચાંધજી ચરણાકાર તિલક કરતા. હજી પણ બધી બેઠકોમાં એવુંજ તિલક ચાય છે. શ્રીગોકુલનાયજી જન્મે પ્રકારનાં તિલક કરતા હતા. શ્રીશુચાંધજી પછી શ્રીગોકુલનાયજીપર બધો વરનો બોલે હતો. તેથી પોતે ઘર ચલાવતા અને શ્રીગોવર્ધનનાયજીની સેવામાં પણ પધારતા. એવી રીતે એઓશ્રીને બીલકુલ સમય મળતો નહિ. સેવામાં પધારતાં વિવંજ થઈ જાય માટે પોતે એકદમ તિલક કરી લેતા હતા. એવી રીતે આપશ્રી ત્યારે જલદીથી સેવામાં પધારતા ત્યારે દંડાકાર લેતા હતા. એવી રીતે આપશ્રી જોયા વિના બે દંડના આકારમાં તિલક ખેંચી તિલક કરતા હતા. પોતે આરસી જોયા વિના બે દંડના આકારમાં તિલક ખેંચી

ગાહુ જ દેખ કરતા હતા. અરુપરુપ આદીઓ કરીને લકાઈ કરાવતા હતા. અરે, એટલુંજ નહિ, પણ તેવા ખોટા ગથો પણ લખી ગયા છે કે જેમાં શ્રીગિરિધરજી આદિ સાત-બાલકોની કેટલીએ ખોટલી કરી છે. તેથીજ શ્રીગોકુલનાથજીએ આજ્ઞા કરી છે કે, 'મારા સેવકોના આવા ગથો જે વાંચશે તે બહિર્મુખ થશે મતલબ કે એવાં ગથો લખનારાઓથી પોતે વણાજ નારાજ હતા. આવા અદેખા સેવકોને શ્રીઆચારજીનાં વચનો તો બાણુ જેવાં લાગ્યાં. તેઓ તો બહુજ, દુઃખીદુઃખી થઈ ગયા, ને ત્યાંથી એકદમ દોડ્યા. શ્રીગોકુલનાથજી પાસે જઈ પ્રહોંચ્યા. ત્યાં જઈને એઓશ્રી પાસે ફરીઆદ કરી. શ્રીઆચારજી આપછીની નિંદા કરે છે એમ મીઠું મરચું સભરાવીને કહ્યું. આપછી આ સેવકોની દશા જાણુતા હતા તેથી તેમના પર કચો વિદ્યાંસ મેલતા નહિ. પોતે આજ્ઞા કરી કે, "અદ્યત્તો, શ્રીઆચારજીએ અમારી શું કહીને નિંદા કરી ?" તેઓ તુરત જ પોકારી ઉઠ્યા અને શ્રીઆચારજીના મુખમાંથી નીકળેલું ઉપરનું વાક્ય કહી દીધું. શ્રીગોકુલનાથજી તો એ વચનને અમૃતની વૃદ્ધિરૂપ ગણીને મહાન્ આનંદને અનુભવ કરવા લાગ્યા. પોતે દીનતાના સ્વરૂપ એટલે પોતાની પ્રભુસેવાને આટલી ઉચ્ચ માર્ગમાં ગણાતી સાંભળીને તેઓશ્રી ખૂબ ખુશી થયા. તેમાંએ વળી પિતૃચરણ શ્રીશુઆંઈજીના કૃપાપાત્ર અંતરંગ સેવક શ્રીઆચારજીના શ્રીમુખનાં વાક્યો સાંભળીને તો નેત્રમાંથી અશ્રુનો પ્રવાહ વહેવા લાગ્યો. તુરતજ અધિકારીજીને બોલાવીને વધાઈ બેસાડી. ભોળતાજાનું બેસાડીને તે દિવસેજ વધાઈનો મહોત્સવ માન્યો અને ઘણી ધામધૂમ કરી. ગરીબ બીચારા પેલા પામર સેવકો તો બાંળીને ખાખ થઈ ગયા. આ ઉત્સવ હજી સુધી મનાય છે.

આ ઇતિહાસથી આપણા મનમાં લેહલાવ નજ થયો જોઈએ. આપણે તો બધાને અકલ સ્વરૂપ-માનનારાં રહ્યાં. ઉપરની તુલના કરવાનો અધિકાર શ્રીઆચારજીનોજ હોય. તે પરથી આપણે એ અલ્પ કક સ્વરૂપમાં અનુપધિક ભાવ નજ આણીએ. આપણે શ્રીદારિકાનાથજીનાં નીચેનાં વચનોજ કોતરી રાખીએ.

"સર્લૈકિક સવ અપ્રિકુલ."

દંડાદાર તિલક—દંડાદાર તિલક વિષે એક વાત હું આપી ગયો છું. એવીજ બીજી વાતો ભગવદીય મનોહરદાસજી પાસેથી નીચે મુજબ સાંભળી:—

એક દિવસ સેવામાં વિલગ થવાથી શ્રીગોકુલેશ્વરપ્રભુ તંપરાથી તિલક કરીને સેવામાં પધાયો. આ તિલક નીચેથી ગાંધિલું ન હતું. જ્યારે આપછી શૃંગાર ધરવા ગિરાજયા ત્યારે શ્રીનાથજી ખૂબ હસી પડ્યા. શ્રીગોકુલનાથજીને પ્રભુતા બડખડાટ હસવાથી એકદમ આશ્ચર્ય થયું. આપછી આસપાસ નજર ફેરવીને પ્રભુનાં હાસ્યલું કારણ જોળવા લાગ્યા, પણ કાંઈક માલમ પડ્યું નહિ. એટલે પ્રભુને "આટલું કારણ જોળવા લાગ્યા, પણ કાંઈક માલમ પડ્યું નહિ. એટલે પ્રભુને "આટલું બંધું હસવું આવવાતું કારણ શું ?" એવી વિનંતિ કરી. પ્રભુએ આપછીનાં આજ્ઞાનાં તિલક તરફ આંગળી કરી. શ્રીગોકુલનાથજી તુરત સમજી ગયા અને એ તિલક સુધારવાની આજ્ઞા માગી. ત્યારે શ્રીનાથજીએ આજ્ઞા કરી કે "ના; આ તિલક

મને ઘણું જ પ્રિય છે.” શ્રીનાથજીની આ આજ્ઞા થયા પછી આ બાંધ્યા વિનાનું તિલકતું માહાત્મ્ય શ્રીગોકુલનાથજીના ઘરમાં વધ્યું છે.

શ્રીમોહનભાઈજી—શ્રીગોકુલેશપ્રભુના અનન્ય સેવક શ્રીમોહનભાઈજીને પરિચય આપવા માટેની આપણામાં શ્રી ચોગ્યતા હોય? તો, પણ ભગવદીયોની વાણીમાંથી-કાંઈક એમના ગુણગાન કરીશું. શ્રીમોહનભાઈજી ભરૂચના વતની હતા. મહાજીવિદ્યાળી અને મુસદ્દી હતા. તેથી જ મોગલોના અમલમાં પણ તેઓ એક નોખમદાર હોદ્દો મેળવી શક્યા હતા. એમને આગ્રાના દિવાનની પદવી મળી હતી. એમને માસિક ૪૦૦ રૂપીઆ પગાર મળતો હતો. તે વખતના ચારસો રૂપીઆની ગરોળરી અત્યારના ચાર હજાર રૂપીઆ પણ કરી શકે નહિ, તે વખતે એક માણસ અત્યાર કરતાં ચાર ગણો આહાર કરતો અને તે પણ માત્ર આઠ આનાના માસિક ખર્ચે. આ ઉપરથી આપણે તે સમયના ચારસો રૂપીઆની કિંમત આંકી શકીએ. શ્રીમોહનભાઈજી શ્રીગોકુલનાથજીના અનન્ય સેવક હતા. શ્રીગોકુલેશપ્રભુમાં એમની અદ્ભુત આસક્તિ હતી. એમને લીલાનો સાક્ષાત્ અનુભવ હતો. શ્રીગોકુલેશપ્રભુનાં નિત્યલીલાસ્થ સ્વરૂપનાં દર્શન તેમને ભૂતલપર ગિરાજતાં શ્રીગોકુલેશમાં થતાં, તેથી તેઓ શ્રીગોકુલનાથજીપર તન મન ધન નોછવર કરતા. એમને એક પત્ર ‘પતાકા’ ના ૮ વર્ષના ૧ લા અંકમાં પ્રકટ થઈ ગયો છે. ‘એમાં દીનતાનું’ સ્વરૂપ એથી સ્પષ્ટ દેખાય છે. શ્રીમોહનભાઈજી એટલે દીનતાનું ભૂતિમંત સ્વરૂપ.

એક વખત એક ફકીર રસ્તામાં ભીળ માગતો હતો. એક વેણુવને તેના પર હથા આવી ને કહ્યું કે, “અહ્યા, તારે માગ્યું હોય, તો શ્રીમોહનભાઈજી દિવાન પાસે માગ કે જેઓ તારે દાદિદ્રવ્ય ચૂર કરી નાખશે. બા, તેમની પાસે જઈને શ્રીગોકુલનાથના નામથી માગજે.” પેલો ફકીર રસ્તામાં ઉભો રહ્યો. મોહનભાઈ એક પાલખીમાં-મીયાનામાં ગિરાજેલો હતા. મિયાનો પાસે આવતાંજ પેલા ફકીરે પોકાર કર્યો કે ‘મોહનભાઈ, શ્રીગોકુલનાથકે નામપે’ કયા દેતા હે?’ મોહનભાઈજી પોતાના પ્રાણાધારતું નામ ચાંભળતાંજ નિર્વૃજ થઈ ગયા. “શ્રીકૃષ્ણનામ જળતે-શ્રવણ સુન્યોરી આલીરી” કીર્તન જેવી દ્રશ્ય થઈ ગઈ. એકદમ પોતાના હાથમાંના હીરાજીત કડાં હજારો રૂપીયાની કિંમતના પેલા ફકીરની ઝાળમાં શ્રીમોહનભાઈએ પ્રાણપતિના નામ પર નોછવર કરી દીધાં. ફકીર-આલ્યો ગયો. આતુ નામ આસક્તિ.

સાત બાળકોનાં સાત નામો—શ્રીમત્પ્રભુચરણ શ્રીગુસાંઈજીના-સાત બાળકોનાં નામો તો પ્રસિદ્ધ છે. પણ શ્રીગુસાંઈજી પોતે એ સાતે સ્વરૂપોને શું કહીને બોલાવતા એ વાત જાણવા જેવી છે. આ પ્રસંગ પરમદૃષ્ટાણુ ગોસ્વામીશ્રી૬ શ્રીમધુ-સૂદનલાલજી મહારાજે કહ્યો છે. ન્યેષ્ટ યુત્ર શ્રીગિરિધરજીને આપ શ્રી “ગોવર્ધન” કહેતા. શ્રીગોવિંદરાયજીને “રામજી” કહેતા. શ્રીજાલકૃષ્ણજીને “રાજલલોચન” કહી સંબોધતા. શ્રીગોકુલનાથજીનું “શ્રીવલ્લભ” કહેતા. શ્રીરઘુનાથજીને “રામચંદ્ર” નામ આપે. ધર્મ્ય હતું. શ્રીયજ્ઞનાથજીનું નામ “મહારાજજી” રાખ્યું હતું. શ્રીમન-

સ્વામીજીનું નામ “પ્રાણવહન” સ્થાપ્યું હતું. આ સાતે બાલકો આપશ્રીને કાકાજી કહીને સંબોધતા હતા.

સાત સ્વરૂપ અથવા સાત બાલકો—શ્રીગુણવેદ વાંચના લાયક છે. સાત બાલકોમાંથી કયા કયા બાલક કયા કયા રાત્રીમાં પ્રવીણ છે એ પર એક ઐતિહાસિક પ્રકાર પાઠવામાં આવ્યો છે. શ્રીગિરિધરજી સર્વ રાત્રીમાં પ્રવીણ હતા. શ્રીગોવિંદરાવજી વ્યાકરણ રાત્રીમાં, શ્રીબાદશ્યજી વેદમાં, શ્રીમોકુલનાથજી માર્ગના સિદ્ધાંતોમાં, શ્રીચુનાથજી ૧૮ પુરાણો અને ૧૮ ઉપપુરાણો મળીને ૩૬ પુરાણોમાં, શ્રીચંદુનાથજી વેદક રાત્રીમાં, તેમજ શ્રીચંદ્રશ્યામજી પણ વિદ્વાન જ હતા. શ્રીવજ્રસ-વેદના લેખક કહે છે કે, “અમારા શ્રીગોકુલેશ્વરપ્રભુએ કહ્યું છે કે, અમારા બધા બાલકોમાં કોઈ મૂર્ખ તે રહેજ નથી; બધામાં અલૌકિક સત્ત છે.” આવા કપલ ઉદ્દેશ્ય માટે માન ઉપજે છે.

બ્રહ્મસંબંધદીક્ષા કોણ આપી શકે?—શ્રીહરિરાયમહાપ્રભુના શ્રીહસ્તાક્ષરના લેખ પરથી વાંચકોને નિશ્ચય થશે કે, વૈષ્ણવો કદી ગાદી પાસે બ્રહ્મસંબંધદીક્ષા બીજા કોઈ વૈષ્ણવને આપી શકે નહિ. મંત્રદીક્ષા માત્ર શ્રીવજ્રસકેવલ આપી શકે છે. પહેલાં શ્રીગોકુલેશ્વરપ્રભુનાં વચનાનુસારી પણ પગ્ગુ એ વાત સાબીત કરી ગયો છું કે, માત્ર શ્રીમદાચાર્યવંશજ એ દીક્ષા આપી શકે. બે કોઈ વૈષ્ણવ આપે તો તે અંકુશ છે એમ શ્રીમુખનાં વચન છે. ખેર, ત્યારે એ સવાલ ઉભો થયો છે ત્યારે તો તે વિગેની સંપ્રદાયની ઐતિહાસિક પરંપરા પ્રકટ કરવી જોઈએ. શ્રાવણ દુહ ૧૧ ની મધ્ય શત્રિએ સાક્ષાત્ પ્રભુએ શ્રીગદાપ્રભુને બ્રહ્મવિદ્ય મંત્રની આજ્ઞા આપી. દામોદરદાસજીએ એ શીલાનાં દર્શન કર્યાં, પણ તેઓ કાંઈ સમજ્યા નહિ. તે પછી શ્રીમદાપ્રભુજીએ અનુભવ વર્ણવીને પદેપદેકેકું બ્રહ્મસંબંધ મંત્રનું દાન દામોદરદાસજીને કર્યું. આટલો સમર્પણદીક્ષાનો મુળ ઇતિહાસ છે.

સમર્પણમંત્ર પહેલાં શ્રીમદાપ્રભુજીએ અણકાર અને પછી ગઘમંત્રનું પણ આપશ્રીએ દાન કર્યું, ને અદેવદાનદશ તરીકે આપશ્રી પ્રવશ થયા. વળી સંપ્રદાય વધે અને ફેલી થયેને અત્રીકિક આનંદ મળે તેટલામાટે પેલે ગુરુરાત્રમાં નરોગનિવાસી શ્રીમોખાંદદાસજીને આજ્ઞા કરાવી કે, તમે વૈષ્ણવોને અણકારમંત્રનું દાન કરજો, (ગઘમંત્રનું નહિ, કારણ કે તે તો પોતાનો વંશ જ આપી શકે એવો આપશ્રીને ભગવદ્વાણુસાર નિશ્ચય હતા. બે શિષ્યોદ્વારા—સેવકોદ્વારાજ સંપ્રદાય ચલાવેલા હોત તો મોટે ગૃહસ્થાશ્રમનો અંગીકાર જ ન કરત, ને તેમ કરવાની હાંવદારી પણ નજ યાત. આ વાત ખાસ ધ્યાનમાં રાખવાની છે.) એમ ગુરુરાત્રમાં શ્રીમોખાંદદાસજીને આજ્ઞા આપ્યા પછી કાશીમાં શેઠ પુરુષોત્તમદાસને પણ અણકારનું દાન કરવાની આજ્ઞા કરી પણ કોઈને સમર્પણમંત્રનું દાન કરવાની આજ્ઞા કરી નહિ. આ ઇતિહાસ શું સૂચવે છે? એજ કે, ગઘમંત્ર કોઈ પણ વૈષ્ણવ વૈષ્ણવને આપી શકે જ નહિ.

ત્યાર બાદ આચાર્યશ્રીના દ્વિતીય કુમાર શ્રીચિત્રકેશ્વર પ્રભુએ પણ પોતાના બે સેવકોને મોત્ર અણકાર આપવાની આજ્ઞા આપી છે. એક તો શ્રીચાચા હરિવંશજી અને બીજા આઠમા લાલજીવાળા, કે જેના વંશજો અત્યારે પણ દેરાછપમાઈવિખ્યાનમાં અણકાર આપે છે. એમ બે સેવકોને અણકાર મંત્રનું દાન છતર વૈષ્ણવોને કરવાની આજ્ઞા આપે આપી.

એક વખતે શ્રીગુરુસાંધજી નરોગ પધાર્યા. નરીગમાં તે સમયે શ્રીમદાપ્રભુજીના સેવક શ્રીમોખાંદ-દાસજી બિરાજતા હતા. આપશ્રીએ પોતાનો મુક્તમ તેમને ઘેર જ રાખ્યો. શ્રીગુરુસાંધજીની પપરામણીની વધાઈ સાંભળીને અનેક વૈષ્ણવો દર્શનાર્થે તેમજ અણકાર લેવા માટે આવી પહોંચ્યા. શ્રીગુરુસાંધજી પોતે બીતર સેવામાં બિરાજતા હતા. બહાર વૈષ્ણવો કોણાહલ કરતા હતા, તેથી શ્રીમોખાંદદાસજીએ

બહાર આવીને વૈષ્ણવોને પુછ્યું કે, તમે શા માટે કોલાહલ કરો છો ? એના જવાબમાં વૈષ્ણવોએ શ્રીગુરુસંપ્રદાય પાસે અષ્ટાક્ષર લેવાની વિનંતિ કરી. ત્યારે શ્રીગુરુપાલદાસજીએ કહ્યું કે, હમણું જાઓ, અષ્ટાક્ષર અમે પણ આપી દઈશું. આ શબ્દો શ્રીગુરુસંપ્રદાયના દાન પર પડ્યા. શ્રીગુરુપાલદાસજીને બોલાવીને શ્રીગુરુસંપ્રદાયે આજ્ઞા કરી કે, અમે ત્યારે અહીંથી વિદાય થઈએ ત્યારે જ તમે અષ્ટાક્ષરનું દાન કરી શકો છો; અમે અહીં હોઈએ ત્યાં સુધીમાં તમે જેને અષ્ટાક્ષરનું દાન કર્યું છે, કરો છો, ને કરશો તે બધા ગંગોજ કહેવાશે; મતભેદ કે ગંગાના પ્રવાહમાંનું જલ નહિ, પણ ખાડા ખેંચામાંના જલ જેવા કહેવાશે, માટે તેના વૈષ્ણવોએ ફરીને અમારી પાસે અષ્ટાક્ષર મંત્ર લઈ જવો. વૈષ્ણવમાં દારૂપ્રભાવ જોઈએ, ને મંત્રદોષા આપવાથી દારૂપ્રભાવ નષ્ટ થઈ એક પ્રકારનો ગર્વ આવી જાય છે, ને આખરે વૈષ્ણવપણું દૂર ચાલ્યું જાય છે. શ્રીમદ્દામ્બુજીના સેવક શ્રીગુરુપાલદાસજીને પણ ત્યારે ગર્વ થયો ત્યારે તે ગર્વ શ્રીગુરુસંપ્રદાયે દૂર કંપ્યો; ને દયા કરીને તેમની વૈષ્ણવતા જાળવી રાખી. તે પછી શ્રીગુરુસંપ્રદાયે અષ્ટાક્ષરમંત્રનું દાન કરવાની આજ્ઞા પણ વૈષ્ણવોને આપવાનું બંધ કરી દીધું, ને તે પછી કોઈપણ વંશ્યે-શ્રીગુરુવાગ્મિબાલકે-તેમ ક્યાંનું ઇતિહાસને પાને ચડ્યું નથી.

છઠ્ઠી ગાદી અધવા છઠ્ઠું વંશ.

શ્રીમદ્દવસલાચાર્યજીના દ્વિતીય કુમાર શ્રીવિક્રમનાથજી શ્રીગુરુસંપ્રદાયના વંશ અત્યારે આપણને દર્શન આપે છે. શ્રીગુરુસંપ્રદાય સાત બાળકો પ્રકટ બિરાજ્યા. સાત બાળકોને લીધે સાત ગાદી, સાત ધર, સાત પીઠ; જે કહો તે થયાં. સાત શ્રીહાકુરજીથી કંઈ સ્વાત ધર થઈ નથી. આ સાતે ધરામાં અત્યારે લિન્ન લિન્ન સ્વરૂપો બિરાજે છે. સાત ધરમાં હજી ધર વિશે જે મતભેદ ચાલે છે તેનું સમાધાન હજી થયું થયું નથી. તેનું કારણ આ છે. શ્રીગુરુસંપ્રદાય સાતે લાલજીઓએ શ્રીગુરુસંપ્રદાયની આજ્ઞા અનુસાર એક એક દક્ષિણમાં સ્વરૂપો પોતાને માથે પધરાવી લીધાં. પણ હજી લાલજી શ્રીચક્રનાથજીએ પોતાના પાટામાં આવેલું શ્રીનામકૃષ્ણજીનું સ્વરૂપ (હાલ સુરતમાં બિરાજતું) છોડું હોવાના કારણે પધરાવ્યું નહિ. આમાં ખાસ લાવના તો એ છે કે, શ્રીચક્રનાથજી પોતે શ્રીમદ્દાશાસ્ત્રીજીનું સ્વરૂપ એટલે સ્નેહરસાત્મક-રહ્યા, સ્નેહની ક્યા ધરમાં જરૂર નહોતી ? તેથી પોતે બધા લાલજીને ઘેર સેવા કરવા પધારતા. તેમાં શ્રીમંત્રની ત્રિપ્રાણની ધરમાં વધારે વાર પધારતા. આવી રીતે ચવાથી એઓશ્રીના ધર વિશે મતભેદ થયો છે. આ સંબંધમાં કેટલીક સૂક્ષ્મ બાબત અરમહુરુચરજી કહી, તેઓશ્રીએ પણ તૃતીયપીઠાધીશ્વર-નિત્ય-લીલાસ્ય ગો. શ્રીનામકૃષ્ણજીનાથજી બહારાજની આજ્ઞા થયેલી તે પ્રમાણે અને કહી. એ ઇતિહાસ જાણવા જેવો હોવાથી અહીં ઉતારે છું:—

શ્રીચક્રનાથજીએ છોટા હોવાથી શ્રીનામકૃષ્ણજીને પોતાને ઘેર પધરાવ્યા નહિ, તેથી શ્રીનામકૃષ્ણજી હાલ શ્રીકાંકરાલીમાં બિરાજતા શ્રીદ્વારકાધીયની ગોદમાં બિરાજ્યા; અને તે ત્રીજી ધરના ગોદના હાકુરજી ગણાયા. હવે શ્રીકલ્યાણરાયજી (હાલ વડોદરામાં બિરાજતા) શ્રીમદ્દામ્બુજીના સ્તેવ્ય હોઈ શ્રીનામકૃષ્ણજીને માથે બિરાજતા હતા. શ્રીનામકૃષ્ણજીની જદ અવરયા ચવાથી રીત પ્રમાણે શ્રીકલ્યાણરાયજીને શ્રીનાથજીના ધરમાં પધરાવવાની ઇચ્છા થઈ. આ વાતની ખબર શ્રીચક્રનાથજી પડી એટલે એઓશ્રીએ મોટું સ્વરૂપ શ્રીમદ્દામ્બુજીનું સ્તેવ્ય હોવાથી પોતાને માથે પધરાવી લીધું; અને તેની સેવા થોડા સમય સુધી પોતે કરીને પછી લીધાંમાં પધાર્યા. આપના ન્યેજ લાલજી શ્રીમધુસૂદનજી હતા. તેઓશ્રીએ પણ કલ્યાણરાયજીની સેવા કરી. પણ પાછળથી કોઈની સમજાવટથી પોતાના પિતાશ્રીના પાંડાના હાકુરજી બાલકૃષ્ણજીને પોતાને ઘેર પધરાવી લાવ્યા. પણ કાંઈ શય્યું નહિ, એટલે ફરીને શ્રીદ્વારકાધીયની ગોદમાં પધરાવ્યા. આમ ને આમ પ્રચુરાર કર્યું એટલે

કાંકરોલીમાં ખિરાજતા ઓદારિકશરણએ, ઓળ લાલજી શ્રીગણધર્મજીના લાલજીએ ઓળાચંદન, રીક્ત તરીકે ખિરાજતા ચોથા લાલજી શ્રીગણધર્મજીને પ્રાર્થના કરી, તેથી એઓઓએ પોતાનાં બન્ને લગીમ ઉઠત બન્ને લાલજીને બોલાવીને તોડ કાઢી આપ્યો. શ્રીમધુસૂદનજીએ તેા શ્રીકલ્યાણરાયજીની જ સેવા પધરાવી, અને એ વિષે એક ફારગતી લખીને શ્રીગણધર્મજી ઉપરથી પોતાનો દક્ક ઉઠાવી લીધી અને ફરીને ફારકાપીયની એકમાં પધરાવ્યા. આ ફારગતી લખી કાંકરોલીમાં ખિરાજે છે.

આ ઉપરથી જણાશે કે, હજી લાલજી શ્રીધર્મજીનાં મોટું ધર ઓળલવાળું જ મળાય, અને તેમાં કલ્યાણરાયજી ખિરાજે છે તો કલ્યાણરાયજી જ હજી સ્વરૂપ તરીકે માની શકાય. આ વિષે કશો સંદેહ રહેતો નથી. જાલકના ધરના દિસાબધી કાકરજી છે, કાકરજીના દિસાબધી બાલકાનું ધર નથી.

શ્રીવિદ્યારાયજી—અરમહુરજીએ એક દિવસે નિત્ય નિયમમાં ચરણસ્પર્શ કરવાનાં ચિત્રોનાં દર્શન કૃપા કરીને કરાવ્યાં. તેમાં એક અદ્ભુત ચિત્ર પણ મેં નિરખ્યું. એ ચિત્રમાં એક શ્રીગણધર્મજીનાં શ્રીનાથજીના ચરણક્રમસ પર બન્ને શ્રીહસ્ત સ્થાપિને અધુપ્રવાહ વહેવરાવી રહ્યા છે અને તેથી શ્રીનાથજી પોતાની કટિ પર સ્થાપેલા દક્ષિણ-અમણે હસ્ત તેમના મસ્તક પર સ્થાપેલા છે. આ અદ્ભુત ચિત્રનો ભાર મને કાંઈ પણ સમજાયા નહિ; એટલે શુરહેવને વિનંતિ કરી. તેઓઓએ તે પાડી એક ઇતિહાસ કરાવ્યો; જે હું અહીં ઉઠાવી લઉં છું.

શ્રીગણધર્મજીના પીઠ લાલજી શ્રીગણધર્મજીના જ વંશમાં એક બાલક શ્રીવિદ્યારાયજી પ્રકટ થયા છે. આ વિદ્યારાયજી શ્રીનાથજીનાં ખિરાજતા અને શ્રીવિદ્યારાયજીની (શ્રીકાકરજીની) સેવા કરતાં શ્રીવિદ્યારાયજી મહારાજ સેવાના અનોસરમાં રાખ્યા, જ્યાં આદિ નિત્ય નિયમ કરતા. નિત્ય નિયમ વખતે લોકિક દષ્ટિએ એક તદ્દન વિપરીત અને આશ્ચર્યકારક ધરના ધર્મી હતી. એક ધર્મી મુસલમાન સ્ત્રી હતી. તે નિત્ય નિયમ સમયે શ્રીવિદ્યારાયજીની સામે બેસતી હતી. વળી મહારાજશ્રી પાનુ તેની આંખો સમયે જ્યાં કરતાં કરતાં એકીદરે જોયા કરતા હતા. બાળે બેઠે કોઈને પણ મળ્યો ન હતો. કેટલાક અંતરંગ કૃપાપાત્ર વૈષ્ણવોને તો આનું સ્વસ્થ મળી ગયું હતું, એટલે તેમને મહારાજશ્રીની આ અદ્ભુત લીલાથી મોહ થયો નહતો. આ લીલાનો બેઠે શુરકૃપાથી આપણે પણ જાણી લઈએ. વસ્તુતઃ પેલી સ્ત્રી કોઈ દેવી પિરવી પ્રભુલક્ષ્મી હતી. એના બન્ને આંખોમાં સ્વામીશ્વરજીની છાંયે સ્વષ્ટ દેખાતી હતી. એ બાળ્યમાં જાણે નરવર-વૃજ-વૃજ-વૃજ નયનોમાં રમવાના હતા. આ દર્શન શ્રીવિદ્યારાયજીને સ્વષ્ટ રીતે થતાં હતાં, તેથી તેઓ લોકજાજ કે કુસમ્પીદાની પરચ ક્યાં વિના એ બાળને માત્ર જ્યાંપણ વખતે સામે બેસવા હતા હતા. સ્વમાન્ય દુન્યવી ગાણસ આ મુંદર બેઠે ક્યાંથી ઉઠેલી શકે ! સામાન્ય લોકો તો આ વાતની ખૂબ ચર્ચા કરવા લાગ્યા. એ રીતે લોકચર્ચાએ અંબીર સ્વરૂપ પકડ્યું, અને પોતાની સત્તા શ્રીગણધર્મજી બાલકની માતિ ઉપર પણ સ્થાપી દીધી. બધા સમજતો-ખાસ ભટ્ટ સમજી-તો ખૂબ બળમળી ઉઠ્યા. શ્રીવિદ્યારાયજીને આ વ્યવહાર તાકીદે બંધ કરી દેવા ધણીવાર ચેતારી ગયા પણ તેઓ તો પોતાની ટેકમાં આગળ રવા. તેથી છેવટે તેઓથીને જાનિજ્વાર કરવાનો ઇરાદ કરવામાં આવ્યો. એક દિવસે શ્રીનાથજી ઉઠેલા શુંબાર તેમને આપણોમં આપ્યો. શ્રીવિદ્યારાયજીએ તે દિવસે શુંબાર માર્યાઓ શુંબાર. શ્રીમે મરાઓ. શુંબાર મરી રહ્યાં પાડી આમે કાશ્મીર સચોઈમાં વિરહરસ અનુભવવા માંગ્યા. આખને

સ્મરણ થયું કે આજે મારા છેલ્લા શૃંગાર છે અને હવેથી શ્રીનાથજી મારા હાથના શૃંગાર નહિ થશે. આ વાતની યાદ આવતાંની સાથેજ હૃદય રૂંધાઈ ગયું. સયોગરસની સત્તા વિરહરસે ખુંચી લીધી. એકદમ નેત્રમાંનો અશ્રુનો પ્રવાહ વહેવા લાગ્યો. આપે તુરંતજ શ્રીનાથજીનાં ચરણકમંધ પર બંને હસ્તે રથાપી દીધા. નેત્રમાંનો અશ્રુપ્રવાહ તો ચાલુજ હતો. એ અશ્રુપ્રવાહથી શ્રીના ચરણ કમંધ પાસેની ગાદી આખી તરબોળ થઈ ગઈ. શ્રીજી તો દયાના સાગર, તે આવેા ઉત્કટ વિપ્રલોભ સન્નિધાનનાં કેમ સહી શકે ? એકદમ પોતાનો જમણો હસ્ત ફેડ પરથી ઉઠાવીને શ્રીવિઠ્ઠલરાયજીના મસ્તકપર રથાપી દીધો ને આજ્ઞા કરી કે હલે આખી જાતિ તમારાથી વિરહ હોય, પણ હું તો તમારા પક્ષમાંજ છું. આ શીતલ વચનોથી શ્રીવિઠ્ઠલરાયજીનો ત્વરહાસિ શાંત થયો. હવે આ તરફ શું થયું કે શૃંગારમાં વિલંબ થવાથી શ્રીનાથજીના તિલકાપિત તથા અન્ય ગોરવાભિન્નાવકો પણ બીતર પદાર્થો હતા, અને આ લીલાને સારાકાર કર્યો હતો. તેથી શૃંગારભોગ ધરીને ન્યારે શ્રીવિઠ્ઠલરાયજી બહાર પદાર્થો ત્યારે બધા સ્વજાતીઓએ એઓના ચરણમાં સાષ્ટાંગ દંડવત્ પ્રણામ કર્યો અને જાતિનો પ્રતિજ્ઞા દૂર કર્યો.

મહાનુભાવીઓની લીલા અટકળવી મુરકેલ છે. મુરકૂપાંથીજ તેનો બેઠ ઉદ્ઘાટવાની ચાવી મળે. તેને માટે દૈવ વિકાસની જરૂર છે. પડિત જગન્નાથ કવિ મહાસમર્થ વિદ્વાન થઇ ગયા હતા. તેમણે એક મુસલમાની સ્ત્રી સાથે ગાઢ સંબંધ બાંધ્યો હતો. તેઓનો પણ આજ કારણે જાતિ-બદ્ધિષ્કાર થયો હતો. પછી પોતાની પવિત્રતાની ખાતરી કરી આપના માટે તેમણે ગંગાજીની સ્તુતિ કરવા માંડી ગંગાજીને પ્રસાદ ખાવન પગથીયાંની નીચે હતો. એક એક સ્તુતિના શ્લોકો એક એક પગથીયાં ગંગાજી ચઢતાં ગયાં. આલીંગન ખાવન શ્લોક પૂરા થયા અને ગંગાજી પણ ખાવન પગથીયાં ચડી ચૂક્યાં. ન્યારે સત્વશુભાભિમાની વિપ્લુનાં ચરણજલની આ શક્તિ તો નિર્ગુણ પૂર્ણ પુરુષોત્તમની કૃપાની તો વાતજ શી કરવી ? કવિ દયારામ ભાઈ ગાય છે:—

“યનની રાખી જગન્નાથ પડિત, તે તો સહજ બની આવેરે;

ખાવન સીદી ગંગા ચઢાવી, તે વેળા વેવધાં વીણાવે.”

x . x . x . x . x .

મોટાનું વચન મુખધામ, કૃતિ રીતે કરીએ;

તે કરે ચલાય સો કામ, આપણે તો :મરીએ.

મહાપુરુષોની કૃતિની નકલ કરતાં તો વાર ન લાગે, પણ ન્યારે સમય આવે તે પારે આપણી કૃતિ રેવડી થાય છે તે જોવાનું છે. મહાનુભવોના દાખલા દઇને સ્વચ્છંદ પર્તન કરવું: સગવડીયો પંથ પાળવો એ બધું સહેલામાં શહેલું છે. માત્ર એ મહાનુભાવીઓનાં વચનને અનુસરીને ધીરે ધીરે ઉત્તમ કોટિપર ચઢવું એ જ મુરકેલમાં મુરકેલ છે.

શ્રીયોગિગોપેશ્વરજી—આપથીએ શ્રીનાથદ્વારામાં ગિરાજતા શ્રીવિઠ્ઠલનાથજીના દ્વિતીય પીઠનાં તિલકાપિત તરીકે દર્શન આપ્યાં છે. શ્રીદરિરાવજી મહાપ્રભુએ પણ આજ પીઠને અર્ચકૃત કર્યું છે. આપનું નામ તો શ્રીગોપેશ્વરજી છે, પણ યોગિગોપેશ્વરજી તરીકે આપ ઘણા પ્રસિદ્ધિમાં આવ્યાં છે. અસ્થિત જ આપ એક મહાન યોગી હતા. યોગી એટલે સમાધિ ચલાવનાર કે સત્યામહી યોગી નહિ, પણ કોઈકે અલૌકિક રસમગ્ન અંદુલિત યોગી, આપણા પ્રભુ પણ યોગેશ્વર કહેવાય છે, યોગિપેશ્વરજીનું નામ “યોગી” તરીકે પ્રસિદ્ધ થવાનું કારણ આપની રસમસ્ત દયા જ છે. આપ કોઇની સાથે કેમ વાતચિત કરતા જ નહિ. આપની દિન-સર્વ વિલસણ જ હતી. આપ પ્રભુસેવા કરતા અને વૈદિક વિધિ-આનુસાર નિત્ય નિયમ પણ

તથા સ્વરૂપસેવા પધરાવી દેવા કમ્બ દર્શાવી અને ગ્રીવાયુજની ગોલાં મિરાજતા શ્રીમદનમોહન-
ચાચકને પધરાવી આવવાનું નહોતું. પરંતુ શ્રી પધરાવવાના મુદ્દતને દિવસે ગોદના ઠાંઠોર
પધરાવી દેવાની શ્રીદાસી મહારાજે ના કહી અને બીકું ઘોડે પણ સ્વરૂપ પધરાવી લેવા
જણાવ્યું. આપ બહુ સમય સેવામાં ઉપરિચિત હતા એટલે પેલા અનુભવ મુજબ આકર્ષણથી
શ્રીગુણોદ્દના સેવ્યનિધિ શ્રીમદનમોહનચાચકને ઝાંપીકામાં પધરાવી લીધા. ત્યાર બાદ પેણ
સમય ત્યાં રોમાંષ વદક મહારાજ મુઠાં વિશય યદ મગમાં પધાર્યા.

આપે તેક જોત હતાકિના પ્રજાંધ છોં નહોતો, પરંતુ વૈષ્ણવો દ્વારા જે દિવસે તેટલી
સામગ્રી આવતી તે તમામ શ્રી આરોમાવીને વૈષ્ણવેને પ્રસાદ લેવાની દેતા. અર્થાત આજે
પાંચેની સામગ્રી આવતી તો તેટલી આરોમાવતા અને બીજે દિવસે છઠ્ઠી ગેરની આવતી તો તે
તમામ આરોમાવી દેતા. ભંડારમાં ગ્રાહ્યોં રાખવાનો રિવાજ નહોતો. મીને માટે કાંઈ પણ અનુક
સ્થળ મુશ્કર થઈ નહોતું, પરંતુ હમેશાં ઝાંપીકામાં જ પધરાવી રાખતા. અને એક દાણ પણ
પોતાથી અલગ કરતા નહિ. આપને શ્રીમદ્લામજ સમય કંઠાએ હતું અને અહર્નિશ તેણે જ
સત્ત અધુ રહેતો હોવાથી મગમાં પધાર્યા. બાદ મજવાસીઓમાં ગયો ચાલી કે, આપ તે
દિવસ ને ગાંધ મુનગુનાટ કરે છે. ત્યારથી આવતું નામ મનુષ્ય પ્રસિદ્ધ થઈ ગયું. અને તે
નામથી જ લીલાપર્યંત પ્રસિદ્ધ રહ્યા.



चतुर्थपंचमपोठाधीश्वर गो. श्री. ६ श्री बलभाचार्यजी महाराजधीना
आत्मज चि. गो. श्रीगोविन्दरायजी.

(पंचमवर्षप्रवेश-सं. १९९० कार्तिक सुद १३)



वीकानेरनरेश श्रीडुंगरसिंहजी बहादुर.

शिलालेख.

श्रीगोकुलेन्दुर्विजयते।

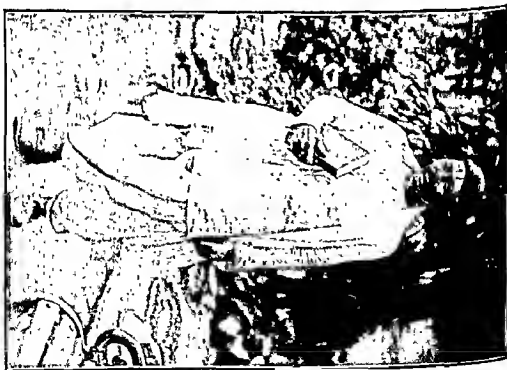
कृष्णं विष्णुं फणीशं शिवं शुक्लमुनीन् व्यासदेवं शुक्लं च श्रीविष्णु
स्वामिदेवं प्रभृति शुक्लभाचार्यमोडे ॥ श्रीमंतं विठ्ठलेशं रघुपतिकुलजं
देवकीनन्दनार्थं तेषामाचार्यसिंहासनमिह जयते पुण्यवंतो हि यावत्।

सं० १९४२ मि. आश्विन शुक्ल १० विजयादशमी पुण्यमूर्ति
राजराजेश्वर नरेन्द्र शिरोमणि श्री २ डुंगरसिंहजी बहादुर विजयराज्ये
शुभं भवतु।

वीकानेरस्थ ३ तीन कोस दूर श्रीदेवकीनन्दनप्रभुकी बैठकका शिलालेख.



विद्याविद्यामी गोस्वामीजी ६ धीपुस्तकालयमन्त्रालय मन्त्रालय
(इलाहाबाद मन्त्रालय दफ्तरी मन्त्रालय.)



કચ્છી, ગંધાસમયેજ શ્રીને અનુકૂળ અરોગ્યવશો એવી હતી. જેથી પ્રાસ આશુ રાખ્યો. એક વખત આશ્વિનકૃષ્ણ અષ્ટમીના સુમંગલ પ્રભાતે આપે આરા કરી કે, આપણે અમુક શહેરમાં જઈ ઉતરવ. કરવો છે. આ આગાધી સર્વે સેવકો વિચારવા લાગ્યા કે, આપણે વિમાનથી ઉડ્ય પ્રદેશમાં છીએ અને અને સમય તો નહકમાંજ છે. તો આવા સમયમાં આપનો મનોરમ સિદ્ધ થવો અશક્ય છે. પરંતુ હજી તો શ્રીને ધૂંધાર ધવળી રાજમેળ સમર્પવાની તૈયારી હતી, તેવામાં કમચારી મનુષ્યો ત્યાં આવ્યા અને વિનંતિ કરી કે, અમારા મહારાજ સાહેબ આપની રાદ છુટે છે, તેમજ આપને પધરાવવા અમને મોકલ્યા છે તો સત્વર પધારો. આ સાંભળી દરેક સેવકો આશ્ચર્ય પામ્યા. જેથી આપે રાજના સેવકની કુશળતા પૂછ્યા બાદ કહ્યું કે, “તમારા રાજને અમારા આગમનની કાંણે ખબર કરી ?” ત્યારે સેવકોએ કહ્યું કે “જય કૃપાનાથ, અમારા મહારાજને ગતરાત્રિએ એક સ્વપ્ન થયું, તેમાં શીનાથજીએ આરા કરી છે, કે માફ પીઠનું પ્રત્યક્ષ સ્પર્શ આચાર્યશ્રી આ નગરથી બાર કોસ ઉપર બિરાજે છે, અને તેઓને ધીને અનુકૂળ આરોગ્યવશો છે. જેથી સામગ્રીની તૈયારી કરો અને ઘૂર્ણ પધારી આવો. જેથી મહારાજ પોને સામગ્રી સિદ્ધ કરવામાં પ્રવૃત્ત થયા છે, અને આપને પધરાવવા અમને મોકલ્યા છે.

મહારાજશ્રી સેવાથી નિવૃત્ત થઈ શ્રીને આંખીછમાં પધરાવી તે રાજના નગરનાં પધાર્યાં, અને તમામ વાતી નિવેદન કરી. ત્યાર બાદ દીપમાલિકા સુધીનો ઉત્સવ મોટા આનંદપૂર્વક ઉજવવામાં આવ્યો, પરંતુ કાન જગાવવાનો સમય આવતાં ખબર મળી કે, આ પદારી પ્રદેશમાં ભય મળી રાકશે નહિ. જેથી આપે અમુક કિયાતો ત્યાગ કરી વેલોકા પરિવારીનો ભંજ ન થવા દેવો એવી ઇચ્છાથી અન્ન (બકરી)થી કાન જગાવવાની ક્રિયા કરી દીધી. આથી સાથે આવેલા પંડિતોએ વાંધા ઉઠાવ્યો કે, આપે આ શાસ્ત્રવિરદ્ધ અનુચિત કાર્ય કર્યું છે. પ્રત્યક્ષમાં તો વિદ્વાનો મૈત્રી ભાવ દર્શાવતા પરંતુ અંદરથી આપની ભુક્ષો શોધવા મત્સરતાપૂર્વક અણુભાખના અવ્યસન નિમિત્તે સાથે વિચરવા લાગ્યા હતા. આપ તો દરેક કાર્ય સનાતન વેદમાર્ગે અનુસરીનેજ શાસ્ત્રાકત રીતે સાથે વિચરવા લાગ્યા હતા. આપ તો દરેક કાર્ય સનાતન વેદમાર્ગે અનુસરીનેજ શાસ્ત્રાકત રીતે કરતા. પણ પંડિતો અણુઅણુ લાગ્યા કે આપણે ગાયનો દંડ બકરીને અર્પણ કરવો એ કોષખજ પ્રકારે હિંદુ નથી, અને ત્યારે આચાર્યો આવી વર્તણૂક ચલાવે ત્યારે અન્યની તો વાનજ ક્યો રહી ? આવી બાબતોને ચાલાવી સેવાથી સનાતન વેદધર્મની મહાદાનો લોપ થઈ જશે. આવા પ્રકારનો વિવાદ ઉપરિચ્છ થયો. જેથી ત્યાંજ શાસ્ત્રાર્થ મારે સત્તા નિર્માણ કરી. રાજને પોતાના પંડિતો ઉપરાંત આસપાસના પ્રદેશોમાંથી બીજા પણ કેટલાક પંડિતોને બોલાવ્યા, ત્રણ દિવસના શાસ્ત્રાર્થ બાદ આપનું કાર્ય શાસ્ત્રાર્થસમ્મત સિદ્ધ થયું અને તમામ પંડિતોએ પ્રમાણપત્ર લખી આપ્યું. આ શાસ્ત્રાર્થમાં કેટલાંક લૌકિક પ્રમાણો પણ આપ્યાં કે, મુખ્ય જમને અમારે ઉત્તરાધિકારી પ્રતિનિધિથી લઈ રાકાય છે, જેમ રાજને અમારે મંત્રીથી, કોને અમારે વાણીતરથી, પોતા ગાદીને અમારે બેલગાદીથી, દૂધને અમારે હાથથી ઈલાદિ પ્રકારે કાર્ય થઈ શકે છે, તેમજ વેશમાં બકરી પરિત્ર મનાયેલ છે. સ્મૃતિકારીનું વચન છે કે, ગાયના મુખથી અપવિત્ર થયેલાં પાત્ર અળમુખથી પરિત્ર થાય છે. અર્થાત્ ગાયનું કાર્ય બકરીકારા થઈ શકે છે.

ઉપરનો બતાવેલ જન્યા પદી પંડિતોએ નિશ્ચય કર્યો કે, જેની છન્દાએજ સરસ્વતીનો સ્પર્શાત નિવાસ હોય એવા વાગધોસ (વણી-સરસ્વતીના રવાળી) ની સાથે વિવાદ કરવો એ મિથ્યા મમત છે. આ પ્રકારે પરસ્પરમાં વિચાર કરી પોતપોતાને રચાનકે સ્વસ્થ ગયા. ત્યારથી મત્સરતા ત્યાગી પૂર્વે પુષ્ટિથી વર્તવા લાગ્યા.

આપ અતિશય ઉદાર તથા બોળા હલવાના હતા, કોઈનો પણ દોષ આપના લક્ષ્યમાં આવતો નહી. એક સમય એક માણસે આપની પાસે સમય જોઈ વિનંતિ કરી કે, “કૃપાનાથ, આપનો

કારભારી વ્યવસ્થા જાળવતો નથી અને આર્થિક નષ્ટ છે.” તે સાંભળી આપે આજ્ઞા કરી કે, “તું સારો કારભાર કરી શકીશ? તુરંત આજેતુકે” મનુષ્યે હાં કહી. એટલે તેને કારભારીનો ઉપરજો આદાઓ અને સેવકોમાં સામેલ કરી દીધો, પરંતુ અર્થમતો કારભારી તો કાયમજ રહ્યો. ફટલેક સમય આ પ્રકારે વીતતાં કારભારીઓની સંખ્યા પણ વધી ગઈ. કારણ જે કોઈ આવીને કારભારી થવાની માગણી કરે છે તેને નાં નહિ, એટલે મહોપદસાદના ભોગી ભોગી થાય. તેમાં શું આશ્ચર્ય? કહેવત ચાલી કે ‘શીકારકશજના સાગ્યાર કામદાર’!!

આપ ચાર બંધુઓ હતા. એક દિવસ આપ આંખની માતુશ્રીની ગાદમાંથી મસ્તકે રાખી પોદયા. અને માતુશ્રીના મુખારવિંદ સામે દિષ્ટ કરી કહ્યું કે, અંગે ચાર ભાઈઓ આપની દેયાતીમાંજ લીલા વિસ્તારીશું, જન્યું પણ એમજ.

અનુકરણીય—સુપ્રસિદ્ધ ‘શુદ્ધદેવ’ વિદ્યારંધ સાચીજ દરિદ્રજા વીરંભાઈને મુળદના શ્રીજીદંભ દિગ્દાશીધરે પોતાના મોટા મંદિરમાં પ્રવચનોય એક સાંપ્રદાયિક વિદ્વાન તરીકે કાયમના નીચ્યા છે. તેઓએ સાંપ્રદાયિક અભ્યાસીઓ માટે એક વર્ષ ચલાવે છે. આ એક અનુકરણીય કામ છે.

‘વૈદ્યપત્રિકા’ પર સુકદમો—‘દેવજા બોટા અને મણીય’ આશ્રેષ્ઠ કરવા માટે શ્રી મુળદના શ્રીવાલ્મીકીના મંદિરવાળા ગોરવાખી શ્રી શ્રીવલ્લભલાલ મહાસાગરીએ (નિઃસ્વધીવારજ ગા. શ્રી રણછોલાલાલ મહાસાગરના આત્મજ) ‘વૈદ્યપત્રિકા’ પર જાનવરીની ફરીયાદ ફાંદારી કોર્ટમાં ફાંદાર મળેને મળી છે. ‘વૈદ્ય’ વાળા પર નારંદ નીચલી સુચું છે.

શુદ્ધ કીર્તન સંગીતનો મહાન ગ્રંથ

ધોડાજ સમયમાં] સંપ્રદાયમાં અંપૂર્વ ગ્રંથ [પ્રગટ થશે,

સંગીત એટલે શું?—તે સમજવવા માટેની સવિસ્તર સમજ આપી છે. ૧ સંગીત વેદા અને કળા, ૨ રાગ એટલે શું? ૩ રાગોની સંખ્યા કટલી અને તે વિશે જુદા-જુદા મત, ૪ રાગોનું કુદંબ (રાગિણી, રાગપુત્ર, રાગપુત્ર, રાગપુત્રવધુ વગેરે) ૫ યાદ, ૬ નાદ અને શ્રુતિ, ૭ સ્વર અને તેના પ્રકારો, ૮ આરોહ-અવરોહ, ૯ સ્વર સમક, ૧૦ વાદી, સંવાદી, અંતુવાદી, પિવાદી સ્વરોનું બંધારણ, ૧૧ અંશ, મહા-પાત્ર તથા નવતિ સ્વરોનું બંધારણ, ૧૨ કીર્તનોમાં વપરાયલા સંગીત શબ્દોના અર્થ, ૧૩ ગ્યાયી, અંતરા, સંચારી અને આભોગ, ૧૪ જનાનાં તથા મર્દાના સ્વરોનું બંધારણ, ૧૫ કાળ અને માત્રા, ૧૬ તાલ, અંગે પ્રત્યંગ-નવતિ, ૧૭ કીર્તનોપયોગી તાલ, તેની માત્રા કોટલીના ભોધ સાથે, ૧૮ દુપર-ધમાર, ૧૯ કીર્તનોપયોગી મુખ્ય વાદી ત્રિધે માહીતી. ૨૦ કીર્તન સંગીત ગાયક, ૨૧ કીર્તન સંગીતનો વિચાર્યો પ્રભે, ૨૨ ગ્રંથોમાં વાપરેલી નીચાનીઓનું સ્પષ્ટીકરણ.

મુખ્ય રાગો—ભૈરવ, વીંધાવસ, (અદિથો તથા નટ) અસાવરી, પૂર્વી, જમાજ, કાશી, માલકોષ, સારંગ, હમન, બીકાળ, વગેરે રાગોની સમજ તથા કીર્તનો નોટશન સાથે છે, કીર્તન હવે પછી.

આવો ગ્રંથ સંપ્રદાયમાં તેમજ ગુજરાતી સાહિત્યમાં પહેલોજ છે. આ પુસ્તક પરથી કીર્તન સંગીત શીખવાનો માર્ગ સરલમાં સરલ જની જશે. વધારે શું કહીએ. જલદી નામ નોંધાવે. લેખક તથા પ્રકાશક—કીર્તનીયા ચંપકલાલ છમીવદાસ, ડૉ. શ્રી દારકાનાયજનું મંદિર, રામપુર, અમદાવાદ. તથા શુદ્ધદેવ કાર્યોદય અને મુખ્યાલ લાલાજી ડૉ. શ્રી ગોકુલનાયજનું મંદિર, પડી પોળ, ધનાસુધારની પોળ, અમદાવાદ અને કીર્તનીયા છમીવદાસજી ડૉ. શ્રી દારકાનાયજનું મંદિર, પાટણ ઉત્તર ગુજરાત; એ સ્થળે નામો નોંધાવી શકશો.

॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥

श्रीमद्भक्तमाचार्यात्मजश्रीगोविन्दलालमहोदयपञ्चमपरमेश्वर-

महोत्सवाशीर्वादसूक्तिः ।

शार्दूलविक्रीरितवृत्तम् ।

श्रीगोविर्धनधारणोद्यतकृत्श्रीगोकुलापीभ्यः-

श्रीमद्गोकुलचन्द्रमथरणयोरासक्तचित्ताश्रयः ॥

श्रीमदेवकनन्दनात्मनमुतश्रीवल्लभायात्मज-

श्रीगोविन्दहरेण विनयतां वर्योत्सवः पञ्चमः ॥१॥

श्रीकृष्णो गिरिसान्मपूजनविधौ नन्दाङ्गमभ्यस्थितः ।

श्रीमद्भक्तमवर्षसन्निधिगतः श्रीविठ्ठलेनो यथा ॥

मार्कण्डेयसामर्थ्येन प्रथमतः सक्तः समस्तं पितु-

मार्कण्डेयसमापुरस्तु भगवान् गोविन्दलालः प्रभुः ॥२॥

एकां भाव्यनुनाय दास्यवि निजां छष्टिं तथा प्रापयन् ।

कृत्वातिक्रमणं चतुर्थशरदः प्राप्तः स्वयं पञ्चमम् ॥

धन्यं वत्सरमित्यहो स्वचरितैर्विदार्थदः सेवकान् ।

श्रीगोविन्दहरिः सपितृवरणो जीव्याविरं सानुजः ॥३॥

विमाशामुतरामपातिवहरीत्यौपाधिक्रिया ददु-

देवा इन्द्रपूरोगमाथ सुमनोभिर्वर्षयन्तो भुवम् ॥

सद्भाग्याः स्वमनोभिरर्चयन्त आशीर्गणं वैष्णवा

जीव्याद्रेष्णयनेत्रवारकमणिगोविन्दलालधिरम् ॥४॥

पूर्णा वेदसमा इति स्वचक्रुः वेदानिगतं तथा ।

भक्तेः पञ्चमतां मदन्तीषानि यद् वर्षं शुभं पञ्चमम् ॥

मार्कण्डेयसमानमुदिरिति तं संपूज्य भूषादपं ।

श्रीमद्भक्तमवर्षमौक्तिकमणिगोविन्दलालः प्रभुः ॥५॥

उपजातिवृत्तम् ।

नरोत्तमेन स्वगुणवपुषैः प्रपन्नं फले प्रथितारिपम् ।

गोविन्दलालस्य हरेः गुणैः भूषात् शुभाशीर्चनाञ्जनाया ॥६॥

शास्त्रिमोर्तासमतनुजगन्तो नरोत्तमस्य पादार्धं प्रकृतम्

ચર્ચાપત્ર.

ફાતડાશાહી કેની ?

‘શુદ્ધાદેવ’ ના ત’ત્રીજી, ‘શુભરાતી’ પત્રના તા. ૫-૧૧-૩૩ ના અંકમાં ‘વાણવતી વૈષ્ણવ’ ના પુરખા નીચે મારા જેવાજ કોઈ હડહડતા માયાવાદી શંકરે જે નીચ હુમલો કર્યો છે, તેનો જવાબ આપવાની જરૂર છે. એ કહેવાતા ‘વાણવતી વૈષ્ણવ’ શંકરે પોતે કાચના બગડામાં ઘેરોને બીજાના મહાન પર પત્થરા ફેંકવા માંડયા છે, એજ તેની પોતાની ‘વાયડાઈ ફાતડાઈ’ કે હીડગાઈ બંદેશી વર્તણૂંક નહિ તો બીજું શું છે ?

હું પોતે શંકર છું. પણ શ્રીશંકરાચાર્યજીને ‘જગદ્ગુરુ’ માનવા કે મનાવવા તેવાર નથી. શ્રીશંકરાચાર્ય તરફ મને થોડો પૂજ્યભાવ નથી; પણ જ્યારે કોઈ શંકર શ્રીવહ્નિ સંપ્રદાય ઉપર થોડો હુમલો કરે અને પોતાના પગ નીચેના રેલાને જુએ નહિ તે હું સહી નહીં શકું. જગદ્ગુરુ તો માન એક શ્રીકૃષ્ણ છે કે, જેમની ચીતાનો તરજીમાં દુનીયાબરની બાખમાં થયો છે, અને જગતના વિદ્વાનો અને તત્ત્વજ્ઞાનીઓ તે જ્ઞાનામૃત પીએ છે. શ્રીશંકરાચાર્ય જેનો જગદ્ગુરુ ગણાય ? અત્યારે દુનિયાની યોદી વરેલી બીજી ધર્મને મારે છે, શું તેઓ શંકરાચાર્યને ગુરુ માનશે ? શ્રી અને જગદગુરુની જેલો અજાનની વરેલી બીજી છે. વળી શ્રીશંકરાચાર્ય પોતે ગુરુત શ્રીકૃષ્ણમુખ હતા, પણ તેમણે જે માયાવાદ નીપળવી કાઢ્યો છે તે તો બીજી ધર્મની પોલીસ કહેલી નવી આજ્ઞાન છે. ડા. થોમ્સ જેવા ખાસાલ વિદ્વાનો અને ડા. સર લાંડારકર, ડા. જિન્નલકર અને શીશુલ નર્મદાસકર મહેતા જેવા વિદ્વાનો પણ તે વાત સ્વીકારે છે. ‘શુભરાતી’ના ત’ત્રી મી. નટરસાહ, કે જેમનું સંસ્કૃતજ્ઞાન સાળકાથી આગળનું લાગેલ છે, તેમના અભિપ્રાયો કરાચ કામના નથી. બીજી ધર્મ દિનંદમાંથી ગયે, તે કુમારિલ લક્ષ્મીના પ્રતાપ, આવળત, શ્રીશંકરાચાર્ય તેમો કાંઈક સકાયબૂત બન્યા હશે, તેઓ પણ આફ્રિકા, ઇંગ્લેન્ડ કે અમેરિકા કે મકાગદીના ગયા નથી, તેમ તેમના કોઈ અત્યાર છુટીના પીકામિપતિઓ પણ ત્યાં ગયા નથી, તો તેમને જગદ્ગુરુ મનાવવા એ હું ખુલ્લો ઉત્તરપોંડી નથી ? અવળત, શં, માધવલીયં સ્વામી ઇચ્છંડ જાતા હતા, કેમકે તેઓએ પરદેશગમનની ફરે આપી હતી તેથી અનુમાન વાચ કે બીજા દેશોમાં પણ જઈને દિગ્વિજય કરી લાવે ? પણ તેમના શિષ્ય તો. પરદેશગમનથી વંચન વિરુદ્ધ છે. જો આવા એકદેશી શંકરાચાર્ય જગદ્ગુરુ કહેવાય તો તેમના પછીના શ્રીશામાનુભાચાર્ય આદિ જગદ્ગુરુ કેમ ન કહેવાય ? શ્રીશામાનુભાચાર્ય આદિના સંપ્રદાયમાં પોતાના સ્થાપક આચાર્યશ્રીઓને જગદ્ગુરુ અસહયીજી કહે છે, અને તે પણ સા. નટરસાહ દેસાઈ કરતાં સોગણી વિદ્વાતા ધરાવનારા મહાન પંડિતો કહે છે. સા. નટરસાહ દેસાઈ એમની વર્તણૂંકને ‘વાયડાઈ કે ફાતડાઈ’ બંદેશી ગણ્યા તેવાર છે ? અત્યારે પ્રતિવાદિલય કરપીકતા શ્રીશામાનુભાચાર્ય પોતાને જગદ્ગુરુ કહે છે અને કાશીના મહાન પંડિતો પણ એ વાત સ્વીકારે છે તો શું તે ગપા વાચક કે ફાતડા કે ?

શ્રીવહ્નિસંપ્રદાયના સ્થાપક શ્રીમદ્ભક્ત્યાચાર્યજી આજે ચારસો વર્ષથી જગદ્ગુરુ તરીકે સંબોધાય છે, નાં વાયડાઈ કે ફાતડાઈની ગંધ વાયડા કે ફાતડા વિના બીજા કોઈને આવી લાગી નથી, કાશીના પંડિતો અને સદ્ગત મહામહોપાધ્યાય લક્ષ્મણાચારી અને સર્વ આચાર્યો અને વિદ્વાનોની બ્રાહ્મણ મહાસભાએ પણ એ વાત સ્વીકારી હતી, તો હવે સા. નટરસાહની નજરે એકલા વૈષ્ણવોજી નહિ, પણ દિનંદના બધા આચાર્યો અને વિદ્વાનો વાયડા અને ફાતડા મેણુંવા જેવે.

૧. વળી સાસવિકેજ વિભાવતમનની તરફેણ કરનારા અને કાશીના મહાન વિદ્વાનોએ જેમને સખ્ત વિરોધ કર્યો તે શં. માધવલીયં ‘જગદ્ગુરુ’ કહેવાય તોતે ફાતડાઈ કે વાયડાઈ નહિ.

૨. એક અમેરીકન મદમને દિન્ડુ બનાવીને, તેનું ચર્મિંકા નામ રાખીને, ઈન્દોરનરેશની કામવાસનાની વૃત્તિના સદાચક બનેલા કરવીરપીકાધીશ્વરને શંકર સુધરેલાઓ જગદ્ગુરુ કહે તો કાંઈ હમત નહિ.

૩. એક સાધારણ ગૃહસ્થ બ્રાહ્મણને (નરસિંહનાથ), ‘આચાર્ય’ ‘બ્રહ્મનિષ’ ‘પરમાત્મા’ વગેરેથી સંબોધી શકાય. તેમના પુત્ર ‘ભગવાન’ એ નામથી ઓળખાય. તેમના શિષ્ય એક હુંદીયા જેનું ‘વિશ્વવંશ’ નામથી ઓળખાય તો એ બધું શંકર આગવાદી સા. નટરસાહ દેસાઈને રૂઝે. એ બધાને તો તેઓ સરળતા અને પુરુષાતત્વ સમજતા હતા.

૪. શ્રીનાથવાચાળના અનેક સંસ્કૃત ગ્રંથોમાંના એક પણ ગ્રંથની એક સંસ્કૃત લીટીને પણ અર્થ ન સમજી શકનારને સોંઠેલા વાર 'ભગદુરુક' 'સંક્યાચાર્ય' તરીકે પોષાનાર રા. નટવરલાલ દેસાઈ પોતે વાચકોઈ કે શ્રીકૃષ્ણ બહેરી અધ્યક્ષશ્રીથી દુર રહ્યા છે એ કોઈ સાબીત કરવા તૈયાર છે ? હવે આટલું બસ છે. ફરી કોઈવાર બહુચરામાવાચાં વક્ષા રાખનારા રા. નટવરલાલ દેસાઈની તમને શ્રીકૃષ્ણ કે વાચકશ્રીનાં પડખે ચડશે તો એાપરેચન કરવા તૈયાર છું એક શાંકર.

શ્રીનાથદ્વારાપ્રકરણ.

વદતે વદતે વદ ગયે સ્વમંડા ઓર સીર; ધટતે ધટતે ધટ ગયે કરવા બર કૌપીન.

ઉપરના દુહો અતિપ્રચલિત છે તેનો સંબંધ શ્રીનાથજી વિશે છે. શ્રીગિરિરાજની શુભામાં બિરાજના શ્રીનાથજીના માત્ર આશુરું દુધ આરોગવા હતા, તે શ્રીવૃક્ષમાધીશ્વરના વાસ્તવ્યમાવણી વધતાં વધતાં ખરમંડા (એક સામગ્રી છે) અને ખીર, મતનજી કે અનેક સામગ્રી આરોગતા થઈ ગયા થંજુ પાછા એવો સમય આવશે કે, એ બધા ભોજો "લૌકિક બટ ભયગી" વાળા વાર્તા મુજબ સમેટાઈને કરવો (એક વાક્યપત્ર) અને કેપીનન રહેશે. દુહાના અર્થાં બાવનો અનુસર લીધો અને અર્થાં બાવનો અનુસર ના બહુધારા વાળી રહ્યા છે. એક શ્રદ્ધામંડલ દેહ શ્રીવૃક્ષભીષ વૈષ્ણવને ઉપરની મહાલોકાવિચિત્રતા કંઈ રંગુમજુ કરી શકવાની નથી. પણ અનાજ સચે ખેડારમાં વાવેલા કાંઈકાં તેા માટીમાં મગી જશે અને અનાજ તેા પાછું ફીલીફીલી લયો રહેશે !

શ્રીનાથદ્વારાની કમીટીની બહારની ધમાક પાછળના શુર ભેલે પર થોડાક પ્રકાશ માર્ગમાં ફેંક્યો હતો અને આ અંકમાં થોડો વધુ ભલસ નાખવો આવશ્યક છે. વાલો એટલે એક ધ્યાનથી નિહાળો.

વિદ્યમાન મહારાણા—ધર્મધુરધર મહારાણાથી ફોલોસિંહજીના પરશ્વકાવાસ પછી વિદ્યમાન મહારાણા સર ભૂપાલસિંહજી સત્તા પર આવ્યા. મરુમ મહારાણાએ 'જગમહેરજી' એ નામથી મરાઠા થયલા કેસરીયાજીને પંદર દબર ફીળાવ્યા એક મુકુટ ભેટ કર્યો હતો, ત્યારે વિદ્યમાન મહારાણાજીએ કેસરીયાજીને લંડોર વધારે સાચવવા માટે રાજની તીભેરીમાં રાખ્યો છે. કેસરીયાજીના મંદિર નીચે સાત-કોઠા છે, તે કદી ઉપડયા ન હતા, તેમાંથી ત્રણ કે ચાર કોઠા બાહીને તેમાં જાપિયં હરિશંકર વમા સોનું મહારાણાજીએ સ્થાપીત હતું છે અને રાજવિભેરીમાં સુરક્ષિત રાખ્યું છે, અને જેમ કાંઈકો અત્યારે પેકાર કરતા બેસી રહ્યા છે. બીજા કોઠાઓ ચાર ગાંધારને લીધે કે કોઈ બીજા કારણથી હવે બાંધવા નથી. ચેવાહના પ્રસિદ્ધ લંડોરની એ હાલત થયા પછી બેઠાંજીજી અને શ્રીનાથદ્વારાના શુભ અંદોરે પણ ઉપાધા યશે એવી લોકવાયકા આજે મલીનાઓથી ચાલુ હતી. પણ શ્રીનાથદ્વારામાધીશ્વરના સાવંભોમ સત્તા (ના. વાઈસરોય) સચેતા રીધા સંબંધને લીધે એ અંકમાં કોઈ વજુક માન્ય નહિ.

કેસરીયા સુગના બાણકારા—પણ શ્રીનાથજીની ઉચ્ચાળ ઓર હળી સાડા ચારસો વર્ષની અગમિ પ્રેરી ધર્મી-મજામાં પ્રકાશિત હતું ! મજા અંકમાં શ્રીનાથજી મજામાં પધાર્યાની વાત ને લખી છે તે પ્રાચીન ગ્રંથના આધારે લખી છે. એ ગ્રંથસાધારને ગ્રંથ અતિપ્રચલિત છે. એ યોગ્ય સમયમાં પ્રકટ યશે. એમાંનું ભવિષ્ય હવે સુધી બેરોબર ખડું પડ્યું છે. હવે પછી તેમજ બનવાનું છે એવો વિશ્વાસ છે. ગયા અંકમાં લખેલી વાત ઘડની ભેટી માટી નથી. વિચિત્રજે અધારા બનવાની તર્ર નથી. એક એક અક્ષર પૂરાવાવાળો લખાય છે] તેથી આ એક કર્યો. પ્રસંગજ એવો ફોલોવનક પ્રારંભ થયો કે જમતને આંઈ નાજી તેવો વૈષ્ણવ એકમ સમેટાઈ નથ અને "લૌકિક બટ ભયગી" ને જમતને ઇતિહાસ અનુસરી શકાય. શ્રીનાથદ્વારામાધીશ્વરનું અવાજ નિલચીદારમાં પ્રવેશતું, અને હાલ દુરત શ્રીનાથદ્વારાનું નરચવિહોણાપણું તથા શ્રીતિથકાવિતવિહોણાપણું ધડું, આ અર્થાં શું ઉત્પત્તિના ચિન્હ છે ? ના, કદી નહિ, પણ ને વાત બનવાની છે તેનાજ લણકાર છે.

મંજવાસીએને અન્યાય—ઉદયપુર નહેરો ને માલેહુલર ધનાઢય વૈષ્ણવોની વ્યવસ્થાપક સમિતિ નામી છે; તેમાં પોતાનો પ્રતિનિધિ નીમવાને શ્રીનાથદ્વારાના મજાસીએએ હડત પછે ચલાવી છે. પણ મજીસાદના મધ્યાહ્નકાળમાં ગરીબોને કોણ પૂછે છે ! ને મજવાસીએના પૂર્વજોએ ઓરગંજબના શયાનક દુમકામાંથી શ્રીનાથજી અને મહાંન ધનમંડારનું રક્ષણ કર્યું, એમને શ્રીનાથજીની સચે રહેલી પોતાના પૂર્વજોના વતનને,

પરચારને, ગાદમત્તાને, અમુલીની આંધિ તિલાંજલી આપી દીધી, વિધર્મીઓ અને વિદેશીઓના વિચાર હુમસાર પાવાનભર્યા નેગણે પોતાના ધર્મ, ભક્તિ, સારી આદિને ભોગ આપી દીધો, ફર રાત્રી, હોડકાના બળે હુમસા વખતે, શ્રીનાથદ્વારામાં પણ નેમના પૂર્વજોએ પોતાના-મેળિશ મસ્તકોની પરના કરી નહિ, ને મજવાસીઓ આચારે પણ શ્રીનાથજી માટે પોતાના પ્રાણ નોઠાવર કરવા માટે દરદરેમાં તૈયાર છે, તે મજવાસીઓ ગરીબ હોવાના કારણે કમીદીમાં રયાન મેળવે નહિ; એ પણ આ કલિમલત્ત કોટુલ છે. નેમના પૂર્વજોએ મુશ્કેલી અરસાત કે સોનું કોટ કરીને ભક્તિમાન બતાવ્યો હશે એ આ રયાનના સંતાપારી બને અને નેગણે પોતાનું સર્વસ્વ હોડવું છે તેઓ બહાર ફરતા ફરે એ પણ એક લીલાવિચિત્રજ છે.

બંદારમાં ધડાકા—આ એક અભયજી બરેલી વાતા બહાર આવી છે. તેનાં હૃદયમાં નરા લટકી શું. દરેક રાત્રીમાં આનંદી બંદાર તો હોય છે જ. અરે, એક ગૃહસ્થ પણ આપત્તિભરેને માટે અતિશુશ્કીતે કાંઈ કાંઈ પ્રવાવી રાખે છે. રાત્રીમાં તો આ બંદારે અતિવિરાલ હોય છે, એ બંદારની નેધિ રહેતી નથી. શ્રીનાથજી જેણે બારતવપંથના રાત્રીપૂતાના તેમજ અન્ય મહારાત્રીઓના એક કરોડ માનવજનોના હૃદયનાથ, જેણે ચારસો નાપંથી અરસાત અને સોના ચાંદીના તો દરેક ગયા હશે. દર વર્ષે જેમણે લાખ તોસા ચાંદીના વાસણો કોટ આવતાં હતાં. તેજ મુલ્ય સોનાનાં અનેક પાત્રો ખિત્રોનાં આભૂષણો વગેરે. તે ઉપરાંત શ્રીતિલકાસિત શ્રીઓની પોતાની કોટના પણ લાજો રૂપીયા તથા જોસાત અને સોનું ચાંદી આપ્યા હશે. આ બધાને એક ગ્રામ બંદાર શ્રીનાથદ્વારામાં છે એવી વાત અમને વર્ષોથી સંભળાય છે. તેમાં શું છે તેની નેધિ રખાતી નથી. કહે છે કે તેમાં અખતેજી રાંપત્તિ છે. અરે, પોઈ પ્રપ્ત જણે! દરેક રાત્રી ઉપરથી જેવું બતાવે, પણ અંદરથી આગ તર હોય છે એમ મુલસદીઓ કહે છે. આ બંદારમાં ધડાકા થવા એ કાંઈ શુભ ચિન્હ નથી. સકુનશાસ્ત્રી કહે છે એ ધડાકા લક્ષ્મીલના છે અને તે બંદાર નીકળવાને જોર કરી રહ્યા છે. ખચિતજ, લાગે છે કે, નવોઈ, અકળાયલાં લક્ષ્મીજીં હવે વીસમીસાલીના વાચરા ખાવા બંદાર નીકળી પડે પણ ખર્ચા! પણ હાલ દરવ, તો બંદાર મજવાસીઓએ એ લક્ષ્મીજીને બંદાર કાઢવાના લક્ષ્મીદાસેના પ્રયાસો અગે ભયરૂપ પિલ્લો, કોનો ક્યો છે! મજવાસીઓના ડરથી એ ગ્રામ બંદારમાંની સંપત્તિની નેધિ લેવાના ધનાઢ્યોના તથા રા. પટવારીજીના ધરાલ હાલ દુર સફળ થયા નથી, અને હવે હોળીના દિવસોમાં ફિતેહમંદ થયે કે કેમ, તે જોવાનું છે. આ બંદારને લઈને તો આ બધી દોડધામ થઈ રહી છે. ને શ્રીલજ્જાવા કોઈ શ્રીગિરિરાત્રીજીમાં ખિરાઈને શ્રીપુલિન્દીજીના ફાદાદિ આરોગી રહ્યા હોત તો આ બધી દોડધામ હોત જ નહિ. કોઈને એ નિકુંજોનાંયંકાં રવરપની પડી નથી. એક તરફ એ સુકુમાર રવરૂપ અને એક તરફ અટળક અરસાત; સોના ચાંદીના દગલા પડ્યા હોય અને પસંદગી પૂજાય તો ધનાઢ્યોના ડોળા ધનમંડાર ભણી નાચતા લાગશે, એ નિરસાય વાત છે.

સંપ્રદાયને માટે-સોંઠે રૂપીઆનો ખર્ચ કરીને, આપત્તોમ આપીને, કમીદી શ્રીનાથદ્વારા ગઈ અને ઉત્સાહથી માથે બળબળાના રંગીન લેવાલો રા. પટવારીજીએ છાપાંઓમાં છપાવ્યા છે. આથી કાંઈ અનુભ ન બધ તેની ચેતવણી આપવાની છે. જે ચાર નોકરોને દૂર કરવાની વાત તથા જાપડીઆઓની નવી વ્યવસ્થાથી હવે નવો વર્ગ સંતોષારી નહિ. જાપડીઆઓને નિરજાલ દ્રવ્ય આપીને ગરીબ તથા મધ્યમ વર્ગ પર ફર પ્રહાર કરાવવાનું પુણ્ય ધનાઢ્યોનેજ મજા હવે, તે જાંઘ થયે! પણ મહાપ્રસાદના બળદેની શી વ્યવસ્થા રા. પટવારીજીએ કરી? એ મહાપ્રસાદ વિદ્યાર્થીઓ તથા અન્ય મજવાસીઓને તથા વૈષ્ણવોને આપીને સાંપ્રદાયિક નવી વ્યવસ્થાની ચાલના કેમ કરી નથી? લાજો રૂપીઆ નેક ભોગમાં ખર્ચાય છે તે મહાપ્રસાદ સમાભિષેકારક કેમ બને? એ વિચાર કેમ થયો નથી?

વળી કહેવાય છે કે કમીદીને સ્વતંત્ર સત્તા મળી નથી. કમીદી ને બંધારણુ પસાર કરે, તેને ઉદયપુરનરેશ ને સંમતિ આપે તો તેનો અમલ થાય. આ તો ખાસસત્તા અને વાહસરેશને વ્યવહાર થયો. ખાસસત્તાએ પસાર કરેલા કરાવને વાહસરેશ એક જ હલખને જોઈ જઠાવી રાકે છે. શ્રીનાથજીના ધનમંડારમાંથી એક પ્રજળ શુદ્ધાદૈત શુનીચક્ષિદી (વિશ્વવિદ્યાલય) બને, પણ તે આ ધનાઢ્યો કરી રાકશે? ઉદયપુર નરેશ તે કરવા દેશે? કેસરીયાજીની પેટે ધનમંડાર વધુ રક્ષણ મેળવવા માટે રાત્રીની તિજોરીમાં તો જઈને નહિ પડે? સોંક લાલજી નારજી આ કાર્યના સૂત્રધાર છે અને તેઓ ઉદયપુર મહાસભાના ખાસ-દુપાખાન નિર્માણ સફળદર છે. તેઓ સંપ્રદાયલિત વિચારો કે રાત્રીલિત ઉદયપુર

સાંપ્રદાયિક પ્રવૃત્તિ.

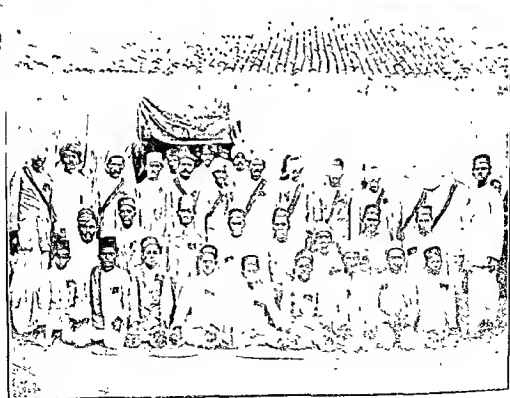
વાર્ષિક મહોત્સવ—અત્રેની શ્રીપુષ્પિમાર્ગીય યુવક પરિવર્ત તરફથી 'શ્રીમદ્દાસ ૪૫૫૨ પૂર્ણાહુતિ મહોત્સવ' નિમિત્તે ધર્માનુરાગી વૈષ્ણવોની એક જાહેર સભા રવિવાર તા. ૫-૧-૩૩ ના દિને સભાના છ કક્ષાએ અત્રેની શ્રીધાસબાબાની હવેલીમાં શ્રીમદ્દા. શ્રી ૧૦૮ શ્રીવલ્લભસાગર મહારાજશ્રીના પ્રમુખપદે મંથા હતી. નિચત સમયે સભાનું કામકાજ સંસ્થાના માનદ મંત્રી શ્રીયુત દ્વારકાદાસ દાણીએ સભા યોજાવવાની નિવેદન પત્રિકા વાંચી શરૂ કર્યું હતું તે પછી શ્રીયુત ગિ. જી. શાહે શ્રીમદ્દાસનામહોત્સવ પ્રતિપાદન કર્યું એક સુંદર કાવ્ય સુરવરે આપ્યું હતું. ત્યારપછી શ્રીમાન સભાપતિ મહોદય ઉપરાંત, ૪૨૭ માંડવીવાસા ગા. શ્રી દ્વારકેશદાસજી ગા. શ્રીમંત્રનાથજી સાથે અને ચિ. ગા. શ્રીમુશીધરદાસજી બાબા સાહેબ વિગેરેને શ્રીયુત ઇલાલાય રાજાશાહી ભગીરદે બખત્તેસારી પુષ્પમાળા ધરાવી હતી. ત્યારબાદ શ્રીયુતે ગિરિપરલાલ શાહે વિનયન કરતાં જણાવ્યું હતું. વૈષ્ણવ જનુઓ અને બહેનો, આપ શ્રી ભણી છે કે લક્ષ્યાધિ વૈષ્ણવોના વસવાટવાળી યુગ્ય નમ્રીમાં તે કયાંય પણ સાંપ્રદાયિક સિદ્ધાંત પ્રચારથી કંઈ પણ પ્રવૃત્તિ થતી હોય તો અત્રેનું મહોત્તું મંદિર અને શ્રીધાસબાબાનું મંદિરજ છે. મોટા મંદિરમાં તથા અત્રે અનેક સમયે સામાન્ય અને જાહેર સભાઓ નેમિત્તિક અને પ્રાસંગિક પ્રવચનો તથા અન્યાન્ય સમયોચિત કાર્ય થાય રીતે થયું છે, હજી પણ થાય છે અને બાકીમાં પણ ચાલુ રહેશે. વધારે મારે આપ સર્વને નમ્ર નિવેદન કરવાનું છે કે કેટલાક પ્રતિકૂળ સંજોગોને લઈ આજ કેટલાક માસથી અત્રેની સાંપ્રદાયિક સિદ્ધાંત પ્રચાર પરત્વે સભા પ્રવચનાદિની પ્રવૃત્તિ બંધ રહી હતી તે અત્યંતી યુગ્ય શરૂ થાય છે અને હવે પણ કાર્યમ શરૂ રહેશે. એમ આપણે સૌ ઈચ્છીએ. શ્રીમાન સભાપતિ મહોદયના ઉત્સાહ અને મહત્વાકાંક્ષા અર્જનપૂર્વક પ્રશંસનીય છે. ને આપશ્રીએ આપણને પોતાની દશ વર્ષ લગભગની પ્રવૃત્તિથી દેખાડી આપ્યું છે. મારી નજારે સાંપ્રદાયિક કાંઈમાં ઉત્સાહ અને ઉત્તરોત્તર મહત્વાકાંક્ષા ને આજે જણાય છે તે અપશીનેજ આશ્ચર્ય છે એમ ને કહું તો હેરાનજી પોર્ટું કે અતિશયોક્તિ લખું નથી.

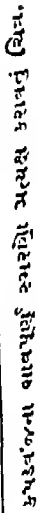
જમી આઠ વર્ષ પૂરે એટલે સન ૧૯૨૨ માં હું આપણીના પરિચયમાં આંખો અને ત્યારપછી આપણીના સભાપતિત્વે ચાલતી વૈષ્ણવ ધાત્ર પરિષદની આગાદિક સમાધાન ને કંઈ સંપાદન કરી શક્યો નેનું ફળ આજે આ સંસ્થા અને એની અનેક રચણે અને સંસ્થાઓ તથા ઉત્સાહી કાર્યકર્તાઓની સેવા બાબતે મારી નજારે જણાય છે.

શ્રીપુષ્પિમાર્ગીય યુવક પરિવર્ત અને તેની યોગના—રયાનીય શ્રીપુષ્પિમાર્ગીય યુવક પરિવર્તને સ્વધાયા આજે નવ માસ પૂરા થાય છે. ગયા વર્ષના માપ કુણુ ૨ ને રવિવાર તા. ૧૨-૨-૩૩ ના દિને રચના થઈ નેના શુભ ઉદ્દેશ અને શુભ નિયમાનુસાર અદ્યપિ પર્વત સંસ્થાનું કાર્ય અભાસિત રીતે બાળવત્કપાથી ચાલ્યું છે. સંસ્થાનું મુખ્ય મિત્ર શ્રીમદ્દાસાધીધારના વિશ્વમાન્ય સિદ્ધાંતોને વૈષ્ણવી જનતામાં સમયોચિત પ્રચાર કરવો એજ છે તેને મટી સંસ્થા દ્વારા સંસ્થાના કાર્યકર્તાઓ અને સલાસદો તન, મન, અને ધનથી થયો શક્ય સેવા કરી પોતાની ફરજ બજાવી રહ્યા છે. આજ પર્વત આ સંસ્થા દ્વારા ને કંઈ કાર્ય થયું છે તે નંદનંદન શ્રીભક્તજી પ્રભુ તથા શ્રીમદ્દાસાધીધારની કૃપા અને પૂ. પા. ગા. બાલકોના શુભાર્શોવાદો આભારી છે. સંસ્થા પ્રત્યે પૂ. પા. ગા. બાલકો, સાંપ્રદાયિક મુપ્રસિદ્ધ વિદ્વાનો અને સંપ્રદાયના સિદ્ધાંતાનુસારી મુપ્રસિદ્ધ વૈષ્ણવોની અત્યંત સદ્ગતિભણી છે એમ હું સંસ્થા પ્રત્યે દરેક મહાનુભાવોનું સદ્માન્ય કહું વર્તન એજ કહી શકું છું. અત્રેની શ્રીપુષ્પિમાર્ગીય યુવક પરિવર્ત તે માત્ર અમુક બક્ષિ કે કાર્યકર્તાઓની સંસ્થા નથી. પરંતુ વિચાર્યું હોય એવા વૈષ્ણવ સમાજની સંસ્થા છે. તેથી તે દ્વારા ને કંઈ કાર્ય કરવામાં આવે ને સમયોચિત અને શ્રીવલ્લભકુર તથા માનનીય વિદ્વાનોની સલાહ અને સહકારથી થાય એ હિંદુ હોવાથી તથા સંપ્રદાયનું રહસ્ય જાણ્યું એ સામાન્ય વાત નહિ હોવાથી સંપ્રદાયનું ચૂઠ રહસ્ય સમજવા અને સંપ્રદાયના સિદ્ધાંત વિરુદ્ધ કંઈ પણ કાર્ય ન થાય તે લક્ષ્યમાં રાખવા દરેક સંસ્થાને સાંપ્રદાયિક સિદ્ધાંતમર્મજ મહાનુભાવની સલાહ અને સહકારની ખાસ આવશ્યકતા છે. આ સંસ્થાને તેવાં મહાનુભાવોની સંચનાનુસાર આગળ ધપાવી રહ્યા બીએ.



કપડવંજના ભાવપોર્ણ સમરણો કંડી અનુભાવાવનું ચિત્ર.





શ્રીઅણ્ણકર મહામંત્ર મપયત્તની યોજના-રથાનીય શ્રીપુષ્પિમાર્ગીય મુવક પરિષદે મત ચતુ
 માસમાં કંઈક પ્રવૃત્તિ કરવી એ નિયમ કયો પરંતુ મુજબ જેના પ્રવૃત્તિયાના સંદેશમાં દરેક પ્રવૃત્તિ અર્થસાધ
 હોવાથી અને સંરથા પાસે કંઈ પણ રથાથી ફેંટ કે અન્ય કોઈ પણ પ્રકારની આવકનું સાધન નહિ
 હોવાથી કંઈક સાધારણ પ્રવૃત્તિ યાચ એવા સુદ જ્ઞેયથી પોતાના સદ્ વિચારો પૂ. મો. બાલકો તથા
 કોશાક સંરથાના સુમેગ્ધો પાસે રત્ન કરતાં દરેક પોતાની સદ્વાચણી દર્શાવે જુદી જુદી યોજનાઓ
 બધા કરી તેમાં કંઈક માંડવી પાળા મો. શ્રી. ૬ શ્રીદ્વારકેશવાલ મહોદય અને શ્રીપુત્રભગીશરે દર્શાવેલ
 શ્રીઅણ્ણકર મપ યજ્ઞ કરવાની સૂચના વાર્તાવિક અને સર્વોત્તમ તત્ત્વો ૧૮૮૬ ના આવાદી પૂર્ણિમાથી
 ૧૯૬૦ ના મંત્રિકી પૂર્ણિમા પર્વેન શ્રીઅણ્ણકર મહામંત્રનો બને તેરથો વિશેષ પ્રમાણમાં ગુદ્દતથી મપ
 કરવો અને કરાવવો એવા સુદ જ્ઞેયથી તેના નિયમો અને ધ્યેય દર્શાવતી એ દબર દરેકપત્રિકા ઉપાધી
 સ્વાતંત્ર્યના જુદીજુદા વિશાવના ન્હાટા મ્હોટા ૮૦ થી ૧૦૦ હમસત્ર નામોમાં વહેંચી તથા મોઢાની.
 તે સિવાય રથાનિક સામયિકો અને સાપ્રદાયિક માસિકોમાં પ્રમાણનાથે મોકલાવી તેમાં અથેના મુજરાતી
 (સાપ્તાહિક) અને સપ્રદાયના સુદાદેવ (માસિક) મનુષ્ય પત્રિકા અક્ષરણ પ્રકાર કરી સંરથાની પ્રવૃત્તિને
 વધાવી હોધી તેથી હબરો પેશુલો ઉપરાંત અન્ય ધર્માતુશો સાધકદેવોએ અવકારી યોજનામાં પોતાનો
 ફાળો આપવા અમને અત્રેથી મૌખિક અને લેખક નામથી અસંખ્ય પત્રોદ્ધાર મળ્યા તેમાંએ
 વદવાણી શ્રીપુષ્પિમાર્ગીય વૈષ્ણવ મહાસક્તા, ટંકાણની શ્રી વૈષ્ણવ ધર્મ મહાસક્તા અને ગેરાગામ બંદરની
 શ્રીવૈષ્ણવ ધર્મ વધિની સક્તાના માયકરોએ વિશેષ સદ્કાર આપી અમારી યોજનાનો વિપુલ પ્રમાણમાં
 અમલ કર્યો છે, તે સિવાય અમારા પરિચિતોમાં શ્રીપુષ્પિમાર્ગીય શિવાય શંકર, રામદુત, માધવ,
 નિમ્બાક અને રવામિનારાવણ મહાતુશો ધર્માતુશો સંજ્ઞોએ પણ સંરથાના માથે પાસે પ્રદાનના
 પુષ્પો પત્રોદ્ધાર વેરી સદ્કાર આપ્યો છે.

એ ઈશ્વરનું સાક્ષાત્ રવરૂપ છે. વિગેરે કલા બાદ જ્ય કરવાના જુદા જુદા પ્રકાર અને મહત્તા ઉપર વિસ્તૃત વિવેચન બાદ પ્રમાણીથી સંપ્રદાયિક દૃષ્ટિએ કરી, નિઃસાધન જનોને માટે આવા ધારાંકલિકાવર્માં બગવત પ્રાપ્તિ માટે જે કંઈ સર્વોત્કર્ષ સાધન હોય તે તે આવ શ્રીકૃષ્ણ સરજી મમ' એ અક્ષર મહા-મંત્રજ છે, અને તેથીજ શ્રીમદ્ભક્તિસાધીશ્વરે તથા અન્ય આચાર્ય વગેરેએ એક કાણુ પણ બગવન્નામોચ્ચાર વિના ન રહેવાની ખાસ આજ્ઞા કરી છે. વિગેરે આવશ્યક વિવેચન કર્યા બાદ શ્રીયુત સુનીલાદ-પરીખે પ્રાસંગિક વિવેચન કરતાં આજ કાળનાં વર્તમાનપત્રોમાં પ્રકટ થતાં રાગદ્વેષયુક્ત ચર્ચાપત્રો કે લખાણો ઉપર વિરોધ લક્ષ ન આપતાં સંપ્રદાયિક સિદ્ધાંતિ સમજવા શ્રીમદ્દામ્રણુજી, શ્રીયુગર્ણીજી, શ્રીગોકુલેશજી, શ્રીભરિણીજી અને શ્રીપુરુષોત્તમજી પ્રતિપાદિત સ્મૃતિલેખનું અધ્યયન, અધ્યાપન અને બહોળા પ્રમાણમાં પ્રચાર કરવાની આશરૂપૂર્વક વિશ્વસિ કરી હતી.

સલાપતિ મહોદયનું મનનીય અધ્યયન—ત્યાર પછી પ્રમુખપર્યાયની ગા. શ્રીવૃક્ષકલાલજીએ અધ્યાપ્યન આપતાં જણાવ્યું હતું કે આજનો વિષય શ્રીમદ્ભગવાનમાહાત્મ્ય રાખવામાં આવેલ છે તે ઉપર અમે કંઈક કહીશું કે જે વખતે મમ', જ્ઞાન, સાંખ્ય યોગ, તપ' વિગેરે સાધનો બગવતપ્રાપ્તિમાં નિષ્પેશી થેખાવા લાગ્યા તે વખતે જીવોના ઉદ્ધાર માટે માત્ર બગવાનની ભક્તિ એજ એક ઉપાય રહ્યો હોવાથી કહ્યું છે કે વસી કેના કીર્તનમ્. એટલે બગવાનનું બજન એજ માત્ર કલિાંજમાં બગવતપ્રાપ્તિનું સાધન છે. બગવાન કે કૃષ્ણને વેદાન્તમાં બ્રહ્મ, રમૃતિમાં પરમાત્મા, અને બગવતમાં બગવાન એ નામંપ્રી સંબોધે છે. બ્રહ્મા, નિરજી અને કેદ્ર એ ત્રણ તેના ગુણાવતાર છે. બગવાન શ્રીકૃષ્ણ નિંજી પરબ્રહ્મ છે. બગવાન ફર અને અક્ષર નર. ઉત્તમ છે કૃષ્ણથી આરંભી બ્રહ્મપર્યંતે ફર કહે છે અને બગવાનના નિર્વાસ રથાંતે અક્ષર કહે છે તે મણિનાનંદ છે, બગવાન અંશ, કલા આવેશ વિગેરે અનેક અવતાર ધારણ કરે છે. ખરું જ્યારે આપ પછું અખંડ રવરૂપે થાય છે ત્યારે શ્રીકૃષ્ણ કહેવાય છે.

તેથીજ શ્રીમદ્ભક્તિસાધીશ્વર મહાપ્રણુજીએ આપણા જેવા નિઃસાધન જીવોને માટે તેમ બગવાન શ્રીકૃષ્ણની સેવા, રમરણ અને કીર્તનાદિ કરવાની આજ્ઞા કરી છે. આવા ધારાંકલિકાંજમાં શ્રીમદ્ભગવાનમોચ્ચાર સિવાય આપણે માટે એક પણ બમતપ્રાપ્તિનું સમજ સાધન નથી માટેજ શ્રીમદ્ભગવાનમાં પશુ શુદ્ધેષ્ય કહે છે કે હોખના નિધિરૂપ કલિયુગમાં એક મહાન ગુણ છે તે એ છે કે ફક્ત પરબ્રહ્મ સર્વોદ્ધારપરમામાં શ્રીકૃષ્ણમન્દ્રનાં કીર્તન-રમરણ ગાત્રથી જીવ સંસારના આચારથી બંધનોથી મુક્ત થઈ શ્રીકૃષ્ણને પ્રાપ્ત થાય છે. વિગેરે વિસ્તારથી કહેલા દશીસો પૂર્વક સચોટ રીતે જણાવી બગવાનમરમરણની મહત્તા સિદ્ધ કરી હતી. તે પછી સરેયાના મંત્રીએ શ્રીમાન સલાપતિ મહોદય તથા અન્ય ગા. બાલકો અને સલામાં હાજર રહેલાં શ્રીપુરુષોત્તમ યોગ્ય શબ્દોમાં આજ્ઞા માંની સલાનું કામ કાળ પૂર્ણ થયું હતું.

શ્રીવૃક્ષવ ધર્મ મહાસલા (ટંકારા) ની અશંકનીય પ્રવૃત્તિઓ—શ્રી ટંકારા વૃક્ષવ ધર્મ મહાસલાના આશ્રય નીચે ચાલતી શ્રીવૃક્ષણીય પાઠશાળાની મુવોકત હેતા સહય' વિદિત કરવાનું જે કાઠીવાવાડ જેવા લાખનાપ્રધાન દેશોમાં આવી સંરથા ભાગ્યેજ મેલતી હતી. પાઠશાળામાં વિદ્યાર્થીની સંખ્યા આશરે ૪૦ ની છે જેમાં શ્રીસર્વોત્તમ રતેત્ર તથા ઘોડરા અન્યનું મુખ્ય અધ્યયન સાંચીજ નવલરા'કર વિધનાય ધણીજ સરલવાથી આપી રહ્યા છે જેનોથી કુળી વયના બાળકો ઉપર સારી અંકર પડે છે તથા વિદ્યાર્થીઓ ગાઢાતિલક તથા નીતિ ઉપર ધાર્મિક સંવાદો ધણીજ બળદાર લાખમાં કરી શકે છે. મનુકર સંરથાને દિન પ્રતિદિન જનવત્તામાં લાખવાને તેના સેવાશંખી મંત્રી મહારાજ રાણુપરા લાલજીભાઈ દયાલજી તથા શ્રીયુત દુલ્લજીભાઈ ઠાકરજી તથા શેઠ વિશ્વલક્ષ વિગેરે યોતાનો અનૂદય સમ-યનો ભોગ આપી તથા તનં મન અને ધનથી ધણીજ સારી સેવા કરી યોતાની ફરજ બજાવી રહ્યા છે. આવી સુંદર પ્રવૃત્તિના અંગે એક સાંકડાં બેન્ડનું સિદ્ધાંત પશું મનુકર પાઠશાળાના વિદ્યાર્થીઓને શ્રીયુત સાંચીજ વગાડવાની તાલીમ આપી રહ્યા છે.

આ પાઠશાળામાં કોઈ પણ પ્રકારનું રચાયેલું ફંડ કે અન્ય પ્રકારની માલે આવકનું સાધન એક પણ નહિ હોવા છતાં ફક્ત નજીવી રકમથી સંરથાનો ખર્ચ ચલાવે છે. તે આવી સરેયાઓને ધર્માનુચી વૃક્ષવ જનતાએ તન, મન, ધનથી યથાસકય મદદ કરી તેની પ્રવૃત્તિનાં યોતાનો યોગ્ય ફાળો આપી યોતાની ફરજ બજાવવી અતિ આવશ્યક છે. સુલ જનતાને વિદિત હતી કે ટંકારા (કાઠીવાવાડમાં) ગેતજી

ધર્મમાં રવાના મળતા લાગ્યું છે. બહુ ખેડ છે કે...ને દૂર સખીને રવાનિયારને લાભ ઉઠાવે છે. ઠીક છે. માર્ગની પ્રભાવિકા સમજવી બહુ દૂર છે. રાત્ર્યસંબંધ તો બાહ્ય વક્ષણ અર્થે છે. અહીં તો ધર્મ પણ સમજવો દૂર થયો છે. નહિતર.....ની સજા ભરીને પછીનું રાત્ર્યસંબંધ મેળવવા હતો. ...ને વિષે રૂપક ખુદાશે મેળવવાની નજર હતી. પ્રભુની ઈચ્છા કેવા પ્રધારની છે તે શું નક્કીએ ? આવા પત્રો દયા કરીને લાગવડીયા લખતા રહેશે અને શિક્ષા આપશે એવી નક્કર વિનંતિ છે.

૬૧૬૦૧માં લઘુત્તિ—શ્રીયતુલ્ય પંચમખીકાષીશ્વરે અને ગીતા વર્ગ ખાધ્યા પછી સારી નયતિ આવી છે. અમદાવાદથી વસંતરામ શાસ્ત્રી તે વર્ગ ચલાવવા આવે છે. સીતા વર્ગ રૂપ થયા પછી એક બાળવર્ગ અને એક બહેનોનો વર્ગ એ બે વર્ગ ખીલ્યા છે. દર એકાદરોએ આ વર્ગો ચાલે છે. તે ઉપરાંત તેમ વિવરો એક નહેર સજા પણ લગાય છે. તેમાં બુદ્ધ બુદ્ધ વિવરો ઉપર વ્યાખ્યાનો ધાર્ય છે. શ્રોતિલકાયિતના નિલયીકાપ્રવેશ માટે એક સંસ્થામાં શોભનો ફારાર થા. ભાર્તવંદમાઈ બી. એ. એ મુખ્યો હતો. રા. નક્ષત્રમ પુરાણીય પણ વ્યાખ્યાનો આપે છે. બીજા એક કાચ ગીતા વર્ગ તરફથી અનુસરણીય રીતે રૂપકમંદ થયું છે. ને શ્રીગોકુલેશ મહામહોત્સવ વિષેની પત્રિકા છે. આ પત્રિકા વ્યવસ્થાપકો રા. ધીરજલાલ જોશીજીવાલ શાસ્ત્ર અને રા. ચંદ્રલાલ જોશીજીવાલ દેસાઈએ પ્રકટ કરી છે. આ પત્રિકા પોતાને ખરચે બીજા આયોમાં પણ શુલ્ક મંડળે મોકલી છે. આ કાર્યોની પાછળ કોયાપણ રા. રા. શેઠ અંબાલાલ વલ્લભદાસ પણ સારી ફારતા લાખયો.

વિવિધ અતે શુભારંભાદી—આર્યસમાજે અણુમાધ્યના ખંડનની જાન પોકારી તે પરથી દયાનંદીએ શુદ્ધારાદી ચલાવી. મારામારી ચલાવીને પરિણામે ૬ વેષ્ણુઓ પર પોકારીસે કેસ મંડયો હતો, તે કેસમાં ન્યાયાધીશે બધાને નિર્દોષ નહેર કરીને છાડી મૂક્યા હતા. આ પરિણામ માટે એ ૭ માર્ચીકેને ધન્યવાદ લઈ શુભારંભાદી થઈ છે.

આંતર વિદ્યુપેતો અચરત—શ્રીમદ્વાપ્તુલને યથેલા ઇતિહાસસિદ્ધિ મનઃકામિકે વિષે સંપ્રદાય-ગોદીએ એ ચર્ચા ચલાવી છે, તેના કુદાસના હાથા બનેલા આંતર ચિદરોએ ખાનખીમાં ઉશરીને ધારે રૂપક આપ્યું છે. વળી મનઃકામિકે એટલે ઉઠેલું સોનું રૂંધું એવા અર્થ કરીને નાસ્તિક માયા-ગોદીએ પણ ટપી જનાર ચિદરખને ચેલો પોતાના જુઠું ચિદરખની કેરાં વખાણ કરે છે તે સાદાજી જીદી રવાની નજર છે. અમદાવાદના શુદ્ધરોના આંગણે પણ ધસનાર આ ચિદરખ અને તેની પાછો ઉપરથી તો હાલ લામ, નિરૂપદતા તથા શ્રીવલ્લભ કુળના અંધ લક્ષ્મીનો પાક સમજીને ખાનખીમાં કેવા પત્રો લખે છે તે જુઓ:—“ને સંપ્રદાય મારા લોહીનીજ અસિલાવા ધરાવતો હોય તો હું તૈયાર છું—પરંતુ મારે તો સંપ્રદાયના ઇતિહાસમાં કાળા અક્ષરે લખાવડું છે કે વિદ્વાનો તરફ આ સંપ્રદાય ઇંટલો એવડો છે ? આ પ્રમાણે પોતાનું ખરું જીવન બતાવનાર અને સંપ્રદાયને કલંક લગાડવા માટે હાલમાં કરવાનો ડોળ કરનાર ચિદરો અને તેના અગરાઈ ચેલાઓને હવે સંપ્રદાય તરતજ ઓળખી લેશે.

નિરાધાર બાળકો માટે સારામાં સારો માર્ગ કયો ?

તેમની સંભાળ લઈ, સારી રીતે ઉછેરી તેમને આદર્શ નામદિક બનાવવાં તે. આ કામ બહુ ઉત્સાહથી

નડીઆદ હિન્દુ અનાથાશ્રમ

કરી રહ્યું છે. આવાં નિરાધાર બાળકો ઉપરાંત લગ્નપણ બાળકો, નિરાધાર અસંકલ અને અપંગ સ્ત્રી-પુરોહો વગેરેની સંભાળ લેવાનું કામ આજ વર્ગો, યાં આ સંસ્થા કરી રહી છે. આ સંસ્થાને તમે જો તેટલી મદદ કરો. રૂ. ૧ અને તેથી વધુ દાન આપનારના નામ વાર્ષિક રીપોર્ટમાં છાપાય છે.

ગંત્રી—હિન્દુ અનાથાશ્રમ નડીઆદ. (શુદ્ધાન)

ધોળા દીવસે તાર.

ચોરાંક સર્વશક્તિ.

This is to certify that Vaidyarat Motilal Mahashanker (L. W. T. M. I. I. M. C.) possesses some sort of Second Sight or Occult Powers because with the help of such sort of Powers, he predicts the future, like that of an Astrologer. The difference lies in that, no Birth time or any " Kundali " is necessary but he prepares the Kundali with his " Own Marks " unknown to us, only in a minute or less than that and at once tells the Future and Past Correctly. I consider his advice to be invaluable and I recommend all the People to try him once and especially for those who have not got any whereabouts about his birth time and I am sure that he will be very helpful to guide.

I wish him every success.

Vinaychandra M. Sanghani, B. Sc.,

ચમત્કારી તાલીએ—આદળીયાં!—પણાએ અનુભવે ક્યાં છે. મનની ઇચ્છાની સિદ્ધિ ચમત્કારિક રીતે થાય છે.

માત્ર સાત મહાશક્તિએ માટે રૂ. ૨૫૦૧, રૂ. ૧૫૦૧ અને ૧૧૦૧ ના ત્રણ નંબરો છે. મરિયા તથા મધ્યમ વર્ગના ભાર ૨૫૨ કરાવવાના છે.

શ્રી ગિરીરાજ આપુ તથા ગીરનારના મહાત્માજી પાસેથી પણ દીવસના પ્રવાસથી મનન પ્રમત્તે દિવ્ય વિદ્યા મેળવી આવનાર વૈદ્યરાજ મોતીલાલ મહાશંકર ભટ L. W. T. રાજકાવાદ્ય કે જેમની પાસેથી નીચે બતાવેલા દુઃખોથી બચી શકાય છે.

- ૧ જેઓ શેતાન શત્રુઓના ત્રાસથી કંટાળી ગયા હોય.
- ૨ વૈપારની ઉચ્ચ પાયાઓમાં નુકસાનીમાં આવી ગયા હોય.
- ૩ વાંઝીઆ પણાના મેણા ટાણાંથી હૃદય કટાળી ઉઠ્યા હોય.
- ૪ તથા દરેક પ્રકારની મુશ્કેલી, નજાગી વીચારો ઉપર વિગ્ન મેળવી ધન, પુત્ર, માન, આજરો, વરા, વેપારમાં લાભ, કાર્ટ કેસમાં ફતેહ, સારા પ્રકાર નોકરી, શત્રુ વિગ્ન તથા સ્ત્રી પુરોમાં અણુ બનાવ રહેતો હોય તે અગ્નિ પ્રેમ કચવી આવનાર તથા દગરો દગા વાપરો છતાં અણકર હાડીશા દર્દો નડતરના કે દેવી કારણોથી ન મટતો હોય તેમજે ૨૫૨ મંત્રી ખુશ્મો મેળવતા હોય પાંચજ મીનીટમાં ૨૫૨ મળવાથી તમોર આપુ ભવિષ્ય દુગ કહી દેવામાં આવશે. એક પ્રતના રૂ. ૧-૪-૦ પાંચ પ્રતના રૂ. ૫-૮-૦ આખા ભવિષ્ય દુગના રૂ. ૧૦-૩-૦ ઉપરાંત સુઠ, ચોટ, શકળ, સાકળ, અભરાશસ વીરે નડતરોના કારણો મેળવતા દેવી પ્રયોગોના બંધથી અગ્નિ રીતે દૂર કરી કરી શકાય છે. મરો વા લખો,

વૈદ્યરાજ મોતીલાલ મહાશંકર ભટ. L. W. T.

(સંગ્રહીના ખાસ પેઠ)

૧. કાકરીયાની પોગ સામે, હાલનીનીકસામે મોરો, મરનપુર—અમનાવાડ

ગુણાનુવાદ કેમ ગારો ? શુદ્ધ સંગીતનાં દિવ્ય કીર્તનો.

સારંગી, ખીન, દીલરૂખા, હાર્મોનીયમ વગેરે વાજીત્રોમાં સાંપ્રદાયિક કીર્તનો ઉતારવાનું આંતું સાધન સંપ્રદાયમાં એકેય નથી. મંગળાધી શયન પર્યંતના મુખ્ય કીર્તનો, વધાઈ અને ધમાર એ ઘણાંનાં ૮૦ રાગોના ખાસ નોંટેશનો આજ અંતમાં છે. પખાવજ શિખનાર માટે તાલના ઘોલ પણ છાપ્યા છે, ગુજરાતી ભાષામાં સવિસ્તર સમજણ પાડી છે. નોંધાવર જે રૂપીઆ, પોસ્ટેજ પાંચ આના.

ડૉ. ભગવાનદાસ નારાયણદાસ ડોટડાવાળા.

સુ. ધંધુકા, (જી. અમદાવાદ.)

હિસ્ટરિયાંદિ વાતરોગ દર્શન.

ખંદોક ૩૦ હિસ્ટરિયા, મૂર્છા, ચક્રી, ફેફર, ગાંડપણ અને બકવાદ રોગની અમેરીકન ઉક્તી શોધ મુજબ પાશ્ચાત્ય, યુનાની અને આયુર્વેદિક સિદ્ધાંતો, સમજુતી અને સાદા ઉપ-ચારોનું પુસ્તક વાંચેથી ઘણી રાહત મળશે. કીમત ૧-૪-૦ પૌ. જુહા, દેશીનામું. નવા બ્યવહાર પ્રમાણે રચના વા. શાળા માટે નહું મંજુર કી. ૦.૧૦ પૌ. ૦)૦.

હિસ્ટરિયા રોગનીજ રામખાણુ,

પેટ'ટ' દવા વાયુમુક્તાજ છે. ઉપરના દરદોમાં ૨૪ કલાકમાં કાયદો મળે છે. સિલેન, આફ્રિકા, ધરાન અને રંચન સુધીના દરદીઓ વાપરી સુખી થયા છે. ગ્રેડીકલ સરંજનો છુટથી મંગાવે છે. દવા મહિનાની, કીમત ૩.૫) પૌ. જુહા.

છગનલાલ લલ્લુલાલ નામાવાળા. પેલેસ રોડના નાકે—વડોદરા.

વીસમી સદીની નવીન શોધ

સંગ્રહણી (ગળણી) માટે અમૃતમય ઉપાય.

પ્રતિષ્ઠિત અને વિકાન વૈદ ડોક્ટરોની દવા ખાઈ કંઠાળેલા સંપ્રદાયી (ગળતી), મુંખાપના આડા, અતિસાર અને આંતરડાના ક્ષયથી પીગત્ત નિરાશાજનક દર્દીને આશીર્વાદરૂપ થઈ પડેલી વીસ વરસના અનુભવની રામખાણુ દવા માટે રખર મળેલા સવાલપત્ર મંગાવો. પત્રબ્યવહાર નીચેના સરનામે કરવો:—

માસ્તર. કે. જી. પટેલ એન્ડ સન્સ, રમુ રપેસીઆલીસ્ટ—માણસાવાળા.

જિલ્લા મેળાપ—દર રવિવારે, અમદાવાદ—કાલુપુર હાંડીગરાની પોળમાં તંજુગરાની ખાડી ધર નં. ૨૫૬.

અમારૂં ખાલાનંદ બચ્ચાંઓને હજુ પુછ આનંદી અને સુંદર બનાવે છે. કી. ૦-૧૨-૦ પૌ. જુહા.

સ્ત્રીઓના દરેક રોગોમાં અકસીર અને શક્તિવર્ધક સ્વદેશી ઔષધી

સ્ત્રી શક્તિ (૨૭૨૮૬)

ટીકડીઓ

સ્ત્રીઓને જતી સંકેદ, પીળી, કે લાલ, પાણી જેવી, સ્ત્રીકળી મળ્યુગમી માત્ર (પ્રદર) અટકાવે છે; લાલપગની કમર મટાડે છે; વાંસા અને માથામાં થતો દુઃખાવો તેમજ કમર અને પેદુમાં નીકળતી ફાટ બંધ કરે છે; બ્લેવા ગોઠા કે ઓછાવવા અટકાવને નિયમિત અને પ્રમાણસર કરે છે; ગર્ભાશય આપું પાણું કે ઉમુનીયું ખસી મથું હોય તે ઠેકાણે લાવે છે, તે પર સોજો આવેલો હોય તો તે દૂર કરે છે; લોહીવા તેમજ કાઠાના વૃત્તાને મટાડે છે; ઉપરાંત આતી ફરિયાદોના પદ્ધિભૂમે નિપજતા દાહી તાલ, ખાંસી, અગિનું મંદ પડી જવું, ખોરાક ન ખવેલો, કમજબાત રહેવી, લોહીનું ઓછું થઈ જવું, શરીરનું શીકું પડી જવું, જીવનશક્તિ ઓછી થતી જતી વગેરે તમામ રોગો મટાડી સ્ત્રીઓને સચક્ર કરે છે અને તેમના વાંત્રીપાષણના સવળા રોગો દૂર કરી ગર્ભધારણ કરવા યોગ્ય બનાવે છે.

ગર્ભવતી સ્ત્રીઓને સેવન કરાવવાથી કમુત્રાવઠ થતી કે અધુરે માસે પ્રસવ થતો અટકે છે અને ગર્ભનું યોગ્ય સ્થાણ થતા પૂરે દડાડે તંદુરસ્ત બાળક જન્મે છે. સુવારોગમાં પણ આ દવા સંપૂર્ણ લાભ આપે છે.

છોટકડીઓને સેવન કરાવવાથી તેમના શરીર રૂદ્રપ્રુદ બને છે.

સુત્રાવઠ પછી સેવન કરાવવાથી સુત્રાવઠમાં દીણ થયેલી શક્તિ જલ્દીથી પાછી આવે છે.

ટીકડીઓ લેવાથી પ્રવાહીની માફક જમવાની ધરતી નથી.

બ્રહ્મા અને ધીરજથી આ દવાનું સેવન કરનાર દહી નિરાશ થયાજ નથી અને થશે નહિ આ દવાની માત્ર એક યોધી વાષરનાંજ, દર્દના પ્રમાણમાં, તેના મુજબારી પળાની ઓછીવતી ખાત્રી થઈ રહેશે. (જનનીતાં ઝાટકો, વૈદ્ય અને નસોના યોગ્ય એક અભિપ્રાયો માટે નીચેને સરનામે લખો.)

કિંમત ૧૦૦ ટીકડીની ખા. ૧ ના રા. ૩) જન.

૪૦ " — ૧૧) દોઢ

પરદેશ માટે મોટી ખાટલી શિ. ૮) આ શીર્ષક.

(દરેજ સવારે બે ગોળાઓ લેવાની છે.)

અનુભાવ્ય માટે ૭ માનાની રૂપાવની ટીકડો: મોક્ષી દય ગોળાઓ મંજારી ખાત્રી કરો.

તમામ દવાના વેચારિને પુછો ન દોષ તો લખો: —

હાંસર રસીક એન્ડ કું.

રામજીવાલ-અમરાવાદ.

જાને માટે

તાકત-તાઝીવી ભરપૂર

સજ્જતાર

ઝંડુ ફાલા સવ

—વિના વિલંબે—

વાપરવા માંડે

ખાસ ઝીઝોને માટે

તનદુરસ્તી-તાકદ્દી ભરપૂર

ઝીઝોની નળખાઈમાં

આખાઃ અસર કરનાર

ઝંડુ અશોકારિષ્ટ

પ્રદરદિ રોગોના

અંકસીર હલાજ

દરેક ઘરમાં હોવો જોઈએ

માથી શક્તિનો સંગ્રહ કરવા

ઝંડુની સુવર્ણમિશ્રિત

મુકરદ્દવજીશુટી

—શક્તિની સર્વોત્તમ દવા—

આજઘીજ અજમાવવા માંડે

—તોલા એકના રૂપિયા આઠ—

ઝંડુ ફાર્માસ્યુટિકલ વર્કર્સ લી. મુંબઈ નં. ૧૪

અમદાવાદના એજન્ટ: સોગીલાલ અધર્મ, ૧૧૪, રીચીરોડ.

આયુર્વેદિક દવાઓનું સ્વીયત્વ આજેજ મંગાવો.

સાચા દાખલ પાત્રતા અન્ય ગણે છે, ત્યારે ખરેખર તેવા સાચા દરિજાની કોટિયે પણ રિયલિટી થવાય એ માટે આરતિથી અધિક અધિક કરવું.

૨૧. શ્રીહરિ સર્વે સ્થળે સદા વ્યાપકરૂપે, પણ બિરાજેલા છે. ને તેમની પણ સત્તા ઘણીજ છે. માટે તેથી તેમને હાજર નાહીને અસહમાર્ગે ડગલું પણ ન ભરાય તે માટે વિશેષ ધ્યાન આપવું.
૨૨. પરશ્વતથી રોપ, મહેરા, ઘણાદિક અને કાળ તથા માયા અને ઉદાદિક મૂર્ધ અંદાદિક દેવો વિગેરે સર્વે યરયરે છે. એવા અનેક પ્રકારે તે સત્તાધીશ સર્વત્ર સર્વને નિયમમાં રાખનાર નાહી તેમનો ભય વિશેષ કરીને રાખવો. અને એવા પરશ્વત પ્રતિ જે એક વાત્સલ્યાદિક પ્રકારે અવતારાદિકના સમયમાં તેમના નિકટ દિતરવી માતપિતા આદિક ભક્તોએ જે પ્રભાણે કરવા ઈચ્છે તે ભાવ પણ કાણ ન કરમાય એવી રીતે સ્વામીસેવકભાવ પરશ્વત પ્રતિ રાખવો.
૨૩. સેવાસમય નિયમપૂર્વક એવો રાખવો કે, સેવાકાર્ય વખતે કૌટિક પ્રતિબંધક કે વ્યાર્તિક ન આવે કે જેણે કરીને તે અન્ય કાર્યમ યત્ન કે ઉદ્વેગ ન થાય. એવાનો સમય વીલ્યા પછી (અન્ય અવસરે) ઉદરનિર્વાહાદિક પ્રાપ્તિય કાર્યમાં યુથાવતું પડે તો તે કાર્ય ક્ષણ પુરતું મન તેમાં જોડવું. પણ તેમાં પ્રીતિ આસક્તિ યદ્ય ન જવાય, એ સાવધાની રહેવા ભગવતચિંતન કથી જવું. મનશુદ્ધિ દરિયરિત, કીર્તન શુભગાનાદિક વિગે લગાવી ઉદય દ્રવ્યાદિક પ્રાપ્તિ અર્થે કરવામાં શુદ્ધિ એ કે શ્રીહરિનો નેક નમે તથા શ્રીશુભ ભગવદી આદિનું પણ સમાધાન યદ્ય શકે.
૨૪. પ્રાકૃત જે જે પદાર્થો છે, તે મૂર્ધ સજીવને અસ્થિર છે, વળી તે પણજ તુચ્છ છે એમ જાણી તેથી માયામમતા ત્યાગીને કાર્ય માટે જેટલી જરૂર તેટલા પુરતી વેડ ઉઠાવવી. પણ તેમાં મ્હોવાઈ ન જવું, ને ભય રાખવો કે રૂબે એ ઉપર આસક્તિ બંધાઈ જશે.
૨૫. કદાચ કોઇ સિદ્ધિ આદિકથી પ્રયોગદ્વારાએ મોહનો સંજ્ઞમ લાગે તો તે વેળા તો ખમુએ એમજ માનવું કે માયાનું વ્યા તો પ્રાપ્ત્ય છે. જેનાથી માયા ઉત્પન્ન થઇ છે, તે સમયાર નહ પરશ્વતમાં કેટલી મોહિની ભરેલી હશે ? એ વિચારી રચના કરતાં રચનાવાગાનો લક્ષ પહોંચાડવો.
૨૬. આગળ કીયો ઉત્સવ ક્યારે આવનાર છે, તે જાણી તે માટે જરૂર તે સાહિત્યનો સંગ્રહ કરી આદર રાખવો.
૨૭. ભગવત અર્થે પોતાના મુખનો ત્યાગ કરી શ્રીહરિનું કાર્ય દિતચિંતકપણાથી કરવું.
૨૮. શ્રીહરિને કદી પણ કોઇ બાબતમાં પરિગ્રમ ન પડે એવી રીતે વર્તવું.
૨૯. મંત્રણ (કરજ) કરીને સેવામાં લેલવ ન લધારવો તથા અનીતિને માર્ગે મેળવેલું દ્રવ્ય સાહિત્ય શ્રીહરિ કદી પણ અંગીકાર કરતા નથી. માટે નીતિથી ઉપાજીત કરવું.
૩૦. ભગવતસેવાસમયુદ્ધાદિક ભગવદ્ધર્મ અનન્યસરણુયુક્ત રાખવામાં પ્રતિબંધ કરતા હોય, એવો જે કોઇ ધર્મ હોય તો તે ધર્મનો પણ કદાચ લોપ થાય તો તે ભલે ચલા દેવો, પણ સુખ્ય ભગવદ્ધર્મ જાળવવો. કેમકે સુખ્ય અંગરૂપ ભગવદ્ધર્મ જાળવ્યામાં સર્વે પેટા ધર્મ સમાયલા છે.
૩૧. પ્રસંગાનુસાર અન્ય દેવનું પૂજન કરવું પડે તો તેને શ્રીહરિના દાસ જાણી તથા એમાં પણ અંતર્યામી અને તેને પણ ચેતનદાતા ભોક્તા અને અદાણ કરનાર પરપરાએ મૂળ તે તો આપણા ઇંદ્ર પરશ્વત તેનેજ વિગે સર્વ સમાયલું છે, ને ત્યાંજ સર્વનું પરિવસાવ છે, એ શુદ્ધિએ કેરવું.

૨૨. લાભ, અલાભ, સુખ, દુઃખ, દાનિ, ઉદય, મૃત્યુ, જય, પરાજય, નિઃશ્વાદિક કથનમાત્ર અરિથરને પોતાનું માન્યાથી તે બંધનરૂપ થાય છે, તે કર્મોનુસાર શ્રીહરિની ચચાર્થ ન્યાયવાણી ઇન્દ્રિયાએ નિર્મિત કરેલ તે પ્રમાણેજ થાય છે, ને તેમાં પણ સર્વનું રિત સમાયતું છે એ તત્ત્વ મનમાં આણવું.
૨૩. શ્રીહરિ કોઈ પણ સાધનથી સાધ્ય નથી, પણ કેવળ આપ કૃપાએ દયા આણીને કે પોતાના અંતરંગ ભક્તની કદાચી કૃપાકટાક્ષથી પ્રાપ્ત થાય છે. એ હેતુએ સર્વસાધન કર્યા છતાં મદગતીદિકથી રહિત થવું.
૨૪. પુરુષશાસ્ત્રિક કરવા મનોરથ થાય તો શ્રીહરિના કૃપાપાત્ર વૈષ્ણવોદારાએ ચિનિયોગ કરી તેમને સંતોષવા.
૨૫. શ્રીહરિના જન્મકર્મ અને લીલા સર્વ દિવ્ય અપ્રાપ્ત લઈ તેમાં કુતર્ક કે વિપરીત ભાવના કદી પણ ન કરવી.
૨૬. શ્રીહરિએ દેહ ઇન્દ્રિય મન પ્રાણાદિક જે જે દાસને આપ્યું છે, તે સર્વને ઉપયોગ શ્રીહરિના દિતાર્થે કરવો અને સર્વેન્દ્રિય મનપ્રદિને લૌકિક વાસના કૃતિથી અટકાવવી.
૨૭. અન્ય સર્વભગવદીયને પોતાના સમાન ન ગણતાં શ્રેષ્ઠ ગામી પોતે લઘુતા સમ્પન્ન.
૨૮. શુર ભગવદીય ઉપર લૌકિક હુદિયી ભાવ ન રાખવો, તેમ તેમના દોષ કદી પણ મનમાં ધારણ ન કરવા.
૨૯. સર્વમાં અંશઅંશ તરીકે ભગવાન છે, એમ સમજી કાષ્ઠને દોષ અરિયા કે નિંદા આદિ ન કરતાં ભગવદ્દુષ્ટિએ નષ્ટ રહી કાષ્ઠને આત્મા ન કુખાવવો.

દયારામભાઈ.

ગત. વામનદાદશમીના રોજ મુંબાઈમાં ઉત્ત્વાવતી જન્મંતીના પ્રમુખમથાનેથી ગં. ૧૧. વિદુષી બહેન કુંવરબહેને ભાવણ કરતાં જણાવ્યું હતું કે-આપણે મનુષ્યોની જન્મંતિથિ (વર્ષાંક) એમનાં જીવન કાળમાં ઉગ્મતીએ છીએ ત્યારે તેમાં શું કરીએ છીએ? તે પરત્વે એક અનુભવી કહે છે.

જન્મમાંક કે દિનમે, ખાણ ખતવે ગાત;

પણ મૂરખ બને નાહિ, દિવસ ગાંધે જાય.

પણ જેના જીવનથી આ જગતને લાભ થયો હોય તેવા જનોની તો મરણ પછી પણ જન્મંતિથિ ઉજવાય છે; છુએ દયારામભાઈની જન્મંતી ઉજવવાથી તેની હર્ષિરૂડામાં આપણે વધારો કરીએ છીએ. તેને લીધે તેનું કાર્ય જન્મતાના માનસની વધારે સમીપ આવે છે. તેમની જન્મંતી મુંબાઈ તથા બહારગામ પછી વખત ઉગ્મવાય છે અને તેના જીવનનું રક્ત્ય વિદાનો, કવિઓ અને સાક્ષરોએ બહુ સમજાવ્યું કે સમજાવ્યું છે. હું વિદ્વાન, કવિ, કે સાક્ષર નથી, તેથી મ્હારે તે મહાન ભક્ત કવિના વિષયમાં શું બોલવું તે વિચારણીય હોવા છતાં હું આપણે જે કંઈ મ્હારે તે મહાન ભક્ત કવિના પરત્વે તેના જીવન અને જીવનમાંથી કંઈ કરું તે ચાખાનુસારી આપ મને દાનિયા ભક્ત કવિથીના પરત્વે તેના જીવન અને જીવનમાંથી કંઈ કરું તે ચાખાનુસારી આપ મને દાનિયા સંભળશે અને દુધપાક લાડુ વગેરે ખાનારાઓએ આજે રાત્રામાંજ સંતોષ માનવો પડે.

ભક્ત કવિથી દયારામભાઈને જન્મ આન્દોદમાં સોડોદા નામર આપણ પ્રમુદામને ત્યાં થયો હતો. તેઓ સંસ્કારી હતા. તેમજ કવિથીના માનુષી રાજકુંવરભાઈ ચાન્ત, મુઠીય, મરાઠા અને સદનશીલ હતા. એટલે સ્ત્રીઓમાં જે સદ્ગુણ જોઈએ તે તેમાં હતું. તેઓ આચારવિચારથી

શુદ્ધ રસ પ્રભુમાં ચિત્ત રાખતાં છતાં તેઓ શુદ્ધકાર્યમાં કુશળ હતાં. માતા હિંચ અને સંસ્કારી હોય તેની કુખેજ હિતમં પુરુષો અવતરે છે. આપણમાં કહેવાય છે કે—

જનની જણુ તો ભક્ત જન, કો દાતા કો ધર; નહિતર રહેજે વાંઝણી, મત ગુમાવીશ નર.

તે અનુસાર ભક્તના તે માતાએ એકાદશોમંડુલ શ્રીધામનંદાદશીએ જન્મ આપ્યો અને તે દિવસ તેમના ભક્ત જનને પર દષ્ટિ નાખતા કૃતાર્થ થયો, તે તેમના જન ચરિત્ર ઉપરથી સમગ્રાય છે કે 'આકૃતિ: ચણુત કથયતિ' તે અનુસાર તેઓ મુન્દર અને આકર્ષણ કરે તેવી આકૃતિના હતા. કહેવત છે કે 'એક માતા સો ગુરુ સન્માન જ્ઞાન આપે છે: તે પ્રમાણે માતા ભક્તિવાળાં હોવાથી દેવદર્શન અને પ્રભુના ભજનકીર્તન ગાતા તેની આસરે તથા પિતા પણ ધર્મિય હોવાથી કવિના બાળકહૃદયમાં ધર્મભક્તિનું બીજ ન્દાનપણુથીજ રોપાયું હતું. તેમને નિશાળમાં ગુજરાતી વાચન અને ગણિતનો શાલ મળ્યો હતો તથા પિતા તરફથી થોડો થોડો સંસ્કૃતજ્ઞાનનો શાલ મળ્યો હતો. તથા વિશેષ જ્ઞાનનો શાલ કયા-વાતાં શ્રેવણથી મળ્યો હતો. આપણા શહેર કરતાં ગામડામાં ઉછરતાં બાળકોને શુદ્ધશિક્ષણ ઉપગ્રાંત બહારનું પણ કૃતજ્ઞાન મળે છે. આપણી આજકાલની કૃળવણી કરતાં બાળકોનાં હૃદય સુદ્ધિને કટલી બધી ધર્મિક, અસરકારક અને સંજીન કૃળવણી શ્રુતજ્ઞાનથી મળે છે. તે અનુસાર દયારામભાઈને પણ માણસદો, મહાત્માઓ અને સાધુસન્તો તરફથી બહુશ્રુતજ્ઞાન બાળપણમાંજ મળ્યું હતું. તેમને ઉંપતીત આખા પછી કવિને મારે જ્યોતિષીઓએ સાઈ ભવિષ્ય જતાવેલું તે આશ્વાસોને સાથે લઈને તેમના પિતા સહમત થયા તે વખતે તેમનો સંજય દાઢ કન્યા સાથે જોડેલો. તેઓ નિરાધાર યર્ષપડ્યા છતાં માતા પુત્ર એકબીજાને આશ્વાસન આપતા રહેતા. તેમના માતા પણ પુત્રને પરણાવવાની હોય હૃદયમાં લઘ પ્રયત્નચરણવિન્દમાં પહોંચ્યાં. માતાના મૃત્યુથી દયારામભાઈ નિરાધાર થઈ પડ્યા હતા, છતાં તેમની ચિત્તશક્તિ જન્મથીજ પ્રભુપ્રયે હોવાથી સાંસારિક વિપત્તિઓથી ન દબાયા.

કેટલીક રીતે સાંસારિક વિપત્તિઓ કેટલાયે મનુષ્યોને આદર્શરૂપ બનાવે છે, વિપત્તિઓ એક પછી એક આવે છે અને ગાદ અજાનના વાદળોને વેરી નાખે છે. કવિઓને પણ તેમજ ધર્મ પોતાની લક્ષ કરવાની ઈચ્છા નહતી અને માતાપિતા તરફથી પાછો વળેલો પ્રેમનો ઝરા ઈશ્વર તરફ વળ્યો. જેવી રીતે નદીઓને સમુદ્ર ભણી વહેતા રહેવાની, અગ્નિની જ્વાળાને ઉંચે જવાની, પ્રાણુજાનને આકાશ ને વાયુની, આંખને પ્રકાશની અને રાગીઓને આપણની જરૂર છે, તેવી રીતે પ્રેમના ઝરાને કાંઈ પણ રથને વહેલો કરવાની મનુષ્યની ઈચ્છા હોય છે, સાંસારી મનુષ્યો તે પ્રેમ કુટુંબ, દેહ, ધનમાં લગાડે છે. માટે ભક્તોનાં હૃદયનાં પ્રેમઝરણુ ઈશ્વર તરફ વહેવા માંડે છે. તેવીજ રીતે દયારામભાઈનું પ્રેમમય હૃદયઝરણું પ્રભુપ્રયતિ વળ્યું. માતાપિતાના પાંડેલા સંસ્કારાનુસાર વહેવા છી નાસ્તાનિકકર્મ અને પ્રમુસેવાદિ કરી દયારામભાઈ મન્દિર તથા સત્સમાગમનો શાલ લેતાં પોતાના બનાવેલા પ્રભુકીર્તનો મીઠે રાગે ગાવાની ઉત્તમ બક્ષીસને લીધે વારંવારે શ્રીયે અને ઘરમાં તેમનું સન્માન યત્ન તેઓએ સંજીતનો પણ અભ્યાસ કર્યો અને ગ્રીજલસો તથા કીર્તનકારોની મંડલીમાં ભાગ લેવા શાખ્યા આવી રીતે તેમને વિદ્યામાં રસ લાગવાથી એમનું રસિક હૃદય શ્રદ્ધાવિદ્યા ગેળેવડા તથા વજ્રબાણના અશ્વસખાઓના પંદો વિગેરેના અભ્યાસમાં મચ્યું અને પરમાત્માની કૃપાની દીનભાવે શાચના કરવા માંડી, તેથી ભગવાને પોતાના જનદારા કૃપા કરી મહાનુભાવ ભગવદ્ભક્ત વૈષ્ણવશીષ્ઠચારામભાઈએ જેઓ શ્રીમદ્વલ્લભાચાર્યજીના કૃપાપાત્ર હતા અને જેમને ભગવાનનો સાક્ષત્કાર થયો હતો. તથા તેઓ દરરોજ શ્રીમદ્ભાગવતનું પારામણુ અને ભગવદ્વાર્તા વૈષ્ણવો પાસે કરતા હતા. તેમણે કાંઈ ગામમાં

હોડે હરિ આવે નહિ, હૃદય ન આવે રામ;

લુકા જેડે જેડીયા, તેં કવિના શા કામ ?

પણ દયારામભાઈ પ્રભુની કવિતા અને એની લીલા ગાવામાં મસ્ત હતાં. તેમના હૃદયમાં ભગવદવેશ હતો. તેમણે પોતાની સર્વ ઇન્દ્રિયો પ્રભુમય બનાવી હતી. એટલુંજ નહિ પણ 'ચતુર્સ્ત-ત્વર્ણ' સેવા તાસિદ્ધ્ય તરુવિત્તજા' એટલે કે જેમ સોયમાં પરાવાયલો દોરો સોય પછવાડેજ ચાલે તેવી રીતે ભક્તોનું ચિત્ત પ્રભુ પછવાડેજ ચાલે. તેમ દયારામભાઈનું ચિત્ત પ્રભુમાંજ પરાવાયલું હતું. કવિશ્રીના કીર્તનો જેમ વધારે વાંચતા જમ્મએ છીએ તેમ તેમ હૃદયમાં આનન્દોર્ધ્વ આવતી જાય છે. રસિક હૃદયને એમાંથી રસનો સ્વાદ મળતો જાય છે. જેમ ગીતાને માટે કોઈ ગીતાભક્તે 'લખ્યું' છે કે ગીતાને સારી રીતે જાણીએ તો બીજા શાસ્ત્રોની જરૂર નથી. તેવી રીતે કવિશ્રીના જોડલા ગ્રન્થો છપાયલા છે તે વાંચીને વિચારીએ તો જે 'વૈષ્ણવો' સંસ્કૃતભાષા ન જાણતા હોય તેવાને માટે અન્ય ગ્રન્થો વાંચવાની જરૂર ન રહે. તેમના કીર્તનોમાં ભક્તિરસ-છત્રોચ્છ ભરેલો છે. તે સિવાય જ્ઞાન, વૈરાગ્ય, દીનતા, આર્તવં પગે યોગ્ય રીતે ગોઠવેલા છે. કોઈ કોઈ કાવ્યોમાં હેમણે દર્શાવેલી સિદ્ધાન્તો ખડુ સારી રીતે સમજાવ્યા છે. કવિશ્રીએ જે લખ્યું છે તે શાસ્ત્રને અનુસરીને લખ્યું છે. કવિશ્રીની વ્યાવહારિક જ્ઞાનમાં પણ કુશળતા તેમની ચાતુરી તથા શીખામણ ભરેલી જરખીઓ પૂરવાર કરી શકે છે. પોતે સ્ત્રીઆવેશમાં રહીને પ્રભુના લીલાં ગાય છે તે સ્ત્રીહૃદયના ભાવો સારી રીતે સમ્પૂર્ણ આલેખ્યા છે, તેથી રસિક સ્ત્રીઓ જ્યારે તેની ગરખીઓ ગાય છે ત્યારે તક્ષીન બને છે. મહારી રમરણુશક્તિ મળે યાદ દેખાવે છે. જ્યારે હું પ્લેડી ચોપડી ભાગતી હતી ત્યારે મારા માતૃશ્રી જ્યારે 'મારગડો ગેલો ગોઠનસાલછ' અને 'મદિયારી મળી ચાલી મહી વેચવા.' આ ગરખી ગાતાં ત્યારે અને આનન્દથી તેમની સામે જોઈ રહેતાં અને એમ લાગતું કે મા આ ગાવાજ કરે તો નીક. તે સિવાય શ્રીમદ્ભુનાથની આરતી 'કુન્દભાવ છતાડો' તે આરતી પણ પ્રેમથી બધાં મળીને ગાતાં. આ વાતથી હું એટલુંજ કહેવા માગું છું કે આજથી પચાસ વર્ષ લગભગ કાઠીઆવાડના વૈષ્ણવ ભૈરંગીઓમાં પણ એમનાં પદો પ્રેમથી ગવાતાં હતાં. એટલે એમનો લાભ માત્ર ગુજરાતના ભૈરંગીઓએજ લીધો તેમ નથી પણ કૃષ્ણપ્રેમી તરીકે સમજનાર દરેક જોડેનાએ લાભ લીધો છે અને તે વાત એક સ્ત્રી તરીકે મૂકતાં મળે આનન્દ યાવ છે. ભગવાન શ્રીકૃષ્ણ ગીતામાં શ્રીમુખે કહે છે—

‘અંતકાલે ચ મામેવ સ્મરન્ મુક્ત્યા કલેવરમ્’

તે પ્રમાણે આજી જીવન પ્રભુગુણ ગાવામાં વિતાવી અન્તિમ સમયે પણ પ્રભુને દર્શન દેવા મિનંતિ કરી કે તે મુજબ પોતાનું અન્તિમ પણ મુધાર્યું. મસાલ જેમ પોતાને પ્રકાશ આપી જગતનો અન્ધકાર પણ દૂર કરે છે, તે ન્યાયે ભક્તકવિ શ્રીદયારામભાઈએ પોતાનું જીવન મુધારી જગતના મનુષ્યોનાં જીવન મુધારવા પોતાના અમર કાવ્યો જગતમાં મૂકી ગયા છે. અન્તમાં હું કહું છું તેઓ મર્્યા નથી પણ જીવન્ત છે. જુઓ—

કીધાં છે શ્રીહરિમરણો, ટાળ્યા છે જન્મ ને મરણો;
સર્વ ! શ્રીકૃષ્ણના ચરણે, મુલા પણ જીવતા તે છે.
કીધાં માતા-પિતા ઉત્તવળ, કીધું છે કુલ પણ ઉત્તવળ;
કીધું છે જીવન પણ ઉત્તવળ, મુઆ પણ જીવતા તે છે.

શ્રીદયારામ: એક ભાવંજલિ.

‘હંદગીમાં એકેય’ વાર ન રહ્યું હોય એવું માનવી કોઈ દશે ? જીવનમાં કોઈ દૃષ્ટ કે અદૃષ્ટને ખાતર ત્યારે અંતઃકરણ રહે છે ત્યારે એનું મુજબતર ભક્તિ હોય છે. પ્રેમ અને સમર્પણના ભાવથી ભાગ્યથી સંવેદના એ ભક્તિ. એથી ભક્તિના ઉપાસક કવિ દયારામને નમ્ર ભાવે આજે અમારી ભક્તિની અંજલિ ધરું છું. કવિઓએ એને કવિ કહી પોતાનો ક્યો છે, સાહિત્યસિદ્ધાંતે એને સાહિત્યકાર માન્યો છે. દયારામ કવિ હતા, સાહિત્યકાર હતા, પણ એથીયે મોટા એ ભક્ત હતા.

દયારામની કવિતા વાંચતાં એમ લાગે છે કે એ કોમળી પાછળ પેસા ચલા હતા. કોમળે ખાતર એમનું અંતઃકરણ રહ્યું હતું. અને એ વહેતાં આંસુની ઘણી કવિતાઓ આપોઆપ સરળપણ ગઈ છે. જ્યાં પેમળાને, આ ગાંડપણને કેટલાક સાહિત્યકારોએ પ્રણયનું રમ્ય રૂપ આપીને દયારામને કાંકડા, રંગીનો અને પ્રણયી કહ્યો છે. અને એ કોઈય સાચા છે. રમ્ય પ્રણયની પાછળ ફના થઈ જનારોનું પૂર્ણ ભક્ત બની શકે છે. ભક્તિ અને સમર્પણ વિના તો સાચો પ્રણય હોયજ નહિ. દયારામને પ્રણય દત્તો પુરુષોત્તમ સાથે. રાંધા જેવો એ પ્રણય રમ્ય રૂપરંગ અને આકર્ષણોમાંથી વિકાસ પામીને આખરે વિશુદ્ધ અને અઘોષિક ભક્તિમાં રૂપાંતર પામ્યો. એટલા ખાતર પ્રણય, પ્રેમ અને ભક્તિ એ તો વરિનાં જીવનમત હોય છે. ભક્તિ કાયરો માટે નથી, મદાદુશ માટે હોય છે. ભક્તિમયો જીવનયોગ જીવવા અને જીવવા જે તપ અને સાધના આપવાં પડે છે એ શરતો અને મર્દ. માણસની સિદ્ધિ હોય છે.

માર પદો પ્રખ્યાતી, સવારસાંજ ધુખ્ખી આર્યના કરવાથી, મંદિરે દર્શન કર્યાથી કે માળા દેશવાથી ભક્તિયોગ સિદ્ધ નથી થતો, ભક્તિ એ તો અસિધારાત્મક છે. કર્મયોગ અને જ્ઞાનયોગ કરતાં ભક્તિયોગ જીવને પ્રભુની નિકટતા વધેલી પ્રાપ્ત કરી શકાય છે એવી ભક્તોની વાણી સાર્થક છે. પણ એમાં શુદ્ધિ અને જ્ઞાન કરતાં અંતઃકરણનું અર્પણ દેવાથી એ કહિનમાં કહિન સાધના છે. દેખાવે સરળ પણ આચરણે કુબકર ભક્તિયોગ જીવવા એ પારો જીવવા જેવું છે. નિર્મળનું એ દૂધ સિંદુરસુતનેજ પડે છે. ગમે તેવા સામાન્ય માનવો માટે ભક્તિ નથી. ભુલિ-વાંલી લાંબી પડોળી દલીલબાજ અને વાદવિવાદોમાં જેમની તપશ્ચર્યા સમાર્થ જાય છે, જ્ઞાનના તર્કવિતર્ક અને વિતંડાવાદમાં જેની પ્રતિભા નિર્વિવાદ જાય છે એવા જ્ઞાનીઓ અને કર્મકાંડીઓ કરતાં પોતાના અંતઃકરણને નિયોતી એમાંથી અમૃતધારા વધાવી જમતાની દુષ્ટતા ધોનાર ભક્તની જીવનસિદ્ધિ વધારે વ્યાપક ચિરંજીવ અને મહાન છે.

ભક્તિને જીવનમાં જીવતાં જીવતાં દુનિયાની આંખે મૂર્ખ અવ્યવહાર અને અત્યા મનાયતા ભક્તકવિ નરસિંહ મહેતાની આંતરવેદના અનુભવીને ગાંધીજી જેવા અર્પણીનું શુંના કર્મયોગી પોતાનું જીવન ધરતર ઘટે છે. આંસુનું જલ સોંચી સોંચેને પ્રેમવેશ ઉછેરનારી, પુરુષોત્તમને ખાતર સંસારનું સર્વ શ્રદ્ધ-સુખ-રાણીને તથા જંતાવનને માર્ગે સંચરનારી ગાંડી મીચેને સંભારી ક્યારેક માંડવીયાજી જેવા પ્રખર જ્ઞાનયોગી પોતાના અંતઃકરણની શાંતિ અનુભવે છે. એવા ભક્તિયોગીની જીવનસાધના કરીને જેણે જીવંતથી સાહિત્યને પોતાનાં આંસુથી ભીંજેલું રાખ્યું છે એવા દયારામનો જીવંત પર અનંત ઉપકાર છે.

દ્યારામનાં જે સુગારસ્સ છલકાય છે તે લૌકિક રતિના ઉદાસ નથી પરંતુ મધુશ્યુના અલૌકિક માધુર્યની ભક્તિના પ્રવાહ છે. આ અલૌકિક સુગાર અને અલૌકિક માધુર્યભક્તિનો ભેદ ન સમજવાથી અને ખતેખાતે શબ્દમયી પરિભાષા ઉદ્દેશક હોવાથી દ્યારામનાં કાવ્યો માત્ર સુગારનાં છે અને દ્યારામનાં તો શંકડો, રમીટા અને પ્રણયી કવિ છે એવું મતભેદ કેટલાક વિવેચકોમાં દેડ થયું હતું અને દેડાય છે. લૌકિક રતિમાં આત્મામાંથી પ્રેમ નીચે ઉતરી સ્થૂલ દેહમાં સંભાગ અથવા વિપ્રલંભ સુગારમાં પરિણમે છે. અલૌકિક માધુર્યભક્તિમાં સ્થૂલ દેહની સ્થૂલ કામવાસના પલટાઈ 'રસમય' પરમાત્માની દિવ્યમૂર્તિમાં પરાભક્તિ રૂપે પત્તટાય છે. લૌકિક રતિનું આલંબન સચેતન સરીર છે, અલૌકિક માધુર્ય ભક્તિનું આલંબન પરમેશ્વરની રસમય મૂર્તિ છે અને છવ—ધ્રુવર વચ્ચે વિવશાલ મધુરભાવ સ્થાપી બંધાયેલો હોય છે. આ દૃષ્ટિથી જોઈએ તો દ્યારામનાં કાવ્યો શુદ્ધ ભક્તિનાં છે, માત્ર સ્થૂલ પ્રણયનાં નથી.

આપણા સાહિત્યમાં ભક્તિની આરાધના જુદા જુદા સ્વરૂપની મળી આવે છે. સખાં ભાવે અને દાસભાવે એમ જુદા જુદા રૂપમાં દેખા દે છે. અણુતુની ભક્તિ સખાભાવની હોવાથી અને નરનોરાયણી ભક્તિ કહી છે. નાધાની ભક્તિ સખાભાવની, મથોદાની વાતસલ્યભાવની અને હનુમાનની દાસભાવની ભક્તિ કહેવાય છે. ભક્તિનાં આ બધાં સ્વરૂપોમાં સખાં ભાવ છવનમાં છવિને જે ભક્તો મોતીની રૂપાસ મૂકતા ગયા છે એમાં શુદ્ધરો દ્યારામ અર્પીને મોતીની ભક્તિ પરંપરા સાચવી છે. દ્યારામનાં કાવ્યોને પૂર્વગ્રંથ વિના જોતાં લાગશે કે એના કુદવાકાશમાં રસમય કૃષ્ણમૂર્તિ કોની રીતે અખંડ રાસ રમે છે? કવિના અનુભવમાં આવતી આકૃતિ અથવા સ્વરૂપ તે શાંકર વેદાંત પ્રભાવેની માયિક સમુલ્લભૂતિ નહિ પરંતુ સ્વેચ્છાવિદ્યાર કરનારી નંદમયી સત્યમૂર્તિ છે, જેની સાથે છવની ગોપીસદસ મૂર્તિને રમણ કેરવાનું છે, આ સર્વજ્ઞ આવેશથી પ્રકટ થતો ભજનીય શીશુજી અને ગોપીસદસ ભક્ત દ્યારામને અખંડ રાસ સંભળનાં કાવ્યોમાં શબ્દપ્રહારો બાજુ વળતમાં રહે છે.

આ પ્રેમભક્તિના માર્ગે જે ચાલી હાય લાગી તો તે સર્વજ છે અને સુગમ છે. અને જે ચાલી હાય ન લાગી તો વિઝેરી તોડનારનાં કાંઈ કપાય તેવા પાણ છે. ધણાએ આ પ્રેમમાર્ગનાં આલંબનાદિ વિભાવોનું રહસ્ય જાણ્યું નથી અને તેથી પતિત થયા છે, જેઓએ જાણ્યું છે તે ભક્તો કૃતકૃત્ય થયા છે. વિજ્ઞાતીય વ્યક્તિ પ્રતિની પરજીવાનામાંથી છૂટેલી અને મનુષ્યભાવમાં આવેલી રતિ—પ્રણયને પદાવીને સર્વ જાતિ વગેરે ભેદોનું અતિક્રમણ કરનારી, સ્પંદ યલવાદની ઉછળતી અને ઉત્કટ પ્રેમરસની મોટી નદી, પરાભક્તિને વેરલાં ભક્તોનાં છવનમાધુર્યથી ફર મનુષ્યભક્તિના અતઃકરણમાં કંઈક બીનાશ રહી છે; અને આ બીનાશને મોનેવતાની જગેતા છે.

કિસનસિંહ આવશ્યક

श्रीवाक्पतिपादा विजयन्तान्तमाम् ॥

शुद्धाद्वैत

अने

सहितभारतः

५५८

पै५,

१८६०.

अंक १०.

श्रीवद्वला

४५५.

सीतकालके पद.

राग आसावरी—भोजनके । जेमत रामरुण दोऊ भैया जननी जसोदा जिमावेरी ॥
खारे खाटे मीठे बिजन स्वाद अधिक उपजवेरी ॥१॥ करत बयार सखी सहचरी मधुर बचन
मुख भाखेरी ॥ परमानंद प्रभु माता हितयों अधिक अधिक रस चाखेरी ॥२॥ पद ॥ छेज बलाय
छाईले तेरी भोजनकों कित करत अवार ॥ गाल लगाय फाँयो मुख चुंमन आतुरताई परोसी
थार ॥१॥ नंदबाबा समझवत मोहन करत बालकैलि सुखसार ॥ गोविंदप्रभु रसिक गिरिधर
पिय प्रजमुखबाई नंदकुमार ॥२॥ पद ॥ भोजन कीजे मोहनलाल ॥ भांतभांतके बिजन कोने
रसिक रसिली बाल ॥१॥ परोसतही अधिक आवि उपजत बोलत बचन रसाल ॥ चितवनमें
तनमन धन दीनो मोहन मदनगोपाल ॥२॥ अतिही मुख बिछसे बहु माँतिनसों भाव परम
रसाल ॥ श्रीविठ्ठल गिरधर मुख निरखत अखियां भई निहाल ॥३॥ पद ॥ भोजन करत हँ पिय
प्यारी ॥ चाखि चखावत देत परपर हास्याविनोद देख छवि न्यारी ॥१॥ भांति भांति पकवान
परोसे मेवा मिथी सीतल भरि झारी ॥ श्रीविठ्ठलप्रभु हितही अरोगत दासनको जूठनकी धारी ॥२॥
पद ॥ भोजन करत नवल पिय प्यारी ॥ नवरंग नवल सिंगासन बेठे नवरंग रसिक बिहारी ॥१॥
नवल थार नव खटरस बिजन परोसत नवल छित्तारी ॥ धुकुटी असपरस चितवनपर हित
हारिंस जाय बलिहारी ॥२॥ पद ॥

राग टोही—अरी बु बरवार उझकि उझकि आवे जानि भोजनकी बिरियां ॥ जेवत डोलत
नंदगोव बोटा ले बरजीहे सो बिरियां ॥१॥ पर न मुहात रखो नहीं जात फित्त निडरीयां ॥
चनुभुजप्रभु गिरधरन लालकों तकिही रहत दिन भरियां ॥२॥

राग खट—चलि देख सखी विधि आज भली नवकुंजनमें दोउ जेवतरी ॥ पिय
हाथ हथीठीके जेवनकों पग सीस पर नहीं हितवतरी ॥१॥ छलित्तादि सखी कर जोरि रही अरु
करि विनति नहीं चितवतरी ॥ यह सुख भाधुरी जो न लहे बृथादिन योही चितवतरी ॥२॥ पद ॥

राग आसावरी—नवलकुंवर ब्रजराज लाडिले जेवत रोटी ओर बेरी ॥ बरी भुजे
ओर खीचरी सघ घृत अधिक सुगंध परी ॥१॥ पांरं कोमल हरे सधाने जामे राई बहोत चदी ॥
त्रोपुरारी गिरधर रुचि उपजी पीवत मीठी माग फडी ॥२॥ पद ॥ भोजन करत नवल पिय
वेठी गोपकुंवरकी पांति ॥ ललित तिवारी पदा रतनके शरी जल कंचनकी मांति ॥१॥ मानिक थाठ
विशाल घरे बहु बेलबेली नाना मांति ॥ खटरस विंजन घरे तिनके मधि देखत जिनके तय
सिरात ॥२॥ पायस करत रोहिनी फिर २ अति आनंद मनमांस सिरात ॥ लपटत झपटत सख
संग मिली देखि जसोदा मन मुसकात ॥३॥ अष्ट सिद्धि नवनिधि दासी तहां लठावत जुंमन मन
ईतरात ॥ देखत यह सुखसुं सुरपुरवासी भये न ब्रजजन आंख चुचात ॥४॥ जैती सुखसेपति
सब ब्रजनजनकी पल २ छिनु २ वे गिनत न जांत ॥ गोवर्धनेस गिरधर प्रसादको ब्रंदांडुकी
मति ललचात ॥५॥ पद ॥

सेराके भोजनके—राग जेतथी—भोजन करंत किशोर किशोरी ॥ मदनगोपाल
राधिका बनी अनुपम जोरी ॥१॥ विविध पाक पकवान थार भारि सखीयन आन घरे ॥ जेवत
लाळ लाडिले रुचि सों स्वादित भोग खरे ॥२॥ यमुनाजल ललित ले आई ले जलपान कर्यो ॥
पिय प्यारीको बीरी दे गोकुल पाय पर्यो ॥३॥ पद ॥ जेहों दुलहे लाळ दुलहेया ॥ बहुविधि सांफ
सुपारे विंजन ओर बनायो घैया ॥१॥ कंचनथार कंचनकी चोकी परोसत मोद चढैया ॥ ठडी
पवन करत रोहिनी लेत बारने मैया ॥२॥ करि अचवन मुख बीरी दीनी आनंद उर न समैया ॥
लाळ लाडिलीकी छवि उपर परमानंद बल जैया ॥३॥ पद ॥

खीचरीके पद—खीचरी भोर ही रुचि देन ॥ परत हित सों प्रीति सजनी करंत हे
दुम बेन ॥१॥ प्रातपति दग पूतरी मय उमे सब ऐन ॥ गोरस रुचि सों लेत भोगी बलि
आलस नेन ॥३॥ चरत इत उत नेह पूरित कलकटाच्छन सेन ॥ स्वाद भेदी अघस अंगत पुनि
जगावत मेन ॥३॥ सीत हेमंत प्रीत घोष सहचरी दे चेन ॥ ब्रंदावन हितरूप अचवन
जगत बीरी लेन ॥ ४ ॥

सीतकालके पोढवेके ॥ पोढे हरि राधिकाके संग ॥ रंगमहेलमें ललित तिवारी परदा परे
सुरंग ॥१॥ झलमलात पावक अंगीठी रतन जटित बहोत रंग ॥ कुंमनदासप्रभु गोवर्धनघर मोहत
कोटि अनंग ॥२॥ पद ॥ पोढे रंगरमनीराय ॥ रंगमहेल चित्र कीये सुंदिर जगमगात नुराय ॥१॥
रत्नजटितकी आगे अंगीठी परदा परे सुहाय ॥ बल जाड छविली छविपर कृष्णदास बलि जाय
॥२॥ पद ॥ पोढे रंगमहेल नंदलाल ॥ दोऊ और धरी हे अंगीठी परदा परे रंग लाल ॥१॥
ललितारिक सखी चरन चांपत निरखत होत बेदाख ॥ रसिक स्वामिनी लाय लई उर भरि
लीनी अक बारि ॥२॥ पद ॥

राग विहाग ॥ पोढे माई प्रीतम प्यारी संग ॥ रंगमहलकी ललित विवारी परदा पे
हे सुरंग ॥१॥ जगमगात पावक अंगीठी बरी रति रसरंग ॥ नंददासप्रभु प्यारी रति हे मुदित
अनंग ॥२॥ पद ॥ रतन जटित पलकापर पोढे कैलि करत दोक मिलत परस्पर ॥ पर गये परदा
ललित महलमें जगमगा होत अंगीठी दीप धरे ॥१॥ रति रसकैल विलास हरिस अचरावत पीवत
हे दग भंरि ॥ मदनमोहन गिरधर क्रीडा विनोद मुदित परस्पर भवर चढ़ेछ करि ॥२॥ पोढे हरे
रंगमहल प्रिय प्यारी ॥ सुंदिर रची हे सेज ता उपर तकीया धरे हे सवारी ॥१॥ जगमगा होत
अंगीठी पावक गोखन धरे हे दीप सुधारी ॥ मधुर सुर गावत कौकिल कठ कृष्णदास बलिहारी
॥२॥ पद ॥ पोढे माई रंगमहल गिरधारी ॥ सुंदिर गादी तकीया सेज रची धरी अंगीठी सुखकारी
॥१॥ कंठ लगाये भुज दे सिरहाने अधरावत पीवत मुकुनारी ॥ बोन मधुरे सुर बजावत ललित
कृष्णदास बलिहारी ॥२॥ पद ॥ अरी इन पोडस वारि ओगई ॥ सीतें सति पावन तर काई
सीत सतावन आई ॥१॥ अतिसे श्रमित जानि प्यारिने दीनी सोर सेंगारि ॥ परमानंदप्रभु पर
तनमन जोवन चार ॥२॥ पद ॥ पोढे रंगमहल कुलदाई ॥ सीत समे प्यारी प्रीतम दोड पोढे
ओढे रजाई ॥१॥ विविध भांतके परदा चहुदिस अंगीठी धराई ॥ आसकरन प्रभु मोहन नगर
सोभा बरनी न जाई ॥२॥ पद ॥ ए दोऊ दुरत सेज सुख सोये ॥ करत पान मकरंद प्रिया
प्रिय अधर पानरस जोये ॥१॥ तनसों तन मनसों मन मिलवत नैन पान रस भोई ॥ कृष्णदास
प्रभु सुखविधि विलसत मदन मान सख खोए ॥२॥ पद ॥

कीर्तनमाला.

[लेखकः—रा. रा. चंपकलाल छयाँलदास कीर्तनीयाजी.]

राग इमन ॥

(विध्वजित धर)

ताळः 'आताळ'	मात्रा १२	छंदान	स्वरूपी	(विध्वजित धर)
म तीन		स्वाई		
नी —	ध प	२ ग म	अम पध मप	अरे सांणी २ सा
धां —	म स	७ नी	रे... २	६ २ नी
नी २	म ग	— २	अमप २	३ २ सा सा
प धि	न म	— ध	२... —	७ नी — २ध
नी ३३	ग ग	पम अरे	अम पध	सांणी धप म म
सा ३३	दा दा	अम दा ति	२ध म	अरे प म म नि नी

स्याम सजनी शारद रजनी पुलिन मय्य वृत्त्य नाट्य सांख्य वाता प्रगता जिरन पंद करत
कामिनी ॥ गिड गिडां गिड गिडां गिड गिड गिड गिडां पिथीकिट ता लम दर्द मांलांनं

अननननननन सुर उर्पगनी ॥१॥ स्यामको यह नाद भावे तांत्रगनाता त्रगता गतिहि लखे तत्तत
तत शब्द लेन कोटि कामिनी ॥ कृष्णदास यशहि गावे कर ताथेई थेई नचावे कांकति कांकति
कांकति कांकति करे मृदंगनी ॥२॥

अर्पण !

[नीचेना शेष 'तत्पदार्थो' नामना श्रीरामानन्द संप्रदायना पत्रना विद्वान् तन्त्रीना छे.
श्रीवैष्णवीय वेष्णुवोने गावे लांडवाभां रस लेता भी. नष्टपरवाल देसाधने आ. शेष अर्पण
करानेन हाथ विरभीश. जी. ज. शाह.]

प्रश्नोत्तर.

कच्छसे एक महात्मा पछते हैं कि 'लख श्री लगाकर भगवान् के अतिरिक्त अन्य किसी
देवको या अपनेसे बड़ोको नमस्कार नहीं करना चाहिये' ऐसा चिरकालसे सुना जाता है।
इसमें तथ्यांश कितना है ?

उत्तर—लख श्री अथवा कोई भी श्रीवैष्णवोचित तिष्ठक करनेके पश्चात् मनुष्यमें अपने
सम्प्रदाय और अपने इष्टके लिये परम आग्रह होना चाहिये। तिलक वैष्णवताका वाद्य चिह्न है।
मन्त्रसंस्कार और उससे उत्पन्न होनेवाले काम, क्रोध, लोभ, मद मोह आदि आन्तरिक विकारोंका
नाश वैष्णवताका आन्तरिक चिह्न है। इन दोनों प्रकारके चिह्नोंसे युक्त होनेके पश्चात् भाग्यधरेणासे
इदममें सर्वथा सार्विकभावका उदय होता है। उसके पश्चात् स्वयमेव अपने ही उपास्यदेवके लिये
परा प्रीति—परा भक्ति उत्पन्न होती है। उसका परिणाम यह होता है कि श्रीवैष्णव स्वतः ही
अन्य देवकी उपासना आदिसे पराङ्मुख हो जाता है। जिस प्रकारसे विवेकवर्ती पतिपरायण
स्त्री स्वपतिके अतिरिक्त अन्य किसीके लिये भी अपना शरीर, मन, वाणी, बुद्धि आदिका
पतिभावसे अर्पण नहीं करती है उसी प्रकारसे परम रामभक्त पुरुष भी अपने शरीर, मन
वाणी, बुद्धि आदिका भगवान् के अतिरिक्त किसी भी अन्य देवके लिये स्वामिभावसे समर्पण नहीं
करता है। इसी स्वामाविक वस्तुको लेकर यह कहा जाता है कि लख श्री लगाकर अन्य देवको
नमस्कार नहीं करना चाहिये।

तब यहाँ एक दूसरा प्रश्न उठता है कि उपास्यदेवकी भावनासे भले ही अन्य देवके
प्रति मस्तक न झुके परन्तु ऐसे ही सामान्य बुद्धिसे अन्य देवको नमस्कार करनेमें क्या क्षति है ?
इसका उत्तर यह है कि हिन्दू, मुसलमान्, ईसाई आदि सभी उसी एक ही भगवान् रामजीकी
प्रजा है तथापि हम हिन्दुओंको नमस्कार आदिसे सत्कार करते हैं, अन्योको नहीं; अथवा हम
वैष्णव साम्प्रदायिक प्रथाका अनुसरण करके जैसे वैष्णवोको ही नमस्कार आदि करते हैं वैसे
शैव, शक्त आदिको नहीं करते और यह सबके न करनेका कारण यह है कि इन लोगोंके

અમને હમારે શુદ્ધદેવકે પ્રતિ હમારે સમાન ઉચ્ચ ઓર પવિત્ર ભાવના નહીં હૈ । હસી પ્રકારસે મ અપને ભગવાનકો હી પ્રણામ કરના અથવા ભગવાનકે અન્ય અવતારોકો હી નમસ્કાર કરના પના ધર્મ સમક્ષતે હૈં ઓર અન્ય દેવોકે પ્રતિ હમારી આદરપૂર્ણ ઉપેક્ષા હોતી હૈ । હમારે હૃદયમેં અન્યદેવકે પ્રતિ ઘૃણા દ્રેપ ન હોતે હુપે મી નમસ્કારવુદ્ધિ ઉત્પન્ન હી નહીં હોતી । વે અન્ય દેવ ા અન્યોકો દષ્ટિમેં પરબ્રહ્મ બને હુયે હૈં । શૈવ શિવકો હી પરબ્રહ્મ ઓર શ્રીરામાદિકો શિવકા અજ્ઞાનતે હૈં । શાક શક્તિકો હી જગન્નિયન્ત્રી ઓર શ્રીરામાદિકો શક્તિકા અજ્ઞા માનતે હૈં । ગાણપત્ય મી એસા હી કરતે હૈં । અતઃ સામ્પ્રદાયિક દષ્ટિસે તથા અપને પવિત્ર ભાવોંકી રક્ષાકે લિયે હમે મી હ માનનાં કી ચાહિયે કિ હમારે ભગવાન શ્રીરામ હી પરબ્રહ્મ હૈં ઓર અન્ય દેવ હમારે ભગવાનકે મજ્ઞ હૈં । જૈસે અન્ય દેવોપાસક શૈવ, શાક આદિ હમારે ભગવાનકો પ્રણામ નહીં કરતે વૈસે હી મ મી અનેક દેવોંકો પ્રણામ નહીં કરતે । તાત્પર્ય યહ હૈ કિ હમેં હમારી દષ્ટિમેં શ્રીરામકે અનન્ત રૂપકો હસં પ્રકારસે મર દેના ચાહિયે કિ ‘મરી સરાય રહીમ ઓલિ આપ પાથિક વિર જાય’ કે મનુસાર કોઈ અન્ય દેવ હમારી દષ્ટિમેં આવે હી નહીં ।

અપનેસે મહે ભગવદ્વક્તો અથવા ગુરુ અદિકો પ્રણામ કરનેકે લિયે તો હમારી ધાર્મિક મર્યાદા હૈ । શ્રીવૈષ્ણવ ભગવત્સ્વરૂપ હોતે હૈ । અન્ને પ્રણામ કરનેમેં કિસી મર્યાદાકા વિલોપ નહીં હોતા હૈ । ‘હાલશ્રી હૃદ્ધ્મીજીકા રૂપ હૈ હસલિયે મસ્તકમેં ઉસે ધારણ કરકે કિસીકો મી પ્રણામ નહીં કરના ચાહિયે, હસ ધારણમેં દોષ ઓર અમ હૈ । વૈષ્ણવોંકો પ્રણામ કરનેમેં કોઈ ક્ષતિ નહીં હૈ । શિવજીકો મી વૈષ્ણવ માનકર નમસ્કાર કરનેમેં કયા ક્ષતિ હૈ હસ પ્રશ્નકા ઉત્તર યહ હૈ કિ શિવજી દો હૈ । ઇક વૈષ્ણવ ઓર દુસરે અવૈષ્ણવ । ત્રિપુન્દ્રધારી, મત્સ્યધારી, જટાધારી, મુન્ડમાલધારી, વૃષભારોહી, સ્મરણચાલી, રદ્રાક્ષધારી શિવ અવૈષ્ણવ હૈ, અનેક સામને હમારા મસ્તક નહીં હુક સકતા હૈ । ભગવદ્વક્ત, હુલસીમાલધારી, શુદ્રકાય, પદ્મસંસ્કાર સમન્વિત શિવ હી શ્રીરામમક અત્તપ્ત વૈષ્ણવ હૈ । એસી શિવમૂર્તિકે સામને નમસ્કાર કરનેમેં હમે કોઈ ક્ષતિ પ્રતીત નહીં હોતી હૈ ।

—ભગવદાચાર્ય.

જ્યોતિષનો અદ્ભુત ચમત્કાર.

જ્યોતિષ વિદ્યા માહુ જમાનાની એક અદ્ભુત વિદ્યા પુરવાર થઈ ચુકી છે. પણ તેના અભ્યાસ તથા ઉપાધુમાં ઉત્તરીને ફલાદેશ જેવા માટે અમ અધા લેતા નથી તેથી ત્રદાણુઓને વિશ્વાસ ઘટતો જાય છે.

અમારે ત્યાં ઘણાજ પ્રાસથી ચીવટથી સ્વોટ રીતે કાર્ય થાય છે તેની ખાતરી તો અમારી સાથેના પ્રસંગથીજ થાય તેમ છે. જન્મોત્તરી, પ્રજોત્તરી, જન્મ ફલાદેશ, વર્ષફલ, માસફલ, જન્માક્ષર વગેરે થોડાજ દરથી કરી આપવામાં આવે છે. જિજ્ઞાસુએ સવા આનાની રીકીટ બીડવી, હસ્તરેખા પણ જોવાય છે.

પંડ્યા અમૃતલાલ ગીરધરલાલ,

ડે. શ્રીકૃષ્ણ મંદિર, ડાંક (કાશીવાસ)

સુદૃઢિત અને લક્ષિતમાર્તક.

સાહિત્યનો પ્રચાર.

(વ્યાખ્યાતા:—જોસ્વામી શ્રીમજ્જનાથસાલજી મહેતાદેવ.)

શ્રીમાદ્ધૃષ્ટ્યચરણકમ્ભમંદર-દર્શિપાસુ પ્રિય વૈષ્ણવદે! આજે જગતનો પ્રવાહ કે તારક વળી રહ્યો છે અને તે થું પ્રગ્ભ કરવા મંથી રહ્યો છે તે સૌ સુરોથી અગ્રાત નથી. બાદ કાળમાં જેવી પરિસ્થિતિ હતી તેવીજ પરિસ્થિતિ ધીમે ધીમે થતી જણાય છે. લોકો આર્થ-ધર્મથી શિયિત્ર થતા જાય છે. વિધર્મ જે ગતિમાં લાઇ જનારો માર્ગ છે તે પ્રતિ દોડતા જણાય છે. તેઓ એમ માને છે કે આર્થવર્તનો ધૃશ્વર અને ધર્મ નજામાં કલ્પિત તરવો છે. તેને માનવાની કે પણુ આવશ્યકતા નથી. સાસ્રોએ ખોટાં છે. ચગેરે પ્રલાયો કરી પોતાનું અકલ્યાણ કરી રહ્યા છે. અરે! તેઓ પોતાનો સર્વનાશ કરી રહ્યા છે અને મનમાં ધુલ્યાય છે કે અગે વાસ્તવિક માર્ગને પ્રદણુ કર્યો છે. હે પ્રણુ છું કે યદિ તમે ધૃશ્વરને નથી માનતા તો તમારે તમારા પિતાને પણ ન માનવા જોઇએ. તમે તમારા 'આ પિતા છે.' એમાં શં પ્રત્યક્ષ પ્રમાણુ આપી શકશો કે તમારી માતા અને અન્ય પરિચિત જનોના ક્યનથીજ અનુમાનદ્વારા 'આ મારા પિતા છે.' એમ માનવુંજ પડશે. છૂટકોજ નથી. તેમ અમારા ધૃશ્વર અને ધર્મના તરવો જમારા પ્રાચીન શાસ્ત્રો વણુવે છે એટલે તેને ન માનવા એ જરાએ હુક્તિસંગત નથી તેમાં જરાએ મુદ્ધિમતા નથી. તમે જો શાસ્ત્રોને ન માનતા હો તો તમોને ધૃશ્વર નથી કે ધર્મ એ ધર્મિંગ છે એવો અર્થશાન્ય લવાય કરવાનોએ અણુમાત્ર અધિકાર નથી. આસ્તિકો શાસ્ત્રોને માનનારા વાદીઓ સાથે શાસ્ત્રાનુસાર શાસ્ત્રાર્થવાદચિવાદ કરતા કટિબદ્ધ છે. પણ જે નાસ્તિકો છે, તેવા સાથે વિતંડા કરવા જરા હુમ્મલા નથી રાખતા.

વૈષ્ણવો! આવા સમયમાં જો આપણે ધાર્મિક સાહિત્ય વાંચ્યું હોય, તેનું અભ્યસિદ્ધાર મનન કર્યું હોય, તોજ તેવા જડવાદીઓનાં મુખમહનો કરી સપ્રોએ અન્યથા આપણે પણુ તેઓના પ્રભાવમાં નાસ્તિકવાદમાં પ્રસ્ત ધર્મ જઇએ એ સ્વાભાવિક છે. વિજ્ઞાન કહે છે કે વિચારોના એ ક્રીટાણુઓ હોય છે. સ્વસ્થ શરીર વા મસ્તિષ્ક પર ડેરી ક્રીટાણુઓ અસર નથી કરતા પણ જો અસ્વસ્થ મસ્તિષ્ક હોય તો તે પર તે ડેરી ક્રીટાણુઓ માત્ર અસર નથી કરતાં કિન્તુ ધર કરીને ધામાજ નાંખી દે છે. તેવીજ રીતે જેનું મસ્તિષ્ક ધાર્મિક સાહિત્યના વાંચનથી અને સત્ વિચારો તથા આચારોના સેવનથી સ્વચ્છ નથી હોતું તેવા નાસ્તિક-મસ્તિષ્કનો ડેરી જનુઓ ઝટ પ્રવેશી જાય છે. અને તેને પોતાના પ્રભાવથી એવું પ્રભાવિત કરી દે છે કે તેને તદ્દન નાસ્તિક કરી દે છે મારેજ ધાર્મિક સાહિત્યના વાંચન અને તેનાં પ્રચારની કેટલી બધી આવશ્યકતા છે તે સદજ જણાઇ આવે છે.

વૈષ્ણવો! મેં એ તમને સ્પષ્ટ સમજાવવાનો પ્રયત્ન કર્યો છે કે પ્રણુની પ્રણુતાથી જે અમણુ હોય છે અને જે નિતાન્ત પ્રચ્છન્ન હોય છે તેને પણ અનતોગતા પ્રણુની પ્રણુતા મને કે કમને માનવીજ પડે છે. પ્રણુની એજ વિશેષતા છે કે તેઓ સર્વ લૌકિકના જેવી લીલાઓ કરે છે તથાપિ પ્રણુમાં અને તેની લીલામાં જરાએ આદૃતલુક્ષતા નથી સંભવતી. શ્રીમદ્ભાગવતમાં લખ્યું છે કે:—

દ્રવ્યં કર્મ સ્વ કાલથ સ્વભાવો જીવ એવ ચ ।

યદનુગ્રહતઃ સન્તિ ન સન્તિ યદુપેક્ષયા ॥

અર્થાત—કમ, કમ, કમ, સ્વભાવ અને જીવ એ સર્વ જેના અનુગ્રહથી જ છે. બધી પ્રભુની કૃપા ન હોય તો તેનું અસ્તિત્વ સંભવજ નહિ. આવા સર્વભવન સમર્થ પ્રભુમાં દાસકિતિ જેવી યશ્ન નીચ અને તદનન્તર પ્રભુમાં વ્યસન પણ પણ પ્રાપ્ત થાય તો પછી તેના દેહની સાધકતા યદ્યપિ સંભવની. પુષ્ટિમાર્ગનું પરમ ફળ પણ વ્યસનદશા-પછીની જે તનમયતા છે તેજ. પ્રભુને લોકિક વિપયાદિથી તદન મુક્ત છે. જે જીવ નિર્વિકારી અને નિષ્કામી ચારિત્ર્યવાન હોય તે પરજીવોતાનો પરમ અનુગ્રહ કરે છે. શ્રીગોપીજનો પ્રભુના પરમ કૃપાપાત્રીઓ થયાં તે શા માટે ? તેઓ પ્રભુને પસંદ પડે તેવા નિર્વિકારી અને વિશુદ્ધ હતાં, તૃતીય રક્ત્યના શ્રીસુખોદિનીઓમાં શ્રીમદ્દાપ્રભુજી પુણ્ય લખે છે કે—

“યયા દૃષ્ટિર્ભગવતિ પ્રવિષ્ટા તત્સદ્દે ચેતનાડપિ તત્રૈવ ગતા । અતો ન સ્વશરિરે તાસાં કામયોગોપેક્ષી ભગવત્સ્વરૂપં ષ્ણાનન્દાનુભવાત્ । ન કામનાનન્દો નવા સ્વામિન્ જાતત્યાડ્ડ નાનન્દસ્થાનુભવઃ અન્તઃકરણાદિનાં તત્રૈવ વ્યાપ્તત્વાત્ ।” [તુ. સ્કં સુ. પૃ. ૨૬]

અર્થાત, જેમ પ્રભુમાં દૃષ્ટિ પ્રવિષ્ટ થઈ તેમને તેની સાથે સાથે ચેતના પણ પ્રભુમાં પ્રવિષ્ટ થઈ ગઈ અત એવ શ્રીગોપીજનોનાં શ્રીઅંગમાં કામની અણુમાત્રએ અગેશા નથી, કારણ કે તેઓ તો પ્રભુનાં સ્વરૂપમાંજ આનન્દનો અનુભવ કરતી હતી. લોકિક કામમાં જરાએ આનન્દ નથી અને તેઓને તો ચેતના જે આનન્દ સંપ્રાપ્ત થયો હતો તેનુંજ જ્ઞાન નેહાનું રહ્યું, કારણ કે તેમના અંતઃકરણાદિ સર્વ પ્રભુમાંજ તટ્પર બની ગયાં હતાં.

વૈષ્ણવો ! સમગ્રદાયનું આપું ઉત્કૃષ્ટ રહસ્ય અને આવા ઉચ્ચ સિદ્ધાન્તોનું જ્ઞાન જેઓને નથી તેઓજ થયા તથા પ્રથમે છે માટેજ આપણા સમગ્રદાયના સિદ્ધાન્તનો પ્રચાર કરવા શ્રીકૃત ગિરિ-ધરદાસજી. શાહે જે પ્રવૃત્તિ આદરી છે અને તેને સફળ કરવા જે પ્રયાસો કરી રહ્યા છે તે ખરેખર વખાણનાં લાયક છે. તેમનું મુંગમ જેવા વિજ્ઞાન વૈષ્ણવોની વસ્તીવાળા શહેરમાં સાંપ્ર-દાયિક તથા અન્ય સત્સાહિત્ય પ્રચારનું કાર્ય પ્રસન્નનીય છે. મને આશા છે કે વૈષ્ણવો ભગવદીય શાહના ઉત્સાહને પૂર્ણ ઉત્તેજન આપશે. ‘શ્રીભક્તિમાર્ગીય સારિત્ય મન્દિરો’ અને ‘શ્રીભક્તિ-માર્ગીય મહત્ વાચનાલયો’ ની ભારતમાં જ્યાં જ્યાં વૈષ્ણવોના વિપુલ સમૂહ નિજતિપર હોય ત્યાં ત્યાં તીવ્ર આવશ્યકતા છે અને એ જરૂરીઆત મુંગમનાં લ. શાહે પૂર્ણ કરી છે. તદર્થ તેમને ધન્યવાદ આપી માફ વક્તવ્ય પૂર્ણ કરું છું.

વઢવાણને આપશીનો આદેશ.

વઢવાણના શ્રીમદ્દાપ્રભુજીના ઉદ્દેશથી વૈષ્ણવ જેઓ અને સાધકોનાં હૃદયોને આદેશ લાગેથી શું સદેશ આપું ? વૈષ્ણવ સંમાજ આમ રચનાત્મક પ્રવૃત્તિપરતે આન આપે છે અને અમદારી પાસેથી પણ આગ્રહ કરીને ગણવાનું ઇચ્છે છે તેથી મને અપાર આનન્દ થાય છે અને એજ ભવિષ્યની ઉન્નતિનુંજ જન્મસ્થાન બિન્દુ છે. શ્રીમદ્દાપ્રભુજીએ જીવોના ઉદ્ધાર માટે પ્રગટ થઈ કૃપામાર્ગ નગતને દેખાડ્યો અને શરણમાં મનદારા અને નિવેદનમાં મનદારા આ શરણો ઉદ્ધાર થયો એ સર્વ વાર્તા વૈષ્ણવોથી અજાત નજ હોય. શ્રીમદ્દાપ્રભુજીએ સમાજને વિકાસ માર્ગ વધવા માટે અનેક ઉપદેશામૃતો મંદારા પાયા છે પણ એનો વિષય છે કે આપણે એ મહાપુરુષના આદેશો પ્રમાણે નથી વર્તતા. પ્રભુના ભરણુરવિદમાં ચક્ર પુનઃ એ ધન આલોક તથા પરલોક સર્વેન્દ્રિયો તથા ધર્મો સાથે નિવિહિત કરી જીવો પંચ મહાદોષોથી મુક્ત થઈ સૈવ-પ્રયોગી દેહ સંપાદન કરે છે પેણ પાછા તે દોષો પ્રવિષ્ટ ન થાય તે માટે શ્રીમદ્દાપ્રભુજીએ સિદ્ધાન્ત રહસ્યમાં આજ્ઞા કરી છે કે પ્રભુને સમર્પણ વિનાનો દોષ પણ પદાર્થ ઉપભોગમાં ન લેવો, તેનો

ત્યાગ કરવો જોઈએ જેથી હૃદયમાં કોઈ પણ પ્રકારે વિકારો નથી જન્મીને યતાં, દોષો નથી પ્રવિષ્ટ થતાં. આજ કાલ હોટલો તથા દુકાનોની અસ્વચ્છતા તથા અણુપ્રસાદી વસ્તુઓના આવાધી સોડામાં ભટભાવના અને ધર્મનો લોપ દેખાય છે માટે વૈષ્ણવોએ આવી દુકાનોની હોટલોની વસ્તુઓને કોઈ પણ વખતે ઉપયોગમાં ન લેવી જોઈએ. તેનો સર્વદા બહિષ્કાર કરવો જોઈએ અને વિષય વિદ્યારાધિની નિવૃત્ત યજ્ઞ પ્રભુની સેવામાં પરમણુ બનવું જોઈએ તેમાંજ ઉદ્ધાર છે.

લી. ગો. શ્રી. પ્રજનાથલાલજી વિ. મહોશય.

“જન્મવૈકલ્યનિરુપણાદક.”

[વૈ. પ્રમલાલ ગો. કેસારા-સુવતાનપુરા.]

“નવ આશ્રય જેને શી વલ્લભાધીશનો, નવ સુખોધિની નિહાળી પ્રેમ. દષ્ટનો; ૧
ન આરાધ્યા કદિએ રાધિકાનાયને, વૃથા તેહનો જન્મ ગયો આ ભૂતલે.
ન ક્યારે હરિનામ તણું ગુંજન કર્યું, ન આત્મા સમર્પ્યો શીપ્રભુનાં ચરણને; ૨
ન સેવા કરી ક્યારેયે શ્રીકૃષ્ણની, વૃથા તેહનો જન્મ ગયો આ ભૂતલે.
ન ચિતન કીહરિની લીલાનું કર્યું, ન દીનતા, ને નહીં વિરહ દિલમાંજ જો; ૩
ન પૂરણ શ્રી કૃષ્ણ તજ્યો આશ્રય કર્યો, વૃથા તેહનો જન્મ ગયો આ ભૂતલે.
નવ નીતિ ને વાત કરી કૃષ્ણભક્તિની, ન કરી જેણે સાધું સંતની સેવજો; ૪
ન ગોવિન્દના ગુણોનું ગામન કર્યું, વૃથા તેહનો જન્મ ગયો આ ભૂતલે.
ન કૃષ્ણ રૂપ સાન્ધ્ય જેના હૃદયમાં, ન મન બીજેથી રાકી થયો લીનજો; ૫
ન દુઃસંગ પરિત્યાગ કર્યો નિજ દિલથી, વૃથા તેહનો જન્મ ગયો આ ભૂતલે.
ન ભક્તિ પુષ્ટિમાર્ગ તણી કદિએ કરી, ન નિઃસાધન ભાવ થયો નિજ ઉરજો; ૬
ન જેણે સર્વે પ્રપંચો વિસારીયા, વૃથા તેહનો જન્મ ગયો આ ભૂતલે.
નથી જેને તત્પરતા ધર્મ કાર્યમાં, ન ધર્મ મારગે લામ્યું જેનું મનજો; ૭
ન ભક્તિ યાન વૈરાગ્ય જેના અંતરે, વૃથા તેહનો જન્મ ગયો આ ભૂતલે.
નથી વિરહ નિજરવામાં દેરા દીલમાં, ન તેનો પરિતાપ, અને નહીં ભાવજો; ૮
નવ દુર્લભ જેના અંતરમાં દીનતા, વૃથા તેહનો જન્મ ગયો આ ભૂતલે.
‘જન્મ વૈકલ્ય નિરુપણાદક’ સ્તોત્રનો, ‘વલ્લભ’ કૃપાથી કરીયો ગેં અનુવાદજો; ૯
દાસ ‘પ્રેમલાલ’ ફક્તે, શીહરિ ભક્તિ કરી, સદ્ગજ કરજો જન્મ વ્હાલા ! આ ભૂતલે.” ૧૦

“ડૂબી રહેલું સર્વદા.”

[રચયિતા ‘શ્રીપરાગ’ મુખ્યમંદ,]

શ્રીકૃષ્ણનું શુભ નામ લેતાં સર્વ પાપો ટળી જતાં, જિવ્હા તણું સાચકેય પણ, તેના ચકી છે નાન્યથા ભૂત-પ્રેત-પિશાચનો બધા દૂર થાતો પણ મહી; સમ્પત્તિ યાતી સર્વને, સૌભાગ્ય ને ધન ધાન્ય શ્રીનન્દનન્દનનું સદા, કરવું હૃદયમાં ચિન્તન, પ્રેમથી વેજનાથ ભજવા સર્વ ભાવે નિર્મલ પ્રભુ નામ નૌકાથી તરે, સૌ જીવ માત્ર અભેદથી, દુરતર. ભવાણીવને કરે, સમ્પ્રાપ્તિ પ્રભુના ચરણનું શુષ્ક રાનાદિ યજ્ઞ પ્રભુ નામ મોંધું છે ધણું, રસથી ભર્યું આનન્દની સરિતા વહાવે એ યજ્ઞ વિષયમાં વાદળ દુઃખના, શ્રીકૃષ્ણનામ પ્રભાવથી, વિગાંદિ કૃષ્ણ વિકારની નિવૃત્તિ તેથી ઝટ થત પ્રભુ નામ જપવું સર્વદા, પ્રભુ નામ રમરવું સર્વદા, મન તન્ન તજ્યો સખે ! શિરમૈલિ એ છે સર્વથા શ્રીકૃષ્ણને શરણે જઈ, કિંકર બનીને સેવવા, શ્રીકૃષ્ણનામ સમુદ્ધમાં ડૂબી રહેવું સર્વદા

સમ્પ્રદાયીના સૂક્ષ્મભાવ.

(લેખક—ભગવદ્દીય વેલજી નયુભાઈ મીસ્ત્રી.)

(રાગ—માધો મનનો મોહન વર પામીયારે લોલ.)

શ્રીવલ્લભ શરણુ અમે પામીયારે લોલ, એથી કરી ત્રિવિધ તાપ રાખાવીયારે લોલ. ૧.
વિરહાનલ શ્રીવલ્લભને વખાણીયેરે લોલ, અરેય દાનો પૂરણુ બલ પરમાણુએરે લોલ. ૨.
જેહુનાં રામ રામ શ્રીકૃષ્ણસ્થેથી લયારે લોલ, નિત્યકીયાના વિદારસાગરમાં તથારે લોલ. ૩.
ગોપીપતિ પ્રિયા રોલ પ્રકટ દેખતારે લોલ, જેમ સમુદ્રમાં તરંગોને વિશેષતારે લોલ. ૪.
વજ્રવિહારી સંગમ રસ ત્રીજતારે લોલ, પ્રેમપીયૂષથી અંગે અંગ ભીજતારે લોલ. ૫.
એવી મૂર્તિ મનોહર વલ્લભ નામનીરે લોલ, સદા વસે હૃદયમાંહી અભિરામનીરે લોલ. ૬.
નિજ દાસત્વ સોભાગ્ય અખંડ રાખતારે લોલ, પ્રાતમ પ્રેમમાં બીજાકયાં રસ ચાખતારે લોલ. ૮.
નીરસ માયાપાદ રૂપી તમ ટાળાયારે લોલ, સુંદર સેવાની રસ રીત પ્રગટાવીયારે લોલ. ૯.
પ્રિય સંગ મુધા જે રાગ રંગનારે લોલ, પ્રાંતે કરી પામ્યાં જન ગોપીસંભારે લોલ. ૧૦.
કુખે કરીને જે વરણુ કદી નવ મળેરે લોલ, ચરણુ શરણુ આન્યાં જેને દીધી એ પળેરે લોલ. ૧૧.
ઉદય થયે અલૌકિક ભાતુ બૂતલેરે લોલ, ટાળું તમ નિજ સેજના બંને કરીરે લોલ. ૧૨.
પ્રિયા પ્રિયતમનાં રોહનું સ્વરૂપ છેરે લોલ, મૂઠ સ્વામિનિનું પ્રગટ સ્વરૂપ છેરે લોલ. ૧૩.
કાષ્ટ ખંડિત કદાવે નિગમ નહી ગતિરે લોલ, કદી હોય ગતિ ક્રિયા માહે નહિ મતિરે લોલ. ૧૪.
ક્રિયા કરે કદી તોએ પ્રેમ નય મળેરે લોલ, પ્રેમ વગરની ક્રિયા તે કદી નવ મળેરે લોલ. ૧૫.
પ્રેમ હોય તો માત્ર જડા નામનેરે લોલ, વસ્તુ વગર ધરે કયા કામનેરે લોલ. ૧૬.
પરિચોધી સદાજ પ્રેમ આપીયેરે લોલ, અખંડ નજીવતિમાં નવ રાખાવીયેરે લોલ. ૧૭.
એવા સકલ શુણુ સમ્પન્ન શ્રીવલ્લભસાલ છેરે લોલ, જેહુનું પૂરણુ પ્રભુજીમાં વડાલ છેરે લોલ. ૧૮.
ધીમુખ સુદાં મુખોધિની વરસાવીયારે લોલ, રાધાકૃષ્ણ યુગલ નેદ દરસાવીયારે લોલ. ૧૯.
ન કાષ્ટ હોયો ન હોય અવની મહારે લોલ, રાધાકૃષ્ણ સેવન પ્રેમભાવથી લહીરે લોલ. ૨૦.
શ્રીવલ્લભ નખચંદ પ્રીણ પાનથીરે લોલ, મત થયાં માનવ કૃપારસદાનથીરે લોલ. ૨૧.
કલિકાળનો પ્રભાવ નહિ જોદનેરે લોલ, એવા ભકત બૂનળ વજ્રલ શરણુ એદનેરે લોલ. ૨૨.
જેહુના ચરણમાં શ્રીવલ્લભીજ વસી રજારે લોલ, એવા મજાપતિ રસ નેદમાં ધસી રજારે લોલ. ૨૩.
દેવી જીવના તે પ્રાણુ આધાર છેરે લોલ, લીલા સ્થાગરે રાખાવ્યાં નર નારનેરે લોલ. ૨૪.
વિષય સાગરે પડેલા શરણુ આવીયારે લોલ, અગર કરી ચરણુ શરણુમાં રાખાવીયારે લોલ. ૨૫.
જાણવન જુદી તે રોહન રસ પાછનેરે લોલ, જીહ્વારિક્ષ બાંદ મદી મનુ ધાછનેરે લોલ. ૨૬.

“સંભારણાં.”

ગયા છતાં સદૃશ્યો, હૃદયમાંકિત જરૂર રહે;
નિજ અભિનય-વપાએ જગતમાં અમર રહે.
નિર્જાકિત વાક-પદુતાઓ, મજામાં સ્મરણુશ્રૂત રહે;
એવા પુરોહી આશીર્વાદ, જગતમાં ફોન-મુખ રહે.
સ્વાચ્છા હંચન ગ્રાણી, મુખુ ચરીર-ત્વજ રહે;
ચરીર વિજ ચરીર, જગતમાં આત્મીય રહે.
નિજ બાહુમાં મુખોધી, નિર્ભયતા વિચરી રહે;
આત્મીય પ્રેમાંશુ સંભારી, જગતમાં અનુસૂત રહે.

(લેખક—જોષી અવજલાલ હાગનલાલ પરમજયદીય કવિવર શીલ્પારામજાહના ચિખ્ખા પ્રગૌચ.)

ભવસાગર તરવો રહેલ છે.

શ્રીકૃષ્ણ નામ જે રટશે, સંસાર રહેવે તરશે, વ્હાવા વૈષ્ણવ ભવસાગર તરવો રહેલ છે. ૧. શ્રીકૃષ્ણ
આશે પ્રભુના દાસ, તો રહેશે પ્રભુ પાસ, દીનતાથી જે ભજશે વ્હવા પ્રભુને મળશે. ૨.
ચિત્ત પ્રભુમાં જેડા મંસારી સંબંધ તોડે, જીવું કદી ના ભોલો એક સત્યતાથી ચાલે. ૩
પ્રભુ ભજે જે વ્હાલે તે પ્રભુ મહેલે મ્હાલે, શ્રીવલ્લભના દાસ થાવું ખોટા માર્ગે ના જાવું. ૪.
આ ભવસાગર છે ખોટો જાણે પાણીનો પરખોટો, શ્રીકૃષ્ણ નામ છે માર્યું બાકી બધુયે કાર્યું. ૫.
નીચ કર્મ જે કરતા તે અતે નરકે પડતા, શ્રીકૃષ્ણ નામને રટવું અભિમાને પાછા ફટવું. ૬
નિત્ય પ્રભુ ગુણ ગાયે તે ગોલોકવાસી ગાયે, કોઈ સન્નને તોડી હું પદને દા છોડી. ૭.
અવિચારી કર્મ પર થુકે શ્રીકૃષ્ણનામના સુદે, ભક્તિથી રહે તરશે ખીજ બધામા મરજો. ૮.
સદગુણને શરણે રહેવું સત્યે હુ ખ પડે તે મહેવું, ઉપકાર સદાયે કરવો અપકારને પગદરવો. ૯.
મંથી સદાયે મહેવું કુર્મપમા ન વ્હેવું, ૫, ધર્મી પરદરવી નિંદા કોઈની ન કરવી. ૧૦.
નીનિ થકી નવ દારો વૈયં ધર્મને ધારો, શીખે સાચાને કે ગાય, તે મહેલે ગોલોકે જાય. ૧૧.

વૈયંચંદ્ર રણછોડદાસ છુદ્ધ. ૧

પ્રભુને વિનતિ.

વ્હાના વિનતિ કર હુ પ્રેમે આપને રે, મ્હાગ હૃદય તણા છે આપ પ્રાણધાર. વ્હાલા. ૧.
આપ બધુ છે દીનના ગુણસાગર શ્રીગોપાળ, પ્રેમે ભક્તિ આપને પ્રેમે કરા શ્રીકૃપા. ૨.
દીન જાણીને દયા કરે શ્રીનાથજી રે, મુજને સરણે રાખી આપો ચરણે પાસ. ૩.
જાણક જાણી આપનો કરે કૃપા વ્રજનાથ, વ્હાવા પ્રેમે શીદમ્તથી મ્હો બાળનો દાય. ૪.
જાણી આપ ચરણની પાસે વ્હાવા બેહથી રે, ભક્તિ આપો પ્રભુજી જાણી મારો દામ ૫.
એક ભરમો આપનો શ્રીમદ્ગિરિમાર, અપર ન ધારે અંતરે, કયો એ દલ વિચાર. ૬.
પ્રભુ પૂર્ણ શ્રીપુરોષોત્તમ ગુરુ વૈયંના રે, પ્રભુ ગ્યાયો મુજને ચરણનો દાસ ૭.

વૈયંચંદ્ર રણછોડદાસ છુદ્ધ.

શ્રીનાથપ્યારા.

ભક્તિ વડે વશ થાય, શ્રીનાથ પ્યાગ ભક્તિ વડે વશ થાય. ધ્રુવ. ૧.
જે જીવ ભક્તિ કરે તેનો, જન્મ મળવું ભય જાય. શ્રીનાથ. ૨.
જેય નીચ તેમા પ્રભુ નથી જોતા, ભવે રંકે હોય કે રાય. શ્રીનાથ. ૩.
રૂપ, ધનકે વિદ્યા એ કાષ, પુરગતને પ્રસન્ન ન થાય. શ્રીનાથ. ૪.
ભક્તિથી ભક્તની વિનતિ સુણી, પ્રભુજી વગર ગરુડે જાય. શ્રીનાથ. ૫.
પુષ્ટિમાર્ગના પાય તરવો, ભક્ત્યેથી ગોલોક પમાય. શ્રીનાથ. ૬.
શ્રીપુરોષોત્તમની પ્રેમ ભક્તિ, શેષ મહેગ ગુણ ગાય. શ્રીનાથ. ૭.
મુરેશ, ગણેશને શારદ નાન્દ, અભાન્નિક ચિત્ત ચહાય. શ્રીનાથ. ૮.
વૈયં ધની ભક્તિ કર્યાથી, ચોરાશી મટી જાય. શ્રીનાથ. ૯.

વૈયંચંદ્ર રણછોડદાસ છુદ્ધ.

શ્રીગોકુલનાથજી.

(વ્યાખ્યાના—રા. રા. છોટલાલ લાલભાઈ અગીરદાર.)

પુષ્ટિમાર્ગ એટલે આનંદનો ઉદય એ વાત વેપ્પુનેતર જનથી કદાચ ન સમજાય, અસંય-
મીધીય ન સમજાય. એ તો એમજ કહેશે કે ‘પુષ્ટિમાર્ગ’ એટલે ઠોર અને રખડી; પણ એ ઠોર
અને રખડી બનાવવામાં અને તેના ઉપભોગ કરવામાં કેટલો સંયમ ખર્ચાય છે તેનો જાણો
ખ્યાલ પણ હોટેલો અને રેસ્ટોરાં, વિશ્રાંતિગૃહો અને ઉપહારગૃહોના ‘આડધા’ ‘અમત’ ચા,
પાતળભાજને “દીકડી ચી ભાજ” ગલીચ અને એંદા જૂઠા ‘જર્તન’ માં ખાધ પી ખેરસણા
કરનારને ભાગ્યેજ આવે. અને હવે તો કહેવાતા ઉચ વર્ણના હિંદુઓમાં ધુસેલી એ મલિનતા
અત્યંત ભાષ્યોને માથે સાદવાનો પણ પ્રયત્ન એમના ઉદારને નામે થઈ રહી છે. કાંઈ પણ
એક અન્ન આપે તો તે લેવાના ઇન્કાર કરવાનો અત્યંતને ઉપદેશ આપનારાઓ તેઓ માટે
વિશ્રાંતિગૃહો ખોલી આડકતરી રીતે એકવાડ ખાવા માટે અત્યંતને પ્રેરી રહ્યા છે. એવાઓને
તો પુષ્ટિમાર્ગના ઠોર અને રખડી તૈયાર કરવાની મહેનત, પરિવ્રતા, તેનો ઉપભોગ કરતા પહેલાં
તો પ્રભુને ધરાવવાનો સંયમ, અને એ પ્રભુની પ્રસાદી છે માટે તે ગમે તેમ વેચાય કે પગ તળે
અંધાય નહિ તે માટે પુષ્ટિમાર્ગ એક નાનામાં નાના બાલકથી માંડીને વૃદ્ધમાં વૃદ્ધ અશક્ત છતાં
ભગવદ્ભક્તની કાળજી એ સર્વનો ખ્યાલ શો રીતે આપી શકાય? ખાવું પીવું ને લહેર કરવી એ
સિવાય પુષ્ટિસંપ્રદાયમાં કશુંય નથી એમ માનનાર બહિર્મુખી મનુષ્યને કોણ સમજાવે કે ખાઈ
પીને લહેર કરવી તો સર્વ કાંઈને ગમે છે; અરે એનો પ્રાણી માત્રો જન્મસિદ્ધ હક્ક છે પણ
ખાઈ પીને લહેર કરવાનો સાત્ત્વિક આનંદ માણતા પહેલાં ભારેમાં ભારે તપશ્ચર્યા કરવી પડે છે
એ તો પુષ્ટિમાર્ગની રીતિ નીતિનું રસ્ય હૃદયે પ્રેરેલી સાત્ત્વિક દૃષ્ટિથી નિરીક્ષણ થાય ત્યારેજ
સમજાય. હમણાંજ છાપામાં વાંચવામાં આવ્યું હતું કે એક મંદિરમાં અન્નકૂટનો ભાત ઉકરડે
નાંખવામાં આવ્યો હતો, ત્યાં તે ટોશના ખાવામાં આવતાં ટોશ મરણ્યોલ માંદા પડ્યા; પુષ્ટિ
સંપ્રદાય પર કેટલાક યુદ્ધરથોની ‘ખાસ કૃપાદષ્ટિ’ લેવાથી તેમની ફેલાવેલી વાતમાંથી અમુક
ટકા બાદ કરતાંય થોડા ટકા પણ આ વાતમાં સ્વ્યાસ હોય તો તે ખરેખર ભારે શોચનીય
કહેવાય, છતાં એવી અપવાદરૂપ વાતોને કાટલે સંપ્રદાયનું તોલ કરનારને ગળે સંપ્રદાયની
તપસ્યાની વાત કેમ કરી ઉતારી શકાય? આજનો વિષય એ નથી પણ આજના વિષય પર
આવતા પહેલાં આટલા ઉપેદ્યાતની જરૂર હોવાથી જરા વિષયાંતર કરવો પડ્યો. અસ્તુ

સંપ્રદાયને માથે આજના મહોત્સવના નાયક શ્રીગોકુલેશ ચરણ બીરાજતા હતા ત્યારે મોગજ
શહેરનાદ જતાંગીરની આજી વર્તતી હતી. કાંઈ ચિદ્રૂપ સ્વામીના ભમાખ્યાથી પાદશાહે વેપ્પુનેના
પ્રિય, તિલક કંઠી સામે એકાદ પુકારી ત્યારે તેનો સંસ્મરણપૂર્વક સામનો કરનાર શ્રીગોકુલેશ
પ્રભુનાં નામ અને કામથી કાંઈ દીનસાગી વેપ્પુવન્ અમણ હોય. વેપ્પુવપતના રાખણદાર એ
અંધારોનીએ શી-શી મુશાખતો વચ્ચેથી પોતાનો માર્ગ સરળ કીધો એ તો કૃતિદાસપ્રસિદ્ધ
વાત છે; કૌટુંબિક અને આર્થિક મુશ્કેલીનો નિવેડો એક ગુરુને જાણતાં તપથી શ્રીગોકુલેશ
પ્રભુએ આપ્યો હતો એમ એના ચરિત્રકાર પાસેથી આપણે સાંભળીએ છીએ ત્યારે આપણું
હૃદય આનંદાશુથી પુલકિત થયા વિના રહેતું નથી; કાંઈનું પણ હીલ દુખાવ્યા સિવાય અનશન
તપથી આર્થિક મુશ્કેલીનો આપણોએ લાવેલો અંત અહમ્મત અને સાત્ત્વિક વૃત્તિના પરિણામ રૂપ
કરી શકાય; અનેક મુશીબતો છતાં આપણીના મુખપરથી પુષ્ટિસંપ્રદાયના તપ અને સંયમનાં

જર્મન વિદ્વાનો શું કહે છે ?

શ્રીકૃષ્ણે પ્રકટ કરેલી આકર્ષણ વિદ્યા (સામન્સવિદ્યા) રસાનુભવ વિદ્યાનો અખૂટ ખજાનો શ્રીમદ્વલ્લભવેદાન્ત તત્ત્વજ્ઞાન અથવા શ્રીમદ્વલ્લભાચાર્યે જીવનચરિત્ર કૃષ્ણ.

અભિજ્ઞ વિશ્વભક્તિમાર્ગજ્ઞમાર્ગે વલ્લભાચાર્યે પ્રગટ કરેલું સર્વે વેદોનું અને સર્વશાસ્ત્રો પુરાણોનું સારરૂપતત્ત્વ કૃષ્ણ.

કૃષ્ણ યોગશાસ્ત્ર અન્ય સહારિકા રાસ પંચાખ્યાયીવલ્લભોપિકાસુત્રમત્તમરંગીતસુબોધિની એ છે. પૃથ્વીપર શ્રીમદ્ લાગવત પ્રગટ થયા પછી તે ઉપર શ્રીમદ્વલ્લભાચાર્યે શ્રીસુબોધિનીજી પ્રગટ કર્યા પછી તેમાંથી સારરૂપ તત્ત્વ સ્વતંત્રપણે શ્રીમદ્વલ્લભાચાર્યની પૃથ્વી કૃપાથી (પ્રેરણાથી) પૃથ્વી પરની તમામ વ્યક્તિઓના યથાધિકાર ભાષાચાર્યે અરિહ કર્યું છે. તે અલૌકિક જવાહીર છે. અલૌકિક સામર્થ્યયુક્ત આકર્ષણ વિદ્યાને ભરપૂર ભંડાર છે. અલૌકિક નૃસિંહીકાને અલૌકિક કામશાસ્ત્રોક્ત ખજાનો છે અલૌકિક પ્રેમમાં મસ્ત બનેલાં, સ્નેહમાં રમી રહેલાં, પ્રેમ અને સ્નેહની પરકાશને ઓલખનારાં, અલૌકિક દીર્ઘ દષ્ટિવાળાં, તીવ્ર સુહૃદવાળાં શ્રીમદ્ગોપીબોનાના સયોગ વિપ્રયોગ વિશ્વાસનો અદ્ભુત ભંડાર છે. શ્રીમદ્વલ્લભવેદાન્ત તત્ત્વજ્ઞાનનો અપૂર્વ ખજાનો છે. આ પૃથ્વીના કોઈપણ ખંડમાં અને તેના કોઈપણ દેશોમાં (કોઈપણ રાજ્યમાં) કોઈ પણ સ્થાને આવું તત્ત્વ નથી, આવો ગ્રંથ નથી, એમાં છે એવી અલૌકિક વિદ્યા કે જે પૃથ્વી પર કોઈ સ્થાને નથી. એમાં જે અલૌકિક વિદ્યા છે તેવી આજ સુધી સાંભળવામાં વાંચવામાં કે જોવામાં આવી નથી, શ્રીકૃષ્ણચરિત્રે જેવી જેવી અલૌકિક સામર્થ્યયુક્ત શોધો કરી છે તેવી પૃથ્વી પર આજ સુધીમાં કોઈપણ વ્યક્તિએ કરી નથી તે નથીજ.

જર્મની, ડીસ ૧૨ નવેમ્બર ૧૯૩૧.

બ્હાલા સાહેબ ! લાવનગર શામળદાસ ટ્રાવેલના મારા બ્હાલાં વિદ્યાર્થી ડૉ. પી. એમ. મોદી મારફતે તમોએ મોકલાવેલી યોગશાસ્ત્ર અન્ય સહારિકા રાસપંચાખ્યાયીવલ્લભોપિકાસુત્રમત્તમરંગીતસુબોધિનીજીની એ પ્રતિ હું સાભાર સ્વીકાર છું. તમે બહાર પાડેલી આ સુંદર પ્રતથી હું ખૂબ જ ખુશી થયો છું અને મારા વિદ્યાર્થીઓના ઉપયોગ માટે આમાંની એક કોપી (નકલ) આ ધુનીવરસીદીના ઇન્ડોલ્ફરગેનીકલ સેગીનરની લાયબ્રેરીમાં મૂકીશ અને એક મારા અંગત ઉપયોગ માટે રાખીશ.

તમારો સાચો,

ડૉ. ડા. એફ. ઓ. આઈર.

બ્હાલા સાહેબ ! તા. ૩-૧-૩૨ નો વળેલો પત્ર અને યોગશાસ્ત્ર અન્યની બીજી પ્રત મને મળી છે. તે માટે આપનો ઉપકાર માનું છું.

આપના પ્રશ્નોના ઉત્તરમાં જણાવવાતું કે શ્રીમદ્વલ્લભાચાર્યના સિદ્ધાંતોની જર્મની, ફ્રાન્સ, ઇંગ્લેન્ડ અને અમેરિકામાં લગભગ અજાનતા છે. અદોલ્ફ હિટલરે વિદ્યાર્થીમાં સંસ્કૃતના અભ્યાસ માટે રચાન છે. પરંતુ તમારા વિચારો મુજબ ફક્ત શ્રીમદ્વલ્લભાચાર્યજીના સિદ્ધાંતો અગર તો તો હિટલર તત્ત્વજ્ઞાન શીખવવા માટે એલાયદી કોઈપણ સંસ્થા નથી. વળી મારા પ્રો. એચ. વોન આસેનથ (કોઈનીગ્સબર્ગ) સીવાય કોઈ પણ શ્રીમદ્વલ્લભાચાર્યજીના રસ લેનાર હોય એવી મને ખબર નથી પરંતુ તેઓથીના તત્ત્વજ્ઞાનના સિદ્ધાંતોમાં રસ ઉત્પન્ન કરવામાં કોલે મદદવાની મને આશા છે. તેથી યોગશાસ્ત્રની ચાર પ્રતો આપે મને મોકલી તે માટે આપનો આભારી છું આથી હું આ અમૂલ્ય પુસ્તક મારા વિદ્યાર્થીઓ સમક્ષ મૂકી રાકીશ. તમારો,

એફ. ઓ. આઈર.

અથાવલોકન.

શિક્ષાપત્રી—અર્થદીપિકા દીકા—શુભશીળી અનુવાદ સાથે મૂલ્ય ત્રણ રૂપીયા; અનુવાદક અને પ્રકાશક રા. રા. માધવલાલ દલસુખરામ કોઠારી, કે. રાયપુર વડની પોળ, અમદાવાદ. શીસ્વામિનારાયણ, સંપ્રદાય નામથી સુપ્રસિદ્ધ શ્રીમદ્બ્રહ્મવત્પ્રદાયનો આ મૂળાધારૂપ અને એ સંપ્રદાયમાં સર્વોપરિ ઉત્તમોત્તમ ગ્રંથ છે. શ્રીમદ્બ્રહ્મવત્પ્રદાયના મહાન સંસ્થાપક શ્રીસદ્ભનંદ સ્વામીજીએ ‘શિક્ષાપત્રી’ નામક એક ગ્રંથ પોતાના પરમ કૃપાશાળન વિદ્વાન ઉપાસક શ્રીસદાનંદદાસ પ્રગટ કરાવ્યો છે અને જનતમાના સિન્ધુ બિન્દુ અધિકાર ધરાવનારા જીવો માટે પરમ શ્રેયસ્વી પ્રાપ્તિ કરાવનારા અનેક કિંમ્વ સિદ્ધિતિહાસ તેમાં નિરૂપણ કર્યું છે. મૂળ શિક્ષાપત્રી ગ્રંથ રૂપ રચોદાનો છે, પણ તે ગ્રંથ વેદ, ગીતા શ્લોકસૂત્ર અને શ્રી ભાગવતમાં સમસ્ત પુરાણોનો સમન્વય કરીને, પોતાનાથી પહેલાં પ્રગટ થયેલા ભક્તિમાર્ગવિદ્યાઓના સિદ્ધિતિમાર્ગથી વત્તનું દોહન કરીને રચવામાં આવેલો છે. રૂપ રચોદા તે માત્ર રચોદાન નથી, પણ ગંભીર અર્થથી ભરેલો સૂત્રો છે. આયસંસ્કૃતિના સર્વમાન્ય મહાનુ ગ્રંથોના નિષ્કર્ષથી ભરપૂર એ સૂત્રો શ્રીમદ્બ્રહ્મવત્પ્રદાયને અનુસરનારાઓનાં સર્વસ્વ હોય, પણ ઉત્તર સંપ્રદાયિકોને પણ અતિમનનીય છે. ઇન્દ્રિયનિગ્રહદારી મહાનુ સંયમ કેવી રીતે સાધી શકાય અને સદાચારપૂર્વક, વર્ણાશ્રમ વ્યવસ્થાના રહસ્ય સાથે ભગવદ્ ભક્તિદારી પ્રણામિ કેવી રીતે થઈ શકે એનો મહાન આદર્શ ગ્રંથકારે સ્પષ્ટ કર્યો છે. એ ગ્રંથની દીકાએ પણ શ્રીસદાનંદ મુનિએ સંસ્કૃત ભાષામાં સચિતરતર લખી છે. એમણે રચેલી એ દીકાઓમાંની અર્થ દીપિકા દીકા આ ગ્રંથમાં છે. દીકા વિદ્યતાપૂર્ણ છે અને દીકા પ્રણેતાનાં સર્વદેશીય પાંડિત્યના જ્ઞવંત દર્શાવરૂપ છે. આયસંસ્કૃતિના સૈંકયો ભવ્ય ધર્મિક ગ્રંથોના પુષ્કળ પ્રમાણોથી પરિપૂર્ણ આ દીકા અચિત્તજ વિદ્વાનોનાં હૃદયને આકર્ષે છે. શ્રીમદ્ભુમજિરૂપ મહાપુરુષાર્થનું આયસંસ્કૃતિમાં કેટલું ઉચ્ચ સ્થાન છે તેના નિર્ણય માટે આ દીકા પૂર્ણ સલાયક થઈ પડે તેમ છે. આ સંસ્કૃત દીકાનું સરલ શુભશીળી ભાષાંતર શ્રીમદ્બ્રહ્મવત્પ્રદાયના એક વિદ્વાન વેળા અને પત્ર સંપાદક રા. માધવલાલ કોઠારીએ કરેલું છે. વિદ્વાન પૂર્ણ દીકાનો અનુવાદ કરવો એ કઠિન કાર્ય છે. સંસ્કૃત ભાષામાંથી સંપૂર્ણ સ્વસ્થ શુભશીળીમાં ઉતારવું કહેવું નથી. છતાં રા. કોઠારીએ એ કાર્ય ધણીજ રહેતમદોષથી કરેલું છે. મૂળ તથા ગદ્યના સંપૂર્ણ આદાય શુભશીળીમાં ઉતારવા માટે તેમણે કરેલો અયાગ પ્રયાસ સફળ થયો છે. વળે અનુવાદકે એક યશસ્વિન્યાર્થથી ગ્રંથના ગૌરવમાં ધણીજ અભિવૃદ્ધિ કરી છે, અને તે કાર્ય દીકામાંના પ્રમાણો કથા ગ્રંથમાં કથે રચેલ છે તે રોપાણે તેની અનુક્રમણિકા તૈયાર કરીને પ્રગટ કરાવું છે આ અતિ પ્રયાસથીજ જની શકે છે. વળે ગ્રંથના છત્તમ્સુ માટે સાશ્રી દુષ્કૃત્તરપદાસે એક પ્રસ્તાવના લખીને માર્ગ સરલ કરી આપ્યો છે. આદરો પાનાના આ મહાન ગ્રંથની કિંમત ત્રણ રૂપીયા વડન લલિતજ છે. શ્રીમદ્બ્રહ્મવત્પ્રદાય તથા બીજા પણ આવા સંપ્રદાયોમાં આ ગ્રંથ આદરપાત્ર જનવો જોઈએ. આવો મૂળ ગ્રંથનાં સંશોધન, અનુવાદ, સંપાદન વગેરે કાર્યમાં રસ લઈને અનુવાદકે શીસ્વામિનારાયણ સંપ્રદાય ઉપર અને ધાર્મિક સાહિત્યના અભ્યાસીઓ ઉપર ઉપકાર કર્યો છે. આ ગ્રંથનો પુસ્તકાલયો તથા ધર્મનિદાસુઓએ આદર કરવો જ જોઈએ એ કહેવાની સાચીજ ભર હોય.

સાંપ્રદાયિક ગ્રંથો ક્યાંથી મેળવશો ?

શ્રીમદ્ભુભાષ્ય રસિમ અને શ્રી સુબોધિની (સંપૂર્ણ) મળશે

શુદ્ધિત થયેલા તથા નહિ મળતા સંસ્કૃત, ગ્રંથ, હિન્દી, શુભશીળી અને અંગ્રેજી ભાષાના સાંપ્રદાયિક સર્વ ગ્રંથો નીચેને સ્થળે મળશે. યોગ્ય કમીશન પણ આપવામાં આવશે. બહારગામની માગણી પર પૂરતું ધ્યાન આપવામાં આવશે.

ભારત માર્તંડ પંડિતે શ્રીગદ્ગતાલાંબની સંસ્થા,

નં. ૫૨/૫૩ કેપ્સલ સ્ટ્રીટ, ભુલેશ્વર, મુંબાઈ નં. ૨.

આદર્શ વૈષ્ણવ યુવક.

(લેખક:—“ શ્રીકૃષ્ણચરણ ”)

આદર્શ વૈષ્ણવ યુવક વિષે હું કંઈ પણ આલેખું ત્યાર પહેલાં વૈષ્ણવ સમાજ અને તેના કહેવાતા યુવકોનું સ્થાન દર્શાવું છે તે વિષે જરા અવગતિ કરીશ.

અત્યારે વૈષ્ણવ સમાજ અને સમપ્રદાય ઉપર આદર્શની વલવાર વરે છે. વૈષ્ણવ સમપ્રદાયમાં અત્યંત દ્રવ્ય છે છતાંયે રમનાત્મક કાર્યોના અભાવ છે. ઉપરાંત રૂઢિચુસ્ત અને પ્રાચીન પ્રણાલિમાનને વળગી રહે છે. વૈષ્ણવ સમાજ સમગ્ર દેશમાં વેદ પ્રત્યે ક્રોધ છે. વિદ્યાર્થીઓના પ્રગટ આકર્ષણોની પરમ્પરા વિકાસ રૂપે સંસ્કારણી સત્તમ થઈને સમક્ષ જતી છે, સામપ્રદાયિક અટલ સાદિસ પ્રસિદ્ધ કરવાના વાખાં છે તોયે અનેક પ્રત્યે. દલુ અજુકેલ પાંચ છે. સમપ્રદાયના આચાર્યશ્રીઓ કુધારે દેવ છે પણ તેને અમલમાં મૂકવાની તરા કેમ બતાવતી નથી ? એ કંઈક ચિંતે જગતી પામેલા અને વિચારોની દલવામાં આવળ વધેલા અવધા ગાંધ્યા યુવાનો છે તેઓ દ્રવ્ય સદાયતાને બતાવ આગળ આવી શકતા નથી. આ બધું ત્યારે જ થઈ શકે કે વૈષ્ણવ સમાજમાંથી આદર્શ યુવકો બહાર પડે.

આદર્શ યુવક કોને કહેવો ? આદર્શ વૈષ્ણવ યુવકનું માનસ પ્રમતિના દરેક પાત્ર પર આવળ વધવાને લેવાતું દોષ, લેવામાં વિમ્મત દોષ, કોણસ્ય દોષ, આદર્શનાં વાદ્ય સામે અનુભવાની અપાર શક્તિ તે પ્રસારતો દોષ ત્યાગ્યુર્વિ દોષ, નિઃસ્વાર્થ દોષ, શ્રીવત્સાધીશના સિદ્ધાન્તોમાં અટલ અક્ષી પ્રસારતો દોષ, જગતના બંધનોથી તો તે નિર્લેપ જેવો દોષ છતાંય જગતની વચ્ચે તે પૂમતાથી પાળી પાળી કરતો ન દોષ.

વૈષ્ણવ સમાજમાં અને સમપ્રદાયમાં પ્રવર્તે રહેતા પાપપુન સામે બાષ બીડે-પોતાની બાષ અને સંપત્તિની આકૃષ્ટિ આપીને પણ એ પ્રવર્તે રહેતા અન્યાયોને ફનાવવા અને તેના બાદમાં-વૈષ્ણવ સમાજ અને સમપ્રદાયમાં પોતાના ફળત વિચારોથી રસ, કલા અને નેત્રવ્યના દુષ્ટાસ વહેવારને તેમ વૈષ્ણવ યુવક છે. તે પોતે જ સામપ્રદાયિક જાનથી રજાપયે દોષ તેમાં સંતોષ ન માને, પોતાના મુદને ફેળવે, પાકોશીએને ફેળવે, શુદ્ધ અનેને ફેળવે, અને પોતાના દેશના મનુષ્યો કલા કલા જાનથી વચિત છે તે સમજવા પ્રયત્ન કરે, તેઓને કુધારે, આદર્શ વૈષ્ણવ યુવક શરીરે સજાત દોષ, તેટલામાં સંતોષ ન માને પણ પોતાના બાંધવજોને પણ તેવા બતાવે. સાધનસંપન્ન દોષ તો બ્યામસાક્ષી રથાં, નદિ તો બીજ પાસે યોદ્ધાવે. તેમાંથી અભિવ્યના વૈષ્ણવ બીરોનું વીરવ બીરવે. મૂઠાળનાં વૈષ્ણવ બીરોને બાંધવે એનું રીત્ય બીરવે. આદર્શ ગોસ્વામીશ્રીના ગૌરવધર્મ બાંધવે.

જેનું બોધ નેહું વિચાર હૃદય દોષ, વિષાદવાળુ ચાદવું નેરો દોષ, પોતાના કૃત્ય અને ત્યાગના પ્રસારથી અન્યને આજવાની લેવામાં શક્તિ દોષ, રેડનાં અણુએ અણુમાં, રામેશમમાં અન્ય બનવડું અક્ષિભાવનું રક્ત વહી રહું દોષ, અન્યાયોએના અન્યાય સામે અનુભવાની અને ન્યાય પ્રવર્તાવવાની અન્ય ઉપસક્તિ દોષ તેમ આદર્શ વૈષ્ણવ યુવક.

તે કાપા ન દોષ, બીક ન દોષ, પ્રસાદનો તેને લલચાવી ન શકે. સત્તાનો-મનનો-દોષનો તેને મોઢ ન દોષ, જગતની કાંઈપણ શક્તિ તેને તેના નિમ્મતમાંથી કાઢી ન શકે; જેને એ અજય અને અકબ-કલ્પ-ત્રિવિના યુગ રૂપ આદર્શના સિખર પર તટસ્થપણે વસે રહે તેમ આદર્શ વૈષ્ણવ યુવક.

આદર્શની સિદ્ધિ માટે કલા વધા તરખર મરો, સાંચ પર આદર્શ વર્તા આંચની પણ પારા કરેના ન દોષ, વૈષ્ણવ સમાજમાં પ્રચલિત એક કુરિયાતને પોતાના બ્યક્તિલ્પના કોળજથી ફેર કરવા મથતો, વિનાશ પ'યે વહી જતા વૈષ્ણવ સમાજ અને સમપ્રદાયનો વિકાસ સાધવા સતત પ્રવાસી આદર્શનો, આવી કલ્પ આવામાં વિદરતો યુવક તેમ આદર્શ વૈષ્ણવ યુવક.

વૈષ્ણવ સમાજ દુર્ભોગી ગર્ભમાં સખરતો હોય, સમપ્રદાયના ઉદ્ધારથી રહુદાક વાગતી હોય, દેશમાં
 ગાય અને જીવોની અડતોએ પ્રવર્તી રહેતી હોય, અને સારંગે વિશ્વ કાન્તિના લોપસ કાળમાંથી પસાર
 થઈ હોય એવે પ્રસંગે તેનું યુવાન ખમીર. હૃદયના આરે છે-આમજોગની ભાવના પ્રકટે, મારીને નદિ
 પણ મરીને દેશને અને વૈષ્ણવ સમાજને આફતોના આસમાંથી દોડાવીને રવચીને આરે કહારે એમ આશંકા
 વૈષ્ણવ યુવક. સમપ્રદાયવત્તા રહુદાક સાંભળી એને શણગું ન મૂલે, રંગરાગ ન મૂલે, માની લીધેલી એ
 દુન્યવી ફરજો ધરીસરને માટે ભૂલી નય તેમ આદર્શ વૈષ્ણવ યુવક. નવયુગ ધડવાની મહત્વાકાંક્ષા સેવતો
 હોય, પોતાના જીવન સંસારમાં ધીવરીયાધીશ્વર પ્રતિષ્ઠાદિત વૈષ્ણવત્વને મોખરે રચાવી, દેહ અને
 આત્માને દમી, મનને શુદ્ધ, દૃઢ અને પવિત્ર બનાવી વૈષ્ણવસમાજ અને સમપ્રદાયને ધરણે પોતાનું જીવન
 ધરે અને પોતાની જીવનનૌકાને-તોફાની સંસાર મહાસાગરથી નિર્ભયપણે હંધારી નય. અને આખરે
 આખરે સત્ય, નીતિ અને ન્યાય સાથે સમાનતાનાના ધોરણમાં સમગ્ર જીવન રક્તવિશ્વને, એ માર્ગે જીવન
 ધડવા પ્રેરે એનું જ નામ આદર્શ વૈષ્ણવ યુવક. વૈષ્ણવ સમાજ અને સમપ્રદાયનો ખરો ઉત્કર્ષ ત્યારે જ થશે
 કે જ્યારે ધરેધરમાં આવા હૃદય આદર્શનીય વૈષ્ણવ યુવકો બહાર પડશે.



નામજ નંદિ અને શેમાંથી લીધે તેનું નીચાન પશુ નદિ. ત્યારે મને યાંકા ગઈ કે હજી લેખના લેખક કોણ ? આજી શ્રીમનલાલ કે શાસ્ત્રી વસંતરામ ? હમણા એક કોરમો બનેલ છે કે મો. મેત્રીએ બંધાવે પુસ્તકનો અનુવાદ પોતાના નામથી વળી મૌલિક હૃદિ જણાવી પ્રકટ કરી પાછળથી પોલ પકડાઈ ત્યારે મો. મેત્રી દીલા પોયા થયા. માટે આ લેખ કેની કાન છે તેનો જવાબ શાસ્ત્રી શ્રીમનલાલ આપશે !

સંપ્રદાયમાં વધોત્ક વિદ્વાન બે છે. એક તો ક્ષયુત પ્રો. રતનલાલજી શાસ્ત્રી, બીજા ક્ષયુત પરવારીજી સાહેબ છે. હમણાં પ્રોફેસર સાહેબ નિવૃત્તિમય જીવન ગાળી, યુગ્મ રત્નપત્નિ રમણી કરી, શ્રીમુખિ-નીજના વાચનમાં તથા સંપ્રદાયિક સાદિલ્યના પ્રકાશનમાં બાજી રહેલો કાજ નિર્ભરન કરે છે. ત્યારે શ્રીપરવારીજી એક મદાદપાધિમાં આવી પડયા હાથે છે. શ્રોતાશ્રદ્ધરાની વર્તમાન પરિસ્થિતિને અંગે દુષ્કરિય થયેલી ચર્ચામાં પરવારી સાહેબે મુંબઈની સમાના પ્રમુખ તરીકે કાવો પ્રસિદ્ધ થયાં. પરંતુ તે હમણા પહેલા મુરબી, વરીષ, પૂત્ય પરવારીજીને એક વિનંતિ કરી ચક્રું કે આપ શુદ્ધ થયા હો, માટે આત્મકલ્યાણાર્થે યુગ્મ રત્નપત્નિ બ્યાન રમણી કરી, (ચર્ચાનું જે થયું હતો તે થયે) શીગોવર્ધનપરજીની ઇચ્છા હો. એ રસરસિદ્ધ પ્રમુ તો એમની ઇચ્છામાં આવે તેમ કરવા દરો. તેમાં, તમે, કે સંપ્રદાયના મોટા લોકો, કે આચાર્યો, વૈષ્ણવો, સુમારકો શું કરવાના દલા. માટે પ્રમુ રમણી કરીને) એક ઉત્તમોત્તમ પુસ્તક વૈષ્ણવ પ્રબલે વારસામાં ગર્વણ કરે તો કેતું ? આપ પરમ બલવદીવ હો માટે પ્રમુ ફજ્જા ચલીયસી માની ઇશ્વર રમણી કરો.

“ જુલતાવી ” કે સપ્ટેમ્બર અને ૧૯૩૩ ના પત્રમાં મદાદપાધિના સાક્ષરત્વ દુર્મારકે કેવરામ શાસ્ત્રી શું કરે છે ? “ શ્રીવૃદ્ધવાચાર્વના કનઝાભિષેકની ઐતિહાસિકતા વિષે પ્રચલિત મતની અવગણના કરીને ચર્ચા કરનાર એલ. રંધીલાસ તથા ડા. રૂડ-ટ-ડડના “ જુલતાવી ” માં (પૃ. ૧૦૧૭ મા) તે કવરની નોંધમાં “ કનઝાભિષેકની ગોવદાસિક સત્તાવા પુસ્તકર કરવા માટે રવડન સાચા નિમિત્ત પુરાવાઓ ” માટે માગવી કરનાર “ જુલતાવી ” ના સંપાદક પશુ “ અગ્રદાણુ ન તણાય ? અમૃતલાલ ડ. ખારેખ.

પર ધ્યાન ન આપી લેખાણુ પણ ન હોય તેથી શંકા શું છે ? અને કહાય નિર્ણય કરવા પ્રેરણા તે વેંચવા પ્રેરણા, તે પોતે તેમ કરી શકે તેમાં લેખકને શું ? શા માટે તે શ્રીશંકરાચાર્યના અનુયાયી પોતાના જ આચાર્યના જગ્યા માટે ૮૦૦ થી ૧૦૦૦ વર્ષના ફરક જુદા જુદા પુસ્તકોમાં દર્શાવે છે તેનો નિર્ણય કરવા મહેનત કરતા નથી ?

શંકા નં. ૨ શ્રીવલ્લભાચાર્યજીએ પોતાના અધ્યાત્મ પોતાના માટે અભિરૂપરૂપ વાંધું તે ઉપર કે ક્રોધ ?

કાંઈ પણ વ્યક્તિને પોતાનો નામ અને વસિલા રેખાંત નથી. તેમાં પણ એને ઇર્ષ્યા અને દ્રેષ રૂપી કમળાએ ઘેરાયે હોય તે તો ક્યાંથી જ દેખી શકે, તેમ લેખકને પણ દોષ જ લાગે છે. શ્રીશંકરાચાર્યજી કહે છે ને પરમજ્ઞા નિર્ણય તદેવાદ્યમસિદ્ધિ પરબદા નિત્ય છે, તેજ હું છું અને જહનમ્મારિમ્-હું બદલ છું” એવા જ્ઞાનોપદેશ તેમના અનુયાયીઓમાં મુખ્ય છે. શું લેખક પણ રવ સિદ્ધાન્તથી અજાત છે, કે નવજુવા છતાં રવમુખથી પોતાના શુભ માટે ન યોજાય તેથી વેંચવાને નિમિત્ત આપી જોડાવા હવે છે, ધન્ય છે તેમની બુદ્ધિને, જ્યારે શ્રી શંકરાચાર્યજી જેવા બદાને તો ફક્ત નિર્ણય નિર્ણય માનનાર પોતાને હું બદલ છું એમ નદે તે હજી અને શ્રીવલ્લભાચાર્યજી તો અભિરૂપરૂપે તમે તે માટે શંકા અને ન્યાય કરવા ?

શ્રીવલ્લભાચાર્યજી તો એક જ પરબદાને સર્વજનસમર્થ, નિર્ણય અને સચ્ચ, ક્રિયાવાન અને નિર્લેપ પણ એવું સર્વવિરુદ્ધમાર્ગ્ય છે એમ શ્રીલોકેશ્વરી પ્રકટ કરનાર પોતાના સિદ્ધાન્ત પ્રતિષ્ઠા કરતા અંધમાં કે જેના કોઈક શ્લોકમાં આચાર્યજી વરેલું છે અને અવિદ્યા રૂપી રત્નોના તારા કરતા એવી શ્રીલોકેશ્વરી તત્ત્વજ્ઞાનને પ્રકટ કરતા પોતાને (લોકિક અગ્નિ કે જેનો રપરક થતા જ સર્વ ભરમામ્મત યાવ તેવા નહિ પણ) અલોકિક, આધિદેવિક અભિરૂપરૂપે પોતાને વાણીદેવતાના પતિરૂપે દર્શાવે તેમાં શું શંકા ? વેદમાં પણ “શ્રાદ્ધોત્સવ મુલભાસીત-અગ્નિર્મયી” ભગવાનનું મુખ બ્રાહ્મણ છે, અગ્નિ ભગવાનનું મરતક છે ઉત્પાદિ વાક્યા રપટ છે, તે લેખક શું નથી જાણતા ? અને તે પ્રમાણુ બદલે તો હજારો શ્લોકો કહે પછી ભલે તેજવાલા હોય ના ન હોય પણ વાવિક પાસેથી શ્લોક ભગવાનનું મુખ છે, અભિરૂપ છે ને તેમાં હોયેલું એટલે બ્રહ્મભોજન કરાવેલું તે ભગવાનને પહોંચે છે એમ મનાવી પૂલ ચઢવું કરે છે. શું લેખક બ્રાહ્મણો મુખઅભિરૂપ નથી એવું દર્શાવી આ પ્રથા બંધ કરાવવા હવે છે ? ને તેમ ન હવેલો હોય તો પછી શુદ્ધ બ્રાહ્મણ ક્રમમાં, સંપૂર્ણ રીતે બ્રાહ્મણત્વ ધરાવનાર, શુદ્ધ સનાતન પેઢિક ધર્મની ધર્મપતાકા ફરકાવતા આચાર્યજીને ઉપદેશ આપી નિર્ણય અંધમાં અવિદ્યારૂપી રત્નોના તારા કરવા પોતે પોતાને અભિરૂપરૂપે એવા દર્શાવી ધર્મનો નાજુક કરે અને નિર્ણય અભિરૂપરૂપે કહે તેમાં શું દોષ ? વાચકે ચાહ રાખું ને શ્રીવલ્લભાચાર્યજી પોતાના શુદ્ધ આત્મરૂપરૂપની વિરૂપ્તિવાળા ન હતા પણ આત્મસાદ્ગત્તાર એટલે આત્મરૂપરૂપનો અનુભવ કરનાર હતા તેથી તેઓથી, જેમ મંત્રદશા જપિયો અનુભવ કરી લખી ગયા તે સત્ય છે તેમજ, ને જાણે તે સત્ય જ છે અને તેમાં આત્મશક્તિ જેવું કાંઈ પણ નથી.

શંકા નં. ૩ વાણીનો સંયમ કોણે જોયો ને મૂર્ખ કોણ ?

પૂર્વ આચાર્યોમાં જેમની શ્રીલોકેશ્વરી અને પ્રમાણુ ધર્મવિરુદ્ધ જણાય તેવાઓને નામ નિર્દેશ આપ્યા સિવાય પ્રકટતીર્થ, અસુર, પાખંડી કે લખાણુ મૂર્ખતાવાળું છે એવું જાણે તેમાં શું યર્થ જણે ? સાક્ષી ભણનારા સાક્ષીઓ પણ તેમ શક્તા નથી ને કાંઈ પણ નવીન વજાવ્ય સિદ્ધાન્ત સમજવવા માટે જન સમૂહ સમક્ષ કથળું હોય ત્યારે પ્રથમ હલકા દર્શાવતા સિદ્ધાન્ત માટે તેવા શબ્દો વાપરવા જ પડે છે અને તેમ કરવામાં લેખકના આચાર્ય પણ જાણી શક્યા તો નથી જ અને શ્રીશંકરાચાર્યજીએ પણ બ્રાહ્મમતાનુયાયી આગે અન્યે રચતા પોતાના જ અંધમાં “ભગ્યે પાવંદિનઃ શર્વે જ્ઞાનજાતાંસુ દુર્વલાઃ પ્રીત બધા પાખંડીઓ છે, અને જ્ઞાનની વાતોમાં દુર્ગંધ છે એમ રપરક કહે છે તો શું ઉપરનો ઉલ્લેખ સાચે સાચે તેમને પણ લાગુ નહિ પડે ? વિરોધ તો લેખક પોતે જ જ્યાં નામ નિર્દેશ સિવાય શ્રીવલ્લભાચાર્યજી અસુર પાખંડિ, વિ. શબ્દો વાપરેલા છે અને તેણે શ્રીશીતાલમાં પણ દર્શાવેલું જ છે, ત્યાં (કોસ કરી) વચમાં શ્રીશંકરાચાર્યજીનું નામ મુકીને તે જાણી શબ્દો ફક્ત શ્રીશંકરાચાર્યજીને જ કરતા ન હોય તેમ

એવા પ્રબંધ થવો જોઈએ, જે સેવામાંથી અધિક સેવકોના દિસાબથી તેઓને અલગ આપે. અથવા સેવા દેવાની વાત મંદિરથી અન્યત્ર કરે. આમ કાયદો કરવાથી બધી વાત સુચવવા તેમ છે.

એક બીજો અન્યાય—શ્રીનાથજીના ક્ષેત્રની જેમરેખ માટે નીચેની કમીટીમાં કોઈપણ અન્ય (શ્રીનાથજીને સંબંધ ધરાવતા) રાજ્યોને નિમંત્રણ નહીં તેનું કારણ શું? સંમિલનના પ્રમાણે જ્યારે હૃદયુર નરેશ તરફથી શીજીને ભેટ થયેલી ભગીરની ઉપજ વાર્ષિક રૂ. ૬૦ થી ૭૦ હજાર રૂપિયાની છે, ત્યારે કોટાનરેશ તરફથી શીજીને ભેટ થયેલી ભગીરની ઉપજ વાર્ષિક રૂ. ૧ થી ૩૩ લાખની છે. એવીજ રીતે ઇતર વેષુવ અને ધર્મચુરત રાજ્યોના રાજ્યમાંથી થયેલા મોટા પ્રમાણમાં શીજીને ભેટ થયેલી ભગીરની ઉપજ છે. કોઈપણ રાજ્યોના તેમજ તેઓના પ્રતિનિધિઓને કમીટીમાં સામેલ નહીં કરતાં ફક્ત પોતાનાજ હાથ નીચે સત્તા રાખવા માટે કમીટીના સદ્યદરેશોને કાળના પુતળાની આંકે આગમ ધરીને હૃદયુર રાજ્ય પોતાનો કબજો જમાવવા માગે છે એવું સ્પષ્ટ તરી આવે છે. આ સતરજવાસ કમીટીના સદ્યદરેશો જાણે છે કે નહિ તે પ્રશ્ન જાણે.

તા. મદારાણને જોઈએ હતું અને વેલે કર્યું. શ્રીનાથજીની સત્તા ઉપર પોતાનો કાબુ જમાવવા માટે તા. મદારાણનો પહેલેથી ઈરાદો હતો કે શું તે કોઈ ચમત્કંઠ નથી. તેમાં વળી કમીટીના સદ્યદરેશોએ મદદ કરી. પણ વેષુવો કમીટીને પૂછી શકે કે તમને શીજીની વ્યવસ્થા કરવા કોના તરફથી શોધવામાં આવ્યા છે? તમે ક્યાં સંસ્થાના નેતા છો?

વિશેષમાં તો, કમીટી ઉપર પંજુ હૃદયુર તરફથી એ ચુદરેશો નિમાયા છે, બતાવે, એ કમીટી કી ચાલની છે શું? હા તો હા મેળવી શીજીની સત્તાને અને શ્રીપ્રજ્ઞચરણની રાજ્યસત્તાને હૃદયુર દરબારના હાથમાં આપવી એ સિવાય બીજું કંઈ થવાનું નથી. સમસ્ત વેષુવોનો પોષાર એ છે ને ને કમીટી નીમે તો સાતધરના શ્રી ગો. બાગોજી નીમી શકે. આનાથજીના સંપૂર્ણ હક્કાર શ્રી ગો. બાગોજી છે, અને જો તેમ ન થાય તોજ પહેલાની કમીટી, જે શ્રોતિવકાચિતશ્રીએ રચાયેલી તે ઉચિત છે. જેમાં ચાર શ્રીગો. બાગોજી ચાર રાજ તથા આઠ વેષુવો તરફથી સાત્રક મજાવાળા સદ્યદરેશો હતા. આઠ કમીટીમાંના કેટલાક આંતર સુધારકપક્ષી અને કેવલ નારિતકો (જેઓ પ્રજિમાનને જાણતા નથી) એવાઓને રચાત શ્રોતિવકાચિતશ્રી ન જ આવત. શ્રીગો. બા. ચિતા શીજીને ત્યાંની સેવા રીત જાણ જાણે છે? શ્રીનાથજી એટલે બીજા કેવરેશનો જેવું એક જૂન્યરચાત મગજ નથી. શ્રીગો. બા. ની કમીટીની અવસ્થા જરૂર છે, તેમજોજ હક ઊભા. કમીટીના પચસાં શ્રીજીદારમાં ચર્તાની સાથેજ શ્રીજીદારમાંથી અને શીજીને અન્નદૂતો વિરુદ્ધ પ્રસંગ બન્યા ન જાણે આગળ શું થશે? સંમિલન છે કે, શીજીની પુત્ર મિત્રાતની જાણની આવવી સાહે કરી જદાર ભહેરમાં લાવવી છે. જે તેમ થશે તો આંખી દુનીયાની તબ્દે શીજીની હોલત ખુલશે. અને એનું પરિણામ મંદાન બચાંકર આવશે. માટે સાત્રક અને શ્રીમી વેષુવો તરફથી એક કમીટી હાય. અને ત્યાં શ્રી ગો. બા. ની કમીટીને મેળવી, એક પ્રખર આંતરલન કરવાની જરૂર છે. હુકમાં હૃદયુર દરબારે જેવી રીતે જોતિઓના રચાત શ્રોતસરીવાળને સ્વતંત્ર કરી લીધું તેમજ અહીં પણ થાય તે પહેલાંજ વેષુવો એ તે તો સાં. પણ હૃદયુર દરબારને એમનાજ પોતાના અને પોતાનાજ રાજ્યના જવાને માટે અમેા સર્વે પ્રાર્થવે જીએ કે આપનાં આવજના રાજ્યોના વચને જાણે શું થવી આવશે? શ્રીમદરાજાધિરાજ મદારાણાશ્રી બીમસિંહજી હુકમ કરે છે કે:—“તારા સેવકો શીજીને નીચે વર્ણવેલાં માંગે અને ચહેરો ભેટ આપવામાં આવે છે વસુલાત, દસિલ, વસાહ, લગાવ (લામ્હા મેલમદ) અદરેશો પ્રિદા અને સીમા એ જાણુ શીજીના તાગમાં છે. જો મારા બીજાને હોય તો હોઈએ આ ખામત વાંધે ઉઠાવવો નહીં.

શ્રીમદારાણા બીમસિંહજી ફરમાવે છે કે:—શીજીનાં માંગે અથવા શ્રીગુસાંઈજી મદારાણાની ખામતો જામીને કોઈપણ અદરેશજી કરવી નહીં તેમજા ઉપર કોઈ હુકમ અથવા ફરમાવ મા નાખવો નહીં. નાપદારમાં ઉભી થતી ફરીયતો હાવા અથવા જે જે ખામતોમાં આવતી જરૂર પડે તે ત્યાંતે ત્યાંજ આપવામાં આવશે. તેમાં કોઈ વચ્ચે પડશે નહીં. શ્રીગુસાંઈજી જે ચુકાદો આપશે તે મારે કબુલ મંજુર છે. તે ચહેરો અને વેપારી માલતી જકાત (શ્રીનાથ

હોતા અને તેના પેટા જામોળી) અન્નભાવદયી (પંખાઈ) શ્રી જે ખંડેર બાબરમાંથી લેવાઈ હતી. તે શ્રીમતી માલુપર કર ચાંદે દરવાને લેવાઈ તમામ દલાલી અને લવાજમ. ગમે તે ભવતા કર એ બધું શ્રીજીને બક્ષીશ આપીએ છીએ.

પરદેશી વખત વાઘેએ જે વેષજીએ આપાવ કરવા હતા તે વસ્તુઓ દેશી અગર પરદેશી દોષ અને નાશદારમાં વાપરવા માટે દોષ તેા તેના પર કર લેવામાં આવશે નહીં. તે સંદેશના અને તેના સુધના જામોળાં શ્રીજીના પવિત્ર દક્ષને ટેકા આપવામાં આવશે. જે ત્રાસ લેાલીએ હો અને માસ નોકરો હો તેા આ દુઃખનો સહામલ અને નિર્ધારને માટે ગમે ચલાવજો જે જે આ ભેટ જાણી લેશે તે આઠ લગત વચસ સુધી નરકમાં કોટેા ચળીને રહેશે. મ.વ. શ. ૧ સં. ૧૮૬૫. મહારાષ્ટ્રા ઉદ્દેશુરું ઉપરના મોટા અક્ષરે ઉપર અને ધ્યાન ખેંચીએ છીએ. દીવાની ખેંચી લીધી તેમજ નક્કાવ પણ અવન નાખી, અને શ્રીગુણકંઠને પરત્ર બનાવવા ઉક્તું લખાણ સંકરતા સમયમાં શ્રીતિલકપવિત પાસે દલાલુદી લખાવાણું તે શું ન્યાય છે ? કાંકેશીના શ્રીગોસ્વામીશ્રીને તેમજ કમીટીને તથા લાવવવાના લાલુક શ્રીજીના દુષાપાત્રોને વિનંતિ છે કે આ શું થઈ રહ્યું છે ? ઉમરૂં બધુ સાકે દેખાવ છે પણ આખરે કાંઈ નહીં થતેં તેા વિચર્ય પરિણામ આવશે એ ચાકસ છે. રાજસૂત્રા કાંઈ વિચિત્ર પદાર્થો છે તે પહેલાં કાંઈક થવું જોઈએ. તેને માટે અમારા સર્વે વેષજીનાં દન મન અને ધન તૈયાર છે. જ્યાં સુધી વજારી સુધિ છે ત્યાં સુધી શ્રીજીને ચરિત્રવિનુ પણ પરિવ્રમ નથી. પહેલાના લાલુક રાજાએ અપેશ કરેલી સત્તા અર્ધશુદ્ધ બતાવી દીધી છે. શ્રીજી અર્ધશુદ્ધનો અંગીકાર કરવા નથી.

શ્રીનાથદારાના વજવાસીયોને પ્રાર્થના—વજવાસીયો, શ્રીજીને માટે તમે પહેલાથીજ પ્રભુ આપવા આવ્યા છો; માટેજ શ્રીજી તરફથી તમારે પાલન સારી રીતે થઈ રહ્યું છે. જે શ્રીમ. બાલકને દક્ષ આ લોકોએ કમીટી કરી દલાલી લીધી તેા તમાને નમ્રમાં જે પાલન કરવામાં આવે છે તે તમારું ખર્ચ સંમત દાલમાં તેા નહીં પણ આજ ઉપર બંધ કરતાં અચાચો નહીં:—શ્રીજીની શ્રીલક્ષ્મી દેવકી છે કે તેની અણુત્રી કરવા ન દેવા તેમજ કમીટીના દાલમાં મહેનાપર ન રોપવા. નહીં તેા તમને પણ ધોષા છે.

દલું પણ પળી ખાનની ચાલબાલ ચાલે છે, એ મેવાલી ચાલબાલ શું નહીં કરે ? તે ખજાર પડી નથી. માટે વેષજી તરફથી બધે આજ કમીટીમાં ચાર રાજાઓ અને ચાર મહાસુબાન શ્રીગોસ્વામી સંમતિવિત દોષ અને સેવા પ્રકાર માટે જો. જા. સાવ ઘરનામાંથી મોઢને પણ પરિચારક ત્વરાથી નીમે. સમિતિવા પ્રમણે જેવી રીતે મોટાના આવક મોટા નરેરો રોપી છે. તેથીજ રીતે શ્રીજીની સમજત આમદની જે જે અખતારમાં દરો તે રોકો, તે ધ્યાન રાખજો, પરિણામમાં આ લોક અને પરલોકમાં અપયસ મને છે ? શ્રીનાથલ શ્રીગોસ્વામી બાલકોના કોરલ ન છે, ઉદ્દેશુર નરેશના નથી. જે જે નરેરો શ્રીજી ઉપર હાથ કરી છે તેનું ફલ તેઓને ફેવું મળ્યું છે તે ઉત્તિદાસ બતાવી આપે છે. માટે આખરે અમારી એજ પ્રાર્થના છે, જે શ્રીનાથલ પ્રથુ ઉદ્દેશુર દરબારને સુખદિ આપે. શ્રીગોસ્વામી બાલકોના દક્ષને જીનવોને આજ સુધી કંઈ સુખી થયું નથી તેમ થશે પણ નહીં એ નિઃસંદેહ છે. જ્યાં શ્રીગોસ્વામી બાલક નથી ત્યાં શ્રીજી પણ નથી. શ્રીજીનો આત્મા શ્રીવદ્મમુદલ છે એ શ્રીપ્રદાશજીની અદ્વા છે.

હી. શ્રીનાથદારાનો યાત્રાલુ વેષજી.

સાંપ્રદાયિક પ્રવૃત્તિ.

સ્થામદાકમાં વતચર્ચામનોવચ—શ્રીગાયત્રી શ્રીજીત રચપના પ્રથમ મુખ્ય રચપ શ્રીમયુદેલ બિરાજે છે. તે મંદિરના શ્રીવિશ્વકર્મ ગોસ્વામી શ્રી ૧૦૮ શ્રીચિરિવાલ (તે શ્રી મુળમાં શ્રીગાયત્રી દલાલીના માણીક ગોસ્વામી કોદારદેલકાલ) મહારાજ શ્રીમયુદ નગરી વરને જીપુસમાં શ્રીચિરિ-રાજલુદું પવિત્ર રમણીય રચ છે, ત્યાં શ્રીમયુદેલનું મંદિર આવેલું છે, ત્યાં બિરાજે છે, અને તે મંદિરમાં તેઓશ્રીના શ્રીગાયત્રીના મંદિરના શ્રીબાલુપુલુદાલનું રચપ પણ બિરાજે છે, અને શ્રીવિશ્વકર્મ શ્રીચિરિ-વાલ મહારાજશ્રી અને પધારી શ્રીબાલુપુલુદાલની સેવામાં પદ્મજ પરિવ્રમ લઈ દલને વેષજીને અગ્રીક દર્શનનો લાભ આપાવે છે. કોટથી કેટલાએક વસ્તો ઉપર સત્વરરચપના એક રચપ શ્રીમયુદેલ શ્રીવજ બુધિમાં પંખાયાં હતા, તે વખતે શ્રીચિરિવાલમાં કેટલોક વખત જોરાળ્યા હતા. તે વખતે સ્થામદાક

ઉપર એક મનોરથ થયો હતો. તે ઉપરથી કેટલાએક વૈષ્ણવોએ વિનંતિ કરવાથી શીખાલકૃષ્ણજીને રથામદાક પધરાવી એક મનોરથ કરવો એવી ઇચ્છા ઇચ્છી એ વિનંતિથી અને વૈષ્ણવોનો આગ્રહ એક દિલ્લખવત શ્રીચિરિશ્વરજી મદારાજશ્રીની ઇચ્છા થઈ. તે એક મનોરથ કરી વૈષ્ણવોને ભલોઈકે ઇચ્છનાં કરાવવા એ નહીં થવાથી શ્રીમધુસૂત્ર ગોકુલ તથા જ્યોતીપુરા તથા રથામદાકના આસપાસ આગેમાં ખબર પડવાથી મન વાસ્તીએ તથા વૈષ્ણવો તેા આનંદનો પાર રહ્યો નહિ અને શ્રીચિરિશ્વરજીમાં શ્રીનાથજીનું પ્રાકટય થયું હતું અને હાલ શ્રીચિરિશ્વરજી સાત ફેસમાં બીસજે છે અને ચાત્રાણીએ અને આવી સાત ફેસની પરિકામાં કરે છે અને ચતુર્થ ફેસમાં અને ૮૪ ફેસની પરિકામાં કરવા હમરે ચાત્રાણીએ શ્રીગોસ્વામી મદારાજશ્રી સાથે કરે છે ત્યારે શ્રીચિરિશ્વરજીમાં આઠ દિવસ રેરા પડે છે, મોટી ભગ્ના લાગ્ય છે અને શ્રીચિરિશ્વરજીના મુખારવિંદ ઉપર સજુનાર થાય છે અને કુંડવારા તથા દાનના મનોરથ થાય છે. લીલાલી ઉપર અનકોટનાં ઇચ્છના થાય છે. ત્યારે લાખો ચાત્રાણીએ અલોઈકે ઇચ્છનાં લાભ મહે છે. આવા મનોરથો દર વર્ષે થાય છે, પણ રથામદાક ઉપર આજ નીસ વર્ષ અગાઉ શ્રીમધુસૂત્રજી પધાર્યા હતા. તે વખતે અલોઈકે મનોરથોના ઇચ્છનાં લાખો ચાત્રાણીને લાભ મથ્યો હતો અને શ્રીનાથકૃષ્ણલાલજી પધારવાના છે એ બોલે મનોરથ છે એવી રીતે અજેના વધેશ્વર મજવાસીઓનું કહેવું છે. રથામદાક જ્યોતીપુરા ભાગથી ત્રણ માહવને છેડે આવેલું છે. તે રમણીય રથામદા શ્રીનાથજીની લેકા આવેલી છે. અને જોનાં થયથી સુચોભિત રમણીય રથાન છે. એવા પવિત્ર રથમાં શ્રીકૃષ્ણ ગોપીજનો ગોવાળીઆઓ સાથે રમણ કરતા હતા. શ્રીનાથજીની લેકા પાસે રથામ તળાવ આવેલું છે. એક મીઠા પાણીનો કુવો તથા એક નાની ધર્મ-શાળા આવેલી છે. આવા રમણીય પવિત્ર રથમાં કાણુ હુડવનો દરી તેનું મન પીગળ્યા વગર રહેશે નહીં. રથામદાક ઉપર એ દિવસ પહેલાં ગોવલુ કરવામાં આવી હતી અને રથામ તળાવના ઘાટ ઉપર એક કંઠમનું વૃક્ષ આવેલું છે તેના ઉપર વસુ ટંખામાં આભ્યાં હતાં. અને એ માટ સરખો કરી સાજ સજવામાં આવ્યો હતો. એવી રીતે બંદોબસ્ત થયો હતો. આ મતયર્થી (ચીરદરજી) લીલાનો મનોરથની વૈચારી જઈ રહેવાથી કાંઈક વડ સાતમને શુક્રવારની મંત્રલિંક સવારના રાજભોજના ઇચ્છના થયા પછી નવ વાગે શીખાલકૃષ્ણજીને રથામદા પધરાવ્યા હતા અને ખામેખામથી મજવાસીઓ તથા વૈષ્ણવો તથા સત્કારીઓની મેટની ઘડ હતી. સાડા નવ વાગે સ્વારી બંદુકો બદારથી અને ચાલ્યો તથા નખાશઓના સરોઈથી તથા ધનપતાકા પોટેસ્વારો વગેરે અતિ ધામધુમથી શ્રીચિરિશ્વરજીની તળેડીમાં બીઈંદવડી ચિલાથી શ્રીચિરિશ્વરજીના મુખારવિંદના સાંકળે હંડવડ કરી સ્વારી ચાલતે ચાલતે આમગ ચાલી અને ગુરબિડુંક થઇને રથામદાક પધારી શ્રીનાથજીની લેકા પાસે બોને પધરાવ્યા હતા. શ્રીને સામથી ભોમ ધરાવવામાં આવ્યો હતો. રથામદાકમાં હમરે વૈષ્ણવો તથા મજવાસી સન્નારીઓથી તથા ચાલ, નખાશના સરોઈથી તથા કીર્તનીઆ કીર્તન કરતા હતા અને વૈષ્ણવો લાંબન કરતા હતા અને મજવાસીની સન્નારીઓ રસીઆ આવાં હતા તેથી આ રમણીયરથાન આનંદ મંજલથી ખાજ રહ્યું હતું. ભોમ સરખા પછી શ્રીને રથામદાક પધરાવ્યા અને સ્વારી ચાલતે ચાલતે રથામ તળાવના ઘાટ ઉપર ચાલી અને લાં શ્રીને પધરાવવામાં આવ્યો. તે માટે ધનપતાકાઓથી તથા ઘાટના પતથીઆ પાસે તળાવમાં ગોપીજનોનાં સ્વરોપને ગોઈવામાં આવ્યાં હતાં. તથા ખાસ માતાજીએને સજુનાર સજ એક બાજુ ઉભી રાજવામાં આવી હતી. મજવાસીની કુમારિકાઓને ઉપર કલસ ધરી ઉભી રાજવામાં આવી હતી. અનાઈકાજમાં શ્રીકૃષ્ણ તથા ગોપીજનોએ ચીરપાટ ઉપર ચીરદરજી લીલા કરી હતી જેવા ભાવ વૈષ્ણવોને થયો હતો. સાંજના પૂર્વે વાગે ઇચ્છનાં ખોલવામાં આવ્યા હતાં. શ્રીદિલ્લખવત શ્રીચિરિશ્વરજી મદારાજશ્રી તથા વહજ મદારાજશ્રી શ્રીની સનમુખ બીરાજ્યા હતા. એ કલાક મુઠી અલોઈકે ઇચ્છનાં લાભ હમરે વૈષ્ણવોને થયો હતો. આ મર્થમાં જ્યોતીપુરાવાલા મુખજીજી પ્રલદાહજીની કેખરેજ નીચે વ્યવરયા હતી. તેઓએ તમનથી મેનત કરી આ કાય પ્રસંસા પાત્ર કરી આપેલ હતું. તેઓને ધન્યવાદ થતે છે રાવડા કેટલાક જોડેને પ્રસાદ લીધા બાદ શ્રીને રથામદાક પધરાવી ચાલતે ચાલતે સ્વારી જ્યોતીપુરા ચાલી આવી રીતે મતયર્થી (ચીરદરજી) લીલાનો મનોરથ અતિ આનંદ મંજલ સાથે સંપૂર્ણ થયો હતો.

શ્રીભક્તિમાર્ગ સાહિત્ય મંદિર—મુખર્જીમાં શ્રીલાલજીવાના મંદિરમાં આવતાં ઉપપૂજ્ય માર્ગદર્શન પ્રવાર તા. ૨૦-૧૧-૩૩ ના દિને રથાન પરિકરણ કરી સુપ્રસિદ્ધ ચિદાન ગો. વિ. શ્રી ૬ શ્રીમજના-

લાઠીને નરહ દરેતે ખૂદકું મૂકવાનો વિધિ થવાનો હોવાથી તે નિમિત્તે મનકુર દિને સંન્યાસ ૭ માસે રવાનીય મોઢા મન્દિરના બગીચામાં ધર્મનુરાગી જનતાની એક સભા મળી હતી. તે સમયે ૧૯૧૭ માં દેવવાતા પૂ. પા. ગો. શ્રીદાસરાલાલજી મહોદય અન્વ જાત ગેરવાચીઓ, સમગ્રવાચના વિદ્વાનો અને સમગ્રનુરાગી વૈષ્ણવ લાઈ બહેનોએ સારી સંખ્યામાં દાબરી આપી હતી. યારઆતમાં શ્રીયુત દ્વારકાદાસ લણીએ આમંત્રણ પત્રિકા વાંચી સંભળાવી હતી.

વ્યવસ્થાપકકું નિવેદન—ત્યારપછી ઉપધુંક જન્ને કાર્યાલયના વ્યવસ્થાપક ચિરિધરલાલ ન. શાહે પૂ. પા. ગો. બાલકોને ભજવત્રસાદી પુષ્પમાળા ધરાવ્યા પછી પોતાનો કાર્યાલય પારવેનો અનુભવ અને નિવેદન રજૂ કરતાં જણાવ્યું હતું કે—

સ્વધર્મનુરાગી સન્માનનીય બંધુઓ અને બહેનો !

આજના સુ અવસરે પરમવંદનીય પૂ. પા. શ્રીમદ્દેવભાઈ કુમારના પાદપદ્મામાં સદૈન્ય પ્રમાણ કરી ‘શ્રીભક્તિમાર્ગીય સાહિત્ય મંદિર’ અને વાચનાલય પરત્વેના મારા અનુભવ અને મારું નિવેદન રજૂ કરું તથા પૂર્વે મારી પૂર્વે પરિચિતિના હુકે પરિચય આપું તે તે અરથાને નહિ જણાવ. નિ. સ. ૧૯૭૨-૮૦ માં સંપ્રદાય પ્રતિ વિરોધીઓ તરફથી પ્રત્યાષાતક અળવળ થાર થઈ. શ્રીમદ્દેવભાઈપરિચરું સમગ્રાધિવેશન રવાનીય માધવબાગમાં ભરાયું. સંપૂર્ણ વિરોધી વાળવરણ અને પ્રતિકૂળ સંભોગો હોવા છતાં મુકુટચળ કાયકત્તિઓના પ્રયાસથી સફળ થયું, અને તેજ અરસામાં પ્રત્યાષાતી અળવળને પરાસ્ત કરવા આપદયક પ્રયત્નો થયા હાલમાં તેમાં તે સમયના મારા જેવા ઉગતા છાત્રાસુ માટે સંપ્રદાયિક ચિદ્વાદ જાણવા તથા સમજવા માટે સાહિત્ય વાચનની વિશેષ આવશ્યકતા જાણતા તેનું સાવધાન અવગોહન કરવાની યારઆત કરી અને તે અવગોહન કરતાં તેના પ્રચાર વિશેષ પ્રમાણમાં થાય તેની આવશ્યકતા જણાતાં એક ‘સાહિત્યચિંતક મિત્ર મંડળ’ ની રચના કરી તેના દ્વારા સામાજિક સાહિત્ય સાથે ધાર્મિક સાહિત્યનો પ્રચાર વિશેષ કરવાનો પ્રયત્ન કરતાં તે અમુક અંશે સફળ પણ થયા, અને તે વ્યવસ્થા લગભગ ત્રણ વર્ષ સુધી ચાલી પરંતુ ત્યારપછી ઉત્તરેતર યુગકંઠની આર્થિક પરિસ્થિતિ વિકટ બાબતો અને સાહિત્યમાં રસ લેવાના અભને દરેકને વ્યાવહારિક ઉપધિ વધતાં અમે સર્વે છૂટા છવાયા થઈ જવાથી મંડળ બંધ પડ્યું, છતાં ભજવત્રપાંચે મારી સત્યાહિત્ય પ્રચારની છાત્રાસુ ઉત્તરેતર વધતી ગઈ તેને સં. ૧૯૮૪ ના નિબધાદંશમીના દુઃખ દિને નિ. સી. પૂ. પા. ગો. શ્રીલુણ્ડલાલજી મદારાજે (શ્રીલાલ-બાવાના મંદિરવાળાએ) નિજ પિતૃચરણના રમરણાર્થે ‘શ્રીજીવનેશ પુલિસિદ્ધાન્ત પુસ્તક લેડાર’ જોલાવો તેની સચળી અવરથા રાખવાની અને આજ્ઞા કરી તે માટે પોતાના મંદિરમાં રથાન અને સાંપ્રદાયિક સાહિત્ય પ્રમથકો પાસેથી પુસ્તકાદિ સાહિત્ય મળી શકે તે સંબંધી સચળી સજવડ સાંપ્રદાયિક સાહિત્યનો પ્રચાર સારી રીતે થાય તે દુઃખ ભાવનાની કરી આપી તેમાં વે. શા. સં. શ્રીયુત ઉચિત્કમ્બુ-શાસ્ત્રીઓ પણ પ્રયત્ન હતાં એ મારે બૂબડું ન લેઈએ. તે દ્વારા સાહિત્ય પ્રચારનું કાર્ય લગભગ દસ માસ ચાલ્યું એટલાં હુકે સમયમાં કાર્યાલય પોતાનું ખર્ચ સારી રીતે ઉપડવા ઉપરાંત સાહિત્ય પ્રચાર પણ થોડાં રીતે કર્યું હતું યાને પંચમર થયું હતું. પરંતુ કતિપય વિમ્મસંતોષીઓના કારણે તથા ભવિષ્યમાં પૂ. પા. મદારાજશ્રીના તથા આજા દુઃખ હશે હીન થવાનો સંભવ જાણતાં મનકુર કામકાજ સંવત ૧૯૮૫ ના આવણ મસની આખરે બંધ કર્યું. તે સમયે સાનુદ્ધન સંધિએ સ્વતંત્ર જવાબદારીથી પ્રચાર કાર્ય યાર કરવા-છઠ્ઠા રાખેલી તે યુજ્જન સં. ૧૯૮૮ ના દ્વિતીય આયાદ દુઃખ ત્રયોદશીના દિને ‘શ્રી ભક્તિમાર્ગીય-સાહિત્ય મન્દિર’ ની વ્યવસ્થા કરવા નિશ્ચય કર્યો, અને તે માટે પૂ. પા. ગો. શ્રીલુણ્ડલાલજી મદારાજશ્રીની આજ્ઞા અને શ્રીલાલબાવામંદિરમાં પોખ્ય શાહું લઈ રથાન આપવા વિનંતિ કરતાં આપકીએ પ્રસન્નતા પૂર્વકે મારી યોજના માટે આશીર્વાદ સહ આજ્ઞા અને થોડાં શાહું લઈ રથાન આપવા અનુમત્ત કરી સાંપ્રદાયિક સાહિત્યનો પ્રચાર વિશેષ પ્રમાણમાં થાય એ ઉદ્દેશને લક્ષ્યમાં રાખી કાર્ય કરવા ખાસ સૂચના કરી ત્યારથી આપકીના એ આશીર્વાદાત્મક વાક્યસુધાએ હુકે સ્થિતિ કરી સાહિત્યપ્રચાર સાથે સાહિત્યવાચનનો લાભ સામાન્ય રિચિતિના ધર્મનુરાગીઓ લઈ શકે તે દુઃખ ઉદેશથી શ્રીભક્તિમાર્ગીય પુસ્તકાલય માને વાચન વિભાગની પાસે (મન્ત) વ્યવસ્થા કરી તેમાં એ પોતે ખરીદેલું ધાર્મિક અને સામાજિકયોગી સાહિત્ય ઉપરાંત સાપ્તાહિક,

મહાસિદ્ધિ અને અન્ય સામયિકો પણ વચિતો મળી શકે એવી ખાંસ વ્યવસ્થા રાખવામાં આવી છે તેના દ્વારા કેટલાક ધર્માનુરાગી સમજીને તેના ઉદ્દેશ અને નિયમોને અનુસરીને કંઈ રહ્યા છે, અને વિશેષ પ્રમાણમાં ધર્માનુરાગીઓ છે એમ હું હૃદયથી ઈચ્છું છું ભવતઃ આ પ્રમાણે ઉપધુક્ત બંને કાર્યોવશીની વ્યવસ્થા કર્યા પછી રચાનીય તેમજ બહારગમ્યતા સપ્રિણવિક સાહિત્ય પ્રકારો, છુટકોલો અને સંસ્થાઓના કાર્યકર્તાઓ તરફથી મને ઉત્તરોત્તર અનુકૂળતા અને પ્રોત્સાહન મળ્યું તેમ તેમ મારી મહત્વાકાંક્ષા વધતી ગઈ તેનેજ હું મારા ઉપર ભગવદ્કૃપા, વંદનીય ગો. બાલકોના શુભાશીર્વાદ; સામગ્રીયિક સુપ્રસિદ્ધ વિદ્વાનો, સન્નિત્રો અને સહર્મ પરાયણ મહાનુભાવોના સહકારને આભારી માનું છું. આ કાર્યમાં હું નિમિત્ત માન છું ભુક્ષિત્રેષ્ઠ શ્રીવત્સરાજકુમાર પ્રભુ છે તેમની પ્રેરણાનુસાર ને કર્તૃ કરવા પ્રયત્ન કરું છું તેમાં તે સચિત્ત દાનંદ રસાત્મક શ્રીકૃષ્ણની કૃપાથી સાહૃદય મળે છે એમ મારે ઓમાગ્ય સમજું છું અલ્પરે કેટલાક પ્રતિકૂળ સંજોગોને લીધે તથા પ્રચારકાર્યને વિશેષ પરલવિત કરવા ઉપધુક્ત બંને કાર્યોવશીનું આજે અને રજાન પરિવર્તન કરે છું તે સમયે ત્રદારા જેવા અનેકસાં ઉપર સર્વદા અનુકૂળ રાખતાં એટલુંજ નહિ પણ મારા દરેક સાપ્રિણવિક કાર્યમાં પ્રોત્સાહન આપી મારા ભાવનું સંચિત કરનાર શ્રીવત્સરાજકુમારકુલ વિદ્વાનિધિ પ. પા. ગો. શ્રી ૬ શ્રીમત્નાયકલાલ મહોદયે કૃપા કરી મળકુર કાર્યોવશી ચોતાના શુભ હરતે ખૂદલા મુદ્દા મટિ અને પદારવા ને અનુકૂળ થયાં છે તદ્વત્સાર આ વ્યવસ્થા પ. પા. ગો. શ્રીદારકેશલાલ મહોદયે પદારવા કૃપા કરી છે તદ્વત્ હું આપશ્રીઓનો સહૃદય આભાર માનું છું અને આપશ્રીઓનો કૃપા ઉત્તરોત્તર મારા ઉપર સર્વદા વૃદ્ધિ પામે એમ હું અહૃદય ઈચ્છું છું. તદ્વત્સાર અન્ય ગો. બાલકો કે જેઓ મને સમયોચિત પ્રેરણા કરી મારી ફરજ બલવત્વાની સૂચના કરી મારા કર્તવ્યનું પાન કરાવી રહ્યા છે તે માટે તે સર્વેનો હું ઝાળી છું તે સિવાય રચાનીય સાહી, હરિષ્કૃષ્ણમર્થ, શ્રીયુત ભગીરદાર, શાઓ હરિસંકરભાઈ, યો. શી. એન. નેશી, વાહશ્રીદારમહાસ દાણી અને શ્રીયુત ગો.પાલદાસભાઈ જોડે સન્માનનીય ઇશ મિત્રો ઉપરાંત રચાનીય રમત બહારગમ્યતા વિદ્વાનો અને ધર્માનુરાગી ભાઈ, ભગિનીઓ કે જેઓ મારી પ્રાયે સહૃદય રાખી આચર્યક સત્તાદ અને અનુકૂળતા કરી આપે છે તદ્વત્ તે સર્વેની સદ્ દાનવૃદ્ધિ માટે તે દરેકનો સહૃદય આભાર માનું છું અને મારા પર ને લાગણી સંચેતી છે તે મુજબ કાર્ય કરવા શ્રીહરિ અને શક્તિપ્રદાન કરે એમ તે પ્રભુના પાદપદ્મોમાં મારી સનિત્ય પ્રાર્થના છે.

સુજી ! ને હૃદયથી મેં આ પ્રચારકાર્યની સાચાત કરી છે તેને સમયોચિત સાનુકૂળતા મળવી ભવ છે. છતાં સત્યની ખાતર જીજ્ઞાસનું પડે છે કે લક્ષ્યવધિ વૈષ્ણવોના વસવાટવાળા મુંબઈ નગરીમાં માસિક રૂપીયા બસોતું પણ સાપ્રિણવિક સાહિત્ય વેચાઈ નથી આ ત્રદારા અનુસર છે. મારે ત્યાં સાપ્રિણવિક સાહિત્ય કરતાં 'ગીતા પ્રેસ' ગેરજાણુર કે તેના જેવી અન્ય પ્રચાર સંસ્થાઓના સાહિત્યનો વિશેષ પ્રમાણમાં પ્રચાર થાય છે. મટિ હું શ્રીમદ્લક્ષ્મીસિદ્ધાન્તાનુરાગી વૈષ્ણવોને સનિત્ય સૂચન કરીશ કે આપણુ સાપ્રિણવિક સાહિત્યનો પણ બહોળા પ્રમાણમાં ફેલાવો થાય તેને માટે તાન, મન કનથી પ્રયત્ન કરીશો તેના આપણી લાવી પ્રભુ ધર્માચિન્તિતવાળા રહી રાહો. ઓળાવૃષ્ણુ પ્રેમ સર્વેને ધર્માનુરાગી બનાવો એજ ઈચ્છી ગો. બાલકોના પાદપદ્મોમાં પુનઃ પ્રણામ કરી તથા આપ સર્વેનો વિશેષ આભાર માની મહાકે પદાન્ત્ય સમાપ્ત કરે છું.

ત્યારપછી પં. હરિસંકર શાસ્ત્રીએ વિવેચન કરતાં જણાવ્યું હતું કે સંપ્રદાયનો પાયા કેવળ સાવનાની ઉપર રચાયેલો નથી. સાવના હૃદયનો ધર્મ છે. સાવના સાહિત્યથીજ ઉત્પત્ત થાય છે. બાહ્ય સંસ્કારો ત્યારે હૃદય પર પડે છે ત્યારેજ ઉત્તમ વાચ-વાચ છે. સાપ્રિણવિક સાહિત્ય પ્રતિ વૈષ્ણવોની અસિદ્ધિ દર્શક નથી થતી તે કીલગીર થવા યોગ્ય છે છતાં પણ કયા વર્ષમાં ને સાહિત્યનો પ્રચાર થયો છે કે જેથી સાપ્રણુ થયાં આને વૈષ્ણવો પણ કરી શકે છે. સાહિત્ય પ્રકાશનની વ્યવસ્થા સારી રીતે ચાલી છે. પરંતુ તેને કલ્પના ભારથી સદ્કાર મહત્તની આવરણકતા છે. ભાઈ નિરિષદાસ શાહનો સાહિત્ય પ્રચારનો પ્રયત્ન પ્રદર્શનાય છે. વિ. રહા બાદ સામીજી હરિષ્કૃષ્ણ નીરજામર્થએ મોઢતાં જણાવ્યું હતું કે જેણે શ્રીમદ્લક્ષ્મીસેવકો આશય નથી કર્યો, શ્રીકૃષ્ણોપનિષદના દર્શન બરાબર નથી કર્યા, શ્રીરાધિકાનાય શ્રીકૃષ્ણની સેવા નથી કરી, તેનો જન્મ આ બ્રહ્મકે નિરર્થક છે. એ શ્રીકૃષ્ણની સેવાનો રસ ત્યાં સુધી સાહિત્ય-વચોક્ત નહિ કરીએ ત્યાં સુધી મળી રાહો કે જાણી રાહો નહિ. રીપક નેમ ને બાહ્ય પવન લાગે તે બાહ્ય કમચવા લાગે તે મુજબ સાહિત્યવચોક્ત સિદ્ધાન્ત બનતી રીતિ સમાજનો પરંતુ ને છે સાપ્રિણવિક

સાહિત્યનું વાચન કર્યું છે તેને ખમે તેવા વટોળાયાઓ આવે તો પણ કમવાની કારતી નથી વિગેરે કહ્યા બાદ દ્વિતીયવેલે સાંપ્રદાયિક ગ્રંથોની ચાહી આપતાં સમજાવ્યું હતું કે શ્રીમદ્ભગવાદ ગ્રંથ એક અદ્વિતીય ઘટનાનું નામ છે. તેની પ્રસાદ સાંપ્રદાયિકો સિવાય બહારના વિકાસે કે ટો. સાર્વારકર જેવાએ કરતાં કશું છે કે બહુમતના વધારા અર્થે કરી તેને થોડા ન્યાય આપ્યો હોય તો તે માત્ર શ્રીમદ્ભગવાદ ગ્રંથનું અણુમાપન છે. સાદાત્વ મુદ્દાની પ્રગતિ પૂર્ણ રીતે આવી રહી છે પણ તેના પ્રચારની દલે ખાસ આવરણકતા બાકી છે. તેને દરેક વેંજુએ લક્ષ્યમાં લેશે. સર્વદા સાંપ્રદાયિક સિદ્ધાન્તપ્રચારણે પ્રયત્ન રાખે. રહેતા ઉત્સાહી ગો. શ્રીમજ્જનાયકાલક મહોદયે આજે પોતા શુભ દરેકે 'સાહિત્ય મંદિર' ની ઉદ્ઘાટન ક્રિયા કરશે. જેની વ્યવસ્થા બ. ચિત્રધરજીભાઈ સાદ બચાવી રહ્યા છે જે પણ ઉત્સાહી છે તે વેંજુએ તે સાહિત્ય મંદિરમાંથી પુસ્તકાદિ સાહિત્ય ખરીદી અને ફી વાચનાલક્ષ્યમાંથી વાચના માટે સાદાત્વ મેળવી તેના પ્રચાર કાર્યને થોડા ઉત્તેજન આપશે વગેરે કહી પોતાનું વક્તવ્ય પૂર્ણ કર્યું હતું.

ત્યારપછી શ્રીવલ્લભકુલ બુધ્ધ પૂ. પા. ગો. શ્રી ૧ શ્રીમજ્જનાયકાલક મહોદયે 'ધાર્મિક સાહિત્ય વાચન અને પ્રચારની જરૂરીયાત તથા કશું હતું જે આ અંકના પ્રારંભમાં છે.

ત્યારબાદ જિ. જી. સાદની વિશ્વવિત્તી પૂ. પા. ગો. શ્રીમજ્જનાયકાલક ઉપધ્યક્ષ બનને શાધવો પાસે પધારી નિમગ્ન દરેકે બુદ્ધિ બુદ્ધિ દલ ત્યારબાદ અગત્યનું સત્તરનો પાન સોપારી અને 'પુષ્ટિમાર્ગ' નામક પુસ્તિકા-સેટ આપી વ્યવસ્થાપક સતાર કર્મ બાદ સી વિજયભાઈ દલો.

છુણવાલામાં આનંદ-વિશ્વવિત્તી શ્રીગોકુલેશપ્રજ્ઞના પ્રાકટ્યનો ચિરમરમણીય દિવસ સં. ૧૯૨૦ ના માર્ગસર મુદ્ ૭ નો આવવાનો હતો, વેંજુએમાં કંઈ આનંદની અભિવ્યક્તિએ જણાવી હતી. શ્રીમંદિરે પણ જ્વલપતામાંથી ચલુતારવામાં આવ્યાં હતાં અને માર્ગસર મુદ્ ૧ થી શ્રીગોકુલેશ પ્રજ્ઞના મંદિરમાં શ્રીગાદીએ કેસરનાન થઈ હતું, વેંજુએ દિનપ્રતિ અતિ લખ્યો પ્રકૃષ્ટિ અને આનંદમાં લખેલ જોડેલે દર્શને જતાં. ધોળ લાંચ કીર્તનોનો આનંદ અનિરચનીય હતો. "કચ્છા તે કરીને પધાર્યા" જે ધોળ કીર્તન ગાતાં પ્રજ્ઞ શ્રીગોકુલેશનાં ગાદીએ રવરે દર્શન લઈ. મંદિરમાં ભારે ભોડ થઈ પડી, પ્રજ્ઞ દીનદયાલુ લક્ષ્મણજી શ્રીગોકુલનાયકાની જયના થનિ સાથે દર્શન આપી રહ્યા હતા. દરેક સમગ્રી સુધી વેંજુએ આનંદથી આ મંદિરથી વેંજુ મંદિર દર્શનની આતુરવાથી લખેલે દોડતાં જતાં હતાં. શ્રીગોકુલેશ પ્રજ્ઞના મહામહોત્સવના પ્રવરતરમણીય પ્રસાદે વેંજુએના મનમંદિરમાં મોટો ઉત્સાહ આવી જતાં આત લખ્યો મંદિરમાં જતાં હતાં. ગોષ્ઠીમાંના સરજાઈ નજારાના નાદથી શ્રીગોકુલ બોદારીવાલે દર્શન આપ્યાં. પાંચમે સાવરે મણસ વેંજુ જતાંથી મંદિર ઉત્સાહ લાગ્યું. જેવજેવામાં તે મંદિરમાં સખત ભોડ થઈ પડી. શ્રીગોકુલેશ પ્રજ્ઞની જગ્મજીએ પણ કેસરનાનથી પંથનાદ, રાંખનાદ સાથે દર્શન આપ્યાં. શ્રીગોકુલેશનાં ચિત્તએ પણ કેસરનાનથી દર્શન આપી પ્રેમી વેંજુ સખાને આનંદમુગ્ધ બનાવી દીધાં. દર્શનાર્થે અને કીર્તનાવાજેના આનંદનો પાર તે હોય જ રાખે. તેજલ નજારાના અવાજ સાથે રાજજોગ સમયમાં શેડુવબોદારીલાલે તિલક લઈ. "વધાઈકો દિન નીકો આનંદ વધાઈકો દિન નીકો" જે વધાઈ ધોળ કીર્તન ગાતાં વેંજુએનાં મન પ્રકૃષ્ટિ થઈ જતાં મિમ્મી નિદાજીને દર્શન કર્યા હતાં. આ સમયની ચોક્કસ લેલો જલે "હું પામર છપ્પું આલેખી રહું" જિંબ મનમાં નિરાલ બસેતાના મનોરથ પૂર્ણ કરતાં હોયની તેવાં આનંદ ઉદ્ભવ્યો. કુમકુમના ચાપા દોરે દોરે થયા. આનંદનો પાર ન રહો. પ્રેમી લક્ષ્મણ કીર્તનીઆ લીરેજે પ્રસાદ કુંકમુષ ત્યા કુલેડ ત્યા ચંદન લીધાં. આજના મહામહોત્સવને મહાન દિવસના આનંદનો પાર નહતો, વેંજુએના સિરવાજ માણ તિલકે રણુદાર શ્રીગોકુલેશ પ્રજ્ઞના પ્રાકટ્યદિને કષ્ટ વેંજુ આનંદ ન માને! પ્રજ્ઞ વાગતાં વેંજુ સખારીઓ. જગજી મંદિર તરફ જવા લાગ્યાં. સરજાઈ લેન્ડ કંઈ નિશાન સાથે વરપોટો શ્રીગોકુલ બોદારીવાલના મંદિરથી ચડી જલે શ્રીગોકુલેશ પ્રજ્ઞ માલાલિકાનો વિજય કરના જતા હોય અને વેંજુએ પ્રજ્ઞશ્રીને જયજનિ સાથે વધાવતા હોય તેવી રીતે ધોળ વધાઈ કીર્તનના આનંદ સાથે "ખાનત કદો બધાઈ ગોકુલમે ખાનત કદો બધાઈ" કીર્તનીઆએ પાછળ વેંજુ સખારીઓ જગજી પાછળ ચાલતી હતી. "આજે આજે આનંદને ઘેરે જગમાં થઈ રહી છે લીલા લહેરે" શ્રીગોકુલ કપલ મુખ નીરજવા યોધે શ્રીનંદને દ્વારે "આજે જગમદે જગ દિવસ છે રે લેલી. રાજુતાર જનું સર્વે પદેલી"

વધાઈ, ધોળ, કીર્તન ગાતા વરપાટો ખસાર થયો હતો અને હમસગ પાંચસો સાતસો વૈષ્ણવ ભજવાની સાથે બે કલાકમાં ગામમાં ફરી શ્રીગોકુલબીહારીલાલના મંદિરમાં પાછા આવ્યા હતા અને ભણે 'શ્રીગોકુલ-ધીરાજી શ્રીસોમજીની ગોકુલ ભાલાલિકાનો વિભવ કરી વધારવા હોય તોવીજ રીતે મંદિરમાં પેસતાં કળશ વધાવવામાં આવ્યા હતા અને કળશની કોટ ભોલાવવામાં આવી હતી, અને શીના લાલલા ભજવેલી વૈષ્ણવે કુદી પડી કોટ ભોલી કળશ વધાવવામાં આવ્યા હતા અને કીર્તનની આ વગેરે વૈષ્ણવ સમાજ મંદિરમાં પેસતાં શ્રીગોકુલબીહારીલાલે ધંડાનાં ધર્મ સંધ્યાનાં દર્શન આપ્યાં અને હાથો લેવા આવર અને પગે લેવાર પ્રેમીઓને લેવાર હતા. ત્યાં હાથો લેવાનાં રાત્ર થઈ "છતને ડંકે મારો નાય રે." "શ્રીગોકુલ-નાય પ્રગટ થયા રે, આવ્યો મહા જોગજીવ" "શ્રીવલ્લભ વર પેર આવીઆ આજ સખી વહીબ વર પેર આવીયા" તથા બીજાં ધોળ વધાઈઓ હાથમાં લેવાઈ હતી અને કપડવંજ વૈષ્ણવ યુવક મંડલે મોઢસે શ્રીગોકુલેશ મહામહોત્સવની પત્રિકા (૨૮) હતી તે બાંધી દીધી હતી. પત્રિકાનો પછો સત્કાર થયો છે. શ્રીગોકુલેશ પ્રભુના જયની સાથે વૈષ્ણવો લીંગરાયા હતા. શ્રીગોકુલેશ પ્રભુની બિંદો પણ તેવાજ આનંદ હતો. હંમેશાં દિનપ્રતિદિન શ્રીગોકુલેશ પ્રભુના સેવકોને આનંદ શ્રીપત્યે વધે અને આવી ધર્મ પત્રિકા પ્રતિવર્ષે નીકળે એજ અંતરની અભિલાષા.

હાસાલદાસ-દોસી 'સુલચંદ' કરમચંદ.

કપડવંજમાં મહોત્સવ—કપડવંજમાં મહોત્સવ દર વર્ષની પેઠે અતિ આનંદથી ઉજવાયો. દિવસોથી વધાઈ બેઠેલી જ હતી. ઉત્સવના સાત દિવસોના આનંદનો પાર ન ન રહ્યો, ઉત્સવનો પહેલા રોજ વસંતરામ યાત્રી આવ્યા હતા. ખીતા વર્ગ તથા વ્યાખ્યાન છૂટના રોજ થયાં. સમાજમાં મહોત્સવ-પત્રિકા બાઈ ધીરજલાલ જોગજીવલાલ રાહે વર્ધો. તે પછી રાત્રીએ વ્યાખ્યાન આપ્યું હતું. પ્રદાસથી ભજવેલી રતનલાલ કાણી આજે અહીં આવવાથી આનંદ આવ્યો હતો. ઉત્સવના રોજ કળયનો વારોનો થયો હતો. બેંડ સુંદર સ્વરથી આગળ વાજતે ગાજતે વ્યાખ્યાન ઉત્સાહમાં વખારો કર્યું હતું. તે પછી સંકુલદરેશો વાજન કીર્તન કરતા ચાલતા હતા. નાના બાળકોની ફોજે તેા કમાલ કીધી હતી. જાજન દલ જયજયનિ અને 'જે જે શ્રીગોકુલેશ' ના પવિત્ર પવિત્રી આખા ગામને ગલવી મૂક્યું હતું. પછી નાદવાર મહાપ્રસાદ લઈને રાત્રે સમાજનો આનંદ લીધો હતો.

ગોધરામાં આનંદ—આ વર્ષે મહોત્સવનો આનંદ કાંઈ અદ્ભુત રીતે ભર્યો હતો. કળશ, વરપાટો અને સમાજે આખા ગામનું ધ્યાન જોડ્યું હતું. દલરથી ઉપરની સંખ્યાના વૈષ્ણવોએ જાજન નંદનો લલાલો લીધો હતો. મહોત્સવની પત્રિકા મજલતે તેના બાજે સત્કાર થયો હતો.

શ્રીવિકુલેશ મહોત્સવ-કપડવંજ—આ વર્ષે શ્રીગોકુલેશના મહોત્સવ પર ગાંને સખા સખામાં આવી હતી. પ્રારંભમાં બાઈ ધીરજલાલ જોગજીવલાલ રાહે 'પત્રિકા' વર્ધો હતી. તે પછી વસંતરામ રાત્રીએ શ્રીગોકુલેશ પતિવધાવન છે અને ખરમદવાણ છે તે વિષે રોમાંચિત્તક પ્રસંગો વર્ણવ્યા હતા. ઉપરે ભજવેલી રતનલાલ કાણીએ રાત્રીએનો કપકાર ગાવ્યો હતો અને શ્રીગોકુલેશે કૃપા કરીને આ પ્રશ્ન રાત્રીએ દ્વારા રાત્રે રાત્રી તે બદલ આપશ્રીની કૃપાનું રસરસ કહ્યું હતું.

શ્રીગોકુલેશપ્રાકાશવમહોત્સવ મુંબઈ—અત્રે મોટા મંદિરમાં બ્રહ્મવાદિવિદ્વંસના તરફથી શ્રીગોકુલેશ પ્રભુને પ્રાકટ્ય મહોત્સવ ધણીજા ધામધુમથી ઉજવવામાં આવ્યો હતો. પ્રથમ દિવસે સમાપતિ-રવાન ગોરવામીશ્રી ૬ શ્રીદાસરાલાલજી શ્રીવિકુલેશપત્યજી મહાસાગે અત્કૃત કહ્યું હતું. પ્રારંભમાં વધાઈ ગાન થયા બાદ ૫, હરિકૃષ્ણ બીજા યમગિ શ્રીગોકુલેશના જીવનચરિત્રમાંથી ધણી મુશામીના બાળક સખાવતાં કહ્યું હતું કે—માજા અને વિલક મારે પાતાની સંપૂર્ણ દીલલ ધણાજ આનંદ સાથે પરિભ્રમ કરી સોમજીમાં જઈ વસનાર સગરમી સહીના મદાન ધર્મરસક શ્રીગોકુલેશ મહાપ્રગટ છે. ધર્મ વિનાના જીવનની કશી ડિમલ નથી એ સાક્ષીય સિદ્ધાંતને પાતાના જીવનમાં જાતપ્રાપ્ત કરી લઈ તે સખાના મોક્ષ પાદલાલ નદાગીર સામે પ્રાણપંજી પણ તેમોમીએ ધાર્મિક લડત લડી પાતાનું ધર્મચાર્યવજ્ર સાથેકય કહ્યું હતું. તેમોમીને પ્રાકટ્ય મહોત્સવ ઉજવી ધર્મને ખાતર આત્મજીવિદ્યાન પણ કર્યું પડે નો દરેકે કમ્પે કરવા તેવાર રહેવાના પાક આપણે શીખવે એકમે. ગોરવામી શ્રીગોકુલેશપત્યજી મહાપ્રાગટે 'સત્કોનો અવરણ' એ વિષય ઉપર પાતાની નજીકનું દર્ડ કે આજ કાલ પ્રેમને નામે ધરેજાન અનર્થ સારી રહો છે. ખરો પ્રેમ ધણી એકા દીકો સખાને છે. અતઃ તેનો કૃપણાવ વડો રેખાય

કરવા, વિરોધીઓનું મુખમર્દન કરવાં, દેશ દેશાવર ફરી ને કાર્ય કરું છે તે માટે આપણે જરૂર તેઓશ્રીના કાળી છે. વગેરે, કઠીન પડવંજના ઓળીતા વર્ગે તરફથી શાસ્ત્રીય વર્ણવશમુલાકાએ ને મહોત્સવપંચિકા બદાર પાડી છે. તેગાંથી સારારા દર્શાવે સારે સમજાવી તે પત્રિકાઓ મંત્રીના હાથે સમાર્પાં વહેંચી આપી હતી. ઉપરમાં: સમાના મંત્રી શ. ધનરાયગ એમણસ સાહેબ આજના મંગલિક દિવસનું રમણ વેળુભાએ અવરજ, રાખડું પટે, જગત ઉદ્ધારક શ્રીવિઠ્ઠલેશ મહાપ્રભુએ બતાવી આપેલા માર્ગે ગમન કરવા સર્વેએ ધ્યાન રાખડું, જોઈએ, અને તે નજૂવા માટે તેઓશ્રીએ લખી મુકેલા મંત્રોનું અરસોમન કરડું જોઈએ વગેરે વિવેચન: કરી: સર્વે: વેળુભાને તથા પ્રમુખને આભાર માની શ્રીગુસાઈજીના ન્યાયન્યાયકાર સાથે સભા વિસર્જન થઈ હતી. સભામાં શ્રીગુસાઈજીના ત્રિવલ્લભ આસન ઉપર પધરાવ્યાં હતાં. વેળુભાએ એટ વગેરે ધરી પકો ચાચાં દતાં.

કેન્ડીનમાં—રથાનિક શ્રીપુષ્પિમાર્ગીય જ્ઞાન પ્રસારક યુવક મંડળના આમત્રજીથી અનેની પાશાળાના લભ્ય મહાનમાં શ્રીવિઠ્ઠલનાથજીના જન્મ મહોત્સવ ઉજવવા વેળુવ બાઈઓ અને બહેનોએ મોટી સંખ્યામાં હાજરી આપી સભારથાન બરપૂર કરી દીધું હતું. આરંભમાં મંત્રવ કીર્તનો થયાં બાદ શેઠ હીરાચંદ માધવજીએ શ્રીવિઠ્ઠલનાથજીના ચિત્રજીને એતાઓના હર્ષનાદ વચ્ચે મુંચમાળા પહેરાવી હતી. પાંદશાળાના વિદ્યાર્થીઓએ સુંદર ત્રાગથી પ્રજ્ઞ રવિત્રિ બાઈ હતી. ત્વારણાદ નારદ વાસ્તિમિત્રો સંવાદ બાળકોએ છાથી સ્વરસ રીતે ભજવી બતાવેા દતો. નાની નાની કોમળ વયના બાળકોના હુંકાર-છતાં સુંદર ભાષણે એવાં કોતે મુખ્ય બતાવી દેતા હતા. શાસ્ત્રી હાથીરામ રતનજી રામંએ શ્રીવિઠ્ઠલનાથજીના જ્યેષ્ઠચરિત્રની રૂપરેખા દર્શાવ્યા બાદ, પાંદશાળાના વિદ્યાર્થીઓની સંખ્યા ૯૯ ની છે કરી જાહેર કરેલ; તેમાં ૬૫ બહેનો પણ આ શાળાનો લાઘ લઈ ધાર્મિક તથા સંસ્કૃતનું જ્ઞાન સંપાદન કરે છે એવી રીતે નજીવવામાં આવ્યું હતું. ઉપર વિદ્યાર્થી વહેંચનાસ દેશવલ પારેખ, સપ્રકાસ તત્ત્વદીપ નિર્માતા રાજાચંદ અને સર્વ નિર્જીવની પત્રીકામાં જીતમ કક્ષાએ જીતીજી થતાં મેસર્સ મૂળજી એકા કું. ના માલિક શેઠ ચત્રમુજ ગોવર્ધનદાસ તરફથી સુવર્ણપદક તેવાર કરાવવામાં આવેલ, તે સંરથા દ્વારા શેઠ નેરામ જવરાજના હસ્તે મળ્યું. વિદ્યાર્થીને આપવામાં આવેલ. પછી શાહ હીરાચંદ માધવજી તરફથી પાંદશાળાના ઓળી વર્ગને નિર્લપક માટે શ્રોમદ્ ભગવદ્ગીતાના દેશમી પુરાના પ્રસ્તુત, સોની હરિલાલ છગનલાલ તરફથી વિદ્યાર્થીનીઓને "કનકાભિષેકનો હવિદાસ," શેઠ હરિલાલ ચત્રમુજ તેમજ શેઠ નેરામ જવરાજ તરફથી વિદ્યાર્થીઓને નારંગી અને નાનજી મેથજી તરફથી પ્રસાદ, આપી રીતે ઉનામે આપવામાં આવ્યા હતા. બાદ હાજર થયેલ વેળુવ મળુને આભાર માની શ્રીવિઠ્ઠલનાથજીના ન્યાય વાપણા સાથે સભા વિસર્જન કરવામાં આવી હતી.

ઉત્સવ પત્રિકા વિષે વિચારો—મહામહોત્સવ પત્રિકાઓ મળી પત્રિકાનું લખાણ સર્વોત્કૃષ્ટ છે. એવી પત્રિકાઓ લેખો અવારનવાર લખીને પુષ્પિમાર્ગના વિરોધીઓને જાતિમાર્ગનું અર્થ રહસ્ય સમજાવવામાં આવે એ અત્યંત ઉચ્ચત યોગ્ય છે. આનું સર્વોત્કૃષ્ટ લખાણ લખવાને માટે આપને નેટલો ધન્યવાદ આપું એટલો ઓછાજ છે. આપણે પુષ્પિમાર્ગ કહેવાત વહાંશમ ધર્મ કરતાં અતિ ઉદાર છે એ જીતમ રીતે સાબીત કરી બતાવ્યું છે. ધરમસીના ઔરમરજી.

આપના તરફથી શ્રીવિઠ્ઠલાધીધર પ્રાદુર્ભાવ મહોત્સવ પત્રિકાઓ મળી સામાર સ્વીકાર એન. પ્રમોણે પ્રસંગોપાત સંબાળી કૃતાર્થ કરીશો અથ હાલે એ પ્રજ્ઞ ચરણના જન્મોત્સવનો દિન એઓશ્રીના જીવન કાલતપર કાંઈને કાંઈ પ્રકાર માંડવાની ખાસ આવરવકા હોવાજ. જ્યારે ગઈ કાલે આપના તરફથી તે સંબંધી પત્રિકાઓ મળી અને તેનું ઉત્તર નાચકનું લિખ ચરિત્ર આણેખવામાં સહાયજીત થઈ, અને સેંકડો એતાઓના સમક્ષ એ પત્રિકાદ્વારા જહુ જમણાનો ચિતાર પણ રજી કર્યો. આમ આપ હમથોચિત પત્રિકાઓ પ્રજટ કરી વાકપતિની જીવનસુખાનું પાન કરાવનાર ભગવદીયોનો આ સંરથા સહૃદય આભાર માને છે. ભગવદ્ મંડળી યોગજી.

અને મહોત્સવ વખતે બદાર પાડેલી પત્રિકાઓ આપે મોકલી આપી. તે પહેલેથી છે, અને યુવક વેળુભાને વહેંચી છે. તેની અસર પ્રસંગ ઉપર સારી થાય છે. માટે દને પણ વધુ પ્રમાણમાં મોકલાવી આપશે. રમણલાલના ન્યાયશ્રીકૃષ્ણ.

સન્માનમાં સમાયલી છે. આજે તેવા સંપ્રદાયના ઉદ્ભવ વર્તમાની, જે ૧૧ માં વર્ષના મંત્રલ દિને આવ સમારંભ દ્વારા સન્માની એ માફ કર્તવ્ય બન્યું છે. એથી વિશેષ કંઈએ નથી કહ્યું. બુદ્ધપુરના મનિષે પ્રી. મજલલ શાસ્ત્રીએ આગામી ઉપ મી જન્મતિથિએ માત્ર સગાએ બારે અભિનન્દનપત્રો આપીને દેવદક્ષતા ન માની થી પણ પ્રી. મજલલ શાસ્ત્રીએ યોગ્ય એવું ચિરસ્મરણીય 'સમારંભ' ઉપ્પ કરી તેમ તેની સાથેકતા ગણારો એમાં શક નથી કે સંપ્રદાયના વિદ્વાનોની જન્મતિથિએ જાહેરમાં સન્માન આપવામાં બુદ્ધપુરના વેદધ્વાજે પહેલ કરી છે. શાસ્ત્રીજીનું જીવન ઉત્તમ છે. માત્ર તેમનામાં વિદ્વતા છે એમ નહિ પણ તેમની દીનતા વેદધ્વતા અને તેમની નિર્મલ બાલુકતા ખરેખર અન્ય વિદ્વાનોને માટે અનુકરણીય છે. યદ્યપિ તેઓ જીવનની સંધ્યાએ પહોંચ્યા છે તથાપિ તેમની કર્તવ્ય નિષ્ઠા અને રચનાત્મક ક્રિયાશક્તિ એક તરફને પણ લક્ષિત કરે તેવી છે, પ્રભુ તેમને ચિરંજીવ કરે અને તેમના દ્વારા સંપ્રદાયની નમ્રતાએ સેવાઓ ખૂબ કરાવે. આજે આથી વધુ શું મહેનત હોય ? પ્રી. મજલલ શાસ્ત્રી જેવા તમારે આગળ છે અને તેમથી પાસેથી સંપદ યત્ન રહસ્ય નેટલ બાલુક હોય તેટલું જાણી લેને તેમના જેવી સમભવવાની રીતી અન્યથ નથી. સિદ્ધાન્તે ના મનન ચિન્તનથીજ સુદ્ધિ-પ્રભુ-સેવામાં જોડે છે, હૃદય નિર્મલ થાય છે. સુદ્ધિ બ્રહ્મ ન થાય તે માટે શ્રીમદ્દાપ્રભુજી શ્રીસુખાધિનીજીની કારિગમી બાણ કરે છે, યદિ સુદ્ધિ બ્રહ્મ યદ બલ્ય, સુદ્ધિનો વિનાશ યદ બલ્ય, તો તો સર્વ સાધનો વ્યર્થ થયા સમજવા પડી તેવી સુદ્ધિબ્રહ્મ થયેલા માણસ માટે અર્જુનવ્ય કહ્યું રહેલું નથી માટે સુદ્ધિને રિયર અને ધાર્મિક રાજરા શાસ્ત્રનુ અવગાહન કરતા રહેશે. તથા સર્વ ભાવે શ્રીમન્મધિપને સેવતા બળતા રહેશે એવી હું સૂચના કરી માફ વ્યાખ્યાન પૂર્ણ કરું છું.

સ્વસ્થાદ શાસ્ત્રીને સમાપતિ મહોદયે નિભવિતુચરણ ગો. શ્રીવિદ્યેશાયજી મદારાજશ્રીએ શોભાલેલ પ્રસારી કેસરી ઉપરણું આઠારથો દત્તો.

સ્વાસ્થાદ જ્ઞાનાયપુરીના એક પંડિતે પ્રાસંગિક બોલતાં શ્રીશંકરાચાર્યના જ્ઞાન માર્ગ અને શ્રીમદ્દશ્વાચાર્યના શુદ્ધ બંધિતમાર્ગ પ્રેમમાર્ગ મીમાંસા કરતાં શુદ્ધ પ્રેમનું સ્વરૂપ શ્રીમદ્દશ્વાચાર્યના બતાવ્યું છે તે ચિદ્ધ કર્યું હર્ષ અને શાસ્ત્રીજીની વિદ્વતા તથા સારવ્ય પરત્વે કેટલુંજ આવશ્યક વક્તવ્ય કહ્યું હર્ષ.

સ્વાસ્થાદી મુખાધથી આ પ્રસંગે ખાસ આવેલા શ્રીપુષ્પિમાર્ગીય યુવક પરિષદના માનદ મંત્રી શ્રીકુલ નિરિધરલાલ જી શાહે પ્રાસંગિક વક્તવ્ય કરતાં બધાનું હર્ષ કે આનંદાલ જનતામાં થતાબ્દી, અર્ધ થતાબ્દી, રમતેત્સવ, મીઠવર નયુધીલી, કે કનકોત્સવ વિગેરે ઉજવાનો પવન કુંકોશ છે. આમાં આમાં ફટી યોગ્યતા તે બાબતનો વિચાર બહુ જોઈએ થાય છે. યદ્યપિ તેનો મેનીયા મોટા સહેરમાં વિશેષ ફેલાયો છે. તદનુસાર અમે મુળદીની પુ પુ પરવદ અને શ્રીવેદધ્વ સેવામંડળ દ્વારા શાસ્ત્રીજીના એકસામાં વર્ષારંભનો આનંદ ઉજવવા વિચાર કર્યો. પરંતુ ગારે તથા પૂ સજાપાત મહોદયને અંગે આવવાનું થતાં તે વિચાર મુકવવી સામ્યો. આજે મુરખી શાસ્ત્રીજીને મારા તથા શ્રી પુ પુ પશ્વિદ્ધ (મુળદ) તરફથી અભિનન્દન અર્પી પ્રભુ ચિરાયુષ્યમાન કરે એમ હૃદયથી ઇચ્છું છું. સુજો ! બારતવર્ષમાં પ્રાચીન સમયે વિદ્વાનોના અદ્વિતીય સન્માન યતાં તે આપણે પ્રાચીન દ્વિતીય તથાસીથી તો જાણી રૂપીશું સંપ્રદાયના પ્રાચીન અચાર્યો પ્રતિ દષ્ટિપાત કરીશું તો જાણી શકશે કે શ્રીમદ્દશ્વાચાર્યશ્રી શ્રીમત્પુરોષોત્તમજી પયંવના વિદ્વાન આચાર્યપાદો વિદ્વાનોના અપૂર્વ સન્માન કરતા અત્યારે પણ મુળદવાળા ગો. શ્રીશ્રીકુલનાયજી મદારાજ, સુરતિરથ ગો. શ્રીમન્નલલાલજી, નટપુરરથ શ્રીઅનિરંજલાલજી, કચ્છમાંડવીપુરરથ ચિ. ગો. શ્રીદારેશલાલજી અને આપ સર્વે અનુમતી રહો. હો. તેમ આજના સમાપતિ મહોદયે જેઓ ખાસ અંગે પધાર્યા છે તે પણ વિદ્વાનોનાં સુયોગ્ય સન્માન કરી રહ્યા છે. આ આદર્શ પુષ્ટિસંપ્રદાય રિવાજ અન્યથ રથજે બહુજ જોઈએ દેખાય છે. સ્વાસ્થાદ વક્તાએ શાસ્ત્રીજીની પૂના, મુળદ અને અન્યાન્ય રથજે નાનંદાઈ રાત્રિથી કરેલી સંપ્રદાયની કરેલી કેટલીક સેવાઓનું દિવ્યદર્શન કરાવી બિબ્ધમાં પણ તેઓ જાન, મન ધનથી સંપ્રદાયની સેવા કરી પોતાની ફરજ બાળવરે વિગેરે આરા બતાવી તેમની પરત્વેની લાગણી અને કહુસલ પણ સંપ્રદાયના હિત માટે કહેવાની નિહરતા માટે યોગ્ય વિવચન કરી સમાપતિ મહોદયની ઉદારતાનો પણ આવશ્યક પરિચય આપી પોતાનું વક્તવ્ય પૂર્ણ કર્યું હર્ષ.

—શાસ્ત્રીજીનું વિચેચન—તદાનંતર બ. સ્થા. નિ. ઓણુત મળવાલ શાસ્ત્રીજીએ મંજલાયારણ કરી વિચેચન કરતાં કહ્યું હતું કે સેદિખાતને જનમ મરણ પ્રાપ્તિ છે તેથી ૬૦ વર્ષ સમાપ્ત થયાં અને ૬૧ થી ૭૫ સુધી યજુ ધર્માદિમાં ફાળેને વાંચીએ અને અવધાન નથી પરંતુ એ નિમિત્તે ચિ. ગો. શ્રીમજ્જાપલાલજી બાવા સાહેબનું જાત્રે પધારણ થયું અને તે પ્રસંગે આપ સર્વને એકજ મંથને ભગવત્પ્રભુ કરવાનો ને અવધન લાભ પ્રાપ્ત થયાં છે એ એક પ્રસંગમાં ચિદન તો માનુંજ છું વક્તાઓએ ને કંઈ યથાવસર કહ્યું તે ઉચિતજ દર્દ. પ. બ. જયકૃષ્ણદાસભાઈના સમારકમાંથી અમુક રકમ ‘જયકૃષ્ણરોડ’ માટે આપવાને દૂટી તરીકે હું નેરોત્તમદાસ ભાઈને આમત્ કરીશ એટલુંજ નહિ પરંતુ દૂટની રકમનો ઉપયોગ નામરોવામાં થવાનો ને પ્રબંધ કરાવેલ છે તેમાં પણ રૂપિયા પ્રસંગમાંથી લાવી શકીશ. રજદળીય માત્ર એટલુંજ કે ને કંઈ ચોથા નામની અને રૂપની થય તે કેવલ નિરસ્યે થાય એ જ્ઞાન બદાર રહેલું ન હોય. સમાપતિના ઓપિત્યારણે તથા તેઓથીના યોગ્ય બંદરણે અને પોતે સ્વયં આ અવસરે પણ મારા પ્રતિ ને અનુમત્ દર્શાવ્યા છે તદ્દયં કશ્ચિત્ સંદેહઃ કયુષ્ઠ તે કરતાં પણ મનોમાનથી ભાવનાએ કદ એ વિશેષ સ્થિતિ છે પુરીસ્ય પંડિતજના પ્રાસંગિક બોધમાંથી ‘બીજ’ શબ્દ પ્રતિ આપ સર્વેને જ્ઞાન આપાને શ્રીમદ્ભાષ્ય ચરણના ભજિતર્જની અંધત્ ધિગ્ તદુચ્ચતે દાહ્યે રહ્યું ઇન્દ્રિયે નયતિ વાચનું સંસ્મરણ કરાવું છું શ્રીમદ્ભાષ્યની દ્વાયાથી ભગવત્પ્રેમ, ભગવદ્ભક્તિ અને ભગવદ્વ્યસન હૃદ યાય ત્યાં સુધી સંક્ષિપ્તમાંથી પણ માવધાનના આવશ્યક છે અને તેથીજ ‘સંસ્કાર, કામવર્તિતા’ એ તમારા સમસ્ત વિજ્ઞાનમાન ગુણોપજનો અર્થ પ્રકટ કયું છું કે ‘સંસ્કારેભ્યઃ’ સુનિધી પ્રતિષ્ઠાદય આપણું સર્વસ્વ છે સંસ્કારજ આપણો પરમ ધર્મ છે પરંતુ સંસ્કાર અને કામ એ બંનેજ મિત્ર છે. રસ સાક્ષાત્ ભગવદ્વચસ્ય છે ત્યારે કામ નરહાર છે. અતઃકલ્પ કામથી ને સદા સર્વદા વિચિન્ન રહે તેજ ‘સંસ્કાર’ સંજ્ઞાને યોગ્ય છે. કોઈ પણ વ્યક્તિ પ્રતિ આપ દષ્ટિ કરીશ તો સમજીશ કે જનતામાં કેટલી બધી વ્યક્તિઓ કામવિચર યત્ અનેક નિરિદ્ધ લોકમાંથી દુઃખી થય છે આશીર્વાદ દ્વિધીય ગુણ લેખ પ્રતિ આપનું ચિત્ આકર્ષિત છે અને રસજી બાજમાં કદું છું કે ભગવત્પ્રમાણથી અતિશ્લેષ કોઈપણ પદાર્થની ઉચ્છા તે કામ અને કેવળ ભગવત્વચસ્ય તેજ રસ અને તેથીજ પુષ્કિમિભિન્નમાંથી શીવલભાસ થઈએ ઉપનિષદ્વચ સિદ્ધાન્તરૂપ અન્યમાં રસજી આજ્ઞા કરી લીધી કે અલભ્યપિતૃત્વદ્વાર ઉચ્છાદ્ય વર્તમાનમાંથી રસજોગ સર્વથા કરે પરંતુ અલભ્યપિતૃ વસ્તુનો ત્યાગ કરો. રસજોગ ફલપ્રાપ્ત છે. કામજોગ ફલ છે તાત્પર્યકે રસજોગ ભગવત્વચપનાજી જોગાર્થ અલભ્યપિતૃ વસ્તુને જ કામજોગને સમ્પન્ન કરે નિરંવર શ્રીમદ્ભાષ્યચરણનો અપ્રત્યય-અનન્ય આશ્રય પરિચયને ભક્તિપ્રીતિનાથી અંકુર, અંકુરમાંથી કલિકા, કલિકામાંથી પુષ્પ, પુષ્પમાંથી ફલ, ફલમાંથી રસ અને રસમાંથી પરમકામપ્રાપ્ત ભગવત્વચપનો આસ્વાદ્ય કરો. અરે! તદ્દયં પ્રથમ બાધક કામનો પરિત્યાગ કરો હવેસંહારમાં માત્ર એટલુંજ કહેવનું છે કે મારામાં ગુણ માનીને ને મારી પ્રત્યક્ષ વધ તે ગુણ ભગવદ્વચોપજનું પ્રતિબિંબ છે. વસ્તુતઃ તેમજ ગુણની રેતિ મરી નહયે તે ગુણ નિર્ગુણ, અનંતગુણ, સત્ય, જ્ઞાન, અનન્ય, બ્રહ્મ છે એવિએ પ્રતિષ્ઠિત શબ્દ બ્રહ્મમાત્ર છે, બ્રહ્મધર્મ જિંબ છે અને જીવમાં ને કંઈ સદ્ગુણોનું પ્રતિબિંબિત પ્રતિબિંબત્વે હેખાય છે તે ગુણોનું પણ પરમ ત્યાગ બ્રહ્મ, પરમાત્મા, ભગવાન શ્રીકૃષ્ણ અથવા શ્રીકૃષ્ણાનન શ્રીમદ્ભાષ્યમાંથી થયેલ છે વિનેરે વિસ્તારથી સમજીશ ઉપચિત્ત થયેલાં સર્વેનો આવાર માન્યો દતો.

ગુરુવાર તા. ૭-૧૨-૩૩ ના દિને પણ સંજ્ઞાના નિવત્ત સમયે સમાની શરૂઆત ભગવત્પ્રીતિનું સંશોધનમાં એક સંજ્ઞાને સુરેન્દ્રે બાવા બાદ પ્રે. મળવાલ શાસ્ત્રીજીએ વેદમાર્ગ અને શ્રીવીર ભાગવતોક્ત ભક્તિમંત્ર એ બેનું તારવચ્ચ રસજી કરીને પુષ્કિમિમાંનું વિસ્તારથી વિચેચન કરી દિગ્દશન કરાવ્યું હતું અને સમાપતિ મંડોલે ‘શ્રીમદ્ભાષ્ય’ પ્રણીત ‘સંસ્કારવર્તિની’ અન્યથી તે સિદ્ધાન્તનું બહુજ અધુર સાધાર્ણ યોગ્ય કરી જનતાના હૃદય ઉપર સારી ભાવના ઉપચિત્ત કરી હતી. ત્યારપછી બંને કિવચે મયેજાં ઓમાન સમાપતિના અત્યંત ઉપકાર માટે ઓણુત કૃષ્ણદાસ મજસુતરે સમા તરફથી કશ્ચિત્ કહ્યું હતું કેને ઓણુત મળવાલ દલાલે એકસેર બાજમાં અલ્પેકાંડ આપ્યા પણ શ્રીમદ્ભાષ્યનું ધરણના નિષ્પાપના વચે દોઢ કલાક સી ચિંતણા દર્શાવી

નિધિસ્વરૂપ શ્રીબાલકૃષ્ણલાલની સેવા.

શ્રીબાલકૃષ્ણલાલજીને જે સ્વરૂપ રાજકોટ ગામની હવેલીમાં બીરાજે છે તે સંપ્રદાયના મૂળ આચાર્ય શ્રીવલ્લભાચાર્યજીએ સેવેલે હતાં. તેઓશ્રીના વખતમાં ઉચ્ચ કોટિના આદ્યશ્રીજી જીવન ગાળનારાં. તેમણે હતાં. તેમનાં એક પદારાવલ્ય હતાં તેમને શ્રીવલ્લભાચાર્યજીએ આ સ્વરૂપ પદારાવલ્ય આપ્યું. પદારાવલ્યનાં વંશજોએ આ સ્વરૂપની સેવા ઉત્તરોત્તરમાં કરી. રાજકોટ રાજ્યની યાદી સ્થાપનાર શ્રીવિભાજી સને ૧૬૩૫ (સં. ૧૫૭૯) સુધી આવી ઉપર હતાં. હાલની કેળવણીનો અને પશ્ચિમનાં પવનનો રૂપ લાગ્યા નહોતો ત્યારે ધણાં ખરા રાજપુત અને કાંઠી રાજ્યો ધર્મપરાયણ અને વૈષ્ણવ હતાં. શ્રુતિમાર્ગમાં જે સ્વરૂપોની સેવા થાય છે તેમાં અને સંપ્રદાયના આચાર્યો પ્રતિ તેમનો ભાવ હતાં. રાજકોટ નરેશ વિભાજીની વિનંતિથી પદારાવલ્યના વંશજોએ શ્રીબાલકૃષ્ણલાલજીને સ્વરૂપ રાજકોટ રાજ્યની હદમાં પદારાવલ્ય, ત્યાં સેવા કરવા માંડી અને રાજ્ય તરફથી નેક લોકો ખાતે પ્રજ્ઞાંધ થયા.

સને ૧૭૦૬ ના અરસામાં પદારાવલ્યના વંશજોને રાજ્ય સાથે કંઠવારાં થવાંથી, તેમણે આ સ્વરૂપ નમનગરમાં પદારાવલ્ય અને ત્યાં તે ત્યાં સુધી બીજાવ્યું. તે વખતના નમનગરનાં સાવિત્ર નરેશોએ નમનગર અપણું કરી, લેખ કરી આપ્યા. સને ૧૭૫૪ ના અરસામાં તે વખતના રાજકોટના નરેશની વિનંતિથી, આ સ્વરૂપને રાજકોટમાં ફરી પદારાવલ્ય. સને ૧૮૭૭ સુધી પદારાવલ્યના વંશજોએ રાજકોટની નીની હવેલીમાં સ્વરૂપની સેવા કરી. શ્રી બાલાજીરાજ સને ૧૮૧૨ માં આવીએ બેઠા. તે વખતે તેમનું ઉંમરનું વય હતું. સને ૧૮૭૧ માં પણ સત્તા સાથે રાજ્યતંત્રની લગામ તેમને સોંપવામાં આવી ત્યારબાદ પદારાવલ્યના વંશજ ગોવિંદજી ભટ્ટને રાજકોટની હદમાં રહેવાનું સહીસત્તામંત્ર નહીં નોંધાવાંથી અનેક પ્રકારનાં લેખમે વેઠી, તેમણે ૧૮૭૭ માં આ સ્વરૂપ સીવીલ રેસીડેન્સની હદમાં મેરખીના નીની ઉઠાંશમાં પદારાવલ્ય તેઓ પરમ ભગવદીય હતાં. આત્મનિવેદનનું તેમને અનુસંધાન રહેલું. પ્રજા ઉપર દેહ આશ્રય હતાં. સને ૧૮૮૩-૮૪ માં વૈષ્ણવોની મદદથી સીવીલ રેસીડેન્સમાં આવેલી હવેલીનું મંકાન બંધાવ્યું, તે સિદ્ધ કરી, સ્વરૂપને ત્યાં પદારાવલ્ય સેવા કરવા માંડી. બાલાજીરાજ ૧૮૬૦ માં દેવદોહ થયા. ૧૮૭૭ થી ૧૮૮૦ સુધીમાં, રાજ્ય કુટુંબમાં બીજાં પણ મારણ થયાં. બા નાની બાને એવા વિષાદો રૂપો જે શ્રીબાલકૃષ્ણલાલ રાજકોટની હવેલીમાં નહીં પધારે ત્યાં સુધી રાજકુટુંબ સુખ અને શાંતિ અનુભવે નહીં. કાંઈક સમયવચ્ચે અનેક પ્રયાસો થયા પણ તે નિષ્ફળ થયાં. ઉપર તા. ૨૩-૪-૧૮૮૧ ની મીતીથી તેમણે હાલાર પ્રાંતના મે. ચાક્ષીદીઠ એન્ટ રાહેબને અરજ આપી. કોરજ કે શ્રી લાખાજીનાં સંપૂર્ણ હોવાથી; એન્ટ રાહેબ આ રાજ્યનો વહીવટ ચેતો હતાં.

ઉક્ત અરજના થોડા ફક્તોએ ટાંકવાની રત્ન લગ્ન છું.

આ રેસીડેન્સ સ્થાપનાર કાકોરશ્રી વિભાજીની વિનંતિથી ભદ્રજીના કુટુંબે આ સ્વરૂપ ઉત્તરોત્તરમાં રાજકોટમાં પદારાવલ્ય. રાજ્ય નેકલોકોના પ્રજ્ઞાંધ થયાં. રાજ્ય સાથે નેમનગર થવાથી, થોડાં વર્ષ સુધી, આ સ્વરૂપને નમનગરમાં પદારાવલ્ય અને રાજ્યની વિનંતિથી ફરીને આદિ પદારાવલ્ય. સ્વરૂપ સીવીલ રેસીડેન્સ પદારાવલ્ય પછી, અમારા કુટુંબને દુઃખદાયક વારસો મળ્યો છે અને મહાં મહાં કાકોર સાહેબના નાની ઉંમરમાં અમારો મૃત્યુથી બીજા કુટુંબ પછી આવી પડ્યાં છે. ન્યાં સુધી રાજકોટની હવેલી ખાલી રહે, અને અમારા શ્રીબાલકૃષ્ણલાલજી બહાર બીરાજે ત્યાં સુધી મને શાંતિ મળે તેમ નથી. મારી દુઃખદ સ્થિતિનો આજ રાખવા હું આપને વિનંતિ કરું છું. મારા કુટુંબમાં જે માણસો રહ્યાં છે તેમનાં એક માટે હું ઉગ્રજી હું કે શ્રીબાલકૃષ્ણલાલજી આદિ પદારાવલ્ય, અને અમારા ઉપર મોટી રૂપા કરે. મારું કૃષ્ણજીવદેવને રાજકોટની નવી હવેલીમાં શ્રીકાકોરજીને પાછાં પદારાવલ્ય મેં સંમત્ય છે. તે ખાસ એવી યત્ન મેં છે કે, જે લાભિયમાં કોઈ પ્રસંગે રાજ્ય સાથે તેમને અમર તેમના વંશજોને કંઠવાર થાય તો તેઓ શ્રીકાકોરજીને પદારાવલ્ય, લખ નહીં રાહે. આ યત્ન મને વ્યાજબી લાગે છે, અને રાજ્યને ઠાઠી રીતે સુકારાનકારક નથી. હું આશા રાખું છું કે આ મારી પવિત્ર ઉચ્ચ અગત્યમાં મુકાબે આપને કરી વધિ નહિ હોય. મારી મંગલિની અમારા અને રાજકોટના સંખ્યાબંધ વૈષ્ણવોના ધર્મને અનુસક્તી છે. બીજીની ધાર્મિક લાવણીને મારા સત્તાપતિ તો બીજીસ રાજ્યનો ગેરમાર્ગ ગાથા સફળ છે. આશા છે કે આ કામમાં તેમને.